सर कटाते हैं तेरे नाम पे

मर्दाने अरब

हिस्सा दोम

लेखक

मुनाज़िरे अहले सुन्नत

अल्लामा अब्दुस्सत्तार हमदानी

"मसरूफ़" (बरकाती-नूरी)

मरकज़े एहले सुन्नत बरकाते रज़ा

इमाम अहमदरज़ा रोड, मेमनवाड, पोरबन्दर, गुजरात

A

अल्लाहो रब्बो मुहम्मदिन सल्ला अलैहे व-सल्लमा
नह्नो इबादो मुहम्मदिन सल्ला अलैहे व-सल्लमा

सर कटाते हैं तेरे नाम पे
मर्दाने अरब

(हिस्सा दौम)

–: मुसन्निफ :–
मुनाज़िरे अहले सुन्नत
अल्लामा अब्दुस्सत्तार हमदानी " मस्रूफ "
बरकाती, नूरी, पोरबंदर

मरकज़े अहले सुन्नत बरकाते रज़ा
इमाम अहमद रज़ा रोड, पोरबंदर (गुजरात)

"जुम्ला हुकूक ब हक्के नाशिर महफ़ूज़"

नामे किताब : सर कटाते हैं तेरे नाम पे मर्दाने अरब (हिस्सा दौम)
तस्नीफ : अल्लामा अब्दुस्सत्तार हमदानी बरकाती नूरी
कम्पोज़िंग : मोईन एम. लालपुरीया
सने इशाअत : बार अव्वल ----- हिजरी 1427 (सन ईस्वी 2006)
ता'दादे इशाअत : 1000 (एक हज़ार)
कींमत :

मरकज़े अहले सुन्नत बरकाते रज़ा
इमाम अह्मद रज़ा रोड, पोरबंदर (गुजरात)

(मिलने के पते)

1. कुतुब खाना अमजदिया, 425, मट्या महल, जामा' मस्जिद देह्ली - 6
2. फारूकिया बुक डिपो, 423, मट्या महल, जामा' मस्जिद देह्ली - 6
3. मर्कज़े अह्ले सुन्नत बरकाते रज़ा, इमाम अहमद रज़ा रोड, पोरबन्दर
4. दारूल उलूम गौषे आज़म, इमाम अहमद रज़ा रोड, पोरबन्दर
5. बोम्बे स्टेशनरी मार्ट (नूरी किताब घर) लीबर्टी रोड, पोरबन्दर

मर्दाने अरब ...... हिस्सा दौम

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

फेहरिस्ते मज़ामीन

जंगे हुमुस (बार दौम)

नहर मा'लून से रवाना हो कर इस्लामी लश्कर हुमुस पहुंचा। इस्लामी लश्कर फिर एक मरतबा हुमुस आ रहा है, यह खबर जब हुमुस में फैली तो अतराफ और गिर्द व नवाह के रूमी भाग कर किल्ले में घुस गए और शहर पनाह के दरवाज़े बन्द कर लिये। इस्लामी लश्कर ने किल्ले का मुहासरा किया। जब इस्लामी लश्कर चंद दिनों पहले आरज़ी सुलह कर के हुमुस से कूच कर गया था, तब अह्ले हुमुस ने यह गुमान किया था कि अब महीनों तक इस्लामी लश्कर यहां नहीं आएगा। लिहाज़ा वह बे डर और गाफिल थे कि अचानक इस्लामी लश्कर दो-बारा आ पहुंचा। तमाम अह्ले हुमुस की ज़बान पर एक ही बात थी कि अरबों ने गद्र और बे वफाई की है, लिहाज़ा अह्ले हुमुस ने हज़रत अबू उबैदा को खत भेजा कि ऐ गिरोहे अरब ! तुम्हारी अह्द शिकनी और बे वफाई से हम आगाह नहीं थे। हालां कि तुम ने हम से गल्ला ले कर इस बात पर सुलह की थी कि तुम यहां से चले जाओगे। तुम गए ज़रूर, लैकिन फौरन हम्ला करने चले आए। हज़रत अबू उबैदा ने जवाब लिखा कि हम मुसल्मान बे वफाई हरगिज़ नहीं करते बल्कि हम किया हुवा वा'दा ज़रूर निभाते हैं। मैं ने तुम से यह मआमला किया था कि मैं तुम्हारे यहां से चला जाउंगा, यहां तक कि फतह करूं किसी दूसरे शहर को, फिर वहां से चाहूं तो किसी और मकाम की तरफ चला जाउं और अगर चाहूं तो तुम्हारी तरफ आऊं। हस्बे मुआहेदा मैं तुम्हारे शहर से कूच कर गया था और अल्लाह ने रुस्तन और शीरज़ दोनों शहर आसानी से फतह फरमा दिये, लिहाज़ा मैं तुम्हारी तरफ जल्दी आ गया हूं इस में अह्द शिकनी और वा'दा खिलाफी की कौन सी बात है ?

हज़रत अबू उबैदा का जवाब पढ़ कर अह्ले हुमुस ने आपस में एक दूसरे से कहा कि वाकई यह अरब अपने कौल में सच्चे हैं। गलती हमारी है कि हम ने इन से मुस्तकिल सुलह करने के बजाए आरज़ी सुलह की। लिहाज़ा उन पर किसी किस्म की सरज़निश नहीं। फिर अह्ले हुमुस ने कासिद के ज़रीए हज़रत अबू उबैदा को पैगाम भेजा कि तुम अपने कौल में सादिक हो, लैकिन अब क्या चाहते हो ? हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि अज़ सरे नौ सुलह के शराइत तय करने होंगे और अदाए जिज़्या पर सुलह होगी। अह्ले हुमुस ने इस तरह

सुलह करने से साफ इन्कार कर दिया। लिहाज़ा इस्लामी लश्कर ने मुहासरा सख्त करते हुए किल्ले की दीवार के करीब दरवाज़े के सामने डेरा डाल दिया।

जब रात हूई तो अह्ले हुमुस हाकिम मुरीस के पास जमा हुए और उस से पूछा कि अरबों के मुआमले में तुम ने क्या सोचा है ? मुरीस ने जवाब दिया कि मैं ने अरबों से लड़ने का मुसम्मम इरादा किया है। हम अह्ले हुमुस दिलैरी और जवांमर्दी से इन का मुकाबला कर के इन को भगा देंगे। अह्ले हुमुस ने मुरीस से कहा कि तुम लड़ने की बात बा'द में करना, पहले इस अम्र की तरफ तवज्जोह दो कि हमारे पास खाने के लिये गल्ला और लड़ने के लिये हथियार कितना है ? मुरीस ने कहा कि इस की तुम मुत्लक फिक्र मत करो। मेरे दादा "जर्जिस" का खज़ाना अनाज और अस्लहा से भरा है, वह मैं तुम्हारे लिये इस शर्त पर खोल देता हूं कि तुम अह्ले अरब से लड़ने में ज़ो'फ और बुज़दिली का मुज़ाहिरा न करोगे, बल्कि शुजाअत व दिलैरी दिखाओगे। अह्ले हुमुस ने कहा कि कसम है हक्के मसीह की ! हर आन हम अरबों से किताल करेंगे और दीने मसीह की खातिर अपनी जानें कुरबान करेंगे। बतरीक मुरीस अपनी कौम का जज़्बए ईसार व कुरबानी देख कर खुश हुवा और उस ने अपने दादा का खज़ाना खोल दिया और कसीर ता'दाद में हथियार और गल्ला तक्सीम किया। रात भर बतरीक मुरीस रूमियों को जंग की तर्गीब दे दे कर लड़ने पर उक्साता रहा। इन्जील की कसमें खाई गईं। कल्माते कुफ्र से इस्तिआनत व आह व ज़ारी की गई। बतरीक मुरीस ने अपनी कौम को सलीब की ताईद और मदद की उम्मीद दिलाई और अरबों को मार भगाने का अहदो पैमान लिया।

"जंगे हुमुस का पहला दिन"

इब्तिदा में इस्लामी लश्कर हज़ीमत उठा कर पीछे हटा :-

सुब्ह होते ही हाकिम मुरीस ने किल्ले के दरवाज़े खोल देने का हुक्म दिया। दरवाज़ा खुलते ही अह्ले हुमुस फैली हूई टिड्डियों की तरह निकल कर मैदान में आ पड़े। पांच हज़ार गबर लोहे की ज़िरह और खौद में इस तरह आरास्ता थे कि इन के जिस्म से आंख की पुतली के सिवा और कोई उज़्व नज़र नहीं आता था। देखने से ऐसा मह्सूस होता था कि लोहे की कोई मज़बूत चट्टान है। मुरीस ने पुर जौश तक्रीर कर के इन को गर्मा दिया और मौत की लड़ाई लड़ने पर उक्साया। रूमी शौरो गुल करते हुए मुजाहिदों पर टूट पड़े। एक तरफ से सवारों ने नैज़ों और तलवारों की ज़र्बें मारनी शुरू कीं तो दूसरी तरफ से पैदलों ने ज़हर आलूद तीर बरसाने शुरू किये। रूमियों का हम्ला इत्ना शदीद था कि मुजाहिदों के लिये ठहरना मुश्किल हो गया। ऐसा सख्त हम्ला कभी नहीं हुवा था। मुजाहिदीन सख्त मुसीबत में गिरफ्तार थे। हम्ला करने के बजाए रूमियों के हम्ले का देफाअ कर रहे थे और पीछे हट रहे थे। बड़ी ता'दाद में मुजाहिद शहीद और ज़ख्मी हुए, मुल्के शाम की लड़ाई में यह पहला मौका' था कि इस्लामी लश्कर पीछे हट रहा था। हुमुस के बाशिन्दे डील डोल और जिस्मानी कुव्वत में मुल्के शाम के दीगर मकाम के लोगों की तरह नहीं थे बल्कि निराले थे। पत्थर की चट्टान की तरह एक जगह जमे रहते थे और दिलैरी से मुकाबला करते थे और उमंडते हुए सैलाब की तरह आगे बढ़ रहे थे।

हज़रत अबू उबैदा ने मुजाहिदों को पीछे हटते हुए देखा तो यह मआमला इन पर बहुत शाक गुज़रा, लिहाज़ा उन्हों ने मुजाहिदों को लल्कारते हुए फरमाया कि ऐ अपनी बहादुर मां का दूध पीने वालो ! आगे बढ़ो, आगे बढ़ो ! यह क्या बुज़दिली है कि मिस्ले शैर हम्ला करने वाली कौम आज पीछे हट रही है। ऐ कुरआन के पढ़ने वालो ! अल्लाह की नुस्रत और मदद पर ए'तमाद रखो, अल्लाह की राह में अपना सर कटाने में कोताही करना मोमिन की शान नहीं। हज़रत अबू उबैदा की इस पुकारने मुजाहिदों में एक नया जौश पैदा कर दिया और अब उन्हों ने सख्त हम्ला किया। हज़रत खालिद बिन वलीद ने भी मुजाहिदों को तर्गीब

दी और खुद ने भी शदीद हम्ला किया। हज़रत मैसरा बिन मसरूक ने अपनी कौम बनी अबस के साथ नारए तक्बीर बुलन्द करते हुए रूमियों पर हम्ला कर दिया। इस्लामी लश्कर के मुजाहिदीन अब दिलैरी से मुकाबला करने लगे और रूमियों पर जवाबी हम्ले शुरू कर दिये, लैकिन रूमी अपनी जगह पर इस्तिकलाल से जमे रहे और लड़ते रहे। रूमियों का अब आगे बढ़ना मौकूफ हो गया था, लैकिन इस के बा-वुजूद वह बड़ी सख्त लड़ाई लड़ते थे और पीछे नहीं टलते थे। जंग की आग पूरी तरह से शौ'ला ज़न थी। तलवारें और नैज़े इतनी कसरत और शिद्दत से टकराते थे कि एक अजीब शौर के साथ आग की चिन्गारी उड़ती थी।

हज़रत खालिद ने एक गबर को उस की पसलियां पीस कर मार डाला

हज़रत खालिद बिन वलीद मुजाहिदों को तर्गीबे जेहाद देते हुए मसरूफे किताल थे कि एक भारी जसामत और तवील कद्दो कामत वाला रूमी रईस गबर इन पर टूट पड़ा। दफअतन उस ने तल्वार का वार कर दिया, लैकिन हज़रत खालिद ने उस का वार खाली फेरते हुए ढाल पर लिया। फिर हज़रत खालिद ने उस पर वार किया, लैकिन वह गबर लड़ाई के फन का माहिर और कुहना मश्क था। उस ने सिपर पर वार को ले कर अपने को बचाया। हज़रत खालिद और उस गबर में शिद्दत से तैग ज़नी होती रही। दोनों ने तल्वार ज़नी के जौहर दिखाए। इस दौरान हज़रत खालिद ने मौका' पा कर गबर के सर पर तल्वार दे मारी। तल्वार लोहे के खौद से टकराई और एक शदीद बाज़गश्त झटका लगा, नतीजतन हज़रत खालिद की तल्वार उछल कर इस तरह टूटी कि तल्वार का कब्ज़ा हज़रत खालिद के हाथ में रह गया और धार दार सलाखी हिस्सा जोड़ से टूट कर ज़मीन पर गिरा। यह देख कर गबर की जुर्अत बढ़ी और उस ने हज़रत खालिद के मुतअल्लिक यह तमआ की कि इन को शहीद कर के पूरे मुल्के शाम में अपनी बहादुरी का डंका बजा दूं। लिहाज़ा वह अपनी तमाम ताकत के साथ हज़रत खालिद पर तल्वार का वार करने आगे बढ़ा, लैकिन हज़रत खालिद ने अपने घोड़े को एडी मार कर इस तरह कूदाया कि हज़रत खालिद का घोड़ा गबर के घोड़े से मुलहिक हो गया। गबर कुछ सोचे और समझे इस के पहले तो हज़रत खालिद ने अपने जिस्म को गबर के जिस्म से चिमटा लिया और गबर को उस के घोड़े से खींच लिया और

अपने दोनों हाथों की गिरफ्त में ले कर ऐसा दबोचा कि उस की पसलियां खट...ज.. खट...ज.. खट...ज.. आवाज़ के साथ टूटने लगीं। गबर ज़ोर ज़ोर से चीखने लगा। हज़रत खालिद की पकड़ सख्त से सख्त होती गई और हज़रत खालिद ने उस की तमाम पसलियां पीस कर रख दीं और उस को ज़मीन पर मुर्दा डाल दिया। गबर की तल्वार से ही गबर का सर काट कर रख दिया। तमाम रूमी और मुजाहिदीन हज़रत खालिद का यह कारनामा हैरत और तअज्जुब से देखते ही रह गए कि भारी जसामत व तवील कद्दो कामत वाले मुसल्लह गबर को हज़रत खालिद ने इस तरह पीस कर रख दिया जिस तरह चक्की गल्ला पीस डालती है। हज़रत खालिद के बाज़ूओं में एक अजीब ताकत पैदा हो गई थी। **अपने महबूब आका व मौला रहमते आलम** के इश्के सादिक में सरशार हो कर ज़बाने हाल से गोया कहते थे :

सद्का अपने बाज़ूओं का अल-मदद
कैसे तोड़ें येह बुते पिन्दार हम

(अज़ : इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत खालिद के इस हैरत अंगेज़ कारनामे को देख कर रूमी सिपाही लरज़ उठे और इन पर एक **"ला-यन्फक"** खौफ तारी हो गया। जब कि मुजाहिदों के हौसले बुलन्द हो गए। मुजाहिदीन दोहरे जौश से रूमियों पर टूट पड़े। हज़रत खालिद बिन वलीद अपने साथियों को जेहाद की फज़ीलत और जेहाद का अज्रे अज़ीम बयान कर के मुसल्सल तर्गीब देते थे और बज़ाते खुद हम्ला कर के अमली मिसाल पैश करते थे। हज़रत खालिद ने अपने साथियों के साथ रूमियों पर शदीद हम्ला कर के रूमियों को दाएं बाएं बिखैर दिया। रूमियों की सफों को उलट कर रख दिया और लाशों के ढैर लगा दिये। हज़रत खालिद ने इस कसरत से शम्शीर ज़नी की कि रूमियों के खून के फव्वारे उड़ने लगे और हज़रत खालिद खून से नहा बैठे। हज़रत खालिद का जिस्म खून से शराबोर हो गया और इन की ज़िरह से खून टपक्ने लगा। **हज़रत खालिद अर्गवान के फूल की तरह सुर्ख नज़र आते थे।** रूमियों पर इन की हैबत ऐसी छा गई थी कि हज़रत खालिद जिस तरफ मुतवज्जहे किताल होते थे रूमी अपनी जान बचाने के लिये जगह छोड़ देते थे। हज़रत खालिद के जौशो खरौश को देख कर इस्लामी लश्कर के सिपेह सालारे आज़म हज़रत अबू उबैदा ने पुकार कर कहा कि ऐ अबू सुलैमान ! बै:शक तुम ने राहे खुदा में जेहाद का हक्क अदा कर दिया।

हज़रत इक्रमा बिन अबू जहल की शहादत

हज़रत खालिद बिन वलीद की दिलैरी ने जंग का रुख पलट दिया था। हज़रत खालिद की शुजाअत से मुतअस्सिर हो कर हज़रत मिरकाल हाशिम बिन उतबा और हज़रत मैसरा बिन मस्रूक ने अपनी कौम बनी ज़हरा को उभारा और रूमी लश्कर के मैमना पर हम्ला कर के इन के दांत खट्टे कर दिये। हज़रत इक्रमा बिन अबी जहल ने कौमे मख्ज़ूम के साथ रूमियों पर ऐसा सख्त हम्ला किया कि अहले हुमुस ने ऐसा शदीद हम्ला न कभी देखा था न कभी सोचा था। तल्वार से इन का मुकाबला करना अम्रे मुहाल था। लिहाज़ा रूमियों ने तीरों की बौछार शुरू की। हज़रत इक्रमा तीरों से बे खौफ और बे डर हो कर अपनी रविशे सख्त पर किताल करते रहे। साथियों ने अर्ज़ किया कि ऐ इक्रमा! दुश्मनों के वार से एहतियात बर्तें और दुश्मनों के वार से चौकन्ना व होशियार रहें।

हज़रत इक्रमा बिन अबी जहल ने फरमाया कि ऐ गिरोहे मोमिनीन! एक ज़माना वह था कि मैं जहालत की तारीकी में था और बूतों की हिमायत में मुसल्मानों से लड़ता था। आज जब हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की बरकत से मुझे ईमान की रौशनी नसीब हूई है तो अल्लाह और अल्लाह के रसूल की इताअत व रज़ा में लड़ने में क्यूं कोताही करूं। प्यारे आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की मुहब्बत में इन के नामे अक्दस पर और तहफ्फुज़े नामूसे रिसालत की खातिर अपनी जान निसार करना मेरी ऐन ख्वाहिश है :

हक्क ने बख्शा है करम, नज़्रे गदायां हो कबूल
प्यारे इक दिल है वह करते हैं निसारे आरिज़

(अज़ : इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत इक्रमा बिन अबी जहल ने मज़ीद यह भी फरमाया कि इस वक्त में जन्नत की हूरों को देख रहा हूं अगर इन में से एक हूर अपने हाथ की कलाई अहले दुनिया पर ज़ाहिर कर दे तो अहले दुनिया इस के हुसूल की ख्वाहिश व तमन्ना में मर जाएं। मैं देख रहा हूं कि इन में से एक हूर अपने हाथ में रैश्मी दस्तार और जवाहिर का कासा लिये हुए मुझ से कह रही है कि हमारी तरफ जल्दी चले आओ हम तुम्हारे मुश्ताक हैं। फिर हज़रत इक्रमा ने फरमाया बे शक! प्यारे आका व मौला रसूले मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने हम से जो वा'दा फरमाया है वह यकीनन सच्चा है :

मौत कहती है कि जल्वा है करीब
इक ज़रा सो लें बिलकने वाले

(अज़ : इमामे इश्को मुहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

फिर हज़रत इक्रमा बिन अबी जहल ने अपनी तल्वार रास्त की और मुश्रिकों के झुन्ड पर मिस्ले शैर हम्ला आवर हुए। इन की तैग ज़नी की सुरअत देख कर तमाम रूमी महवे हैरत थे। जो भी इन के करीब जाता आन की आन में खाक व खून में तड़पता हुवा नज़र आता। हज़रत इक्रमा ने रूमियों में तहलका मचा दिया। किसी को भी इन के करीब जाने की हिम्मत न होती। इन के करीब जाना और मौत के मुंह में पड़ना दोनों बराबर था। हाकिम मुरीस थोड़े फास्ला से हज़रत इक्रमा की शुजाअत व दिलैरी देख रहा था। दूर ही से उस ने अपने पास के हर्बा को ज़ौर से हर्कत दे कर घूमाया। हज़रत हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब सय्यदुश्शोहदा रदियल्लाहो तआला अन्हो को जंगे उहुद में जिस हर्बा से वहशी ने शहीद किया था, बिल्कुल वैसा ही हर्बा बतरीक मुरीस के पास था। उस ने हज़रत इक्रमा के दिल का निशाना बांधा और दूर से हर्बा फैंका। हर्बा ठीक निशाने पर लगा। दफ्अतन हर्बा हज़रत इक्रमा के दिल में पैवस्त हो गया और मुहलिक साबित हुवा। हज़रत इक्रमा ज़मीन पर आ गए और इन की रूह परवाज़ कर गई। हज़रत खालिद बिन वलीद को पता चला कि हज़रत इक्रमा शहीद हो गए तो मुज़्तरिब व बे करार हो कर दौड़े हुए आए, अपने चचा ज़ाद भाई को खून में लत पत देख कर इन का दिल काबू में न रहा और बे साख्ता रोने लगे :

जाने वालों पे यह रोना कैसा
बन्दा नाचार है क्या होना है

(अज़ इमामे इश्को मुहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत इक्रमा की शहादत से हज़रत खालिद बिन वलीद तैश में आ गए। अपने साथियों को लल्कारा और रूमियों पर सख्त हम्ला करने पर बर-अंगेख्ता किया। मुजाहिदों ने रूमियों को दिन में तारे दिखा दिये और रूमी हम्ला की ताब न ला सकने की वजह से पीठ फैर के किल्ले में घुस गए और दरवाज़ा बन्द कर लिया। थोड़ी दैर के बा'द आफ्ताब दिन की तवील मसाफत तय करने की थकन ज़ाइल करने उफुक की गोद में बराए इस्तिराहत पोशीदह हो गया, जंग मौकूफ कर दी गई इस्लामी लश्कर अपने कैम्प में वापस लौटा मुजाहिदों ने शब इबादतो रियाज़त व आराम करने में और ज़ख्मियों की तीमारदारी करने में बसर की।

"जंगे हुमुस का दूसरा दिन"

हज़रत अबू उबैदा ने नमाज़े फज्र के बा'द मुजाहिदों से फरमाया कि मुल्के शाम में हर मकाम पर हम ने आसानी के साथ गल्बा हासिल किया है, लैकिन गुज़िश्ता कल हम ने सख्त मुसीबत का सामना किया है। हमारे बहादुर शेहसवार मिसल हज़रत इक्रमा कसीर ता'दाद में शहीद और ज़ख्मी हुए हैं। हमारी कौशिशे जेहाद में कमी और कोताही रूनुमा हूई है, लिहाज़ा आज अल्लाह की राह में अपनी जानें दिलैरी से खर्च करना। अल्लाह तआला हमारे हर अमल को देख रहा है। नीज़ मेरा गुमान यह है कि आज भी रूमी किल्ले से बाहर निकल कर हम से लड़ने आएंगे, लिहाज़ा आज साबित कदमी और सब्रो इस्तिक्लाल से इन का मुकाबला करना है।

❀ रूमियों को चक्मा देने की हज़रत खालिद की अनौखी तज्वीज़ :-

हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रदियल्लाहो तआला अन्हो की मुन्दरजा बाला नसीहत आमेज़ गुफ्तगू का मुअद्दबाना जवाब अर्ज़ करते हुए हज़रत खालिद ने फरमाया कि ऐ सरदार ! मुल्के शाम के दीगर मकामात के मुकाबले में अह्ले हुमुस निराली किस्म के हैं। तमाम अह्ले हुमुस जंगजू शेहसवार और मिस्ले शैर बहादुर हैं। इलावा अज़ीं भारी जसामत और तवील कद्दो कामत वाले हैं। इन में का कोई भी शख्स बाज़ारी या किराये पर लड़ने वाला नहीं। अह्ले हुमुस बुज़दिल हो कर डरने वाले नहीं बल्कि सख्त लड़ाई के लोग हैं, लिहाज़ा मैं ने इन को चक्मा देने की तज्वीज़ सोची है लैकिन इस तज्वीज़ को अमल में लाने के लिये आप की इजाज़त का ख्वास्तगार हूं। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि ऐ अबू सुलैमान ! अल्लाह तआला तुम्हारी राए को काम्याबी अता फरमाए और तुम्हारे कामों को मज़बूती और रास्ती बख्शे तुम्हारी तज्वीज़ क्या है ? हज़रत खालिद ने जवाब दिया कि अह्ले हुमुस किल्ले से निकल कर हम से लड़ने आते हैं। इन में दो किस्म के लड़ने वाले होते हैं। जंगजू और बहादुर घोड़ों पर सवार होते हैं, लैकिन इन की ता'दाद एक चौथाई होती है, बाकी तीन चौथाई लड़ने वाले पैदल होते हैं और इन में आम शहेरी लोग होते हैं। लिहाज़ा इन की ता'दाद बहुत कसीर होती है और किल्ले के

सामने जो मैदाने जंग है, वह कुशादह नहीं। लिहाज़ा हम को घोड़ा दौड़ाने के लिये जगह की जो फराखी दरकार है वह मुयस्सर नहीं। लिहाज़ा आज हम इन को चक्मा देने के लिये किल्ले के सामने जा कर थोड़ी दैर इन से इस तरह लड़ें कि लड़ाई की इब्तिदा से ही हम पीछे हटते जाएं और थोड़ी ही दैर में हम इस तरह भाग निकलें गोया हम हज़ीमत व शिकस्त खा कर भागे हैं। रूमी सवार हमारा तआकुब करेंगे और हम दूर तक भागते जाएं और जब भागें तो अपने खैमे, ऊंट, माल व अस्बाब, अह्लो अयाल वगैरा सब छोड़ कर भागें। जब हम अपने तआकुब में आने वाले रूमी घोड़े सवार फौज को ले कर दूर निकल जाएंगे, तो पैदल लड़ने वाले हमारे कैम्प का मालो अस्बाब लूटने में मश्गूल हो जाएंगे और वह इस गुमान में होंगे कि हम भाग गए हैं और अब वापस लौटने वाले नहीं। लिहाज़ा वह इत्मिनान से हमारे कैम्प में लौट जाएंगे, खैमे उखड़ेंगे, हमारे जानवरों को हांकेंगे, गरज़ कि हमारे कैम्प में डेरा जमाएंगे। हम भागते हुए थोड़ी दूर के फास्ले तक खुले मैदान तक जाएंगे। रूमी सवार हमारा पीछा करते हुए शहर से दूर निकल कर हमारे करीब आएंगे, तब दफ्अतन हम अपने घोड़ों की बागें फैर देंगे और हमारे तआकुब में आने वाले रूमी सवारों को फाड़ डालेंगे, फिर फौरन अपने कैम्प पर आ पहुंचेंगे और पैदलों से निपट लेंगे। इस तरह हम रूमी लश्कर को दो टुकड़ों में मुतफर्रिक कर के यके बा'द दीगरे आसानी से मात कर देंगे।

हज़रत खालिद बिन वलीद की इस तज्वीज़ को हज़रत अबू उबैदा और तमाम मुजाहिदों ने खूब पसन्द किया और इस पर अमल दर आमद करना तय पाया।

जैसे ही आफ्ताब थोड़ा बुलन्द हुवा इस्लामी लश्कर किल्ले के दरवाज़े पर आ कर ठहरा, हाकिम मुरीस ने दरवाज़ा खोलने का हुक्म दिया। दरवाज़ा खुलते ही रूमी सिपाही "**मारो**" और "**काटो**" का शौर बुलन्द करते हुए इस्लामी लश्कर पर टूट पड़े। मुजाहिदों ने इन का मुकाबला किया और देफाअ करते हुए आहिस्ता आहिस्ता पीछे हटना शुरू हुए। मुजाहिदों को पीछे हटते देख कर रूमियों की जुर्अतें बढ़ीं और उन्हों ने हम्ले में शिद्दत की। हज़रत खालिद ने मुजाहिदों को अपनी तज्वीज़ के मुताबिक इशारा किया। फौरन मुजाहिदों ने घोड़े मोड़े और भागना शुरू किया। रूमी खुशी में मचल उठे कि हम ने मुसल्मानों को भगा दिया। इस्लामी लश्कर को भागता देख कर हाकिम मुरीस ने रूमी सवारों के साथ तआकुब किया। हाकिम मुरीस ने यह गुमान किया कि इस्लामी लश्कर भाग कर अपने कैम्प में जाएगा। लिहाज़ा वहां जा कर इन को हाथ कर लूंगा लैकिन थोड़ी दूर

जाने के बा'द हाकिम मुरीस मुतअज्जिब था क्यूं कि इस्लामी लश्कर अपने कैम्प की तरफ जाने के बजाए ''जोसिया'' की तरफ जाने वाले रास्ते की तरफ भाग रहा था। इस्लामी लश्कर का कैम्प दाएं तरफ रह गया लिहाज़ा बतरीक ने जोसिया की तरफ जाने वाले रास्ते पर इस्लामी लश्कर का पीछा किया। अब हुमुस के दरवाज़े पर जो रूमी लश्कर था वह तमाम का तमाम लश्कर पैदल था क्यूं कि जितने सवार सिपाही थे वह हाकिम मुरीस के साथ इस्लामी लश्कर के तआकुब में हो गए, हुमुस के दरवाज़े पर पैदल रूमी लश्कर ने जब देखा कि मुसल्मान अपनी जानें बचाने के लिये कैम्प को इसी हालत में छोड़ कर भाग गए हैं, तो तमाम के तमाम इस्लामी लश्कर के कैम्प लूटने के लिये दौड़े, हुमुस शहर में यह खबर बिजली की तरह फैल गई कि मुसल्मान अपना कैम्प ला वारिस छोड़ कर भाग गए और कैम्प में बहुत कीमती मालो अस्बाब और मवेशी वगैरा हैं, तो अह्ले शहर भी लूट पर कमर बांध कर निकल पड़े। पैदल रूमी सिपाही और अह्ले शहर इस्लामी लश्कर के कैम्प की तरफ लपके और **लूट में चर्खा भी गनीमत है** वाली मसल पर अमल करते हुए सब लूट में पड़े।

हुमुस शहर में एक बुढ्ढा राहिब रहता था, जो तौरेत, इन्जील, और हज़रत शीस व हज़रत इब्राहीम अलैहिमस्सलातो वस्सलाम के सहीफों का ज़बर दस्त आलिम था। वह बुढ्ढा राहिब बहुत ही तजर्बा कार और मक्रो फरैब की तमाम राहों का माहिर था। उस को जब इस्लामी लश्कर के इस तरह भाग जाने की इत्तिला' हूई तो वह किल्ले की दीवार पर चढ़ा। जब उस ने देखा कि मुसल्मान भाग गए हैं और इन की फिरोदगाह को अह्ले हुमुस लूट रहे हैं, तो उस ने पुकार कर कहा कि ऐ अह्ले हुमुस! सख्ती हो तुम पर, कसम है हक्के मसीह और मुकद्दस इन्जील की! अरबों ने तुम्हारे साथ मक्रो फरैब किया है। अह्ले अरब बड़े गुयूर हैं। वह मर जाना पसन्द करेंगे लैकिन अपने अह्लो अयाल और मालो अस्बाब को तुम्हारे हवाले न करेंगे। कब्ल इस के कि तुम पर कोई बला और मुसीबत आए अरबों का कैम्प अपनी जगह इसी तरह छोड़ कर जल्दी आ कर किल्ले में बन्द हो जाओ, लैकिन अह्ले हुमुस ने बुढ्ढे राहिब की नसीहत पर कान न धरा और लूट घसूट में मस्रूफ रहे।

इधर इस्लामी लश्कर ''जोसिया'' की राह पर भागा जा रहा था और हाकिम मुरीस अपने सवारों के साथ इन का तआकुब करता रहा। जब हुमुस शहर से कुछ दूरी के फास्ले पर इस्लामी लश्कर पहुंचा, तो हज़रत अबू उबैदा ने बुलन्द आवाज़ से पुकारा कि **''फिरो, फिरो, ऐ गिरोहे मोमिनीन अल्लाह तुम्हें बरकत दे और तुम्हारे**

दुश्मनों के मुकाबले में तुम्हारी मदद करे।'' हज़रत अबू उबैदा की इस पुकार पर तमाम मुजाहिदों ने अपने घोड़ों की बागें फैरी। थोड़ी दैर पहले मुजाहिदीन आगे आगे थे और हाकिम मुरीस इन का तआकुब कर रहा था, लैकिन अब सूरते हाल यह थी कि मुजाहिदीन रूमी सवारों के सामने बिजली की रफ्तार से घोड़े दौड़ाते हुए आ रहे थे। चंद लम्हों में मुजाहिदों ने रूमियों को पा लिया और जिस तरह आस्मान से सितारा टूट कर ज़मीन पर गिरता है, इस तरह रूमी सवारों पर टूट पड़े। मुजाहिदों ने रूमी लश्कर को चारों तरफ से घैर लिया और जिस तरह शैर बकरियों के झुन्ड पर हम्ला आवर होता है, इसी तरह हज़रत खालिद बिन वलीद अपने साथियों के साथ हम्ला आवर हुए। रूमियों ने भी जवाबी हम्ला किया, लैकिन बिल्कुल ठहर न सके। मुजाहिदों की तलवारों से आग बरसती थी और रूमियों को दाएं बाएं बिखैर कर रख दिया। हज़रत खालिद ने रूमियों को गाजर मूली की तरह काट कर रख दिया। बतरीक मुरीस को हज़रत सईद बिन ज़ैद ने तल्वार की दो ऐसी शदीद ज़र्बें मारीं कि उस के दोनों बाज़ू कट कर ज़मीन पर गिर गए और फिर इस के दिल में नैज़ा पैवस्त कर के मार डाला। बतरीक मुरीस की ज़िल्लत आमेज़ मौत देख कर रूमियों के दिल बैठने लगे। हवास बाख्ता हो गए, बद हवासी के आलम में बे ढंगी और बे तुकी लड़ाई लड़ते हुए, बे तहाशा मक्तूल हुए। सिर्फ एक सौ रूमी सिपाही ज़िन्दा भाग निकलने में काम्याब हुए, बाकी तमाम खाक व खून में मिल गए।

जब मज़्कूरा लड़ाई में रूमी यूं मग्लूब व मक्तूल हो रहे थे तब हज़रत मआज़ बिन जबल ने सोचा कि अब यहां पर तमाम मुजाहिदों की ज़रूरत नहीं। हज़रत खालिद बिन वलीद इन से निपट लेंगे लिहाज़ा वह पांच सौ सवारों को ले कर बर्क रफ्तारी से हुमुस के किल्ले की तरफ रवाना हो गए। उस वक्त तमाम पैदल रूमी सिपाही और अह्ले हुमुस इस्लामी कैम्प का मालो अस्बाब लूटने में और बच्चों और औरतों को कैद करने में मस्रूफ थे और इन के पीछे क्या हो रहा है इस अम्र से गाफिल थे। हज़रत मआज़ बिन जबल अपने पांच सौ सवारों के साथ किल्ले के दरवाज़े पर आए और दरवाज़े पर कब्ज़ा कर लिया ताकि न किसी को शहर से निकलने दें और न किसी को अन्दर दाखिल होने दें। तमाम रूमी मर्द इस्लामी कैम्प में मस्रूफे लूट थे। अब इन के और किल्ले के दरमियान हज़रत मआज़ बिन जबल का लश्कर हाइल था। जब रूमियों को पता चला कि इस्लामी लश्कर किल्ले के दरवाज़े पर आ पहुंचा है और बहुत ही कम ता'दाद में है तो वह तमाम हम्ला करने पर आमादा हुए, लैकिन इतनी

देर में तो हज़रत अबू उबैदा और हज़रत खालिद बिन वलीद लश्करे जर्रार के साथ आ पहुंचे। अब तमाम रूमियों की हालत खराब हो गई। इन के और किल्ले के दरमियान इस्लामी लश्कर के मुजाहिदीन बरेहना तलवारें और नैज़े बुलन्द किये हुए हाइल थे। किल्ले के अन्दर सिर्फ बुढ्ढे, बच्चे, और औरतें थीं। उन्हों ने किल्ले की दीवार से रोना और चिल्लाना शुरू किया और बुलन्द आवाज़ से **''लफून लफून''** या'नी **''अमान अमान''** पुकारना शुरू किया। इस्लामी लश्कर के कैम्प लूटने गए रूमियों ने जब इस्लामी लश्कर के मुजाहिदों के तैवर देखे तो कैम्प से लूटा हुवा तमाम मालो अस्बाब छोड़ दिया। जिन औरतों और बच्चों को कैद किया था उन को आज़ाद कर दिया और अपने हथियार डाल कर दोनों हाथ ऊपर उठा कर **''लफून लफून''** पुकार कर अमान मांगने लगे। इतने में किल्ले में मुकीम तमाम राहिब, बतारेका और बुढ्ढे अश्खास भी किल्ले से बाहर निकल कर हज़रत अबू उबैदा के पास तलबे अमान के लिये हाज़िर हुए।

हज़रत अबू उबैदा ने अह्ले हुमुस को अमान दी। अह्ले हुमुस ने अपना किल्ले सुपुर्द कर देने की पैशकश कर के सुलह की दरख्वास्त की। हज़रत अबू उबैदा ने सुलह की दरख्वास्त मन्ज़ूर फरमाई, लेकिन किल्ले में दाखिल होने से इन्कार फरमाया। अह्ले हुमुस से कहा कि आज से तुम हमारी ज़िम्मेदारी और अमान में हो और हम पर यह वाजिब है कि हम तुम्हारे साथ नैक सुलूक करें, लैकिन जब तक तुम्हारे बादशाह हिरक्ल और हमारे दरमियान क्या मआमला पेश आता है, वह देख न लें तब तक हम तुम्हारे शहर में दाखिल न होंगे। यहीं किल्ले के बाहर से सुलह के शराइत तय कर के चले जाएंगे। अह्ले हुमुस ने हज़रत अबू उबैदा से गुज़ारिश की कि आप अपने लश्कर के साथ एक दो दिन के लिये ब-हैसियते मेहमान किल्ले में तशरीफ ले आएं, ताकि हम मेहमान नवाज़ी की खिदमत अन्जाम दे कर आप की ता'ज़ीम व तकरीम बजा लाएं, लैकिन हज़रत अबू उबैदा ने इस अम्र का भी इन्कार फरमाया। हुमुस की जंग में इस्लामी लश्कर के दो सौ पैंतीस (235) मुजाहिद शहीद हुए थे। हज़रत अबू उबैदा किल्ले के बाहर से इस्लामी लश्कर ले कर रवाना हो गए। हुमुस से कूच कर के इस्लामी लश्कर ''जाबिया'' नामी मकाम पर पहुंचा और वहां तवक्कुफ किया।

कारेईने किराम की ज़ियाफत तबा' की खातिर मैदाने कारज़ार का पूरा नक्शा जैल में मुलाहिज़ा हो :
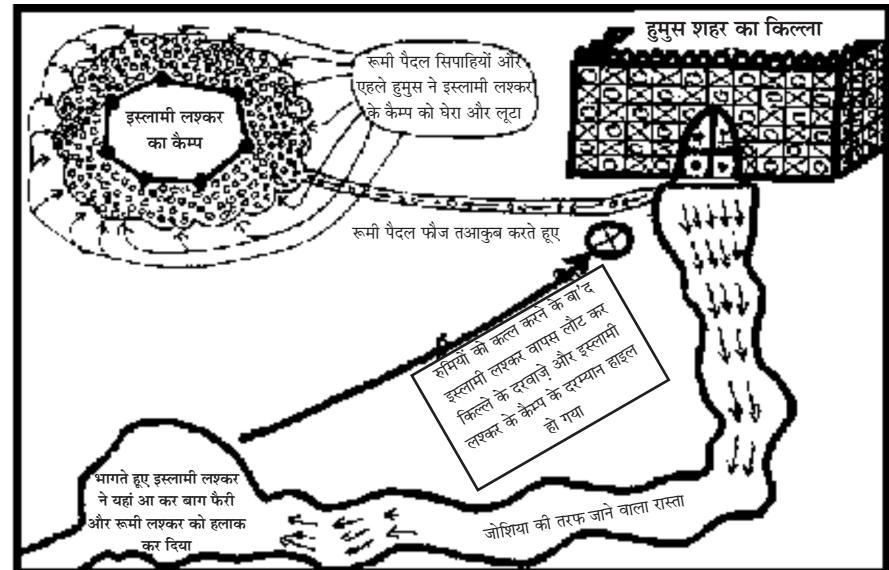
अब तक इस्लामी लश्कर के हाथों फतह होने वाले मकामात :-

(1) इरका (2) सह्ना (3) तदम्मुर (4) हूरान (5) बसरा (6) बैतुल लहिया (7) अजनादीन (8) दमिश्क (9) हिस्न अबील किद्स (10) जोसिया (11) हुमुस (12) शीरज़ (13) रुस्तन (14) हमात (15) कन्सरीन (16) बा'ल्बक

एक नज़र इधर भी ...

अब हम अपने मुअज़्ज़ज़ कारेईने किराम को ''यर्मूक'' के मैदान में ले चलते हैं, जहां एक ऐसी जंगे अज़ीम हूई है कि जिस की नज़ीर तारीखे आलम में नहीं। आधे लाख इस्लामी लश्कर के मुकाबले में साढ़े दस लाख रूमी जमा हुए थे। इस जंग का तज़्किरा पढ़ते वक्त दिल की धड़कनें बढ़ जाएंगीं और जिस्म के रोंग्टे खड़े हो जाएंगे। मसलन जंग के पहले दिन जबला बिन ऐहम के साठ हज़ार (६०,०००) के लश्कर के सामने हज़रत खालिद बिन वलीद सिर्फ साठ (६०) आदमी ले कर लड़ने गए या'नी एक हज़ार काफिर से सिर्फ एक मुजाहिद ने मुकाबला किया। पहले दिन की जंग के इख्तिताम पर सिर्फ दस सहाबा शहीद हुए थे जब कि रूमी लश्कर के पांच हज़ार सिपाही कत्ल हुए। इस जंग में इस्लामी लश्कर को फतहे अज़ीम हासिल हूई। फतह की बशारत हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने ख्वाब में अमीरुल मोमिनीन हज़रत फारूके आ'ज़म को दी और रूमियों के मक्तूलीन की ता'दाद भी बता दी। जंग का तफ्सीली बयान अगले सफ्हात में मुलाहिज़ा फरमाएं।

जंगे यर्मूक का पस मन्ज़र

जब हिरक्ल बादशाह को इत्तेलअ हूई कि मुसल्मानों ने रुस्तन, शीरज़ और हुमुस को भी फतह कर लिया है, तो वह सख्त रंजीदा और बर-अंगेख्ता हुवा। हिरक्ल ने मुल्के शाम के उन तमाम शहरों के हाकिमों को खुतूत ईर्साल किये, जिन शहरों में कसीर या कलील कुछ भी लश्कर हो, उन तमाम हुकाम को हुक्म दिया कि तुम्हारे यहां जो कुछ लश्कर और सामाने हर्ब है, उन को फौरन इन्ताकिया रवाना करो। हिरक्ल बादशाह ने तर्कश का आखरी तीर इस्ते'माल करते हुए यह तय किया था कि पूरे मुल्के शाम से लश्कर जमा कर के अरबों से एक जंगे अज़ीम करूं। इस पार या उस पार का जुवा खेल लूं। हिरक्ल बादशाह का हुक्म मिलते ही पूरे मुल्के शाम से इन्ताकिया में रूमी लश्कर की आमद शुरू हो गई और देखते देखते मुल्के शाम का तमाम लश्कर इन्ताकिया में जमा हो गया।

अर्बाबे सेयर व तवारीख के बयान के मुताबिक हिरक्ल बादशाह ने इन्ताकिया में जो लश्करे अज़ीम जमा किया था वह लश्कर इक्किस फर्सख लम्बा था। (एक फर्सख = 3 मील, हवाला : फीरोजुल-लुगात,सफहा : 928) या'नी **इन्ताकिया शहर की हद से लश्कर शुरू हो कर उस का आखरी सिरा तिर्सठ (६३) मील पर था।** हिरक्ल ने उस अज़ीम लश्कर से एक बड़ी फौज को मुल्के शाम के साहिली इलाके **सूर, इ'का, तराबुलुस, बैरुत** और **तिब्रिया** की हिफाज़त व निगरानी के लिये **''कैसारिया''** भेज दिया और एक बड़ी फौज को **''बैतुल मुकद्दस''** के कुर्बो जवार की निगेहबानी के लिये भेज दिया। बाकी लश्कर को इन्ताकिया में कयाम करने का हुक्म दिया। इस का सबब यह था कि हिरक्ल को मुल्के शाम के सिपेह सालारे आज़म **''बाहान अरमनी''** का इन्तिज़ार था। चंद दिनों बा'द बाहान अपनी कौमे अर्मन के साथ इन्ताकिया आ पहुंचा। बाहान के इन्ताकिया आने पर हिरक्ल बादशाह ने बड़े बड़े सरदारों, मुलूक, रोउसा, राहिबों, बतारेका, गबरों और कसों को एक कनीसा में जमा किया और कनीसा के मिम्बरे कुफ्र पर बैठ कर तकरीर करते हुए हिरक्ल ने कहा कि ऐ सलीब के परस्तारो ! ऐ दीने मसीह के हामियो ! मैं ने कईं मरतबा तुम को अरबों की बढ़ती हूई ताकत और कूच से आगाह व खबरदार किया। मैं ने अरबों की जसारत से तुम को डराते

हुए यहां तक कहा था कि अगर हम ने अरबों के मुकाबले में बुज़दिली और काहिली की, तो अन्करीब वह मेरे तख्त व ताज के भी मालिक हो जाएंगे। लेकिन तुम ने मेरी किसी बात पर इल्तिफात न किया। तुम आपसी इख्तिलाफात और खाना जंगी में उलझे रहे और एक निशान के तहत जमा हो कर अरबों से लड़ने के बजाए मुतफर्रिक हो कर अपने अपने तौर पर लड़े। जिस का नतीजा यह हुवा कि हमारे अह्म बड़े शहर और मज़बूत किल्लों को अरबों ने अपने कब्ज़ा व तसल्लुत में ले कर उन पर अपनी फतह व नुस्रत का पर्चम लहरा दिया और सल्तनते रूम की आबरू मट्टी में मिला दी। हमारी कसरत और फौजी ताकत का पूरी दुनिया में डंका बजता था, यहां तक कि अह्ले फारस और तुर्क हम से खौफ-ज़दा थे। जब उन्हों ने हमारे मुल्क पर चढ़ाई की तो हम ने उन का दिलैरी और शुजाअत से मुकाबला किया और उन्हों ने मुंह की खाई और ज़लील व ख्वार हो कर वापस पलटे। हम ने बड़ी बड़ी सल्तनतों को हज़ीमत दी, लैकिन मुठ्ठी भर, ज़ईफ, नन्गे, भूके, बे सरो सामान और निहत्ते अरबों ने हम को शिकस्त दी है। हमारे बेहतरीन शेहसवारों को बसरा, अजनादीन, दमिश्क, बा'ल्बक और हुमुस में मार डाला और हम पर गालिब आ गए।

हिरक्ल बादशाह की मुन्दरजा बाला वल्वला खेज़ और रिक्कत आमेज़ तक्रीर से पूरी मजलिस पर सन्नाटा छा गया और तमाम हाज़िरीन रंज और नदामत से सर झुकाए खामौश थे। मजलिस से एक कस खड़ा हुवा और शाही आदाब बजा लाने के बा'द कहा कि ऐ बादशाह सलामत ! क्या आप को अरबों के गालिब और हमारे मग्लूब होने का सबब मा'लूम है ? हिरक्ल ने कहा नहीं। लैकिन अगर तुम को मा'लूम हो तो बिला किसी खौफ व डर के बयान करो। कस ने कहा कि हमारी शिकस्त और मग्लूबी की वजह यह है कि हम ने अपने दीने मसीह के अहकाम की पाबन्दी तर्क कर दी है। इबादत और इताअत से इन्हेराफ कर के मन्हियात व मुन्किरात की तरफ इल्तिफात किया है। ज़ुल्म व सितम, शराब व ज़िना, हक्क तल्फी और सूदखोरी, बदकारी, हराम खोरी और दीगर नाजाइज़ और कबीह अफ्आल का इर्तिकाब आम हो गया है। खौफे खुदा, रहम दिली, दीन की पाबन्दी और दीगर उमूरे खैर का फुकदान है, लिहाज़ा बुज़दिली, ना-मर्दी, काहिली, सुस्ती और ना-हिम्मती हम में घर कर गई है। नतीजतन हम हर महाज़ पर हज़ीमत उठा कर राहे फरार इख्तियार करते हैं। हमारे लश्कर के सिपाही सबात कदमी के बजाए पीठ दिखा कर भागते हैं और इन के दिलों में अरबों का रोअब, डर, और खौफ भर गया है। इस के बर-अक्स अरबों का हाल यह है कि वह अपने परवर्दगार और अपने नबी की कामिल फरमा-बरदारी और इताअत करते हैं। रात में इबादत करते हैं और दिन में रोज़ा रखते हैं। अपने परवर्दगार का ज़िक्र और अपने

नबी पर दुरूद भेजने में सुस्ती नहीं करते। एक दूसरे पर ज़ुल्म व ज़ियादती नहीं करते, बल्कि मुहब्बत व हमदर्दी जताते हैं। अपने दीने इस्लाम के अहकाम की सख्ती से पाबन्दी करते हैं। नैकी और भलाई का हुक्म देते हैं और बदी और बुराई से रोकते हैं। इबादत व रास्ती इन की आदत व खस्लत है। और...

जब मैदाने जंग में उतरते हैं तो हरगिज़ पीठ नहीं फेरते। शुजाअत और दिलैरी ही इन का हथियार है। जेहाद करते हुए मर जाना इन की आरज़ू और आखरी ख्वाहिश होती है, क्यूं कि उन्हों ने अपने नबी की ज़बान से जो कुछ भी सुना है, उस पर वह इत्ना यकीन व ए'तमाद करते हैं कि दुनिया इधर से उधर हो जाए मगर इन के ए'तेकाद में ज़र्रा बराबर भी तज़ल्ज़ुल वाकेअ नहीं हो सक्ता। इन के नबी ने फरमाया है कि **जो खुदा की राह में जेहाद करते हुए शहीद हो जाता है, वह मरता नहीं बल्कि हयाते जावेदानी पाता है और यह दुनिया दारुल फना और नेस्तो नाबूद होने वाली है और आलमे आखेरत ही दारुल-बका और पाएदार व बाकी है।** लिहाज़ा वह मैदाने जंग में अपना सर कटाने की तमन्ना ले कर आते हैं। मौत से वह मुत्लक नहीं डरते, बल्कि मौत को ज़िन्दगी पर तर्जीह देते हैं। बुज़दिली और ज़िल्लत की ज़िन्दगी से शुजाअत और इज़्ज़त की मौत बेहतर जानते हैं, लिहाज़ा वह बिला खौफ व खतर हम से लड़ते हैं और हमारी कसरते ता'दाद व आलाते जंग की मुत्लक परवाह नहीं करते। बल्कि अपने परवर्दगार की मदद और नुस्रत पर कामिल भरोसा रखते हैं। चुनान्चे वह हर जगह फतह व गल्बा से नवाज़े जाते हैं और हम ज़िल्लत व हज़ीमत से दो चार होते हैं।

हिरक्ल बादशाह ने रूमी कस की सदाकत पर मब्नी गुफ्तगू सुनी तो उस ने कहा कि ऐ मुअज़्ज़ज़ रहबरे दीने नस्रानिया ! तुम अपने कौल में सादिक और रास्त हो। बे शक ! अरबों की काम्याबी का राज़ यही है जो तुम ने बयान किया है। और हमारी बद-आ'माली और बदकिरदारी की वजह से **हज़रते मसीह** हम पर खशमनाक हैं और हमारी मदद व इआनत नहीं करते। सलीब भी हमारी नुस्रत नहीं करती। अगर अह्ले शाम अपनी इसी रविश पर काइम और मा'सियत व मन्हियात में मुब्तला रहे, तो इस वक्त मैं ने जो लश्करे अज़ीम जमा किया है वह भी बे सूद साबित होगा। लिहाज़ा मुनासिब यह है कि मैं इस लश्कर को बिखैर दूं और अपने अह्लो अयाल को ले कर "**कस्तुनतुनिया**" चला जाउं और वहां राहत व चैन से अपनी ज़िन्दगी बसर करूं और अरबों के खौफ से मामून हो जाउं। मैं ने अरबों को मुल्के शाम से दफाअ करने में कोई कसर उठा नहीं रखी। पानी की तरह अपना

माल खर्च कर के फौज भर्ती कर के अरबों से मुकाबले के लिये भेजता रहा, लैकिन अफ्सोस कि कहीं भी काम्याबी हासिल नहीं हूई । अगर तुम अपने गुनाहों से बाज़ आ कर सिद्क दिल से तौबा करो तो अब भी कुछ नहीं गया । जो हुवा सौ हुवा लैकिन अब तो संभलो और संवरो ! वर्ना मुझे अब तुम्हारी हिमायत करने की कोई दिलचस्पी नहीं । लश्करे अज़ीम को वापस फैर देता हूं और मैं हिज्रत कर के चला जाता हूं ।

हिरक्ल बादशाह की डांट डपट और सरज़निश सुन कर तमाम मज्मा रोने लगा और हिरक्ल से इल्तिजा करते हुए कहा कि ऐ कैसरे रूम ! हम अपनी गलतियों का ए'तेराफ करते हैं और गुनाह व मआसी से सिद्क दिल से तौबा करते हैं । फिर तमाम ने हिरक्ल को ता'ज़ीम का सजदा किया और बा'दहु कहा कि ऐ बादशाह ! आप यहां से हिज्रत कर के चले गए तो दीने मसीह ज़लील व ख्वार हो जाएगा । हमारे दुश्मन आप की हिज्रत की खबर सुन कर खुश हो जाएंगे और इन की जुर्अतें बढ़ेंगीं । पूरा मुल्के शाम अरबों के कब्ज़ा और तसल्लुत में आ जाएगा । इस वक्त जो लश्करे अज़ीम इन्ताकिया में जमा हुवा है वह सिर्फ आप की ब-दौलत ही जमा हो सका है । आप के बा'द किसी दूसरे बादशाह के बस की बात नहीं कि वह अरबों के मुकाबले में ऐसा लश्करे जर्रार इकठ्ठा कर सके । लिहाज़ा आप को कसम है हक्के मसीह की ! आप हिज्रत का इरादा तर्क कर दें । हम मुकद्दस इन्जील का हलफ उठा कर तर्के मआसी का अह्द और पैमान करते हैं । माज़ी की गलतियों का हम इआदा नहीं करेंगे बल्कि दीने मसीह के अहकाम की कामिल फरमा-बरदारी और इताअत करते हुए अपनी ज़िन्दगी की आखरी सांस तक अरबों से लड़ेंगे । सब्रो इस्तिक्लाल से अरबों के मुकाबले में जम कर अपनी जानें खर्च करेंगे । शायद कि हम पर मदद नाज़िल हो और हम गल्बा पाएं ।

जब हिरक्ल बादशाह ने कौम की पशेमानी और यह अज़्म व हौसला देखा तो वह बहुत खुश हुवा और उस ने कहा कि मुझे तुम से यही उम्मीद थी । **सुब्ह का भूला शाम को घर लौटे तो इस को भूला नहीं कहते ।** तुम्हारे अह्द व पैमान पर ए'तमाद करते हुए हिज्रत का इरादा तर्क करता हूं और अपने लश्करे अज़ीम को भेज कर अरबों को मुल्के शाम से नेस्तो नाबूद कर दूंगा ।

❀ हिरक्ल बादशाह के लश्कर की तर्तीब :-

हिरक्ल बादशाह ने इन्ताकिया शहर में मौजूद रूमी लश्कर को हस्बे ज़ैल तरीके से मुरत्तब किया :

- रूसिया के बादशाह **"कनातीर"** को कौमे रूसिया और कौमे मुतआलिया के एक लाख सवारों पर सरदार मुकर्रर किया और सुन्हरी रंग का रैश्मी निशान उसे दिया । उस निशान में जवाहिर की सलीब जड़ी हूई थी ।
- उमूरिया और अंगूरिया के बादशाह **"जर्जीर"** को एक लाख रूमी सवारों का सरदार मुकर्रर कर के उसे सफेद रैश्मी कपड़े का निशान दिया, जिस में सोने के दो सूरज और ज़बरजद की सलीब नसब थी ।
- बतरीक **"दरीहान"** को कौमे मुग्लिया और कौमे अफरन्ज के एक लाख नौ-जवान सवारों का सरदार मुकर्रर किया ।
- बतरीक सरदार **"कौरीर"** जो हिरक्ल बादशाह का भान्जा था । उस को कौमे दुकस, कौमे अर्मन और कौमे मुग्लीत के एक लाख सवारों का सरदार मुकर्रर किया ।
- **"बाहान अरमनी"** को एक लाख जंगजू और दिलैर सवारों पर सरदार मुकर्रर किया और उसे ब-तौर निशान सुन्हरी छड़ी दी, जिस पर मोती और याकूत जड़े हुए थे और उस के सिरे पर याकूत की सलीब जड़ी हूई थी ।
- **"जबला बिन ऐहम गस्सानी"** को नसरानी अरब की कौमे गस्सान, कौमे लख्म, कौमे जुज़ाम और कौमे आमिला के साठ हज़ार अरब मुतनस्सिरा पर सरदार मुकर्रर किया । जबला को खिल्अत दी और कहा कि तुम अपने आदमियों के साथ लश्कर के आगे मुकद्दमतुल जैश की हैसियत से रहना । क्यूं कि तुम अरब हो और हमारे दुश्मन भी अरब हैं, लिहाज़ा **लोहा लोहे को काटता है** और मुझे उम्मीद है कि तुम हमारे दुश्मन अरबों को काट कर रख दोगे ।

मज़्कूरा तर्तीब के ए'तबार से हिरक्ल बादशाह का लश्कर छे (६) बटालियन में मुन्कसिम और मुरत्तब हुवा और इस की मज्मूई ता'दाद पांच लाख साठ हज़ार (5,60,000) थी । अल्लामा वाकदी ने हज़रत सालिम बिन उमर बिन अन्बसह के गुलाम हज़रत सालिम से रिवायत किया है कि हिरक्ल ने इन्ताकिया से जो लश्कर रवाना किया था उस की ता'दाद **छे (६) लाख** थी और एक रिवायत में **सात (७) लाख** की ता'दाद का भी ज़िक्र है ।

रूमी सरदार बाहान अरमनी को हिरक्ल बहुत चाहता था और उस की बहुत ही

ता'ज़ीम व तकरीम करता था। इस की वजह यह थी कि मुल्के फारस के लश्कर ने जब मुल्के शाम पर युरिश की थी तब बाहान रूमी लश्कर की जानिब से दिलैरी और बहादुरी से लड़ा था और उस की अक्ल और दानिश की तदाबीर से रूमी लश्कर को फतह हासिल हूई थी। बाहान अरमनी की जंगी महारत की वजह से हिरक्ल उसे दोस्त रखता था। लिहाज़ा हिरक्ल ने इन्ताकिया में अपने लश्कर के मुकर्रर शुदा सरदारों से कहा कि मैं ने तुम तमाम सरदारों पर ''बाहान'' को **सिपेह सालारे आज़म** मुकर्रर किया है, लिहाज़ा तुम बाहान की राए और मश्वरे के बगैर कोई काम मत करना और वह तुम को जिस काम का हुक्म दे उस की ता'मील और बजा आवरी में ताम्मुल व कोताही मत करना।

इन्ताकिया से मुख्तलिफ मकामात को रूमी लश्कर की रवानगी :-

हिरक्ल बादशाह ने रूमी लश्कर को इन्ताकिया से कूच का हुक्म दिया और लश्कर के तमाम सरदारों को ताकीद की कि इन्ताकिया से मुल्के शाम के मुतफर्रिक इलाकों में फैल जाओ। तमाम लश्कर एक साथ रहने के बजाए हस्बे ज़ैल अलग अलग रास्तों से जाए।

- सरदार ''कनातिर'' को हुक्म दिया कि वह **तर्तूस, जबला** और **लाज़िकिया** नाम के पहाड़ी इलाकों की तरफ जाए।
- सरदार ''जर्जीर'' को हुक्म दिया कि वह **मुअर्रात** और **मियरमीन** के इलाकों की तरफ जाए।
- सरदार ''कौरीर'' को **हल्ब** और **हम्मात** शहरों के इलाकों की तरफ जाने का हुक्म दिया।
- सरदार ''दरीहान'' को **अर्दे अवासिम** और **कन्सरीन** की तरफ रवाना होने का हुक्म दिया।
- जबला बिन ऐहम गस्सानी को घाटी के रास्ते पर **मुकद्दमतुल जैश** की हैसियत से जाने का हुक्म दिया।
- रूमी लश्कर के सिपेह सालारे आज़म बाहान अरमनी को हुक्म दिया कि वह तमाम बटालियनों के पीछे रवाना हो और आगे जाने वाली बटालियन की निगरानी करे और ज़रूरी हिदायात और तम्बीह करता रहे।

हिरक्ल बादशाह ने मज़ीद यह भी हुक्म दिया कि तुम तमाम सरदार हमेंशा एक दूसरे से राब्ता रखना, ताकि ज़रूरत के वक्त एक दूसरे की मदद कर सको। इलावा अज़ीं तुम्हारा जिस शहर और गांव से गुज़र हो वहां के बाशिन्दों को अरबों के खिलाफ उक्साओ और उन्हें अरबों से लड़ने की तर्गीब दे कर अपने साथ लश्कर में शामिल कर लो। अगर वह ब-खूशी आने पर आमादा न हों तो ज़बरदस्ती अपने साथ ले लो और लश्कर की ता'दाद में इज़ाफा करते रहो। हिरक्ल ने आखरी और अहम ताकीद करते हुए कहा कि मुल्क का चप्पा चप्पा छान मारो और जहां कहीं भी अरबों के लश्कर का सुराग मिले, वहां पहुंच जाओ और अपने जाने की अपने साथी लश्कर को इत्तिला' कर दो और इन्हें भी वहीं बुला लो और जमा हो कर इन पर टूट पड़ो और इन को खत्म कर दो।

फिर हिरक्ल ने लश्कर को रवानगी का हुक्म दिया। हुक्म मिलते ही सैंकड़ों नाकूस बजाए गए। सलीबें बुलन्द की गईं। इन्जीलें लाई गईं और इन के वसीले से लश्कर की फतह व काम्याबी की दुआएं मांगी गईं। एक अजीब शौर व गुल के साथ रूमी लश्कर इन्ताकिया से रवाना हुवा। खुद हिरक्ल बादशाह अपने अर्बाबे हुकूमत के साथ लश्कर को रुखसत करने **''बाबे फारस''** तक आया। रूमी लश्कर निहायत शान व शौकत के साथ रवाना हुवा। राह में जो भी दरख्त और पत्थर हाइल हुए, उन को काट देते और राह से हटा देते। जिस गांव या शहर से रूमी लश्कर का गुज़र होता वहां के लोगों पर रूमी फौजी जुल्म व सितम ढाते। गल्ला, मुर्गियां, भैड़, बकरियां और दीगर अश्याए सर्फ बिला उज्रत दिये जबरन मुफ्त छीन लेते। औरतों के साथ ना-ज़ैबा हर्कत करते। नौ-जवानों को खिदमत गुज़ारी के लिये और रास्ते के पत्थर और झाड़ियां हटाने और साफ करने के लिये ज़बरदस्ती साथ ले जाते।

इस्लामी लश्कर की जाबिया से यर्मूक की तरफ रवानगी :-

हुमुस का किल्ला फतह करने के बा'द हज़रत अबू उबैदा इस्लामी लश्कर को ले कर जाबिया नामी मकाम पर आए और यहां पड़ाव डाला। हज़रत अबू उबैदा ने कुछ मुआहदी रूमियों को उज्रत पर जासूसी के लिये मुतअय्यन कर के इन जासूसों को पूरे मुल्के शाम में फैला दिया था। हिरक्ल बादशाह ने इन्ताकिया से रूमी लश्कर रवाना किया, तो हज़रत अबू उबैदा का एक जासूस इन्ताकिया में मौजूद था। उस ने हिरक्ल के लश्कर की तमाम कैफियत मा'लूम कर ली थी। लिहाज़ा वह इन्ताकिया से भाग कर हज़रत अबू उबैदा को मुत्तलेअ करने हुमुस पहुंचा, लैकिन हुमुस से इस्लामी लश्कर कूच कर गया था। लिहाज़ा वह सुराग पा कर जाबिया आया। तब रात का वक्त था। रात ही में उस ने हज़रत अबू उबैदा को रूमी

लश्कर की तमाम कैफियत से आगाह किया और चौकन्ना और मोहतात रहने का मश्वरा दिया। हज़रत अबू उबैदा जासूस का बयान सुन कर तश्वीश व फिक्र में पड़ गए और फौरन "لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَظِيْم" पढ़ा। हज़रत अबू उबैदा तमाम रात बे-करारी और कलक की वजह से सो न सके। रात भर करवटें बदलते रहे। सुब्ह नमाज़े फज्र के बा'द इस्लामी लश्कर के सरदारों को जमा कर के सूरते हाल से आगाह किया और राए तलब की। रूमी लश्कर की तमाम कैफियत मा'लूम कर के यमन और मिस्र के इलाके के कुछ मुजाहिदों ने कहा कि ऐ सरदार ! हम यहां से कूच कर के **"वादियुल कुर्रा"** नामी मकाम पर चले जाएं। यह मकाम हिजाज़ की सरहद से करीब है। वहां जाने का एक फाइदा यह है कि ज़रूरत के वक्त हम अमीरुल मो'मिनीन से कुमुक तलब कर सक्ते हैं। मदीना मुनव्वरा वहां से करीब होने की वजह से इस्लामी लश्कर की कुमुक बहुत जल्दी आ सक्ती है। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि वादियुल कुरा जाने से रूमियों पर हमारी कमज़ोरी ज़ाहिर होगी। वह यह सोचेंगे कि हिरक्ल बादशाह के बड़े लश्कर से डर कर हम हिजाज़ की सरहद के करीब भाग गए और जब हज़रत उमर फारूके आ'ज़म को पता चलेगा कि हम ने यह कदम उठाया है तो वह मेरी सरज़निश और मुझ पर मलामत करेंगे कि मफ्तूह मकामात को छोड़ कर वादियुल कुरा भाग आए और मेरी राए में वहां जानबुझ कर जाना दर पर दह अपनी शिकस्त कबूल करने के मुतरादिफ है।

हज़रत कैस बिन हबीरा मुरादी ने मश्वरा देते हुए कहा कि ऐ सरदार ! हम कहीं भी न जाएं, बल्कि अल्लाह के भरोसे पर यहीं ठहरे रहें और दुश्मन का इन्तिज़ार करें। अल्लाह तआला से उम्मीदे कवी है कि वह हमें गल्बा अता फरमाएगा। हज़रत अबू उबैदा और तमाम मुसल्मानों ने हज़रत कैस बिन हबीरा मुरादी के मश्वरे को पसन्द कर के मुत्तफिका तौर पर मन्ज़ूर किया, लैकिन हज़रत खालिद बिन वलीद खामौश थे। उन्हों ने कुछ भी नहीं कहा। न तो मुवाफिक्त की और न ही मुखालिफ्त। लिहाज़ा हज़रत अबू उबैदा इन के पास आए और फरमाया कि ऐ अबू सुलैमान ! तुम दूरबीं निगाह रखने वाले साहिबुर राए और दाना शख्स हो। हज़रत कैस की राए के मुतअल्लिक तुम क्या कहते हो ? हज़रत खालिद ने फरमाया कि हां ! मैं ने इन की राए सुनी, मेरी राए इन की राए से मुख्तलिफ है, लैकिन जब इन की राए से तमाम मुसल्मानों ने इत्तिफाक कर लिया है, तो मैं नहीं चाहता कि तमाम मुसल्मानों की मन्ज़ूर शुदा तज्वीज़ की मुखालिफ्त करूं। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि ऐ अबू सुलैमान ! मैं इस मुआमले में तुम्हारी राए मा'लूम करना ज़रूरी समझता हूं, लिहाज़ा तुम बिला तकल्लुफ अपनी राए का इज़्हार करो।

हज़रत खालिद बिन वलीद ने कहा कि मेरी राए में यहां ठहरना मुनासिब नहीं, बल्कि यहां ठहरना दुश्मन को फाइदा और इआनत पहुंचाना है और इस की तीन वजह हैं :

(1) यह इलाका तंग है। यहां घोड़ों को दौड़ाने और गरदावे देने के लिये वसीअ मैदान नहीं। दुश्मन कसीर ता'दाद में हैं। अगर उन्हों ने हम को चारों सम्त से घेर कर नर्गे में ले लिया, तो हमारे लिये लड़ना मुश्किल व दुश्वार हो जाएगा।

(2) यहां से "कैसारिया" शहर करीब है। कैसारिया में हिरक्ल बादशाह का बेटा "कुस्तुनतीन" चालीस हज़ार सवारों की फौज के साथ ठहरा हुवा है। अगर हम ने रूमी लश्कर का यहां ठहर कर मुकाबला किया तो कैसारिया से हिरक्ल का बेटा कुस्तुनतीन अपनी फौज के साथ आ पड़ेगा।

(3) "उरदुन" भी यहां से कम फास्ला पर वाकेअ है। अह्ले उरदुन हमारे खौफ की वजह से मुत्तहिद हुए हैं और सामाने जंग जमा कर के फौज तैयार की है। वह भी हमारे दुश्मन की कुमुक करने आएंगे।

लिहाज़ा मेरी राए यह है कि हम यहां से कूच कर जाएं और जितनी जल्दी हो सके कूच करना चाहिये। इस में चंद फाइदे हैं :

- **हम जल्दी कूच कर के रवाना हो जाएंगे, तो दुश्मन के आने से पहले जंगल और घाटी का इलाका पार कर के किसी ऐसे वसीअ मैदान में पहुंच जाएंगे, जहां घोड़े दौड़ाना आसान होगा।**
- **इन्ताकिया से हिरक्ल का अज़ीम लश्कर हमारी तलाश में निकला है। यह खबर जाबिया के अतराफ में अभी तक नहीं फैली। अगर यह खबर फैलने के बा'द हम ने यहां से कूच की, तो रूमियों पर यह असर पड़ेगा कि हम हिरक्ल के लश्कर के खौफ से भाग रहे हैं और इस सूरत में हमारी रूमियों पर जो हैबत है वह मज्रूह होगी।**
- **इस वक्त जाबिया से हमारा कूच करना इस तरह हो कि लश्कर की**

रवानगी के वक्त खूब शौर व गुल बुलन्द हो । या'नी अतराफ के इलाकों तक हमारी रवानगी की खबर फैलनी चाहिये, ताकि इन को पता चले कि किसी दूसरे मकाम पर हम्ला करने या अपने दुश्मन की तलब में अलल ऐ'लान सीना तान कर मरदाना वार जा रहे हैं । हिरक्ल के लश्कर के खौफ से चुपचाप बुज़दिलों की तरह फरार नहीं होते ।

❁ **अगर हम ने यहां से रवाना होने में जल्दी की और रूमी लश्कर से मुदभेड़ होने से पहले किसी वसीअ मैदान में पहुंच गए, तो पहले वारिद होने की वजह से मैदान में अपने कैम्प की जगह का इन्तिखाब करने में हम को कामिल इख्तियार होगा । फन्ने जंग के उसूलों को मद्दे नज़र रख कर उस इलाके के जुग्राफिया का इत्मीनान से जाइज़ा ले कर कमीन गाह, मा'रकए जंग, पड़ाव, देफाअ, पानी की सहूलत, घोड़ों की चरागाह वगैरा तमाम छोटे बड़े ज़ावियों को मल्हूज़ रख कर मुनासिब जगह पर कब्ज़ा कर सकेंगे । अगर हम ताखीर से गए और हमारे कब्ल रूमी लश्कर ने जगह पर कब्ज़ा जमा लिया, तो ऐसी सूरत में मा'कूल या ना-मा'कूल जो भी जगह मुयस्सर होगी उसी पर नाचार इकतिफा करना पड़ेगा ।**

हज़रत खालिद बिन वलीद की राए को हज़रत अबू उबैदा और तमाम मुजाहिदों ने पसन्द किया । हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत खालिद बिन वलीद से पूछा कि ऐ अबू सुलैमान ! क्या किसी वसीअ मैदान का निशान तुम्हें मा'लूम है ? हज़रत खालिद ने जवाब दिया कि हां ! ऐ सरदार ! ऐसी जगह मेरे इल्म में है और वह "**यर्मूक**" है । वहां वसीअ और कुशादह मैदान हैं । नीज़ ब-मुकाबला जाबिया मदीना तय्यबह से यर्मूक का फास्ला कम है । अगर मदीना तय्यबह से **अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फारूके आ'ज़म** हमारी कुमुक करने कोई लश्कर इर्साल फरमाएं, तो जाबिया के मुकाबले में यर्मूक में कुमुक जल्दी आ सक्ती है । हज़रत अबू सुफियान बिन हर्ब ने खड़े हो कर हज़रत अबू उबैदा से कहा कि ऐ अमीनुल उम्मत ! खुदा की कसम ! हज़रत खालिद बिन वलीद की राए निहायत मा'कूल और मुनासिब है, मेरी आप से मुअद्दबाना गुज़ारिश है कि आप इसी पर अमल करें ।

इस्लामी लश्कर का यर्मूक में वरूद

हज़रत अबू उबैदा ने जैशे इस्लाम को कूच करने का हुक्म दिया । इस्लामी लश्कर **जाबिया** से यर्मूक की तरफ रवाना हुवा । कूच करते वक्त ऐसा शौरो गुल बुलन्द हुवा कि एक फर्सख (तीन मील) तक वह आवाज़ सुनाई दी । **उरदुन** शहर जाबिया से करीब था । अह्ले उरदुन को इस्लामी लश्कर की रवानगी की इत्तिला' मिली तो उन्हों ने गुमान किया कि शायद डर की वजह से वापस जा रहे हैं, पस इन के हौसले बढ़े और हम्ला करने की जुर्अत हूई । लिहाज़ा वह यर्मूक जाने वाले रास्ते पर लश्कर ले कर हाइल हो गए । हज़रत खालिद बिन वलीद अपने साथियों के साथ इस्लामी लश्कर के आगे मुकद्दमतुल जैश की हैसियत से चल रहे थे उन्हों ने देखा कि अह्ले उरदुन रास्ता रोक कर खड़े हैं और लड़ाई का इरादा रखते हैं । अह्ले उरदुन की "**आ बला गले पड़, नहीं पड़ती तो भी पड़**" वाली मसल की मिस्दाक बेजा जुर्अत देख कर हज़रत खालिद को उन की बे-वकूफी पर हंसी आई, आप ने अपने साथियों को मुखातब कर के फरमाया कि यह लश्कर हमारे लिये गनीमत है । और गल्बा की निशानी का नैक फाल है । हज़रत खालिद के साथियों ने तलवारें म्यान से निकाल लीं और नैज़े रास्त कर लिये । हज़रत ज़िरार बिन अज़वर, हज़रत मिरकाल, हज़रत तल्हा बिन नौफिल आमरी, हज़रत आमिर बिन तुफैल, हज़रत ज़हीरा बिन अक्लुद्दम, हज़रत हिलाल बिन मुर्रा और हज़रत सखर बिन गानिम वगैरा हज़रत खालिद के साथ उरदुन के रूमी लश्कर पर **चुंगल मारने वाले बाज़ की तरह टूट पड़े** । मुजाहिदों का हम्ला सिर्फ एक गरदावा था । पहले ही हम्ले की शिद्दत देख कर **रूमियों की आंखों तले अंधेरा छा गया** और **दिन में तारे नज़र आने लगे** । अपनी दिलैरी और शुजाअत के घमंड का शीश महल मुजाहिदों की ज़र्बे कारी से चकना चूर हो गया । हिम्मतें टूट गईं । पीठ फैर कर भागना शुरू किया, लैकिन मुजाहिदों ने उन को तलवारों और नैज़ों की नौक पर लिया और भारी अक्सरियत में तहे तैग किया ।

हज़रत खालिद ने भागते हुए रूमियों का **नहरे उरदुन** तक तआकुब किया और जो हाथ लगा उस को लुक्मए अजल बना दिया । कुछ रूमी बच कर नहरे उरदुन तक पहुंच गए । आगे ठाठें मारता हुवा पानी और पीछे तलवारें लहराते हुए मुजाहिदीने इस्लाम ! बहुत सारे रूमी गर्के दरिया हो कर मर गए । अह्ले उरदुन के लश्कर का सफाया करने के बा'द हज़रत खालिद वापस लौटे और हज़रत अबू उबैदा के साथ लश्कर में शामिल हो गए । फिर

वहां से यर्मूक तक राह में कोई भी रूमी लश्कर मुज़ाहिम न हुवा और जैशे इस्लाम खैरो आफियत के साथ यर्मूक के मैदान तक पहुंच गया। इस्लामी लश्कर जब यर्मूक के मैदान में आया, तब मैदान बिल्कुल खाली था। हज़रत खालिद ने मैदान का ब-गौर मुआइना किया और फिर सिपेह सालारे आज़म हज़रत अबू उबैदा से मश्वरा कर के एक बुलन्द टीले के नीचे इस्लामी कैम्प काइम करने का फैसला किया। टीले पर मालो अस्बाब और बच्चों और औरतों का पड़ाव काइम कर के कुछ मुसल्लह मुजाहिदों को निगेहबानी के लिये मुकर्रर कर दिया, टीला इत्ना बुलन्द था कि वहां से यर्मूक का पूरा मैदान नज़र आता था। नीज़ निगेहबानी करने वाले मुजाहिदों को यह ताकीद कर दी गई थी कि रूमी लश्कर की आमद के बा'द दुश्मन की तमाम हर्कतों पर कड़ी नज़र रखी जाए। टीले के नीचे मुजाहिद सवारों और लश्कर का जनरल कैम्प खड़ा कर दिया गया। इस्लामी लश्कर यर्मूक के मैदान में रूमी लश्कर से पहले आ गया, इस का बड़ा फाइदा यह हुवा कि जंग के लिये महफूज़ और मुनासिब जगह का इन्तिखाब कर के इस पर पहले ही से कब्ज़ा जमा लिया गया। और रूमी लश्कर के लिये लबे दरिया मैदान खाली छोड़ दिया गया। हज़रत अबू उबैदा ने यर्मूक की तरफ आने वाले तमाम रास्तों पर जासूस बिठा दिये, ताकि वह रूमी लश्कर की आमद की इत्तिला' पहुंचाएं।

❀ रूमी लश्कर की ता'दाद और यर्मूक में आमद :-

इस्लामी लश्कर मैदाने यर्मूक में रूमी लश्कर के इन्तिज़ार में ठहरा हुवा था। जब हिरक्ल बादशाह के बेटे को "कैसारिया" में इस अम्र की इत्तिला' मिली कि इस्लामी लश्कर जाबिया से कूच कर के यर्मूक के मैदान में पहुंच गया है और जाबिया से यर्मूक जाते वक्त अह्ले उरदुन को तहे तैग कर के तहस नहस कर डाला है, तो वह बहुत ही खशमनाक हुवा और फौरन कासिद को खत दे कर रूमी लश्कर के सिपेह सालारे आज़म बाहान के पास भेजा। इस खत में हिरक्ल के बेटे कुस्तुनतीन ने बाहान को खूब डांट डपट लिखी कि मेरे वालिद ने लाखों का लश्कर दे कर तुम्हें अरबों के तआकुब में भेजा, लैकिन तुम अरबों से लड़ने में काहिली और बुज़दिली दिखाते हो। मुसल्मानों का लश्कर जाबिया से यर्मूक पहुंच गया और तुम्हारे करीब से गुज़रा मगर तुम गाफिल और बे-खबर रहे, मुसल्मानों का लश्कर सलामती के साथ बच कर निकल गया और तुम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहे। लिहाज़ा अब जल्द अज़ जल्द यर्मूक पहुंचो और मुसल्मानों का काम तमाम कर दो। हिरक्ल का बेटा निहायत मुतअस्सिब नस्रानी था। मुसल्मानों का वुजूद तक उसे गवारा नहीं था। उस ने सरदार बाहान की सरज़निश और मलामत कर के लड़ने के लिये उक्साया। कुस्तुनतीन का खत

मिलते ही बाहान ने रूमी लश्कर की दीगर बटालियन के सरदार कनातिर, जर्जीर, दरीहान, कौरीर और जबला बिन ऐहम के पास कासिद दौड़ाए और सब को यर्मूक जल्द अज़ जल्द पहुंचने का हुक्म दिया। अब हर तरफ से रूमी लश्कर ने यर्मूक की तरफ बाग फैरी और उमंडते हुए सैलाब की तरह आगे बढ़ा। रास्ता में जो भी आबादियां आतीं इन के जवानों को खुशी या जब्र से फौज में भर्ती कर के लश्कर की ता'दाद में इज़ाफ़ा करते थे। जब रूमी लश्कर यर्मूक आया तो इस्लामी लश्कर पहले से वहां मौजूद था। रूमी लश्कर ने **"दैरुल जबल"** के करीब पड़ाव किया। **रूमी लश्कर ने लम्बाई और चौड़ाई में अठ्ठारह मील की जगह घैरी थी।** रूमी लश्कर और इस्लामी लश्कर के कैम्प के दरमियान तक़रीबन तीन मील की जगह मा'रकए जंग के लिये खाली छोड़ी गई थी।

रूमी लश्कर मैदान में ठाठें मारते हुए समन्दर की तरह अठ्ठारह मील तूल व अर्ज़ में फिरोकश था। रूमियों की इस कसरत का हाल देख कर मुजाहिदों के चेहरों पर फिक्र के कुछ आसार नुमाया थे। इस्लामी लश्कर के हर फर्द की ज़बान पर "لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَظِيْم" का विरद जारी था। हज़रत अबू उबैदा रूमी लश्कर की सहीह ता'दाद मा'लूम करने के मुतमन्नि थे। लिहाज़ा उन्हों ने किसी शख्स को रूमी लश्कर में भेजने का इरादा फरमाया। हाकिम बसरा हज़रत रूमास ने इस्लाम कबूल करने के बा'द हुसूले सवाब की निय्यत से इस्लामी लश्कर में शमूलियत इख्तियार की थी। हज़रत रूमास जंग के कर्तब और लश्कर की तर्तीब वगैरा के फन में महारते ताम्मा रखते थे। इन को हज़रत अबू उबैदा ने रूमी लश्कर की ता'दाद का सहीह अंदाज़ा लगाने के लिये भेजा। हज़रत रूमास ने अपनी वज़अ तब्दील कर के रूमी बतरीक का लिबास पहन लिया और रूमी लश्कर में घुस गए और एक दिन और एक रात रूमी लश्कर में ठहरे और इन की ता'दाद का तख्मीना करते रहे।

रूमी लश्कर इन्ताकिया से जब रवाना हुवा था तब इस की ता'दाद पांच लाख साठ हज़ार (5,60,000) थी। लैकिन राह में वाकेअ होने वाले हर शहर और गांव से कसीर ता'दाद में लोग रूमी लश्कर में शामिल होते गए और लश्कर की ता'दाद में इज़ाफा होता रहा। इलावा अज़ीं कैसारिया से हिरक्ल बादशाह के बेटे कुस्तुनतीन ने अपना चालीस हज़ार का लश्कर भी यर्मूक भेज दिया था। हिरक्ल बादशाह ने इन्ताकिया से साहिली इलाका और बैतुल मुकद्दस की तरफ जो बड़ी फौज भेजी थी, वह भी यर्मूक आ पहुंची थी। हज़रत रूमास चौबीस घन्टा रूमी लश्कर में ठहरने के बा'द हज़रत अबू उबैदा के पास वापस लौटे और इत्तिला' दी कि मैं ने रूमी लश्कर में कुल बीस निशान (झन्डे) शुमार किये हैं और हर निशान

के तहत पचास हज़ार फौजियों की सफ बन्दी होती है । इलावा अज़ीं जबला बिन ऐहम को सरदार बाहान ने मुकद्दमतुल जैश की हैसियत से साठ हज़ार अरब मुतनस्सिरा के साथ लश्कर के आगे रखा है वह अलग शुमार होंगे । इस हिसाब से **रूमी लश्कर की कुल ता'दाद दस लाख साठ हज़ार** (10,60,000) होती है । इस्लामी लश्कर की ता'दाद जंग अजनादीन के वक्त इक्कावन हज़ार पांच सौ (51,500) थी । जंग अजनादीन के बा'द जंग दमिश्क, जंग हिस्न अबील किद्स, जंग रुस्तन, जंग शीरज़, जंगे कन्सरीन, जंग बा'ल्बक और जंगे हुमुस हूई थीं । हर जगह इस्लामी लश्कर से थोड़े बहुत मुजाहिद शहीद होते गए और लश्कर की ता'दाद कम होती गई । इलावा अज़ीं जिस मकाम को इस्लामी लश्कर फतह करता था, उस की निगरानी और हिफाज़त की ज़िम्मेदारी का फरीज़ा अन्जाम देने के लिये हज़रत अबू उबैदा इस्लामी लश्कर से कुछ मुजाहिदों को वहां ठहरा देते थे । मिसाल के तौर पर फतह बा'ल्बक के बा'द हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत राफेअ बिन अब्दुल्लाह सहमी के साथ नौ सौ (900) मुजाहिदों को बा'ल्बक में ठहरा दिया था । अल-गरज़ ! इस्लामी लश्कर जूं जूं मुल्के शाम में आगे बढ़ता गया, इस की ता'दाद कम होती गई । जंगे यर्मूक में इस्लामी लश्कर की ता'दाद के मुतअल्लिक मुख्तलिफ अक्वाल हैं । बा'ज़ हज़रात ने तीस हज़ार की ता'दाद भी बताई है, लैकिन असह और राजेह कौल **चालीस से पेंतालीस हज़ार का है ।**

हज़रत अबू उबैदा ने रूमी लश्कर की कसरत का हाल मा'लूम कर के कुरआन मजीद की आयते करीमा पढ़ी :

كَمْ مِنْ فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةً بِاِذْنِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ

(सूरा अल-बकरा, आयत : 249)

तर्जुमा : "बारहा कम जमाअत गालिब आती है ज़ियादह गिरोह पर अल्लाह के हुक्म से और अल्लाह साबिरों के साथ है" (कन्ज़ुल ईमान)

इस्लामी लश्कर के मुजाहिदों को रूमी लश्कर की कसरत से चेहरों पर तश्वीश और घबराहट के जो आसार नमूदार थे, वह अपने लिये नहीं, बल्कि अपने दिनी भाई के लिये थे, रंज व फिक्र में वह एक दूसरे के लिये मुब्तला थे । हर शख्स यही चाहता था कि अल्लाह की राह में जेहाद करते हुए मुझे शहादत की सआदत नसीब हो, लैकिन मेरे दिनी और इस्लामी भाई को अल्लाह महफूज़ व सलामत रखे । हज़रत

अबू उबैदा ने मुजाहिदों को सब्रो इस्तिक्लाल की तल्कीन फरमाई कि ऐ कुरआन के उठाने वालो ! अल्लाह की नुस्रत और मदद पर भरोसा रखो । रूमियों की कसरत और हमारी किल्लत की वजह से मुत्लक खौफ न खाओ । घबराहट और इज़्तिराब में मुब्तला होने के बजाए फतह व नुस्रत की उम्मीद रखो । अल्लाह तआला ने चाहा तो रूमी लश्कर का तमाम साज़ो सामान हमारे लिये गनीमत हो जाएगा । फिर हज़रत अबू उबैदा ने यह दुआ मांगी :

رَبَّنَا اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّ ثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِيْنَ

(सूरा अल-बकरा, आयत : 250)

तर्जुमा : "ऐ रब हमारे हम पर सब्र उंडेल और हमारे पाऊं जमे रख और काफिर लोगों पर हमारी मदद कर" (कन्ज़ुल ईमान)

हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह की नसीहत आमेज़ तक्रीर ने मुजाहिदों में एक नया जौश पैदा कर दिया । वह अपने **आका व मौला रसूले मक्बूल** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की बारगाहे बे कस पनाह से इस्तिगासा व इस्तिमदाद करते थे और अपने **आका व मौला** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के फैज़ व करम पर ए'तमादे कामिल रख कर ज़बाने हाल से यूं कह रहे थे :

दिल अबस खौफ से पता सा उड़ा जाता है
पल्ला हल्का सही, भारी है भरोसा तेरा

(अज़ : - इमामे इश्को मुहब्बत, हज़रत रज़ा बरैलवी)

"जंगे यर्मूक"

मैदाने यर्मूक में इस्लामी और रूमी दोनों लश्कर आमने सामने अपने अपने पड़ाव में कयाम किये हुए थे। जंगे यर्मूक माहे रज्जबुल मुरज्जब 15, सन हिजरी में हूई। **जंगे यर्मूक के मुतअल्लिक अमीरुल मो'मिनीन हज़रत सय्यिदोना अली मुरतज़ा मुश्किल कुशा रदियल्लाहो तआला अन्हो फरमाते हैं कि यह वह लड़ाई है जिस का हाल मुझ से हुज़ूरे अक्दस, आलिमे मा कान व मा यकून, रसूले मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने बयान फरमाया था और यहां तक फरमाया था कि इस लड़ाई का ज़िक्र हमेंशा बाकी रहेगा।**

(हवाला फुतूहुश्शाम, अज़ : अल्लामा वाकदी, सफहा : 216)

रूमी लश्कर का जंग से तवक्कुफ :-

इस्लामी लश्कर का हर मुजाहिद जंग के लिये मुस्तइद व आमादा था, लैकिन रूमी लश्कर की जानिब से किसी किस्म की कोई जंगी हर्कत न होती थी। रूमी लश्कर के सिपेह सालारे आज़म "**बाहान अरमनी**" ने लड़ाई से तवक्कुफ किया और इस की वजह यह थी कि हिरक्ल बादशाह ने बाहान को अपने एलची के ज़रीए यह पैगाम भेजा था कि मुसल्मानों से जंग करने की उज्लत मत करना, बल्कि इन के सरदार से गुफ्तगू कर के इस बात पर राज़ी करने की कौशिश करना कि वह हमारा मुल्क छोड़ कर चले जाएं। इस के इवज़ में हर साल इन के सरदार व खलीफा हज़रत उमर फारूक की खिदमत में कसीर माल भेजा करूंगा। इलावा अज़ीं मुसल्मानों ने "जाबिया" तक का जो इलाका फतह किया है, वह तमाम इलाका मैं उन को जागीर में दे दूंगा और मुल्के हिजाज़ से जाबिया तक का इलाका इन के तसल्लुत और तसर्रुफ में रहेगा। लिहाज़ा अब इतने पर इकतिफा करें और हमारे मज़ीद इलाकों पर कब्ज़ा करने का इरादा तर्क कर के अपने मुल्क वापस चले जाएं। हिरक्ल ने बाहान को ताकीद की थी कि अगर इस तज्वीज़ पर मुसल्मान राज़ी हो कर सुलह कर लें, तो तुम इन से सुलह कर लेना और हरगिज़ लड़ाई मत करना।

बाहान ने अपनी तरफ से सुलह की गुफ्तगू करने के लिये रूमी सरदार और उमूरिया के हाकिम "जर्जीर" को रवाना किया। जर्जीर अपने साथ एक हज़ार सवारों को ले कर इस्लामी लश्कर के कैम्प के करीब आया और पुकार कर कहा कि ऐ गिरोहे अरब ! अपने सरदार को मेरे सामने भेजो, ताकि मैं इन से सुलह के मुतअल्लिक गुफ्तगू करूं। हम मुसालहत करना चाहते हैं और इन्सानों का नाहक़ खून बहाने से बचना चाहते हैं। हज़रत अबू उबैदा घोड़े पर सवार हो कर उस के करीब आए और फरमाया कि ऐ सलीब के परस्तार ! जो कुछ कहना है तूं केह और जो पूछना है पूछ।

जर्जीर ने अपनी गुफ्तगू का आगाज़ करते हुए कहा कि ऐ बिरादरे अरबी ! तुम इस वहमो गुमान में मत रहना कि हम ने मुल्के शाम के बहुत से मकामात फतह कर लिये हैं, लिहाज़ा यहां यर्मूक में मौजूद शाह हिरक्ल के लश्कर पर गालिब आ जाएंगे। इस वक्त हमारे लश्करे दोम को तुम मुल्के शाम के दीगर लश्करों पर कयास मत करना, क्यूं कि हमारे लश्कर में मुख्तलिफ मकामात, मुख्तलिफ कौम और मुख्तलिफ ज़बानों के लोग शामिल हैं। हमारे लश्कर के तमाम अफराद ने हल्फिया एक दूसरे से मुआहदा किया है कि कोई भी शख्स तुम्हारे मुकाबले से नहीं भागेगा, बल्कि हर आन तुम से जंग व किताल करेगा। लिहाज़ा इस हकीकत से आगाह हो जाओ कि हमारे लश्कर का मुकाबला करने की तुम में ताकत नहीं। तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम अपने वतन लौट जाओ। अगर तुम ने हमारे लश्कर से मुकाबला करने की जुर्अत की तो यह तुम्हारा गुरूर व तकब्बुर होगा और अन्जामे कार ठीक न होगा, इस के बा-वुजूद हमारे रहम दिल बादशाह ने तुम्हारे साथ एहसान और नैक सुलूक करने का इरादा किया है। अब तक तुम ने जो भी मकामात फतह कर लिये हैं, वह तुम को हिबा किया जाता है। हमारे मुल्क से तुम ने मालो अस्बाब, घोड़े, हथियार वगैरा जो कुछ भी छीना है, वह भी तुम को हिबा किया जाता है और इस का कोई मुतालबा नहीं, बादशाह तुम से सुलह की पैश्कश करता है। इसे कबूल कर लो और मुल्के हिजाज़ लौट जाओ, वर्ना तुम ज़रूर हलाकत में पड़ोगे।

हज़रत अबू उबैदा ने जर्जीर को दन्दान शिकन जवाब देते हुए फरमाया कि हम को डराने और धमकाने की बेजा कौशिश मत कर। हम तेरी धमकी से डरने वाले नहीं। हम राहे खुदा में जेहाद करने के लिये निकले हैं। तुम्हारी तलवारों का हमें कतअन खौफ नहीं और ...

इस के आगे हज़रत अबू उबैदा ने जो कुछ फरमाया, वह इमामे अर्बाबे सेयर **हज़रत अल्लामा इमाम मुहम्मद बिन वाकदी** कुद्दिसा सिर्रहु की ज़बानी समाअत फरमाएं :

"और अपने काम में हम यकीन रखते हैं और ज़रूर हम फतह करेंगे तुम्हारी ज़मीन को और ले लेवेंगे तुम्हारे बादशाह के खज़ानो को जैसा कि वा'दा किया था हम से हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने और हमारे नबी का वा'दा खिलाफ नहीं ।"

(हवाला फुतूहुश्शाम अज़ : अल्लामा वाकदी)

फुतूहुश्शाम की मुन्दरजा इबारत काबिले गौर है, हज़रत अबू उबैदा ने रूमी सरदार जर्जीर से यकीन के दर्जे में फरमाया :

- हम तुम्हारा मुल्क फतह कर लेंगे ।
- हम तुम्हारे बादशाह के खज़ाने के मालिक हो जाएंगे ।
- इन दोनों बातों का हमारे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने हम से वा'दा किया है ।
- हमारे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम का वा'दा कभी गलत नहीं होता ।
- अब कारेईने किराम की खास तवज्जोह दरकार है, गौर फरमाएं कि :
- हज़रत अबू उबैदा "मुल्के शाम फतह होगा और हिरक्ल का खज़ाना हमारी मिल्कियत में आएगा ।" यह बात यर्मूक के मैदान में माह रजब में फरमा रहे हैं, या'नी 15 सन हिजरी के माह रजब तक पूरा मुल्के शाम फतह नहीं हुवा था बल्कि मुस्तकबिल में होने वाला था ।
- माह रजब 15 सन हिजरी के बा'द यह अम्र ज़रूर वाकेअ होगा । इस के वुकूअ का हज़रत अबू उबैदा को यकीने कामिल था, क्यूं कि मुल्के शाम फतह होने का वा'दा हज़राते सहाबए किराम से हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने फरमाया था ।
- हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने सहाबा-ए किराम से मुल्के शाम की फतह का जो वा'दा फरमाया था वह वा'दा आप की ज़ाहिरी जिस्मानी हयात में था । या'नी 12, रबीउल अव्वल 11, सन हिजरी से

पहले ही किया था । क्यूं कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने 12, रबीउल अव्वल के रोज़ दुनिया से पर्दा फरमाया ।

- 15, सन हिजरी के बा'द ही मुल्के शाम फतह हुवा, लैकिन इस के फतह होने का वा'दा हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने 11, सन हिज्री से पहले फरमाया । 15, सन हिजरी के बा'द जो वाकेआत पैश आने वाले थे, वह 11, सन हिज्री के लिये गैब की बात थी । हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने सहाबए किराम को मुल्के शाम की फतह की सिर्फ खबर न दी, बल्कि मुल्के शाम की फतह का वा'दा फरमाया था, यह कोई पेशीन गोई न थी बल्कि इल्मे यकीनी था, मुल्के शाम फतह हो कर रहेगा, इसी लिये तो अपने जां निसार सहाबए किराम को बशारत दी थी कि मुल्के शाम तुम्हारे हाथों फतह होगा और तुम हिरक्ल बादशाह के खज़ाने के मालिक भी बन जाओगे, ऐसा पुख्ता वा'दा वही कर सकता है जो इल्मे गैब की वजह से यकीनी इल्म रखता हो । और बे: शक अल्लाह तआला ने अपने महबूबे आ'ज़म सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को जमीए उलूमे गैबिया पर मुत्तलेअ फरमाया था ।
- हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रदियल्लाहो तआला अन्हो अजिल्ल-ए सहाबए किराम में से हैं और इन का शुमार "अश्-रए-मुबश्शेरह" या'नी वह दस खुश नसीब हज़रात जिन को हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने दुनिया ही में जन्नती होने की बशारत दी । जन्नती सहाबी हज़रत अबू उबैदा का भी यही अकीदा था कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम इल्मे गैब पर मुत्तलेअ हैं । इसी लिये उन्हों ने फरमाया कि हमारे नबी का किया हुवा वा'दा गलत नहीं होता, फतहे शाम का वा'दा इल्मे गैब से तअल्लुक रखता है और हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने इल्मे गैब की बिना पर ही मुल्के शाम की फतह का वा'दा फरमाया था । इस वा'दे के मुतअल्लिक सारे सहाबा समेत हज़रत अबू उबैदा का अकीदा था कि वह वा'दा पूरा हो कर ही रहेगा । हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह जैसे जलीलुल कद्र सहाबी हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के इल्मे गैब का यकीन के साथ इक़रार व ए'तेराफ करें और.....

दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन यह कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के लिये इल्मे गैब का अकीदा रखना शिर्क है (मआज़ल्लाह) चंद इकतिबासात पैशे खिदमत हैं :

- वहाबी, देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत के पेश्वा नीज़ तब्लीगी जमाअत के बानी मौलवी इल्यास कांधलवी के पीर व मुर्शिद और उस्ताद मौलवी रशीद अहमद गंगोही साहिब लिखते हैं कि :

''हज़रत सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को इल्मे गैब न था । न कभी इस का दा'वा किया है और कलामुल्लाह शरीफ और बहुत सी अहादीस में मौजूद है कि आप आलिमुल गैब न थे और यह अकीदा रखना कि आप को इल्मे गैब था सरीह शिर्क है'' ।

(हवाला : फतावा रशीदिया, कामिल, नाशिर, मक्तबा देवबन्द, सफ्हा 103)

''फतावा रशीदिया'' की मुन्दरजा बाला इबारत में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के लिये इल्मे गैब का अकीदा रखने को मौलवी रशीदअहमद गंगोही **''सरीह शिर्क''** या'नी खुल्लम खुला शिर्क कह रहे हैं और जो शख्स शिर्क का इर्तिकाब करता है वह मुश्रिक है। कारेईने किराम तवज्जोह फरमाएं कि मौलवी रशीदअहमद गंगोही साहिब हुज़ूरे अक्दस के लिये इल्मे गैब का अकीदा रखने वाले को मुश्रिक कहते हैं । हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह का पुख्ता अकीदा था कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को इल्मे गैब था। हज़रत अबू उबैदा को यह अकीदा रखने के बा-वुजूद हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम इन्हें जन्नती फरमाते हैं, इन की ज़िन्दगी में ही इन को जन्नत की सनद अता फरमाते हैं ।

कारेईने किराम इन्साफ फरमाएं, मौलवी रशीद अहमद गंगोही का फत्वा ज़ियादह मो'तबर है या अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैह व सल्लम की ताईद व तौसीक ?

- वहाबी, देवबन्दी, और तब्लीगी जमाअत के इमामे अव्वल फील हिन्द और इमामुल मुनाफिकीन मौलवी इस्माईल देह्लवी अपनी रुसवाए ज़माना किताब में लिखते हैं कि :

''जो कोई यह बात कहे कि रसूले अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे व सल्लम या कोई इमाम या बुज़ुर्ग गैब की बात जानते थे और शरीअत के अदब से मुंह से न कहते थे वह बड़ा झूठा है क्यूं कि गैब की बात अल्लाह के सिवा कोई जानता ही नहीं ।''

(हवाला : तक्वियतुल ईमान, नाशिर : अद्दारुस-सल्फिया बम्बई, सफ्हा : 48)

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को गैब का इल्म था, ऐसा अकीदा रखने वाले को मौलवी इस्माईल देह्लवी झूठा कह रहे हैं । कारेईने किराम की गैर जानिबदाराना अदालत में इस्तिगासा है कि मीज़ाने अद्ल के एक पल्ले में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के इल्मे गैब के मुतअल्लिक हज़रत अबू उबैदा का अकीदा रखें और दूसरे पल्ले में मौलवी इस्माईल की तक्वियतुल ईमान की इबारत रखें और फैसला करें कि हक्क क्या है और बातिल क्या है ?

इस बहस को तूल न देते हुए हम यर्मूक के मैदान में वापस चलते हैं ।

रूमी सरदार जर्जीर ने अपने लश्कर की कसरत का खौफ दिला कर हलाक हो जाने की जो धमकी दी थी, इस का जवाब देते हुए हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि तू अपने लश्कर की कसरत पर नाज़ करता है, लैकिन तू यह हकीकत भी जान ले कि तुम्हारे लश्कर को हमारे मुजाहिदों के नैज़े और तलवारों की नोकें फाड़ कर रख देंगी और तुम पनाह के लिये चूहे का बिल ढूंढते फिरोगे, जिस दिन लड़ाई शुरू होगी उस दिन तुम को मा'लूम हो जाएगा कि हम में से कौन लड़ाई का ज़ियादह ख्वाहिशमन्द था ।

हज़रत अबू उबैदा की बुलन्द हौसला गुफ्तगू सुन कर रूमी सरदार जर्जीर मब्हूत व साकित हो गया और अपना सा मुंह ले कर बाहान के पास वापस आया । बाहान ने कैफियत पूछी, तो जर्जीर ने कहा कि इन से सुलह की गुफ्तगू करना बे फाइदा है । इन की बात चीत में भी जंग की आग के शौ'ले भड़कते हैं । इन का इरादा पूरा मुल्के शाम फतह करने का है, लिहाज़ा यह जंग किये बगैर यहां से टलने वाले नहीं । जर्जीर की मायूस कुन तफ्सील समाअत करने के बा-वुजूद भी बाहान ना-उम्मीद नहीं हुवा और सुलह की आस नहीं तोड़ी । जबला बिन ऐहम गस्सानी अरब होने के नाते इन को समझाने में कार-आमद साबित होगा, यह उम्मीद करते हुए बाहान ने जबला को आज़माते हुए सुलह की गुफ्तगू करने भेजा । जबला बिन ऐहम घोड़े पर सवार हो कर इस्लामी लश्कर के कैम्प के नज़दीक आया और पुकार कर कहा कि ऐ गिरोहे अरब ! तुम में से अम्र बिन आमिर

की औलाद के किसी शख़्स को मेरे साथ गुफ्तगू करने भेजो। हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत उबादा बिन सामित को इस से गुफ्तगू करने के लिये भेजा। जबला ने गुफ्तगू के आगाज़ में कबीले का तआरुफ और कराबत वगैरा के तअल्लुक से गुफ्तगू करने के बा'द हमदर्दी और खैर-ख्वाही जताते हुए कहा :

ऐ अरबी बिरादर ! मैं तुम्हारा हम कौम होने की वजह से तुम्हारा बही ख्वाह और खैर अंदेश हूं। मेरा तुम को मश्वरा है कि इस वक्त जो यहां रूमी लश्कर मौजूद है इस का मुकाबला करना तुम्हारे बस की बात नहीं और ऐसा ही एक दूसरा लश्कर पीछे आ रहा है। तुम्हारी ता'दाद रूमी लश्कर के मुकाबले में समन्दर के सामने कूज़े जैसी है। अब तक मुल्के शाम में तुम ने जो फुतूहात हासिल कीं हैं, इस का नशा अपने दिमाग से झाड़ दो, क्यूं कि इन लड़ाइयों में तुम्हारे मुकाबले में जो लश्कर आए थे और इस वक्त जो लश्कर आया है, दोनों में ज़मीन आस्मान का फर्क है। इस लश्कर से मुकाबला करना तुम्हारे लिये ना-मुम्किन है। लिहाज़ा बहुत मत अकड़ो और लड़ने का ख्याल अपने ज़हन से निकाल दो। इस लश्कर से लड़ना लोहे के चने चबाने से भी ज़ियादह मुश्किल मरहला है। ख्वाह म ख्वाह अपने हाथों हलाकत में मत पड़ो और हिरक्ल बादशाह की तज्वीज़ कबूल कर के मुल्के हिजाज़ की राह पकड़ो। इसी में ही तुम्हारी बेहतरी और भलाई है।

हज़रत उबादा बिन सामित खामोशी से जबला की गुफ्तगू समाअत करते रहे। जब वह खामौश हुवा तो हज़रत उबादा ने फरमाया कि ऐ जबला ! क्या तू अपनी बात पूरी कर चुका ? जबला ने कहा कि हां ऐ बिरादरे अरबी ! मैं अपने नैक मश्वरे से फारिग हो चुका। हज़रत उबादा बिन सामित ने फरमाया कि ऐ जबला ! जंगे अजनादीन में तूने देख लिया है कि अल्लाह तआला ने हमें तुम पर किस तरह गल्बा दिया। हम इसी की मदद चाहते हैं और इस की मदद पर कामिल ए'तमाद रखते हैं। हम तुम्हारे लश्कर की कसरत से मुत्लक नहीं डरते। बल्कि तुम्हारी परवाह तक नहीं करते। मौत हमारी ख्वाहिश व आरज़ू है खूनरैज़ी के हम हरीस और ख्वाहिशमन्द हैं। लिहाज़ा अपने लश्कर की कसरत से हमें डराने की कोशिश मत कर। हम अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते क्यूं कि हम मुसल्मान हैं। मुसल्मान किसी से नहीं डरता। वह बे खौफ हो कर जीता है। तूने अरब होने के नाते हमदर्दी जताई है लिहाज़ा मैं भी अख्लाकी फरीज़ा के तहत तुझे बे डर और बे खौफ बनाने की हमदर्दी जताता हूं। मैं तुझे इस्लाम की दा'वत देता हूं। "لا اله الا الله محمد رسول الله" केह कर इस्लाम में दाखिल हो जा, ताकि तुझे दुनिया और आखेरत की बुज़ुर्गी हासिल हो और तू निडर और बे खौफ हो

जाए। ऐ जबला ! तू रोउसाए अरब से है। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम भी अरबी हैं, रसूले अरबी का दीन तमाम अद्यान पर गालिब आ चुका है। तेरी भलाई और बेहतरी इसी में है कि तू दीने इस्लाम इख्तियार कर ले और कुफ्र की ज़ुल्मत से निकल कर ईमान की रौशनी में आजा।

हज़रत उबादा बिन सामित की सदाकत पर मब्नी ईमान अफरोज़ और बातिल सोज़ गुफ्तगू सुन कर जबला खशमनाक हुवा और कहा कि इस तरह की बातें करने से बाज़ आओ। मैं अपने दीने नस्रानिया से हरगिज़ मुन्हरिफ नहीं होने वाला। हज़रत उबादा बिन सामित ने फरमाया कि अगर तू अपने कुफ्र पर ही काइम रहना चाहता है तो कम अज़ कम इत्ना तो कर कि हमारे और रूमियों के दरमियान मुदाखलत करने से दूर रेह और रूमी लश्कर से अलग हो जा, वर्ना तुझ को भी रूमियों के साथ साथ हमारे नैज़ों और तलवारों की नोकें फाड़ कर रख देंगी। हमारी तलवारों से बच कर तू ज़िन्दा वापस नहीं जाएगा। जबला यह सुन कर सहम गया और नर्म लह्ज़ा इख्तियार कर के कहा कि ऐ अरबी बिरादर ! ख्वाह म ख्वाह मुझ को क्यूं डांटते हो ? क्या मैं तुम्हारी जिन्स से नहीं ? हज़रत उबादा ने फरमाया कि तू अरब होने के बा-वुजूद हम से मक्रो फरैब करने आया है। तू अरब ज़रूर है लैकिन अपने कुफ्र की वजह से हम जिन्स और मसल नहीं। तू सलीब का पूजारी है, **जब कि हम खुदाए वह्दहु ला शरीक की इबादत करते हैं और इस के महबूब नबी सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम पर दुरूद भेजते हैं।** तेरा और हमारा हाल यक्सां नहीं। और हां ! तू हम को इस बात से भी डराने की कोशिश करता है कि रूमियों का एक बड़ा लश्कर पीछे आ रहा है। लिहाज़ा तू भी सुन ले कि हमारा लश्कर भी हमारी पुश्त पनाही करने आ रहा है। और उस लश्कर में ऐसे ऐसे दिलैर और बुज़ुर्ग लोग हैं जो बज़ाते खुद एक लश्कर की हैसियत के हामिल हैं। **क्या तुझे अमीरुल मो'मिनीन हज़रत उमर फारूके आ'ज़म की शिद्दत और मज़बूती, हज़रत उस्मान गनी की दानिश और जवांमर्दी, हज़रत अली कर्रमल्लाहो वज्हहु की शुजाअत और बहादुरी, हज़रत अब्बास, हज़रत तल्हा, हज़रत ज़ुबैर और फुलां फुलां की हिम्मत और दबदबे का हाल मा'लूम नहीं ?** इन हज़रात के पास ताइफ और यमन के मुजाहिदीन जमा हुए हैं और हमारी कुमुक को आने वाले हैं। जब तुम हम से लड़ने की सलाहियत और जुर्अत नहीं रखते, तो हमारे इन मुअज़्ज़ज़ शेहसवारों से क्या टक्कर ले सकोगे ? जब हमारा यह लश्कर आएगा तो तुम को पीस कर रख देगा।

जबला बिन ऐहम ने कहा कि ऐ मेरे चचा के बेटे ! तुम तो बहुत मुश्तइल हो गए

और लाल पीले हो कर तुन्द लहजा में गुफ्तगू करने पर उतर आए हो। मैं तुम्हारी भलाई की बात करता हूं लेकिन तुम मेरी बात पर कान नहीं धरते और मेरी एक भी नहीं सुनते। मैं एक मरतबा फिर दरख्वास्त करता हूं कि लड़ने का ख्याल तर्क कर के रूमियों से सुलह कर लो। हज़रत उबादा बिन सामित ने फरमाया कि कसम है खुदा की ! हमारे और तुम्हारे दरमियान कबूले इस्लाम या अदाए जिज़्या की शर्त पर ही सुलह हो सक्ती है और अगर इन दोनों में से किसी एक शर्त के कबूल से इन्कार करोगे, तो तल्वार हमारे दरमियान फैसला करेगी। ऐ जबला ! मेरी एक आखरी बात भी सुन ले। अगर एलची को कत्ल करना हमारे नज़्दीक गद्र और बे-वफाई न होता तो तुझ को अपनी तल्वार का मज़ा चखाता और तेरी नापाक रूह को दोज़ख की तरफ भेज देता। तेरी खुश नसीबी है कि तू एलची बन कर आने की वजह से मेरी तल्वार की ज़र्ब से बच कर वापस जाता है। इत्ना फरमाने के बा'द हज़रत उबादा ने म्यान से तल्वार निकाल कर जबला की तरफ चमकाई। जबला दहशत और खौफ से कांप उठा। अपने घोड़े की बाग फैरी और रूमी लश्कर की जानिब चल दिया।

जबला बाहान के पास आया, उस के चेहरे पर हवाइयां उड़ती थीं। बाहान ने जबला के चेहरे का रंग उड़ा हुवा देखा तो पूछा कि ऐ जबला ! इस कद्र अफ्सुर्दा क्यूं हो ? तुम्हारे चेहरे से खौफ व हरास अयां है। जबला ने कहा कि ऐ सरदार ! मैं हरासां नहीं बल्कि मुतहैयर और मुतअज्जिब हूं। मैं ने अरब होने के नाते मुसल्मानों को बहुत समझाया बल्कि डराया और धमकाया भी, लेकिन इन के कान पर जूं नहीं रैंगती। सुलह की बात में दिलचस्पी ही नहीं, बस लड़ने की और फाड़ डालने की ही बात करते हैं। मा'लूम नहीं इन के दिमाग में क्या हवा भर गई है। इन के गुफ्तगू का तैवर देख कर ऐसा लगता है कि इन के दिमाग में गर्मी चढ़ गई है। और यह लोग एहसान करने के लाइक नहीं क्यूं कि मुल्के शाम के चंद मकाम पर फतह हासिल करने की वजह से इन के दिमाग चौथे आस्मान पर हैं, लिहाज़ा तल्वार की ज़बान में बात कर के इन के दिमाग की गर्मी उतार ने की ज़रूरत है।

जंगे यर्मूक का पहला दिन

बाहान ने जबला से कहा कि तुम ठीक कहते हो। हिरक्ल बादशाह के हुक्म की ता'मील करते हुए हम ने अरबों को समझाते हुए दिमाग के कीड़े झाड़ दिये, लेकिन उन्हों ने हमारी बात सुनी अन सुनी कर दी। इत्मामे हुज्जत करने में हम ने कोताही नहीं की, लिहाज़ा अब अगर इन से मुडभेड़ हो जाए तो बादशाह हम को मलामत नहीं करेगा। हम बादशाह को इत्मीनान दिला सकेंगे कि सुलह के लिये हम ने हद दर्जा कौशिश कर ली मगर वह आमादा नहीं हुए, लिहाज़ा हम ने ब-हालते इक्राहो मजबूरी जंग की है। बाहान ने जबला से कहा कि मेरी इत्तिला' के मुताबिक अरब का लश्कर तीस (30) हज़ार है और तुम अरब मुतनस्सिरा साठ हज़ार हो। या'नी मुसल्मानों से दूगनी ता'दाद में हो। वह भी अरब हैं और तुम भी अरब हो। मुझे उम्मीद ही नहीं बल्कि यकीन है कि तुम इन को शिकस्त दे दोगे। अगर तुम इन पर गालिब आ गए तो हिरक्ल बादशाह इन्आमो इकराम से नवाज़ देगा, बल्कि मुल्के शाम की हुकूमत में तुम्हें हिस्सा दार बनाएगा। इलावा अज़ीं पूरे मुल्के शाम में तुम्हारे नाम का डंका बज जाएगा कि तुम ने अरबों को भगा दिया। मुल्के शाम का बच्चा बच्चा तुम्हारी ता'ज़ीम व तक्रीम करेगा और हर घर और हर महफिल में तुम्हारी शुजाअत व बहादुरी के गीत गाए जाएंगे। इस तरह बाहान ने तमाअ और लालच दे कर जबला को लड़ने की तर्गीब दी और उस के दिमाग में हवा चढ़ा दी। जबला ने कहा कि ऐ सरदार ! मैं इन मुसल्मानों से ज़रूर लड़ूंगा बल्कि इन से लड़ने में अपनी सआदत समझता हूं। आप ने मुझ से जो उम्मीदें वाबस्ता की हैं इस में आप को मायूस नहीं करूंगा। जबला बिन ऐहम ने अपनी कौमे बनी गस्सान को मुसल्लह हो कर लड़ने के लिये मैदान में जाने का हुक्म दिया। जबला का हुक्म मिलते ही कौमे बनी गस्सान के साठ हज़ार अरब मुतनस्सिरा मुसल्लह हो कर फौरन सवार हो गए और मैदान का रुख किया, तमाम अरब मुतनस्सिरा लोहे के खौद, ज़िरहें और दीगर मल्बूसात से आरास्ता हो कर आए थे।

साठ हज़ार के मुकाबले में हज़रत खालिद के सिर्फ साठ आदमी

अब हम कारेईने किराम की खिदमत में इस्लामी तारीख के वह सुन्हरी अवराक पैश कर रहे हैं कि जिन को पढ़ कर कारेईन अश अश करेंगे । इस्लाम के कफन बरदोश मुजाहिदों ने शुजाअत और बहादुरी की जो बे मिसाल नज़ीर काइम की और वहमो गुमान से मा वरा ऐसा अज़ीम किरदार अदा किया कि ख्वाब में भी ऐसा करना मुम्किन नहीं मा'लूम होता ।

आइये ! अपने दिल की धड़कनों पर काबू रखते हुए मुलाहिज़ा फरमाएं :

जब जबला बिन ऐहम गस्सानी साठ हज़ार सवारों को ले कर मैदान में आया और उसे आते हुए मुजाहिदों ने देखा, तो फौरन हज़रत अबू उबैदा को इस अम्र की इत्तिला' पहुंचाई । हज़रत अबू उबैदा ने मुजाहिदों को पुकारा और मुसल्लह हो कर मैदान में उतरने का हुक्म दिया । तमाम मुजाहिद अपने हथियारों और घोड़ों की तरफ दौड़े और मैदान में जाने का कस्द किया । लैकिन हज़रत खालिद बिन वलीद ने पुकारा कि ऐ इस्लाम के जां निसारो ! ठहर जाओ और तवक्कुफ करो ! रूमियों ने हमारे मुकाबले के लिये साठ हज़ार नस्रानी अरब सवारों को भेज कर जो बेवकूफी की है । आज मैं इन को ऐसा चक्मा दूंगा कि इन की नाक खाक आलूद हो जाएगी और ज़िल्लत की वजह से वह किसी को भी अपना मुंह दिखाने के काबिल नहीं रहेंगे । हज़रत अबू उबैदा ने महवे हैरत हो कर कहा कि ऐ अबू सुलैमान ! ऐसा तुम ने क्या सोचा है ? हज़रत खालिद ने जवाब दिया ऐ सरदार ! रूमी लश्कर के सरदार ने हमारी ता'दाद से दूगनी ता'दाद में नस्रानी अरबों को इस गुमान में लड़ने भेजा है कि वह हमारे हम जिन्स होने की वजह से हम पर गालिब आ जाएंगे । वह इन नस्रानी अरबों की कुछ अहमियत समझता है, लिहाज़ा अगर हम अपने पूरे लश्कर के साथ इन से लड़ने निक्लेंगे तो इन की अहमियत बर-करार रह जाएगी । मैं यह चाहता हूं कि इन की अहमियत का राज़ फाश कर दूं । लिहाज़ा जबला के लश्कर के मुकाबले में हमारे लश्कर से चंद मुजाहिद ही जाएं । और कसम है ऐश रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की कि जबला हमारे लश्कर के लोगों को इस हाल में देखेगा कि वह सिर्फ परवर्दगारे आलम की रज़ा मन्दी के लिये ही लड़ते हैं ।

हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि ऐ अबू सुलैमान ! तुम्हारी राए मुनासिब है । तुम हमारे लश्कर से मुनासिब मुजाहिदों का इन्तिखाब कर लो । आगे का अहवाल हज़रत अल्लामा वाकदी की ज़बानी समाअत करें :

''पस कहा खालिद बिन अल-वलीद ने कि मैं चाहता हूं कि मुन्तखब करूं अपने लश्कर से तीस आदमी । पस लड़े हर आदमी हम में से दो हज़ार से इन मुतनस्सिरा से । पस नहीं बाकी था कोई शख्स मुसल्मानों से मगर यह कि तअज्जुब किया उस ने मकूला खालिद बिन अल-वलीद से और गुमान किया उन की निस्बत मज़ाह का । पस जिस शख्स ने पहले उन से इस बात में उस दिन कलाम किया वह अबू सुफियान थे । पस कहा उन्हों ने कि ऐ बेटे वलीद के । आया यह कलाम तुम्हारा मज़ाह का है या सहीह और दुरुस्त है । खालिद बिन अल-वलीद ने कहा कसम है उस ज़ात की जिस की में इबादत करता हूं कि नहीं कहा मैं ने मगर कलाम सहीह और दुरुस्त को ।''

(हवाला : फुतूहुश्शाम, अज़ : अल्लामा वाकदी, सफ़्हा : 209)

सिर्फ तीस (30) आदमी ले कर साठ हज़ार से लड़ने जाने की हज़रत खालिद की तज्वीज़ सुन कर तमाम मुजाहिद तअज्जुब में पड़ गए और यह गुमान किया कि हज़रत खालिद शायद मज़ाह और खुश तबई के तौर पर यह बात कह रहे हैं । लिहाज़ा हज़रत अबू सुफियान ने हज़रत खालिद से पूछा कि क्या वाकई आप सिर्फ तीस आदमी को ले कर साठ हज़ार से लड़ने का इरादा रखते हैं ? या यह बात ब-तौर मज़ाह कही है ? हज़रत खालिद ने हल्फिया जवाब दिया कि हां वाकई मेरा यही इरादा है ।

हज़रत अबू सुफियान ने हज़रत खालिद से कहा कि ऐ खालिद ! अल्लाह तबारक व तआला का इर्शाद है :

"وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ وَاَحْسِنُوْا"

(सूरा अल-बकरा, आयत : 195)

तर्जुमा : ''और अपने हाथों हलाकत में न पड़ो ।'' (कन्जुल ईमान)

हज़रत अबू सुफियान ने मज़ीद कहा कि ऐ खालिद ! अगर तुम यह कहते कि हमारा एक आदमी इन के दो आदमियों से लड़ेगा तो बात ठीक थी मगर एक आदमी दो हज़ार आदमियों से लड़े, तो इस का मत्लब यह हुवा कि वह अपने हाथों हलाकत में पड़ता है। हज़रत खालिद ने जवाब दिया कि मैं इस्लामी लश्कर से ऐसे बहादुर शहसवारों को मुन्तखब करूंगा जिन्हों ने अपनी जानों को राहे खुदा में वक्फ कर दिया है। वह सिर्फ अल्लाह और अल्लाह के रसूल की रज़ा मन्दी के लिये ही जेहाद करते हैं। अगर वह जलती हूई आग पर चलेंगे तो आग भी सर्द हो जाएगी :

ऐ इश्क तेरे सदके जलने से छूटे सस्ते
जो आग बुझा देगी, वो आग लगाई है

(अज़ : इमामे इश्को मुहब्बत, हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत अबू सुफियान ने कहा कि ऐ खालिद ! मैं तुम्हारी बात से मुत्तफिक हूं। बैः शक हमारे लश्कर में ऐसे दिलैर मुजाहिद मौजूद हैं कि अगर इन से कहा जाए कि तन्हा साठ हज़ार के मुकाबले के लिये जाओ तो वह बिला किसी झिजक और ता'म्मुल के तैयार हो जाएंगे, लैकिन मुजाहिदों के साथ मुहब्बत और शफक्त होने की वजह से मेरी तुम से दरख्वास्त है कि **तुम बजाए तीस के साठ आदमियों के साथ जाओ या'नी एक हज़ार नस्रानी के मुकाबले में एक मो'मिन। और मुझे उम्मीद है कि तुम ज़रूर काम्याब होगे।** हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत अबू सुफियान की दरख्वास्त की ताईद करते हुए फरमाया कि ऐ अबू सुलैमान ! अबू सुफियान की राए मुनासिब है। मैं भी यही कहता हूं। अपने मुअज़्ज़ज़ सरदार का हुक्म सर आंखों पर लेते हुए हज़रत खालिद बिन वलीद तीस के बजाए साठ मुजाहिदों को ले कर साठ हज़ार नस्रानी अरब के मुकाबले के लिये रवाना हुए।

हज़रत खालिद बिन वलीद ने अपने साथ जिन साठ मुजाहिदों को लिया था उन में हस्बे ज़ैल मशाहीर शामिल थे :

(1)हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम (2) हज़रत फज़्ल बिन अब्बास
(3) हज़रत शुर्हबील बिन हसना (4) हज़रत सफवान बिन उमय्या
(5) हज़रत सुहैल बिन अम्र (6) हज़रत रबीआ बिन आमिर
(7) हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर (8) हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई

(9) हज़रत अदी बिन हातिम ताई (10) हज़रत का'ब बिन मालिक अन्सारी
(11) हज़रत उबादा बिन सामित (12) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह
(13) हज़रत अबू अय्युब अन्सारी
(14) हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र सिद्दीक
(15) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर फारूक (16) हज़रत राफेअ बिन सुहैल
(17) हज़रत अब्दुल्लाह बिन यज़ीद (18) हज़रत हम्ज़ा बिन उमर
(19) हज़रत मालिक बिन नज़्र (20) हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान
(21) हज़रत मुगीस बिन कैस (22) हज़रत अब्दुलमन्ज़र बिन औफ
(23) हज़रत कैस बिन सईद खिज़्रजी (24) हज़रत हाशिम बिन सईद ताई
(25) हज़रत कअकआ बिन अम्र तमीमी (26) हज़रत आसिम बिन अम्र

(रदियल्लाहो तआला अन्हुम अज्मईन)

हज़रत खालिद बिन वलीद ने अपने साथियों को ताकीद फरमाई कि तुम अपने साथ सिर्फ तल्वार लेना, नैज़ा और तीर कमान मत लेना क्यूं कि नैज़ा का वार कभी कारगर होता है और कभी खता भी करता है और तीर का इस्ते'माल दूर से लड़ते वक्त ही किया जाता है, लिहाज़ा तुम तीर और नैज़ा साथ मत लेना। ख्वाह म ख्वाह इस का वज़न उठाना पड़ेगा और इस को संभालने का तकल्लुफ करना पड़ेगा। हज़रत खालिद ने मज़ीद फरमाया कि ऐ शम्ए रिसालत के परवानो ! मा'रकए जंग में सब्र और इस्तिकलाल से काम लेना और दुश्मन के मुकाबले में साबित कदम रहेना। अल्लाह तआला हमारी ज़रूर मदद फरमाएगा। तमाम मुजाहिदों ने कहा कि ऐ अबू सुलैमान ! तुम हमें पीठ फैर कर भागते हुए न देखोगे। फिर हज़रत खालिद बिन वलीद इस्लामी लश्कर के सरदार हज़रत अबू उबैदा के पास आए और रुखसत की इजाज़त तलब की। हज़रत अबू उबैदा ने फतह व आफियत की दुआ से नवाज़ कर रुखसत फरमाया। हज़रत खालिद और इन के हमराह साठ (60) मुजाहिद, इस्लामी लश्कर के कैम्प से रवाना हुए। मुजाहिदीन ने तहलील व तक्बीर की सदा बुलन्द की और इन की मुताबेअत में पूरे लश्कर ने नारए तक्बीर का जो शौर बुलन्द किया उस से कोह व सहरा गूंज उठे। लश्करे इस्लाम ने खैर व आफियत की दुआएं दे कर इस्लाम के शैरों को अलवदा' किया।

हज़रत खालिद बिन वलीद और इन के साथी जब रवाना हुए तो इन के चेहरे नूरे ईमान से चमक रहे थे। किसी के चेहरे पर खौफ और दहशत का नाम व निशान न था बल्कि तमाम मिस्ले शैर मा'लूम होते थे। ब-ज़ाहिर वह मौत के मुंह में जा रहे थे। साठ मुजाहिदों के सामने जबला का साठ हज़ार का लश्कर मिस्ले मौत का बादल सर पर मुंडला रहा था, लैकिन मुजाहिदों को इन की कोई परवाह नहीं। तहफ्फुज़े नामूसे रिसालत की खातिर वह अपनी जान खपाने खुशी खुशी जा रहे थे :

हुस्ने यूसुफ पे कटीं मिस्र में अंगुश्ते ज़नाँ
सर कटाते हैं तेरे नाम पे मर्दाने अरब

(अज़ : इमामे इश्को मुहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

जबला बिन ऐहम गस्सानी ने देखा कि इस्लामी लश्कर से चंद अश्खास हमारी तरफ आ रहे हैं, पस उस ने यह गुमान किया कि इन पर मेरा रोअब व खौफ छा गया लिहाज़ा सुलह की गुफ्तगू करने आ रहे हैं। जबला इस इन्तिज़ार में था कि वह मेरे पास आ कर ठहरेंगे। लैकिन हज़रत खालिद बीच मैदान में आ कर रुक गए और सफ बन्दी करने लगे। जबला को तअज्जुब हुवा कि यह लोग आते आते मैदान में क्यूं ठहर गए ? लिहाज़ा वह अपने लश्कर के हमराह आगे बढ़ा और करीब आ कर पुकार कर कहा कि ऐ अरबी बिरादरो ! तुम क्या कहना चाहते हो ? मुझे तुम से यही उम्मीद थी कि मेरे मश्वरे को कबूल कर के लड़ने का इरादा तर्क कर दोगे और सुलह के लिये आमादा हो जाओगे। तुम सुलह के मुआमले में क्या गुफ्तगू करना चाहते हो ? हज़रत खालिद ने फरमाया कि **कैसी सुलह ? और कैसी गुफ्तगू ? हम तुम से सुलह की गुफ्तगू करने नहीं, बल्कि लड़ने आए हैं।** ऐ सलीब की इबादत करने वालो ! निकलो और मुकाबला करो। जबला ने देखा कि इन के तैवर तो वही हैं और कुछ फर्क नहीं पड़ा और लड़ाई का चेलेन्ज देते हैं, तो उस ने भी तुन्द लह्जा इख्तियार करते हुए कहा कि मुझ से कहते हो कि निकलो और मुकाबला करो। लैकिन मैं तो अपने लश्कर के साथ मैदान में लड़ने के लिये ही निकला हूं। अगर जंग का इत्ना ही शौक है तो अपने लश्कर से कहो कि वह लड़ने निकले। हज़रत खालिद ने फरमाया कि **क्या हम साठ आदमी तुझे नज़र नहीं आते ?** जबला ने जवाब देते हुए कहा कि तुम को तो देख रहा हूं लैकिन तुम्हारा लश्कर नज़र नहीं आता। जाओ और लश्कर ले कर आओ।

हज़रत खालिद ने फरमाया कि मैं लश्कर ले कर तो आया हूं। मैं तुम से गुफ्तगू करने नहीं बल्कि लड़ने आया हूं। जबला ने कहा कि क्या तुम को यह मा'लूम नहीं कि मेरे साथ जो लश्कर है इस की ता'दाद साठ हज़ार है और तुम सिर्फ साठ आदमी हो। **हज़रत खालिद ने फरमाया कि तेरे साठ हज़ार के लश्कर के लिये हम साठ मुजाहिद काफी हैं बल्कि ज़रूरत से ज़ियादह हैं। तेरे साठ हज़ार के लश्कर के लिये तो हम तीस (30) मुजाहिद ही काफी थे, लिहाज़ा में तीस (30) आदमी ले कर ही आता था, लैकिन हमारे लश्कर के रहम दिल सरदार ने हमारी मशक्क़त का ख्याल करते हुए हमारी ता'दाद में इज़ाफा फरमा दिया। और मैं तीस के बजाए साठ आदमी ले कर आया हूं।** जबला ने कहा कि मेरा लश्कर तुम को चुटकी बजा कर मसल देगा और हलाक कर देगा। गुरूर मत करो और मुनासिब ता'दाद में लश्कर ले कर आओ। **हज़रत खालिद ने फरमाया कि हमारी फिक्र छोड़ दे और अपनी फिक्र कर। हमारे लश्कर की ता'दाद के मुआमले में दख्ल अन्दाज़ी मत कर। तेरे मुकाबले के लिये कितनी ता'दाद पर मुश्तमिल लश्कर दरकार है वह हमें देखना है और हमारे हिसाब से हम साठ आदमी तेरे लश्कर के लिये ज़रूरत से ज़ियादह हैं।** लिहाज़ा अब बातें बनाना छोड़ और हम्ला की तैयारी कर।

जबला ने अपने साथियों से कहा कि मुसल्मानों ने मुझ को बड़ी कश्मकश में डाल दिया है अगर हमारे साठ हज़ार के लश्कर ने इन साठ मुसल्मानों को मार डाला तो दुनिया यह कहेगी कि **इस में कौन सी बहादुरी का काम है ?** और अगर वह गालिब आ गए तो **कयामत तक हमारी नसलें किसी को मुंह दिखाने के काबिल न रहेंगी।** हमारी हालत तो सांप के मुंह में छछुन्दर जैसी हो गई है, निगले तो अंधा, उगले तो कोढ़ी बने। लड़ते हैं तो भी ज़लील और न लड़ें तो मज़ीद रुस्वाई। थोड़ी दैर शश व पंज में रहने के बा'द जबला ने हज़रत खालिद से कहा कि मैं तुम को दाना और अक्लमन्द समझता था, लैकिन आज तुम्हारी दानिशमन्दी की कलई खुल गई। खुद को और अपने साथियों को हलाकत में डालने चले आए हो। हज़रत खालिद ने फरमाया कि हमारी ता'दाद की किल्लत मत देख, खुदा की कसम हम में का एक मर्द तुम्हारे एक हज़ार मर्दों के लिये काफी है। आज़मा कर देख ले, **आज़माइश से क्यूं डरता है ?**

जबला ने हज़रत खालिद का ता'ना सुना तो गुस्से से भूत हो गया और अपने लश्कर को हम्ला करने का हुक्म दिया। साठ हज़ार मुतनस्सिरा अरब साठ मुजाहिदों पर आ

पड़े। ब–ज़ाहिर ऐसा महसूस होता था कि जिस तरह समन्दर तिन्के को बहा ले जाता है, इस तरह यह लश्करे जर्रार मुठ्ठी भर मुजाहिदों को बहा ले जाएगा। लैकिन इस्लाम के शैर दिल मुजाहिद आहनी चट्टान की तरह रूमी लश्कर के सैलाब के सामने डटे रहे। रूमी लश्कर के नस्रानी अरबों ने यकबारगी हम्ला कर के सहाबए किराम को घैरे में ले लिया। सहाबए किराम ने सब्र व इस्तिकलाल से मुकाबला किया। तैज़ रफ्तारी से तैग ज़नी कर के दुश्मनों को करीब आने से रोक दिया। रूमी लश्कर ने ऐसा शौरो गुल बुलन्द किया कि मुजाहिदों की आवाज़ सुनने में नहीं आती थी। मुजाहिद मुसल्सल नारए तक्बीर बुलन्द कर के अपने साथियों को जौश दिलाते थे लैकिन रूमी लश्कर के शौर व गुल में इन की आवाज़ नक्कार खाने में तूती की आवाज़ की तरह दब जाती थी। हज़रत अबू उबैदा और तमाम लश्करे इस्लाम कैम्प से तारीख का अछूता मा'रका बड़ी बे–करारी से देख रहे थे। लैकिन हज़रत खालिद और इन के साथी कहीं भी नज़र नहीं आते थे। सब ने यही गुमान किया कि हज़रत खालिद और इन के साथी बच न सकेंगे, लिहाज़ा तमाम पर कलक और इज़्तिराब लाहिक हुवा। तमाम के तमाम बारगाहे इलाही में दस्त बदुआ थे और हज़रत खालिद और इन के साथियों की सलामती के लिये रो रो कर दुआएं कर रहे थे।

लैकिन **खुदा की तल्वार** हज़रत खालिद **''सैफुल्लाह''** ने आज अपना जौहर दिखाया। हज़रत खालिद बिन वलीद, हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र, हज़रत फज़्ल बिन अब्बास, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर फारूक और हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर इन छे (६) सहाबा ने अपने घोड़े आपस में हिसार की सूरत मिला लिये। और एक दूसरे की निगरानी करते हूए खुद को और अपने साथी को दुश्मन के वार से बचाते हुए बड़ी दिलैरी से लड़ते थे। जो भी दुश्मन करीब आता उसे ज़मीन पर मुर्दा डाल देते थे। और जिस तरफ हम्ला करते थे सफें की सफें उलट कर रख देते थे। ऐसा लगता था कि इन की तलवारें रूमियों के खून की प्यासी हैं और अपनी प्यास बुझाने के लिये तल्वार सुरअत से रूमियों के गलों तक पहुंच कर खून के फव्वारे जारी कर देती थीं। जंग अपने पूरे शबाब पर थी। आग के शौ'लों की तरह जंग भड़क रही थी। तलवारों के टकराने से फुलझड़ी की तरह आग की चिंगारियां उड़ती थीं। हज़रत खालिद बिन वलीद ने साथियों को पुकार कर फरमाया कि ऐ मुजाहिदो! दिलैरी और शुजाअत से मुकाबला करो। इसी जगह से हम को आखेरत की जानिब कूच करना है। **मैं अर्सए दराज़ से शहादत की तमन्ना रखता हूं और मुझे उम्मीद है कि मेरी शहादत की आरज़ू आज पूरी हो जाएगी।** हज़रत खालिद की इस गुफ्तगू ने मुजाहिदों में एक जौश और वल्वला पैदा कर दिया। तमाम मुजाहिदीन सहाबा

जबला के लश्कर पर मिस्ले शैर टूट पड़े। जबला इन इस्लामी शैरों की तैग ज़नी की सुरअत देख कर हैरान था। ब–ज़ाहिर सिर्फ साठ सहाबए किराम लड़ने वाले थे। सिर्फ साठ तलवारें चलती थीं, लैकिन जबला ने अपने लश्कर के मक्तूलीन को देखा तो यह गुमान गुज़रने लगा कि साठ मुसल्मान तल्वार ज़नी नहीं कर रहे हैं बल्कि हज़ारों तलवारें उस के लश्कर पर पड़ती हों, इस तरह जबला के लश्कर के सिपाही टपाटप मक्तूल हो कर ज़मीन पर गिरते थे। जबला बिन ऐहम हवास बाख्ता हो गया, उस की समझ में नहीं आता था कि यह सब क्या हो रहा है? बद–हवासी के आलम में ज़ौर ज़ौर से चीख चीख कर अपने सिपाहियों को हम्ले की शिद्दत सख्त करने का हुक्म देता था, लैकिन इस्लामी लश्कर के शैरों ने इन को भैड़ बकरियों की तरह चीर फाड़ कर रख दिया।

सुब्ह से ले कर शाम तक घमसान की जंग जारी रही। जबला के लश्कर के सिपाही थक कर चूर हो गए थे, लैकिन हज़रत खालिद बिन वलीद और इन के तमाम साथी ताज़ा दम लड़ते रहे। ऐसा लगता था कि वह अभी अभी ही मैदान में लड़ने आए हैं, हालां कि वह सुब्ह से तैग ज़नी कर रहे थे, लैकिन इश्के रसूल की ताकत और बरकत से अब तक ताज़ा दम थे। थकन का नाम व निशान न था :

टपकता रंगे जुनूं इश्के शेह में हर गुल से
रगे बहार को नश्तर रसीदा होना था

(अज़ : इमामे इश्को मुहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

आफ्ताब भी मश्रिक से मग्रिब की मसाफत तय करते करते थक गया, वह भी आगोशे उफक में समा जाने के लिये तैज़ी से चल कर गुरूब की मन्ज़िल में आ गया। हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह को हज़रत खालिद बिन वलीद और इन के हमराह जाने वाले सहाबए किराम की सख्त फिक्र हो रही थी। कलक और इज़्तिराब की वजह से इन की आंख से आंसू जारी थे। हज़रत खालिद और इन के साथियों के वापस लौटने की उम्मीद बाकी न रही थी। लिहाज़ा उन्हों ने इस्लामी लश्कर को यल्गार का हुक्म देने का इरादा किया, लैकिन हज़रत अबू सुफियान ने इन से कहा कि ऐ सरदार! इत्मीनान रखो, इन्शा अल्लाह तआला हमारे भाइयों को कुछ नहीं होगा और इन को गल्बा हासिल होगा। थोड़ी ही दैर में जबला बिन ऐहम का अरब मुतनस्सिरा लश्कर दफ्अतन पीठ दिखा कर भागा। हज़रत खालिद और इन के साथियों ने बुलन्द आवाज़ से पुकारा

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ
وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْر

जबला बिन ऐहम गस्सानी के लश्कर के सिपाही इस तरह डर कर भागते थे कि गोया आस्मान से किसी ने इन को डरा कर भगा दिया हो। भागने वालों में जबला सब से आगे था। हज़रत खालिद जब इस्लामी लश्कर में वापस आए तो इन के साथ सिर्फ बीस (20) मुजाहिद थे या'नी चालीस मुजाहिद कम थे। हज़रत खालिद बिन वलीद अपने चेहरे पर तमांचे मारने लगे और कहते थे कि ऐ वलीद के बेटे ! तू ने मुसल्मानों को हलाक किया। इस मआमला में कल कयामत के दिन खुदा को क्या जवाब देगा ? फिर हज़रत खालिद अपने साथियों पर अफ्सोस कर के रोने लगे और अपने चेहरे पर ज़ौर ज़ौर से तमांचे मारने लगे। हज़रत खालिद बिन वलीद के इस तरह रोने से इस्लामी लश्कर के कैम्प में कोहराम मच गया। हज़रत खालिद के साथ साथ सब रोने लगे। हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह बे-करारी के आलम में दौड़ते हुए हज़रत खालिद के पास आए तो क्या देखते हैं कि हज़रत खालिद अपने चेहरे पर अपने ही हाथों से तमांचे मार रहे हैं और ज़ार व कतार रो रहे हैं। हज़रत अबू उबैदा ने लपक कर हज़रत खालिद का हाथ थाम लिया और फरमाया कि ऐ अबू सुलैमान ! तवक्कुफ करो। क्यूं इतने बे चैन व परैशान हो ? हज़रत खालिद ने जवाब दिया कि ऐ सरदार ! इस्लामी लश्कर के चालीस अफराद कम हैं और इन गुम होने वालों में हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम, हज़रत फज़्ल बिन अब्बास, हज़रत आसिम बिन अम्र, हज़रत अबू अय्युब अन्सारी, हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह, हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर, हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान, हज़रत रबीआ बिन आमिर, हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई वगैरा जैसे अकाबिर सहाबा हैं। हज़रत अबू उबैदा ने फौरन इस्तिर्जा' पढ़ा और कहा कि बे:शक हमारे बेहतरीन शेहसवाराने मुस्लिमीन को हम ने खो दिया। اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ।

उस वक्त रात का अंधेरा छा गया था। हज़रत अबू उबैदा ने मश्अलें रौशन कीं और अपने साथ काफी ता'दाद में मुजाहिदों को ले कर मैदाने जंग में आए। हज़ारों मुजाहिद हाथ में जलती हूई मश्अलें ले कर मैदान में फैल गए। और मक्तूलीन की लाशें टटोलनी शुरू कीं ताकि शोहदाए किराम की मुकद्दस लाशों को उठा कर कैम्प में लाएं। लैकिन जिस लाश को भी उठा कर देखते थे वह रूमी लश्कर के सिपाही की होती। रूमी लश्कर के मुतनस्सिरा अरब की लाशों से ही मैदान भरा पड़ा था। बड़ी मुश्किल से इस्लामी लश्कर के दस शहीदों

की लाशें मिलीं, जिन को ले कर हज़रत अबू उबैदा कैम्प में आए। अब भी तीस सहाबा गुम थे। क्यूं कि हज़रत खालिद के साथ जंग से बीस सहाबा वापस आए थे। दस सहाबा की लाशें मैदाने जंग से दस्तयाब हूई थीं। लिहाज़ा अब भी तीस सहाबा मफ्कूदुल खबर थे।

हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि हो सक्ता है बकिया सहाबा कैद हों गए हों या भागते हुए रूमी लश्कर के तआकुब में गए हों। **हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम** हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की फूफी के बेटे थे और **हज़रत फज़्ल बिन अब्बास** हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के चचा के बेटे थे। लिहाज़ा इन दोनों के गुम होने की वजह से हज़रत अबू उबैदा, हज़रत खालिद और तमाम मुसल्मान बहुत परेशान थे। हज़रत अबू उबैदा ने खुशूअ व खुज़ूअ के साथ बारगाहे खुदावन्दी में इन अल्फाज़ में दुआ की **:**

> **"ऐ मेरे अल्लाह ! एहसान कर तू हम पर कुशूद कारी के साथ और अपने नबी के फूफी के बेटे और अपने नबी के चचा के बेटे के मुआमले में हम को रंजीदा न कर।"**

फिर हज़रत अबू उबैदा ने पुकार कर फरमाया कि ऐ गिरोहे मुस्लिमीन ! तुम में से कौन अपने भाइयों की तलाश में जा कर इस का अज्र व सवाब अल्लाह से हासिल करने का ख्वाहिशमन्द है ? हज़रत खालिद ने कहा कि ऐ सरदार ! इस काम को अन्जाम देने में जाऊंगा। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि ऐ अबू सुलैमान ! पूरा दिन जंग करने की वजह से थक गए हो, लिहाज़ा आराम करो। हज़रत खालिद ने जवाब दिया कि खुदा की कसम ! मैं ज़रूर अपने भाइयों की तलाश में जाऊंगा। हज़रत खालिद का अज़्म व इस्रार देखते हुए हज़रत अबू उबैदा ने इन को जाने की इजाज़त दी, हज़रत खालिद अपने साथ चंद शेहसवारों को ले कर मफ्कूद सहाबए किराम की तलाश व जुस्तजू में निकले, हज़रत खालिद अपने साथियों के हमराह अभी बहुत दूर नहीं गए थे कि सामने से कुछ सवार आते नज़र आए। जब वह करीब हुए तो इन सवारों ने तहलील व तक्बीर की सदाएं बुलन्द कीं। हज़रत खालिद ने इन को तक्बीर व तहलील से जवाब दिया। थोड़ी देर में वह सवार हज़रत खालिद से आ मिले। वह कुल पच्चीस सवार अजिल्ल-ए सहाबए किराम थे। **हज़रत ज़ुबैर बिन अल-अव्वाम और हज़रत फज़्ल बिन अब्बास इन के आगे थे।** हज़रत खालिद ने इन को मर्हबा कहा और सलाम पैश किया और इन की ता'ज़ीम व तक्रीम के बा'द अर्ज़ किया कि ऐ रसूले मक्बूल के चचा के साहिबज़ादे ! आप कहां चले

गए थे। आप की गुमशुद्गी की वजह से सरदार अबू उबैदा और तमाम मुसल्मान परेशान हैं और मैं आप हज़रात की तलाश में निकला हूं। हज़रत फज़्ल बिन अब्बास ने फरमाया कि ऐ अबू सुलैमान ! जब मुश्रिकीन हज़ीमत उठा कर भागे, तो हमारे कुछ साथियों को कैद कर के अपने साथ ले जा रहे थे, लिहाज़ा हम ने इन का तआकुब किया, ताकि उन के हाथों से अपने भाइयों को छुड़ा लें, लैकिन वह हमारे हाथ न लगे। और हमारे साथियों का भी कोई सुराग न मिला, हम अपने भाइयों को ढूंढने बहुत दूर तक गए थे, लैकिन इन का कोई पता न चला। हमें अंदेशा है कि रूमियों ने इन्हें शहीद कर दिया है।

हज़रत खालिद और हज़रत फज़्ल बिन अब्बास अपने साथियों के साथ कैम्प में वापस आए इन की वापसी की खुशी में हज़रत अबू उबैदा ने सजदए शुक्र अदा किया। हज़रत अबू उबैदा को जब यह मा'लूम हुवा कि पांच सहाबा कैद हो गए हैं तो इन्हें बड़ा मलाल हुवा। हज़रत खालिद बिन वलीद ने तमाम मुसल्मानों को मुखातब कर के फरमाया कि मैं ने अपनी जान खुदा की राह में खर्च करने की बहुत कौशिश की मगर मुझ को शहादत नसीब न हूई। दस खुश नसीब हज़रात ने शहादत की सआदत पाई है। और हमारे पांच मुजाहिद कैद हो गए हैं। इन्शा अल्लाह मैं अपने भाइयों को कैद से रिहाई दिला कर ही दम लूंगा। रात काफी गुज़र चुकी थी लिहाज़ा तमाम मुजाहिद अपने अपने खैमे में चले गए और खैर व आफियत से रात बसर हूई।

<u>जंगे यर्मूक के पहले दिन की जंग की कैफियत हस्बे ज़ैल रही</u> :–

❀ हज़रत खालिद बिन वलीद सिर्फ साठ सहाबए किराम के साथ लड़ने गए थे जिन में से :–

20	सहाबा हज़रत खालिद के साथ मैदाने जंग से वापस आए।
10	सहाबा शहीद हुए।
25	हज़रत फज़्ल बिन अब्बास के साथ रात में दैर से वापस आए।
5	कैद हुए।
60	मीज़ान

❀ जो सहाबए किराम कैद हुए थे उन के अस्माए गिरामी यह हैं :

(1) हज़रत राफेअ बिन उमैरा ताई (2) हज़रत ज़िरार बिन अज़वर

(3) हज़रत रबीआ बिन आमिर (4) हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान

(5) हज़रत आसिम बिन अम्र (रदियल्लाहो तआला अन्हुम)

● रूमी लश्कर की जानिब से जबला बिन ऐहम गस्सानी की सरदारी में कौमे बनी गस्सान और कौमे लख्म के साठ हज़ार नस्रानी अरब लड़ने आए थे। जिन में से :

55000	जबला के साथ रूमी लश्कर में वापस लौटे।
+ 5000	मक्तूल हुए।
60,000	मीज़ान

जंगे यर्मूक का दूसरा दिन

जब बाहान को पहले दिन की जंग का हाल मा'लूम हुवा कि सिर्फ साठ मुसल्मानों ने अपनी नस्ल के साठ हज़ार अरब मुतनस्सिरा के लश्कर को हज़ीमत दी है और पांच हज़ार सिपाहियों को गाजर मूली की तरह काट कर रख दिया है तो मुजाहिदों के इस बे नज़ीर कारनामे से रूमी लश्कर का सरदार बाहान हैरत से हक्का बक्का रह गया। उस ने जबला बिन ऐहम गस्सानी को अपने खैमा में बुलाया और सरज़निश करते हुए कहा कि मैं ने तो यह उम्मीद की थी कि तुम मुसल्मानों को पीस कर रख दोगे, लैकिन मआमला बर-अक्स पैश आया। तुम ने अपने साथ **हमारी भी नाक कटवा दी।** सिर्फ साठ मुसल्मानों के मुकाबले में तुम साठ हज़ार हट्टे कट्टे और मुसल्लह होने के बा-वुजूद भी **न टिक सके** और **मुंह की खाई।** तुम्हारी बुज़दिली और काहिली ने मुझे हिरक्ल बादशाह को मुंह दिखाने के काबिल न रखा। तुम्हारी शिकस्ते फाश की वजह से रूमी लश्कर का हौसला पस्त हो गया।

जबला ने मा'ज़रत और अपनी सफाई पैश करते हुए कहा कि ऐ सरदार ! हम ने जंग में किसी किस्म की कोताही नहीं की। तमाम दिन मेरे सिपाही जान हथेली पे ले कर लड़ते रहे और करीब था कि हम तमाम मुसल्मानों को लुक्मए अजल बना देते, शाम के वक्त मेरे लश्कर के तमाम सिपाहियों ने आस्मान से एक भयानक आवाज़ में किसी पुकारने वाले को यह कहते हुए सुना कि **''ज़िन्दगी चाहते हो तो भागो और हलाक होना है तो ठहरो''।** इस आवाज़ में ऐसा डरावना शौर और रोअब था कि लश्कर का हर सिपाही भाग खड़ा हुवा। अब मुझे ऐसा लगता है कि मुसल्मानों का मा'बूद इन को मदद और गल्बा देता है। अगर यह बात न होती तो इन के सिर्फ साठ आदमी हमारे साठ हज़ार सिपाहियों से दिन भर मुकाबला में डटे न रहते। जबला की यह गुफ्तगू बाहान को बहुत ना-गवार गुज़री और उस ने तेवरी चढ़ा कर कहा कि अफ्सोस की बात है कि तुम को सफीर बना कर इन के पास सुलह की गुफ्तगू करने भेजता हूं, तो तुम **खोटे पैसे की तरह वापस** आते हो और जब लड़ने भेजता हूं तो **खड़ी चोट खा कर लौटते हो।** कसम है मुकद्दस इन्जील की कि अब मैं ने यह अज़्म किया है कि ब:ज़ाते खुद तमाम लश्कर के साथ इन पर हम्ला करने जाउंगा और इन को **मट्टी में मिला दूंगा।**

जबला ने बाहान की नाराज़गी देखी तो सहम गया। बाहान की तरफ से इतनी लताड़ पड़ने के बा-वुजूद भी **रस्सी जल गई मगर बल नहीं गया** और अपनी बहादुरी और शुजाअत की बड़ाई मारते हुए कहा कि ऐ सरदार ! मैं आप के सामने एक आइटम पैश करता हूं। यह कह कर उस ने खैमा के बाहर अपने आदमियों को पांच कैदी सहाबा को लाने का इशारा किया। जब सहाबए किराम बाहान के सामने लाए गए, तो बाहान ने इन्हें ब-नज़रे हिकारत देखा और जबला से पूछा कि यह कौन लोग हैं ? अपनी शुजाअत की दाद हासिल करने की गरज़ से जबला ने जवाब दिया कि यह इस्लामी लश्कर के अह्म रुक्न और सुतून हैं। कुल इन के साठ आदमी लड़ने आए थे इन तमाम को मैं ने मार डाला है और इन पांच को कैद कर के लाया। अब मुसल्मानों के लश्कर में कोई काबिल अहमियत बहादुर शेहसवार बाकी नहीं, ब-जुज़ एक शख्स के। मुझे अफ्सोस है कि सिर्फ वही एक शख्स हमारे हाथ से बच कर भाग निकला। बाहान ने पूछा कि वह शख्स कौन है ? जबला ने कहा कि वही एक शख्स मुसल्मानों को लड़ाई में साबित कदम रखता है। उस शख्स से हमारे लश्कर का हर आदमी डरता है। उस की दिलैरी का यह हाल है कि वह अकेला हमारे लश्कर में घुस आता है और सफें उलट कर रख देता है। बसरा, दमिश्क, हुमुस, अजनादीन, कन्सरीन वगैरा के मा'रकों में उसी ने रूमी लश्करों को ज़ैर किया है। हाकिम दमिश्क तुमा का मुर्जुद दीबाज तक तआकुब कर के कत्ल किया और हिरक्ल बादशाह की बेटी को गिरफ्तार किया था। **उस शख्स का नाम खालिद बिन वलीद है।** अगर हम किसी तरह इस को खत्म कर दें तो इस्लामी लश्कर की **कमर टूट जाए।** फिर मुसल्मानों को मुल्के शाम पर आंख भर कर देखने की हिम्मत न हो, बल्कि खाइब व खासिर हो कर मुल्के हिजाज़ भाग जाएं।

कैदियों की रिहाई का फरैब दे कर बाहान का हज़रत खालिद को बुलाना

जबला की ज़बानी हज़रत खालिद की शुजाअत की दास्तान सुन कर बाहान को हज़रत खालिद की अहमियत का एहसास हुवा। बाहान ने कहा कि मैं उस को मक्रो फरैब से यहां बुला कर इन पांचों कैदियों के साथ मार डालूंगा। बाहान ने **''जर्जा''** नाम के रूमी को बुलाया। जर्जा निहायत ही अक्लमन्द और चर्ब ज़बान शख्स था। फसीह व बलीग अरबी में गुफ्तगू करने में उसे महारत हासिल थी। बाहान ने जर्जा से कहा कि तू मेरे एलची की हैसियत से इस्लामी लश्कर के सरदार के पास जा और पैगाम पहुंचा कि सरदार बाहान तुम

से तुम्हारे कैदियों की रिहाई और सुलह के मआमले में गुफ्तगू करना चाहता है, लिहाज़ा तुम किसी दाना शख्स को ब-तौर एलची गुफ्तगू करने भेजो और कौशिश यह करना कि एलची की हैसियत से खालिद बिन वलीद ही आएं। जर्जा इस्लामी लश्कर के कैम्प में आया। इत्तिफाक से उस की मुलाकात हज़रत खालिद से ही हूई। जर्जा ने हज़रत खालिद को बाहान का पैगाम सुनाया। हज़रत खालिद ने जर्जा से फरमाया कि मैं ब-तौर एलची आता हूं। यह कह कर हज़रत खालिद ने जर्जा को अपने खैमा में बिठाया और उस से फरमाया कि तू यहां ठहर, मैं अपने सरदार से इजाज़त ले आऊं। हज़रत खालिद हज़रत अबू उबैदा के पास आए और कहा कि ऐ सरदार! रूमी एलची आया हुवा है। रूमी लश्कर के सरदार ने हमारे कैदियों और सुलह के मुआमले में गुफ्तगू करने एलची तलब किया है। मैं जाने का इरादा रखता हूं, आप इजाज़त अता फरमाएं। उम्मीद है कि इन्शा अल्लाह तआला में पांचों सहाबा को छुड़ा कर ले आऊंगा। हज़रत खालिद बिन वलीद तने तन्हा जाने का इरादा रखते थे। लैकिन हज़रत अबू उबैदा ने इन्हें अकेले जाने से मना' किया और कहा कि अपने साथ मुजाहिदों को ले जाओ, ताकि अगर बाहान कोई गद्र करे तो तुम्हारे साथी तुम्हारी इआनत कर सकें। हज़रत खालिद ने जवाब दिया कि ऐ सरदार! आप के इर्शाद के मुताबिक में अपने साथ एक सौ मुजाहिदों को ले कर जाऊंगा।

हज़रत खालिद अपने खैमा पर वापस आए और अपने साथ एक सौ (१००) मुजाहिदों को लिया। जिन में हज़रत मिरकाल बिन हाशिम, हज़रत उतबा बिन अबी वक्कास अज़्ज़हरी, हज़रत सईद बिन ज़ैद, हज़रत मैसरा बिन मस्रूक, हज़रत कैस बिन हबीरा, हज़रत शुर्हबील बिन हसना, हज़रत सुहैल बिन उमर तमीमी, हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी, हज़रत उबादा बिन सामित, हज़रत अस्वद बिन सुवैद माज़नी, हज़रत जुल-केलाअ हुमैरी, हज़रत मिक्दाद बिन उमर रबई, हज़रत मिक्दाद बिन अस्वद कुन्दी और हज़रत अम्र बिन मा'दी कर्ब ज़ुबैदी वगैरा जैसे मशाहीर व शुजाअ शेहसवार शामिल थे। हज़रत खालिद ने अपने गुलाम हुमाम से फरमाया कि तुम भी चलो और मेरी सुर्ख कुबा साथ ले लेना। हज़रत खालिद ने सुर्ख चमड़े का एक अच्कन तीन सौ दीनार में मोल लिया था। उस में सोने के दो सूरज टिके हुए थे और उस में चांदी के हलके बने हुए थे।

हज़रत खालिद और इन के साथियों ने अपने साथ तमाम किस्म के हथियार लिये और इस्लामी लश्कर को सलाम करने के बा'द खुदा हाफिज़ कह कर रुखसत हुए। जब हज़रत खालिद और इन के साथी रूमी लश्कर के करीब पहुंचे तो देखा कि रूमी लश्कर

मीलों ज़मीन में फैला हुवा है। लश्कर में हर जगह तलवारें, नैज़े और सामाने हर्ब आफ्ताब की रौशनी में इस तरह चमक रहे हैं कि देखने वाले को यह महसूस होता कि लोहे का समन्दर ठाठें मार रहा है। रूमी लश्कर को देख कर मुजाहिदों ने कल्मए शहादत बुलन्द किया। कल्मए शहादत की बुलन्द आवाज़ सुन कर जबला बिन ऐहम लश्कर के तलीआ के साथ आ पहुंचा और पूछा कि तुम किस मक्सद से यहां आए हो ? सहाबए किराम ने फरमाया कि तुम्हारे सरदार बाहान के बुलावे पर हज़रत खालिद बिन वलीद अपने एक सौ (१००) साथियों के साथ सुलह के मआमले में गुफ्तगू करने आए हैं। जबला ने कहा कि तुम सब यहां ठहरो, मैं बादशाह बाहान को तुम्हारे आने की इत्तिला' दे दूं और इजाज़त हासिल कर लूं। जबला ने जा कर बाहान को इत्तिला' दी कि खालिद बिन वलीद अपने साथ एक सौ आदमी ले कर आए हैं और इन के साथ आने वाले हम्ले करने वाले शैर जैसे हैं। बाहान ने कहा कि मैं ने खालिद बिन वलीद को ही अकेला बुलाया था। वह अपने हमराह एक सौ आदमी ले कर क्यूं आए हैं ? जबला ने वापस आ कर सहाबा से कहा कि बादशाह बाहान ने सिर्फ खालिद बिन वलीद को ही बुलाया है, ताकि वह इन से तन्हाई में सुलह की गुफ्तगू करे। हज़रत खालिद ने जबला से फरमाया कि बाहान को जा कर कह दे कि मेरे साथ जो हज़रात आए हैं, वह तमाम साहिबुर राए हैं। बाहान के साथ सुलह की गुफ्तगू करनी है, लिहाज़ा मैं इन हज़रात की राए और मश्वरे से बे परवाह हो कर सुलह का मआमला तय नहीं कर सकता। अगर बाहान को मेरे साथियों के आने से कोई ए'तेराज़ है तो हम वापस लौट जाते हैं। हम को सुलह की गुफ्तगू करने की जल्दी नहीं। यह कह कर हज़रत खालिद ने अपने घोड़े की बाग फैरी।

हज़रत खालिद को वापस लौटने से रोकते हुए जबला ने कहा कि ऐ अरबी बिरादर! इस तरह नाराज़ व कबिदा खातिर क्यूं होते हो। तवक्कुफ करो, मैं सरदार बाहान से तमाम मुसल्मानों के लिये इजाज़त ले कर आता हूं। जबला फौरन बाहान के पास गया और सूरते हाल से आगाह किया। बाहान ने कहा सब को आने दो, लैकिन एक बात का ख्याल रखना कि जब वह मेरे खैमा के पास आएं, तो इन से कहना कि अपने घोड़े और हथियार खैमा के बाहर रख कर खैमा में दाखिल हों।

जबला वापस आया और हज़रत खालिद से कहा कि बाहान ने ब-खूशी इजाज़त दी है, लिहाज़ा आप अपने साथियों के हमराह तशरीफ ले चलें। हज़रत खालिद अपने साथियों को ले कर जबला के हमराह रूमी लश्कर में दाखिल हुए। जब रूमी फौजियों को पता चला कि मुसल्मानों के सरदार खालिद बिन वलीद अपने साथियों को ले कर रूमी लश्कर के

सरदार बाहान से गुफ्तगू करने आए हैं, तो तमाम रूमी सिपाही हज़रत खालिद बिन वलीद को करीब से देखने के लिये टूट पड़े। रूमी लश्कर की जहां से हद शुरू होती थी वहां से ले कर बाहान के खैमा तक दोनों तरफ रूमी सिपाही कतार बन्द खड़े हो गए। दोनों कतारों के दरमियान हज़रत खालिद बिन वलीद अपने साथियों के साथ घोड़ों पर सवार हो कर चले जा रहे हैं। रूमी लश्कर हज़रत खालिद को देखने के लिये बेताब व बे करार था। जिस रूमी सिपाही के करीब से हज़रत खालिद गुज़रते वह इन को आंखें फाड़ फाड़ कर देखता था और हैरत व ता'ज्जुब से उस की **आंखें खुली की खुली रह जातीं।** लैकिन हज़रत खालिद बिन वलीद सर झुकाए हुए खामौश आगे बढ़ रहे थे। **इन की ज़बान पे दुरूद पाक का विर्द जारी था।** रूमी लश्कर की कसरत व शान व शौकत से बे नियाज़ हो कर दाएं बाएं इल्तेफात किये बगैर नज़रें नीची किये हुए शैरे मस्त की शान से जा रहे थे। इन की खामोशी की इस अदा से रूमियों पर रोअब व हैबत तारी हो गई। हर रूमी सिपाही अपने करीब वाले को हज़रत खालिद की तरफ हाथ से इशारा करता, यह वही खालिद बिन वलीद हैं, जिस का नाम सुन कर हर रूमी का **दिल चार चार हाथ उछलता है।** तमाम रूमी सिपाही सहाबए किराम की मुकद्दस जमाअत को देख कर महवे हैरत थे। **सहाबए किराम के चेहरों पर इश्के रसूल का नूर चमकता था।** आंखें महबूब आका सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के जल्वों से सरशार थीं। होंटों पर ना'ते नबी या'नी दुरूद का विर्द जारी था। दिल के टुक्ड़े अपने आका व मौला की अज़्मत के लिये नज़्र हाज़िर ला कर अपने सरों को इश्के रसूल के कैफ में निसार करने के शौक में आगे बढ़ रहे थे :

वही आंख जो इन का मुंह तके, वही लब कि महव हों ना'त के
वही दिल जो इन के लिये झुके, वही सर जो इन पे निसार हो

(अज़ : - इमामे इश्को मुहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

सहाबए किराम के मुकद्दस गिरोह को ले कर जबला जब बाहान के खैमा के करीब पहुंचा, तो उस ने कहा कि ऐ गिरोहे अरब ! तुम बादशाह बाहान के खैमा के करीब आ गए हो। लिहाज़ा अपने घोड़ों से उतर जाओ और अपनी तलवारें खैमा के बाहर रख दो। तलवारें ले कर अन्दर जाने की इजाज़त नहीं। हज़रत खालिद ने फरमाया कि घोड़ों से उतरने में हम को कोई हरज नहीं, अलबत्ता ! हम तलवारें हरगिज़ न छोड़ेंगे, क्यूं कि तलवारें हमारी इज़्ज़त और बुज़ुर्गी हैं और हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम बुज़ुर्गी और इज़्ज़त

के लिये ही मब्ऊस हुए थे। ऐ जबला ! हम अल्लाह के दीन के मुजाहिद हैं और **मुजाहिद की इज़्ज़त उस की तल्वार से है।** हम अपनी इज़्ज़त तर्क कर के हरगिज़ न आएंगे। अगर तल्वार के साथ खैमा में दाखिल होने से बाहान को कोई ए'तेराज़ है, तो हम यहीं से वापस लौट जाते हैं। जबला ने कहा कि ऐ बिरादरे अरबी ! सब्र करो, मैं अन्दर जा कर बाहान से इजाज़त हासिल कर आता हूं, चुनान्चे जबला खैमा में दाखिल हुवा और बाहान से कहा कि यह लोग तलवारों के साथ आने पर मुसिर हैं और तलवारों के साथ आने की मुमानेअत की सूरत में वापस पलट जाने पर आमादा हैं। लिहाज़ा ऐ सरदार ! यह सुन्हरी मौका' क्यूं गंवाते हो, इन सौ आदमियों की तलवारें हमारी लाखों तलवारों के मुकाबले में क्या कर लेंगीं ? मेरी दरख्वास्त है कि इन को तलवारों के साथ आने की इजाज़त दे दो। बाहान ने कहा ठीक है। वह जिस तरह आना चाहें आएं, मेरी तरफ से इजाज़त है। जबला ने खैमा से बाहर आ कर हज़रत खालिद को इस मआमला से मुत्तलेअ किया।

हज़रत खालिद और इन के तमाम साथी घोड़ों से उतर गए और पा-प्यादा, हाथ में तलवारें ले कर बाहान के खैमा में दाखिल हुए। बाहान के खैमा में रूमी सरदारों और बतारेका की भीड़ लगी हूई थी। मुजाहिदों ने इन को धक्के लगा कर दाएं बाएं कर दिया और इन की सफें फाड़ कर बीच में रास्ता बना कर आगे बढ़े। गोया वह बाहान के खैमा में लाखों के रूमी लश्कर के दरमियान महसूर होने के बा-वुजूद किसी से नहीं डरते थे। बल्कि रूमियों पर अपना रोअब व दबदबा काइम कर के आगे बढ़े और बाहान के सामने आ कर ठहरे। बाहान का खैमा क्या था ? एक शाही दरबार मा'लूम होता था। तमाम खैमा पुर तकल्लुफ अस्बाबे आराइश से सजा था। आ'ला किस्म के कालीन का फर्श बिछा था। सोने के तार के रैश्मी कपड़ों की मस्नदें और तकिये सजाए गए थे। जब कि बाहान के लिये आली शान तख्त नसब किया गया था। तख्त के इर्द गिर्द खुशनुमा और मुज़य्यन कुर्सियां रखी हूई थीं, जिन पर रूमी लश्कर के फौजी बैठे हुए थे। जिस तख्त पर बाहान बैठा हुवा था, उस के सामने सहाबए किराम के लिये पुर तकल्लुफ कुर्सियां और उमदा किस्म के गालीचे बिछाए गए थे। बाहान ने इशारा कर के हज़रत खालिद और इन के साथियों को बैठने को कहा। हज़रत खालिद और इन के साथियों ने कुर्सियां और कालीन हटा दीं और ज़मीन पर बैठ गए।

सहाबए किराम का कुर्सियां और गालीचे हटा कर ज़मीन पर बैठना, बाहान को ना-गवार गुज़रा, उस ने कहा कि ऐ गिरोहे अरब ! हम ने तुम्हारी इज़्ज़त और एहतराम के लिये यह तमाम सामाने तकल्लुफ आरास्ता किया, लैकिन तुम ने इन को हटा दिया और ज़मीन

पर बैठ कर हमारी मेहमान नवाज़ी की कद्र न की और तर्के अदब कर के हमारी तौहीन की है। हज़रत खालिद ने फरमाया कि **तेरे फर्श का अदब करने से बेहतर है कि हम अल्लाह के बिछाए हुए फर्श का अदब करें।** क्यूं कि अल्लाह तआला का बिछाया हुवा फर्श तेरे बिछाए हुए फर्श से पाक है और वह फर्श हम को पसन्द है, क्यूं कि हम इसी से बने हैं, इसी में जाएंगे और इसी से उठाए जाएंगे। अल्लाह बुज़ुर्ग व बरतर ने अपने मुकद्दस कलाम कुरआन मजीद में इर्शाद फरमाया :

مِنۡهَا خَلَقۡنٰكُمۡ وَ فِيۡهَا نُعِيۡدُكُم وَ مِنۡهَا نُخۡرِجُكُمۡ تَارَةً اُخۡرٰى

(सूरए ताहा, आयत : 55)

तर्जुमा : ''हम ने ज़मीन ही से तुम्हें बनाया और इसी में तुम्हें फिर ले जाएंगे और इसी से तुम्हें दो-बारा निकालेंगे।'' (कन्ज़ुल ईमान)

हम खाक हैं और खाक ही मावा है हमारा
खाकी तो वह आदम जद्दे आ'ला है हमारा

(अज़ : इमामे इश्को मुहब्बत, हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत खालिद बिन वलीद का जवाब सुन कर बाहान खामौश हो गया और उस से कोई जवाब न बन पाया।

हज़रत खालिद और बाहान अरमनी के दरमियान मुनाज़िरा :-

रूमी सरदार बाहान अरमनी अरबी ज़बान में अच्छी तरह गुफ्तगू कर सकता था। लिहाज़ा उस के और हज़रत खालिद के दरमियान किसी मुतर्जिम की ज़रूरत पैश न आई, दोनों ने बिला वास्ता गुफ्तगू की।

गुफ्तगू का आगाज़ करते हुए बाहान ने कहा कि ऐ खालिद बिन वलीद ! मैं यह मुनासिब नहीं समझता कि तुम से पहले आगाज़े कलाम करूं। हज़रत खालिद ने फरमाया कि कोई परवाह नहीं। तुम खुशी से बात चीत की इब्तिदा करो, मैं तुम्हारी बात का जवाब दूंगा। और तुम को यह मन्ज़ूर नहीं तो मुझे आगाज़े कलाम करने में कोई हरज नहीं। अगर तुम यह चाहते हो कि मैं गुफ्तगू शुरू करूं तो मुझे यह भी मन्ज़ूर है। बाहान ने कहा कि अच्छा जनाब ! मैं ही शुरू करता हूं।

बाहान ने गुफ्तगू शुरू करते हुए कहा कि ता'रीफ है उस खुदा की जिस ने हमारे हज़रत मसीह को तमाम अम्बिया से अफ्ज़ल, हमारे बादशाह हिरक्ल को तमाम बादशाहों से बुज़ुर्ग और हमारी उम्मत को तमाम उम्मतों से बेहतरीन उम्मत बनाया है। बाहान की यह बात सुन कर हज़रत खालिद खड़े हो गए और उस की बात काट कर कलाम करने का इरादा किया। बाहान के तर्जुमान ने हज़रत खालिद से कहा कि ऐ बिरादरे अरबी ! बादशाह की बात मत काटो और अदब का लिहाज़ करते हुए खामोशी से समाअत करो। हज़रत खालिद ने फरमाया कि मैं गलत बात सुन कर चुप नहीं रह सक्ता। मैं इस की झूटी बात का जवाब दिये बगैर नहीं रहूंगा। तर्जुमान ने हज़रत खालिद को समझाने की बहुत कौशिश की कि इस वक्त बाहान को बोलने दो। जब वह अपनी बात पूरी कर ले तब जवाब देना और उस वक्त जो कहना होगा, कहना लैकिन हज़रत खालिद ने साफ इन्कार फरमाते हुए कहा कि जब तक इस की बात का जवाब न दे दूं, इस को आगे एक लफ्ज़ भी नहीं बोलने दूंगा।

फिर हज़रत खालिद बिन वलीद ने खुत्बा देते हुए फरमाया कि तमाम खूबियां उस अल्लाह बुज़ुर्ग व बर-तर के लिये हैं, जिस ने हमें ईमान की दौलत से नवाज़ा। हम अपने नबी पर, तुम्हारे नबी पर और तमाम अम्बिया पर ईमान लाए। अल्लाह ने हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को तमाम अम्बिया व मुर्सलीन का सरदार बनाया है :

खल्क से औलिया, औलिया से रुसुल
और रसूलों से आ'ला हमारा नबी
मुल्के कौनेन में अम्बिया ताजदार
ताजदारों का आका हमारा नबी
सारे ऊंचों से ऊंचा समझिये जिसे
है इस ऊंचे से ऊंचा हमारा नबी
अम्बिया से करूं अर्ज़ क्यूं मालिको !
क्या नबी है तुम्हारा हमारा नबी

(अज़ : इमामे इश्को मुहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत खालिद ने अपनी गुफ़्तगू का सिल्सिला जारी रखते हुए फरमाया कि जिस तरह **हमारे प्यारे आका हज़रत मुहम्मद** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम तमाम नबियों से अफ्ज़ल हैं, इसी तरह **हमारे बादशाह अमीरुल मो'मिनीन हज़रत उमर फारूके आ'ज़म** तुम्हारे बादशाह से हज़ार दर्जा अफ्ज़ल हैं। वह हम सब से ज़ियादह परहेज़गार और खुदा से ज़ियादह डरने वाले हैं। कुरआन मजीद में अल्लाह तबारक व तआला ने इर्शाद फरमाया है :

اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰكُمْ

(सूरतुल हुज्रात, आयत : 13)

तर्जुमा : "बे शक अल्लाह के यहां तुम में ज़ियादह इज़्ज़त वाला वह जो तुम में ज़ियादह परहेज़ गार है।" (कन्ज़ुल ईमान)

हज़रत खालिद बिन वलीद ने मज़ीद फरमाया कि ऐ बाहान! तू ने यह कहा कि तुम नस्रानी तमाम उमम से बेहतर उम्मत हो, तो इस का भी जवाब सुन कि हम अल्लाह वह्दहु ला शरीक की इबादत करते हैं। अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं करते। अल्लाह को एक मानते हैं। इस के लिये जोरू होने का फासिद अकीदा नहीं रखते और न ही अल्लाह के लिये कोई औलाद होने का ए'तेकाद रखते हैं। सिर्फ अल्लाह को ही इबादत और परस्तिश के लाइक मान कर सिर्फ इसी की इबादत करते हैं। अल्लाह के तमाम अहकाम को और अपने नबी सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के तमाम फरामीन को सिद्क दिल से तस्लीम कर के सख्ती से इस की पाबन्दी करते हैं। नैकी और भलाई का हुक्म देते हैं और गुनाह और बुराई से रोकते हैं। अपने नबीए अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की शरीअत पर कामिल तौर से अमल करते हैं। जब कि तुम ने हज़रत ईसा को खुदा का बेटा कह दिया। अल्लाह तआला का शरीक ठहराया। हज़रत मूसा और हज़रत ईसा अलैहिमस्सलातो वस्सलाम की शरीअत के अहकाम को पसे पुश्त डाल दिया। नैकी और बदी में तुम इम्तियाज़ नहीं करते। अल्लाह की इबादत से इन्हराफ करते हो। गुनाहों की तरफ रागिब हो। फिर किस मुंह से दा'वा करते हो कि तुम तमाम उम्मतों से अफ्ज़ल हो? हक्क तो यह है कि उम्मते मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम तमाम उम्मतों से अफ्ज़ल है :

एक मेरा ही रहमत में दा'वा नहीं
शाह की सारी उम्मत पे लाखों सलाम

(अज़ : इमामे इश्को मुहब्बत हज़रत रज़ा बरेल्वी)

हज़रत खालिद बिन वलीद की ईमान अफ्रोज़ और बातिल सौज़ जोशीली तकरीर सुन कर बाहान मब्हूत हो गया और उस ने अपना तर्ज़ बदल कर दीगर अन्दाज़ में हम्दे बारी तआला की। अल्लाह तआला की ने'मतों का शुक्र अदा करते हुए तम्हीदी खुत्बा पढ़ा और फिर अपने मक्सदे असली की तरफ रुजूअ करते हुए कहा :

"ऐ अरबी बिरादरो! अल्लाह तआला ने हम को बे-शुमार ने'मतों से नवाज़ा और साथ में हम को रहम दिली और करम व बख्शिश करने की भी तौफीक अता फरमाई। मुल्के अरब के लोग अर्सए तवील से हमारे मुल्क में ब-गर्ज़े तिजारत आते रहे और हम इन के साथ नैक सुलूक, ता'ज़ीम, बख्शिश, एहसान और ईफाए अह्द से पैश आते रहे। हमारे हुस्ने सुलूक के तमाम कबाइल अरब मो'तरिफ व मश्कूर हैं। लैकिन तुम घोड़ों पर सवार हो कर हम पर चढ़ आए, कत्ल व गारत गिरी और लूट मार शुरू की। हमारे मज़हबी निशानों को मिटा दिया। हमारे मज़हबी शेआर को खोद कर फैंक दिया। हमारे शहरों पर कब्ज़ा कर लिया। हमारी बस्तियों को उजाड़ दिया। हद से ज़ियादह ज़ुल्म व सितम ढाए, लैकिन हम ने सब्र से काम लिया। हमारे सब्र को तुम ने हमारा ज़ो'फ मुतसव्विर किया और तुम्हारी जुर्अतें यहां तक बढ़ गईं कि अब तुम हम को हमारे ज़रखैज़ और शादाब मुल्क से निकाल देने के ख्वाब देख रहे हो। लैकिन तुम मुगाल्ते में हो। हम कमज़ोर और ज़ईफ नहीं हैं। अभी तक तुम ने हमारी ताकत का करिश्मा नहीं देखा। तुर्क, फारस और जरामका के अज़ीम व ताकतवर लश्करों को हम ने खाक व खून में मिला दिया। वही हाल तुम्हारा होगा। अब तक हम ने तुम्हारी कोई अहमियत न समझी थी, लिहाज़ा मुतफर्रिक हो कर लड़ते रहे, लैकिन अब हम मुत्तहिद हुए हैं। हमारा लश्करे अज़ीम तुम्हारे मुकाबले के लिये आ पहुंचा है। लिहाज़ा अब अपनी हर्कतों से बाज़ आओ और अपने वतन लौट जाओ"

बाहान ने अपनी गुफ्तगू जारी रखते हुए मज़ीद कहा कि तुम से ज़ियादह शिकस्ता हाल, मोहताज, कमज़ोर, मुफ्लिस और पस-मान्दह कोई कौम न थी। मुल्के हिजाज़ के इलावा कोई दूसरा मुल्क न देखा था। कभी किसी मुल्क पर चढ़ाई न की थी, क्यूं कि तुम इस के काबिल ही न थे। तुम हमेंशा आपस में लड़ने और खाना जंगी में पड़े रहने वाले थे। सूखी रोटी तुम्हारी गिज़ा थी और जानवरों के बालों के कपड़े तुम्हारा लिबास था। लैकिन जब तुम हमारे मुल्क में आए और अच्छे खाने, कपड़े, मेवे, घोड़े वगैरा तुम्हें मुयस्सर हुए

और माले गनीमत के सोने चांदी तुम्हारे हाथ लगे, तो तुम्हारी तमअ बढ़ी और हमारे मुल्क पर कब्ज़ा करने की जुर्अत की। हम तुम्हारी ज़ियादतियों से दरगुज़र करते आए। इस का मत्लब हरगिज़ यह नहीं कि हम में तुम को मार भगाने की इस्तिताअत नहीं। हम ने उमदा अख्लाक की बिना पर तुम से तअर्रूज़ नहीं किया। बल्कि इस वक्त भी हमारा यही नज़रिया है कि तुम पर मेहरबानी और एहसान करते हुए, हम तुम्हारे जराइम से दरगुज़र करते हुए, जो कुछ तुम ने हमारे मुल्क से छीना है, उस की वापसी का मुतालबा नहीं करते। बल्कि तुम पर मज़ीद एहसान करना चाहते हैं। अगर तुम सुलह करने पर राज़ी हो जाओ, तो तुम्हारे लश्कर के हर सिपाही को एक सौ दीनार और एक थान रैश्मी कपड़ा, लश्कर के सरदार अबू उबैदा को एक हज़ार दीनार, खलीफा हज़रत उमर के लिये दस हज़ार दीनार इस शर्त पर दिये जाएंगे कि तुम इस बात की कसम खाओ और वा'दा करो कि तुम यहां से चले जाओ और मुस्तकबिल में हमारे मुल्क पर लश्कर कशी न करो। मैं तुम को अज़ राहे हमदर्दी नैक मश्वरा देता हूं कि तुम सुलह कर लो, इसी में तुम्हारी बेहतरी और भलाई है। वर्ना हमारा यह लश्करे जर्रार तुम को मसल कर नेस्त व नाबूद कर देगा।

बाहान ने अपनी लम्बी चौड़ी तक्रीर से मुजाहिदों को धमकी दे कर डराने की कौशिश करने के साथ लालच और तमअ की जाल में फंसाना चाहता था। उस का सिर्फ एक ही मक्सद था कि किसी भी सूरत में मुसल्मान सुलह पर आमादा हो जाएं, ताकि जंग का हौलनाक मन्ज़र देखने की नौबत न आए।

हज़रत खालिद बिन वलीद खामौश रह कर बाहान की गुफ्तगू ब-गौर सुन रहे थे। जब वह खामौश हुवा, तो हज़रत खालिद खड़े हुए और फरमाया कि तुम ने बहुत दैर तक कलाम किया। हम ने तुम्हारी हर बात ध्यान से सुनी है, अब मैं कहता हूं और तुम सुनो ! हज़रत खालिद ने फरमाया : तमाम ता'रीफ साबित है उस खुदा के वास्ते जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं। हज़रत खालिद ने यह एक जुम्ला ऐसे बा-रोअब व मुअस्सिर अन्दाज़ में इर्शाद फरमाया कि तमाम हाज़िरीन के मुंह से बे साख्ता निकल पड़ा सच है। यहां तक कि बाहान ने अपने हाथ से आस्मान की तरफ इशारा करते हुए कहा कि बेशक खुदा एक है। फिर हज़रत खालिद ने फरमाया कि मैं गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम अल्लाह के पसन्दीदा बन्दे और बर्गुज़ीदा रसूल हैं। **इन्सान के लिये तमाम अवकात में बेहतरीन वक्त वह है जिस में अल्लाह की इताअत व इबादत करे।** हज़रत खालिद का आखरी जुम्ला सुन कर बाहान आफरीन !

आफरीन ! पुकार उठा और उस ने अपने करीब खड़े मुहाफिज़ों से कहा कि यह शख्स मर्दे हकीम, दानिशमन्द और साहिबे अक्ल मा'लूम होता है।

बाहान की ज़बान से अपनी ता'रीफ सुन कर हज़रत खालिद ने तवाज़ोअ व इन्किसारी अपनाते हुए फरमाया कि अगर मुझ को अक्ल दी गई है, तो यह सब अल्लाह का फज़्ल व करम है और अल्लाह ही ता'रीफ के लाइक है। इस में मेरी ता'रीफ करने की कोई ज़रूरत नहीं है। क्यूं कि हमारे प्यारे आका व मौला, रसूले मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि :

"अल्लाह तआला ने किसी चीज़ को अक्ल से बढ़ कर अपने नज़दीक दोस्त नहीं बनाया। क्यूं कि अक्ल के सबब आदमी अल्लाह की इताअत कर के जन्नत में दाखिल होता है।"

हज़रत खालिद की ज़बानी अक्ल व दानिश की असलियत व एहमियत की बात सुन कर बाहान ने **दांतों तले उंग्लियां दबा लीं** और मुतअज्जिब लहज़ा में कहा कि ऐ अरबी बिरादर ! जब तुम ऐसे आकिल और साहिबुर राए हो तो फिर अपने साथ इतने सारे आदमियों को क्यूं लाए हो ? हज़रत खालिद ने जवाब दिया कि अपने **आका व मौला रसूले मक्बूल** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के मुबारक इर्शाद की ता'मील करने के लिये, क्यूं कि आप ने फरमाया है कि :

"नहीं हलाक हुवा वह मुसल्मान जिस ने अपने मुसल्मान भाई का मश्वरा कबूल किया।"

हज़रत खालिद ने मज़ीद यह भी फरमाया कि अगर चे रसूले मक्बूल रूए ज़मीन के तमाम लोगों से ज़ियादह आकिल, दाना, साहिबे इद्राक व राए थे, लेकिन इस के बा-वुजूद भी अल्लाह तआला ने उन से इर्शाद फरमाया :

وَشَاوِرْهُمْ فِى الاَمْرِ

(सूरए आले इमरान, आयत : 159)

तर्जुमा : "और कामों में इन से मश्वरा लो।" (कन्ज़ुल ईमान)

हज़रत खालिद ने फरमाया कि कुरआन व हदीस के हुक्म पर अमल करने मैं अपने

मो'मिन भाइयों को मश्वरा करने की गरज़ से अपने साथ लाया हूं क्यूं कि मैं अपने मो'मिन भाइयों के मश्वरों से बे नियाज़ नहीं हूं। मेरे साथ आए हुए तमाम हज़रात साहिबे राए और दानिशमन्द हैं।

बाहान ने हज़रत खालिद से पूछा कि तुम्हारे लश्कर में तुम्हारी तरह आकिल और दानिशमन्द कितने लोग और हैं ? हज़रत खालिद ने फरमाया कि हमारे लश्कर में ऐसे एक हज़ार से भी ज़ियादह साहिबे राए हज़रात मौजूद हैं। बाहान ने तअज्जुब व हैरत का इज़्हार करते हुए कहा कि अब तक में इस गुमान में था कि तुम सब लोग जाहिल, गंवार और घटिया किस्म के हो। हज़रत खालिद ने फरमाया कि हां ! हम ऐसे ही थे। जहालत के अंधेरे में भटक रहे थे, हमारी अक्लों पर पर्दे पड़े हुए थे। हर किस्म की बुराई हम में पाई जाती थी, लैकिन अल्लाह तआला ने हम पर एहसाने अज़ीम फरमाया और हमारी हिदायत के लिये अपने **महबूबे अकरम** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को हम में मब्ऊस फरमाया। हम **जहालत के अंधेरे से निकल कर हिदायत के उजाले में आ गए।** बुराई का रास्ता छोड़ कर नैकी की राह पर गामज़न हो गए। शिर्क व कुफ्र छोड़ कर तौहीद परस्ती और रिसालते मुहम्मदी के काइल हो गए। नबीए रहमत सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के तुफैल हम अल्लाह वाले हो गए :

मोमिन इन का क्या हुवा, अल्लाह इस का हो गया
काफिर इन से क्या फिरा, अल्लाह ही से फिर गया

(अज़ : इमामे इश्को मुहब्बत, हज़रत रज़ा बरैलवी)

बाहान अरमनी ने हज़रत खालिद से कहा कि ऐ अरबी बिरादर ! तुम्हारी अक्ल व दानिशमन्दी ने मुझ को हैरत में डाल दिया है। मैं तुम को दोस्त रखता हूं और मेरी ख्वाहिश है कि तुम्हारा भाई बन जाउं। हज़रत खालिद ने फरमाया कि बड़ी खुशी की बात है। अल्लाह तआला तेरी ख्वाहिश पूरी फरमाए और हम तुम भाई भाई हो जाएं और कभी जुदा न हों। बाहान ने कहा कि यह क्यूं कर मुम्किन हो सक्ता है ? हज़रत खालिद ने फरमाया बहुत आसान है। अपनी ज़बान से इक़रार और दिल से तस्दीक करते हुए لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه وَحْدَهٗ لَا شَرِكَ لَهٗ وَاَنَّ مُحَمَّداً رَّسُوْلُ اللّٰهِ الَّذِیْ بَشَّرَ بِهِ الْمَسِیْحُ عِیْسٰی पढ़ लो। **यह कल्मा कहते ही हम आपस में भाई और दोस्त बन जाएंगे और मेरा और तेरा हाल यक्सां हो जाएगा।**

हज़रत खालिद ने बाहान को अलल ऐ'लान इस्लाम की दा'वत पैश की। बाहान ने

जवाब देते हुए कहा कि तुम यह चाहते हो कि मैं अपना दीन व मज़्हब छोड़ कर इस्लाम कबूल कर लूं, लैकिन यह मुम्किन नहीं। और न यह मुझ से कभी हो सक्ता है। हज़रत खालिद ने फरमाया कि तब तूं मेरा भाई भी नहीं बन सक्ता।

अब बाहान ने मोज़ूए सुखन तब्दील करना मुनासिब समझा और बात का पहलू बदलते हुए कहा कि ऐ बिरादरे अरबी ! जिस मक्सद के लिये हम जमा हुए हैं, वह तो परे हट कर रह गया। हम दूसरी बातों में उलझ गए और बात पर बात चलती रही और हम बहुत दूर निकल गए। मैं ने अपनी गुफ्तगू में सुलह के मुतअल्लिक तुम से जो कहा, इस की तरफ तुम इल्तिफात करो। मैं यह चाहता हूं कि तुम और हम एक दोस्त और भाई की तरह सुलह के मआमला में गुफ्तगू कर के उलझी हूई बात को सुलझाने की कौशिश करें और सुलह के मुतअल्लिक मैं ने जो पैशकश की है इस का आप की तरफ से इस्बाती जवाब हासिल करूं।

हज़रत खालिद ने फरमाया कि अगर तुम ने मेरी बात गौर से सुनी होती, तो तुम को मा'लूम होता कि मैं ने तुम्हारी हर बात का जवाब दे दिया, मगर अब इस की वज़ाहत करते हुए दुहराता हूं। तुम ने अपनी फौजी ताकत, सरवती कुव्वत, जाह व हश्मत, कसरत व इज़्ज़त और हुकूमत व सल्तनत का ज़िक्र कर के हमारी कौम को गरीब व मुफ्लिस, जाहिल व अनपढ़, बे अक्ल व बे फहम और न जाने क्या क्या कहा, हकीकत यह है कि हम में दुनिया भर के उयूब थे। ज़ुल्म व सितम हमारा शैवा था। गुनाह व मआसी हमारी आदत थी। डकैती और कज़्ज़ाकी हमारा ज़रीए मआश था। और सब से बड़ी खराबी हम में यह थी कि हम अल्लाह को छोड़ कर उन बूतों की इबादत करते थे जिन को हम ने अपने हाथों से बनाया था। लैकिन अल्लाह तआला ने हमारी हिदायत के लिये नबीए आखिरुज़्ज़मां सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को रौशन किताब कुरआन मजीद के साथ भेजा। जो तमाम अम्बिया से अशरफ व बर्गुज़ीदा है। अल्लाह ने इन पर नबुव्वत खत्म फरमा दी। उन्हों ने हमें इस्लाम की दा'वत दी और राहे रास्त दिखाई। दीने इस्लाम के अहकाम हम को ता'लीम फरमाए। मिन-जुम्ला इन के अहकाम से एक हुक्म यह है कि हम कुफ्फार व मुश्रिकीन से जेहाद करें और जिस ने इस्लाम कबूल कर लिया वह हमारा इस्लामी भाई बन गया। इस का और हमारा मआमला यक्सां हो गया। और जिस ने इस्लाम तो कबूल न किया, लैकिन जिज़्या देना मन्ज़ूर किया, वह हमारी अमान में है और जिस ने कबूले इस्लाम और अदाए जिज़्या दोनों का इन्कार किया, उस का फैसला हमारी तल्वार करती है और हमारी तल्वार सख्त और काटने वाली है। लिहाज़ा ऐ बाहान ! कल्मा पढ़ कर इस्लाम में दाखिल हो जा या फिर जिज़्या अदा करने

पर राज़ी हो जा। जिज़्या अदा कर के तुम हमारी हिफाज़त और अमान में आ जाओगे। बच्चों, औरतों, अपाहिजों और राहिबों से जिज़्या नहीं लिया जाएगा, लेकिन हर बालिग मर्द से फी कस सालाना चार दीनार वुसूल किया जाएगा।

बाहान ने हज़रत खालिद से कहा कि अगर में कल्मा पढ़ लूं तो कल्मा पढ़ने के बा'द मुझ पर क्या लाज़िम होगा ? हज़रत खालिद ने फरमाया नमाज़, रोज़ा, हज्ज, ज़कात और तमाम इस्लामी अर्कान व अहकाम की पाबन्दी करनी पड़ेगी। और काफिरों से जेहाद करना भी लाज़िम आएगा। इलावा अज़ीं नैकी का हुक्म करना, गुनाहों से रोकना, अल्लाह के दोस्तों से दोस्ती रखना और अल्लाह के दुश्मनों से दुश्मनी रखना भी लाज़िम होगा। बाहान ने कहा कि यह मुझ से नहीं हो सकेगा, लिहाज़ा मैं अपना दीन नहीं छोड़ सक्ता। रही बात जिज़्या अदा करने की तो यह भी मुझे मन्ज़ूर नहीं क्यूं कि जिज़्या अदा करने से हम तुम्हारे महकूम हो जाएंगे। और यह अम्र हमारे लिये बाइसे ज़िल्लत व रुस्वाई है। हज़रत खालिद ने फरमाया कि इस सूरत में हमारे तुम्हारे दरमियान ज़रूर जंग होगी और अल्लाह जिसे चाहेगा उसे ज़मीन का मालिक व वारिस कर देगा। बाहान ने कहा कि तुम ने सच कहा। तमाम ज़मीन अल्लाह की मिल्कियत है। वह जिसे चाहता है उसे इस का वारिस बना देता है। मुल्के शाम की ज़मीन पहले हमारी न थी बल्कि दूसरों की थी, मगर अल्लाह ने हमें इस का वारिस व मालिक बना दिया। अब देखें कि अल्लाह किस को इस का मालिक बनता है। हमें या तुम्हें ?

बाहान का हज़रत खालिद और सहाबा के कत्ल का नापाक इरादा

बाहान ने हज़रत खालिद से कहा कि हम तो अपने दीन से न मुन्हरिफ होंगे और न ही जिज़्या अदा करेंगे। बल्कि तुम से ज़रूर लड़ेंगे, लिहाज़ा तुम को जो मन्ज़ूर हो वह करो। मुकाबले के लिये तैयार हो जाओ, अब हमारी तुम से फैसला कुन जंग होगी। हज़रत खालिद ने उस को डांटते और ज़लील करते हुए फरमाया कि खुदा की कसम ! हम तुम से ज़ियादह जंग के ख्वाहिशमन्द हैं और गोया मैं ऐसा मन्ज़र देख रहा हूं कि इस जंग में अल्लाह ने हमें फतह व गल्बा इनायत फरमाया है और तुम पर शिकस्त व मग्लूबी की ज़िल्लत नाज़िल हो चुकी है। और **तू कैदी की सूरत में ज़लील व ख्वार घसीटा जा रहा है और तेरे गले में रसी और हाथ पाऊं में बेड़ियां डाल कर हमारे अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फारूक**

रदियल्लाहो तआला अन्हो के सामने लाया जा रहा है और हज़रत उमर फारूक तल्वार से तेरी गर्दन उडाए देते हैं।

हज़रत खालिद का कलाम सुन कर बाहान गुस्से से भड़क उठा। आग बगोला हो गया। और आंखों से शौ'ले निकलने लगे। बाहान की आंखों से खून बरसता देख कर उस के करीब खड़े बतारेका और सरदारों ने म्यान से तलवारें निकाल लीं और हज़रत खालिद और तमाम सहाबा को शहीद कर देने पर आमादा हो गए, लेकिन वह बाहान के हुक्म के मुन्तज़िर थे। बाहान ने गरजती हूई आवाज़, खशमनाक लह्जा में हज़रत खालिद से कहा कि ऐ खालिद बिन वलीद ! मैं अपने दिल में तुम्हारे लिये मेहरबानी का नर्म गोशा रखते हुए नैक सुलूक के साथ गुफ्तगू करता रहा, लेकिन तुम ने तशद्दुद और सख्त अन्दाज़ में कलाम कर के मेरा दिमाग परागन्दा कर दिया है। अब मैं हरगिज़ तुम पर और तुम्हारे साथियों पर रहम नहीं करूंगा। तुम ने हमारे हुस्ने सुलूक और नर्मी को देखा है, अब हमारा गज़ब और सख्ती भी देख लो। **कसम है हक्के मसीह की ! सब से पहले तुम्हारी नज़रों के सामने तुम्हारे पांच कैदी साथियों को कत्ल करूंगा और फिर तुम्हारा और तुम्हारे साथ आए हुए एक सौ आदमियों का भी वही हश्र करूंगा।**

बाहान की इस धमकी से हज़रत खालिद तैश में आ गए और ईंट का जवाब पत्थर से देते हुए दिलैरी से फरमाया कि ऐ बाहान ! तूने हम को पहचानने में बड़ी गलती की है। हम मौत से बिल्कुल नहीं डरते बल्कि ज़िन्दगी से ज़ियादह मौत को महबूब जानते हैं। शहीद होना हमारी ऐन ख्वाहिश व आरज़ू है। कसम है परवरदिगारे आलम की और रसूले मक्बूल की, कसम है दा'वते अबू बक्र की और अमारते उमर फारूक की ! **तू मेरी नज़रों के सामने मेरे साथियों को क्या मारेगा ? तेरी कौम की नज़रों के सामने तुझ को इसी जगह काट कर रख दूंगा।** यह फरमा कर हज़रत खालिद ने म्यान से तल्वार खींच कर नार-ए तहलील और तक्बीर बुलन्द किया और तमाम सहाबा ने भी अपनी तलवारें सौंत लीं और बाहान को घेर लिया। बाहान के मुहाफिज़ कुछ सोचें और कुछ करें इस के पहले ही हज़रत खालिद और सहाबए किराम मिस्ले शैर जसत लगा कर बाहान के तख्त पर पहुंच गए और बाहान पर नन्गी तल्वार बुलन्द कर दीं। बाहान के खैमे में सन्नाटा छा गया। कोई हिलता तक नहीं क्यूं कि तमाम रूमी इस बात से वाकिफ थे कि सहाबा पर हम्ला करने की गलती की, तो बाहान की गर्दन काट कर हज़रत खालिद हम पर फैंक मारेंगे, जैसे कि उन्हों ने जंग अजनादीन में रूमी सरदार वर्दान की गर्दन काट कर रूमी लश्कर पर फैंकी थी। बाहान को हिलहिला कर बुखार

चढ़ा हो इस तरह कांप रहा था। अपने मुहाफिज़ों को हाथ के इशारे से तवक्कुफ करने को कहा। गोया वह बन्द लफ्ज़ों में अपने मुहाफिज़ों को कह रहा था कि **तुम्हारी अदना गलती से मेरी ज़िन्दगी का खैल खत्म हो जाएगा।**

एक अजीब कश्मकश का मन्ज़र था। बाहान के सर पर मौत सवार थी और सहाबए किराम भी तो मौत के किनारे खड़े थे। बाहान को कत्ल करने के बा'द इन का बच कर निकल्ना ना मुम्किन था। हज़रत खालिद बिन वलीद बिफरे हुए शैर की तरह खशमनाक थे। खैमा में मौजूद तमाम लोगों के दिलों की धड़कनें तैज़ हो गई थीं। अब क्या होगा ? सक्ता का आलम था, तमाम रूमियों के चेहरों पर हवाइयां उड़ रही थीं। बिल-आखिर बाहान ने हिम्मत से काम लेते हुए हज़रत खालिद से कहा कि ऐ अरबी बिरादर ! तवक्कुफ करो, तवक्कुफ करो, जल्दबाज़ी से काम मत लो। कसम है हक्के मसीह की ! हम एलची को कभी नहीं कत्ल करते। मुझे मा'लूम है कि तुम ब-तौर एलची आए हो। मैं ने तुम्हारी दिलैरी का हौसला देखने के लिये तुम को झूटी धमकी दी थी और तुम इस को सच समझ कर मारने और मरने पर तुल गए। मआमला खत्म करो और यहां से चले जाओ। **हज़रत खालिद ने फरमाया कि अपने पांचों साथियों को कैद से छुड़ाए बगैर हरगिज़ नहीं जाऊंगा**, बाहान ने कहा कि खुशी से साथ ले जाओ। तुम्हारी मर्ज़ी में कैसे टाल दूं। पस बाहान ने पांच कैदी सहाबा को लाने का हुक्म दिया। जब वह खैमा में लाए गए तो बाहान ने इन को रिहा कर देने का हुक्म दिया। एक अजीब रोअब व हैबत बाहान पर छा गया था। हज़रत खालिद जो भी कहते थे इसे रद्द करने की उस में हिम्मत ही न थी। हज़रत खालिद और सहाबा ने अपनी तलवारें म्यान में कर लीं लैकिन फिर भी किसी को हम्ला करने की जुर्अत न हूई बल्कि बाहान भी अब नहीं चाहता था कि कोई मक्रो फरैब करे। न जाने इस ने क्या देख लिया था कि वह खौफ व हैबत से भर गया था। शम्ए रिसालत के परवानों पर अल्लाह तबारक व तआला ने अपने महबूबे आ'ज़म सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के तुफैल वह करम फरमाया था कि इन की हैबत से मुश्रिकीन थर थर कांपते थे। यह मुकद्दस सहाबए किराम अपने आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के मो'जिज़ात के मज़हर थे। अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की वह हैबत थी :

तेरी आमद थी कि बैतुल्लाह मुज्रे को झुका
तेरी हैबत थी कि हर बुत थर थरा कर गिर गया

(अज़ : । इमामे इश्को मुहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

और अल्लाह के **महबूबे अकरम** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के आशिकों की वह हैबत थी कि **इन मुठ्ठी भर आशिकों के सामने लाखों का रूमी लश्कर थर थर कांपता था।** हज़रत खालिद ने थोड़ी दैर पहले बाहान के सर पर नन्गी तलवारें सौंत कर जो खल्बली मचा दी थी, इस का असर तमाम रूमियों के ज़हन पर बाकी था और बाहान तो ऐसा डर गया था, जैसे इसे सांप सूंघ गया हो। अपने सर पर हज़रत खालिद की बरहेना तल्वार मंडलाती देख कर, वह ऐसा सहम गया था कि हज़रत खालिद की कमर में म्यान के अन्दर लटकती तल्वार देख कर इस की हालत **सांप का काटा रस्सी से डरता है जैसी थी।** बाहान के हुक्म से पांचों कैदी सहाबा के हाथ पाऊं की बेड़ियां खोल दी गईं। वह भी अब हज़रत खालिद के करीब आ कर खड़े हो गए। हालां कि हज़रत खालिद और तमाम सहाबा ने तलवारें म्यान में कर लें थीं लैकिन वह तमाम हज़रात बाहान के करीब इस तरह हल्का बांध कर खड़े थे कि अगर बाहान फिर दगा और फरैब करे, तो वह बाहान को फौरन दबोच लें। हज़रत खालिद ने बाहान से कहा कि हमारे घोड़े खैमा के बाहर बंधे हुए हैं इन्हें खैमा के अन्दर मंगवा दो। हम यहीं से सवार हो कर रवाना होंगे। बाहान के हुक्म से घोड़े लाए गए। बाहान को न जाने क्या हो गया था कि **वह हज़रत खालिद के सामने पालतू कुत्ते की तरह दुम हिलाता था।** उस के रवइय्ये से ऐसा मह्सूस होता था कि वह हज़रत खालिद की दिलैरी पर ऐसा फरेफ्ता हो गया है कि दुश्मनी और दोस्ती के मख्लूत जज़्बे में मुब्तला हो गया है। दोस्ती की राह हमवार करने की गरज़ से तोह्फा व हद्या का सिल्सिला काइम करना चाहा। वह हज़रत खालिद को कुछ तोह्फा देना चाहता था, लैकिन ब-राहे रास्त कहने में उसे झिझक और खिजालत मह्सूस हूई। लिहाज़ा जब हज़रत खालिद ने अपने साथियों के हमराह घोड़ों पर सवार होने का अज़्म किया, तब उस ने हज़रत खालिद से कहा कि ऐ अरबी बिरादर ! मैं तुम से एक चीज़ तलब करता हूं। हज़रत खालिद ने फरमाया अगर इस का देना मेरे इम्कान व इख्तियार में होगा तो इस के देने में हरगिज़ बुख्ल व ता'म्मुल न करूंगा। बाहान ने कहा कि तुम्हारे सुर्ख चमड़े के कुबा (अच्कन) ने मुझे तअज्जुब में डाल रखा है। मुझे बहुत पसन्द आ गया है, वह मुझे हद्या कर दो और इस के सिले में मेरे खैमा से जो भी चीज़ पसन्द आए, वह मेरी जानिब से ब-तौर तोह्फा कबूल कर लो।

बाहान ने हज़रत खालिद से सुर्ख चमड़े का अच्कन मांगा, वह तो एक बहाना था। बाहान के पास ऐसा बल्कि इस से भी बैश कीमत सैंकड़ों अच्कन मौजूद थे। दर अस्ल वह हज़रत खालिद को कोई कीमती तोह्फा दे कर मरहूने मन्नत करना चाहता था। लिहाज़ा चमड़े के अच्कन का मुतालबा किया और इस के इवज़ जो चीज़ पसन्द आए इसे ले लेने का

इख्तियार दिया। हज़रत खालिद ने बाहान से फरमाया कि मुझे इस बात की खुशी है कि तुम ने मुझ से वह चीज़ मांगी, जो मेरी ज़ाती मिल्कियत है। लो ! यह मेरी तरफ से तोह्फा है। और हां ! तुम ने मुझ को अपनी पसन्द का तोह्फा इख्तियार करने का हक्क दिया, जब कि तुम ने तो मुझे पैशगी तोह्फा दे दिया है। **मेरे पांच साथियों को कैद से आज़ाद करने का जो एहसान किया है वह हमारे लिये तुम्हारा बहुत बड़ा तोह्फा है। अब हमें मज़ीद किसी तोह्फे की हाजत नहीं।** फिर हज़रत खालिद बिन वलीद अपने एक सौ साथियों और पांच कैद से आज़ाद सहाबा के हमराह घोड़ों पर सवार हुए और रवाना होते वक्त बाहान से कहा कि **मर्द हमेंशा सामने से आ कर सीना पर वार करता है और पीठ पीछे से वार करना ना मर्दों का काम है।** लिहाज़ा अगर अब भी कुछ अरमान बाकी रह गए हों तो हम मौजूद हैं, पूरे कर लो, लैकिन रवाना होने के बा'द पीठ पीछे से वार करने की गलती मत करना। बाहान ने कहा कि आप इत्मीनान रखो। ऐसा कुछ नहीं होगा। बाहान ने अपने मुहाफिज़ों से कहा कि तुम हमारे मुअज़्ज़ज़ मेहमानों को हमारे लश्कर की हद तक साथ जा कर रुखसत कर आओ और इन्हें किसी किस्म की दुश्वारी न हो इस का ख्याल रखना। बाहान के मुहाफिज़ बतारेका हज़रत खालिद के काफिले को जुलू में ले कर रवाना हुए और रूमी लश्कर की हद तक छोड़ आए।

जब हज़रत खालिद चले गए तो जबला बिन ऐहम गस्सानी ने आ कर बाहान से कहा कि ऐ सरदार ! **तुम ने यह क्या किया ? खालिद बिन वलीद को जाने दिया ? जाल में फंसे हुए शिकार को छोड़ दिया ?** ऐसा सुन्हरी मौका' बार बार हाथ नहीं आता। हम ने खालिद बिन वलीद को किस लिये बुलाया था वह तो तुम को मा'लूम है ना ? अगर एक खालिद बिन वलीद को मार डालते तो हमारी फतह थी और हिरक्ल बादशाह के इन्आमो इकराम की हम पर बारिश होती। हाए यह सुन्हरी मौका' तुम ने गंवा दिया। बाहान ने जबला की यह बात सुनी तो चौंक पड़ा और कफे अफसोस मलते हुए कहा कि ऐ जबला ! मुझ से बहुत बड़ी गलती हो गई। मैं ने ही फरैब से खालिद बिन वलीद को कत्ल कर देने की साज़िश तज्वीज़ की थी, लैकिन जब खालिद बिन वलीद यहां आया तो मुझ पर न जाने क्या जादू हो गया कि मेरी अक्ल पर पर्दा पड़ गया और मैं उस को यहां बुलाने का मक्सदे असली फरामोश कर गया। **वह तो चला गया बल्कि पांच कैदियों को भी छुड़ा कर अपने साथ ले गया।** वाकई बहुत अफ्सोस की बात है लैकिन अब पछताए क्या होता जब चिड़यां चुग गईं खैत।

हज़रत खालिद बिन वलीद रूमी लश्कर की सरहद से इस्लामी लश्कर के कैम्प की तरफ तैज़ी से रवाना हुए। किसी भी रूमी सिपाही को हिलने की जुर्अत न हूई बल्कि सब के सब देखते ही रह गए। हज़रत खालिद और इन के साथियों का मअ पांच कैदी सहाबा के इस्लामी लश्कर के कैम्प में सहीह व सालिम वापस लौटने पर हज़रत अबू उबैदा निहायत मस्रूर हुए और कैम्प में खुशी की लहर दौड़ गई। नारए तक्बीर की सदाएं बुलन्द हूईं, इन का इस्तिक्बाल किया गया और तहनियत पैश की गई। हज़रत खालिद ने हज़रत अबू उबैदा को बाहान के कैम्प की अज़ अव्वल ता आखिर दास्तान सुनाई और कहा कि कसम है साहिबे मिम्बर और रौज़ा शरीफ की ! बाहान हमारी तलवारों से डर गया और मरऊब हो कर कैदियों को रिहा कर दिया और हम को भी वापस जाने दिया। हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत खालिद से पूछा कि जंग और सुलह के मआमले में क्या तय हुवा ? हज़रत खालिद ने कहा कि ऐ सरदार लड़ाई करने पर करार दाद मन्ज़ूर हूई है। अब हज़रत अबू उबैदा ने तमाम मुजाहिदों को हुक्म दिया कि आइन्दा कल रूमी लश्कर से जंग होगी, लिहाज़ा अपने अपने हथियारों को दुरुस्त कर लो और अल्लाह की नुस्रत व मदद पर भरोसा रखो। हज़रत खालिद ने मुजाहिदों से फरमाया कि मैं ने दुश्मन के लश्कर का करीब से मुआइना किया है। इन की ता'दाद की कसरत का यह आलम है कि ता हद नज़र मिस्ले चूंटियों के फैले हुए हैं और हर तरह का सामाने जंग इन के पास है, **लैकिन लड़ने के लिये जिस की अहम ज़रूरत होती है वह दिल इन के पास नहीं।** पस्त हिम्मती और बुज़दिली ने इन को घैर रखा है। और सब से बड़ी बात तो यह है कि इन का कोई नासिर व मददगार नहीं, जब कि हमारा हामी व मददगार कादिरे मुत्लक रब तबारक व तआला है। कुरआन में इर्शादे बारी तआला है :

ذَالِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ مَولیَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْاوَاَنَّ الْکَافِرِیْنَ لَا مَوْلیٰ لَهُمْ

(सूरए मुहम्मद,आयत : 11)

तर्जुमा : "इस लिये कि मुसल्मान मौला का अल्लाह है और काफिरों का कोई मौला नहीं" (कन्ज़ुल ईमान)

लिहाज़ा ऐ मुजाहिदो ! खुदा की नुस्रत पर कामिल ए'तमाद कर के जवांमर्दी से रूमियों का मुकाबला करना,सब्रो इस्तिक्लाल से काम लेना। सब ने ब-यक ज़बान जवाब दिया कि ऐ अबू सुलैमान ! **जेहाद हमारी ख्वाहिश है और शहादत हमारी आरज़ू है।**

शम्शीर ज़नी और नैज़ा बाज़ी हमारा शेआर है, अल्लाह व रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की रज़ामन्दी और खुशनूदी हासिल करना हमारी निय्यत है, इस्लाम के लिये अपनी जानें निसार करना हमारा ईमान है। हज़रत खालिद इन के जवाब से खुश हुए,दुआए खैरो आफियत दे कर फरमाया कि अब अपने जंगी आलात दुरुस्त करने में लग जाओ। तमाम मुजाहिद आइन्दा कल होने वाली जंग की तैयारी में मस्रूफ हो गए।

जंगे यर्मूक का तीसरा दिन

सुब्ह लश्करे इस्लाम ने हज़रत अबू उबैदा की इक्तिदा में नमाज़े फज्र अदा की। नमाज़ के बा'द मुजाहिदीन अपने अपने घोड़ों पर सवार हो कर मैदान में निकले। हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत खालिद से फरमाया कि मैं ने तुम को लश्कर पर सरदार मुकर्रर किया है, लिहाज़ा तुम अपनी सवाबदीद के मुताबिक मैमना, मैसरा, वगैरा पर सरदार मुकर्रर करो और जिस तरह चाहो सफों को मुरत्तब करो। हज़रत अबू उबैदा ने लश्कर के सरदारों और अह्म अर्कान से कहा कि हज़रत खालिद बिन वलीद का हुक्म मेरे हुक्म की तरह है। लिहाज़ा वह जो हुक्म दें इस की इताअत करना तुम पर लाज़िम है। हज़रत खालिद ने तजरबा कार शहसवारों को लश्कर के अह्म अह्म हिस्सों पर सरदार मुकर्रर करने के बा'द सफों की तर्तीब शुरू कर दी और आफ्ताब थोड़ा बुलन्द होते ही हज़रत खालिद लश्कर की तर्तीब से फारिग हो गए। फिर तमाम सफों के दरमियान गश्त करते हुए फरमाते जाते कि ऐ हामिलाने कुरआन ! सब्रो इस्तिक्लाल से काम लेना, क्यूं कि सब्र करने वाला गालिब रहता है। बुज़दिली और डर अपने करीब भी मत आने देना, क्यूं कि मैदाने जंग में ना-मर्दी और खौफ के सबब ज़िल्लत व ख्वारी मिलती है।

बाहान अरमनी भी रूमी लश्कर ले कर मैदान में आ गया था, लैकिन बाहान को अपने लश्कर की तर्तीब में बहुत दैर लगी। रूमी लश्कर की कुल तीस सफें मुरत्तब हूईं और हर सफ इस्लामी लश्कर के बराबर थी। लश्कर के आगे मुकद्दमतुल जैश की हैसियत से बाहान ने जबला बिन ऐहम के फौजी अरब मुतनस्सिरा को रखा। रूमी लश्कर के आगे पांच रतल खालिस चांदी की सलीब (✞) रखी गई थी, जिस में सोने की मीनाकारी की हूई थी और चारों गोशों में कीमती जवाहिर जड़े हुए थे, जो मिस्ले सितारों के चमकते थे। इस सलीब के इर्द गिर्द नस्रानी राहिब और कस का गिरोह हाथों में इन्जील लिये हुए था। जो सलीब को धूनी देते थे और इन्जील पढ़ते थे और रूमी लश्कर की काम्याबी की दुआएं करते थे।

बाहान रूमी लश्कर की तर्तीब से फारिग हुवा और उस ने इस्लामी लश्कर की तरफ नज़रे इल्तिफात की, तो इस्लामी लश्कर की ता'दाद बहुत कम मा'लूम हूई। पूरा इस्लामी

लश्कर रूमी लश्कर की एक सफ के बराबर न था, लैकिन इस्लामी लश्कर की हज़रत खालिद ने ऐसी उमदा सफ बन्दी की थी कि बाहान देख कर हैरान रह गया। तमाम सफें कतार में ऐसे सलीके से इस्तिदा थीं कि आहनी दीवार मा'लूम होती थीं और हर मुजाहिद इस हैअत से खड़ा था कि गोया इस के सर पर परिन्दा बैठा हो, जो ज़रा सी हर्कत करने पर उड़ जाएगा। रहमते आलम व जाने आलम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की आगोशे तर्बियत के परवर्दह और मद्रसए मुहम्मदी के ता'लीम याफ्ता सहाबए किराम रिज़्वानुल्लाहे तआला अलैहिम अज्मईन सफ बन्दी के मआमले में ऐसे माहिर थे कि इन की सफ बन्दी और मा'रका आराई की कैफियत कुरआन मजीद ब-तौर तौसीफ यूं बयान करता है :

اِنَّ اللهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِى سَبِيْلِه صَفًّاكَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ

(सूरए अस्सफ, आयत : 4)

तर्जुमा : **"बे शक अल्लाह दोस्त रखता है इन्हें जो इस की राह में लड़ते हैं पर्रा (सफ) बांध कर, गोया वह इमारत हैं रांगा पिलाई (सीसा पिलाई दीवार)"** (कन्जुल ईमान)

तफ्सीर : **"या'नी एक से दूसरा मिला हुवा। हर एक अपनी जगह जमा हुवा। दुश्मन के मुकाबिल सब के सब मिस्ले शै वाहिद के"**

(तफ्सीर खज़ाइनुल इरफान, सफहा : 994)

बाहान ने जब इस्लामी लश्कर की सफ बन्दी देखी तो उस पर एक अन्जान खौफ तारी हुवा और इस्लामी लश्कर का रोअब और दबदबा उस के दिल में समा गया।

हाकिमे बसरा हज़रत रूमास का इस्लामी लश्कर की तरफ से रूमी बतरीक से लड़ना

बाहान ने अपने लश्कर को तर्तीब देने के बा'द हिरक्ल बादशाह के एक मुकर्रब बतरीक को मैदान में उतारा। वह बतरीक रूमी लश्कर के रोउसा में से था। अपने भारी डील डोल और कद्दो कामत में वह चट्टान की तरह नज़र आता था। जवाहिरात से जड़ी हूई सोने की सलीब गले में लटकाए हुए सामाने जंग से आरास्ता हो कर मैदान में आया और अपने घोड़े को गरदावा देने लगा। मिस्ले शैर गरजती आवाज़ में पुकार कर मुकाबिल

तलब करने लगा। हाकिम बसरा रूमास जिन्हों ने फतहे बसरा के दिन इस्लाम कबूल किया था और अपनी जान को अल्लाह के लिये वक्फ कर के इस्लामी लश्कर के साथ रूमियों से लड़ने निकल पड़े थे। वह रूमी बतरीक का चेलेन्ज कबूल करते हुए मैदान में आए। रूमी बतरीक ने हाकिम रूमास को फौरन पहचान लिया कि यह हाकिम बसरा रूमास है जिस ने दीने इस्लाम कबूल कर लिया है। रूमी बतरीक ने कहा कि ऐ रूमास ! तुम पर अफ्सोस है कि तुम ने अपना दीन छोड़ कर मुसल्मानों का दीन इख्तियार कर लिया है। हज़रत रूमास ने जवाब दिया कि मैं ने इस्लाम को सच्चा दीन पाया है। जो शख्स इस दीन में दाखिल हुवा उस को नैक बख्ती और भलाई हासिल हूई और उस की दुनिया व आखेरत संवर गई। और जो दीने इस्लाम से मुन्हरिफ हुवा वह गुमराह और बरबाद हुवा। इत्ना फरमा कर हज़रत रूमास ने रूमी बतरीक पर हम्ला कर दिया। रूमी बतरीक ने वार खाली फैरा और जवाबी वार किया, जिस को हज़रत रूमास ने ढाल पर ले कर बचाया। दोनों फन्ने हर्ब के कुहना मश्क और तजरबा कार थे। दोनों ने एक दूसरे पर हम्ले कर के जंग के कर्तब और लड़ाई के फन दिखाए। काफी दैर तक दोनों में जंग जारी रही और दोनों लश्कर वाले इन की लड़ाई के दांव पैच देख कर हैरान थे। दौराने लड़ाई रूमी बतरीक ने मौका' पा कर हज़रत रूमास के शाना पर वार कर दिया। तल्वार की ज़र्ब कारी पड़ी और ज़ख्म बड़ा गहरा लगा, हज़रत रूमास के जिस्म से खून का फव्वारा छूटा। कसरत से खून बहता देख कर हज़रत रूमास ने घोड़े की बाग फैरी और इस्लामी लश्कर की तरफ पलटे। बतरीक ने तआकुब किया, लैकिन पाने में ना काम रहा, हज़रत रूमास शदीद ज़ख्मी हालत में इस्लामी लश्कर में आए। मुजाहिदों ने इन को घोड़े से उतारा और ज़ख्म बांधा। तमाम मुजाहिदों ने हज़रत रूमास की कोशिशे जेहाद का शुक्रिया अदा किया और दुआए जज़ाए खैर से नवाज़ कर इन की हौसला अफ्ज़ाई की।

हज़रत रूमास के ज़ख्मी हो कर वापस पलटने पर रूमी बतरीक का हौसला बढ़ गया और तकब्बुर व गुरूर के नशे में चूर, अपने घोड़े को मैदान में उतार कर तल्वार लहराता हुवा भेड़िये की तरह चिल्ला चिल्ला कर मुकाबिल तलब करने लगा, कौन है जो मेरे मद्दे मुकाबिल आए ? मैं इस के खून से अपनी तल्वार की प्यास बुझाउंगा और अपने दिल को ठंडक पहोंचाउंगा।

हज़रत कैस बिन हबीरा का बतरीक से मुकाबला :-

रूमी बतरीक को मुतकब्बिराना लहज़े में गरजते देख कर हज़रत मैसरा बिन मस्रूक अबसी मैदान में लड़ने के लिये निकले, लैकिन हज़रत खालिद ने इन्हें मना' फरमाया, तुम

ज़ईफ और बुढ्ढे शख्स हो, तुम्हारा जाना मुनासिब नहीं, लिहाज़ा हज़रत मैसरा रुक गए। अब हज़रत आमिर बिन तुफैल अद्दौसी ने हज़रत खालिद से कहा कि ऐ सरदार ! आप मुझे जाने की इजाज़त दें ताकि मैं इस मग्रूर का गुरूर तोड़ दूं। हज़रत खालिद ने फरमाया कि ऐ आमिर ! तुम कमसिन हो इस बतरीक से बराबर टक्कर नहीं ले सकोगे, ज़रा तुम तवक्कुफ करो। हज़रत आमिर ने कहा कि सरदार ! आप ने इस रूमी बतरीक को बहुत अहमियत दे दी है, दो शख्सों ने आप से इस के मुकाबले में जाने की इजाज़त तलब की, लैकिन आप ने जाने नहीं दिया। हज़रत खालिद ने फरमाया कि जब यह बतरीक हज़रत रूमास से लड़ रहा था तो मैं ने इस की लड़ाई को ब-गौर देखा। इस के लड़ने के अन्दाज़ से पता चलता था कि वह बहुत तजरबा कार, जंगजू और शुजाअ है और वह तुम को कोई ज़रर न पहुंचा दे इस लिये मैं ने अज़ राहे शफ्कत तुम को जाने की इजाज़त नहीं दी। लिहाज़ा दिल छोटा न करो और अपनी जगह इत्मिनान से ठहरो।

इस्लामी लश्कर से मुजाहिद को मुकाबले के लिये निकलने में दैर हूई, तो रूमी बतरीक चीख चीख कर मुकाबिल तलब करने लगा। हज़रत हर्स बिन अब्दुल्लाह अज़्दी ने हज़रत खालिद से जाने की इजाज़त मांगी। हज़रत खालिद ने फरमाया कि बे शक तुम में सख्त दिलैरी और कुव्वत है और तुम मर्दे चालाक भी हो। अल्लाह का नाम ले कर मुकाबला करने निकलो। हज़रत हर्स बिन अब्दुल्लाह ने लड़ाई का सामान दुरुस्त किया और मैदान की तरफ जाने के लिये आमादा हुए।

हज़रत हर्स रवाना हो रहे थे कि हज़रत खालिद ने फरमाया कि ऐ अब्दुल्लाह के बेटे ! मेरे एक सवाल का जवाब दो। क्या इस से पहले तुम ने किसी जंग में किसी से मुकाबला किया है ? हज़रत हर्स ने कहा : नहीं। बल्कि यह पहला मौका' है कि मुझे यह सआदत हासिल हो रही है। हज़रत खालिद ने फरमाया कि तुम भी ठहर जाओ। क्यूं कि वह बतरीक कुहना मश्क तजरबा कार है और मैं यह चाहता हूं कि इस के मुकाबले में वही निकले जो तजरबा कार हो। यह फरमा कर हज़रत खालिद ने हज़रत कैस बिन हबीरा मुरादी की तरफ देखा। हज़रत कैस ने कहा कि ऐ अबू सुलैमान ! मैं आप का इशारा समझ गया हूं। आप यह चाहते हैं कि मैं मुकाबला करने जाउं। हज़रत खालिद ने फरमाया हां ! बे शक तुम इस के मद्दे मुकाबिल हो। अल्लाह तबारक व तआला का नाम ले कर जाओ। अल्लाह तुम्हारी ज़रूर मदद फरमाएगा।

हज़रत कैस बिन हबीरा मुरादी '' بِسْمِ اللّٰهِ وَ عَلٰی بَرَکَۃِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَ سَلَّمَ '' पढ़ते हुए मैदान में गए। इस मआमले को इमामे अर्बाबे सेयर हज़रत अल्लामा मुहम्मद बिन

अम्र वाकदी कुद्दिसा सिर्रहु की ज़बानी समाअत फरमाएं :

''पस कहा कैस ने कि ऐ अबू सुलैमान ! मैं जानता हूं कि तुम पैश न आते हो साथ मेरे और मेरे निकलने को मुराद लेते हो कि मैं जाउं इस के मुकाबले को। पस कहा खालिद बिन वलीद ने कि जाओ तुम अल्लाह गालिब और बुज़ुर्ग का नाम ले कर कि ब-तह्कीक तुम मसल इस के हो और अल्लाह तुम्हारी इआनत करेगा इस पर। पस निकले कैस बिन हबीरा रहमहुल्लाहु और रवाना किया उन्हों ने अपने घोड़े को मैदान में यहां तक कि नर्म और मुलाइम कर दिया इस की तबीअत को और तोड़ दिया उस की तैर को, पस आगे बढ़ाया इस को ब-जानिबे बतरीक के और वह कहते थे '' بِسْمِ اللّٰهِ وَ عَلٰی بَرَکَۃِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَ سَلَّمَ '' और नज़दीक हुए वह बतरीक से''

(हवाला : - फुतूहुश्शाम, अज़ : - अल्लामा वाकदी, सफहा : 233)

कारेईने किराम गौर फरमाएं ! हज़रत कैस बिन हबीरा मुरादी रदियल्लाहो तआला अन्हो जलीलुल कद्र सहाबीए रसूले मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम थे। मैदाने जंग में जहां मौत का सामना होने वाला है, ऐसी खतरनाक मुहिम पर जाते वक्त अपनी हिफाज़त और गल्बा हासिल करने के लिये **''अला बरकते रसूलल्लाह''** या'नी रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की बरकत पर कहते हुए मैदान में जाते हैं। हज़रत कैस बिन हबीरा मैदान में रूमी बतरीक पर हम्ला करने जा रहे थे, **लिहाज़ा उन्हों ने अपने आका व मौला, रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की ज़ात दाफेउल बला से इस्तिआनत की और इन की बरकत के तुफैल अल्लाह से फतह व नुस्रत के तालिब हुए।** हज़रत कैस बिन हबीरा मुरादी ही नहीं, बल्कि तमाम सहाबए किराम का यह अकीदा था कि अल्लाह तआला अपने महबूबे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के वुजूदे बा-बरकत के तुफैल ही हम पर रहम व करम फरमाता है और इन की बरकत से हम को फतह व नुस्रत मिलती है। लैकिन दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन का अकीदा सहाबए किराम के अकीदे के बर-अक्स है, बल्कि सहाबए किराम का जो अकीदा था, वह इन के नज़दीक शिर्क है।

- वहाबी, देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत के इमाम व पैशवा मौलवी इस्माईल देहलवी लिखते हैं :

"लिहाज़ा कोई किसी का नाम उठते बैठते लिया करे, दूर व नज़्दीक से पुकारा करे और बला के मुकाबले में इस की दुहाई दे और दुश्मन पर इस का नाम ले कर हम्ला करे... तो इन सब बातों से आदमी मुश्रिक हो जाता है।"

(हवाला : – तक्वियतुल ईमान, नाशिर : दारुस सल्फिया, बम्बई, सफहा : 22)

मुन्दरजा बाला इबारत में देहलवी साहिब कहते हैं कि किसी का नाम ले कर दुश्मन पर हम्ला करने से आदमी मुश्रिक हो जाता है। गौर फरमाएं कि हज़रत कैस बिन हबीरा मुरादी तल्वार ले कर मैदान में क्यूं गए थे ? रूमी बतरीक पर हम्ला करने गए थे। फूलों का हार पहनाने नहीं गए थे। और जब हम्ला करने गए तो रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की बरकत व नुस्रत का विर्द करते हुए गए। इन्साफ से कहिये मौलवी इस्माईल देहलवी के शिर्क के फत्वे की मशीन गन का वार किस पर हो रहा है ?

बहर हाल, हज़रत कैस बिन हबीरा मुरादी जब मैदान में आए, तो इन का सुरअत से तल्वार घूमाने और घोड़े को गरदावा देने की महारत देख कर रूमी बतरीक ने ताड़ लिया कि यह फन्ने हर्ब के माहिर हैं, लिहाज़ा उस ने अपने आप को चौकन्ना किया और बहुत एहतियात से लड़ने लगा। दोनों में शम्शीर ज़नी होती रही। दोनों आज़मूदा कार जंगजू थे। दोनों की तल्वार ज़नी ने देखने वालों को तअज्जुब में डाल दिया। दोनों आपस में ऐसा ज़ौर से तल्वार मारते कि तल्वार से जब तल्वार टकराती, तो आग की चिंगारियां उड़ती थीं। अचानक हज़रत कैस ने मौका' पा कर बतरीक पर एक वार किया। बतरीक ने वार सिपर पर लिया, लैकिन वार इत्ना शदीद था कि ढाल को फाड़ कर तल्वार बतरीक के सर पर लगी लैकिन बतरीक ने लोहे का खौद पहन रखा था। तल्वार खौद में पैवस्त हो गई और खींचने के बा-वुजूद निकली नहीं, हज़रत कैस ने ज़ौर लगा कर निकालने की कौशिश की तो तल्वार का कब्ज़ा हाथ में आ गया। हज़रत कैस की तल्वार का वार सर पर रसीद होने से बतरीक लरज़ गया, लैकिन जब उस ने हज़रत कैस को बगैर तल्वार का देखा, तो तैज़ी से तल्वार चलाई, लैकिन उस की तल्वार का वार शाना पर लगने के बा-वुजूद हज़रत कैस को कोई ज़रर नहीं पहुंचा क्यूं कि आप ने लोहे की ज़िरह पहनी थी। बतरीक ने दूसरा वार करने का कस्द किया तो हज़रत कैस ने छलांग लगाई और बतरीक से चिमट गए और उस को घोड़े से खींच कर ज़मीन पर डाल दिया। अब दोनों में कुश्ती शुरू हो गई।

हज़रत कैस बिन हबीरा इबादते खुदावन्दी में शब बैदारी किया करते थे और दिन

में अक्सर व बैशतर रोज़ा रखते थे, लिहाज़ा इन का जिस्म दुबला पतला था जब कि रूमी बतरीक भैंसे की तरह मोटा और फर्बा था। हज़रत कैस के दोनों हाथ की गिरफ्त में भी वह नहीं समाता था। उस की गर्दन का हल्का ही तीन चार बालिश्त का था। लिहाज़ा वह हज़रत कैस की पकड़ में कब आता ? थोड़ी दैर इसी तरह कुश्ती होती रही, आखिरकार रूमी बतरीक हज़रत कैस पर चढ़ बैठा और करीब था कि वह काबू पा कर आप को शहीद कर दे या कैद कर ले। हज़रत कैस ने तमाम ताकत से अपने जिस्म को लचक दे कर करवट बदलते हुए इतने ज़ौर से मरोड़ दिया कि बतरीक अपना जिस्मानी तवाज़ुन खो बैठा और लुढ़क कर गिरा। हज़रत कैस मौका' पाते ही जसत लगा कर घोड़े की पीठ पर सवार हो गए। बतरीक अपने मोटा पे की वजह से सुरअत से उठ न सका। हज़रत कैस ने घोड़े को एडी मारी और इस्लामी लश्कर की तरफ दौड़ आए ताकि किसी की तल्वार ले कर वापस आ जाएं। बतरीक भी अब घोड़े पर सवार हो गया था। उस ने हज़रत कैस को इस्लामी लश्कर की जानिब जाते हुए देख कर यह गुमान किया कि हज़रत कैस मुझ से डर कर भागे हैं। बतरीक ने तआकुब किया। हज़रत कैस ने बतरीक को आता देख कर अपने दिल में कहा कि ऐ नफ्स ! तू मौत से न डर अरे मौत तो तेरी दिली ख्वाहिश और आखरी तमन्ना है। वापस पलट ताकि भागने का गुमान किसी को न गुज़रे। यह ख्याल आते ही हज़रत कैस ने ज़ौर से लगाम खींची। घोड़ा चराग-पा हो कर ठहर गया। हज़रत कैस की कमर में एक लम्बी यमनी छुरी थी, वह निकाल ली और घोड़े की बाग रूमी बतरीक की तरफ फैर दी। सामने से रूमी बतरीक बरहना तल्वार घूमाता हुवा आ रहा था। हज़रत कैस ने अपना घोड़ा उस की तरफ दौड़ाया। बड़ा नाज़ुक मरहला था। बतरीक के हाथ में तल्वार थी और हज़रत कैस के हाथ में खन्जर था। अब दोनों बिल्कुल करीब आ गए कि दफ्अतन हज़रत कैस ने घोड़े को मोड़ कर एक तरफ कूदाया। और बतरीक की लाइन व खत से एक जानिब हट गए। बतरीक इतनी तैज़ रफ्तारी से आ रहा था कि यक लख्त घोड़ा रोक न सका और आगे निकल गया। दूर जा कर घोड़ा रोका और फिर घोड़े का रुख हज़रत कैस की तरफ फैरा।

हज़रत खालिद बिन वलीद दूर से हज़रत कैस और रूमी बतरीक की लड़ाई देख रहे थे। हज़रत कैस इस्लामी लश्कर की तरफ आते आते रुक गए और खन्जर निकाल कर बतरीक से लड़ने वापस गए, इधर हज़रत खालिद ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र को हुक्म दिया कि जल्दी से हज़रत कैस को तल्वार पहुंचाओ। हज़रत अब्दुर्रहमान ने अपने साथ दो तलवारें लीं। एक अपने लिये और एक हज़रत कैस के लिये। पीठ की जानिब नैज़ा लटकाया और तैज़ घोड़ा दौड़ाते हुए मैदान की तरफ चले। और ऐन उस वक्त हज़रत कैस

के करीब पहुंच गए जब हज़रत कैस और बतरीक के घोड़े आमने सामने थे, हज़रत कैस ने चक्मा दे कर अपना घोड़ा एक तरफ हटा लिया। जब बतरीक ने अपने घोड़े का रुख मोड़ा तो क्या देखता है कि हज़रत कैस के करीब हज़रत अब्दुर्रहमान मौजूद हैं। जिस तरह हज़रत खालिद ने अपने साथी को ऐन वक्त पर मदद भेज दी। इसी तरह जब रूमी लश्कर के लोगों ने हज़रत अब्दुर्रहमान को मैदान में आते हुए देखा, तो उन्हों ने यह गुमान किया कि यह अपने साथी की लड़ने में मदद करने आ रहे हैं, लिहाज़ा रूमी लश्कर से भी दो गबर अपने साथी की मदद करने फौरन मैदान में आ गए। अब मैदान में दो मुकद्दस सहाबी और तीन नजिस रूमी थी। रूमी बतरीक की मदद करने आए हुए दो गबरों ने हज़रत अब्दुर्रहमान से कहा कि यह क्या बे इन्साफी है कि हमारे एक आदमी के मुकाबले में तुम दो आदमी हो गए। हज़रत अब्दुर्रहमान ने जवाब दिया कि मैं सिर्फ अपने साथी को तल्वार पहुंचाने आया हूं और वापस पलट जाता हूं। हम कभी बे इन्साफी नहीं करते और हकीकत यह है कि तुम्हारे सौ के मुकाबले में हमारा एक आदमी काफी है। अगर तुम को इस का तजरबा करना है तो इस वक्त तुम तीन हो। हम दो हैं लैकिन बजाए दो के हम में से सिर्फ एक आदमी तुम से निपट सक्ता है।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र की शुजाअत :-

हज़रत अब्दुर्रहमान की बात सुन कर तीनों रूमी जल कर कबाब हो गए, गुस्सा और तकब्बुर से आंखें चढ़ा कर बे तुकी बकवास करने लगे। हज़रत अब्दुर्रहमान ने हज़रत कैस से फरमाया कि मैं तुम से ब-वास्तए अल्लाह तआला दरख्वास्त करता हूं कि तुम ने बतरीक से लड़ने में बहुत मशक्कत उठाई है, लिहाज़ा थोड़ी दैर के लिये एक तरफ हट कर आराम हासिल कर लो और फिर देखो कि मैं क्या करता हूं। हज़रत कैस थोड़ा हट गए और दफ्अतन हज़रत अब्दुर्रहमान ने बतरीक की मदद को आने वाले दो गबरों में से एक के सीना पर ऐसा ज़ौर से नैज़ा मारा कि पुश्त के पार जा निकला और वह मुर्दा हो कर ज़मीन पर गिरा। अपने साथी का हश्र देख कर दोनों रूमी तिल्मिला उठे और तैश में आ कर हज़रत अब्दुर्रहमान पर हम्ला कर दिया। हज़रत अब्दुर्रहमान तन्हा दो रूमी से मुकाबला कर रहे थे, लैकिन इन की तल्वार ज़नी की महारत व सुरअत का यह आलम था कि दो रूमी भी कम पड़ते थे। हज़रत अब्दुर्रहमान की तल्वार बिजली की मानिन्द चमकती थी, जिस को देख कर दोनों रूमियों की आंखें चुंधिया गईं। हज़रत कैस ने चाहा कि हज़रत अब्दुर्रहमान की इआनत करें, वह नज़दीक आए, लैकिन हज़रत अब्दुर्रहमान ने इन से कहा कि **मैं तुम को रसूले अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम और हज़रत सिद्दीके अक्बर का वास्ता देता हूं कि मुझ को**

अकेला लड़ने दो। मैं इन दोनों को जहन्नम की आग में पहुंचा देता हूं और अगर में शहीद हो जाउं तो हज़रत आइशा सिद्दीका को मेरा सलाम कह देना।

थोड़ी दैर तल्वार ज़नी करने के बा'द हज़रत अब्दुर्रहमान ने फिर एक मरतबा नैज़ा निकाला और घूमाने लगे। हज़रत कैस दूर खड़े खड़े हज़रत अब्दुर्रहमान की दिलैरी और बहादुरी के जौहर देख कर तअज्जुब भी करते और इन की सलामती की दुआ भी। हज़रत अब्दुर्रहमान ने मदद को आने वाले दूसरे गबर के सीने पर नैज़ा मारा, लैकिन नैज़ा ज़िरह में फंस गया। न गबर ज़ख्मी हुवा और न खींचने पर वापस निकलता था। लिहाज़ा हज़रत अब्दुर्रहमान ने हाथ से नैज़ा छोड़ दिया और फौरन म्यान से तल्वार निकाल कर ऐसा शदीद वार किया कि गबर दो टुक्ड़े हो कर ज़मीन पर गिरा। अब पहले लड़ने आने वाला बतरीक बचा। उस ने अपने मुआविन दोनों गबरों को कुश्ता देखा, तो उस को भी अपनी मौत का यकीन हो गया। मौत के खौफ से थर थर कांपने लगा। उस के **अवसान खता हो गए** और बद-हवासी के आलम में बे तर्तीब तल्वार घूमाने लगा। हज़रत अब्दुर्रहमान ने हज़रत कैस बिन हबीरा को पुकार कर कहा कि यह तुम्हारा शिकार है। क्यूं कि तुम से लड़ने यही मैदान में आया था, लिहाज़ा इस को दोज़ख की आग में पहुंचाने के सवाब के हक्दार तुम हो। हज़रत कैस ने बतरीक के सर पर तल्वार का ऐसा शदीद वार किया कि तल्वार खौद को तोड़ती हूई उस के सर को हलक तक चीर दिया और बतरीक के सरके चिथड़े उड़ा दिये, बतरीक ज़मीन पर ऐसे गिरा जैसे कोई भैंसा ज़ब्ह हो कर ज़मीन पर पड़ा हो। यह मन्ज़र देख कर रूमी लश्कर में खौफ की कपकपी फैल गई, आपस में एक दूसरे से कहते थे कि **यह अरब इन्सान हैं या जिन्नात ?**

तीनों रूमियों को कत्ल करने के बा'द हज़रत अब्दुर्रहमान और हज़रत कैस इस्लामी लश्कर में वापस आए। हज़रत कैस लश्कर में आ कर अपनी जगह ठहर गए, लैकिन हज़रत अब्दुर्रहमान वापस फिर मैदान में आ कर अपने घोड़े को गरदावा देने लगे और रूमियों को पुकार कर मुकाबिल भेजने का मुतालबा करने लगे, लैकिन किसी भी रूमी सिपाही ने मैदान में आने की जुर्अत न की। लेहाज़ा खुद हज़रत अब्दुर्रहमान रूमी लश्कर के मैमना और मैसरा पर टूट पड़े। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र सिद्दीक का चेहरा जौशे जेहाद से अर्गवान के फूल की तरह सुर्ख हो कर चमक रहा था। इन को अपनी तरफ आता देख कर रूमियों पर दहशत तारी हो गई, जान बचाने के लिये हज़रत अब्दुर्रहमान की तल्वार की ज़द से महफूज़ रहने के लिये दाएं बाएं होने लगे। नतीजतन इन की सफें टूट कर दर्हम बरहम हो गईं। हज़रत अब्दुर्रहमान

की तल्वार की लपेट में दो रूमी आ गए और खर्बूज़ा की तरह कट गए। हज़रत अब्दुर्रहमान फिर बीच मैदान में आ गए और ललकार ललकार कर रूमियों को डराने लगे और अपना नाम जता जता कर मुकाबिल तलब करने लगे। रूमी लश्कर से एक गबर मुकाबला करने निकला बल्कि यूं समझो कि मरने के लिये आया। गबर मैदान में आ कर ठहरता और अपनी तल्वार संभालता इत्ना मौका' ही उसे न मिला। **उस के आते ही हज़रत अब्दुर्रहमान ने एक** ही वार में उसे ज़मीन पर ढेर कर दिया। फिर दूसरा आया। इस का भी यही हाल हुवा। अब मुकाबला करने मैदान में आने की किसी में हिम्मत बाकी न रही।

इस्लामी लश्कर पर रूमियों का इज्तिमाई हम्ला :-

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र सिद्दीक की शुजाअत व बहादुरी और हिरक्ल बादशाह के मुकर्रब बतरीक के कत्ल की इत्तिला' जब बाहान को मिली, तो वह बौखला गया। उस ने फौरन हुक्म जारी किया कि लश्कर की अगली दस सफें यक-बारगी इस्लामी लश्कर पर हम्ला कर दें। बाहान का हुक्म मिलते ही रूमी लश्कर की अगली दस सफें इस्लामी लश्कर पर उमंडते हुए सैलाब की तरह टूट पड़ीं। इस्लामी लश्कर की सफें आरास्ता और मुजाहिदीन चौकन्ना ही थे। **रूमी लश्कर के सैलाब के सामने जैशे इस्लाम के मुजाहिद आहनी दीवार की तरह साबित कदम रहे।** रूमी लश्कर की कसरत के बाइस ऐसा शौर व गुल बुलन्द हुवा कि दूर दराज़ जंगल तक आवाज़ सुनाई दी। चरिन्दे व परिन्दे घभरा कर भाग निकले। घोड़ों की टापों से उड़ने वाले गर्द व गुबार मिस्ले बादल छा गए और मीलों तक कुछ दिखाई न देता था। आतिशे जंग का तन्नूर भड़क उठा। नैज़ों और तलवारों की चकाचाक सदाएं और मक्तूल और ज़ख्मियों की गूंजती चींखें माहौल की संगीनी में इज़ाफा करती थीं। मौत का बाज़ार तैज़ व गर्म था। घमसान की लड़ाई जारी थी। मा'रकए जंग ऐसा शबाब पर था कि बड़े बड़े दिलैरों के भी दिल दहल जाएं। इस्लामी लश्कर के मुजाहिदीन सरों पर कफन बांध कर रूमी हम्ले के सामने साबित कदमी से जमे रहे। सुब्ह से ले कर शाम तक मैदाने कारज़ार की सरगर्मियां सर्द न हूईं। आफ्ताब के गुरूब होने पर माहौल ज़रा ठंडा हुवा। जंग मौकूफ हूई और दोनों लश्कर अपने अपने कैम्प में वापस लौटे। रूमी बड़ी ता'दाद में मक्तूल हुए थे, जब कि इस्लामी लश्कर के बहुत थोड़े मुजाहिदों को जामे शहादत नौश करने की सआदत नसीब हूई। शहीद होने वालों में हज़रत कैस बिन हबीरा मुरादी के भतीजे हज़रत सुवैद बिन बेहराम भी थे। ''اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ''

हज़रत कैस के भतीजे की तलाश और एक सौ रूमियों का कत्ल :-

हज़रत कैस बिन हबीरा मुरादी ने अपने भतीजे हज़रत सुवैद को इस्लामी लश्कर के साथ कैम्प में वापस आते नहीं देखा, तो इन को हज़रत सुवैद की शहादत का अंदेशा हुवा। पस रात के सन्नाटे में वह अपने कुछ साथियों के हमराह मा'रकए मैदान में मश्अलें ले कर गए। मैदान में बे-शुमार लाशें बे गोर व कफन पड़ी हूई थीं और इन में अक्सर रूमियों की थीं। हज़रत कैस लाशें टटोल टटोल कर हज़रत सुवैद को ढूंढने की बहुत कौशिश कर रहे हैं, मगर लाश दस्तयाब न हूई। हज़रत कैस मायूस हो कर पलटने का इरादा करते हैं कि दफ्अतन कुछ रूमी सिपाही हाथ में मश्अलें लिये हुए मैदान की तरफ आते नज़र आए। हज़रत कैस ने अपने साथियों से फरमाया कि रूमी गबर आ रहे हैं। खुदा की कसम ! मैं अपने भतीजे का बदला ले कर रहूंगा। हज़रत कैस और इन के साथियों ने मश्अलें बुझा दीं। यह कुल सात अश्खास थे। सातों अलग अलग हो गए और लाशों के दरमियान मिस्ले मुर्दा लेट गए। रूमी सिपाही करीब आए, वह कुल एक सौ आदमी थे। मैदान में आ कर रूमी सिपाहियों ने भी लाशें टटोलना शुरू किया। थोड़ी दैर इधर उधर की लाशें टटोलीं और उस बतरीक की लाश को ढूंढ निकाला जिस को आज दिन में हज़रत कैस ही ने कत्ल किया था। उस बतरीक की लाश को अपने शानों पर उठा कर रूमी वापस जाने लगे। रूमी सिपाही अपने बतरीक के भैंसे जैसी भारी भरकम लाश बड़ी मुश्किल से उठा कर चल रहे थे, हालां कि वह बे खौफ और गाफिल थे। जब रूमी सिपाही उस मकाम पर आए जहां हज़रत कैस बिन हबीरा मुरादी और इन के साथी लाशों के दरमियान छुप कर लेटे हुए थे, तो अचानक तमाम मुजाहिद उठ खड़े हुए और रूमियों पर टूट पड़े। अचानक इस तरह के हम्ले की रूमियों को तवक्कोअ न थी, वह बौखला गए। वह कुछ सोचें समझें और कुछ करें, इतने अर्से में मुजाहिदों की तलवारें इन के सरों और गर्दनों पर पड़ने लगीं। मुजाहिदों ने इन को गाजर मूली की तरह काट कर रख दिया। हज़रत कैस ने अकेले सोलाह रूमियों को कत्ल किया और जब वह किसी रूमी को कत्ल करते थे तो यह कहते थे कि यह मेरे भतीजे के बदले में है या यह कहते थे कि यह मेरे भतीजे की तरफ से है। अल-गरज़ मुजाहिदों ने आन की आन में एक सौ रूमी सिपाहियों को वासिले जहन्नम कर दिया।

रूमियों को कत्ल करने के बा'द हज़रत कैस और इन के साथी अपने लश्करी कैम्प

की तरफ वापस लौट रहे थे कि लाशों के दरमियान से किसी के कराहने की आवाज़ सुनाई दी। हज़रत कैस रुक गए और उस आवाज़ के करीब गए, देखा तो वह हज़रत सुवैद थे। ज़ख्मों की शिद्दत से कराह रहे थे और खून में लथपथ अपनी ज़िन्दगी की आखरी सांसें ले रहे थे। हज़रत कैस फौरन अपने भतीजे से लिपट गए और रोने लगे। पैशानी को बोसा दिया और पूछा कि ऐ प्यारे बेटे ! तुम्हारा यह हाल किस तरह हुवा ? हज़रत सुवैद ने कहा कि ऐ मोहतरम चचा जान ! मैं कुछ भागते हुए रूमियों का पीछा कर रहा था कि दफ्अतन एक रूमी ने पलट कर मेरे सीने पर नैज़े से वार कर दिया, मैं संभल न सका और उस की नौक मेरी पुश्त के आर पार हो गई और मैं ज़मीन पर गिर पड़ा। हज़रत कैस ने देखा तो हज़रत सुवैद के सीना में दाएं जानिब गहरा ज़ख्म था और अभी तक उस से खून बेह रहा था।

हज़रत सुवैद ने जां कनी के आलम में लरज़ती हूई आवाज़ में कहा : **चचा जान ! इस वक्त में यह देख रहा हूं कि जन्नत की हूरें मेरे इस्तिक्बाल के लिये जमा हैं और मेरी रूह निकलने का इन्तिज़ार कर रही हैं।** हज़रत सुवैद ने अपने चचा हज़रत कैस से मज़ीद कहा : कि ऐ चचा ! आप मुझ को इस्लामी लश्कर के खैमों तक पहुंचा दें, ताकि मैं वहां मरूं। हज़रत कैस और इन के साथी मिल कर हज़रत सुवैद को खैमा में ले आए। हज़रत अबू उबैदा को इत्तिला' मिलते ही फौरन हज़रत कैस के खैमा में आ पहुंचे और हज़रत सुवैद के सराहने आ कर बैठ गए। हज़रत सुवैद निज़ाअ के आलम में थे। लैकिन कुछ कहना चाहते थे। हज़रत अबू उबैदा और तमाम हाज़िरीन की आंखें भर आईं। हज़रत अबू उबैदा ने पूछा : बेटा ! तुम क्या कहना चाहते हो ?

> **"सुवैद ने कहा साथ नैकी और बेहतरी और मग्फिरत के जज़ाए नैक अता करे अल्लाह तआला हमारी तरफ से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैह व आलेहि व सल्लम को। पस हर आईना सच्चे थे वह अपने कौल में और दुरुस्त इर्शाद किया था हम से" (या'नी शहीद के लिये जन्नत की हूरें हैं)**

(हवाला : - फुतूहुश्शाम, अज़ : अल्लामा वाकदी, सफहा : 238)

यह थे हज़रत सुवैद की ज़िन्दगी के आखरी कल्मात या'नी अपने आका व मौला, रहमते आलम व जाने आलम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम का तज़केरा और इन की याद आखरी सांसों तक ज़िन्दा है और इन के इश्क में ही अपना सर कुरबान किया :

दिल है वो दिल, जो तेरी याद से मा'मूर रहा
सर है वो सर, जो तेरे कदमों पे कुरबान गया

फिर थोड़ी ही देर में हज़रत सुवैद बिन बेहराम रदियल्लाहो तआला अन्हो की रूह परवाज़ कर गई, रात ही में नमाज़े जनाज़ा पढ़ कर इन को दफ्न कर दिया गया। हज़रत सुवैद रात की तारीकी में ब-ज़ाहिर कब्र की तारीकी में दाखिल किये गए। लैकिन इश्के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम का चिराग इन के दिल में रौशन था, जिस की ब-दौलत इन की कब्र में अंधेरा नहीं बल्कि उजाला था :

लहद में इश्क रुखे शह का दाग ले के चले
अंधेरी रात सुनी थी चिराग ले के चले

(अज़ : इमामे इश्को मुहब्बत, हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत सुवैद को दफ्न करने के बा'द मुजाहिदों ने बाकी रात कुरआन मजीद की तिलावत, नमाज़ और इस्तिग्फार में बसर की। और अपने रब तआला से मदद और नुस्रत की दुआ मांगते थे।

रूमी लश्कर का ज़ुल्म व इस्तिबदाद और दो बतारेका का ख्वाब

तीसरे दिन की जंग खत्म होने पर रात के वक्त रूमी लश्कर के तमाम बतारेका, सरदार और अराकीन रूमी सिपाह सालार बाहान अरमनी के खैमे में जमा हुए। खैमे में दस्तरख्वान बिछा हुवा था, उमदा और लज़ीज़ खाने पुर तकल्लुफ अन्दाज़ से सजाए गए थे। सब लोग दस्तरख्वान पर खाने के लिये बैठ गए, लैकिन बाहान ने खाना खाने से इन्कार किया। उस का मूड़ इत्ना खराब था कि उस को खाने की तरफ रग्बत ही न थी। उस की ज़ेहनी हालत इस कद्र परागन्दा होने का सबब यह था कि जब हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र सिद्दीक और हज़रत कैस बिन हबीरा ने रूमी बतरीक और दो गबरों को कत्ल कर दिया था, उस वक्त एक बतरीक बाहान के पास आया और सरगोशी करते हुए कहा कि ऐ बादशाह ! आज रात मैं ने एक ख्वाब देखा है कि कुछ लोग सब्ज़ घोड़ों पर सवार मुसल्लह आस्मान से उतरे और अरबों के लश्कर के आगे कतार बन्द सफें बांध दी

और हमारे और अरबों के दरमियान हाइल हो गए। हमारे लश्कर का कोई आदमी हम्ले का कस्द कर के मुसल्मानों के लश्कर की जानिब जाता, तो यह आस्मान से आने वाले सवार उस को खत्म कर देते। इस तरह उन्हों ने हमारे लश्कर के बे-शुमार लोगों को मार डाला। बतरीक ने बाहान से कहा कि यह ख्वाब देखने के बा'द मुझ को यकीन हो रहा है कि मुसल्मानों का लश्कर हम पर ज़रूर गालिब आएगा। बतरीक की ज़बान से ख्वाब की तफ्सील सुन कर बाहान का दिल खौफ से उड़ने लगा। बा'दहु उस ने रूमी लश्कर की दस सफों को यक-बारगी मुसल्मानों पर हम्ला करने का हुक्म दिया था, लेकिन नतीजा यह हुवा कि रूमी लश्कर के सिपाही अक्सर मक्तूल हुए। लिहाज़ा बाहान को भी बतरीक के ख्वाब की सदाकत का यकीन हो गया और वह बहुत ही तश्वीश में मुब्तला हुवा, इसी वजह से रात के वक्त खाने के लिये दस्तरख्वान पर नहीं आया। रूमी लश्कर के अराकीन व बतारेका को जब पता चला कि सरदार बाहान आज की जंग के नतीजा से फिक्र मन्द होने की वजह से खाने से बाज़ रहा है, तो वह सब जमा हो कर बाहान के पास आए और कहा कि ऐ सरदार ! क्या सबब है कि हम आप को पज़्मुर्दा खातिर देख रहे हैं ? रंज व गम के आसार जनाबे वाला के चेहरे से अयां हैं। नीज़ हम को मा'लूम हुवा है कि इसी वजह से रात आप ने खाना भी तनावुल नहीं फरमाया। ऐ सरदार ! जंग मिसल डोल के है। वह घूमती है और अपना रुख बदलती है। कभी जंग का नतीजा हमारी मुवाफिक्त में होता है और कभी मुखालिफत में। आज हम ने लड़ाई में हज़ीमत उठाई है, तो हो सक्ता है कि आइन्दा कल हम को गल्बा हासिल हो। कल हम सब मिल कर मुसल्मानों पर धावा बोल देंगे और इन को खत्म कर देंगे। बाहान ने कहा कि हमारी शिकस्त व मग्लूबी की सिर्फ एक ही वजह है कि हम ने अपने दीने मसीह और इन्जील के अहकाम की इताअत से रूगर्दानी की है। गुनाह व मा'सियत के दलदल में गर्क हैं और अपनी ही कौम के मिस्कीनों और कमज़ोरों पर ज़ुल्म व सितम करते हैं। हम में अद्ल व इन्साफ बाकी नहीं रहा।

बाहान की यह बात सुन कर इसी वक्त एक रूमी खड़ा हुवा और कहा कि ऐ बादशाह ! आप हमेंशा ज़िन्दा और सलामत रहो। आप ने हक्क बात कही। यह हकीकत है कि हमारी कौम के ज़ोर आवर लोग कमज़ोरों पर ज़ुल्म व सितम करने में हद से तजावुज़ कर गए हैं। खुदा का खौफ इन के दिलों में बिल्कुल नहीं। इन के दिल पत्थर की तरह सख्त हो गए हैं और रहम व करम, अद्ल व इन्साफ और गैरत जैसी कोई चीज़ इन के अन्दर पाई नहीं जाती। खुद मुझ को इन के ज़ुल्म व तशहुद का तल्ख तजरबा हुवा है। अगर आप इजाज़त मरहमत फरमाएं तो मैं अपनी दर्द भरी दास्तान सुनाउं। बाहान ने कहा कि तुम को इजाज़त है बिला खौफ व झिझक बयान करो।

रूमी फर्यादी ने कहा कि ऐ सरदार ! तुम्हारे लश्कर के पड़ाव के करीब मेरी जाए रिहाइश है और इसी से मुलहिक मेरा खैत है। मेरे पास एक सौ बकरियां थीं जिस को मेरा बेटा चराया करता था। तुम्हारे लश्कर के एक बतरीक सरदार ने मेरी बकरियां देख लीं और इस के खाने का तलबगार हुवा। उस ने रोज़ाना हस्बे ज़रूरत मेरी बकरियां ज़बरदस्ती छीन कर खानी शुरू कर दीं। उस को देख कर रूमी लश्कर के दूसरे सिपाहियों ने भी बकरियां जबरन लेनी शुरू कर दीं और आनन फानन मेरी तमाम बकरियां सफाचट कर दीं। जब मेरी बीवी को इस अम्र की इत्तिला' हूई तो बतरीक सरदार के पास शिकायत ले कर गई, बतरीक सरदार ने मेरी बीवी को बहुत नर्म लह्जा में जवाब देते हुए कहा कि मुझे अफ्सोस है कि लश्कर के सिपाहियों ने तुम्हारे साथ ज़ियादती की है। लिहाज़ा आप मोहतरमा खैमे में आ कर तमाम वारदात की तफ्सील बताएं, मैं फौरन इस का तदारुक कर देता हूं। इस तरह मेरी बीवी को फुस्ला कर वह अपने खैमे में ले गया और वहां उस की अस्मत दरी की। मेरा बेटा मेरी बीवी के हमराह शिकायत करने गया था, लेकिन वह खैमे के बाहर खड़ा था। उस को अन्दर जाने की इजाज़त न दी गई थी। खैमे के अन्दर मेरी बीवी के साथ ज़ियादती हो रही थी और वह मदद के लिये ज़ोर ज़ोर से चिल्ला रही थी। लिहाज़ा मेरा बेटा खैमे के अन्दर घुस गया। वह अपनी मां पर बतरीक को सवार देख कर शौर मचाने लगा और बतरीक पर हम्ले का कस्द किया, लेकिन बतरीक के मुहाफिज़ों ने उसे पकड़ लिया। अपने रंग में भंग डालने की गुस्ताखी करने की सज़ा देते हुए बतरीक ने मेरे बेटे को कत्ल कर देने का हुक्म दिया, चुनान्चे उस के आदमियों ने मेरे नौ-जवान और होनहार बेटे को बड़ी बे रहमी से कत्ल कर दिया। इस हादिसा की मुझे खबर हूई तो मैं बतरीक के पास इन्साफ मांगने गया, तो उस ने बर्बरियत का इज़्हार कर के मेरा हाथ काट दिया। यह कह कर रूमी फर्यादी ने अपना कटा हुवा हाथ बाहान के सामने कर दिया।

रूमी फर्यादी की दास्ताने ज़ुल्म सुन कर बाहान आपे से बाहर हो गया और उस ने कहा कि जिस ने भी तेरे साथ ऐसी हर्कत की है, उसे मैं इब्रतनाक सज़ा दूंगा। फिर बाहान ने रूमी फर्यादी से कहा कि क्या तुम इस बतरीक को जानते हो ? रूमी फर्यादी ने कहा : क्यूं नहीं ? वह इस वक्त यहां मौजूद है। इत्ना कह कर उस ने एक बतरीक का गिरेबान थाम लिया और कहा कि ऐ बादशाह ! यही वह ज़ालिम शख्स है जिस ने मेरे दिल की दुनिया उजाड़ी है। रूमी फर्यादी ने जिस बतरीक को मुजरिम करार दिया था वह रूमी लश्कर का मुअज़्ज़ज़

सरदार और अहम रुक्न था, लिहाज़ा उस की मुवाफिक्त में लश्कर के दीगर सरदारों ने शौरो गुल मचा दिया और रूमी फर्यादी से कहा कि गद्दार ! अरबों से माल ले कर इन के कहने के मुताबिक हमारे लश्कर के मुअज़्ज़ज़ सरदार पर गलत इल्ज़ाम लगाते हुए शर्म नहीं आती ? तूं इस तरह आपस में फूट डालना चाहता है, ताकि हम खाना जंगी में उलझ जाएं और हमारे दुश्मन फाइदा उठाएं । यह कह कर एक बतरीक ने रूमी फर्यादी को तल्वार मारी और इस की गर्दन उड़ा दी ।

बाहान यह मआमला देख कर खशमनाक हुवा कि उस के मरतबा का लिहाज़ नहीं किया गया और उस की मौजूदगी में उस के हुक्म के बगैर एक बे कुसूर और मज़्लूम शख्स को कत्ल कर दिया गया । लिहाज़ा उस ने गरजती आवाज़ में हाज़िरीन को ला'नत मलामत करते हुए कहा कि ऐ संग दिल ज़ालिमो ! सख्ती हो तुम पर ! कसम है हक्के मसीह की ! तुम ज़रूर ज़लील व ख्वार होगे । अपनी ही कौम पर इस तरह ए'लानिया ज़ुल्म व सितम करने के बा-वुजूद तुम किस बिना पर मदद और गल्बा की उम्मीद रखते हो ? तुम्हारे करतूत ऐसे मज़्मूम और रज़ील हैं कि अल्लाह का तुम पर इताब नाज़िल होना ही है । तुम्हारा मालो अस्बाब, दौलत व खज़ाना, ज़मीन व जाईदाद बल्कि तुम्हारा मुल्क तुम से छीन कर इन अरबों को दे देगा, जो अपने दीन के अहकाम पर सख्ती से पाबन्द हैं और अल्लाह से डरते हैं, मन्हियात शरइया से बाज़ रहते हैं । ऐ बे रहम ज़ालिमो ! तुम मेरे नज़्दीक अब कुत्तों, गधों बल्कि तमाम जानवरों से बद-तर हो । अन्करीब तुम अपने ज़ुल्म का बुरा अन्जाम देखोगे । अब मुझे तुम से कोई सरोकार नहीं, लिहाज़ा यहां से दफ़ाअ हो जाओ । महफिल बरखास्त की जाती है ।

बाहान का गज़ब व गुस्सा देख कर तमाम हाज़िरीन सहम गए और सर झुकाए यके बा'द दीगर सब के सब रफू चक्कर हो गए । लेकिन एक बतरीक अपनी जगह बैठा रहा । जब पूरा खैमा खाली हो गया तब यह बतरीक अपनी जगह से खड़ा हुवा और बाहान के करीब आया । ता'ज़ीम की रस्म अदा करने के बा'द बतरीक ने कहा कि ऐ सरदार ! खुदा की कसम ! आप की बात सौ फीसदी हक्क है । मुझे भी यकीन है कि हम अपने ज़ुल्म व सितम के सबब ज़रूर मग्लूब होंगे । इलावा अर्ज़ी एक ज़रूरी अम्र की तरफ आप की तवज्जोह मब्ज़ूल कराना चाहता हूं, मैं ने कल रात एक ख्वाब देखा है । फिर इस बतरीक ने पहले बतरीक के ख्वाब के हूबहू अपना एक ख्वाब बयान किया । बाहान गौर से उस बतरीक के ख्वाब की तफ्सील समाअत करता रहा । सारा वाकेआ सुनने के बा'द बाहान ने बतरीक को रुखसत किया और गहरी सोच व फिक्र में पड़ा दैर तक अपनी जगह बैठा रहा ।

बाहान का एक हफ्ता जंग मौकूफ रखना और हिरक्ल के जवाब का मुन्तज़िर रहना

बाहान बहुत दैर तक अपनी जगह बैठ कर सोचता रहा, फिर वह बिस्तरे ख्वाब पर गया । दो बतरीक का बऐनिहि एक तरह का ख्वाब देखना, इस के लश्कर के सरदारों का बे कुसूर रूमी के लड़के को कत्ल करना, उस की बीवी की आबरू रेज़ी करना और अपनी नज़रों के सामने उस को कत्ल करना वगैरा वगैरा ख्यालात इस के दिमाग में गर्दिश कर रहे थे । नींद आंखों से कोसों दूर चली गई । पूरी रात करवटें बदल बदल कर गुज़ारी और फैसला किया कि कुछ दिनों के लिये जंग मौकूफ कर दूं और हिरक्ल बादशाह को सूरते हाल से मुत्तलेअ करूं । वहां से जवाब आने के बा'द ही कुछ तय करूंगा । लिहाज़ा उस ने हिरक्ल बादशाह को तफ्सील से खत लिखा कि मैं ने अरबों को बहुत डराया धमकाया और लालच भी दी कि वह किसी तरह यहां से चले जाएं, लैकिन वह एक ऐसी कौम हैं कि इन की किताबे ज़िन्दगी में डर, खौफ, दहशत, और घबराहट नाम का कोई लफ्ज़ ही मरकुम नहीं । दुनिया की तमाअ इन को अपने दाम फरैब में नहीं ला सक्ती । हमारे लश्कर की कसरत और हथियारों की बोहतात से वह कतअन मरऊब नहीं हुए बल्कि हमारे साथ ऐसी सख्त जंग लड़े कि हमारे लश्कर का हर आदमी इन से हरासां है । मैं ने इन के सरदार खालिद बिन वलीद को मक्रो फरैब से मार डालने की साज़िश की थी, लैकिन इस में भी काम्याबी हासिल नहीं हूई । लिहाज़ा मैं ने इरादा किया है कि कुछ दिनों के लिये जंग मौकूफ कर दूं ताकि अरब हम से मुत्मइन और बे खौफ हो जाएं । इस दौरान इन पर जासूसों के ज़रीए कड़ी निगरानी रखूंगा और जब इन को गाफिल पाऊंगा, पूरे लश्कर के साथ हम्ला कर के इन का काम तमाम कर दूंगा । लश्कर के दीगर सरदार भी ऐसा चाहते हैं लैकिन आप की इजाज़त के बगैर ऐसा कदम उठाना में मुनासिब नहीं समझता, क्यूं कि यह हमारी अरबों के साथ फैसलाकुन जंग है । बल्कि यूं समझिये कि यह हमारी आखरी कौशिश है अगर हम को गल्बा हासिल हुवा तो ज़हे नसीब वर्ना इस के बा'द हमारा कोई भी लश्कर अरबों को मुल्के शाम से भगा नहीं सकेगा और वह मुल्के शाम पर काबिज़ हो जाएंगे, लिहाज़ा अगर आप चाहें तो अपने अह्लो अयाल के साथ कस्तुनतुनिया चले जाएं और महफूज़ व मामून हो जाएं । एक ज़रूरी अम्र की तरफ भी आप इल्तिफात फरमाएं कि हमारे रूमी भाई गुनाह व मआसी और ज़ुल्म व सितम में सर से पाऊं तक गर्क हो गए हैं और दीने मसीह के अहकाम की इताअत पसे पुश्त डाल दिया है, जब कि मुसल्मान अपने नबी के फरमान की बजा आवरी में सरे-मू कोताही नहीं करते ।

इस मफ्हूम का खत लिख कर बाहान ने चंद गबरों के साथ हिरक्ल के पास इन्ताकिया रवाना किया ।

जंगे यर्मूक, चौथे से दसवें दिन तक

जंग के चौथे दिन नमाज़े फज्र अदा करने के बा'द इस्लामी लश्कर मैदान में आ गया और तुलू' आफ्ताब तक सफ बन्दी और आलात से आरास्ता हो गया। लैकिन रूमी लश्कर में किसी किस्म की जुंबिश नज़र नहीं आती थी। इस की वजह यह हूई कि रूमी लश्कर का सिपेह सालारे आज़म बाहान कूच का हुक्म देने अपने खैमा से बाहर नहीं निकला और इतनी दैर हो गई कि आफ्ताब बुलन्द हो गया। तब रूमी लश्कर के चार बादशाह सरदार (1) कनातिर (2) जर्जीर (3) दरीहान (4) कौरीर एक साथ बाहान के खैमा में आए और लश्कर को मैदाने जंग की तरफ रवाना करने की दरख्वास्त की।

बाहान ने कहा कि मैं इजाज़त नहीं देता। मुझे कोई ज़रूरत नहीं कि मैं ऐसी कौम के लिये लडूं जो ज़ुल्म व सितम में हद से तजावुज़ कर चुकी है। अगर तुम अपनी कौम की खालिस नस्ल से होते, तुम अपने मुल्क व खानदान की इज़्ज़त व आबरू की हिफाज़त और गल्बा की खातिर लड़ते, लैकिन तुम ने तो अपने दीन व मज़्हब का भी पास व लिहाज़ नहीं रखा, मुल्क व नसब की पासदारी तो दूर की बात है। मैं ने अपने लश्कर का जाइज़ा लिया तो किसी एक में भी सच्चा जज़्बए जेहाद नहीं पाया। कोई भी दिल से नहीं लड़ता। दीने मसीह के लिये अपनी जान कुरबान करने में कोई मुख्लिस नहीं। सब के सब देखा देखी रसमन जंग करते हैं। ईसार व कुरबानी के लिये जज़्बए सादिक दरकार होता है, जिस का हमारे यहां सरासर फुक्दान है, लिहाज़ा ऐसी जंग का नतीजा शिकस्त व रीख्त के सिवा और क्या हो सक्ता है ? शिकस्ते फाश यकीनी हो जाने के बा'द लड़ने में कोई अक्लमन्दी नहीं समझता। मुल्के फारस, तुर्क और जरामका पर लश्करकशी कर के इन की अज़ीम फौजी ताकत को जो मैं ने पामाल किया और इस के बा'द जो मुझे इज़्ज़त व शौहरत मिली है,तुम्हारी बुज़दिली के इवज़ में इसे नीलाम नहीं कर सकता।

बाहान की इस मायूस किन गुफ्तगू सुन कर रूमी लश्कर के चारों सरदारों ने कहा कि ऐ बादशाह ! आप हम को एक मौका' और दीजिए ! हम आप को यकीन दिलाते हैं कि माज़ी की कोताहियों का इआदा हरगिज़ न होगा, बल्कि अब हम ऐसी जंग लड़ेंगे और शुजाअत व बहादुरी का वह मुज़ाहिरा करेंगे कि हमारी दिलैरी की दास्तान तारीख के अवराक

में तलाई हुरूफ से मुनक्कश होगी। बाहान ने जवाब देते हुए कहा कि मैं ने एक ज़रूरी अम्र में हिरक्ल बादशाह की राए तलब कर ली है, जब तक उधर से कोई जवाब नहीं आता, जंग मौकूफ रखने का मैं ने फैसला किया है, लिहाज़ा जब तक मैं इजाज़त न दूं लड़ाई के लिये मैदान का रुख मत करना। अगर तुम्हारे दिल में मेरी ज़रा भी इज़्ज़त और वक्अत है तो मेरा कहा मानो वर्ना जो तुम्हारे दिल में आए करो। चारों ने ब-यक ज़बान कहा कि ऐ सरदार ! आप के हुक्म की खिलाफ वर्ज़ी करना हम ख्वाब में भी नहीं सोच सक्ते। चुनान्चे वह बाहान के फैसले से मुत्तफिक हो गए और वापस चले गए।

इस्लामी लश्कर मैदान में ठहरा हुवा बड़ी दैर से रूमी लश्कर की आमद का मुन्तज़िर था, लैकिन दिन चढ़े तक रूमी लश्कर से एक भी बन्दा नहीं आया। हज़रत अबू उबैदा ने सोचा कि शायद इन्हें कोई मआमला पैश आया है, लिहाज़ा इन को अपने हाल पर छोड़ दिया जाए। चुनान्चे इस्लामी लश्कर भी अपने कैम्प में वापस लौट आया। बाहान ने सात दिन तक जंग मौकूफ रखी। या'नी जंगे यर्मूक का चौथा, पांचवां, छटा, सातवां, आठवां, नवां और दसवां दिन बगैर किसी जंग व किताल के पुर-सुकून गुज़रा। इस दौरान दोनों लश्कर के सरदार एक दूसरे की नक्ल व हरकत की खबरगीरी करते रहे।

खस्मैन के मुखबिरों का एक दूसरे के लश्कर में दुखूल :-

दूसरे दिन हज़रत अबू उबैदा ने अपना एक रूमी मुआहदी जासूस रूमी लश्कर में भेजा ताकि वह इस अम्र का सुराग लगाए कि रूमी लश्कर को बाहान ने जंग से क्यूं बाज़ रखा है। उस जासूस ने नस्रानी वज़्आ इख्तियार की और रूमी लश्कर में घुस गया। एक दिन और एक रात गाइब रहा और फिर वापस आ कर हज़रत अबू उबैदा को इत्तिला' दी कि बाहान ने हिरक्ल को खत लिखा है और उस के जवाब के इन्तिज़ार में जंग मौकूफ कर रखी है। हज़रत खालिद ने हज़रत अबू उबैदा से दरख्वास्त करते हुए कहा कि ऐ सरदार ! हिरक्ल बादशाह को खत लिखने का बाहान ने बहाना रचा है हकीकत यह है कि उस के दिल में हमारा खौफ और रोअब समा गया है। मौका' बहुत ही गनीमत है कि हम इन पर यल्गार कर दें और इन को पीस कर रख दें। लिहाज़ा मेरी आप से मुअद्दबाना दरख्वास्त है कि आप हमें इन पर धावा बोलने की इजाज़त अता फरमाएं। हज़रत अबू उबैदा ने किसी मसलेहत और हिकमते अमली की बिना पर इजाज़त नहीं दी। और फरमाया कि ऐ खालिद ! तवक्कुफ और सब्र करो। हर काम के लिये एक वक्त मुअय्यन होता है। इन्शा अल्लाह सब खैर है। अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।

इसी तरह बाहान ने भी एक नस्रानी अरब को मुखबिरी करने इस्लामी लश्कर में भेजा और उस मुखबिर को ताकीद की कि हस्बे ज़ैल उमूर की तह्कीक कर के मुझे सहीह रिपोर्ट देना :

- हमारे जंग से बाज़ रहने के मुतअल्लिक इन को क्या इत्तिला' है ? और वह अगला कौन सा कदम उठाएंगे ?
- हम से लड़ने के लिये वह किस कद्र ख्वाहिशमन्द हैं ?
- जंग मौकूफ होने के बा'द वह किस काम में मश्गूल हैं ?
- हमारी अस्करी कुव्वत से वह खौफ-ज़दा और मरऊब हैं या नहीं ?

बाहान का जासूस इस्लामी लश्कर में दाखिल हुवा और एक दिन व शब ठहरा। वह इस्लामी लश्कर में बे खौफ व खतर घूमता रहा। किसी को भी उस पर शुब्हा नहीं हुवा क्यूं कि उस ने इस्लामी लिबास पहना था और अरब होने की वजह से उस की बात चीत से भी किसी को शक करने का इम्कान न था। रूमी जासूस ने इस्लामी लश्कर का ब-नज़्रे अमीक मुआइना किया। उस ने अहम बात यह नोट की कि तमाम मुसल्मान बे खौफ और मुत्मइन हैं। रूमी लश्कर की कसरत का ज़र्रा बराबर भी खौफ नहीं है बल्कि सुकून के साथ वह अपने ज़रूरी कामों को सर अन्जाम देने के बा'द ज़ियादह तर वक्त नमाज़, तिलावते कुरआन और तस्बीह व दुरूद में गुज़ारते हैं। आपस में एक दूसरे से ऐसी मुहब्बत से पैश आते हैं कि कोई इम्तियाज़ ही नहीं कर सकता कि यह लोग अलग अलग मकाम और अलग अलग कबीला से तअल्लुक रखते हैं। रूमी जासूस इस्लामी लश्कर में गश्त करता हुवा हज़रत अबू उबैदा के खैमे में भी पहुंच गया। वहां उस ने देखा कि इस्लामी लश्कर का सरदार एक नहीफ व नातवां और बड़ा सादगी पसन्द शख्स है। सरदार के खैमे में आराइश व ज़ीनत का साज़ो सामान तो दर किनार, ज़रुरियात के सामान भी नहीं। इस्लामी लश्कर का सरदार ज़मीन पर बैठा है और ज़मीन पर ही लैटता है। लेकिन लश्करियों में इस की ऐसी अज़्मत है कि जब वह खड़ा होता है तो लोग खड़े हो जाते हैं और जब वह बैठता है तो सब बैठ जाते हैं।

नस्रानी जासूस एक दिन और एक रात इस्लामी लश्कर में रूपोश रहने के बा'द बाहान के पास वापस आया और मुन्दरजा बाला इत्तिला' दी। मज़ीद बरां येह भी कहा कि

मुसल्मान रात इबादत व रियाज़त में और दिन रोज़ा की हालत में गुज़ारते हैं, गोया वह रात में आबिद और दिन में साइम होते हैं, लैकिन रोज़ा की हालत में भी वह मिस्ले शैर कुव्वत रखते हैं। अपने दीन के अहकाम के मुताबिक अमल करते हैं और खिलाफे शरअ' उमूर से सख्ती से रोकते हैं। चोरी करने वाले का हाथ काट देते हैं और ज़िना करने वाले को संगसार करते हैं। बाहान ने कहा कि बस बहुत हो गया। तू ने तो मुसल्मानों की ता'रीफ के पुल बांध दिये। अब यह बता कि हम ने जंग से तवक्कुफ किया है इस का इन पर क्या असर पड़ा है ? और वह कौन सी तद्बीर करने वाले हैं ? जासूस ने कहा कि वह तो लड़ाई के बेहद ख्वाहिशमन्द हैं, लैकिन वह चाहते हैं कि सरकशी और सरताबी का सारा इल्ज़ाम हमारे सर आइद हो, या'नी वह चाहते हैं कि हम जंग की इब्तिदा करें और वह जवाबी कारवाई करें। हमारे लश्कर की इन पर कोई हैबत नहीं। वह सिर्फ इस लिये लड़ाई से बाज़ हैं कि जब तक हम इन के मुकाबला में न निकलें, वह हमारे मुकाबला में न निक्लेंगे। वह हमारी पैश कदमी के इन्तिज़ार और पहल की ताक में हैं।

जासूस की यह बात सुन कर बाहान खुश हो गया और कहा कि जब तक हम इन के मुकाबला में मैदान में नहीं निक्लेंगे तब तक वह मैदान में नहीं आएंगे अगर यह बात सच है तो मैं ज़रूर इन के साथ फरैब करूंगा, लिहाज़ा में आज रात में अपने लश्कर को अपने कैम्प में ही सफ बस्ता कर के सुब्ह तड़के अचानक इन पर हम्ला आवर हो जाउंगा। वह गाफिल, बे-खबर और गैर मुनज़्ज़म होंगे। इन को सफ बन्दी का मौका' ही न मिलेगा, बल्कि अपने हथियार संभालने का भी वक्त मुयस्सर न होगा और मुझे उम्मीद है कि इस तरह में इन्हें शिकस्त दे कर भगा दूंगा।

जंगे यर्मूक का ग्यारहवां दिन

बाहान ने अपने लश्कर के सरदारों को अपने खैमे में बुला कर मीटिंग की और इन को अपने इरादे से आगाह किया। सब ने बाहान की तज्वीज़ को पसन्द किया और सराहा, चुनान्चे बाहान ने अपने कैम्प में रूमी लश्कर को हस्बे ज़ैल तरीके से मुरत्तब किया।

- बाहान ने अपने लश्कर की कुल तीस (३०) सफें बनाईं।
- लश्कर के मैमना पर जंगजू बतारेका की भारी ता'दाद पर सरदार कनातिर को अमीर बनाया।
- लश्कर के मैसरा पर सरदार दरीहान को कौमे सक्सका और लान के लोगों को साथ दे कर अमीर मुकर्रर किया।
- सरदार जर्जीर को कौमे अर्मन, सकालेमिया और रूसिया वगैरा के तजरबा कार सिपाहियों पर अमीर मुकर्रर किया।
- हिरक्ल बादशाह के भान्जे सरदार कौरीर को कौमे अफरन्ज, हर्किलिया, कयासरा, बर्गल और दोकस के लडाकू जवानों पर सरदार मुकर्रर किया।
- जबला बिन ऐहम गस्सानी को कौमे आमेला, लख्म, जुज़ाम, ज़बीआ और गस्सान के नस्रानी अरबों पर सरदार मुकर्रर कर के मुकद्दमतुल जैश की हैसियत से आगे रखा और जबला को खुसूसी ताकीद की कि देखो ! लोहे को लोहा काटता है और मुझे ऐसी उम्मीद है कि तुम इन मुसल्मान अरबों को काट कर रख दोगे।

अल-गरज़ बाहान रात भर लश्कर को आरास्ता करता रहा, सुब्ह के वक्त फारिग हो कर उस ने एक बुलन्द टीले पर अपना खैमा नसब करने का हुक्म दिया, ताकि दोनों लश्करों को लड़ता हुवा देख सके। फिर इस के बा'द लश्कर को हुक्म दिया कि आफ्ताब

तुलूअ होते ही इस्लामी लश्कर के कैम्प पर धावा बोल दो क्यूं कि उस वक्त वह बे-खबर व गाफिल होंगे।

सुब्ह नमाज़ में हज़रत अबू उबैदा ने लश्करे इस्लाम की इमामत फरमाई, नमाज़ मुकम्मल हूई ही थी कि निगेहबानी पर मामूर हज़रत सईद बिन ज़ैद बिन अम्र बिन नुफैल अदवी दौड़ते और बुलन्द आवाज़ से पुकारते हुए आए कि **ऐ गिरोहे मुस्लिमीन ! चलो, चलो, जल्दी अपने हथियार संभालो ! बाहान ने हम को धोका दिया है। वह पूरे लश्कर के साथ उमंडते हुए सैलाब की तरह हमारी तरफ बढ़ रहा है।** हज़रत अबू उबैदा ने निगाह उठा कर देखा तो वाकई रूमी लश्कर बादल की तरह तैज़ी से बढ़ता हुवा आ रहा था। लैकिन अभी कुछ फास्ले पर था। हज़रत अबू उबैदा ने फौरन "لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَظِيْم" पढ़ा और पुकारा कि खालिद बिन वलीद कहां हैं ? हज़रत खालिद बिन वलीद करीब आए और कहा कि ऐ सरदार में हाज़िर हूं। हज़रत अबू उबैदा ने इन से फरमाया कि तुम मुश्किल के वक्त साबित कदम रहने वाले हो, लिहाज़ा तुम अपने साथ बहादुर शहसवारों को ले कर रूमी लश्कर के सामने जाओ और इन को आगे बढ़ने से रोक दो, ताकि मैं इधर लश्कर की सफ बन्दी कर लूं और मुजाहिदीन अपने हथियार संभाल कर तैयार हो जाएं। हज़रत खालिद बिन वलीद अपने साथ (1) हज़रत हाशिम मिरकाल (2) हज़रत ज़ुबैर बिन अल-अव्वाम (3) हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र सिद्दीक (4) हज़रत फज़्ल बिन अब्बास (5) हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान (6) हज़रत रबीआ बिन आमिर (7) हज़रत मैसरा बिन मस्रूक (8) हज़रत मैसरा बिन कैस (9) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अनीस जहनी (10) हज़रत सखर बिन हर्ब अमवी (11) हज़रत अम्मारह सदौसी (12) हज़रत सलाम बिन गनम अदवी (13) हज़रत मिक्दाद बिन अस्वद कुन्दी (14) हज़रत अबू ज़र गिफारी (15) हज़रत अम्र बिन मा'दी कर्ब ज़ुबैदी (16) हज़रत अम्मार बिन यासर अबसी (17) हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर (18) हज़रत आमिर बिन तुफैल दौसी और (19) हज़रत अबान बिन उस्मान बिन अफ्फान वगैरा जैसे पांच सौ शहसवारों को ले कर फौरन रूमी लश्कर से सामना करने रवाना हुए। रूमी लश्कर बड़े तुमतराक से आगे बढ़ता हुवा आ रहा था। और इस को रोकने के लिये हज़रत खालिद बिन वलीद सिर्फ पांच सौ मुजाहिदों के साथ सामने आ रहे हैं। हज़रत खालिद बिन वलीद रज्ज़ के अश्आर पढ़ते और अपने साथियों को जौश दिलाते थे। जब रूमियों ने देखा कि हज़रत खालिद बिन वलीद मिस्ले शैर बबर आ रहे हैं तो इन की हवा निकल गई। लश्कर एक दम रुक गया और आगे

कदम बढ़ाना रोक दिया। बाहान की डांट डपट सुन कर लश्कर ब दिले ना-ख्वास्ता आगे बढ़ा। हज़रत खालिद बिन वलीद ने "**अल्लाहु अक्बर**" का ना'रा बुलन्द कर के हम्ला किया। तमाम मुजाहिदीन मिस्ले शैर रूमी भेड़ों पर टूट पड़े। **सिर्फ पांच सौ मुजाहिदों ने रूमी लश्कर को हिला कर रख दिया।**

बाहान ने अपने लश्कर के आगे तीस हज़ार पैदल लड़ने वालों को इस हैअत से रखा था कि दस दस आदमी के पाऊं एक ज़न्जीर में जकड़ दिए थे, ताकि कोई दौराने लड़ाई डर कर भाग न सके। इन तमाम ज़न्जीर वाले सिपाहियों को हज़रत सय्यिदोना ईसा अला नबिय्येना व अलैहिस्सलातो वस्सलाम और सलीबे आ'ज़म की कसम दिला कर अह्द लिया था कि आखरी सांस तक लड़ते लड़ते मर जाना है, लैकिन बुज़दिली से पीठ दिखा कर नहीं भागना है। उधर हज़रत खालिद बिन वलीद अपने साथियों के हमराह रूमी लश्कर को रोकने रवाना हुए। इधर हज़रत अबू उबैदा ने फौरन लश्कर की सफ बन्दी कर के मुनज़्ज़म व मुस्तइद कर दिया। हज़रत मआज़ बिन जबल और हज़रत अबू सुफ्यान वगैरा अकाबिरे लश्कर ने मुजाहिदों को साबित कदम रह कर लड़ने की ताकीद और नसीहत की और अल्लाह तआला की मदद पर भरोसा कर के फतह व गल्बा का उम्मीदवार रहने की तल्कीन की। हज़रत अबू सुफ्यान ने हज़रत अबू उबैदा से कहा कि ऐ सरदार ! आप औरतों को हुक्म दें कि वह टीले पर चढ़ जाएं और अपने साथ पत्थर और खैमे की चौबें रखें, ताकि वह दुश्मनों की दस्त दराज़ी से महफूज़ रहें। क्यूं कि टीले पर होने की वजह से दुश्मन इन तक नहीं पहुंच सकेंगे। इलावा अज़ीं खुदा न ख्वास्ता अगर हमारा लश्कर कुछ कमज़ोर पड़ा और हमारे लश्करी सिपाही हज़ीमत के खौफ से पीछे हटें या भागें, तो औरतें इन के घोड़ों को पत्थरों और खैमे की चौबों से मार कर पीछे हटने या भागने से रोकें और आर दिला कर वापस फेरें। हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह ने हज़रत अबू सुफियान की राए के मुताबिक हुक्म जारी फरमाया, चुनान्चे तमाम मस्तूरात व अत्फाल टीला पर चढ़ गए। फिर हज़रत अबू उबैदा जैशे इस्लाम को ले कर हज़रत खालिद की कुमुक को पहुंचे।

हज़रत अबू उबैदा लश्कर ले कर मैदाने जंग में पहुंचे। क्या देख रहे हैं कि हज़रत खालिद और इन के साथी रूमी लश्कर से घमसान की लड़ाई लड़ रहे हैं। जंग अपने शबाब पर है। नैज़ों और तलवारों के टकराव से आग की चिंगारियां उठ रही हैं और गर्दो गुबार मैदान पर मिस्ले बादल छाए हैं। सिपाहियों के शौर व गौगा और ज़ख्मियों की चीख व पुकार से एक भयानक समां बंधा हुवा है। हज़रत अबू उबैदा का पूरे लश्कर के साथ आ धमकने

से मुजाहिदों में नया जौश पैदा हो गया। हज़रत खालिद बिन वलीद ने हज़रत अबू उबैदा से कहा कि ऐ सरदार ! आज का दिन हमारे लिये सख्त आज़माइश और इम्तिहान का दिन है। रूमी लश्कर टिड्डी दल की तरह हम पर आ पड़ा है, लिहाज़ा मुनासिब है कि आप इस्लामी लश्कर की पुश्त पर ठहरें ताकि अगर हमारे लश्कर का कोई शख्स पीछे हटे या भागने की कौशिश करे तो आप को देख कर शर्म मह्सूस करे और फरार होने से बाज़ रहे। सामने का मोर्चा में संभालता हूं। हज़रत खालिद के मश्वरे को कबूल फरमा कर हज़रत अबू उबैदा इस्लामी लश्कर के अकब में आ कर ठहरे।

रूमी लश्कर का हम्ला बहुत ही सख्त था। क्यूं कि रूमी लश्कर के सरदार जर्जीर, कौरीर, दरीहान और कनातिर अपने सिपाहियों के हमराह ब-ज़ाते खुद मैदान में मौजूद थे, अपने लश्कर को बर-अंगेख्ता करते थे और अपनी फौज की हौसला अफ्ज़ाई करते हुए इन्हें बादशाह की तरफ से मिलने वाले इन्आमो इकराम की लालच दिलाते थे। हज़रत खालिद अपने साथियों के हमराह इस्लामी लश्कर के वस्त में थे और रूमी लश्कर से टक्कर ले रहे थे। हज़रत खालिद जिस जां बाज़ी और दिलैरी से मुकाबला कर रहे थे इस को देख कर रूमी सिपाही लरज़ह बर अन्दाम हो गए थे। किसी को भी आगे बढ़ने की जुर्अत व हिम्मत नहीं होती थी और रूमी लश्कर पर रोक थाम लग गई थी, लैकिन इस्लामी लश्कर का मैमना और मैसरा दबाव में आ गया था और इस्लामी लश्कर पीछे हट रहा था। इस्लामी लश्कर के मैमना और मैसरा पर कौमे अज़्द, कौमे मौहज, कौमे हुमैर और कौम हज़्रे मौत के मुजाहिदीन बड़ी दिलैरी और सब्र का मुज़ाहिरा करते हुए मुकाबला कर रहे थे, लैकिन रूमी लश्कर की कसरत और हम्ले की शिद्दत से पीछे हटना पड़ा था। हज़रत अम्र बिन मा'दी कर्ब ज़ुबैदी और हज़रत अबू हुरैरा ने मुजाहिदों को पीछे हटते देखा तो पुकार कर कहा कि **ऐ कुरआन के पढ़ने वालो ! तुम पीछे हट कर भाग कर क्या हमेंशा ज़िन्दा रहोगे ? थोड़ा अर्सा ही ज़िन्दा रहोगे, लैकिन तुम्हारी वह ज़िन्दगी मौत से भी बद-तर शुमार होगी।** जंग में पीठ दीखाने का ता'ना किस तरह बरदाश्त करोगे ? क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि जेहाद से भागना गुनाहे अज़ीम है। अल्लाह तआला हमारे कामों को देख रहा है। तुम मैदाने जंग से भाग कर बहिश्त के दरवाज़ा से लौटे जा रहे हो और बहिश्त से भाग कर कहां जाओगे ? सब्रो इस्तिक्लाल से काम लो, क्यूं कि सब्र करने वालों की अल्लाह ज़रूर मदद करता है।

हज़रत अम्र बिन मा'दी कर्ब की उम्रे शरीफ जंगे यर्मूक के दिन एक सौ दस

साल थी, लैकिन ज़ईफुल उम्र होने के बा-वुजूद इन की बहादुरी और शुजाअत का यह आलम था कि जवां साल रूमी सिपाहियों को दबोच कर मार डालते थे । इन की ज़ौर आवरी का तमाम मुजाहिदों को ए'तेराफ था, इस लिये इन की ता'ज़ीम बजा लाते । हज़रत अम्र बिन मा'दी कर्ब की ललकार ने मुजाहिदों में वह जौश पैदा किया कि वह पीछे हटने से रुक गए और उन्हों ने रूमियों को तलवारों की धार पर रखा । लैकिन रूमी लश्कर भी आज इस पार या उस पार के इरादे से लड़ रहा था । रूमी लश्कर जब मैमना और मैसरा की जानिब से आगे बढ़ने से रुक गया तो फौरन वहां पर रूमी लश्कर की कुमुक आ पहुंची और दोहरे जौशो खरौश से हम्ला शुरू किया । नतीजतन इस्लामी लश्कर का मैमना और मैसरा कमज़ोर पड़ने से पीछे हटना शुरू किया ।

ख्वातीने इस्लाम की शुजाअत, रूमी गबरों से इन की जंग :-

इस्लामी लश्कर के मैमना और मैसरा से जो मुजाहिद पीछे हट कर उस टीले के पास आता तो ठहर जाता क्यूं कि इस्लाम की मुकद्दस ख्वातीन हाथ में पत्थर और चौब लिये वहां मौजूद थीं । कुछ मुजाहिद भाग कर इस तरफ आए । इन को आता देख कर **हज़रत अफीरा बिन्ते अफ्फार** ने ख्वातीन को पुकार कर कहा कि ऐ इस्लाम की बहादुर ओरतो ! मुसल्मान मर्द हज़ीमत उठा कर भाग रहे हैं, इन्हें वापस फैर दो । चुनान्चे ख्वातीन आगे बढ़ीं और घोड़ों के पैरों और सरों पर चौबें और पत्थर मारना शुरू कीं और पुकार पुकार कर कहने लगीं कि तुम हम को छोड़ कर कहां भागते हो ? क्या अपनी अज़्वाज व औलाद को गबरों के हवाले कर देना पसन्द करते हो ? **अगर तुम अपनी औरतों की हिफाज़त नहीं कर सक्ते तो तुम को शौहर बनने का कोई हक्क नहीं । अल्लाह तआला ज़लील करे उस मर्द को जो अपनी औरत की निगेहबानी और बच्चों की हिफाज़त करने के बजाए आजिज़ हो कर भागे ।** इस तरह तमाम ख्वातीन अपने अपने शौहरों और रिश्तेदारों को आर और शर्म दिलाती थीं और भागने से रोकती थीं ।

हज़रत हिन्द बिन्ते उत्बा बिन रबीआ ज़ौजा हज़रत अबू सुफ्यान और **हज़रत लीना बिन्ते जरीर हुमैरिया** सब औरतों के आगे थीं और तमाम औरतों के हाथ में खैमे की चौब और पत्थर थे । दफ्अतन औरतों ने देखा कि हज़रत अबू सुफ्यान भी हज़ीमत उठा कर भाग कर आ रहे हैं । इन को आता देख कर इन की ज़ौजा हज़रत हिन्द बिन्ते उतबा आगे बढ़ीं और अपने शौहर के घोड़े को चौब फटकारी और यह कहा :

''कहां जाओगे तुम ऐ बेटे सखर के, फिरो तुम लड़ाई की तरफ और खर्च करो तुम अपनी जान को, यहां तक कि खालिस और पाक करे अल्लाह तआला तुम को उस चीज़ से जो गुज़री है तुम्हारी तर्गीब दही से रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व आलेहि व सल्लम पर । पस फिरे अबू सुफ्यान जब सुना उन्हों ने कलाम हिन्द का ।''

(हवाला : ''फुतूहुश्शाम'', अज़ अल्लामा वाकदी, सफहा 248)

हज़रत अबू सुफ्यान अपनी ज़ौजा हिन्द बिन्ते उतबा की इस सरज़निश से शर्मिन्दा हुए और फौरन अपना घोड़ा मैदाने जंग की तरफ फैरा और दूसरे भागने वाले मुजाहिदों को पुकार कर कहा कि **ऐ दीने इस्लाम के खादिमो ! भाग कर कहां जाते हो ? वापस पलटो, वापस पलटो, वर्ना दुनिया और आखेरत दोनों में रुस्वा होगे ।** हज़रत अबू सुफ्यान के पुकारने पर मुजाहिद रुक गए और अपने घोड़ों की बागें मैदाने जंग की तरफ फैरीं । तमाम मुजाहिद हज़रत अबू सुफ्यान की मुताबेअत करते हुए वापस पलटे । मर्दों को जौश दिलाने के लिये अब ख्वातीन ने भी रूमी लश्कर पर हम्ला कर दिया ।

ख्वातीने इस्लाम को मैदाने मा'रका में देख कर रूमी सिपाही तअज्जुब में पड़े । ख्वातीन की जंग में शिर्कत और इन की शुजाअत देख कर वह मह्वे हैरत थे । इस्लामी लश्कर की औरतें हम्ला करने में मर्दों से सब्कत करती थीं । एक खातून को हज़रत अयाज़ बिन सुहैल बिन सईद ताई ने एक गबर के साथ लड़ते देखा । वह गबर अपने घोड़े पर सवार था और इस खातून को कैद करना चाहता था । इस खातून ने खैमा की चौब का वार कर के गबर को घोड़े से गिरा दिया और फिर चौब मार मार कर इस को वासिले जहन्नम कर दिया । फिर इस खातून ने ज़ौर से पुकार कर कहा कि यह है अल्लाह की मदद । ऐ मुसल्मानो ! तुम भी हमारी तरह दिलैरी से मुकाबला करो । अल्लाह की मदद बेशक शामिल हाल होगी ।

इस दिन ख्वातीने इस्लाम से खुसूसन(1) हज़रत सईदा बिन्ते आसिम खौलानी (2) हज़रत खौला बिन्ते अज़्वर । हज़रत ज़िरार की बहन (3) हज़रत खौला बिन्ते सा'लेबा अन्सारिया (4) हज़रत कऊब बिन्ते मालिक बिन आसिम (5) हज़रत सलमा बिन्ते हाशिम (6) हज़रत नेअम बिन्ते कनाज़ (7) हज़रत अफीरा बिन्ते इफा (8) हज़रत हिन्द बिन्ते उत्बा बिन रबीआ । ज़ौजा हज़रत अबू सुफ्यान (9) हज़रत लीना बिन्ते जरीर हुमैरिया ने शुजाअत का ऐसा मुज़ाहिरा किया कि इन को देख कर मुजाहिदों को गैरत आई और उन्हों ने एक साथ मिल कर ऐसा सख्त हम्ला किया कि रूमी लश्कर में हलचल मच गई और जंग में ज़रा रंग आया । लैकिन थोड़ी ही दैर में रूमी फिर संभल गए और शिद्दत से लड़ने लगे ।

रूमियों के हम्ला में शिद्दत, सहाबए किराम का "या मुहम्मद" y पुकारना

अब रूमियों ने इस्लामी लश्कर के मैमना पर हम्ला सख्त कर दिया। मुजाहिदीन कभी कदम आगे बढ़ाते और कभी कदम पीछे हटाते, लैकिन नतीजतन इन को पीछे हटना पड़ा। इस्लामी लश्कर का मैमना पीछे हटते हटते लश्कर के कल्ब तक पहुंच गया। जब हज़रत खालिद बिन वलीद ने देखा कि मैमना के मुजाहिदीन पीछे हट रहे हैं तो उन्हों ने अपने छ हज़ार लश्कर के साथ रूमी लश्कर के मैसरा पर हम्ला कर दिया। हज़रत खालिद का वहां आना रूमियों के लिये मौत का पैगाम था। हज़रत खालिद ने रूमियों की लाशों के ढैर लगा दिये। इस शान से शम्शीर ज़नी की कि इन की सफें उलट कर रख दीं। इस्लामी लश्कर के मैमना से रूमी लश्कर का मैसरा लड़ रहा था। इस पर हज़रत खालिद के शदीद हम्ले की वह हैबत छाई हूई थी कि वह अपना देफाअ भी नहीं कर सक्ते थे और मुजाहिदों की तलवारें काफिरों पर बर्के गज़ब बन कर गिरती थीं :

काफिरों पर तैग वाला से गिरी बर्के गज़ब
अब्र आसा छा गई हैबत रसूलल्लाह की

(अज़ : – इमामे इश्को मुहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत खालिद और इन के साथियों को अपनी तरफ आता देख कर रूमी लश्कर के सिपाही लोमड़ी की तरह भागते थे। **शैर बबर को धाड़ता देख कर बकरियों के रेवड़ की जो हालत होती है बिल्कुल वही हालत रूमियों की थी।** रूमी हज़रत खालिद के रूप में अपनी मौत को देखते थे। अब इस्लामी लश्कर के मैमना ने आगे बढ़ना और रूमी लश्कर के मैसरा ने पीछे हटना शुरू किया। हज़रत खालिद ने मुजाहिदों को पुकारा कि ऐ अस्हाबे मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ! दुश्मनों ने हज़ीमत उठाई है और इन पर हमारा रोअब तारी हो गया है लिहाज़ा हम्ला और शिद्दत से करो। चुनान्चे मुजाहिदों ने ऐसा सख्त हम्ला किया कि रूमी लश्कर का मैसरा इन के लश्कर के वस्त तक भाग खड़ा हुवा, अब थक कर रूमियों ने तीर बरसाने शुरू किये। क्यूं कि करीब आ कर तल्वार से लड़ना इन के बस की बात न थी। लिहाज़ा दूर महफूज़ मकाम पर खड़े खड़े तीरों की बौछार शुरू कर दी।

एक साथ हज़ारों तीर बरसने शुरू हो गए। लिहाज़ा इस्लामी लश्कर का मैमना आगे बढ़ने से रुक गया। तमाम मुजाहिदीन तीरों से अपना देफाअ करने लगे। तीरों की सम्त में ढालें रख कर ज़ख्म से बचने की कौशिश करने लगे मगर फिर भी काफी ता'दाद में मुजाहिदीन ज़ख्मी हुए। बड़ा ही सख्त कश्मकश का आलम था। तमाम मुजाहिदीन सख्त मुसीबत में गिरफ्तार थे। ऐसे आलम में उन्हों ने अपने आका व मौला,दाफेउल बला, जाने आलम व रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को पुकारा :

ना'रा कीजे या रसूलल्लाह का
मुफ्लिसो ! सामाने दौलत कीजिये

(अज़ : इमामे इश्को मुहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

सहाबए किराम रिज़्वानुल्लाहे तआला अलैहिम अज्मईन ने मुसीबत के वक्त मदद के लिये हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को किस तरह पुकारा ? वह अल्लामा वाकदी कुद्दिसा सिर्रहु की ज़बानी मुलाहिज़ा फरमाएं :

"अब्दुर्रहमान बिन हमीद अल-जह्मी ने बयान किया है कि मैं उन लोगों में था जिन्हों ने खालिद बिन अल-वलीद के साथ हम्ला किया था। पस कसम है खुदा की कि जगह छोड़ दी रूमियों ने हमारे सामने से और भागे वह मिस्ले भागने बकरी के शैर के डकारने से और तआकुब किया इन का मुसल्मानों ने पस वाकेअ हुवा हम्ला रूम के मैमना पर। पस बुरी तरह से जगह को छोड़ दिया उन्हों ने और वह लोग जो ज़न्जीरों में थे, पस नहीं छोड़ा उन्हों ने अपनी जगह को दरां हालांकि चलाते थे वह तीरों को और वह निगेहबान कौम के थे और खालिद बिन अल-वलीद हमारे आगे थे हम्ले में और हम इन के पीछे थे और हमारा शेआर इस हम्ले में यह था "या मुहम्मदो या मन्सूरो अजिब अजिब"। पस खालिद बिन अल-वलीद बराबर हम्ला करते थे।"

(हवाला : "फुतूहुश्शाम" अज़ : अल्लामा वाकदी, 249)

कारेईने किराम गौर फरमाएं कि हज़रत खालिद बिन वलीद और इन के हमराह जो

सहाबए किराम की जमाअत थी उन्हों ने मुसीबत के वक्त **"या मुहम्मद"** (या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम) पुकारा। हज़्रत खालिद ने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के पर्दा फरमाने के बा'द या'नी 15 सन हिजरी में मुल्के शाम से मुसीबत के वक्त **"या मुहम्मद"** (सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम) पुकारा। **अगर हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को मुसीबत के वक्त पुकारना "शिर्क" होता, तो क्या सहाबए किराम की कसीर ता'दाद ऐसा शिर्किया ना'रा बुलन्द करती ?** हरगिज़ नहीं। लिहाज़ा साबित हुवा कि जब सहाबए किराम ने मुसीबत के वक्त हुज़ूरे अक्दस को पुकारा है, तो इस तरह पुकारना यकीनन जाइज़ और रवा बल्कि सुन्नते सहाबा है। तो जो लोग मुसीबत के वक्त **या रसूलल्लाह, या हबीबल्लाह** वगैरा पुकारते हैं, वह सहाबए किराम रिज़्वानुल्लाहे तआला अलैहिम की पैरवी करते हैं और इन्हीं के नक्शे कदम पर हैं।

लैकिन अफ्सोस ! सद अफ्सोस ! !

जिस काम को सहाबए किराम ने किया, उस काम को दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन "शिर्क" कहते हैं।

- देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत के इमाम व पैशवा मौलवी इस्माईल देहलवी लिखते हैं :

"जो शख्स किसी का कोई ऐसा तसर्रुफ साबित करे और उस से मुराद मांगे और इसी तवक्को' पर उस की नज़्र व नियाज़ करे और उस की मन्नतें माने और उस को मुसीबत के वक्त पुकारे वह मुश्रिक हो जाता है।" (हवाला : तक्वियतुल ईमान, नाशिर : दारुस्सल्फिया, बम्बई, 23)

मुन्दरजा बाला इबारत में मौलवी इस्माईल देहलवी ने साफ साफ लिख दिया है कि किसी को मुसीबत के वक्त पुकारने वाला मुश्रिक है। नाज़िरीने किराम की अदालते आलिया में बराए इन्साफ इस्तिगासा है कि **जंगे यर्मूक के दिन सहाबए किराम ने मुसीबत के वक्त हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को "या मुहम्मद" (सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम)कह कर पुकारा है।** मौलवी इस्माईल देहलवी का फत्वा किस पर चस्पां हो रहा है ?

- देवबन्दी तब्लीगी जमाअत के इमाम रब्बानी नीज़ तब्लीगी जमाअत के बानी मौलवी इल्यास कांधलवी के पीर व मुर्शिद और उस्ताद **मौलवी रशीद अहमद गंगोही** साहिब ने तो यहां तक लिखा है कि :

"जब अम्बिया अलैहिमुस्सलातो वस्सलाम को इल्मे गैब नहीं तो या रसूलल्लाह कहना भी नाजाइज़ होगा अगर यह अकीदा कर के कहे कि वह दूर से सुनते हैं ब-सबब इल्मे गैब के तो खुद कुफ्र है।"

(हवाला : फतावा रशीदिया, नाशिर : मक्तबा थानवी, देवबन्द, 62)

- देवबन्दी,वहाबी और तब्लीगी जमाअत के इमाम व मुक्तदा हकीमुल उम्मत **मौलवी अश्रफ अली थानवी** ने अपनी किताब बहिश्ती ज़ैवर में " शिर्क और कुफ्र की बातों का बयान" एक उन्वान काइम किया है। इस उन्वान के तहत लिखा है कि :

"किसी को दूर से पुकारना और यह अकीदा रखना कि उस को खबर हो गई शिर्क है।"

(हवाला : बहिश्ती ज़ैवर, नाशिर : रब्बानी बुक डिपो, देहली, हिस्सा 1/34)

मुन्दरजा बाला इबारत में थानवी साहिब का यह कहना है कि जिस को पुकारा जाए उस को पुकारने वाले की पुकार की खबर हो जाती है, यह अकीदा रख कर किसी को पुकारना शिर्क है। जब कि किसी की मदद को पहुंचना इस पर मौकूफ है कि वह इस की पुकार सुन ले। बगैर इत्तिला' हुए मदद के लिये आना मुतसव्विर नहीं। तो जब सहाबए किराम ने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को मुसीबत के वक्त मदद के लिये पुकारा, तो इन का यही अकीदा था कि हमारी पुकार गुम्बदे खिज़्रा में आराम फरमाने वाले शहनशाहे कौनेन ज़रूर समाअत फरमा रहे हैं और हमारी फर्याद की इन को खबर होगी, और वह हमारी फर्याद रसी फरमाएंगे :

इन पर दुरूद जिन को कसे बेकसां कहें
इन पर सलाम जिन को खबर बे-खबर की है

(अज़ : इमामे इश्को मुहब्बत हज़्रत रज़ा बरैलवी)

नाज़िरीने किराम मीज़ान अद्ल के एक पल्ला में सहाबए किराम की पाकीज़ा

अकीदत रखें और दूसरे पल्ला में दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन के अकाइदे फासिदा रखें और इन्साफ फरमाएं कि हक्क क्या है ? और बातिल क्या है ?

रूमी लश्कर के सरदार दरीहान का कत्ल

हज़रत खालिद और इन के साथियों का **''या मुहम्मद''** (सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम) का ना'रा लगाते ही एक अजीब कैफियते इश्क मुजाहिदों पर तारी हो गई और इश्के नबी के जज़्बए सादिक ने इन में ऐसा जौश पैदा कर दिया कि अब तीरों की बारिश भी इन को रोक न पा रही है। रूमी सिपाहियों पर एक ना-काबिले बरदाश्त हैबत छा गई। हज़रत खालिद अपने लश्कर के साथ पाऊं में ज़न्जीर वाले तीर अन्दाज़ों तक पहुंच गए और इन के सरों पर तलवारें रखीं। इन रूमियों के हाथ से तीर व कमान छीन लिये और लाशों से मैदान भर दिया। रूमी लश्कर का सरदार थोड़े फास्ला से अपने सिपाहियों का इस्लामी मुजाहिदों के हाथों कत्ले आम देख रहा था। वह मन्ज़र ऐसा भयानक था कि उस के बदन पर कपकपी तारी हो गई। सरदार दरीहान एक लाख फौजी के साथ ठहरा हुवा था और उस के इर्द-गिर्द बतारेका ने हिसार काइम कर रखा था, ताकि वह हम्ले से महफूज़ रहे। इस्लामी लश्कर आगे बढ़ता हुवा दरीहान के करीब पहुंच गया। दरीहान के मा-तहत जो लश्कर था वह मुज़ाहिम हुवा, लैकिन मुजाहिदों की तलवारों की ताब न ला सका। जिस तरह खेत में काश्त काटी जाती है, इस तरह दरीहान के सिपाही कट रहे थे। पूरा मैदाने जंग खून आशाम हो गया और अब अपनी तरफ बढ़ते हुए मुजाहिदों को देख कर दरीहान की अक्ल सठिया गई। खौफ व हरास और बद-हवासी के आलम में अपने मुहाफिज़ों को पुकार पुकार कर कहने लगा कि **मुझ से यह खूं रेज़ी देखी नहीं जाती। खूनरैज़ी का भयानक मन्ज़र देख कर मेरा दिल बैठा जा रहा है लिहाज़ा मेरे चेहरे पर कपड़ा डाल दो।**

दरीहान के मुहाफिज़ों ने देखा कि इन के सरदार की अजीब कैफियत हो गई है। इस का दिल दो दो हाथ उछलता है। कहीं ऐसा न हो कि खून की वजह से इस का दम निकल जाए, इस लिये मुहाफिज़ों ने दरीहान के चेहरे पर कपड़ा डाल दिया। अब इस्लामी लश्कर बढ़ता हुवा दरीहान के करीब आ गया था। दरीहान के मुहाफिज़ों ने दिलैरी से मुकाबला किया और मुजाहिदों को दरीहान तक पहुंचने से बाज़ रखने की हर मुम्किन कौशिश की लैकिन नाकाम रहे। हज़रत ज़िरार ने देखा कि दरीहान का चेहरा रैश्मी कपड़े से लपेटा हुवा है और वह बद-हवासी के आलम में तोतला रहा है। अब दरीहान के मुहाफिज़ों का मुहासरा टूट

गया था। हज़रत ज़िरार बिन अज़वर ने एक जसत लगाई और उस के करीब पहुंच गए और गज़बनाक तैवर में सीना पर नैज़ा मारा जो उस की पुश्त के पार निकल गया। सिर्फ एक ही वार में दरीहान कुश्ता हो कर ज़मीन पर गिर गया।

दरीहान का कत्ल होते ही रूमी लश्कर में इन्तिशार व बद मज़्गी फैल गई। हज़रत खालिद ने इस का भरपूर फाइदा उठाते हुए तैग ज़नी और नैज़ा बाज़ी शदीद कर दी और मुजाहिदों को भी उभारा,यहां तक कि रूमी लश्कर के कुश्तों के पुश्ते लगा दिये। रूमी लश्कर के सिपाही कसीर ता'दाद में कत्ल हुए, जब कि इस्लामी लश्कर में ब मुकाबिल इन के कम मुजाहिदों ने शहादत पाई। मशाहीर सहाबा से हज़रत आमिर बिन तुफैल अद्दौसी और इन के शहज़ादे हज़रत जुन्दब बिन आमिर अद्दौसी ने जामे शहादत नौश फरमाया।

अल-गरज़ ! जंगे यर्मूक का ग्यारहवां दिन इस्लामी लश्कर के लिये सख्त इब्तिला व आज़माइश और मुसीबत का दिन था। उस दिन इस्लामी लश्कर तीन मरतबा हिम्मत हार कर पीछे हटा था, लैकिन हज़रत खालिद बिन वलीद, हज़रत ज़िरार बिन अज़वर, हज़रत अम्र बिन मा'दी कर्ब, हज़रत कसामा बिन अल-कतानी, हज़रत आमिर बिन तुफैल दौसी वगैरा ने बड़ी जां फशानी और दिलैरी का मुज़ाहिरा किया और हर मरतबा इस्लामी लश्कर को साबित कदम रखने में अहम किरदार अदा किया। सुब्ह से ले कर शाम तक जंग का तन्नूर गर्म रहा। आफ्ताब गुरूब होते ही दोनों लश्कर अपने अपने कैम्प में वापस लौटे। इस्लामी लश्कर में ज़ख्मियों की ता'दाद बहुत थी। ज़ियादह तर मुजाहिदीन तीरों से ज़ख्मी हुए थे।

मैदाने मा'रका से लौटते ही सब से पहले हज़रत अबू उबैदा ने दो नमाज़ें साथ में पढ़ाईं क्यूं कि जंग जारी होने की वजह से नमाज़ कज़ा हूई थी। नमाज़ के बा'द मुजाहिदों ने ज़ख्मियों की मर्हम पट्टी और तीमारदारी शुरू की। शायद ही कोई ऐसा खैमा होगा जिस में कोई ज़ख्मी न हो। हज़रत अबू उबैदा और हज़रत खालिद बिन वलीद इस्लामी लश्कर में गश्त कर रहे थे। और ज़ख्मियों के हाल की पुर्सिश करते। इन के ज़ख्म बांधते थे और तसल्ली देते। मुजाहिदों की कोशिशे जेहाद की ता'रीफ व शुक्रिया अदा करते और जेहाद की फज़ीलत बयान कर के अज्रे अज़ीम और बे हिसाब सवाब का मुज़्दा सुनाते और साथ में सब्र की तल्कीन करते हुए शुजाअत व सबात कदमी की तर्गीब देते। नुस्रते इलाही और फतह व गल्बा की उम्मीद दिला कर मुजाहिदों की हौसला अफ्ज़ाई करते। कुछ मुजाहिदों के ज़ख्म बहुत गहरे थे। इन को खुसूसन सब्र की तल्कीन करते हुए फरमाते कि जिस तरह तुम रंज आर्गी हो तुम्हारे दुश्मन भी इसी तरह रंज आर्गी हैं, लैकिन मोमिन को राहे खुदा में जेहाद करते हुए जो रंज व तक्लीफ पहुंचती है, इस पर अल्लाह तआला अज्रे अज़ीम अता फरमाता

है, जब कि मुश्रिकों पर इताब व गज़ब नाज़िल फरमाता है। लिहाज़ा ऐ राहे खुदा में अपनी जानें खर्च करने वालो ! अल्लाह की रहमत और उस की रज़ा पर राज़ी रहो। अल्लाह तुम्हारे हर हाल से वाकिफ और वही तुम्हारा मुहाफिज़ है।

इधर रूमी लश्कर में कोहराम मचा हुवा था। सरदार दरीहान के कत्ल की वजह से सफे मातम बिछी थी,मज़ीद बरां हज़ारों की ता'दाद में रूमी सिपाहियों के कत्ल होने का रंज व गम, रूमी लश्कर के सिपेह सालारे आज़म बाहान का मुंह बिगड़ा हुवा था। अपने तख्त पर मुंह सूजा कर बैठा था और चेहरा फक पड़ा था। रूमी लश्कर के सरदार और बतारेका नदामत से सर झुकाए हूए थे। किसी में बाहान से आंख मिलाने की हिम्मत न थी। क्यूं कि वह जानते थे कि बुज़दिली की वजह से हम बाहान की नज़रों से गिर चुके हैं। बाहान के खैमे में सन्नाटा छाया हुवा था। बिल-आखिर बाहान ने खामोशी का पर्दा चाक करते हुए खशमनाक लहजे में कहा कि मुझे मा'लूम था कि तुम नाक चोटी कटा कर ही आओगे और साथ में मेरी नाक भी कटवाओगे। जब तुम मुसल्मानों से लड़ने जाते हो तो मरने के नाम से तुम्हें मौत आ जाती है। मुसल्मानों को देखते ही तुम्हारी जान सूख जाती है। आज तुम ने जिस बुज़दिली और मुर्दा दिली का मुज़ाहिरा किया है इस से मुसल्मानों के हौसले मानिन्दे कोह बुलन्द हो गए। हमारा इन पर कोई रोअब बाकी नहीं रहा। बार बार तुम को एक ही बात पर डांट डपट करते हुए खुद मुझे शर्म आती है, लैकिन तुम हो कि अपनी शर्म व गैरत को बालाए ताक रख दिया है। तुम भी इन्सान हो और मुसल्मान भी इन्सान हैं। अल्लाह ने अगर तुम को दो हाथ दिये हैं तो अरबों को दस बीस हाथ नहीं दिये। इन के भी तुम्हारी तरह दो हाथ ही हैं, लैकिन क्या वजह है कि हर महाज़ पर तुम पस्पा हो जाते हो और वह गालिब रहते हैं। तमाम सरदारों ने अपनी सफाई पैश करते हुए कहा कि ऐ सरदार ! आज हमारे शेहसवार और शुजाअ सिपाहियों को लड़ने का मौका' ही नहीं मिला, क्यूं कि वह तमाम लश्कर के पिछले (अकब) हिस्सा में थे और जंग लश्कर के अगले हिस्सा में वाकेअ हूई थी। लिहाज़ा आप आइन्दा कल देख लेना कि हम अरबों से आज की हज़ीमत का कैसा सख्त इन्तिकाम लेते हैं। बाहान ने हक्के मसीह और सलीब की कसम दी कि आइन्दा कल जवांमर्दी दीखाने का अहद व पैमान करो। रूमी सरदार बाहान के खैमा से रुखसत हुए और आइन्दा कल की जंग की तैयारी में रात बसर की।

इधर इस्लामी लश्कर की निगेहबानी के लिये हज़रत अबू उबैदा ने चंद मुजाहिदों को मुतअय्यन कर दिया था, जो रात भर तक्बीर व तहलील की सदा बुलन्द कर के इस्लामी लश्कर के इर्द-गिर्द गश्त कर के निगेहबानी करते रहे।

जंगे यर्मूक का बारहवां दिन

सुब्ह हज़रत अबू उबैदा ने नमाज़े फज्र की इमामत फरमाई और इन की इक्तिदा में जैशे इस्लाम ने नमाज़ पढ़ी। नमाज़ के बा'द फौरन मुजाहिदों ने देखा कि रूमी लश्कर अपने कैम्प से निकल कर मैदान में आ रहा है। इस्लामी लश्कर के हर सरदार ने अपने मा-तहत लोगों को आवाज़ दी कि आज भी दुश्मन उमडते हुए सैलाब की तरह आ रहे हैं, लिहाज़ा जल्दी मुसल्लह हो कर मैदान की तरफ निकलो। तमाम मुजाहिद अपने हथियारों से मुसल्लह फौरन मैदान में कूद पड़े। और दुश्मनों से मुकाबला के लिये सफ आरा हो गए। हज़रत अबू उबैदा सफों के दरमियान गश्त करते और मुजाहिदों को जेहाद की तर्गीब देते। रूमी लश्कर आज अपनी पूरी जम्ईयत के साथ मैदान में उतरा था। बे-शुमार सलीबें और निशान बुलन्द नज़र आते थे। बाहान का तख्त गुज़िश्ता कल की तरह ऊंचे टीले पर रखा गया, लैकिन आज बाहान ने यह फैसला किया था कि पूरे लश्कर की सिपाह सालारी खुद अकेला करेगा। लश्कर के हर हिस्सा पर बुलन्द टीला से निगरानी करेगा और ज़रूरी हिदायत व तन्बीह करता रहेगा। बाहान ने हुक्म जारी किया था कि जब तक इस्लामी लश्कर की जानिब से हम्ला की इब्तिदा न हो, तब तक तुम हम्ला करने में उज्लत मत करना। अलबत्ता इन के हम्ले का दन्दां शिकन जवाब देना।

दोनों लश्कर मैदान में आमने सामने आ कर ठहर गए। रूमी लश्कर खामौश अपनी जगह पर जामिद खड़ा था। लड़ने के लिये मैदान में कोई भी नहीं निकला, तो इस्लामी लश्कर ने ही जंग में पहल की और यकबारगी हम्ला किया। और जंग की आग भड़क ने लगी।

हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान ने अपने साथियों को आवाज़ दी, ऐ जन्नत को अपनी जान के इवज़ खरीदने वालो ! अल्लाह और अल्लाह के रसूल की खुशनूदी हासिल करने का यह सुन्हरी मौका' है। यहां अपना सर कटा कर जन्नत हासिल कर लो। यह फरमा कर उन्हों ने अपना अलम लहराया। मुजाहिदों ने नारए तक्बीर बुलन्द किया और रूमियों पर टूट पड़े। हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान ने बड़ी जवांमर्दी का मुज़ाहिरा किया। रूमी लश्कर की सफें उलट दीं। इस्लामी लश्कर के मैमना पर हज़रत अम्र बिन अल-आस सहमी

अमीर मुकर्रर थे। इस महाज़ पर एक साथ दस हज़ार रूमी आ पड़े और ऐसा शदीद हम्ला किया कि इस्लामी लश्कर का मैमना पीछे हटते हटते औरतों के टीले तक आ गया। रूमियों की जुर्अतें इतनी बढ़ीं कि इन्हें यह गुमान हो चला कि हम को गल्बा हासिल हो जाएगा। हज़रत ज़ुबैर बिन अल-अव्वाम को आशोबे चश्म का आरिज़ा लाहिक था, जिस के सबब उन्हों ने आज जंग में शिर्कत नहीं की थी और अपने खैमे में थे। इन की ज़ौजा मोहतरमा हज़रत अस्मा बिन्ते अबी बक्र इन की आंख का मुआलिजा कर रही थीं कि खबर आई कि इस्लामी लश्कर के मैमना ने हज़ीमत उठाई, और वह टीले के नीचे तक पीछे हट कर आ गया है। हज़रत अफीरा बिन्ते अफ्फार दौड़ती हूई हज़रत ज़ुबैर बिन अल-अव्वाम के खैमे में आईं और कहा कि ऐ रसूले मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की फूफी के शेहज़ादे ! मुसल्मान सख्त मुसीबत में मुब्तला हैं और हज़ीमत उठा कर टीले तक आ गए हैं। आज आप दीन के मददगार हैं, खुदारा कुछ कीजिये ! हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम यह सुन कर फौरन उठ खड़े हुए,अपनी आंखों से पट्टियां खोल कर फैंक दीं और फरमाया कि मैं बीमारी की वजह से मा'ज़ूर हो कर नहीं बैठ सक्ता बल्कि दीन की मदद के लिये अल्लाह की राह में अपनी जान खर्च करूंगा। फिर आप ने हथियार संभाला और घोड़े पर सवार हो कर मा'रकए किताल में कूद पड़े। इन के हाथ में छोटा नैज़ा था जिस को वह घूमाते थे और बुलन्द आवाज़ से फरमाते थे कि मैं ज़ुबैर बिन अल-अव्वाम हूं। मैं रसूले मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की फूफी का बेटा हूं। फिर आप ने रूमियों पर हम्ला शुरू किया। आप ऐसी बर्क रफ्तारी से नैज़ा घूमाते थे कि आप के नैज़ा का वार खाली फैरने की रूमियों में सकत न थी। जो भी नैज़ा की ज़द में आ जाता था खाक व खून में तड़पता नज़र आता। **हज़रत ज़ुबैर की दिलैरी ने जंग का रुख पलट दिया।** इन को इस तरह किताल करते देख कर मुजाहिदों में एक नया जौश पैदा हो गया और मुजाहिदों ने ऐसा बाज़गश्त हम्ला किया कि रूमियों के कदम उखड़ गए। आगे बढ़ने के बजाए पीछे जाने लगे। हज़रत अम्र बिन अल-आस ने भी मुजाहिदों को उभारा और रूमियों को मारते और काटते हुए इन के लश्कर के मैसरा तक भगा दिया।

हज़रत ज़ुबैर बिन अल-अव्वाम लड़ते हुए आगे बढ़े और बढ़ते गए, यहां तक कि वह उस मकाम पर पहुंच गए जहां हज़रत खालिद बिन वलीद और हज़रत हाशिम मिरकाल ने रूमियों पर सख्त हम्ला जारी रखा था। और रूमी लश्कर पर ऐसा दबाव डाल रखा था कि रूमी लश्कर हज़ीमत उठा कर वापस जा रहा था। रूमी लश्कर को पीछे ढकेलते हुए हज़रत खालिद उस टीले तक पहुंच गए जहां रूमी लश्कर के सिपाह सालार बाहान का खैमा नसब

था। जब बाहान ने देखा कि हज़रत खालिद इस्लामी लश्कर के साथ आगे बढ़ते हुए यहां तक आ गए हैं तो वह फौरन अपना तख्त छोड़ कर भागा और रूमी सिपाहियों को गालियां देते हुए कहा कि **ऐ ना-मर्दो ! ऐ ना-मर्दों की औलादो ! सख्ती हो तुम पर ! दुश्मन बढ़ते हुए यहां तक आ गए और तुम देखते रहे। अगर तुम्हारे हाथ तलवारें थामने की सलाहियत नहीं रखते तो चूड़ियां पहन कर औरतों के साथ घर में बैठ रहो।** बाहान की ऐसी ला'नत व मलामत सुन कर तमाम रूमियों ने मुत्तहिद हो कर हम्ला किया और मुजाहिदों को रोकने और बाहान तक न पहुंचने देने में काम्याब हो गए। थोड़ी दैर पहले तो बाहान अपनी नज़र के सामने अपनी मौत को नाचती देख कर लरज़ गया था, लैकिन अब उस की जान में जान आई।

हज़रत शुर्हबील बिन हसना कातिबे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की सरदारी में कौमे अर्मन के शैर दिल मुजाहिद बड़ी जां फशानी से जंग कर रहे थे। रूमी सरदार जर्जीर ने इन पर तीन हज़ार फौजियों के साथ हम्ला कर दिया। हज़रत शुर्हबील अपनी जगह साबित कदम रहे और मुकाबले पर डटे रहे, लैकिन इन के साथियों के कदम उखड़ गए और पीछे हटने लगे। हज़रत शुर्हबील के साथ सिर्फ चंद अश्खास ही रह गए। तब हज़रत शुर्हबील ने अपने साथियों को पुकार कर कहा कि "या अह्लल इस्लाम ! अ-फरारो मिनल मौत ? अस्सब्र अस्सब्र" ऐ अह्ले इस्लाम ! क्या मौत से भागते हो ? सब्र करो, सब्र। हज़रत शुर्हबील की इस पुकार को सुन कर फरार होने वाले मुजाहिदों के कदम रुक गए। फौरन वापस पलटे और ऐसा शदीद हम्ला किया कि रूमियों की सफों को उलट कर रख दिया। फन्ने हर्ब के वह जौहर दिखाए कि रूमी दंग रह गए। जब मुसीबत और तंगी दूर हूई और राहत व कुशाइश हासिल हूई तब हज़रत शुर्हबील ने कौमे अर्मन के मुजाहिदों की सरज़निश करते हुए फरमाया कि ऐ मुजाहिदो ! तुम को क्या हो गया था कि इन अजमी गैर मख्तून काफिरों से दब कर पीठ दिखा रहे थे ? क्या तुम को मा'लूम नहीं कि मैदाने जेहाद से पीठ फैर कर भागना कितना बड़ा गुनाह है ? अल्लाह तबारक व तआला फरमाता है :

وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهٗۤ اِلَّا مُتَحَرِّفاً لِّقِتَالٍ اَ وْمُتَحَيِّزاً اِلٰى فِئَةٍ
فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ مَاوٰهُ جَهَنَّمُ ط وَ بِئْسَ الْمَصِيْرُ

(सूरा तौबा, आयत नम्बर 16)

तर्जुमा : "और जो इस दिन इन्हें पीठ देगा मगर लड़ाई का हुनर करने या

अपनी जमाअत में जा मिलने, तो वह अल्लाह के गज़ब में पलटा और उस का ठिकाना दोज़ख है और क्या बुरी जगह है पलटने की।'' (कन्ज़ुल ईमान)

ऐ मुसल्मानों ! अल्लाह से डरो। मौत से क्या डरना ? क्या हम ने अपनी जानें जन्नत के बदले में अल्लाह को नहीं बेच दीं ? अल्लाह तबारक कुरआन मजीद में इर्शाद फरमाता है :

اِنَّ اللّٰہَ اشۡتَرٰی مِنَ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ اَنۡفُسَہُمۡ وَاَمۡوَالَہُمۡ بِاَنَّ لَہُمُ الۡجَنَّۃَ
یُقَاتِلُوۡنَ فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰہِ فَیَقۡتُلُوۡنَ وَ یُقۡتَلُوۡنَ

(सूरए-तौबा,आयत नम्बर : 111)

तर्जुमा : ''बे शक अल्लाह ने मुसल्मानों से इन के माल और जान खरीद लिये हैं इस बदले पर कि इन के लिये जन्नत है। अल्लाह की राह में लड़ें तो मारें और मरें।'' (कन्ज़ुल ईमान)

हज़रत शुर्हबील ने फरमाया कि तुम मौत के डर से भाग कर जन्नत से भाग रहे थे और अल्लाह के गज़ब में मुब्तला होने जा रहे थे। कौमे अर्मन के मुजाहिदों ने नदामत के साथ मा'ज़रत करते हुए कहा कि ऐ रसूले अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के सहाबी ! हमारा भागना शैतान का धोका था। फरैबे नफ्स में आ कर हम से यह खता सर्ज़द हूई। हम नादिम हैं और अब इन्शा अल्लाह कभी आप का साथ नहीं छोड़ेंगे और अपनी जानें कुरबान करने में बुख्ल व ताम्मुल नहीं करेंगे। हज़रत शुर्हबील खुश हुए और इन को दुआए जज़ाए खैरो बरकत से नवाज़ा।

हज़रत ज़ुल-केलाअ हुमैरी का अजीब वाकेआ :-

अल्लामा वाकदी रिवायत फरमाते हैं : कि रूमी लश्कर से एक तवील कामत और देव हैकल गबर सुन्हरी ज़िरह और खौद पहने मैदान में उतरा, खौद में सोने से बनी सलीबें जड़ी हूई थीं और उस का घोड़ा भी लोहे की ज़िरह में मल्बूस था, ताकि वह भी ज़ख्मी हो कर न गिरे। वह गबर सुरअत से तल्वार घूमा कर अपनी जंगी महारत का मुज़ाहिरा कर रहा था। तकब्बुर और गुरूर के नशे में धुत चीख चीख कर मुकाबिल तलब करने लगा। इस का घमंड देख कर हज़रत ज़ुल-केलाअ हुमैरी का गुलाम तैश में आ गया और उस की तरफ

लपका। हज़रत ज़ुल-केलाअ हुमैरी ने देखा कि रूमी गबर कुहना मश्क और तजरबा कार जंगजू मा'लूम होता है और मेरा गुलाम उस से मुकाबला की सलाहियत नहीं रखता, फिर भी जज़्बए जेहाद में सरशार मुकाबला करने जा रहा है। मुबादा वह मुसीबत में गिरफ्तार हो जाएगा। यह गबर मेरा मद्दे मुकाबिल है, लिहाज़ा उस से मुकाबला के लिये मुझे जाना चाहिये। यह ख्याल आते ही उन्हों ने अपने गुलाम को आवाज़ दे कर वापस बुला लिया और कहा कि तुम तवक्कुफ करो,में इस से मुकाबले को जाता हूं। चुनान्चे हज़रत ज़ुल-केलाअ हुमैरी मैदान में आए। हज़रत ज़ुल-केलाअ ने आते ही गबर पर नैज़ा का वार किया, लैकिन गबर पहले से ही चौकन्ना था, उस ने वार खाली फैर दिया और बाज़गश्त वार किया, जिस को हज़रत ज़ुल-केलाअ ने ढाल पर लिया और अपने को बचाया। दोनों इस तरह एक दूसरे पर वार करते रहे और नैज़ा बाज़ी के कर्तब दिखाते रहे। बड़ी दैर तक इसी तरह दोनों मुकाबला करते रहे, यहां तक कि दोनों थक गए और अब दोनों ने तलवारें तान लीं। दोनों की शम्शीर ज़नी के दांव पैच भी काबिल दीद थे और देखने वाले तअज्जुब में पड़ गए। हज़रत ज़ुल-केलाअ ने मौका' पा कर गबर पर तल्वार का वार कर दिया, लैकिन गबर ने मज़बूत ज़िरह पहनी थी, लिहाज़ा वार कारगर साबित न हुवा। तल्वार का वार पड़ने से गबर बिफरा और इस ने हज़रत ज़ुल-केलाअ पर ऐसा शदीद वार किया कि सर को फाड़ कर ज़िरह को भी चीरती हूई तल्वार इन के बाज़ू में पैवस्त हो गई। ज़ख्म बड़ा कारी लगा, यहां तक कि हज़रत ज़ुल-केलाअ का हाथ बेकार हो गया और तल्वार थामना मुश्किल था। लिहाज़ा उन्हों ने इस्लामी लश्कर की जानिब घोड़े की बाग फैरी। गबर ने तआकुब किया, लैकिन हज़रत ज़ुल-केलाअ को पा न सका और हज़रत ज़ुल-केलाअ इस्लामी लश्कर में इस हाल में वापस आए कि इन के ज़ख्म से खून जौश मार कर बेह रहा था। कौमे हुमैर के मुजाहिदों ने अपने सरदार को घोड़े से उतारा और फौरन इन का ज़ख्म बांधा।

हज़रत ज़ुल-केलाअ के शदीद ज़ख्मी होने की खबर जब इस्लामी लश्कर में फैली तो कौमे हुमैर और दीगर अक्वाम के मुजाहिदीन इन की पुर्सिशे हाल और इयादत के लिये आने लगे। कुछ मुजाहिदों ने पूछा कि ऐ सरदार ! आप का यह हाल क्यूं कर हुवा ? हज़रत ज़ुल-केलाअ ने जवाब दिया कि ऐ मुजाहिदो ! अपने हथियार और अपनी ताकत पर हरगिज़ न इतराना। दुश्मनों से लड़ते वक्त अपनी दिलैरी और जंगी महारत पर गुरूर मत करना और सिर्फ अल्लाह की ज़ात और उसी की मदद पर भरोसा करना। लोगों ने अर्ज़ किया कि ऐ सरदार ! आप ऐसा क्यूं फरमा रहे हैं ? हज़रत ज़ुल-केलाअ ने फरमाया कि जब मेरा गुलाम मुकाबला करने जा रहा था, तो मैं ने देखा कि इस के जिस्म पर ज़िरह नहीं और जिस्मानी

ए'तबार से भी वह गबर का मद्दे मुकाबिल नहीं, लिहाज़ा मैं ने ब-नज़रे शफ्कत इस को बाज़ रखा और मैं ने इस लिये जाने का कस्द किया कि मेरे जिस्म पर मज़बूत ज़िरह है और जिस्मानी ए'तबार से मैं इस का मद्दे मुकाबिल और तजरबा कार जंगजू हूं। लिहाज़ा मैं ज़िरह और अपनी जिस्मानी ताकत व जंगी महारत पर ए'तमाद कर के लड़ने गया और नतीजा क्या हुवा वह तुम देख रहे हो। इस बे खत्ला ने मुझे धोका दे कर वार किया और मेरी ढाल और ज़िरह दोनों को काट कर मुझे शदीद ज़ख्म पहुंचाया। लिहाज़ा तुम कभी भी हथियारों की मज़बूती और जिस्मानी कुव्वत पर ए'तमाद कर के लड़ने मत जाना और एक ज़रूरी बात ज़हन नशीन कर लो, काफिरों को जब भी कत्ल करना उस वक्त यह गुमान मत करना कि मैं ने इसे कत्ल किया है, बल्कि हकीकत यह है कि इन काफिरों को अल्लाह ही कत्ल करता है। जैसा कि कुरआन मजीद में इर्शाद है :

فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ

(सूरह तौबा, आयत। 17)

तर्जुमा : "तो तुम ने इन्हें कत्ल न किया बल्कि अल्लाह ने इन्हें कत्ल किया।"

(कन्ज़ुल ईमान)

शाने नुज़ूल : "जब मुसल्मान जंगे बद्र से वापस हुए तो इन में से एक कहता था कि मैं ने फुलां को कत्ल किया। दूसरा कहता था मैं ने फुलां को कत्ल किया। इस पर यह आयत नाज़िल हूई और फरमाया गया कि इस कत्ल को तुम अपने ज़ौर और कुव्वत की तरफ निस्बत न करो कि यह दर हकीकत अल्लाह की इम्दाद और इस की तकवियत और ताईद है।"

(हवाला : तफ्सीर खज़ाइनुल इरफान,सफ्हा 321)

हज़रत ज़ुल-केलाअ ने फरमाया कि अगर तुम्हारे हाथ से कोई दुश्मने खुदा कत्ल हो तो हरगिज़ फख्रिया अन्दाज़ में यह न कहना कि मैं ने इस को कत्ल किया है। दर हकीकत अल्लाह ने इसे कत्ल किया है। तमाम हाज़िरीन ने कहा कि ऐ मुअज़्ज़ज़ सरदार ! आप की यह नसीहत सदाकत पर मब्नी है और इन्शा अल्लाह हम आप की इस नसीहत पर सख्ती से अमल करेंगे। आप ने हम को हकीकत से रूशनास कराया है। अल्लाह तआला आप को जज़ाए खैर दे।

हज़रत ज़ुल-केलाअ को ज़ख्मी करने वाले गबर का कत्ल :-

हज़रत ज़ुल-केलाअ का ज़ख्म बांधने के बा'द दर्द में इफाका हुवा और वह दो-बारा लश्कर में अपनी जगह आ कर ठहरे। इन को ज़ख्मी करने वाला गबर अभी तक मैदान में मौजूद था। अपने घोड़े को गरदावे देता था और मुकाबिल तलब करते हुए चेलेन्ज कर रहा था। हज़रत ज़ुल-केलाअ ने अपनी कौमे हुमैर को पुकार कर कहा कि ऐ कौमे हुमैर ! तुम्हारा सरदार ज़ख्मी हो कर वापस फिरा है। क्या तुम में से कोई ऐसा नहीं जो इस गबर से बदला ले कर हिसाब बे बाक करे। हज़रत ज़ुल-केलाअ की इस फरमाइश पर कौमे हुमैर का एक शेहसवार फौरन मैदान में पहुंच गया। इस नौ-जवान को गबर ने ब नज़रे हिकारत देखा और हकीर जान कर अपनी शुजाअत के नशे में बदमस्त लड़ने लगा। गबर ज़रूरत से ज़ियादह ताकत का इस्ते'माल कर के वार करता था ताकि हुमैरी नौ-जवान को मरऊब कर दे। इस नज़रिये के तहत वह गैर मोहतात हो कर लड़ने लगा। उस का तो यही गुमान था कि एक या दो गरदावे में हुमैरी नौ-जवान को मात कर दूंगा। लेकिन हुमैरी नौ-जवान भी बड़ा माहिर था। कुछ देर तक नैज़ा बाज़ी करता रहा मगर मौका' पाते ही इस महारत से गबर के सीना में नैज़ा घुसेड़ा कि उसे ज़मीन पर मुर्दा ढैर ही कर दिया।

उस गबर के कत्ल होते ही रूमी लश्कर से एक दूसरा गबर मिस्ले आग के शौ'ले के धूवां धार आ पड़ा, लैकिन उस को वार करने का मौका' ही न मिला। हुमैरी नौ-जवान उस को तैज़ रफ्तारी से अपनी तरफ आता देख कर उस की सीध में खड़ा हो गया। वह गबर इत्ना तैज़ रवां था कि बर वक्त व बर मौका' घोड़ा ठहरा न सका और हुमैरी नौ-जवान ने उस की सम्त में नैज़ा रास्त कर दिया। वह गबर बज़ाते खुद नैज़ा में पैवस्त हो कर हलाक हो गया। फिर तीसरा गबर आया लेकिन वह भी बहुत जल्दी अपने साथियों के पास दोज़ख पहुंच गया। यके बा'द दीगरे तीन गबरों की लगातार हलाकत पर रूमी लश्कर का एक बतरीक आंखों से खून बरसाता हुवा मैदान में आया। हुमैरी मुजाहिद ने उस से बराबर की टक्कर ली, लैकिन उस बतरीक ने नैज़ा की कारी ज़र्ब दिल पर लगाई और हुमैरी नौ-जवान को शहीद कर दिया। (اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ)

हुमैरी नौ-जवान को शहीद कर के रूमी बतरीक मैदान में खड़ा हो कर अपनी बहादुरी और शुजाअत की गुल बांग हांकने लगा कि इस्लामी लश्कर से कौमे हुमैर के एक मुजाहिद ने कमान में तीर चढ़ा कर बतरीक को निशाना पर लिया। तीर ने मुत्लक खता न की और बतरीक का हलक छेदता हुवा आरपार हो गया चुनान्चे वह गिरा और खाक व खून में तड़पता जहन्नम रसीद हो गया।

लान के बादशाह मर्बूस और हज़रत शुर्हबील में जंग :-

जिस बतरीक को तीर से हलाक कर दिया गया था वह रूमी लश्कर का अहम रुक्न और दीने नस्रानिया का आलिम और पेश्वा था। रूमियों के नज़दीक उस की बहुत ही क़द्र व मन्ज़िलत थी। उस की ना-गहानी मौत से रूमियों के दिल छिद गए। एक मातम छा गया। उस बतरीक के मो'तकिद फूट फूट कर रोने लगे। सरदार बाहान को इस अम्र की इत्तिला' हूई तो वह भी हक्का बक्का रह गया। लैकिन लश्कर में इन्तिशार न फैले इस लिये दिल पर पत्थर रख लिया और बतरीक के मुतअल्लिकीन को तस्कीन देते हुए कहा कि हमारे मुअज़्ज़ज़ बतरीक का खून ज़रूर रंग लाएगा। मैं इन अरबों के खून का दरिया बहा दूंगा। बाहान की बात पर लान के बादशाह मर्बूस का खून जौश में आ गया। कत्ल होने वाले बतरीक और मर्बूस के बहुत गहरे दोस्ताना तअल्लुकात थे, लिहाज़ा उस ने अपने यार का इन्तिकाम लेने की गरज़ से मैदान में जाने का इरादा किया और बाहान से इजाज़त तलब की। बाहान ने कहा कि मुझे उम्मीद है कि तुम हमारे मुअज़्ज़ज़ बतरीक के खून का बदला ले कर रहोगे। सलीब तुम्हारी ज़रूर मदद करेगी और फतह व काम्याबी से सरफराज़ होगे।

लान का बादशाह मर्बूस हथियार और ज़िरह से मुसल्लह हो कर मैदान में आया। वह अपनी शाहाना शान का मुज़ाहिरा करते हुए कहता था कि मैं लान का बादशाह हूं लिहाज़ा मेरे मुकाबला के लिये अपने लश्कर के किसी सरदार को ही भेजना। चुनान्चे हज़रत शुर्हबील बिन हसना कातिबे रसूल मैदान में अश्आर रज्ज़ पढ़ते हुए आए। मर्बूस को टूटी फूटी अरबी आती थी, वह अश्आर समझ नहीं सका और अश्आर के मुतअल्लिक पूछा कि तुम इस वक्त क्या कलाम करते हो ? हज़रत शुर्हबील ने फरमाया कि हम अरब में ज़मानए कदीम से दस्तूर है कि लड़ाई के वक्त हम रज्ज़ के अश्आर पढ़ते हैं जिस से हमारे दिलों में जौश पैदा होता है और कुव्वत हासिल होती है और अल्लाह के इन वा'दों पर हमारा ए'तमाद पुख्ता होता है जो वा'दे अल्लाह ने हमारे **आका व मौला, रसूले मक्बूल** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की ज़बानी हम से किये हैं। मर्बूस ने कहा कि तुम्हारे नबी ने तुम से क्या वा'दा किया है ? हज़रत शुर्हबील ने फरमाया यही, कि अल्लाह तआला हमारे लिये तूल व अर्ज़ के शहरों को फतह करेगा और हम मुल्के शाम,इराक और खुरासान के मालिक हो जाएंगे। मर्बूस ने कहा कि यह कैसे मुम्किन है ? जब कि अल्लाह ज़ुल्म करने वालों की मदद नहीं करता और तुम्हारा हाल यह है कि तुम हम पर ज़ुल्म करते हो और उस चीज़ का मुतालबा करते हो जिस

के तुम मुस्तहिक नहीं। हज़रत शुर्हबील ने फरमाया कि हम खुदा के हुक्म से ही जेहाद करते हैं और ज़मीन का मालिक अल्लाह तआला है, वह जिसे चाहता है उसे मालिक व वारिस बना देता है और ऐ मर्बूस ! सलीब की पूजा तर्क कर दे और अल्लाह वह्दहु ला शरीक की इबादत कर और अपना बातिल मज़हब छोड़ कर सच्चा दीने इस्लाम कबूल कर ले ताकि दुनिया में नैक बख्त और आखेरत में बहिश्त का हक़्दार हो जाए। मर्बूस ने कहा कि मैं अपने आबाई दीन से हरगिज़ मुन्हरिफ होने वाला नहीं। यह कह कर उस ने अपनी गर्दन में लटकी हूई सलीब गिरेबान से निकाल कर चूमी और आंखों से लगाई, और इस से इस्तिआनत तलब की। मर्बूस की इस हर्कत से हज़रत शुर्हबील खशमनाक हुए और फरमाया कि तुझ पर और तेरे साथियों पर अल्लाह का गज़ब नाज़िल हो। फिर हज़रत शुर्हबील ने मर्बूस पर हम्ला कर दिया। मर्बूस भी आज़मूदए जंग था। उस ने थोड़ा हट कर वार खाली फैरा। और हज़रत शुर्हबील पर वार किया, जिस को हज़रत शुर्हबील ने सिपर पर लिया। दोनों में शिद्दत से शम्शीर ज़नी होती रही और आग की चिंगारियां उड़ने लगीं। दोनों ने लड़ाई के वह जौहर दिखाए कि दोनों तरफ के लश्करी टुक्टुकी बांधे देख रहे थे। मुजाहिदीन हज़रत शुर्हबील की सबात कदमी और सलामती की दुआएं कर रहे थे क्यूं कि मर्बूस बड़ी शिद्दत से ऊछल ऊछल कर वार कर रहा था। और हज़रत शुर्हबील को उस पर वार करने का मौका' नहीं मिलता था। हज़रत शुर्हबील की ज़ियादह तर सई मर्बूस के वार से बचने की रहती थी।

मुसल्सल शिद्दत का वार करते करते मर्बूस की कुव्वत जवाब दे गई और जल्द ही उस के वार की शिद्दत में खिफ्फत लाहिक हूई। हज़रत शुर्हबील ने साबित कदमी से उस का मुकाबला किया और वह भी वार करने लगे। बड़ी दैर तक शम्शीर ज़नी जारी रही और दोनों की तलवारें टूट गईं। अब दोनों एक दूसरे से लिपट गए। दोनों घोड़े पर सवार गुथ्थम गुथ्था हो गए। मर्बूस जिस्मानी ए'तबार से बहुत ही कवी, मोटा और तवाना था और शुर्हबील हमेंशा रोज़ा रखने की वजह से बहुत ही नहीफ और लागर थे लिहाज़ा मर्बूस ने इन को ज़ौर से दबोच कर सुस्त कर दिया और करीब था कि आप को घोड़े की ज़ीन से खींच कर कैद कर ले या शहीद कर दे कि दफ्अतन हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर वहां पहुंच गए। दोनों एक दूसरे से चिमटे हुए और गाफिल थे। हज़रत ज़िरार ने मर्बूस की पीठ में लम्बा खन्जर पैवस्त कर के ऐसा घूमाया कि इस के अन्दरूनी तमाम आ'ज़ा कट गए और वह मुर्दा हो कर ज़मीन पर गिरा।

हज़रत ज़ुबैर के हाथों चार गबर और हज़रत खालिद के हाथों शाहे रूसिया का कत्ल

लान के बादशाह मर्बूस के कत्ल होने से रूमी लश्कर में खल्बली मच गई। रूमी बतारेका और मुलूक सीना चाक हो कर रह गए। बाहान के सीने पर तो सांप लौट गया। इज़्तिराब के आलम में एक गबर मैदान में आया और घोड़े को चक्कर देने लगा। वह रूमी लश्कर का बहादुर और शेहसवार सिपाही माना जाता था। मर्बूस की मौत का कलक और रंज उस के चेहरे से अयां था। गैज़ व गज़ब में ज़ौर ज़ौर से पुकार कर मुकाबिल तलब करने लगा। हज़रत ज़ुबैर बिन अल-अव्वाम मैदान में आए और आते ही एक वार में उस का काम तमाम कर दिया। फिर दूसरा गबर मैदान में आया और शम्शीर ज़नी के जौहर दिखाने लगा, लैकिन वह भी ज़ियादह दैर ठहर न सका। हज़रत ज़ुबैर ने उस की गर्दन पर ऐसी ज़र्ब लगाई कि उस की गर्दन अलग हो कर दूर जा गिरी। फिर तीसरा गबर सीना फुलाता हुवा मैदान में मरने आया। क्यूं कि हज़रत ज़ुबैर की तल्वार ने उस का शानदार इस्तिक्बाल किया और सूए जहन्नम भेज दिया। चौथा गबर **"मार डालूंगा,काट डालूंगा"** का शौर बुलन्द करते हुए हज़रत ज़ुबैर से टकराने आया, लैकिन थोड़ी ही दैर में हज़रत ज़ुबैर ने उस के खून से अपनी तल्वार रंगीन कर ली।

रूसिया का बादशाह, जो लान के मक्तूल बादशाह मर्बूस का दामाद था, उस ने देखा कि हज़रत ज़ुबैर ने एक साथ चार शेहसवार गबरों को खाक व खून में मिला दिया है, तो वह लाल पीला हो कर मैदान की तरफ रवाना हुवा। उस को मैदान की तरफ आता हुवा देख कर हज़रत खालिद ने हज़रत अबू उबैदा से कहा कि ऐ सरदार ! हज़रत ज़ुबैर ने चार गबरों को कत्ल करने की मशक्कत उठाई है और अब वह थक गए होंगे लिहाज़ा इन्हें वापस बुला लें, मबादा इन को कोई तक्लीफ पहुंचे, हज़रत अबू उबैदा ने ज़ौर से आवाज़ दे कर हज़रत ज़ुबैर को वापस बुला लिया और इन की जगह हज़रत खालिद बिन वलीद को भेज दिया। हज़रत खालिद मा'रकए मैदान में पुर-सुकून अन्दाज़ में चहल कदमी करने वाले की तरह आए क्यूं कि जाते ही हज़रत खालिद ने हाकिम रूसिया को तल्वार का ऐसा झटका दिया कि वह कमर से कट कर दो टुक्ड़े हो कर ज़मीन पर मुर्दा गिरा।

एक लाख रूमियों की तीरों की बारिश, सात सौ मुजाहिदों की आंखें ज़ख्मी

लान और रूसिया के दोनों बादशाहों की हलाकत का हादसा बाहान के लिये ना-काबिले बरदाश्त था। बाहान ने हसरत भरी आवाज़ में कहा : अफ्सोस ! हमारे दो अहम बादशाहों को अरबों ने मार डाला। फिर आहें भर कर खामौश हो गया और सक्ता के आलम में सर पर हाथ धरे बैठा सोचता रहा। इन मुसल्मानों का क्या इलाज करना चाहिये ? यह मस्अला उस के लिये पैचीदा था। अब तक की जंग का तजज़िया कर के यह नतीजा अखज़ किया कि मुसल्मानों की तलवारों और नैज़ों का हमारे पास कोई जवाब नहीं। करीब जा कर इन से तल्वार या नैज़े से लड़ना अपनी मौत को दा'वत देने के मुतरादिफ है। हमारे लश्कर के सिपाही इन के करीब जाते हुए भी थर थर कांपते हैं, लिहाज़ा इन का मुकाबला दूर रह कर महफ़ूज़ मकाम से ही किया जा सक्ता है और ऐसा सिर्फ तीर अन्दाज़ी से ही मुम्किन है। उस ने अपने लश्कर के एक लाख तीर अन्दाज़ों को हुक्म दिया कि वह लश्कर के आगे पहुंच कर मोर्चा संभाल लें और तमाम के तमाम एक साथ इस तरह तीर बरसाएं कि सब के तीर एक साथ कमान से निकलें। चुनान्चे तमाम रूमी तीर अन्दाज़ों ने लश्कर के आगे आ कर अपनी जगह ली और कमान में तीर चढ़ा कर मुजाहिदों पर निशाना बांधा और बाहान के हुक्म का इन्तिज़ार करने लगे। बाहान ने पाऊं में ज़न्जीर बंधे हुए सिपाहियों को हुक्म दिया के वह तमाम के तमाम जल्द अज़ जल्द तीर अन्दाज़ों के पीछे खड़े हो जाएं। फिर बाहान ने रूमी सरदार कनातिर,कौरीर और जर्जीर को हुक्म दिया कि वह अपने लश्कर को ले कर ज़न्जीर वाले सिपाहियों के पीछे इस्तिदा हो जाएं ताकि पहले तीर अन्दाज़ कसरत से तीर बरसा कर मुजाहिदों को बुरी तरह ज़ख्मी कर दें और फिर इन ज़ख्मियों पर पूरा लश्कर यल्गार कर के नैज़ों और तलवारों से इन्हें हलाक कर दे।

बाहान ने मज़्कूरा तर्तीब से लश्कर आरास्ता करने के बा'द तीर अन्दाज़ों को तीर चलाने का हुक्म दिया। हुक्म मिलते ही एक लाख कमानों से एक लाख तीर निकले। गोया तीरों की मूसला धार बारिश शुरू हूई। इस्लामी लश्कर रूमियों के इस मक्रो फरैब से बे-खबर था कि अचानक तीरों की बौछार शुरू हूई और इस्लामी लश्कर में हलचल मच गई। इस कसरत से तीर बरसते थे कि तीरों ने आफ्ताब को ढक दिया था। घोड़ों को तीर लगे तो

वह पीछे मुड़ कर भागने लगे। मुजाहिदों की हालत बहुत नाज़ुक थी। किसी का हाथ किसी का पाऊं,किसी का सीना तो किसी का शिकम और किसी की आंख रूमी तीरों का निशाना बने थे। मुजाहिद कसरत से ज़ख्मी हो रहे थे। सात सौ मुजाहिदों की आंखें तीर लगने की वजह से फूट गईं। हर तरफ से एक ही शौर सुनने में आता था कि **''वा अयनाह वा बसरा'' हाए मेरी आंख, हाए मेरी बसारत।** रूमियों के तीरों ने इस्लामी लश्कर को हिला कर रख दिया। मुजाहिदीन पीछे को हटने लगे और भागना शुरू किया। इस्लामी लश्कर में उस वक्त कयामते सुग्रा का मन्ज़र काइम था। ज़ख्मियों की चीख व पुकार और घायल घोड़ों की हिनहिनाहट का ऐसा शौर व गुल बुलन्द हुवा कि इस्लामी लश्कर में कोहराम मच गया। एक अजीब भगदड़ और इन्तिशार का समां बंध गया।

रूमी लश्कर से मुसल्सल तीरों की बारिश जारी थी। हज़रत अबू उबैदा और दीगर अकाबिर सहाबए किराम इस्लामी लश्कर की परागन्दा हालत देख कर मुतरद्दिद और मुज़्तरिब हो गए। तीरों के सामने ज़ियादह देर ठहरना दुश्वार और मुहाल था। खुले मैदान में न तो कोई आड़ है, न कोई ऐसा ज़रीआ है कि तीरों से इस्लामी लश्कर को महफूज़ रखा जा सके। रो रो कर बारगाहे खुदावन्दी में दुआ करते थे और मदद व नुस्रत तलब करते थे। **अपने आका व मौला** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की बारगाहे बेकस पनाह में इस्तिगासा करते और इस्तिमदाद करते थे :

सरवरे दीं लीजीये अपने ना-तवानों की खबर
नफ्सो शैतां सय्यदा कब तक दबाते जाएंगे

(अज़ : - इमामे इश्को मुहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत खालिद बिन वलीद भी मुज़्तरिब व बैकरार थे। कसरत से मुजाहिदों का ज़ख्मी होना इन पर बहुत शाक था। इस्लामी लश्कर के अह्म रुक्न भी तीर लगने की वजह से यक चश्म हो गए थे। (1) हज़रत मुगीरा बिन शो'बा (2) हज़रत सईद बिन ज़ैद बिन नुफैल (3) हज़रत बुकैर बिन अब्दुल्लाह तमीमी (4) हज़रत अबू सुफ्यान बिन हर्ब (5) हज़रत राशिद बिन सईद और दीगर अजिल्ला सहाबा की आंखों में तीर लगे थे। उस दिन सात सौ (700) मुजाहिदों की आंखों में तीर लगने की वजह से इस्लाम की तारीख में **''यौमुत ता'वीर''** से मौसूम किया जाता है। या'नी **''यक चश्म होने का दिन''**।

हज़रत खालिद ने महसूस किया कि अगर हम यहीं ठहरे रहे तो इस्लामी लश्कर

हलाक हो जाएगा। रूमी सरदार का फरैब हज़रत खालिद अच्छी तरह जान गए थे कि वह करीब से लड़ना टालता है और दूर फास्ले से हम्ला करने की बुज़दिली दिखा रहा है। बस किसी भी सूरत में तीर अन्दाज़ों तक पहुंच जाना चाहिये। अगर हम उन तक पहुंच गए तो हमारी तल्वार का उन के पास कोई जवाब नहीं। लैकिन उन तक पहुंचना किस तरह मुम्किन हो ? लाखों तीर एक साथ बरस रहे थे और बाहान तीर अन्दाज़ों को शिद्दत पर शिद्दत करने की तर्गीब दे रहा था। मुजाहिद कसरत से ज़ख्मी हो कर मा'ज़ूर हो रहे थे या भाग रहे थे।

हज़रत खालिद ने बुलन्द आवाज़ से पुकारा कि ऐ शम्ए रिसालत के परवानो ! रूमियों के तीर के खौफ से मैदाने जेहाद से मत भागो। जेहाद से भागना गुनाहे अज़ीम है और अल्लाह के गज़ब का हक्कदार बनना है। मौत से डर कर भागते हो लैकिन भाग कर भी तुम नहीं बचोगे, क्यूं कि रूमी तुम्हारा तआकुब कर के तुम्हें मार डालेंगे और इस तरह मरना बुज़दिली की मौत मरना होगा, लिहाज़ा पीठ दिखाने के बजाए सीना सिपर हो जाओ। **ज़िल्लत की मौत मरने के बजाए इज़्ज़त और सुर्ख रूई से मरना पसन्द करो। कौन है जो मेरा साथ देगा ?** और मौत को गले लगाने के लिये तीरों की बारिश चीर कर रूमी लश्कर पर हम्ला करने सामने आ जाए। याद रखो ! यह सलीब के पूजारी बुज़दिल और ना-मर्द हैं। करीब आ कर तल्वार ज़नी करते हुए डरते हैं। करीब आ कर लड़ने की इन में हिम्मत ही नहीं, इस लिये दूर फास्ला पर रह कर तीर चलाते हैं। अगर हम किसी सूरत से इन तक पहुंच गए तो हमारी तल्वार का मुकाबला करना इन के बस की बात नहीं।

हज़रत खालिद की इस पुकार पर तमाम मुजाहिदों ने लब्बैक कहा और कहा कि ऐ सैफुल्लाह ! **जब मरना ही है तो क्यूं न बहादुरी से मरें।** पीठ दिखा कर भागने में भी अन्जाम मौत ही है तो फिर क्यूं न सीना सिपर हो कर मौत को गले लगाएं :

मिट के गिर यूंही रहा कर्ज़े हयात
जान का नीलाम हो ही जाएगा

(अज़ : - इमामे इश्को मुहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत खालिद ने मुजाहिदों से फरमाया कि ऐ इस्लाम के कफन बरदोश मुजाहिदो ! निकलो और रूमी लश्कर की तरफ चल पड़ो। अपने आगे ढाल को इस तरह रखो कि चेहरा और सीना छुप जाए। जिस्म के बाकी आ'ज़ा पर तीर लगे तो लगने दो। ज़ख्म ज़रूर आएगा, लैकिन वह मुहलिक नहीं होगा, बा'द में भर जाएगा। सिर्फ चंद लम्हों

का मआमला है। रूमी लश्कर और हमारे दरमियान जो मैदान है इसे तय करना है। ढाल की आड़ ले कर सब के सब मिस्ले कौंदती हूई बिजली की तरह दौड़ कर इन तीर अन्दाज़ों तक पहुंच जाओ। बीच में जो मैदान है सिर्फ इत्ना फास्ला तय कर के अगर हम इन तक पहुंच गए, तो हमारी तलवारें इन के तीरों से बरसने वाली आग को सर्द कर देंगीं। अपने **आका व मौला, दाफेउल बला, रसूले मक्बूल** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की इआनत व इमदाद पर ए'तमाद करते हुए बरसते तीरों के मौत के दरिया में कूद पड़ो :

आने दो या डिबो दो, अब तो तुम्हारी जानिब
कश्ती तुम्हीं पे छोड़ी लन्गर उठा दिये हैं

(अज़ : – इमामे इश्को मुहब्बत,हज़रत रज़ा बरैलवी)

और इस्लाम के कफन बरदोश मुजाहिदों ने शुजाअत,बहादुरी,दिलैरी,जां निसारी, जां फशानी और कुरबानी को भी सुर्ख रूई और इज़्ज़त बख्शी। लुगत में इन अल्फाज़ को भी इज़्ज़त अफ्ज़ाई हासिल हो ऐसा तारीखी बे मिस्ल व अज़ीम कारनामा अन्जाम दिया। रूमी सिपाही लगातार तीर चला रहे थे और इस्लामी लश्कर के अफराद को मज्रूह कर रहे थे कि दफ्अतन **हज़ारों मुजाहिद अब तीर की तरह इस्लामी लश्कर से छूटे और बिजली की तरह तैज़ रफ्तारी से तीरों के सामने दौड़ पड़े।** रूमी तीर अन्दाज़ों ने अपने वहमो गुमान से मा वरा मआमला देखा, इन को अपनी आंखों पर यकीन न आया कि वाकई मुसल्मान दौड़े आ रहे हैं या हम कोई ख्वाब देख रहे हैं? हम ख्वाब देख रहे हैं या अम्रे वाकेआ से दो चार हैं, इस की तह्कीक करने के लिये बा'ज़ ने आंखें मसलीं और बा'ज़ ने अपने गालों को चोंटा भर कर नौचा। जब इन को यह यकीन हुवा कि वाकई हम बैदार हैं और इस वक्त जो मन्ज़र देख रहे हैं वह ख्वाब नहीं बल्कि हकीकत है, तो वह लरज़ गए। हाथ पाऊं कांपने लगे और बौखला गए। **यह अरब इन्सान हैं या जिन ? ज़िन्दगी से बे परवाह, मौत के सामने इस तरह दौड़े चले आ रहे हैं कि गोया मौत इन की महबूब शय है। इस्लाम के कफन बरदोश मुजाहिदों का मौत से खेलने का हौसला देख कर बहुत से रूमियों के हाथों से तीर व कमान गिर गए** और बहुत से तीर अन्दाज़ मौत के खौफ से थर थरा ने लगे। ऐसा लगता था कि इन के अवसान खता हो गए हैं।

हज़रत खालिद बिन वलीद नारए तक्बीर की सदा बुलन्द करते हुए मुजाहिदों के हमराह तीर अन्दाज़ों तक पहुंच गए। रूमी तीर अन्दाज़ कुछ सोचें और कुछ अक्दाम करें, इस

से कब्ल तो मुजाहिदों की तलवारें इन के सरों पर पड़नी शुरू हो गईं। तीर अन्दाज़ों के हाथों में सिर्फ तीर और कमान थे,किसी के पास नैज़ा या तल्वार नहीं थी, लिहाज़ा मुजाहिदों की तलवारों से अपना देफाअ करने का इन को मौका' ही न मिला। जिस तरह एक बिफरा हुवा शैर भेड़ बकरियों के झुन्ड पर हम्ला आवर हो कर इन्हें फाड़ देता है इसी तरह इस्लामी लश्कर का हर मुजाहिद शैर बबर की तरह रूमी लश्कर पर टूट पड़ा और इन्हें चीर फाड़ कर रख दिया, बल्कि जिस तरह खैत में उगी हूई फस्ल काटी जाती है, इस तरह रूमियों के सरों को काट कर फैंक दिया। रूमी लश्कर में कोहराम मच गया। रूमियों के पाऊं तले ज़मीन सरक गई। यक लख्त इन के कदम उखड़ गए और जान के लाले पड़ गए। मुजाहिदों ने इन पर इस कसरत से तैग ज़नी की कि इन के चालीस हज़ार (40,000) सिपाही कत्ल हुए। थोड़ी दैर पहले इस्लामी लश्कर पर आफत के बादल मंडला रहे थे, लैकिन अब मआमला बर–अक्स था। बादल छट गए थे और गल्बा और फतह की उम्मीद की किरनें दरख्शां थीं।

हज़रत खालिद की दिलैरी ने लश्करे इस्लाम के मुजाहिदों को हौसला दिया, इन के पाए मुतज़लज़ल को सबात बख्शा और पूरे लश्कर में एक नया जौश पैदा हुवा। यहां तक कि ख्वातीन भी शम्शीरें ले कर मैदान में कूद पड़ीं।

ख्वातीने इस्लाम की रूमियों से जंग

रूमियों के एक लाख तीर अन्दाज़ तीरों की बारिश शुरू कर के मुजाहिदों को तितर बितर और परागन्दा कर रहे थे और मुजाहिदीन पीछे हट रहे थे, भाग रहे थे उस वक्त लश्कर के पीछे ख्वातीने इस्लाम खैमों की लक्ड़ियों और पत्थरों से मुजाहिदों के घोड़ों को मारतीं थीं और इन का रुख मा'रकए जंग की तरफ फैर देती थीं और मुजाहिदों को आर दिलाती थीं लेहाज़ा गैरत की वजह से मुजाहिद भागने से रुक कर वापस पलटते थे। जब रूमियों की तरफ से तीर अन्दाज़ी थम गई तो फिर एक मरतबा तल्वार ज़नी और नैज़ा बाज़ी का दौर शुरू हुवा। उस वक्त मुजाहिदों के हमराह ख्वातीने इस्लाम भी तलवारें हाथ में ले कर रूमियों पर टूट पड़ीं और कयामत ढा दीं।

हज़रत अबू सुफ्यान बिन हर्ब की ज़ौजा हज़रत हिन्द बिन्ते उत्बा बिन रबीआ कि जिन्हों ने कब्ल ईमान जंगे औहद में हज़रत अमीर हम्ज़ा रदियल्लाहो अन्हो का कलेजा चबाया था, लैकिन फतहे मक्का के दिन **हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम** सल्लल्लाहो अलैह व सल्लम

के दस्त हक्क परस्त पर ईमान ला कर इस्लाम में दाखिल हूई थीं । वह हज़्रत हिन्द बिन्ते उतबा अपनी माज़ी की खताओं की तलाफी में आज अपनी जान हथैली पे ले कर दुश्मनाने इस्लाम से बड़ी दिलैरी से तल्वार ज़नी करती थीं । रूमी सिपाही पर तल्वार का वार कर के उस को ज़मीन पर मुर्दा डाल देती थीं और इस्लामी लश्कर के मुजाहिदों को जंग की तर्गीब दिलाते हुए पुकार कर कहती थीं कि **ऐ गिरोहे मोमिनीन ! इन बे खत्ना गबरों को काट कर फैंक दो ।** हज़्रत हिन्द की मुताबअत में इन के शौहर हज़्रत अबू सुफ्यान भी मुजाहिदों को बुलन्द आवाज़ से पुकार कर जौश दिलाते थे ।

अमीरुल मो'मिनीन,खलीफतुल मुस्लिमीन,हज़्रत सय्यिदोना अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहो अन्हो की साहिबज़ादी हज़्रत अस्मा अपने शौहर हज़्रत ज़ुबैर बिन अल–अवाम के हमराह मैदाने जंग में अपने शौहर का बराबर साथ निभाती थीं । हज़्रत ज़ुबैर बिन अल–अवाम किसी एक रूमी को कत्ल करते थे, तो हज़्रत अस्मा भी एक रूमी को अपनी तल्वार से कत्ल करती थीं । अगर हज़्रत ज़ुबैर दो को मार डालते थे तो हज़्रत अस्मा भी दो को तहे तैग करती थीं । अल–गरज़ वह अपने ज़ौजे मोहतरम से शाना ब शाना और कदम से कदम मिला कर दिलैरी और शुजाअत का मुज़ाहिरा करती थीं ।

हज़्रत ज़िरार बिन अज़्वर की बहन हज़्रत खौला बिन्ते अज़्वर तो मिस्ले शैरनी रूमी लश्कर के भैड़ों को चीरती और फाड़ती थीं । अचानक एक भारी जसामत और लम्बे कद्दो कामत का गबर इन के सामने आ गया । हज़्रत खौला की तल्वार ज़नी के करिश्मा से रूमी गबर को पसीना छूट गया और उस को अपनी मौत नज़र आने लगी, लैकिन इत्तिफाक से हज़्रत खौला की तल्वार टूट गई । गबर ने इस मोकेअ का फाइदा उठा कर हज़्रत खौला पर तल्वार का वार कर दिया । हज़्रत खौला ने उस का वार ढाल पर ले कर बचने की कौशिश की । लैकिन तल्वार ढाल से सरक कर हज़्रत खौला के सर में लगी । खून का फव्वारा जारी हुवा और हज़्रत खौला घोड़े से ज़मीन पर गिरीं । इन को ज़मीन पर पड़ी देख कर गबर ने अपना नैज़ा निकाल कर रास्त किया और इरादा किया कि हज़्रत खौला के सीना में नैज़ा पैवस्त कर दे । हज़्रत अफीरा बिन्ते अफ्फार ने देखा कि हज़्रत खौला बिन्ते अज़्वर की जान खतरे में है तो फौरन अपने घोड़े को कूदाया और गबर के घोड़े के करीब खड़ा कर दिया और तल्वार का ऐसा सख्त वार किया कि गबर का सर तन से अलग हो कर दूर जा गिरा । फिर हज़्रत अफीरा अपने घोड़े से उतर कर हज़्रत खौला के पास आईं और इन का सर उठाया, तो इन के तमाम बाल खून से रंगीन हो गए थे । हज़्रत खौला नीम बेहोशी के

आलम में थीं । हज़्रत अफीरा ने इन को झन्झोड़ा और पूछा कि ऐ मेरी बहन खौला ! तुम्हारा क्या हाल है ? हज़्रत खौला ने आंखें खोलीं । इन का सर हज़्रत अफीरा बिन्ते अफ्फार की गोद में था । हज़्रत खौला ने कहा कि ऐ अफीरा ! मेरा गुमान है कि मैं नहीं बचूंगी और मर जाउंगी । क्या तुम ने मेरे भाई ज़िरार को कहीं देखा है ? हज़्रत अफीरा ने कहा कि हां ! थोड़ी दैर पहले मैं ने इन को सहीह व सालिम देखा है । हज़्रत खौला ने कहा कि मेरे भाई को मेरा सलाम कहना । फिर हज़्रत खौला ने बारगाहे खुदावन्दी में दुआ की :

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِى فِدَاءً لِأَخِىْ وَلَا تَفْجَعْ بِهِ الإِسْلَامَ

तर्जुमा : ''ऐ अल्लाह ! मुझ को मेरे भाई का इवज़ कर दे और मेरे भाई के सबब से इस्लाम को रंजीदा मत कर'' या'नी हज़्रत खौला यह दुआ करती थीं कि अल्लाह मुझ को मेरे भाई के बदले शहीद कर दे और मेरे भाई को सलामत रख क्यूं कि मेरे भाई को कुछ हो गया तो लश्करे इस्लाम को बहुत सदमा पहुंचेगा और इन के हौसले टूट जाएंगे ।''

हज़्रत अफीरा ने हज़्रत खौला को तस्कीन दी और इत्मिनान दिलाया और इन को खड़ा करने की कौशिश की, लैकिन हज़्रत खौला कसरत से खून बेह जाने के सबब खड़ी नहीं हो सक्ती थीं, लिहाज़ा हज़्रत अफीरा ने इन को उठा लिया और खैमा में लाईं और इन का ज़ख्म बांधा । अल्लाह तआला के फज़्ल व करम से हज़्रत खौला बच गईं और रात को वह लश्कर की निगेहबानी के लिये गश्त करती थीं । हज़्रत ज़िरार ने इन को देखा कि सर पर पट्टी बंधी हूई है तो पूछा कि ऐ बहन यह क्या मआमला है ? हज़्रत खौला के साथ हज़्रत अफीरा थीं, हज़्रत अफीरा ने जवाब देते हुए कहा कि भाई जान इन को एक गबर ने ज़ख्मी कर दिया था, लैकिन मैं ने फौरन इन्तिकाम लेते हुए गबर को वासिले जहन्नम कर दिया । हज़्रत ज़िरार ने इन का शुक्रिया अदा करते हुए कहा कि अलहम्दो लिल्लाह ! मुझ को भी बहुत काफी ता'दाद में काफिरों को जहन्नम रसीद करने की सआदत हासिल हूई है ।

अल–हासिल ! ''यौमुत ता'वीर'' या'नी जंगे यर्मूक के बारहवें दिन ख्वातीने इस्लाम ने जिस दिलैरी और शुजाअत का मुज़ाहिरा किया इस को देख कर इस्लामी लश्कर के मुजाहिद यहां तक कहते थे कि अगर आज हम ने दिलैरी और साबित कदमी न दिखाई तो इन औरतों से ज़ियादह हम मर्दों पर लाज़िम होगा कि पर्दा नशीनी इख्तियार करें ।

आफ्ताब गुरूब हो गया तो जंग भी मौकूफ हूई और दोनों लश्कर अपने अपने कैम्प में वापस लौटे। उस दिन की जंग को मुअर्रेखीन ने हज़रत खालिद बिन वलीद के नाम से मौसूम किया है, क्यूं कि उस दिन हज़रत खालिद ने इतनी कसरत से तैग ज़नी की थी कि इन के हाथ से नौ तलवारें टूटी थीं। अल्लामा वाकदी अपनी किताब में फरमाते हैं कि जंगे यर्मूक के बारहवें दिन जिन लोगों ने हज़रत खालिद बिन वलीद को रूमियों से लड़ते हुए देखा है उन्हों ने बयान किया है कि उस दिन हज़रत खालिद बिन वलीद ने तने तन्हा एक सौ मुजाहिदों का काम किया। इलावा अज़ीं दिन भर वह अलग अलग महाज़ पर पहुंच कर रूमी लश्कर के अह्म अफराद को कत्ल करते रहे। उस दिन हज़रत खालिद बिन वलीद की वजह से ही जंग का रुख पलटा। जब रूमी तीर अन्दाज़ों ने तीरों की बौछार शुरू की थी उस वक्त ब-ज़ाहिर ऐसा मह्सूस होता था कि इस्लामी लश्कर की शिकस्त यकीनी है, रूमी लश्कर गालिब आ जाएगा, लैकिन वह हज़रत खालिद बिन वलीद ही हैं, जिन्हों ने इस्लामी लश्कर के मुजाहिदों को साबित कदम रखा और इन की हौसला अफ्ज़ाई फरमाई। उस दिन हज़रत खालिद बिन वलीद ने रूमी लश्कर के अह्म रुक्न और मुल्के शाम के मश्हूर शेहसवार और नसरानी मज़हब के पेश्वा बतरीक **''नस्तूर''** को कत्ल कर के रूमी लश्कर की कमर तोड़ दी। हज़रत खालिद और बतरीक नस्तूर में जो जंग हूई थी इस का नक्शा ज़ैल में पैश है।

नस्तूर और हज़रत खालिद में जंग हज़रत खालिद की मुकद्दस टोपी का गिरना

बतरीक नस्तूर रूमी लश्कर का अह्म रुक्न था। पूरे मुल्के शाम में उस की बहादुरी का शोहरा था। बतरीक नस्तूर को अपनी बहादुरी का बहुत घमंड और गुरूर था। मैदाने जंग में वह अपनी शान व शौकत का मुज़ाहिरा करने की गरज़ से उमदा रैश्मी लिबास पहन कर आ'ला बनावट के जंगी आलात और ज़िरह से सज धज कर आया था। उस को यह खबर मिली कि हज़रत खालिद ने रूमी लश्कर पर कयामत बर्पा कर रखी है, लिहाज़ा वह हज़रत खालिद से टक्कर लेने आ पहुंचा। हज़रत खालिद के सामने आ कर रूमी ज़बान में तोतलाने लगा और **अपने मुंह मियां मिठ्ठू बनते हुए** शुजाअत और दिलैरी की शैखी मारने लगा। हज़रत खालिद ने उस पर तल्वार का वार किया, लैकिन उस ने ढाल पर लिया। फिर उस ने हज़रत खालिद पर पूरी ताकत से वार किया, लैकिन हज़रत खालिद ने उस का वार खाली फैर दिया। दोनों में

शिद्दत से तल्वार ज़नी होने लगी। और दोनों की तलवारें बजने लगीं। नस्तूर कुहना मश्क और आज़्मूदा जंगजू था, वह हज़रत खालिद से बराबर टक्कर लेता था। दोनों में सख्त लड़ाई हो रही थी कि दफ्अतन हज़रत खालिद बिन वलीद के घोड़े ने ठोकर खाई और मुंह के बल गिरा। घोड़े के साथ हज़रत खालिद भी घोड़े के सर की जानिब झुके। इस हादसे का फाइदा उठा कर बतरीक नस्तूर ने हज़रत खालिद की पीठ पर तल्वार का वार किया, लैकिन हज़रत खालिद ने लोहे की मज़्बूत ज़िरह पहनी थी, लिहाज़ा तल्वार ने कोई नुक्सान न पहुंचाया।

हज़रत खालिद का घोड़ा ठोकर खा कर गिरा मगर फौरन संभल कर खड़ा भी हो गया। इस अफरा तफरी में हज़रत खालिद बिन वलीद की टोपी गिर गई। इन की टोपी का गिर ना था कि उन्हों ने ज़ौर से चीखा ... आगे का वाकेआ खुद अल्लामा वाकदी से समाअत फरमाएं :

> **''और उठा घोड़ा खालिद बिन अल-वलीद का अपनी लग्ज़िशे कदम से और गिर पड़ा ताज खालिद बिन अल-वलीद का इन के सर से। पस पुकार कर कहा उन्हों ने कि लो मेरे ताज को, पर लिया ताज को एक शख्स ने बनी मख्ज़ूम से। पस रख लिया खालिद बिन अल-वलीद ने उस को अपने सर पर। पस कहा उस शख्स ने कि ऐ अबा सुलैमान ! तुम इस हाले लड़ाई में हो और ताज तलब करते हो ? पस कहा खालिद बिन अल-वलीद ने कि ब-तह्कीक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने जिस वक्त मुंडाया था अपने सर मुबारक के बालों को हज्जतुल विदाअ में, ले लिये थे मैं ने कुछ मूए मुबारक इन की पेशानी के। पस फरमाया था मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो व आलेहि व सल्लम ने कि तुम इन बालों को क्या करोगे ? मैं ने अर्ज़ की थी ब-तौर तबर्रुक के रखूंगा में ऐ रसूल अल्लाह के और इआनत तलब करूंगा मैं इन से अपने दुश्मनों की लड़ाई में। पस फरमाया था मुझ से रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व आलेहि व सल्लम ने कि हमेंशा तुम फतेह याब रहोगे जब तक कि यह बाल तुम्हारे पास रहेंगे। पस रख लिया था मैं ने इन बालों को आगे की तरफ अपने ताज में। पस नहीं मुलाकी हुवा में किसी जमाअत से कभी, हालां कि वह कुलाह**

सर पर थी, मगर यह कि शिकस्त दी मैं ने उस जमाअत को और यह सब ब-बरकत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व आलेहि व सल्लम के है।"

(हवाला : "फुतूहुश्शाम" अज़ : - अल्लामा वाकदी,सफहा : 265)

कारेईने किराम मुन्दरजा बाला इबारत को ब-गौर मुतालआ फरमाएं। इस इबारत के मुतालआ से हस्बे ज़ैल मसाइल सामने आएंगे :

(1) हज़रत खालिद बिन वलीद रदियल्लाहो तआला अन्हो ने हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के मूए मुबारक ब-तौर तबर्रुक लिये थे।

(2) जब हज़रत खालिद बिन वलीद ने मूए मुबारक ब-तौर तबर्रुक लिये, तो हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने इन से दर्याफ्त फरमाया कि तुम इन बालों को क्या करोगे ? हज़रत खालिद ने अर्ज़ किया कि मैं इन बालों को अपने पास ब-तौर तबर्रुक रखूंगा और इन मुकद्दस बालों से इआनत तलब करूंगा।

इस से साबित हुवा कि हज़रत खालिद बिन वलीद का यह अकीदा था कि हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के मूए मुबारक को ब-तौर तबर्रुक रखना और इन से इआनत या'नी मदद तलब करना जाइज़ और रवा है।

(3) जब हज़रत खालिद बिन वलीद ने मूए मुबारक के मुतअल्लिक अपना ए'तमाद बारगाहे रिसालत में अर्ज़ किया तो सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने हज़रत खालिद की ताईद फरमाई और मज़ीद इर्शाद फरमाया कि **जब तक यह बाल तुम्हारे पास रहेंगे तुम हमेंशा फतह याब रहोगे।**

अगर हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के बाल मुबारक से मदद तलब करना शिर्क होता तो हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम हज़रत खालिद को रोकते और मना' फरमाते कि ऐसा अकीदा रखना शिर्क है। लिहाज़ा यह बाल अपने साथ ब-तौर तबर्रुक रख कर इस से इआनत मत तलब करना। हुज़ूरे अक्दस ने हज़रत खालिद को कतअन मना' नहीं फरमाया। मना' फरमाना तो दर किनार हुज़ूरे अक्दस

सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने हज़रत खालिद के अकीदा की तौसीक फरमाते हुए इर्शाद फरमाया कि जब तक तुम्हारे पास मेरे बाल रहेंगे, तुम हमेंशा फतह याब रहोगे। साबित हुवा कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के आसार शरीफा से इआनत तलब करना यकीनन जाइज़ है।

(4) हज़रत खालिद बिन वलीद का अकीदा हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की ताईद से ऐसा पुख्ता और रासिख हो गया कि उन्हों ने अपने आका व मौला, मालिके कौनेन सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के **मूए मुबारक अपनी टोपी में रख लिये और हर जंग में इन मुकद्दस बालों से इआनत तलब करते थे।**

(5) हज़रत खालिद बिन वलीद ने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के मूए मुबारक से हमेंशा इआनत तलब की और हर महाज़ पर इस का फाइदा इन्हें पहुंचा, जिस का इक्रार करते हुए हज़रत खालिद ने फरमाया कि **जब भी मेरा दुश्मनाने इस्लाम से मुकाबला हुवा, मैं ने इन्हीं मुकद्दस बालों की बरकत से उन्हें शिकस्त दी।**

(6) हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के मूए मुबारक के तुफैल हज़रत खालिद ने जो नुस्रत व हिमायत हासिल की वह कोई सुनी सुनाई बात नहीं बल्कि हज़रत खालिद का ज़ाती तजरबा था। अपने मुशाहिदे की बुन्याद पर हज़रत खालिद बिन वलीद यकीन के साथ फरमाते हैं कि मैं ने दुश्मनों को जो शिकस्ते फाश दी, **वह हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के मूए मुबारक की बरकत थी।**

लैकिन अफ्सोस !

दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के मूए मुबारक और आसारे मुकद्दसा की ज़ियारत से मिल्लते इस्लामिया को रोकते हैं और तबर्रुकाते बुज़ुर्गां की अज़्मत व एहतराम का साफ इन्कार करते हैं।

❁ वहाबी, देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत के हकीमुल उम्मत, **मौलवी अशरफ अली थानवी** लिखते हैं :

"कहीं कहीं जुब्बा शरीफ या मूए शरीफ पैगम्बर या किसी बुज़ुर्ग का मश्हूर है । इस की ज़ियारत के लिये या तो ऐसी जगह जमा होते हैं या इन लोगों को घरों में बुला कर ज़ियारत करते हैं और ज़ियारत कराने वालों में औरतें भी होती हैं । अव्वल तो हर जगह इन तबर्रुकात की सनद नहीं होती और अगर सनद भी हो, तब भी जमा होने में बहुत खराबियां हैं ।" (हवाला : बहिश्ती ज़ेवर,नाशिर : रब्बानी बुक डिपो, देहली, जिल्द : 6, सफहा : 386)

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के मूए अक्दस की ज़ियारत से रोकने के लिये थानवी साहिब ने (1) ज़ियारत कराने वालों में औरतों का होना (2) तबर्रुकात की सनद न होना (3) अगर सनद हो तब भी जमा होने में बहुत खराबियां होने का ज़िक्र किया है। इस के ज़िम्न में हम ने मुख्तसर बहस जंगे कन्सरीन में कर दी है। यहां मज़ीद कुछ अर्ज़ करने से पहले थानवी साहिब का तबर्रुकात के मुतअल्लिक क्या अकीदा और नज़रिया था वह पैशे खिदमत है।

- वहाबी, देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत के हकीमुल उम्मत मौलवी अशरफ अली थानवी का एक मल्फूज़ मुलाहिज़ा हो :

"इसी तरह बुज़ुर्गों के तबर्रुकात के साथ मुझ को शगफ नहीं । मसलन कुर्ता वगैरा यह ख्याल होता है कि इस में क्या रखा है ।"

हवाला : (1) कमालाते अशरफिया, मल्फूज़ाते अशरफ अली थानवी,

नाशिर : इदारा तालीफाते अशरफिया, थाना भवन

बाब : 1, **मल्फूज़ :** 1004, **सफहा :** 251

और

(2) हुस्नुल अज़ीज़, **अज़ :** ख्वाजा अज़ीज़ुल हसन,

नाशिर : मक्तबा तालीफाते अशरफिया, थाना भवन **जिल्द :** 1,

हिस्सा : 4, **किस्त :** 19, **मल्फूज़ :** 634, सफहा : 147

हल्ले लुगत : (1) **शगफ =** बे हद मुहब्बत, बे इन्तिहा रग्बत।

(हवाला : - फीरोज़ुल-लुगात, सफहा : 843)

(2) **क्या रखा है =** (मुहावरा) कुछ बाकी नहीं, क्या खुसूसियत है, क्या अनोखा पन है।

(हवाला : फीरोज़ुल-लुगात, सफहा : 1069)

मुन्दरजा बाला मल्फूज़ में थानवी साहिब यह कह रहे हैं कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो अलैह व सल्लम और दीगर बुज़ुर्गाने दीन के तबर्रुकात से थानवी साहिब को मुहब्बत व रग्बत इस लिये नहीं कि ब-कौल इन के इन तबर्रुकात में क्या रखा है ? या'नी इन तबर्रुकात में कुछ बाकी नहीं, लिहाज़ा इन तबर्रुकात की कोई खुसूसियत या अनौखापन नहीं। कारेईने किराम इन्साफ फरमाएं कि हज़रत खालिद बिन वलीद रदियल्लाहो अन्हो जैसे जलीलुल कद्र सहाबीए रसूल तो यह फरमाएं कि इन तबर्रुकात में फतह व गल्बा अता फरमाने और इआनत व मदद करने की खुसूसियत और सलाहियत है और इसी लिये उन्हों ने मूए मुबारक को बराए हुसूले बरकत अपनी टोपी में रखा और इन मूए मुबारक से बे हद मुहब्बत व बे इन्तिहा रग्बत या'नी ऐसा शगफ था कि दौराने जंग टोपी गिर गई तो बे करार व बे चैन हो गए और अपने साथियों को टोपी उठाने के लिये पुकारा और फरमाया कि इस टोपी की बरकत से मुझे फतह व गल्बा हासिल होता है। थानवी साहिब का अकीदा हज़रत खालिद के अकीदा से कितना मुतज़ाद है और यह कितना फासिद है ? इस का फैसला कारेईने किराम फरमाएं।

हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के तबर्रुकात के मुतअल्लिक मौलवी अशरफ अली थानवी का यह अकीदा व नज़्रिया है कि **इस में क्या रखा है ?** लैकिन अजिल्ल-ए सहाबए किराम रिज़्वानुल्लाहे तआला अलैहिम अज्मईन अपने आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के तबर्रुकात मसलन मूए शरीफ,जुब्बा शरीफ,मल्बूसात शरीफ,ना'लैन शरीफ, रिदा या'नी कम्बल शरीफ, प्याला या'नी कासा शरीफ वगैरा को दुनिया की बेहतरीन ने'मत और रहमत जान कर इसे अपने पास ब-तौर तबर्रुक रखते थे। इस की ता'ज़ीम व तौकीर बजा लाते थे, इस से शिफा, तन्दुरुस्ती, फतह,नुस्रत और बरकत हासिल करते थे। बल्कि अपने आशिकों को खुद आका व मौला रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम अपने तबर्रुकात इनायत फरमाते थे। यहां इतनी गुन्जाइश नहीं कि इस ज़िम्न में कुरआन व अहादीस के बराहीन व शवाहिद पैश कर के तफ्सीली गुफ्तगू की जाए, लैकिन कारेईने किराम के ज़ौक तबअ और ज़ियाफ्ते तबअ की खातिर चंद अहादीस पर ही इकतिफा किया जाता है।

❀ **हदीस शरीफ :-**

सहीह बुखारी शरीफ और सहीह मुस्लिम शरीफ में हज़रत अनस बिन मालिक रदियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है, वह फरमाते हैं :

أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَعَا بِالْحَلَّاقِ وَنَاوَلَ الْحَالِقَ شِقَّهُ الْأَيْمَنَ فَحَلَقَهُ ثُمَّ دَعَا أَبَاطَلْحَةَ الْأَنْصَارِيَ فَأَعْطَاهُ إِيَّاهُ ثُمَّ نَاوَلَ الشِّقَّ الْأَيْسَرَ فَقَالَ اِحْلِقْ فَحَلَقَهُ فَأَعْطَاهُ أَبَا طَلْحَةَ فَقَالَ اَقْسِمْهُ بَيْنَ النَّاسِ

तर्जुमा : **''नबीए करीम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने हजाम को बुला कर सर मुबारक के दाहिनी जानिब के बाल मुंडने का हुक्म फरमाया । फिर अबू तल्हा अन्सारी को बुला कर वह सब बाल इन्हें अता फरमा दिये । फिर बाएं जानिब के बालों को मुंडने का हुक्म फरमाया और वह सब बाल भी अबू तल्हा को अता फरमाए और अबू तल्हा को हुक्म फरमाया कि इन बालों को लोगों में तक्सीम कर दो ।''**

हवाला : बद्रुल अन्वार फी आदाबुल आसार

अज़ : इमाम अहमद रज़ा , नाशिर : अलमज्मउल इस्लामी, मुबारकपुर, सफहा : 13

खुद हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने अपने मूए मुबारक लोगों में तक्सीम करने के लिये अता फरमाए । मूए अक्दस कोई खाने पीने की चीज़ तो न थी कि बराए अकल व शुर्ब दिये गए हों, बल्कि लोगों को सिर्फ इस लिये मूए मुबारक दिये गए थे कि लोग इन मुकद्दस बालों को अपने पास रखें और रहमत व बरकत हासिल करें । नाज़ेरीन इन्साफ करें कि खुद हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने अपने मूए मुबारक को बाइसे बरकत होने की बिना पर अपने सहाबा को अता फरमाया ताकि सहाबए किराम इन मुकद्दस बालों को हुसूले बरकत के लिये अपने पास रखें, लैकिन तब्लीगी जमाअत के थानवी साहिब यह कहें कि **''इस में क्या रखा है ?''** हक्क व बातिल का फैसला हदीस की रौशनी में करें ।

❀ **हदीस शरीफ :-**

सहीह बुखारी शरीफ में हज़रत उस्मान बिन अब्दुल्लाह बिन मवाहिब रदियल्लाहो अन्हो से मर्वी है :

قَالَ: دَخَلْتُ عَلٰى أُمِّ سَلَمَةَ فَأَخْرَجَتْ إِلَيْنَا شَعْراً مِنْ شَعْرِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَخْضُوْباً

तर्जुमा : **''हज़रत उस्मान बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहो तआला अन्हो ने फरमाया कि मैं उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रदियल्लाहो तआला अन्हा की खिदमत में हाज़िर हुवा । उन्हों ने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो अलैह व सल्लम के मूए मुबारक की हमें ज़ियारत कराई । इस पर खिज़ाब का असर था ।''**

(हवाला : - ऐज़न,सफहा : 14)

कारेईने किराम तवज्जोह फरमाएं कि हज़रत उस्मान बिन अब्दुल्लाह को हज़रत उम्मे सलमा रदियल्लाहो अन्हा ने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के मूए मुबारक की ज़ियारत कराई । ज़ियारत करने वाले सहाबीए रसूल मर्द और ज़ियारत कराने वाली मोहतरमा उम्मुल मोमिनीन । लैकिन थानवी साहिब ने अपनी मज़्हका खैज़ किताब **''बहिश्ती ज़ैवर''** में मूए मुबारक की ज़ियारत की मुमानेअत की एक वजह यह बताई है कि **''ज़ियारत कराने वालों में औरतें भी होती हैं''** । जिस का मत्लब यह हुवा कि औरतें ज़ियारत कराती हैं, इस लिये ज़ियारत करना मना' है । अगर इसी वजह से ज़ियारत की मुमानेअत लाज़िम आती है तो तब्लीगी जमाअत के मुत्तबेईन थानवी साहिब के फत्वे की रू से हज़रत उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा रदियल्लाहो तआला अन्हा के मुतअल्लिक क्या हुक्म लगाएंगे ?

❀ **हदीस शरीफ :-**

सहीह मुस्लिम शरीफ में उम्मुल मोमिनीन सय्येदतुना आइशा सिद्दीका रदियल्लाहो तआला अन्हा की हमशीरा और हज़रत ज़ुबैर बिन अल-अव्वाम रदियल्लाहो तआला अन्हो की जौवज़ए मोहतरमा हज़रत अस्मा बिन्ते अबी बक्र सिद्दीक रदियल्लाहो तआला अन्हा से रिवायत है :

إِنَّهَا أَخْرَجَتْ جُبَّةً طَيَالِسِيَةً كَسْرَوَانِيَةً لَهَا لَبْنَة "دِيْبَاج" وَفَرْجيُهَا
مَكْفُوْفَيْنِ بِالدِّيْبَاجِ وَقَالَتْ: هٰذِهِ جُبَّةُ رَسُوْلِ اللهِ صَلّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ
كَانَتْ عِنْدَ عَائِشَةَ فَلَمَّا قُبِضَتْ قَبَضْتُهَا وَكَانَ النَّبِىُ صَلّى اللهُ عَلَيْه وَسَلَمَ
يَلْبَسُهَا فَنَحْنُ نَغْسِلُهَا لِلْمَرْضىٰ نَسْتَشْفِى بِهَا

तर्जुमा : ''हज़रत अस्मा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक ने एक ऊनी जुब्बा कसरवानी साख़्त का निकाला । इस की प्लेट रैश्मी थी और दोनों चाकों पर रैशम का काम था और कहा कि यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैह व सल्लम का जुब्बा है । उम्मुल मोमिनीन आइशा सिद्दीका रदियल्लाहो तआला अन्हा के पास था । इन के इन्तिकाल के बा'द मैं ने ले लिया । नबी सल्लल्लाहो अलैह व सल्लम इसे पहना करते थे । तो हम इसे धो धो कर मरीज़ों को पिलाते हैं और शिफा हासिल करते हैं ।'' (हवाला : ऐज़न)

नाज़िरीने किराम ! तवज्जोह फरमाएं । हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के जुब्बा शरीफ को हज़रत अस्मा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक धो कर इस का धोवन मरीज़ों को हुसूले शिफा के लिये पिलाती थीं । हज़रत अस्मा बिन्ते अबी बक्र सिद्दीक ज़ि मर्तबत सहाबिया हैं । इन का यह अकीदा है कि हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैह व सल्लम के जुब्बा शरीफ में **''शाफियुल अम्राज़''** या'नी **बीमारों को शिफा देने की खुसूसियत है** । जब कि तब्लीगी जमाअत के हकीमुल उम्मत मुल्ला थानवी साहिब हुज़ूरे अक्दस के जुब्बा शरीफ के मुतअल्लिक यह ए'तेकाद रखते हैं कि **''इस में क्या रखा है ?''** हक्क और बातिल का फैसला नाज़िरीने किराम फरमाएं ।

इस बहस को तूल न देते हुए सिर्फ इतनी गुज़ारिश है कि अम्बिया-ए किराम और औलिया-ए इज़ाम के तबर्रुकात से फैज़ व बरकत हासिल करना ज़मान-ए कदीम से अब तक सुलहा, सहाबा, ताबेईन,तबए ताबेईन, औलिया, अइम्मा, उलमा वगैरा में राइज और मश्रूअ रहा है । कुरआन व अहादीस और कुतुबे मो'तबेरा में इस के वाफिर व कसीर दलाइल व शवाहिद मौजूद हैं । अह्ले ज़ौक हज़रात से इल्तिमास है कि कुरआन मजीद,पारह : 2, सूरए अल-बकरा की आयत नम्बर : 248, में ताबूते सकीना का बयान है, इस की तफ्सीर का मुतालआ फरमाएं ।

अब हम अपने मुअज़्ज़ज़ कारेईने किराम को मुल्के शाम के यर्मूक के मैदान में वापस ले चलते हैं,जहां जंगे यर्मूक के बारहवें दिन की जंग जारी है ।

हज़रत खालिद के हाथों बतरीक नस्तूर का कत्ल :-

घोड़े के ठोकर खाने की वजह से बतरीक नस्तूर को हज़रत खालिद पर वार करने का मौका' मिल गया और उस ने हज़रत खालिद की पुश्त पर तल्वार की ज़र्ब लगाई, लैकिन हज़रत खालिद ने लोहे की ज़िरह पहनी थी, लिहाज़ा तल्वार ने कुछ काम नहीं किया । हज़रत खालिद का घोड़ा भी ठोकर खा कर फौरन खड़ा हो गया, लैकिन इस दरमियान हज़रत खालिद की टोपी ज़मीन पर गिर गई । टोपी के गिरते ही हज़रत खालिद बे चैन व बे करार हो गए, क्यूं कि यह टोपी इन के लिये मता-ए हयात थी । **बल्कि यूं कहिये कि इस टोपी में हज़रत खालिद की जान थी । क्यूं कि इस टोपी में हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के मूए मुबारक थे ।** जिस की बरकत से हज़रत खालिद हर जंग में फतह याब होते थे । हज़रत खालिद ने बुलन्द आवाज़ से पुकारा कि मेरा ताज गिर गया है, इसे उठा लो । हज़रत खालिद के साथियों में से कौमे बनी मख्ज़ूम के एक मुजाहिद ने इन की पुकार सुन ली । उस मुजाहिद ने अपनी जान की परवाह किये बगैर, घमसान की लड़ाई में जहां घोड़ों की टापों के नीचे कुचल जाने का अंदेशा था, अपनी जान हथैली पे ले कर उन्हों ने हज़रत खालिद की टोपी ढूंढ निकाली और आप को पहुंचा दी ।

मुकद्दस गेसूओं वाली टोपी वापस मिल जाने पर हज़रत खालिद की जान में जान और दम में दम आया । हज़रत खालिद ने टोपी सर पर रखी और टोपी पर सुर्ख ''सरबन्द'' बांध कर, इसे दो-बारा गिरने से महफूज़ कर लिया । **यह मुकद्दस टोपी सर पर रखते ही हज़रत खालिद के अन्दर एक नया जौश पैदा हो गया, इन की जिस्मानी ताकत का यह आलम था कि बतरीक नस्तूर पर तल्वार का जो वार किया वह इत्ना शदीद था कि उस की लोहे की ज़िरह काट कर उस के जिस्म के दो टुक्ड़े कर डाले ।** रूमियों ने देखा कि हमारे लश्कर का अह्म रुक्न नस्तूर बतरीक दो हिस्सा हो कर ज़मीन पर मुर्दा पड़ा है, तो इन की हिम्मतें टूट गईं । कदम उखड़ गए और मैदाने कारज़ार से राहे फरार इख्तियार कर के कैम्प में पनाह लेनी चाही । हज़रत खालिद और इन के साथियों ने भागने वाले रूमी सिपाहियों का तआकुब किया और इन के सरों पर तलवारें चमकाईं और लाशों के अम्बार लगा दिये ।

हज़रत खालिद बिन वलीद ने इतनी कसरत से तल्वार चलाई थी कि इन के बाज़ू शल हो गए थे, मगर इस के बा-वुजूद भी इन्हों ने जेहाद का हक़ अदा कर दिया था। हज़रत अबू उबैदा ने आप को मुसल्सल तल्वार ज़नी की मशक़्क़त बरदाश्त करते हुए देख कर फरमाया कि ऐ अबू सुलैमान ! अब ज़रा तवक्कुफ करो ! तआकुब मत करो ! अपनी जान को थोड़ा आराम दो ! खुदा की कसम ! तुम ने आज जेहाद का हक़ अदा कर दिया है। हज़रत खालिद ने जवाब दिया कि ऐ सरदार ! अल्लाह तआला मेरी निय्यत जानता है। आज मेरी निय्यत यह है कि इस्लाम के दुश्मनों से लड़ते लड़ते शहीद हो जाउं। लिहाज़ा आज मुझे लड़ने से मत रोको। चुनान्चे हज़रत खालिद ने रूमी सिपाहियों का इन के कैम्प तक तआकुब किया और रूमी सिपाहियों का कत्ले आम कर के वापस आए। अल-मुख्तसर ! हज़रत खालिद बिन वलीद रदियल्लाहो तआला अन्हो दिन भर जंग करते रहे, आफ्ताब गुरूब होने के बा'द अपने कैम्प में वापस आए। जंगे यर्मूक के बारहवें दिन रूमी लश्कर के चालीस हज़ार (40,000) सिपाही कत्ल हुए।

रात के वक़्त इस्लामी लश्कर के कैम्प में ज़ख्मियों की मर्हम पट्टी करने के बा'द मुजाहिदों ने नमाज़ अदा की। फिर कुछ हज़रात इबादत में मश्गूल हो गए और बकिया दिन भर की थकन की वजह से बिस्तरे इस्तिराहत पर गए। इस्लामी लश्कर के कैम्प की निगेहबानी की ज़िम्मेदारी हज़रत अबू उबैदा ने अपने सर ली और वह रात के वक़्त चंद मुजाहिदों के हमराह कैम्प के इर्द गिर्द गश्त करते रहे। कुछ रात गुज़रने के बा'द हज़रत अबू उबैदा ने इस्लामी लश्कर के कैम्प के गिर्द दो घोड़े सवारों को देखा। हज़रत अबू उबैदा अपने साथियों के साथ इन की तरफ लपके, जब इन के दरमियान थोड़ा फास्ला रह गया तो ज़ौर से पुकारा **"ला इलाह इल्लल्लाह"**। इन दोनों सवारों ने बुलन्द आवाज़ से जवाब दिया **"मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"** (सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम)। हज़रत अबू उबैदा यह जवाब सुन कर इन के करीब गए तो मा'लूम हुवा कि वह दो सवार हज़रत ज़ुबैर बिन अल-अवाम और इन की ज़ौजा मोहतरमा हज़रत अस्मा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक हैं। हज़रत अबू उबैदा को बहुत तअज्जुब हुवा और फरमाया ऐ रसूले मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के फूफी ज़ाद भाई ! आप इस वक़्त यहां क्या कर रहे हैं ? हज़रत ज़ुबैर ने फरमाया कि मैं अपने खैमे में था कि मुझ से मेरी ज़ौजा अस्मा ने कहा कि आज इस्लामी लश्कर ने दिन भर बहुत मशक़्क़त उठाई है। हो सक्ता है कि आज की रात मुजाहिदीन गहरी नींद सौ

जाएं और कोई निगरानी पर मामूर न हो, मुबादा रात में दुश्मन हम्ला कर दें, लिहाज़ा हम ने इरादा किया कि इस्लामी लश्कर की निगेहबानी करनी चाहिये। पस हम लश्करे इस्लाम की पासबानी की गरज़ से घूम रहे हैं। हज़रत अबू उबैदा ने यह बात सुनी तो बहुत खुश हुए और इन का शुक्रिया अदा करते हुए कहा कि आप अपने खैमे में जा कर आराम करें, हम इस खिदमत को अन्जाम दे रहे हैं, लैकिन हज़रत ज़ुबैर न माने और रात भर अपनी ज़ौजा के हमराह कैम्प की निगेहबानी में गश्त करते रहे।

जंगे यर्मूक का तेरहवां दिन

अलस्सुब्ह चंद मुजाहिदीन हज़रत अबू उबैदा रदियल्लाहो तआला अन्हो के खैमे में आए और इत्तिला' दी कि एक रूमी अजनबी शख्स आप से मुलाकात का मुतमन्नि है और कहता है कि मुझे तुम्हारे सरदार से जंग के तअल्लुक से कुछ अहम और ज़रूरी गुफ्तगू करनी है। अगर आप इजाज़त दें तो हम उस शख्स को यहां ले आएं। हज़रत अबू उबैदा ने इजाज़त मरहमत फरमाई। चुनान्चे उस रूमी को हज़रत अबू उबैदा के पास लाया गया। वह रूमी शख्स हुमुस शहर का बाशिन्दा था और उस का नाम **"अबूल-जईद"** था।

हज़रत अबू उबैदा ने अबूल-जईद से कहा कि तुम क्या चाहते हो ? अबूल-जईद ने जवाब दिया मैं रूमियों से इन्तिकाम लेना चाहता हूं और एक ऐसी तर्कीब बताउंगा कि रूमी लश्कर के हज़ारों सिपाही एक साथ हलाक हो जाएंगे। अबूल-जईद ने मज़ीद कहा कि यर्मूक में रूमी लश्कर की ता'दाद बहुत कसीर है, गुज़िश्ता कल की तरह तुम रोज़ाना रूमियों को कत्ल करते रहोगे, तो भी तवील मुद्दत तक रूमी लश्कर खत्म न होगा। तुम इन को कत्ल करते करते थक जाओगे, फिर भी इन का लश्कर खत्म न होगा। लैकिन मेरी बताई हूई तर्कीब से इन के लश्कर का बहुत बड़ा हिस्सा तबाह व बरबाद हो जाएगा। हज़रत अबू उबैदा ने अबूल-जईद से दर्याफ्त फरमाया कि तुम रूमी हो कर भी रूमी लश्कर को क्यूं हलाक करना चाहते हो ? अबूल-जईद ने कहा कि रूमी लश्कर ने मेरे साथ बड़ा ज़ुल्म व सितम किया है और मेरी दुनिया उजाड़ी है। मेरी खुशियों का चमन लूटा है, इस लिये मेरे दिल में बदले की आग भड़क रही है और जब तक मैं इन से इन्तिकाम नहीं लूंगा, मुझे सुकून हासिल नहीं होगा। रूमियों ने मेरे साथ जो ज़ियादती की है, इस की दास्तान बहुत दर्दनाक है।

अबूल-जईद पर रूमी लश्कर के ज़ुल्म व सितम की दास्तान :-

अगर चे अबूल-जईद शहरे हुमुस का रहने वाला था, लैकिन इस ने शहर में रहने के बजाए वहां से कुछ फास्ले पर एक सरसब्ज़ व शादाब और पुर फज़ा मकाम में सुकूनत इख्तियार कर रखी थी। उस इलाका में उस ने अपना खैत खरीदा था और खैत में ही उस ने रिहाइश के लिये उमदा मकान ता'मीर किया था। उस के खैत में फलदार दरख्त, फूल और

बागात वगैरा कसरत से थे। लहलहाते बागों के दरमियान रूह अफ्ज़ा आब व हवा और खुशगवार माहौल में वह अपने कबीला के साथ रहता था। उस का खैत भी बहुत ही वसीअ था। उस का खैत हुमुस से यर्मूक की तरफ जाने वाली शाहराह पर वाकेअ था।

हिरक्ल बादशाह की मुनादी पर मुल्के शाम के तमाम लश्कर जब यर्मूक जा रहे थे, तो एक लश्कर राह में अबूल-जईद के खैत के करीब से गुज़रा। शाम का वक्त था। अबूल-जईद अपने खैत से मज़दूरों के साथ शाहराह पर आया और रूमी लश्कर का बहुत ही शानदार इस्तिक्बाल किया और लश्कर के सरदारों से कहा कि आज रात का खाना मेरे यहां खाएं और ब-हैसियते मेहमान मेरे खैत पर ठहरें और मुझ को मेहमान नवाज़ी का मौका' दें। सुब्ह आप को ब-खूशी रुखसत कर दूंगा। रूमी लश्कर कई दिन की मसाफत तय करने के बाइस थक चुका था और इन को आराम की ख्वाहिश थी, अबूल-जईद ने जब बहुत इस्रार किया, तो रूमी लश्कर अबूल-जईद के खैत से मुत्तसिल वसीअ मैदान में ठहर गया। अबूल-जईद ने बेहतरीन खाने, मेवे, फल और दीगर अश्या-ए खुर्द व नौश से उमदा ज़ियाफत की और खातिरदारी व मेहमां नवाज़ी का पूरा हक्क अदा किया। अबूल-जईद की बीवी निहायत ही हसीन व जमील और जवान थी। रंग व रूप में हुस्न की परी मा'लूम होती थी। वह भी अपने शौहर का हाथ बटाते हुए मेहमानों की खातिर तवाज़ोअ करने में लगी थी। रूमी लश्कर के सरदार अबूल-जईद की बीवी का हुस्न व जमाल देख कर फरेफ्ता हो गए और दिल ही दिल में उस को हासिल करने के मन्सूबे बनाने लगे। रूमी लश्कर के तमाम सरदारों की आंख में अबूल-जईद की बीवी समा गई थी और वह उस को अपनी हवस का शिकार बनाने के दर पै हो गए।

सरदारों के खैमे अबूल-जईद के मकान से करीब नसब थे। आधी शब में रूमी सरदारों ने आदमी भेज कर अबूल-जईद को खैमे में बुलाया। अबूल-जईद फौरन आया और मेहमानों से कहा कि कोई खिदमत हो तो हुक्म फरमाएं। लश्कर के सरदारों ने कहा कि अपनी बीवी को हमारी दिल लगी करने भेजो। तुम्हारी मेहमान नवाज़ी से हम बहुत खुश हैं। तुम ने हमारी बहुत ही खातिर तवाज़ोअ की है, सिर्फ एक कमी रह गई है, लिहाज़ा वह भी पूरी कर दो। आज की रात अपनी बीवी को हमारे बिस्तर गरमाने के लिये भेज दो। रूमी सरदारों की फरमाइश सुन कर अबूल-जईद चौंक गया और उस ने शरीफाना अन्दाज़ में साफ इन्कार कर दिया, लैकिन रूमी सरदार शराब के नशे में शबाब के बेहद ख्वास्तगार थे, उन्हों ने इस्रार जारी रखा, तो अबूल-जईद शरीफाना अन्दाज़ छोड़ कर तुन्द लहजे में गुफ्तगू पर उतर आया और

बात बढ़ती हूई तू तू, मैं मैं से तजावुज़ कर के फहश कलामी और गाली गलोच तक पहुंच गई। अबूल-जईद इन को सात पुश्तों की खरी खरी सुना कर अपने मकान वापस लौट गया। लेकिन शराब के नशे में धुत रूमी लश्कर के सरदारों के सरों पर शहवत का शैतान सवार था। वह चंद सिपाहियों को ले कर ज़बरदस्ती अबूल-जईद के मकान में घुस गए। अबूल-जईद को सिपाहियों के हवाले कर के हुक्म दिया कि इस को बाहर मत निकलने देना और यहीं रोक रखना। फिर वह अबूल-जईद की बीवी को जबरन उठा कर अपने खैमे में लाए। रात भर तमाम रूमी सरदारों ने अबूल-जईद की बीवी की इजतेमाई आबरू रैज़ी की।

अबूल-जईद की बीवी तड़पती और चीखती थी, लेकिन इस के साथ जिन्सी ज़ुल्म व ज़ियादती का सिल्सिला सुब्ह तक जारी रहा। अपनी बीवी की गाहे गाहे दर्द भरी फर्याद सुन कर अबूल-जईद तड़प उठता था और अपनी बीवी को दरिन्दों के पन्जों से छुड़ाने के लिये बे चैन व बेकरार हो जाता था, लैकिन वह मजबूर था। रूमी सिपाहियों ने उसे दबोच रखा था। वह तने तन्हा कर भी क्या सक्ता था? फिर भी मौका' पा कर इस ने रूमी सिपाहियों के हाथों से भागने की कौशिश की, लैकिन नाकाम रहा। अबूल-जईद की इस हर्कत से रूमी सिपाही खशमनाक हुए और अबूल-जईद का कमसिन लड़का वहीं मौजूद था। गुस्से में उस का सर काट डाला। अपनी नज़र के सामने अपने इकलोते लख्ते जिगर को बे रहमी से कत्ल होता देख कर अबूल-जईद बे हौश हो गया। जब हौश आया तो सुब्ह हो चुकी थी। कमरा खाली था। अबूल-जईद और उस का मक्तूल बेटा पड़ा हुवा था। अबूल-जईद अपने लख्ते जिगर की लाश से लिपट कर फूट फूट कर रोने लगा।

सरदारों ने सुब्ह तक अबूल-जईद की बीवी का नाज़ुक जिस्म जी भर कर रौंदा। जब सुब्ह नमूदार हो गई और उजाला फैलने को हुवा, तब उस बेचारी को रिहाई मिली। लड़खड़ाती, घिसटती हूई बड़ी मुश्किल से अपने मकान में आई, तो क्या देखती है कि उस का नूरे चश्म फर्श पर मुर्दा पड़ा हुवा है और उस का शौहर पागलों की तरह दीवार पर सर पटक पटक कर वावेला मचा रहा है। अबूल-जईद की बीवी की आंखों तले अंधेरा छा गया। उस का कलेजा मुंह को आ गया। अपने घर में यह हौलनाक मन्ज़र देख कर उस पर थर थर्राहट तारी हो गई। थोड़ी दैर के लिये वह अपना दर्द दुख भूल गई और अपने लख्ते जिगर के फिराक और अपने शौहर की खस्ता हालत देख कर गम के दरिया में गर्क हो गई। इस ने देखा कि रूमी लश्कर कूच कर रहा है। इसे क्या सूझी कि उस ने अपने बेटे का कटा हुवा सर उठाया और रूमी लश्कर के सरदारों के सामने खड़ी हो गई और पुकार पुकार कर

कहने लगी कि ऐ ज़ालिमो! तुम ने मेरे साथ जो किया सौ किया, लैकिन इस छोटे बच्चे ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था कि तुम ने बे रहमी और बे दर्दी से इस को कत्ल कर दिया। रूमी लश्कर उस वक्त यर्मूक की जानिब कूच करने की तैयारी में मस्रूफ था और एक अजीब शौर व गुल बुलन्द हो रहा था, लिहाज़ा अबूल-जईद की बीवी की आह व बुका जिस तरह नक्कार खाना में तूती की आवाज़ दब कर रह जाती है, इसी तरह दब कर रह गई। किसी भी रूमी सरदार को नज़्रे इल्तिफात करने की फुर्सत न थी और न ही उन्हों ने इसे ज़रूरी जाना, बल्कि तोता चश्मी करते हुए मत्लब की घात चल दिये।

अबूल-जईद की बीवी ने रूमी लश्कर के सरदारों को संग दिली से मुंह फैर कर जाते देखा तो चींख कर कहा कि **"कसम खुदा की! तुम को तुम्हारे ज़ुल्म का बदला मिलेगा। अरब तुम पर गालिब आ जाएंगे और तुम को हलाक कर देंगे"**। यह जुम्ला मुसल्सल कहती थी और दिल की गहराई से इन के हक्क में बद-दुआ करती थी। जब तक रूमी लश्कर नज़्रों से ओझल न हुवा यह रोती पीटती रही और बद-दुआ देती रही, यहां तक कि उस पर गशी तारी हो गई। अबूल-जईद और उस की बीवी पर ज़ुल्म व सितम ढाने वाले रूमी सरदारों में बतरीक नस्तूर भी शामिल था। जिस को कल हज़रत खालिद ने कत्ल किया था।

मज़्कूरा वाकेआ को चंद दिन ही गुज़्रे थे कि अबूल-जईद की बीवी की अस्मत दरी करने वाले रूमी सरदारों में से बहुत से मकामे यर्मूक में मुजाहिदों की तलवारों से हलाक हो गए। बतरीक नस्तूर भी हज़रत खालिद बिन वलीद के हाथों कत्ल हुवा। इस के कत्ल होने के दूसरे दिन ही अबूल-जईद इस्लामी लश्कर के सिपेह सालारे आज़म हज़रत अबू उबैदा की खिदमत में हाज़िर हुवा था, लैकिन अभी तक उस के दिल में इन्तिकाम की आग शौ'ला ज़न थी। अबूल-जईद ने हज़रत अबू उबैदा से दरख्वास्त की कि मुझ को हमेंशा के लिये मअ अह्लो अयाल अमान दी जाए और मुझ से कभी भी जिज़्या न लिया जाए और इस अह्द व पैमान की मुझे तहरीरी दस्तावेज़ दी जाए तो मैं रूमी लश्कर को कुल्लियतन हलाक करने की तद्बीर अमल में लाउं। हज़रत अबू उबैदा ने उस की दरख्वास्त को शरफे कबूलियत से नवाज़ा, अमान देने और जिज़्या दाइमी तौर पर न लेने की दस्तावेज़ लिख दी। फिर हज़रत अबू उबैदा ने अबूल-जईद से दर्याफ्त किया कि तुम्हारी स्कीम क्या है?

अबूल-जईद का फरैब दे कर रूमी लश्कर को नदी में गर्क करना :-

अबूल-जईद ने हज़रत अबू उबैदा से कहा कि ऐ सरदार ! रूमी लश्कर के थोड़े ही फास्ले पर फौज का दूसरा कैम्प वाकेअ है और मैं उस में अहम रुक्न की हैसियत से शामिल हूं। रूमी और इस्लामी लश्कर के कैम्पों के दरमियान **"याकूसा"** नाम की नदी हाइल है। यह नदी बहुत ही गहरी और तैज़ बहने वाली है। रूमी लश्कर के कैम्प के आगे इस नदी का मोड़ इस तरह वाकेअ है कि वह आप के लश्कर के कैम्प के दरमियान हाइल होती है और इस हकीकत से तमाम रूमी बे-खबर और गाफिल हैं, लिहाज़ा आप मेरे साथ पांच सौ मुजाहिदों को शाम के वक्त भेज दीजिए, जिन को में रूमी लश्कर के कैम्पों के करीब वाकेअ घनी झाड़ी में छुपा दूं, फिर में लश्कर के कैम्प में चला जाउं और इन से यह कहूं कि इस्लामी लश्कर रात में फरार होने वाला है और यह भी मुम्किन है कि रात में मुसल्मानों का लश्कर हम पर हम्ला कर दे। इस तरह झूटी खबरें दे कर मैं इन को वर्गलाउंगा। जब रात की तारीकी फैल जाए और घटा टोप अंधेरा छा जाए, तब आप अपने कैम्प में हज़ारों मश्अलें रौशन करना। मश्अलें रौशन होते ही मैं रूमी लश्कर से कहूंगा कि देखो मुसल्मान भागने की तैयारी कर रहे हैं। फिर थोड़े वक्फे के बा'द झाड़ी में छुपे हुए पांच सौ मुसल्लह सवार रूमी कैम्प पर हम्ला कर दें। थोड़ी दैर वह लड़ें और फिर दफ्अतन हज़ीमत उठा कर भागें, लैकिन तमाम के तमाम उसी सम्त भागें जिधर मश्अलें जलती दिखाई दें। थोड़ा फास्ला सीधी लाइन में भाग कर तय करें और फिर बाएं हाथ की जानिब मुड़ जाएं, वहां पर दरख्तों की झाड़ी है, इस में पोशीदह हो जाएं। मैं रूमी लश्कर को सामने की सम्त तआकुब करने के लिये तैज़ रफ्तारी से घोड़े दौड़ाने की तर्गीब दूंगा। रात का अंधेरा और दूर से हज़ारों जलती मश्अलें देखने की वजह से इन को बीच में हाइल याकूसा नदी नज़र न आएगी और वह तमाम नदी में गिर जाएंगे। इलावा अज़ीं वह जहां से नदी में गिरेंगे वह जगह काफी बुलन्द है और नदी गहरी सतह ज़मीन पर बहती है, लिहाज़ा बुलन्दी से घोड़े समेत गिरने की वजह से इन को शदीद चोटें आएंगी और वह पानी में तेरने के भी काबिल न रहेंगे और गहरी नदी में गर्क हो कर हलाक हो जाएंगे।

हज़रत अबू उबैदा ने अबूल-जईद की तज्वीज़ को पसन्द फरमाया और शाम के वक्त उस के साथ पांच सौ (५००) शुजाअ शेहसवारों को रवाना किया। अबूल-जईद के साथ जो पांच सौ मुजाहिद गए थे इन में (1) हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर (2) हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र (3) हज़रत अयाज़ बिन गनम बिन तारिक हिलाली (4) हज़रत राफे बिन उमैरा ताई (5) हज़रत अब्दुल्लाह बिन कर्त (6) हज़रत अब्दुल्लाह बिन यासर (7) हज़रत

अब्दुल्लाह बिन औस (8) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर बिन खत्ताब (9) हज़रत गानिम बिन अब्दुल्लाह लैसी वगैरा रोउसा-ए लश्करे इस्लाम शामिल थे। इन पांच सौ मुजाहिदों को अबूल-जईद दरमियान से जाने वाले खुफिया रास्ता से ले गया और रूमी लश्कर के कैम्प नम्बर 2 के करीब वाकेअ घने दरख्तों की झाड़ी में छुपा दिया। फिर अबूल-जईद रूमी लश्कर के कैम्प नम्बर 2 में आया और लश्कर के सरदारों से कहा कि मुझे इत्तिला' मिली है कि मुसल्मानों का लश्कर निस्फ शब के वक्त भाग निकलने वाला है और एक खबर यह भी है कि रात के वक्त वह हम पर हम्ला करने वाले हैं। इस तरह अबूल-जईद ने रूमी लश्कर को उक्साया और मुश्तइल कर दिया।

जब रात की तारीकी बिल्कुल फैल गई तो हज़रत अबू उबैदा ने मुजाहिदों को हुक्म दिया कि लश्कर में जितनी ज़ियादह हो सके मश्अलें रौशन कर दो,चुनान्चे सब मुजाहिद मश्अलें रौशन करने में लग गए और थोड़ी दैर में ही तक़्रीबन दस हज़ार मश्अलें जल उठीं। एक साथ इतनी कसीर ता'दाद में मश्अलें रौशन होने की वजह से दूर तक इस की रौशनी नज़र आने लगी। रूमी लश्कर के कैम्प के करीब झाड़ी में छुपे हुए मुजाहिदों ने इस्लामी लश्कर के कैम्प में मश्अलें रौशन होती हूई देखीं तो प्लान के मुताबिक वह झाड़ी से निकले और रूमी लश्कर के कैम्प पर हम्ला कर दिया। हालां कि उन को अंदेशा था कि रात में मुसल्मान हम्ला करेंगे मगर फिर भी शराब के नशे में धुत हो कर पड़े थे। और अक्सर इन में से गहरी नींद में पड़े हुए थे। मुजाहिदों का हम्ला तो सिर्फ एक गरदावा था। इस बहाने वह रूमी लश्कर को मुश्तइल करना चाहते थे। मुजाहिदों ने हम्ला किया और रूमी अपने हथियारों और घोड़ों की तरफ दौड़े। इतनी दैर में तो वह भागे और रूमियों को ऐसा महसूस हुवा कि वह हज़ीमत उठा कर भाग गए। लिहाज़ा वह कैम्प के किनारे रुक गए लैकिन अबूल-जईद ने पुकार कर कहा कि देखो ! मुसल्मानों के लश्कर में एक साथ हज़ारों मश्अलें रौशन हूई हैं और वह लोग भागने की तैयारी कर रहे हैं। मेरी दोनों इत्तिला' सहीह हैं। हम्ला करने की इत्तिला' आई थी सौ हम्ला हुवा, लैकिन हमारे डर से वह भाग गए। लिहाज़ा इस्लामी लश्कर के कूच कर जाने की जो इत्तिला' मिली है वह भी सहीह है। वह लोग भाग रहे हैं वर्ना इस वक्त आधी शब गुज़रने के बा'द इतनी मश्अलें रौशन करने का क्या मत्लब है ? लिहाज़ा मेरी राए यह है कि हम हम्ला कर के भाग जाने वालों के तआकुब में तैज़ रफ्तारी से जाएं और इन को राह में ही पालें और खत्म कर दें और फिर इस्लामी लश्कर के कैम्प पर धावा बोल दें। वह लोग कूच करने की तैयारी में मस्रूफ होंगे और हमारे अचानक हम्ला से गाफिल और बे-खबर होंगे, लिहाज़ा वह बे तर्तीब और बिला हथियार होंगे और हम इन पर दफ्अतन जा पड़ेंगे और इन का सफाया कर देंगे।

अबूल–जईद ने यह बात ऐसे जोशीले अन्दाज़ में कही थी कि रूमी लश्कर को जौश आ गया और तमाम लश्कर घोड़ों पर सवार हो कर रवाना हुवा। हम्ला कर के भागने वाले मुजाहिदीन और इन के तआकुब के लिये रवाना होने वाले रूमी लश्कर के दरमियान इतने वक्त का अबूल–जईद ने वक्फा कर दिया था कि भागने वाले मुजाहिदीन बहुत आगे निकल गए। मुजाहिदीन बर्क रफ्तारी से कुछ फास्ला तक इस्लामी लश्कर के कैम्प की सम्त भागे और फिर बाएं तरफ मुड़ गए और वहां पर वाकेअ दरख्तों की झाड़ी में छुप गए। रूमी लश्कर के सिपाही इस गुमान में थे कि मुजाहिदीन सामने की जानिब भाग रहे हैं, लिहाज़ा तआकुब करते हुए अपने घोड़ों की रफ्तार तैज़ से तैज़ तर करते जा रहे थे। अबूल–जईद भी इन के साथ थोड़े फास्ला तक गया और फिर ठहर गया और एक किनारे खड़ा हो कर अपने पीछे से आने वालों को पुकार पुकार कर कहने लगा कि ऐ बहादुर सिपाहियों ! मुसल्मान अपने कैम्प की तरफ भागे जा रहे हैं। अपने घोड़ों की रफ्तार तैज़ करो और इन को पकड़ कर खत्म कर दो। अबूल–जईद ने इस तरह तर्गीब दे दे कर तमाम सवारों को अंधा धुन्द घोड़े दौड़ाने पर मुस्तइद कर दिया। रूमी सिपाही अपने घोड़े को एडी मार कर रफ्तार की तैज़ी बढ़ा रहे थे।

तमाम रूमी सिपाही अंधेरे में बे तहाशा घोड़े दौड़ा रहे थे। दूर से इस्लामी लश्कर के कैम्प में हज़ारों मश्अलें जलती दिखाई देती थीं। उस की सम्त नज़र जमा कर आगे बढ़ रहे थे। आगे का रास्ता बिल्कुल नज़र नहीं आता था। सिर्फ मश्अलें नज़र आती थीं। और अब याकूसा नदी करीब आ गई, लैकिन किसी को वहमो गुमान नहीं था कि दरमियान में खतर नाक नदी हाइल है। सब यही समझते थे कि इस्लामी लश्कर के कैम्प तक चटियल मैदान और सपाट सतह ज़मीन है कि अचानक सफे अव्वल के तमाम घोड़े सवारों समेत बुलन्दी से नदी में गिरे। इन पर दूसरी सफ वाले गिरे। दूसरी सफ पर तीसरी सफ वाले गिरे। अल–गरज़ हर सफ पर इस के पीछे की सफ गिरती थी और अगली सफ वाले दब कर नदी में गर्क हो कर हलाक होते जाते थे। पीछे से आने वाले को कोई खबर न थी कि आगे क्या हो रहा है। हर रूमी सिपाही जल्द अज़ जल्द इस्लामी कैम्प तक पहुंच कर हम्ला करने के इरादे से तैज़ रफ्तारी से घोड़ा दौड़ाता हुवा आता था और नदी में गिर कर अपने आगे वालों पर घोड़े समेत जा पड़ता था और उस पर उस के पीछे वाले आ पड़ते थे, चुनान्चे वह अपने आगे वालों को हलाक कर देता था और उस को उस के पीछे वाला हलाक कर देता था।

रात भर रूमी सिपाहियों का मअ अपनी सवारी "याकूसा" नदी में गिरने का सिल्सिला जारी रहा। नदी का पानी बहुत ही गहरा था और पानी का बहाव भी इत्ना तैज़

था कि जो भी उस में गिरता था नदी का पानी उस को बहा ले जाता था। कारेईने किराम की ज़ियाफते तबअ की खातिर ज़ैल में जो नक्शा दर्ज है, इस को ब–गौर देखने से मा'लूम होगा कि अबूल–जईद ने किस तरह रूमी लश्कर को चक्मा दे कर गर्के दरिया कर दिया :
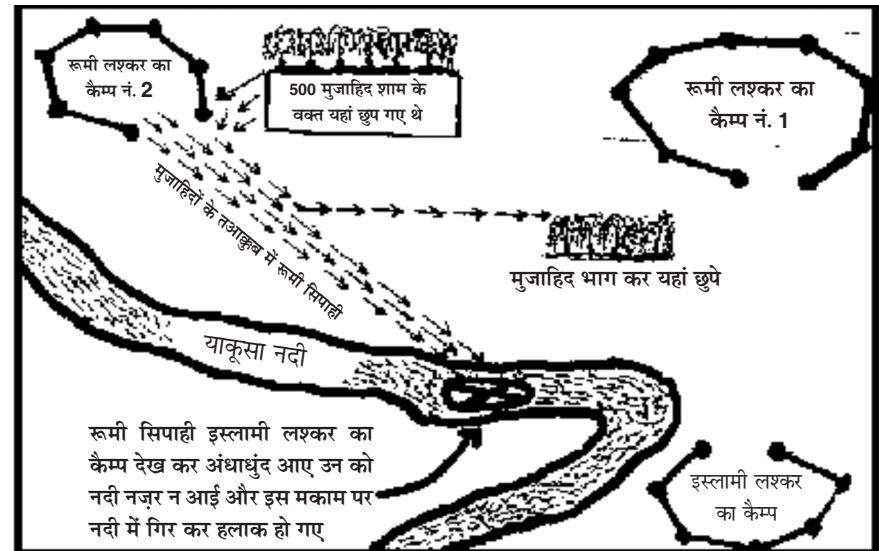
जब सुब्ह हूई तो लोगों ने देखा कि याकूसा नदी रूमी लश्कर के सिपाहियों और घोड़ों की लाशों से लबरेज़ है बल्कि याकूसा नदी के दोनों किनारों पर मीलों तक लाशें ही लाशें बिखरी पड़ी थीं और हर तरफ चील, कव्वे और गिध व दीगर मुर्दा खोर परिन्दे और दरिन्दे लाशों पर मंडला कर ज़ियाफत उड़ा रहे हैं। किसी ने पूछा कि कौन शख्स था जिस ने हम को पुकार कर अरबों का तआकुब करने पर उभारा था ? जवाब मिला कि वही अबूल–जईद था जिस की बीवी की रूमी लश्कर के सरदारों ने अस्मत दरी की थी और उस के इकलोते बेटे को बे रहमी से कत्ल किया था। उसी ने अपने ऊपर हुए ज़ुल्म व सितम का तुम्हारे साथ मक्रो फरैब कर के अच्छी तरह बदला ले लिया। रूमियों ने अबूल–जईद की तलाश शुरू की ताकि इस को कत्ल कर दें, लैकिन अबूल–जईद तो अपना मक्सदे इन्तिकाम पूरा कर के सुब्ह होने से पहले ही रफू चक्कर हो गया था।

जंगे यर्मूक का चौदहवां दिन और इस्लामी लश्कर की फतहे अज़ीम

सुब्ह रूमी लश्कर के सिपेह सालारे आज़म बाहान अरमनी को रात के हादसे की इत्तिला' मिली, तो उस का हौसला टूट गया और मायूस हो कर कहा कि मेरा गुमान है कि सलीब हमारी मदद नहीं करती और अन्करीब अरब हम पर गालिब आ जाएंगे। बाहान को अब अपनी जान की फिक्र दामनगीर थी, लिहाज़ा उस ने रूमी लश्कर के सरदार और हिरक्ल बादशाह के भान्जे कौरीर को मश्वरा के लिये अपने खैमे में बुलाया। कौरीर से बाहान ने रात के हादसे का ज़िक्र किया और इस की वजह दर्याफ्त की तो कौरीर ने बाहान से कहा कि हमारे लश्कर के सरदार ने अबूल-जईद पर जो ज़ुल्म व सितम किया था इस का इन्तिकाम लेने की गरज़ से उस ने साज़िश कर के हमारे हज़ारों शेहसवारों को हलाक कर दिया है। बाहान ने कहा कि लोगों को इस वक्त भी अय्याशी की सूझती है जब कि हमारी बका और फना का सवाल है। हम अपनी इन बदकारियों की वजह से ही ज़िल्लत व शिकस्त से दो चार होते हैं। मुझे अब फतेहयाबी की कोई उम्मीद नहीं है। यह अरब हम पर ज़रूर गालिब आ जाएंगे। अगर हम इन पर सब मिल कर एक साथ हम्ला करेंगे तब भी हम को गल्बा हासिल नहीं होगा बल्कि हमारे पूरे लश्कर का सफाया हो जाएगा। मेरी राए यह है कि हम जंग मौकूफ कर दें और अरबों से सुलह कर लें, वर्ना मेरी और तुम्हारी जान भी खतरे में है। मैं ने तुम को यहां इस लिये बुलाया है कि तुम हिरक्ल बादशाह के भान्जे और इन के मो'तमद हो। लिहाज़ा मैं सुलह का कदम उठाने से पहले तुम्हारी राए जान लूं ताकि कल हिरक्ल बादशाह का मुझ पर इताब न हो। कौरीर ने कहा कि तुम जो मुनासिब समझो करो, मैं तुम्हारे हर फैसला से मुत्तफिक हूं। बाहान ने कहा कि हम चंद दिनों के लिये जंग मौकूफ कर दें और कोई ऐसी तद्बीर सोचें कि हमारी जानें बच सकें।

बाहान ने कौमे लख्म के एक नस्रानी अरब को हज़रत अबू उबैदा के पास ब-तौरे एलची भेजा। बाहान के एलची ने हज़रत अबू उबैदा से कहा कि गुज़िश्ता शब जो हादसा हुवा है, इस की वजह से हमारे हज़ारों सिपाही हलाक हो गए हैं और इन की लाशें मीलों में

मुतफर्रिक पड़ी हूई हैं। इन की तजहीज़ व तक्फीन का हमारे लिये बहुत बड़ा मस्अला खड़ा हो गया है, लिहाज़ा हमारे लश्कर के सरदार आप से दरख्वास्त करते हैं कि अगर आज जंग मौकूफ रखी जाए तो हम अपने मुर्दों को अव्वल मन्ज़िल पहुंचाने का काम अन्जाम दे दें। गुज़िश्ता कल दिन भर जंग करने की वजह से तमाम मुजाहिद भी काफी थक चुके थे और इन को भी आराम की सख्त ज़रूरत थी लिहाज़ा हज़रत अबू उबैदा बाहान की दरख्वास्त मन्ज़ूर फरमाने का इरादा करते थे, लैकिन हज़रत खालिद बिन वलीद ने मना' करते हुए कहा कि ऐ सरदार ! इन की दरख्वास्त रद्द फरमा दें, क्यूं कि जंग मौकूफ करना हमारे हक्क में बेहतर नहीं। इस वक्त रूमियों के हौसले पस्त हैं और हमारे लश्कर के मुजाहिदों में नया जौशो खरौश पैदा हो गया है, लिहाज़ा जंग मौकूफ करने में हमारा नुक्सान और रूमियों का फाइदा है, लिहाज़ा मेरी आप से मुअद्दबाना अर्ज़ है कि जंग मौकूफ करने की दरख्वास्त ना-मन्ज़ूर फरमाएं। हज़रत अबू उबैदा ने बाहान के कासिद से फरमाया कि बाहान से कहना कि हम तुम्हारी दरख्वास्त पर जंग मौकूफ नहीं कर सक्ते। हम को और बहुत सारे काम हैं, मज़ीद ताखीर करना हमारे लिये मुनासिब नहीं। हम थोड़ी देर बा'द मा'रकए जंग में आते हैं, बाहान से कहना कि वह भी अपना लश्कर जल्द मैदान में भेजे।

बाहान का एलची खाइब व खासिर अपना सा मुंह ले कर बाहान के पास लौटा और कहा मुसल्मानों का लश्कर मैदाने जंग की तरफ रवाना हो रहा है। बाहान ने कहा कि आज मैं बज़ाते खुद मा'रकए जंग में जाउंगा। चुनान्चे उस ने रूमी लश्कर को मैदान की जानिब कूच करने का हुक्म दिया। बाहान ने रूमी लश्कर के तमाम सरदार, बतरीक, राहिब वगैरा को अपने साथ लिया और बड़े कर्रो फर्र के साथ मैदान में आया। नस्रानी पादरी का एक गिरोह इन्जीलें उठाए उस के इर्द गिर्द था। सलीब को नुमाया तौर पर बुलन्द किया गया था और इन्जील की आयतें पढ़ते और धूनी देते हुए उस की काम्याबी की दुआएं मांग रहे थे। मैदान में आते ही बाहान ने अपने लश्कर को सफ बस्ता कर के मुरत्तब किया।

हज़रत अबू उबैदा भी इस्लामी लश्कर को ले कर मैदान में आ गए। उन्हों ने और हज़रत खालिद ने बहुत ही सुरअत से लश्कर की सफ बन्दी और तर्तीब का काम अन्जाम दिया। फिर हज़रत अबू उबैदा और हज़रत खालिद सफों के दरमियान गश्त करते थे और जेहाद की फज़ीलत बयान कर के मुजाहिदों को तर्गीब देते थे।

❀ रूमी सरदार जर्जीर और हज़रत अबू उबैदा के दरमियान जंग :-

रूमी लश्कर की जानिब से बाहान ने सरदार जर्जीर को मैदान में उतारा। जर्जीर

मुल्के शाम के बादशाहों में से था, लिहाज़ा वह शाहाना शान व शौकत से मैदान में आया। मैदान में आ कर उस ने बुलन्द आवाज़ से कहा कि मेरे मुकाबला में तुम्हारे सरदार के इलावा कोई न आए। मैं तुम्हारे सरदार को मुकाबला के लिये तलब करता हूं। हज़रत अबू उबैदा ने जर्जीर की मुबारेज़त तलबी समाअत फरमाई तो इन के हाथ में जो निशान था वह हज़रत खालिद को सुपुर्द किया और फरमाया कि ऐ अबू सुलैमान ! अगर मैं इस लड़ाई से ज़िन्दा वापस आया तो तुम से अलम वापस ले लूंगा और अगर शहीद हो जाउं तो तुम सरदारी के मुतकफ्फिल रहना, क्यूं कि तुम ही सरदारी के मुस्तहिक हो। हज़रत खालिद ने कहा कि ऐ सरदार ! आप ज़हमत मत उठाओ और मुझ को इस गबर के मुकाबला के लिये जाने की इजाज़त अता फरमाओ। हज़रत अबू उबैदा ज़ईफुल उमर बुज़ुर्ग शख्स थे। इलावा अज़ीं शब में कसरत से इबादत व रियाज़त और दिन में रोज़ा रखने की वजह से बहुत ही नहीफ जिस्म थे। और इन के मुकाबिल जर्जीर का जिस्म कवी और भारी भरकम था, लिहाज़ा हज़रत खालिद और तमाम मुसल्मानों ने हज़रत अबू उबैदा को मुकाबला के लिये जाने से रोका और बहुत ही मिन्नत समाजत कर के अपना इरादा तर्क कर देने की गुज़ारिश की। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि दुश्मन मुझ को तलब कर रहा है और मैं न जाउं यह कितनी शर्म की बात है। आज अगर मैं इस के मुकाबले के लिये न निकला, तो यह अम्र लश्करे इस्लाम के लिये बाइसे नन्ग व आर है। ऐ अबू सुलैमान ! तुम हमेंशा शहादत की तमन्ना करते हो, तो मैं इस रुत्बा को क्यूं न चाहूं ? लिहाज़ा मुझे मत रोको और जाने दो।

हज़रत अबू उबैदा मैदान में आए और अपने घोड़े को गरदावा दिया और जर्जीर के करीब आए। जर्जीर ने जब हज़रत अबू उबैदा का दुबला जिस्म देखा तो हैरत से पूछा कि तुम ही मुसल्मानों के सरदार हो ? हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि मुसल्मान मुझे अपना सरदार समझते हैं, हालां कि मैं इन का भाई हूं। जर्जीर ने कहा कि मेरा गुमान तो यह था कि मुसल्मानों का सरदार कवी हैकल और कद आवर जवान होगा। अगर मुझे मा'लूम होता कि इस्लामी लश्कर का सरदार तुम्हारे जैसा बुड्ढा शख्स है तो मैं मुकाबला के लिये सरदार को तलब न करता। लिहाज़ा तुम वापस लौट जाओ और किसी जवान को मेरे मुकाबला में भेजो। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि हम जिस्मानी ताकत के बल बूते पर कभी नहीं लड़ते, बल्कि हमारा दार व मदार कुव्वते ईमानी पर होता है और अपने ईमान की कुव्वत पर ए'तमाद कर के मैं तुझे कत्ल करने आया हूं और तेरे बा'द बाहान को भी कत्ल करूंगा। हज़रत अबू उबैदा का दन्दान शिकन जवाब सुन कर जर्जीर खशमनाक हुवा और तैश में आ कर हज़रत अबू उबैदा पर तल्वार का वार किया। हज़रत अबू उबैदा पहले

से ही चौकन्ना और मोहतात थे,उन्हों ने वार चुका दिया और बाज़गश्त वार किया। जिस को जर्जीर ने सिपर पर ले कर बचाया। दोनों में कसरत से तल्वार ज़नी होती रही। जर्जीर ने यह गुमान किया था कि हज़रत अबू उबैदा ज़ियादह दैर तक नहीं लड़ सकेंगे और थक जाएंगे, लैकिन हज़रत अबू उबैदा ने सबात कदमी का मुज़ाहिरा करते हुए शम्शीर ज़नी के वह जौहर दिखाए कि जर्जीर भी अंगुश्त ब-दन्दां था। हज़रत खालिद बिन वलीद टुक्टुकी बांध कर हज़रत अबू उबैदा को देख रहे थे। वह इन के लिये बेहद फिक्र मन्द और परेशान थे और इन की हिफाज़त व सलामती की दुआ मांगते थे, बल्कि तमाम मुजाहिदीन अपने मोहतरम व मुअज़्ज़ज़ सरदार के लिये बे-चैन व बे-करार थे और बारगाहे खुदावन्दी में इन की नुस्रत व आफियत की दुआ करते थे। दोनों की लड़ाई ने तूल पकड़ा। दोनों लश्कर के लोग महवे हैरत हो कर दोनों की जंगी फनकारी देख रहे थे। जर्जीर अब लड़ते लड़ते थक गया था, लैकिन हज़रत अबू उबैदा को थकन का नाम व निशान तक न था। जर्जीर ने अब मक्रो फरैब की राह इख्तियार की और लड़ाई छोड़ कर रूमी लश्कर की तरफ भागा। हज़रत अबू उबैदा ने उस का तआकुब किया, लैकिन थोड़े फास्ला तक भागने के बा'द जर्जीर ने दफ्अतन अपने घोड़े की बाग फैरी और बिजली की सुरअत से वह हज़रत अबू उबैदा की तरफ पलटा। हाथ में तल्वार बुलन्द कर के बर्क रफ्तारी से घोड़ा दौड़ाता हुवा हज़रत अबू उबैदा की तरफ आया ताकि तल्वार का वार हज़रत अबू उबैदा की गर्दन पर लगे। जैसे ही उस ने करीब आ कर वार किया हज़रत अबू उबैदा झुक गए और झुकने की हालत में वार करने में सब्कत ले गए। जर्जीर का वार हज़रत अबू उबैदा के सर के ऊपर से खाली गुज़रा, लैकिन हज़रत अबू उबैदा की तल्वार ने जर्जीर को एक शाना से दूसरे शाना तक काट कर रख दिया और वह कुश्ता हो कर ज़मीन पर मुर्दा गिरा। जर्जीर के कत्ल होते ही हज़रत अबू उबैदा ने तक्बीर कही और मुजाहिदों ने इस का नारए तक्बीर से कोह शगाफ सदा से जवाब दिया। हज़रत अबू उबैदा जर्जीर की लाश के करीब आ कर ठहरे और उस का भारी डील डोल देख कर तअज्जुब करते थे।

हज़रत अबू उबैदा अभी तक मैदान में थे और इन्तिज़ार करते थे कि जर्जीर के कत्ल होने पर रूमी लश्कर से कोई मुकाबला में आएगा, लैकिन हज़रत खालिद बिन वलीद ने बुलन्द आवाज़ से पुकार कर कहा कि ऐ सरदार ! ब-तह्कीक तुम पर जो वाजिब था वह तुम कर चुके। खुदा के वास्ते वापस अपनी जगह पलटो। चुनान्चे हज़रत अबू उबैदा इस्लामी लश्कर में वापस आए। तमाम मुजाहिदों ने नारए तक्बीर से इन का इस्तिक्बाल किया और काम्याबी व सलामती की मुबारक बाद पैश की। हज़रत अबू उबैदा ने इन का शुक्रिया अदा

किया। फिर हज़रत खालिद बिन वलीद के हाथ से इस्लामी लश्कर का अलम वापस लिया और अपनी जगह आ कर ठहरे।

बतरीक सर्जिस और हज़रत मालिक नखई के दरमियान लड़ाई :-

रूमी लश्कर के सरदार जर्जीर का कत्ल पलक झपकने की दैर में वाकेअ हुवा था। बाहान की नज़र के सामने उस के लश्कर का अहम रुक्न मक्तूल पड़ा था। जर्जीर की मौत से रूमी लश्कर में कोहराम मच गया और मातम छा गया। बाहान का दिल ज़ौर ज़ौर से धड़कने लगा और उस को अपनी मौत का यकीन हो गया। लिहाज़ा उस ने भागने का इरादा किया, लैकिन फिर ख्याल किया कि अगर मैं भाग गया तो रूमी लश्कर में इन्तिशार फैल जाएगा और तमाम सिपाही भाग निक्लेंगे और इन के भाग जाने की ज़िम्मेदारी मेरे सर आइद होगी और जब हिरक्ल बादशाह को इस मआमले से आगही होगी तो वह मुझे कभी भी मुआफ नहीं करेगा और उस के गज़ब व एताब से मैं बच नहीं सकूंगा। इलावा अज़ीं पूरे मुल्के शाम में मेरी ज़िल्लत और रुस्वाई होगी और मैं कहीं भी मुंह दिखाने के काबिल न रहूंगा, मुल्के शाम का हर फर्द मुझ पर ला'नत मलामत करेगा, लिहाज़ा ऐसी ज़िल्लत की ज़िन्दगी जीने से तो बेहतर है कि मैं लड़ते लड़ते मर जाउं। लिहाज़ा उस ने बज़ाते खुद मा'रकए जंग में जाने का अज़्म किया। उस ने लश्कर के अराकीन और सरदारों को अपने इरादे से आगाह किया और सामाने जंग और पुर तकल्लुफ लिबास से आरास्ता हो कर मैदान में जाने की तैयारी की। राहिबों और बतारेका ने इन्जील की आयतें पढीं, उमूदिया का पानी छिड़का, धूनी दी और सलीब बुलन्द कर के उस के लिये दुआएं कीं, और बाहान रवाना हो रहा था कि "सर्जिस" नाम का एक बतरीक आया और बाहान के घोड़े की रिकाब थाम ली और कहा कि ऐ बादशाह ! मैं जब तक ज़िन्दा हूं आप को मैदान में उतरने की मशक्कत नहीं उठाने दूंगा। सरदार जर्जीर मेरा रिश्तेदार था। इस की मौत का मआमला मुझ पर सख्त दुश्वार गुज़रा है। कसम है हक्के मसीह और मुकद्दस सलीब की ! अब मैदान में मेरे सिवा दूसरा कोई नहीं जाएगा। जर्जीर की मौत का बदला ले कर इन के सरदार को कत्ल कर दूंगा या फिर मैं भी जर्जीर से जा मिलूंगा। लिहाज़ा मुझे मैदान में जाने की इजाज़त मरहमत की जाए।

सर्जिस का वल्वला और जज़्बए इन्तिकाम देख कर बाहान ने उसे मैदान में जाने की इजाज़त दे दी। नस्रानी पादरियों ने उसे कनीसा की धूनी दी, राहिबों ने इन्जील की आयतें पढ़ कर उस पर दम किया। एक राहिब ने अपनी गर्दन में लटकी हूई सलीब निकाली और कहा कि यह सलीब हज़रत मसीह के ज़माना से राहिबों की विरासत में चली आई है।

इस सलीब को अपने साथ ले जाओ और इस से मदद तलब करना यह ज़रूर तुम्हारी मदद करेगी। सर्जिस ने राहिब के हाथ से सलीब ले कर चूमा और अपने गले में डाल ली और मैदान की तरफ रवाना हुवा। सर्जिस तवील जसामत का निहायत फर्बा और सेहतमन्द था। सर्जिस के जिस्म की हैअत ऐसी डरावनी थी कि देखने वाले पर खौफ तारी हो जाए। उस ने लोहे की जो ज़िरह पहनी थी वह इतनी वज़नी थी कि एक आदमी इसे बड़ी मुश्किल से उठा सके। सर्जिस ने मैदान में आ कर अपने घोड़े को गरदावा दिया और तकब्बुर व गुरुर के लहजे में मुकाबिल तलब करने लगा। सर्जिस फसीह अरबी में गुफ्तगू करता था, पस मुजाहिदों को यह गुमान हुवा कि यह कोई नस्रानी अरब है। सर्जिस गुरूर के नशे में बहुत ही गुस्ताखाना अन्दाज़ में कलाम करता था, और मुकाबिल तलब करते हुए कहता था कि जो शख्स अपनी ज़िन्दगी से तंग आ गया हो,वही मेरे मुकाबले को निकले ताकि मैं उसे मौत की आगोश में भेज दूं। हज़रत ज़िरार ने जब उस की यह बात सुनी तो गज़बनाक हो कर मिस्ले शौ'ला मैदान में आए। हज़रत ज़िरार ने भी अपने जिस्म को ज़िरह और खौद से महफूज़ कर रखा था। जब वह बतरीक सर्जिस के करीब आए और उस को तमाम साज़ो सामान से आरास्ता देखा तो हज़रत ज़िरार को अफ्सोस और नदामत का एहसास हुवा और अपने नफ्स से कहा कि अगर मौत आ गई है तो ज़िरह और खौद का लिबादा मौत से बे नियाज़ नहीं करेगा। यह बतरीक भी खौद और ज़िरह से आरास्ता है और तू भी खौद और ज़िरह से आरास्ता है। फिर तवक्कुल अलल्लाह के मआमले में तुझ में और इस में क्या फर्क रहा ? ऐ नफ्स ! लोहे की ज़िरह उतार कर फैंक दे और अल्लाह की हिफाज़त की ज़िरह पहन ले। लोहे का खौद अपने सर से अलग कर दे और अल्लाह की नुस्रत का खौद सर पर रख ले। यह ख्याल आते ही हज़रत ज़िरार ने घोड़े की बाग फैरी और अपने खैमे की तरफ वापस लौटे।

हज़रत ज़िरार के मैदान से वापस लौट आने पर तमाम मुजाहिदों को तअज्जुब हुवा कि न जाने आज क्या बात है कि हज़रत ज़िरार ऐन लड़ाई के वक्त वापस लौट आए। ऐसा कभी नहीं हुवा। बतरीक सर्जिस ने यह गुमान किया कि मेरा भारी और कवी जिस्म और मेरा जंगी साज़ो सामान देख कर हज़रत ज़िरार डर कर भाग गए हैं। लिहाज़ा उस की जुर्अत बढ़ गई और वह ज़ौर ज़ौर से चींख मार कर मुकाबिल तलब करने लगा, हज़रत मालिक नखई उश्तर अपने घोड़े पर सवार हो कर मैदान में निकले। हज़रत मालिक नखई भी बहुत दराज़ कद थे। इन की जसामत का यह आलम था कि वह फर्बा घोड़े पर सवार होते थे तब भी इन के पाऊं ज़मीन को मस होते थे। हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर अपने खैमे में गए और तमाम

जंगी लिबास उतार दिया, हत्ता कि अपना कुर्ता भी उतार दिया । सिर्फ इज़ार पहने थे, बाकी ऊपर का जिस्म बिल्कुल उर्यां कर दिया और फौरन मैदान में वापस आए ।

जब हज़रत ज़िरार मैदान में आए, तो उन्हों ने देखा कि हज़रत मालिक नखई सब्कत कर के सर्जिस के मुकाबले में पहुंच गए हैं । लिहाज़ा हज़रत ज़िरार ठहर गए और वह हज़रत मालिक और बतरीक सर्जिस का मुकाबला देखने लगे । हज़रत मालिक ने आते ही बतरीक सर्जिस से एक जुम्ला कहा । वह जुम्ला क्या था ? इस जुम्ले के अल्फाज़ क्या थे ? वह अल्लामा वाकदी की ज़बानी मुलाहिज़ा फरमाएं :

''पस देखा ज़िरार ने कि मालिक नखई पुकारते हैं गबर को इन अल्फाज़ से ''تَقَدَّمْ يَا عَبَّادَ الصَّلِيْبِ إِلَى الرَّجُلِ النَّجِيْبِ نَاصِرُه مُحَمَّدُ الْحَبِيْبُ'' पस न जवाब दिया इन को गबर ने ब-सबब लाहिक होने खौफ के, पस गिर्द घूमे उस के मालिक नखई और इरादा किया उस पर नैज़ा मारने का''

(हवाला : ''फुतूहुश्शाम'' अज़ : - अल्लामा वाकदी, सफहा : 269)

नाज़िरीने किराम गौर फरमाएं ! हज़रत मालिक नखई जलीलुल कद्र सहाबीए रसूल हैं । उन्हों ने मैदान में आते ही यह जुम्ला फरमाया कि :

تَقَدَّمْ يَا عَبَّادَ الصَّلِيْبِ إِلَى الرَّجُلِ النَّجِيْبِ نَاصِرُه مُحَمَّدُ الْحَبِيْبُ

तर्जुमा : ''आगे बढ़ ऐ सलीब के पूजारी ! ब-जानिब उस मर्दे गिरामी के कि जिस को मदद देने वाले मुहम्मद हबीब सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम हैं ।''

इस जुम्ले को एक मरतबा नहीं बल्कि कईं मरतबा पढ़ें । हज़रत मालिक नखई अपना अकीदा ज़ाहिर कर रहे हैं कि **''हमारी मदद करने वाले अल्लाह के हबीब हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम हैं''** । साबित हुवा कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को अपना नासिर या'नी मदद करने वाला कहना और मानना सहाबए किराम का अकीदा था । यह सिर्फ हज़रत मालिक नखई का ही अकीदा न था बल्कि तमाम सहाबा का अकीदा था । फुतूहुश्शाम की मुन्दरजा बाला इबारत पर मुकर्रर तवज्जोह फरमाएं । इबारत का इब्तिदाई जुम्ला यह है कि हज़रत ज़िरार ने हज़रत मालिक नखई को यह जुम्ला कहते सुना । तो जब हज़रत ज़िरार ने सुना तो दीगर सहाबए किराम ने भी ज़रूर सुना । अगर हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को

अपना ''मददगार'' कहना और मानना शिर्क होता तो अजिल्ल-ए सहाबए किराम की जमाअत वहां मौजूद थी । वह हज़रत मालिक को टोकते कि ऐसा कहना और ऐसा अकीदा रखना शिर्क है, लैकिन किसी ने भी ए'तेराज़ नहीं किया, बल्कि सुकूत इख्तियार कर के इस की ताईद की लिहाज़ा हमारे लिये सहाबए किराम का फे'ल व ए'तकाद दलील और सुबूत है कि **हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम अपने गुलामों की ज़रूर मदद फरमाते हैं और अपनी उम्मत के नासिर या'नी मदद करने वाले हैं ।**

लैकिन अफ्सोस !

मौजूदा दौर के मुनाफिकीन का कहना है कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को अपना मददगार समझना शिर्क है ।

❋ वहाबी, देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत के इमाम व पैशवा मौलवी इस्माईल देहलवी ने अपनी किताब ''तक्वियतुल ईमान'' के पहले बाब में, उन्वान ''तसर्रुफ और कुदरते कामिला अल्लाह की खुसूसियत है'' के ज़ैल में लिखा है :

''दूसरी बात यह है कि आलम में इरादे से तसर्रुफ करना और अपना हुक्म जारी करना और अपनी ख्वाहिश से मारना, जिलाना, रोज़ी की फराखी और तंगी करना,और तन्दुरस्त व बीमार कर देना,फतह व शिकस्त देना, इक्बाल व इमदाद देना, मुरादें पूरी करना, हाजतें बर लाना, बलाएं टालना, मुश्किल में दस्त गीरी करना, बुरे वक्त में पहुंचना,यह सब अल्लाह ही की शान है और किसी नबी और वली पीर व मुर्शिद शहीद, भूत व परी की यह शान नहीं । जो शख्स किसी का कोई ऐसा तसर्रुफ साबित करे और उस से मुराद मांगे और इसी तवक्को' पर उस की नज़्र व नियाज़ करे और उस की मन्नतें माने और उस को मुसीबत के वक्त पुकारे वह मुश्रिक हो जाता है''

(हवाला : - **तक्वियतुल ईमान**, नाशिर : दारुस सल्फिया,बम्बई, सफहा : 23)

''तक्वियतुल ईमान'' की मुन्दरजा बाला इबारत कितनी खतरनाक है कि कलम के एक ही झटके से लाखों और करोडों मुसल्मानों को मुश्रिक कह दिया । इस इबारत की तर्दीद में बहुत कुछ वज़ाहत की जा सक्ती है । जो यहां मुम्किन नहीं । इस इबारत के सिर्फ इन जुम्लों की तरफ तवज्जोह दें :

(1) इक्बाल व इमदाद देना (2) किसी नबी और वली की यह शान नहीं (3) जो शख्स किसी का कोई ऐसा तसर्रुफ साबित करे (4) वह मुश्रिक हो जाता है।

अल-हासिल मौलवी इस्माईल देह्लवी के शिर्क के फत्वे की मशीन गन से एक गोला यह भी बरसा कि जो शख्स किसी नबी और वली का ऐसा तसर्रुफ या'नी इख्तियार साबित करे कि वह हमारी मदद कर सक्ते हैं,वह शख्स मुश्रिक है। (**नऊज़ो बिल्लाह मिन ज़ालिक**)। अब कारेईने किराम इन्साफ फरमाएं कि :

हज़रत मालिक नखई उश्तर,और दीगर सहाबए किराम का यह अकीदा है कि हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम हमारे "नासिर" या'नी मदद करने वाले हैं।

लैकिन !

दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन के पेश्वा मौलवी इस्माईल देह्लवी का कहना यह है कि ऐसा अकीदा रखने वाला शख्स मुश्रिक है।

मौलवी इस्माईल देह्लवी का यह फत्वा किन किन सहाबए किराम पर चस्पां हो रहा है ? यह कारेईने किराम सोचें और हक्क व बातिल का इम्तियाज़ करें।

हर बात में शिर्क,शिर्क और सिर्फ शिर्क की राग अलापने वाले, शिर्क का फत्वा सादिर करने में इतने बेबाक और जरी होते हैं कि वह अंधा धुन्द शिर्क के फत्वे की गोला बारी करते वक्त बिल्कुल यह नहीं सोचते कि हमारे फत्वे का गोला कहां और किस पर पड़ेगा। उर्दू ज़बान की मश्हूर मसल है कि **"बन्दर को मिली हल्दी की गिरेह पन्सारी बन बैठा"**। इसी तरह हाथ में कलम, दवात और कागज़ क्या आया, मुफ्ती बन बैठे और शिर्क के फतवों की भर मार कर दी। करोडों, अरबों कल्मागो और मुख्लिस मुसल्मानों को बिला वजह मुश्रिक कह दिया। हत्ता कि मुकद्दस सहाबए किराम को भी नहीं बख्शा। तौहीद की आड़ में तन्कीस व तौहीने अम्बिया का शैवा अपना कर कुरआन व हदीस के साफ और सरीह इर्शादात के खिलाफ अकाइदे फासिदा गढ़ लिये। अम्बिया-ए किराम और औलिया-ए इज़ाम से तवस्सुल व इम्दाद हासिल करना कुरआन व हदीस, कौल व फे'ले सहाबा व ताबेईन, अक्वाले अइम्मा और मिल्लते इस्लामिया के जलीलुल कद्र उलमा व सुलहा की कुतुबे मो'तबेरा मो'तमेदा से रोज़े रौशन की तरह ज़ाहिरो बाहिर है। यहां इस की तफ्सीली गुफ्तगू खौफे तवालत की वजह से मुम्किन नहीं। जिस को इस मस्अले की तफ्सीली वज़ाहत

दरकार हो, वह इमाम अह्ले-सुन्नत,मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिसे बरैलवी अलैहिर्रहमतो वर्रिदवान की मुन्दरजा ज़ैल कुतुब से इस्तफादा करे

(१) **बरकातुल इम्दाद ले-एहलिल इस्तिम्दाद** 1311 सन हिजरी

(२) **अल-अम्नो वल उला ले नाअतिल मुस्तफा बे दाफेइल बला** 1311 सन हिजरी

(३) **अल एहलाल बे फैज़िल औलियाए बा'दल विसाल** 1303 सन हिजरी

कारेईने किराम की फरहते तबअ की खातिर ज़ैल में एक हदीस पैश की जाती है।

❀ हदीस शरीफ :-

तबरानी ने हज़रत उतबा बिन गज़्वान रदियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत की है कि हुज़ूरे अक्दस नासिरे मिल्लत व दाफेउल बला सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम इर्शाद फरमाते हैं :

إِذَا ضَلَّ أَحَدُكُمْ شَيْئاً وَأَرَادَ عَوْناً وَ هُوَ بِأَرضٍ لَيْسَ بِهَا
أَنِيُس " فَلْيَقُلْ يَا عِبَادَ اللّٰهِ اَعِينُونِى، يَا عِبَاد اللّٰهِ اَعِينُوْنِىْ،
يَا عِبَادَ اللّٰهِ اَعِينُونِىْ-فَإِنَّ لِلّٰهِ عِبَاداً لَا يَرَاهُمْ

तर्जुमा : **"जब तुम में से किसी की कोई चीज़ गुम हो जाए या राह भूले और मदद चाहे और ऐसी जगह हो जहां कोई हमदम नहीं, तो उसे चाहिये यूं पुकारे ऐ अल्लाह के बन्दो मेरी मदद करो। ऐ अल्लाह के बन्दो मेरी मदद करो। ऐ अल्लाह के बन्दो मेरी मदद करो, कि अल्लाह के कुछ बन्दे हैं जिन्हें यह नहीं देखता"** (वह इस की मदद करेंगे)।

नामे किताब : बरकातुल इम्दाद ले-एहलिल इस्तिम्दाद

मुसन्निफ : इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिस बरैलवी

नाशिर : तह्रीक इस्लाहुल अकाइद, करांची, पाकिस्तान, सफहा : 15

इस हदीस शरीफ के एक एक लफ्ज़ का गौर से मुतालआ करें । इस हदीस में **''ऐ अल्लाह के बन्दो ! मेरी मदद करो''** का जुम्ला तकरार के साथ तीन मरतबा है और यह जुम्ला किसी आम इन्सान का मकूला नहीं बल्कि खैरुल बशर,सय्यदुल इन्स वल्जान,सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम का जुम्ला है। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम अपने उम्मतियों को यह ता'लीम फरमाएं कि अल्लाह के बन्दों से मदद तलब करो, लेकिन मौलवी इस्माईल देह्लवी का यह कहना है कि अल्लाह के नबी से मदद मांगने वाला मुश्रिक है। मौलवी इस्माईल देह्लवी का कौल हदीस के फरमान के सरासर मुतज़ाद है और इस्लामी अकीदा की बेख कुनी करने वाला है।

इस बहस को तूल न देते हुए अब हम मैदाने यर्मूक चल कर हज़रत मालिक नखई और बतरीक सर्जिस के दरमियान वाकेअ लड़ाई का मन्ज़र देखें।

जब हज़रत मालिक ने **''तूं आगे बढ़ ऐ सलीब के परस्तार ! उस मर्द की जानिब जिस के पुश्त पनाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम हैं''** का जुम्ला निकाला, तो सर्जिस पर एक खौफ और लरज़ह तारी हो गया और उस ने कोई जवाब नहीं दिया बल्कि हम्ला करने से भी बाज़ रहा। हज़रत मालिक ने उस को कईं मरतबा लल्कारा, लैकिन वह अपनी जगह से हिलने का नाम न लेता था। खुद हज़रत मालिक ने चाहा कि उस पर नैज़ा का वार करें, लैकिन बतरीक सर्जिस लोहे के गिलाफ में ऐसा मल्बूस था कि उस के जिस्म पर कहीं भी नैज़ा मारने की जगह नज़र न आती थी। पस हज़रत मालिक ने घोड़े की रान में नैज़ा मारा। नैज़ा लगते ही सर्जिस का घोड़ा बिद्का और ज़ौर से हिनहिना कर उछल कूद करने लगा। सर्जिस ने घोड़ा काबू में करने की बहुत कौशिश की, लैकिन नैज़े के ज़ख्म की वजह से उस का इज़्तिराब बढ़ता ही जाता था और घोड़ा चराग-पा हो गया। बतरीक सर्जिस ने घबराहट के आलम में घोड़े की बाग को झटका दिया। इस दौरान हज़रत मालिक ने चाहा कि नैज़ा खींच कर दूसरा वार करें, लैकिन नैज़ा घोड़े की बदन में गहराई तक पहुंच कर पसलियों में फंस गया था। हज़रत मालिक ने ताकत लगा कर नैज़ा खींचा तो टूट गया और नैज़े की अनी घोड़े के बदन में रह गई। बतरीक सर्जिस का लगाम को झटका मारना और हज़रत मालिक का नैज़ा खींचना यह दोनों फे'ल एक ही वक्त में हुए, चुनान्चे घोड़ा पीठ के बल गिरा। घोड़े के साथ बतरीक सर्जिस भी ज़मीन पर आ गिरा। उस ने खड़े होने की बहुत कौशिश की, लैकिन वह ज़ीन के साथ ज़न्जीरों में जक्ड़ा हुवा था, लिहाज़ा उस का एक पाऊं घोड़े के जिस्म के नीचे दब गया। फिर भी उस ने अपना बदन सरका कर

निकलने की कौशिश जारी रखी इतने में हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर दौड़ते हुए वहां पहुंच गए और सर्जिस के सर पर तल्वार की ऐसी शदीद ज़र्ब लगाई कि लोहे का खौद टूट गया और उस का सर खर्बूज़ा की तरह दो टुक्ड़े हो गया।

रूमी लश्कर के सिपाह सालार बाहान की मैदान में आमद :-

इस्लाम के मुजाहिदों ने जिस आसानी से बतरीक सर्जिस को काट कर फैंक दिया वह देख कर बाहान लरज़ उठा। उस को ऐसा मह्सूस हुवा गोया उस का बाज़ू कट गया। उस ने रूमी लश्कर के अराकीन को जमा कर के कहा कि अब मुझे मैदान में जाना लाज़िमी हो गया है। अगर मैं गालिब रहा और फतेहयाबी हूई तो हिरक्ल बादशाह से सुर्ख रूई से मिलूंगा और अगर मारा जाउं तो हिरक्ल बादशाह को मेरा सलाम कहना और इन की खिदमत में मेरा यह पैगाम पहुंचा देना कि मैं ने दीने सलीब की इआनत व मदद करने में किसी किस्म की कोताही नहीं की, लैकिन मैं परवर्दगारे आस्मान पर गालिब होने की कुव्वतो ताकत नहीं रखता, जिस ने अरबों को हम पर गल्बा दे कर हमारे शहरों का इन्हें मालिक बना दिया। रूमी लश्कर के अराकीन ने बाहान से कहा कि ऐ सरदार ! आप मैदान में जाने की जल्दी मत करो और किसी दूसरे को मैदान में भेजो। बाहान ने कहा कि अब मैं क्या मुंह ले कर बादशाह के हुज़ूर जाउंगा, जब कि हमारे लश्कर के अह्म अफराद हलाक हो चुके हैं। मेरे लिये यही मुनासिब है कि नैज़ा बाज़ी और शम्शीर ज़नी करते हुए मर जाउं ताकि कौम की मलामत और बादशाह की सरज़निश से बचा रहूं और मैं तुम सब को सलीब के हवाले और इस की पनाह में देता हूं। लोगों ने कहा ऐ बादशाह हम आप को मैदान में हरगिज़ नहीं जाने देंगे। पहले हम लड़ते हुए मर जाएं फिर आप मैदान में जाने का कस्द करना। हमारे ज़िन्दा होते हुए आप को मुशक्कत उठाने की ज़रूरत नहीं, लैकिन बाहान ने इन की गुज़ारिश को ठुक्रा दिया और चारों कनीसों की कसम खा कर कहा अब मैदान में मेरे इलावा कोई नहीं जाएगा। बाहान के अज़्मे मुसम्मम के सामने उस की कौम ने हथियार डाल दिए। बाहान ने अपने बेटे को बुलाया और सलीबे आ'ज़म इस को देते हुए कहा कि तू मेरे काइम मकाम की हैसियत से मेरा ओहदा संभाल। फिर बाहान ने उमदा सामाने जंग पहना। बाहान की तल्वार, नैज़ा, सिपर, ज़िरह, खौद, ज़ीन वगैरा में सोने का काम किया हुवा था और उस में कीमती जवाहिर जड़े हुए थे। बाहान के हाथ में सोने का ''उमूद'' था। जब बाहान मैदान में खड़ा हुवा तो आफ्ताब की रौशनी में इस तरह चमकता था कि देखने वाले को मह्सूस हुवा कि यह कोई सोने का मुजस्समा है। बाहान के जिस्म और घोड़े पर जो जंगी सामान थे उस की कीमत तक्रीबन साठ हज़ार दिर्हम थी।

बाहान ने मैदान में आ कर अपने घोड़े को गरदावा दिया और अपना नाम व ओहदा जता जता कर लड़ने के लिये मुकाबिल तलब करने लगा। कबीला दौस का एक जवान मुकाबला के लिये मैदान में आया। बाहान ने उस जवान को हम्ला करने का मौका' ही न दिया और उस जवान के सर में सोने का उमूद ऐसी शिद्दत से मारा कि उस का सर फट गया और खून का चश्मा जारी हो गया। लेकिन वह नौ-जवान मुस्कुराते हुए खुशी से मचल मचल कर आस्मान की जानिब इशारा कर रहा था और कहने लगा कि मैं जन्नत का मुश्ताक हूं और जन्नत की हूरें मेरा इस्तिक्बाल करने आई हूई हैं। उस नौ-जवान के चेहरे पर रंज व तक्लीफ के आसार के बजाए फरहत व इन्बिसात के आसार नज़र आते थे :

मौत नज़्दीक, गुनाहों की तहें, मैल के खौल
आ बरस जा कि नहा धो ले यह प्यासा तेरा

(अज़ : इमामे इश्को मुहब्बत, हज़रत रज़ा बरैलवी)

चंद ही लम्हों के बा'द वह दौसी नौ-जवान अपने घोड़े से ज़मीन पर गिरा और शहीद हो गया। बाहान की जुर्अत बढ़ गई। दौसी जवान को शहीद कर के वह गुरूर में भर गया और अपनी बहादुरी और शुजाअत की गुल बांग हांकने लगा और चीख चीख कर मुकाबिल तलब करने लगा। बाहान की हौसला अफ्ज़ाई करने और उस को सराहने के लिये रूमी लश्कर के सिपाही बुलन्द आवाज़ में कल्मए कुफ्र का शौर व गुल मचाने लगे। हज़रत मालिक नखई फिर एक मरतबा मैदान में आए और बाहान को लल्कारा। बाहान ने हज़रत मालिक नखई के सर पर उमूद का ऐसा सख्त वार किया कि हज़रत मालिक का खौद टूट गया, खौद का एक टुक्ड़ा पेशानी में पैवस्त हो गया और इन की आंख के ऊपर की हड्डी टूट गई, बे तहाशा खून बहने लगा। इसी वजह से इन का लकब मालिक नखई "उश्तर" हो गया। या'नी आंख के ऊपर ज़ख्म खाने वाला।

हज़रत मालिक नखई की आंखों तले अंधेरा छा गया और सर में चक्कर आने लगे। बाहान इस इन्तिज़ार में था कि हज़रत मालिक अब घोड़े से गिरने वाले हैं। हज़रत मालिक ने इस्लामी लश्कर की तरफ पलट जाने का इरादा किया लैकिन इन्हें यह ख्याल आया कि इस तरह वापस पलटना मैदाने जेहाद से पीठ फेरने के मुतरादिफ है और जेहाद से भागना अल्लाह को ना-पसन्द है। लिहाज़ा उन्हों ने अपना इरादा बदल दिया। खुद हज़रत मालिक नखई ने रिवायत किया है कि मैं शदीद ज़ख्म की मुसीबत में मुब्तला था और मैं

ने अल्लाह तआला से मदद तलब की और हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम पर दुरूद भेजा। **दफ्अतन हज़रत मालिक के जिस्म में एक अजीब कुव्वत और ताकत पैदा हूई और हज़रत मालिक ने लपक कर बाहान के बाज़ू पर तल्वार का वार किया।** बाहान ने ज़िरह पहनी थी मगर फिर भी तल्वार ने ज़िरह को काट कर ज़ख्म कर दिया। ज़ख्म गहरा नहीं था। मा'मूली ज़ख्म था, लैकिन ज़ख्म से खून बहने लगा। अपने जिस्म से खून बहता देख कर बाहान घबरा गया और अपने घोड़े की बाग फैर कर रूमी लश्कर की तरफ भागा। हज़रत मालिक ने उस का तआकुब किया लैकिन बाहान बर्क रफ्तारी से भागा था, लिहाज़ा हाथ न आया। बाहान ज़ख्मी हो कर रूमी लश्कर में दाखिल हुवा। अर्काने लश्कर ने सहारा दे कर उसे घोड़े से उतारा और उस का ज़ख्म बांधा।

इधर हज़रत मालिक नखई इस्लामी लश्कर में वापस आए। मुजाहिदों ने इन को घोड़े से उतारा और ज़ख्म की मर्हम पट्टी की। हज़रत अबू उबैदा ने राहे खुदा में मुशक्कत उठाने पर अज्रे अज़ीम की बशारत सुनाई और इन के काम का शुक्रिया अदा किया और सलामत वापस आने और गल्बा हासिल करने की मुबारकबाद दी।

रूमी लश्कर का हज़ीमत उठा कर भागना और इस्लामी लश्कर की फतह

बाहान ज़ख्मी हालत में वापस आया था और वह खौफ व देह्शत से लरज़ रहा था। न जाने उस ने क्या देख लिया था कि उस के बदन पर कपकपी तारी हो गई थी और वह अपनी मौत को सर पर खेलती देख रहा था। इस तरह वह आंखें फाड़ फाड़ कर आस्मान की तरफ देख रहा था। उसे अब यकीन हो गया था कि मैं मौत की आगोश में जाने वाला हूं। बाहान की भर भर्राहट देख कर रूमी लश्कर के सिपाहियों के दिल उचाट हो गए। और इन्हें अपनी जान के लाले पड़ गए। जान बची लाखों पाए पर अमल कर के भाग निकलने का इरादा करने लगे, लैकिन अपने सरदारों के खौफ और शर्म से हुज़ूरी में दिल बरदाश्ता हो कर रुके हुए थे। इधर हज़रत खालिद ने हज़रत अबू उबैदा से कहा कि ऐ सरदार ! बाहान के ज़ख्मी हो कर वापस जाने की वजह से रूमी लश्कर पर खौफ तारी हो गया है और इन का हौसला टूट चुका है। मुनासिब है कि हम पूरे लश्कर के साथ रूमियों पर यल्गार कर दें और इन को फाड़ कर रख दें। हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत खालिद के मश्वरे के मुताबिक इस्लामी लश्कर को युरिश का हुक्म दिया।

तमाम मुजाहिदों ने नाराए तक्बीर बुलन्द किया और रूमी लश्कर पर यक–बारगी टूट पड़े और लड़ाई का माहौल गर्म हो गया, शिद्दत से तैग ज़नी और नैज़ा बाज़ी शुरू हो गई। रूमी सिपाही पहले ही से पज़्मुर्दा और शिकस्ता दिल थे। मुजाहिदों की तलवारों के सामने ठहर न सके। कुछ दैर रूमी सिपाही मैदान में जम कर लड़े मगर मुजाहिदों ने इन की लाशों का अम्बार लगा दिया। खून की नदी बेह निकली। रूमियों के कदम उखड़ गए और पीठ दिखा कर राहे फरार इख्तियार की। रूमी लश्कर की जम्ईयत और कसरत की वजह से वह एक सम्त नहीं भाग सके, बल्कि मुख्तलिफ रास्तों से भागे। जिस को भी जहां कुशादगी दिखाई पड़ी, अपनी जान बचा कर उस तरफ भागा। रूमी सिपाही दुम दबा कर चारों तरफ भाग रहे थे और जैशे इस्लाम के मुजाहिद इन का तआकुब कर रहे थे और जो भी हाथ लगता था, उस को तहे तैग करते थे। हज़ारों की ता'दाद में रूमी सिपाही याकूसा नदी की तरफ भागे। मुजाहिदीन इन के तआकुब में गए, जब नदी का घाट आया तो रूमी सिपाहियों ने मुजाहिदों की तल्वार के खौफ से अपने घोड़ों के साथ घाट की बुलन्दी से नदी में छलांग लगा दी और एक दूसरे पर गिर कर तमाम गर्क आब हो कर हलाक हो गए।

बा'ज़ रूमी सिपाही भाग कर पहाड़ों की तरफ गए और अपने घोड़े छोड़ कर पहाड़ पर चढ़ गए। मुजाहिदों ने हर सम्त इन का तआकुब किया। जिन्हों ने हथियार फैंक कर हाथ ऊपर उठा कर **''लफून लफून''** या'नी **अमान,अमान** पुकारा उन को कत्ल नहीं किया बल्कि कैद कर लिया। गुरूबे आफ्ताब तक यह सिल्सिला जारी रहा। शब के वक्त तमाम मुजाहिद इस्लामी लश्कर के कैम्प में वापस आए और फतह व नुस्रत के शुक्राने में शब भर नमाज़ व इबादत में मश्गूल रहे।

सुब्ह में या'नी जंगे यर्मूक के पन्दरहवें दिन तुलूए आफ्ताब के बा'द हज़रत अबू उबैदा ने मुजाहिदों के हमराह मैदान का गश्त फरमाया। पूरा मैदान रूमी सिपाहियों की लाशों से भरा पड़ा था। रूमी मक्तूलीन की ता'दाद का शुमार करना दुश्वार था, हज़रत अबू उबैदा ने मुजाहिदों को हुक्म दिया कि वह सूखी लक्ड़ियां जमा करें। तक्रीबन दस हज़ार मुजाहिदीन इस काम पर गए और हर मुजाहिद अपने साथ पंदरह पंदरह लक्ड़ियां लाया। हज़रत अबू उबैदा ने हुक्म दिया कि मैदान में पड़ी रूमियों की लाशों पर एक एक लक्ड़ी रखते आओ। इस तरह मर्दुम शुमारी करने पर सिर्फ यर्मूक के मैदान में एक लाख, पांच हज़ार रूमी सिपाही मक्तूल पाए गए। इस्लामी लश्कर के चार हज़ार मुजाहिद शहीद हुए थे। तमाम शोहदा को मैदान से उठा कर कैम्प में लाया गया। हज़रत अबू उबैदा ने नमाज़े जनाज़ा पढाई और बा'दहु इन को दफ्न किया गया।

जंगे यर्मूक में चालीस हज़ार रूमी सिपाही कैद हुए। जंग के आखरी दिन रूमी लश्कर के एक लाख पांच हज़ार सिपाहियों की लाशें मैदान से दस्तयाब हूईं। हज़ारों की ता'दाद में याकूसा नदी में गिर कर हलाक हुए। हज़ारों भागते हुए मक्तूल हुए और हज़ारों की ता'दाद में पहाड़ों पर चढ़ गए, वह मुजाहिदों के खौफ से नीचे न उतरे और भूक व प्यास से हलाक हो गए। मुजाहिदों ने रूमी लश्कर के कैम्प पर कब्ज़ा कर लिया। चांदी के बर्तन,सोने की सलीबें,रैश्मी कपड़े, ज़ेवरात, जवाहिर, तलवारें और दीगर अस्बाबे जंग, खैमे, बिस्तर, सवारी के जानवर वगैरा लाखों की ता'दाद में माले गनीमत हासिल हुवा। मुल्के शाम में इस्लामी लश्कर की सब से अज़ीम फतह यर्मूक में हूई और बहुत माले गनीमत हासिल हुवा।

बाहान का दमिश्क तक तआकुब और हज़रत खालिद के हाथों कत्ल

हज़रत खालिद बिन वलीद मुजाहिदों की लाशों को दफ्न करने के बा'द लश्कर ज़हफ ले कर रूमियों की तलाश में जंगलों और पहाड़ों की तरफ रवाना हुए। रास्ते में एक चरवाहा मिला। हज़रत खालिद ने उस से रूमी सिपाहियों के मुतअल्लिक पूछा तो उस ने बताया कि बाहान अरमनी चालीस हज़ार लश्करियों के साथ दमिश्क की तरफ भाग कर जा रहा है। हज़रत खालिद ने अपने साथियों को हुक्म दिया कि दमिश्क की तरफ जाने वाली राह पर तैज़ी से चलो। सब ने अपने घोड़ों की बागें ढीली छोड़ दीं। हज़रत खालिद ने बाहान के लश्कर को दमिश्क के करीब पा लिया और जाते ही तमाम मुजाहिद मिस्ले शैर हम्ला आवर हुए। बाहान और उस के साथियों को पता चला कि **''सैफुल्लाह'' हज़रत खालिद बिन वलीद** जैशे इस्लाम को ले कर आ पहुंचें हैं, तो उन के हौश उड़ गए। मुजाहिदों ने उन के सरों पर तलवारें रखीं और कत्ल करना शुरू किया। बाहान ने अपना कीमती लिबास उतार दिया और घोड़े से उतर कर पा–प्यादा हो गया ताकि उसे कोई पहचान न सके। उस का इरादा फरार होने का था, लिहाज़ा वह घमसान की लड़ाई में घोड़ों के दरमियान घुस कर भागने लगा, लैकिन हज़रत नो'मान बिन अज़्दी या हज़रत आसिम बिन खौल यरबूई ने उसे पहचान लिया और उसे कत्ल कर दिया। बाहान के कत्ल होते ही तमाम रूमी भाग निकले।

बाहान के लश्कर को हलाक करने का मा'रका दमिश्क के किल्ले के बाहर और किल्ले से थोड़े फास्ला पर हुवा था। जब अह्ले दमिश्क को पता चला कि किल्ले के बाहर यह मआमला हुवा है तो दमिश्क के मुअज़्ज़ज़ और रोउसा का एक वफ्द हज़रत खालिद बिन वलीद के पास आया और कहा कि इस मा'रका में हम गैर जानिबदार रहे हैं। हम ने रूमी लश्कर की न तो कोई मदद की है और न ही हम ने तुम्हारे खिलाफ हथियार उठाए हैं। हम ने कोई ऐसा काम भी नहीं किया कि जिस से तुम को नुक्सान पहुंचे बल्कि हम ने सुलह के अहद व पैमान की पाबन्दी की है। क्या आप हमारे रवय्या से मुत्मइन हैं और हम अपनी सुलह व अमान पर काइम हैं ? हज़रत खालिद ने फरमाया तुम इत्मिनान रखो, तुम्हारी सुलह ब-दस्तूर काइम है। हज़रत खालिद का जवाब सुन कर अह्ले दमिश्क मुत्मइन हुए और हज़रत खालिद का शुक्रिया अदा कर के खुशी खुशी दमिश्क वापस लौट गए।

फिर हज़रत खालिद यर्मूक से भागे हुए रूमी सिपाहियों का तआकुब करते हुए दमिश्क से निकले और जहां कहीं भी रूमी सिपाही हाथ लगता, उस को कत्ल कर देते, इस तरह रूमी सिपाहियों को कत्ल करते हुए ''मन्यतुल इकात'' नामी मकाम तक पहुंचे। वहां एक दिन कयाम किया और फिर वहां से रवाना हो कर हुमुस पहुंचे। दमिश्क से हुमुस तक की मसाफत तय करने के दौरान हज़रत खालिद ने हज़ारों रूमियों को वासिले जहन्नम किया।

हज़रत अबू उबैदा को पता चला कि हज़रत खालिद बिन वलीद अपने लश्कर के साथ हुमुस पहुंच गए हैं, तो वह भी इस्लामी लश्कर के साथ यर्मूक से हुमुस आ गए। फिर वहां से तमाम जैशे इस्लाम को ले कर दमिश्क आ गए। दमिश्क आ कर हज़रत अबू उबैदा ने माले गनीमत से खुम्स अलग कर के अमीरुल मो'मिनीन हज़रत उमर फारूके आ'ज़म रदियल्लाहो तआला अन्हो की खिदमत में रवाना किया, जंगे यर्मूक की पूरी तफ्सील और फतहे अज़ीम का मुज़्दए जां-फज़ा हज़रत हुज़ैफा बिन यमान के साथ भेजा गया। साथ में दस साथियों को भी मदीना मुनव्वरा भेजा। हज़रत हुज़ैफा बिन यमान को माले गनीमत और खत दे कर मदीना मुनव्वरा रवाना करने के बा'द हज़रत अबू उबैदा ने इस्लामी लश्कर को दमिश्क में ठहरने का हुक्म दिया। मुजाहिदों ने दमिश्क में इस्तिराहत हासिल की। हज़रत अबू उबैदा अमीरुल मो'मिनीन के जवाबी खत का इन्तिज़ार कर रहे थे, ताकि हुक्मे खलीफा के मुताबिक मुजाहिदों में माले गनीमत तक्सीम किया जाए।

हज़रत उमर फारूक के ख्वाब में रसूलल्लाह y की तशरीफ आवरी

अमीरुल मो'मिनीन हज़रत उमर फारूके आ'ज़म रदियल्लाहो तआला अन्हो जंगे यर्मूक के तअल्लुक से इस्लामी लश्कर के लिये बहुत ज़ियादह फिक्र मन्द थे। क्यूं कि इन को इत्तिला' मिली थी कि यर्मूक में ईसाइयों के लश्कर की ता'दाद आठ लाख से भी ज़ियादह है। इलावा अज़ीं कई दिनों से हज़रत अबू उबैदा की जानिब से कोई खबर या इत्तिला' नहीं आई थी। जिस दिन जंगे यर्मूक में रूमियों को शिकस्त फाश और लश्करे इस्लाम को फतहे अज़ीम हासिल हूई, उस रात हज़रत उमर फारूक ने ख्वाब देखा। जिस को इमामे सेयर व तवारिख हज़रत अल्लामा वाकदी कुद्दिसा सिर्रहु ने इस तरह नक्ल फरमाया है :

''देखा हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने शबे हज़ीमते रूम को यह ख्वाब कि गोया रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व आलेहि व सल्लम अपने रौज़ए मुकद्दस में हैं और अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहो अन्हो इन के साथ हैं और उमर रदियल्लाहो तआला अन्हो ने सलाम किया और कहा कि या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहो तआला अलैह व आलेहि व सल्लम मेरा दिल मुसल्मानों से मुतअल्लिक है और नहीं जानता हूं मैं कि अल्लाह तआला ने इन के साथ क्या किया उन के दुश्मनों के मुआमले में और मैं ने सुना है कि रूमी आठ लाख हैं। पस इर्शाद फरमाया रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व आलेहि व सल्लम ने कि ऐ उमर ! खुश हो तुम कि ब-तह्कीक फतह दी अल्लाह तआला ने मुसल्मानों को और शिकस्त दी इन के दुश्मनों को। इस कद्र इन में से मारे गए। फिर पढ़ी रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैह व सल्लम ने यह आयत

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ
عُلُوًّا فِي الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ

(हवाला : - फुतूहुश्शाम, अज़ : - अल्लामा वाकदी, सफहा : 273)

आयत का हवाला : सूरए कसस, आयत नम्बर 83

आयत का तर्जुमा : "यह आखेरत का घर हम इन के लिये करते हैं जो ज़मीन में तकब्बुर नहीं चाहते और न फसाद और आकेबत परहेज़ गारों ही की है।" (कन्जुल ईमान)

सुब्ह नमाज़े फज्र के बा'द हज़रत उमर फारूके आ'ज़म रदियल्लाहो तआला अन्हो ने लोगों से अपना ख्वाब बयान किया। ख्वाब सुन कर सब बेहद मस्रूर हुए क्यूं कि शैतान ख्वाब में भी हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की सूरत में नहीं आ सक्ता। लिहाज़ा इस ख्वाब के सच्चे होने का ए'तमाद किया और यर्मूक में लश्करे इस्लाम की फतह का यकीन किया। चंद दिन गुज़रे कि हज़रत हुज़ैफा बिन यमान अपने दस साथियों के हमराह माले गनीमत और हज़रत अबू उबैदा का खत ले कर मदीना मुनव्वरा आए। हज़रत हुज़ैफा ने अमीरुल मोमिनीन को हज़रत अबू उबैदा का खत दिया। अमीरुल मोमिनीन ने खत का मज़्मून लोगों को पढ़ सुनाया तो खत का मज़्मून हुज़ूरे अक्दस, आलिमे गैब, मुत्तलेअ अला मा-कान व मा यकून, रसूले मुख्तार सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के ज़रीए ख्वाब में हज़रत उमर को दी गई बशारत के ऐन मुताबिक था। हज़रत उमर फारूके आ'ज़म ने सजदए शुक्र अदा किया और तमाम हाज़िरीन ने अलहम्दो लिल्लाह और सुब्हानल्लाह की सदाएं बुलन्द कीं।

मुअज़्ज़ज़ कारेईने किराम की तवज्जोह दरकार है कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने हज़रत उमर फारूके आ'ज़म को जंगे यर्मूक में इस्लामी लश्कर को हासिल शुदा फतह की खुशखबरी सुनाई और साथ में रूमी लश्कर के मक्तूल होने वाले सिपाहियों की ता'दाद भी बता दी और वह ता'दाद हज़रत अबू उबैदा के खत में मर्कूम ता'दाद के मुताबिक थी। **यह इल्मे गैब नहीं तो और क्या है ? कहां मैदाने यर्मूक और कहां मदीना मुनव्वरा ? गुम्बदे खद्रा में आराम फरमाते हुए हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने यर्मूक की जंग में कत्ल होने वाले रूमी सिपाहियों की ता'दाद मा'लूम कर ली और हज़रत उमर फारूक को इस ता'दाद से आगाह फरमा दिया।** लैकिन अफ्सोस ! दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन यह कहते हैं कि "हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को दीवार के पीछे का भी इल्म नहीं" (मआज़ल्लाह)। हवाला के लिये देखो,किताब "बराहीने कातेआ" अज़ **:** खलील अहमद अम्बेठवी व मुसद्दिका मौलवी रशीद अहमद गंगोही। इल्मे गैब के तअल्लुक से मुफस्सल बहस न करते हुए सिर्फ इशारा कर दिया गया है।

अल-किस्सा ! अमीरुल मो'मिनीन ने हज़रत हुज़ैफा से दर्याफ्त फरमाया कि हज़रत अबू उबैदा ने मुजाहिदों में माले गनीमत तक्सीम कर दिया या नहीं ? हज़रत हुज़ैफा ने अर्ज़ किया, अभी नहीं बल्कि सिर्फ खुम्स (20%) अलग कर के मेरे साथ बैतुल माल में जमा करने के लिये भेजा है। बाकी माल तक्सीम करने के लिये आप के हुक्म के मुन्तज़िर हैं। हज़रत उमर फारूक रदियल्लाहो तआला अन्हो ने गनीमत तक्सीम करने का तहरीरी हुक्म नामा हज़रत हुज़ैफा के हाथ हज़रत अबू उबैदा को इर्साल फरमाया। हज़रत हुज़ैफा अमीरुल मोमिनीन का खत ले कर दमिश्क आए और हज़रत अबू उबैदा को दिया। हज़रत अबू उबैदा ने वह खत मुजाहिदों को पढ़ कर सुनाया और फिर माले गनीमत तक्सीम फरमाया। हर सवार के हिस्सा में चौदह हज़ार मिस्काल सोना और हर पैदल के हिस्सा में आठ हज़ार मिस्काल सोना आया और इसी तरह चांदी भी तक्सीम हूई।

❀ <u>अब तक इस्लामी लश्कर के हाथों फतह होने वाले मकामात</u> :-

(1) अरेका(2) सह्ना (3) तदम्मुर (4) हूरान (5) बसरा (6) बैतुल लहिया (7) अजनादीन (8) दमिश्क (9) हिस्न अबील किद्स (10) जोसिया (11) हुमुस (12) शीरज़ (13) रुस्तन (14) हमात (15) कन्सरीन (16) बा'ल्बक (17) यर्मूक

इस्लामी लश्कर एक महीना दमिश्क में ठहरा। एक महीना गुज़रने के बा'द हज़रत अबू उबैदा ने इस्लामी लश्कर के सरदारों को अपने खैमे में जमा किया और कहा कि मेरा इरादा दमिश्क से कूच करने का है। लैकिन मैं आप हज़रात की राए मा'लूम करना चाहता हूं कि यहां से बैतुल मुकद्दस जाएं या कैसारिया ? सब ने ब-यक ज़बान कहा कि ऐ सरदार ! आप अमीनुल उम्मत हैं। आप का जो भी फैसला होगा वह हम को मुत्तफिका तौर पर मन्ज़ूर है। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि मैं ने अभी तक कोई फैसला नहीं किया है बल्कि मैं यह चाहता हूं कि आप तमाम हज़रात की राए मा'लूम करने के बा'द ही फैसला करूं। इस पर हज़रत मआज़ बिन जबल ने कहा कि ऐ सरदार ! हमारी राए तलब करने से बेहतर है कि आप अमीरुल मोमिनीन की राए तलब करें और अमीरुल मो'मिनीन जो हुक्म फरमाएं उस पर अमल करें। हाज़िरीन ने हज़रत मआज़ बिन जबल का मश्वरा पसन्द किया और हज़रत अबू उबैदा ने उसी वक्त हज़रत अर्फा बिन नासेह नखई को खत दे कर मदीना मुनव्वरा रवाना किया। हज़रत उमर ने खत पढ़ने के बा'द अजिल्ल-ए सहाबए किराम रिज़्वानुल्लाहे तआला अलैहिम अज्मईन को जमा किया और सूरते हाल से आगाह करने के बा'द इन से राए तलब की। हज़रत सय्यिदोना मौला अली मुश्किल कुशा रदियल्लाहो तआला अन्हो ने कहा कि ऐ

अमीरुल मोमिनीन ! आप अबू उबैदा को हुक्म करो कि वह पहले बैतुल मुकद्दस जाएं और बैतुल मुकद्दस फतह करने के बा'द कैसारिया जाएं क्यूं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने मुझ को खबर दी है पहले बैतुल मुकद्दस फतह होगा और इस के बा'द कैसारिया फतह होगा। हज़रत अली रदियल्लाहो तआला अन्हो की बात सुन कर अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर ने फरमाया कि ऐ अबू हसन ! आप सच फरमाते हो। सच फरमाया था मुस्तफा सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने। इस मआमले को अल्लामा वाकदी ने अपनी किताब में इस तरह नक्ल फरमाया है :

"पस कहा हज़रत मुरतज़ा अली कर्रमल्लाहो वज्हहु ने कि ऐ अमीरुल मो'मिनीन ! हुक्म करो तुम अबू उबैदा बिन अल जर्राह को कि जा उतरें वह ब-जमिअत लश्कर मुसल्मानों के बैतुल मुकद्दस पर। पस घेर लेवें उस को और लड़ें वहां के लोगों से कि यह बेहतर और मुबारक राए है। पस जिस वक्त फतह करेगा अल्लाह तआला बैतुल मुकद्दस को फेरें वह अपने लश्कर को ब-जानिबे कैसारिया के कि वह बा'द इस के फतह हो जावेगी अगर चाहा अल्लाह तआला ने। ऐसी ही खबर दी थी मुझ को रसूलल्लाह तआला अलैह व आलेहि व सल्लम ने। हज़रत उमर ने कहा कि सच फरमाया था मुस्तफा सलवातुल्लाहे अलैह ने और सच्चे हो तुम ऐ अबुल हसन"

(हवाला : - फुतूहुश्शाम,अज़ अल्लामा वाकदी,सफहा : 275)

हज़रत सय्यिदोना अली मुरतज़ा रदियल्लाहो तआला अन्हो के मश्वरे को कबूल फरमाते हुए अमीरुल मो'मिनीन हज़रत उमर फारूक ने फौरन हज़रत अबू उबैदा को खत लिखा कि आप पहले बैतुल मुकद्दस जाएं और बैतुल मुकद्दस को फतह करने के बा'द ही ब-जानिबे कैसारिया कूच करें।

नाज़िरीने किराम तवज्जोह फरमाएं कि सय्यिदोना उमर फारूके आ'ज़म और सय्यिदोना मौला अली मुश्किल कुशा रदियल्लाहो तआला अन्हुमा का पुख्ता अकीदा था कि अल्लाह तबारक व तआला ने महबूबे आ'ज़म सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को इल्मे गैब अता फरमाया था और आप जमीए मुगीबात पर मुत्तलेअ थे और आप को यह मा'लूम था कि पहले बैतुल मुकद्दस फतह होगा और बा'द में कैसारिया फतह होगा

और इस मआमले की हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने हज़रत सय्यिदोना अली मुरतज़ा रदियल्लाहो तआला अन्हो को खबर भी दी थी और हज़रत अली रदियल्लाहो तआला अन्हो को अपने आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के इल्मे गैब पर ऐसा यकीन था कि जब हज़रत उमर फारूक ने अजिल्ल-ए सहाबए किराम को मश्वरा के लिये जमा किया तो सहाबए किराम रदियल्लाहो तआला अन्हुम की मजलिस में हज़रत अली ने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के इल्मे गैब पर ए'तमाद व यकीन रखते हुए वही मश्वरा दिया जो हुज़ूरे अक्दस ने गैब की खबर देते हुए फरमाया था कि बैतुल मुकद्दस पहले फतह होगा। सिर्फ सय्यिदोना हज़रत अली ही नहीं बल्कि हज़रत उमर-फारूके आ'ज़म और तमाम सहाबए किराम का पुख्ता अकीदा था कि अल्लाह के महबूबे आ'ज़म को इल्मे गैब हासिल था और इल्मे गैब की बिना पर जो फरमाया है वह सौ फीसद सच है। अल-हासिल ! तमाम सहाबए किराम का यह अकीदा था कि हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को इल्मे गैब था, लैकिन दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन यह कहते हैं कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को इल्म गैब नहीं था। और यह अकीदा रखना कि आप को इल्मे गैब था शिर्क है।

- वहाबी, देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत के इमाम व पेशवा **मौलवी इस्माईल देह्लवी** ने लिखा है :

"किसी नबी,वली या इमाम व शहीद की जनाब में हरगिज़ यह अकीदा न रखे कि वह गैब की बात जानते हैं बल्कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैह व सल्लम के बारे में भी यह अकीदा न रखे।"

(हवाला : - तक्वियतुल ईमान,नाशिर : - दारुस्सल्फिया,बम्बई,सफहा : 47)

- तब्लीगी जमाअत के बानी **मौलवी इल्यास कांधलवी** के पीर व मुर्शिद और वहाबी देवबन्दी तब्लीगी जमाअत के इमाम रब्बानी और मुक्तदा **मौलवी रशीद अहमद गंगोही** साहिब का फत्वा है :

"और यह अकीदा रखना कि आप को इल्मे गैब था, सरीह शिर्क है"

(हवाला : - फतावा रशीदिया, नाशिर : - मक्तबा थानवी, देवबन्द,सफहा : 103)

तअज्जुब की बात है कि जिस अकीदे को सहाबए किराम ने अपनाया और जिस पर यकीन किया, उस अकीदे को दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन शिर्क कह रहे हैं। अब नाज़ेरीन

ही फैसला करें कि मौलवी इस्माईल देहलवी और मौलवी रशीद अहमद गंगोही के मुन्दरजा बाला फतावे किन पर चस्पां हो रहे हैं ?

अल-किस्सा ! अमीरुल मो'मिनीन हज़रत उमर फारूक का जवाबी खत ले कर हज़रत अर्फा बिन नासेह नखई मदीना मुनव्वरा से निकले। इधर हज़रत अबू उबैदा इस्लामी लश्कर को ले कर दमिश्क से बाहर जाबिया नामी मकाम पर पड़ाव किये हुए थे। हज़रत अर्फा ने जाबिया पहुंच कर हज़रत अबू उबैदा को अमीरुल मो'मिनीन का खत दिया।

हज़रत अबू उबैदा ने तमाम मुसल्मानों को जमा कर के खत पढ़ा। मज़्मून सुन कर तमाम हाज़िरीन खुश हुए और कहा कि जब हज़रत उमर फारूके आ'ज़म और हज़रत अली रदियल्लाहो तआला अन्हुमा ने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की पैशीन गोई के मुताबिक फतह की बशारत दी है तो इन्शा अल्लाह बैतुल-मक्दिस ज़रूर फतह होगा। हज़रत अबू उबैदा ने उसी वक्त इस्लामी लश्कर से फरमाया कि अमीरुल मोमिनीन के हुक्म के मुताबिक हम पहले बैतुल मुकद्दस की तरफ कूच करेंगे।

जंगे बैतुल मुकद्दस

हज़रत अबू उबैदा ने जाबिया से इस्लामी लश्कर को हस्बे ज़ैल तर्तीब से बैतुल मुकद्दस की जानिब रवाना फरमाया और हर एक सरदार को निशान (अलम) अता फरमाया।

- पहले दिन हज़रत यज़ीद बिन अबू सुफ्यान को पांच हज़ार सवारों पर सरदार मुकर्रर फरमा कर रवाना किया।
- दूसरे दिन हज़रत शुर्हबील बिन हसना को पांच हज़ार सवारों पर सरदार मुकर्रर फरमा कर रवाना किया।
- तीसरे दिन हज़रत मिरकाल हाशिम बिन उतबा को पांच हज़ार सवारों पर सरदार मुकर्रर फरमा कर रवाना किया।
- चौथे दिन हज़रत मुसय्यब बिन नजीबा फज़ारी को पांच हज़ार सवारों पर सरदार मुकर्रर फरमा कर रवाना किया।
- पांचवें दिन हज़रत कैस बिन हबीरा मुरादी को पांच हज़ार सवारों पर सरदार मुकर्रर फरमा कर रवाना किया।
- छटे दिन हज़रत उरवा बिन महलहल बिन यज़ीद अल-जबल को पांच हज़ार सवारों पर सरदार मुकर्रर फरमा कर रवाना किया।

मुन्दरजा बाला तर्तीब से हज़रत अबू उबैदा ने छे (६) दिन में तीस हज़ार का इस्लामी लश्कर जाबिया से बैतुल मुकद्दस रवाना फरमाया। बाकी लश्कर मअ मस्तूरात, अतफाल, सवारीयां और सामान, जाबिया में मुकीम रहा और हज़रत अबू उबैदा व हज़रत खालिद बिन वलीद बाकी लश्कर के साथ जाबिया में ठहरे रहे।

बैतुल मुकद्दस में इस्लामी लश्कर की आमद :-

सब से पहले हज़रत यज़ीद बिन अबू सुफ्यान पांच हज़ार सवारों के साथ बैतुल मुकद्दस पहुंचे और किल्ले के बाहर थोड़े फास्ला पर "बाबे इरहा" के सामने पड़ाव

किया। इस्लामी लश्कर ने आते ही तक्बीरो तहलील के फलक शगाफ ना'रे बुलन्द किया, इन फलक शगाफ ना'रों की धमक सुन कर अह्ले शहर चौंक उठे और किल्ले की दीवार पर चढ़ कर देखा, तो बाबे इरहा के सामने इस्लामी लश्कर अपना कैम्प खड़ा कर रहा था। रूमियों ने सिर्फ पांच हज़ार का कलील लश्कर देख कर इस्लामी लश्कर को मा'मूली व हकीर जाना। दूसरे दिन हज़रत शुर्हबील बिन हसना और तीसरे दिन हज़रत मिरकाल हाशिम बिन उतबा अपने अपने लश्करों के साथ तक्बीर व तहलील कहते हुए आए और "बाबे गर्बी" के सामने कुछ फास्ला पर पड़ाव किया। चौथे दिन हज़रत मुसय्यब बिन नजीबा फज़ारी अपने लश्कर के साथ आ पहुंचे और "बाबे वस्ता" के सामने ठहरे। पांचवें दिन हज़रत कैस बिन हबीरा मुरादी का लश्कर नारए तक्बीर व तहलील बुलन्द करता हुवा आया और वह भी बाबे वस्ता के सामने हज़रत मुसय्यब फज़ारी के लश्कर के करीब खैमा ज़न हुवा। छटे रोज़ हज़रत उरवा बिन महलहल बिन यज़ीद अल-जबल अपने लश्कर के साथ आए और "रमला" के रास्ता के करीब "मेहराबे दावूद" से मुत्तसिल कैम्प लगाया।

इस तरह तीस हज़ार के इस्लामी लश्कर ने बैतुल मुकद्दस के किल्ले का मुहासरा कर लिया। रोज़ाना इस्लामी लश्कर की एक किस्त आती। आने पर शौरो गुल होता। जिसे सुन कर रूमी किल्ले की दीवार पर चढ़ते। थोड़ी दैर मुआइना करते। फिर उतर जाते। बैतुल मुकद्दस का किल्ला निहायत बुलन्द, वसीअ और मज़बूत था। जिस दिन इस्लामी लश्कर की पहली बटालियन बैतुल मुकद्दस आई थी उसी दिन से रूमियों ने किल्ले की फसील पर चारों तरफ ईंट, पत्थर, के ढैर लगा दिये थे। तीर कमानें, आलाते हर्ब व ज़र्ब जमा कर दिया था, लैकिन कुछ ता'रुज़ नहीं करते थे। इस्लामी लश्कर की आखरी किस्त को बैतुल मुकद्दस पहुंचे तीन दिन गुज़र गए, लैकिन अह्ले शहर किल्ले में महसूर बैठे रहे। हर दिन किल्ले की दीवार पर आते, इस्लामी लश्कर को देखते, फिर कुछ दैर बा'द नीचे उतर जाते। रूमियों की तरफ से किसी किस्म की कोई हर्कत नहीं होती थी बल्कि **टुक टुक दीदम, दम न कशीदम** का मआमला था।

इस्लामी लश्कर ने तीन दिन इन्तिज़ार किया कि शायद अह्ले शहर किसी एलची को भेजेंगे और लड़ाई या सुलह के मआमला में गुफ्तगू करेंगे, मगर न तो कोई कासिद आया न किसी रूमी ने ज़ाती तौर पर मुजाहिदों से कोई गुफ्तगू की और न ही रूमियों की जानिब से किसी किस्म का कोई हम्ला हुवा। गोया कि वह इस्लामी लश्कर की आमद से बे-खबर हों और यह ज़ाहिर करने की कौशिश की कि हमारे नज़दीक तुम्हारी कोई वक्अत

और अहमियत नहीं। हालां कि इस्लामी लश्कर से गाहे गाहे तक्बीर व तहलील की सदाएं बुलन्द होती रहती थीं और वह सुनते थे। और शहर पनाह की फसील से इस्लामी लश्कर को वह देखते भी थे, मगर फिर भी वह कस्दन अंधे और गूंगे बने बैठे थे। इस्लामी लश्कर के एक मुजाहिद ने चौथे रोज़ हज़रत शुर्हबील बिन हसना से कहा कि ऐ सरदार! क्या बैतुल मुकद्दस के बाशिन्दे बहरे हैं जो हमारी आवाज़ें नहीं सुनते? या अंधे हैं जो हमें नहीं देखते? या गूंगे हैं जो बात नहीं करते? ऐ सरदार! हम को इन पर हम्ला करने की इजाज़त अता करो। हज़रत शुर्हबील ने फरमाया कि इन लोगों को अपनी कसरत पर नाज़ और किल्ले की मज़बूती पर ए'तमाद है।

उसी दिन हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान अपने साथ चंद हथियार बन्द मुजाहिद और एक मुतर्जिम को साथ ले कर किल्ले की दीवार के करीब गए। किल्ले की फसील पर रूमी खामौश खड़े इन की तरफ देख रहे थे। मुतर्जिम ने पुकार कर कहा कि ऐ बैतुल मुकद्दस के बाशिन्दो! इस्लामी लश्कर के सरदार तुम से गुफ्तगू करना चाहते हैं। रूमियों ने जवाब में कहा कि किस मआमला में बात चीत करना चाहते हैं। हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान ने मुतर्जिम के तवस्सुत से फरमाया कि कल्मए हक्क **"ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"** पढ़ कर इस्लाम में दाखिल हो जाओ, हमारी दा'वत कबूल कर के हमारे भाई बन जाओ और हमारी तलवारों से अपनी जानें मामून कर लो, अल्लाह तआला तुम्हारे माज़ी के गुनाहों को बख्श देगा। तमाम रूमियों ने जवाब में कल्मए कुफ्र बुलन्द किया और शौर मचाने लगे और कहा कि हम अपना मज़हब हरगिज़ नहीं छोड़ेंगे। अपने दीन से मुन्हरिफ होने से मर जाना बेहतर समझते हैं। हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान ने फरमाया कि अगर तुम को दीने इस्लाम कबूल करने से इन्कार है तो फिर जिज़्या अदा करना होगा, तब हम से अमान हासिल कर सकोगे वर्ना हमारे और तुम्हारे दरमियान तल्वार फैसला करेगी। रूमियों ने कहा कि जिज़्या अदा कर के हम ज़लील होना नहीं चाहते और हम को तुम्हारे अमान की कोई हाजत नहीं। हम तुम से हर हालत में लड़ेंगे, लैकिन अपने दीन से मुन्हरिफ होना या जिज़्या अदा करना, दोनों बातें हमें कतअन मन्जूर नहीं। लिहाज़ा तुम से जो हो सके करो,हम तुम को देख लेंगे।

हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान मुन्दरजा बाला गुफ्तगू करने के बा'द अपने कैम्प में आए और लश्कर के तमाम सरदारों को जमा कर के सूरते हाल से आगाह किया और कहा कि आप हज़रात की क्या राए है? हमें इन पर हम्ला करना चाहिये या इसी तरह तवक्कुफ

करना चाहिये ? क्यूं कि हमारे सिपेह सालारे आज़म ने हम को बैतुल मुकद्दस को सिर्फ मुहासरा करने का हुक्म दिया है, हम्ला करने का हुक्म नहीं दिया। तमाम सरदारों ने कहा कि मुनासिब यह है कि हम पहले हज़रत अबू उबैदा को पूरी कैफियत लिखें और वह जैसा हुक्म दें, इस के मुताबिक अमल करें, चुनान्चे हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान ने कासिद के ज़रीए फौरन हज़रत अबू उबैदा की खिदमत में नामा इर्साल किया और यहां की तमाम कैफियत कलमबन्द की। हज़रत अबू उबैदा की तरफ से जवाब आया कि मैं तुम्हें हुक्म देता हूं कि बैतुल मुकद्दस के किल्ले पर हम्ला शुरू करो। और मैं भी इस्लामी लश्कर और हज़रत खालिद बिन वलीद के हमराह जाबिया से रवाना हो कर बैतुल मुकद्दस पहुंच रहा हूं। तुम मेरे आने का इन्तिज़ार मत करना बल्कि खत मिलते ही हम्ला शुरू कर दो।

हज़रत अबू उबैदा का खत हज़रत यज़ीद बिन सुफ्यान ने तमाम सरदारों के पास भेजा। उन्हों ने अपने लश्कर को खत पढ़ कर सुनाया। खत सुन कर तमाम मुजाहिदीन खुश हुए और सब ने खुशी व मसर्रत के साथ रात गुज़ारी। रात भर मुजाहिदीन अपने हथियारों को दुरुस्त करने और जंग की तैयारी में मस्रूफ रहे और सुब्ह का इन्तिज़ार करने लगे।

जंगे बैतुल मुकद्दस का पहला दिन

रात की बिखरी हूई सियाह ज़ुल्फें सिमटीं और किनारए उफक से तुलूए फज्र के आसार नमूदार हुए, लश्कर में मुअज़्ज़िनों ने अज़ान दी। हर सरदार ने अपने लश्कर के साथ बा-जमाअत नमाज़े फज्र अदा की। हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान ने अपने लश्कर की इमामत की और कुरआन शरीफ की सूरए माइदा की तिलावत शुरू की और जब इस आयत पर पहुंचे :

يَا قَوْمِ ادْخُلُوا الْأَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِي كَتَبَ اللهُ لَكُمْ
وَلَا تَرْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوا خَاسِرِينَ

(सूरए माइदा, आयत : 21)

तर्जुमा : ''ऐ कौम इस पाक ज़मीन में दाखिल हो, जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये लिखी है और पीछे न पलटो कि नुक्सान पर पलटोगे।''

(कन्ज़ुल ईमान)

नमाज़ियों पर खशीयते इलाही तारी हो गई। इत्तिफाक की बात है कि हर इमाम ने उस दिन नमाज़े फज्र में इसी आयत की तिलावत की। नमाज़ की तक्मील के बा'द तमाम मुजाहिद मुसल्लह हो कर मैदान में आए। हर तरफ से इस्लामी लश्कर ने किल्ले पर हम्ला किया, अह्ले शहर जवाबी हम्ला के लिये मुस्तइद थे। उन्हों ने तीरों की बौछार शुरू की और मिन्जेनीक से पत्थरों की बारिश बरसाई। बाशिन्दगाने बैतुल मुकद्दस ने इस्लामी लश्कर का ज़रा भी खौफ व डर महसूस न किया और दिलैरी से लड़ते हुए तीर और पत्थर बरसाते रहे। सुब्ह से शाम तक मुसल्सल मुकाबला होता रहा। इस्लामी लश्कर के बहुत से अफ्राद शदीद ज़ख्मी,और कुछ शहीद भी हुए। जब आफ्ताब दामन उफुक में पनाह गुज़ीं हुवा तब जंग मौकूफ हूई और इस्लामी लश्कर अपने अपने सरदार के हमराह कैम्प में वापस आया।

❁ जंग का दूसरा और फिर मुसल्सल ग्यारहवां दिन :-

दूसरे दिन बा'द नमाज़े फज्र तमाम सरदार अपने अपने लश्करों को ले कर किल्ले

की तरफ रवाना हुए। मुजाहिदीन अल्लाह तआला का ज़िक्र करते और हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम पर दुरूद पढ़ते हुए आगे बढ़ रहे थे। किल्ले से कुछ फास्ला पर ठहर कर तीर चलाना शुरू किया। किल्ले की दीवार पर मिन्जेनीक और कमानों से पत्थर और तीर बरसने शुरू हुए। रूमी बराबर जवाबी हम्ला करते और किसी तरह भी मग्लूब व खाइफ नहीं थे, बल्कि आली हिम्मती और दिलैरी से लड़ते थे। इस दिन भी गुज़िश्ता कल जैसी कैफियत रही। मैदान से मुजाहिदीन और किल्ले की दीवार से रूमी एक दूसरे पर शाम तक तीर और पत्थर फैंकते रहे और आफ्ताब गुरूब होने पर जंग मौकूफ हूई और इस्लामी लश्कर कैम्प में वापस आया। इसी तरह मुसल्सल दस दिन तक लड़ाई होती रही। हस्बे मा'मूल नमाज़ फज्र के बा'द जंग शुरू होती और गुरूबे आफ्ताब के वक्त मौकूफ होती। हालां कि इन अय्याम में इस्लामी लश्कर ने किल्ला फतह करने की इन्तेहाई कौशिश की, मगर काम्याबी हासिल न हूई। रूमी किसी को भी किल्ले की फसील के करीब आने नहीं देते। जो कोई जुर्अत कर के किल्ले की दीवार के नज़दीक जाने की कौशिश करता उस पर कसरत से तीर और पत्थर बरसा कर ज़ख्मी कर देते और उस को मजबूरन पीछे हटना पड़ता। रूमियों ने दस दिन तक इस्लामी लश्कर का बराबर मुकाबला किया और किसी किस्म के खौफ व हरास में मुब्तला न हुए बल्कि दिलैरी से लड़ते रहे। मुल्के शाम में शायद यह पहला मा'रका था कि रूमियों ने इस्लामी लश्कर से मुत्लक खौफ न खाया और लड़ाई के मआमला में जुर्अत व दिलैरी दिखाई।

हज़रत अबू उबैदा और हज़रत खालिद की बैतुल मुकद्दस आमद :-

जंग के ग्यारहवें दिन हज़रत अबू उबैदा इस्लामी लश्कर के साथ बैतुल मुकद्दस आ गए। इन के आने की इत्तिला' मिलते ही मुजाहिदों में खुशी की लहर दौड़ गई। थोडी देर में हज़रत अबू उबैदा के लश्कर का निशान नमूदार हुवा। इस निशान को हज़रत गालिबा बिन सालिम ने उठाया था। हज़रत अबू उबैदा के दाऐं तरफ हज़रत खालिद बिन वलीद और बाऐं तरफ हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र सिद्दीक थे। जब हज़रत अबू उबैदा का लश्कर करीब आ पहुंचा तो, बैतुल मुकद्दस में मुकीम इस्लामी लश्कर के तमाम मुजाहिदों ने तहलील व तक्बीर से इन का खैर मुकद्दम किया। एक साथ हज़ारों मुजाहिदों ने बुलन्द आवाज़ से तहलील व तक्बीर के ना'रे लगाए और इस सदा से किल्ले की दीवारें और पूरा शहर गूंज उठा। पैहम तकबीरों की आवाज़ें सुन कर अह्ले शहर हैरत व ता'ज्जुब में पड़े कि आखिर क्या मआमला है? मुसल्मान क्यूं शौर कर रहे हैं? किल्ले की फसील से ब-

गौर देखा तो मा'लूम हुवा कि मुसल्मानों के सरदार लश्कर के साथ आ पहुंचे हैं। इस्लामी लश्कर की कुमुक आने पर अब रूमी कुछ घबराए और इन के दिलों में रोअब समाया, लिहाज़ा रोउसा और बतारेका शहर के बड़े कनीसा के बतरीक के पास आए। इस बतरीक का नाम "कुमामा" था और जो तमाम बत्रीकों और राहिबों से मुअज़्ज़ज़ और बुड्ढा था। सब उस की अज़्मत के काइल थे और उस की बेहद इज़्ज़त व तक्रीम करते थे। बतरीक कुमामा दीने नस्रानिया और दीने यहूद का ज़बर दस्त आलिम था। तौरेत,इन्जील,ज़बूर और दीगर कुतुबे साबिका और मलाहिम की मा'लूमात के सिल्सिले में मुल्के शाम में उस का कोई सानी न था।

अह्ले शहर ने कनीसा में जा कर बतरीक कुमामा को ता'ज़ीमी सजदा किया और उस के सामने अदब व एहतराम से खड़े रहे। ऐन उसी वक्त इस्लामी लश्कर से नारए तक्बीर की सदा बुलन्द हूई जिस की आवाज़ बतरीक कुमामा के कानों तक पहुंची। बतरीक कुमामा ने हाज़िरीन से पूछा कि आज क्या मआमला है कि मुसल्मान गाहे गाहे शौर बुलन्द करते हैं। अह्ले शहर ने कहा कि आज मुसल्मानों का सरदार यहां आया है, जिस की खुशी में मुसल्मान बार बार शौर मचाते हैं। बतरीक कुमामा ने जब सुना कि इस्लामी लश्कर का सरदार आया है तो उस के चेहरे का रंग उड़ गया और वह ज़ौर से **"ही ही"** कहने लगा। मुसल्सल कईं मरतबा वह **"ही ही"** कहता रहा और उस पर एक अजीब कैफियत तारी हो गई। रूमी ज़बान में अफ्सोस और गम का इज़्हार करने के लिये **"ही ही"** का कल्मा इस्ते'माल होता है। अह्ले शहर ने बतरीक कुमामा की मुतगय्यर हालत देखी तो उन्हों ने कहा कि ऐ हमारे मुअज़्ज़ज़ रहबर! इस तरह अफ्सोस का इज़्हार करने की वजह क्या है? बतरीक कुमामा ने कहा कि कसम है हक्के इन्जील की! अगर यह वही सरदार है तो तुम्हारी हलाकत नज़्दीक है। अह्ले शहर ने कहा कि ऐ हमारे आका! हम आप की बहुत ही इज़्ज़त व ता'ज़ीम करते हैं। आप की यह बात हमारी समझ में नहीं आती, लिहाज़ा ब-राहे करम आप वज़ाहत से अपनी बात हम को बावर कराएं।

बतरीक कुमामा ने जवाब में कहा :

"जो इल्म मुझ को मुतकद्दिमीन से ब-तौर विरासत मिला है इस से मुझे मा'लूम हुवा है कि मुल्के शाम को मुहम्मद नबी सल्लल्लाहो तआला अलैह व आलेहि व सल्लम के एक सुर्ख रंग के सहाबी फतह करेंगे। अगर वाकई यह सरदार वही सहाबी है, तो हम में इन का मुकाबला करने की कोई ताकत नहीं। लिहाज़ा ज़रूरी है कि मैं मुसल्मानों के सरदार

को देखुं। अगर मैं ने इन में वही सिफात पाए जो अगली किताबों में मज़्कूर हैं, तो मैं इन से सुलह कर लूंगा और वह जो भी इरादा करेंगे इस को कबूल कर लूंगा और शहर इन को सुपुर्द कर दूंगा क्यूं कि इस के सिवा और कोई चारा नहीं। और अगर यह सरदार वह सहाबी नहीं बल्कि दूसरा कोई है तो मैं हरगिज़ इस से सुलह कर के शहर सुपुर्द नहीं करूंगा बल्कि तुम को हुक्म दूंगा कि इन से लड़ो और लड़ाई में शिद्दत करो"

हज़रत अबू उबैदा को देखने बतरीक कुमामा की फसीले शहर पर आमद

बतरीक कुमामा उसी वक्त उठ खड़ा हुवा और राहिबों व बतारका की जमाअत के हमराह कनीसा से बाहर निकला। बतरीक कुमामा ब-शक्ल जुलूस किल्ले की दीवार की तरफ रवाना हुवा। राहिब और बतरीक इन्जील साथ में लिये और सलीब बुलन्द किये हुए इस को जिलू में ले कर चल रहे थे। बतरीक कुमामा किल्ले की दीवार पर आया और इस्लामी लश्कर की जानिब देखा तो मुसल्मान अपने सरदार की ता'ज़ीम व तक्रीम और हदियए सलाम पैश करने में मश्गूल थे। फिर थोड़ी देर के बा'द इस्लामी लश्कर ने किल्ले पर हम्ला शुरू किया। तब बतरीक कुमामा के हुक्म से एक रूमी ने फसीह अरबी ज़बान में पुकार कर कहा कि ऐ गिरोहे अरब ! तुम थोड़ी देर के लिये लड़ाई मौकूफ कर दो ताकि हम तुम से कुछ सवाल और तलबे खैर करें। तमाम मुजाहिदों ने जंग मौकूफ कर दी और कहा कि तुम क्या कहना चाहते हो ? उस रूमी ने कहा कि हमारी किताबों में तुम्हारे उस सरदार का ज़िक्र है जो इस शहर को और दीगर बहुत से शहरों को फतह करेगा। तुम्हारे उस सरदार की सिफत और हुलिया भी हम को मा'लूम है, लिहाज़ा तुम अपने सरदार को हमारे सामने लाओ ताकि हमारे सब से मुअज़्ज़ज़ रहबर और राहिब इन को देखें। अगर तुम्हारे सरदार वही शख्स हैं, तो हम तुम से लड़े बगैर शहर तुम्हारे हवाले कर देंगे और अगर तुम्हारे सरदार वही शख्स नहीं बल्कि दीगर हैं, तो हम तुम से जंग जारी रखेंगे।

रूमी मुनादी की यह बात सुन कर मुजाहिदों ने हज़रत अबू उबैदा को इस अम्र की इत्तिला' दी, रूमियों की दरख्वास्त के मुताबिक हज़रत अबू उबैदा किल्ले की दीवार के करीब गए। बतरीक कुमामा हज़रत अबू उबैदा को दैर तक ब-नज़रे गाइर देखता रहा और इन की सूरत और हुलिया का मुआइना करता रहा और अगली किताबों में मज़्कूर सिफात से मुवाज़ना करता रहा। बतरीक कुमामा ने हज़रत अबू उबैदा से कोई गुफ्तगू नहीं की, सिर्फ

इन को करीब से देखा और अपनी कौम से कहा कि यह वह शख्स नहीं। इत्ना कह कर वह किल्ले की दीवार से उतर कर अपने कनीसा में चला गया। कनीसा में रोउसाए शहर, बतारेका और राहिब की भीड़ लग गई। बतारेका ने कनीसा में आ कर मज़ीद वज़ाहत की गरज़ से बतरीक कुमामा से पूछा कि ऐ मुअज़्ज़ज़ रहबर ! आप ने क्या देखा और अब आप क्या हुक्म फरमाते हैं ? बतरीक कुमामा ने कहा कि मुसल्मानों के सरदार को ब-गौर देखा, लैकिन उस में वह सिफत न देखी जो अगली किताबों में मज़्कूर है। लिहाज़ा खुश हो कि यह शख्स हमारा शहर फतह नहीं कर सकेगा, अपने दीने मसीह की खातिर इन से लड़ो और दिलैरी से लड़ो और इन पर शदीद हम्ले जारी रखो। बतरीक कुमामा की बात सुन कर अह्ले शहर खुशी से मचल गए और अपनी मसर्रत का इज़्हार करते हुए कल्मए कुफ्र के ना'रे बुलन्द किये और तमाम रूमी एक नए जौशो खरौश के साथ जंग की तरफ मुल्तफित हुए।

हज़रत अबू उबैदा किल्ले की दीवार के करीब जा कर बतरीक कुमामा को अपने दीदार से मुशर्रफ फरमाने के बा'द जब इस्लामी लश्कर के कैम्प में वापस आए तो वह भी मुतहैयर थे। क्यूं कि रूमियों के बड़े राहिब ने इन से किसी किस्म की कोई गुफ्तगू ही न की और सिर्फ इक नज़र देख कर वापस पलट गया था। हज़रत खालिद बिन वलीद ने इन से पूछा कि ऐ अमीनुल उम्मत ! रूमी बतरीक से क्या बात चीत हूई ? हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि ऐ अबू सुलैमान ! तअज्जुब की बात है जब मैं शहर पनाह से करीब गया तो इन का एक बुढ्ढा राहिब नमूदार हुवा और वह मुझे घूर घूर कर देखने लगा। मुझ से कोई बात चीत नहीं की और फिर अपनी कौम से कुछ कहा और चला गया। हज़रत खालिद ने कहा कि ज़रूर इस में कोई राज़ है। हालां कि इस वक्त वह राज़ ज़ाहिर नहीं हुवा, लैकिन इन्शा अल्लाह अन्करीब हम इस राज़ पर मुत्तलेअ हो जाएंगे।

मुसल्सल चार माह शहर का मुहासरा और बतरीक कुमामा से दो-बारा गुफ्तगू

हज़रत अबू उबैदा के किल्ले की दीवार से वापस आने के बा'द हज़रत खालिद बिन वलीद ने किल्ले पर सख्त हम्ला किया। बतरीक कुमामा ने भी अपनी कौम को लड़ने की तर्गीब दी, फरीकैन में सख्त लड़ाई हूई। इस्लामी लश्कर खुले मैदान में रह कर तीर अन्दाज़ी और पत्थर बाज़ी करता और रूमी किल्ले की फसील से तीर और पत्थर बरसाते। इस्लामी लश्कर खुले मैदान में होने की वजह से महले खतरा में थे लिहाज़ा वह बहुत

एहतियात बरत्ते थे। ढाल और सिपर की आड़ में छुप कर तीर अन्दाज़ी करते थे, जब कि रूमी किल्ले की दीवार पर होने की वजह से बे खौफ थे और बे मुहाबा इधर उधर आते जाते, लैकिन इन की बे एहतियाती का मुजाहिदीन भर पूर फाइदा उठा कर इन पर निशाना बांध कर तीर मारते और इन को किल्ले की दीवार से नीचे गिरा देते। हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर ने एक बड़े बतरीक को देखा कि जिस के सर पर सोने की सलीब थी और उस के इर्द गिर्द उस के खुद्दाम व गुलाम थे और वह बतरीक रूमियों को लड़ाई की तर्गीब देता था। हज़रत ज़िरार ढाल के नीचे अपने को छुपाते हुए किल्ले की दीवार के करीब, जिस बुर्ज पर वह बतरीक खड़ा था, उस के नीचे पहुंच गए और कमान में तीर चढ़ा कर बतरीक का निशाना लगाया और "بِسۡمِ اللّٰہِ وَ عَلٰی مِلَّۃِ رَسُوۡلِ اللّٰہِ" कह कर तीर चलाया। तीर बगैर खता किये ठीक अपने निशाने पर लगा। वह बतरीक रूमियों को सामाने जंग तक्सीम कर रहा था कि नागाह हज़रत ज़िरार का तीर उस के हलक में पैवस्त हो गया। हलक में तीर लगते ही वह बतरीक हड़बड़ा उठा। इत्तिफाक से वह किल्ले की दीवार के बिल्कुल किनारे खड़ा था। तीर का ज़ख्म लगने से उस ने अपने जिस्म का तवाज़ुन खो दिया और किल्ले की दीवार से ज़मीन पर गिरा। ज़मीन पर भी सर के बल गिरा और इस का सर नारियल की तरह दो हिस्सों में तक्सीम हो गया। इसी तरह इस्लामी लश्कर के तीर अन्दाज़ों ने कसीर ता'दाद में रूमियों को तीर मार कर किल्ले की दीवार से गिराया, लिहाज़ा रूमियों ने ढालों और चमड़े के नम्दों की आड़ और पनाह खड़ी कर दी।

उन दिनों कड़ाके की सर्दी थी। जाड़े की शिद्दत का यह आलम था कि दांत से दांत बजते थे और हाथ पाऊं शल हुए जाते थे। ऐसी सख्त ठंडक के मौसम में इस्लामी लश्कर खुले मैदान में पड़ा हुवा था। रूमी इस गुमान में थे कि सख्त गर्मी वाले मुल्के अरब के बाशिन्दे सर्दी बरदाश्त न कर सकेंगे और भाग जाएंगे, लैकिन मुजाहिदीन सब्रो इस्तिक्लाल से जमे रहे और मुसल्सल चार महीने तक जंग जारी रही, लैकिन कोई नतीजा बर आमद नहीं हुवा। रोज़ाना फरीकैन के आदमी ज़ख्मी होते और मरते थे।

लड़ाई का इस कद्र तूल पकड़ने की वजह से रूमी चार माह से किल्ले में महसूर रह कर तंग आ गए थे। शहर के रोउसा व उम्रा बतरीक कुमामा के पास कनीसा में आए। बतरीक कुमामा को ता'ज़ीमी सजदा किया और उस के सामने की ज़मीन को बोसा दे कर उस की ता'ज़ीम व तक्रीम बजा लाई और हाथ बांधे बा अदब खड़े रहे। बतरीक कुमामा आंखें बन्द कर के समाधी में बैठा हुवा अपने गिर्द व पैश के माहौल से बे-खबर था। जब उस ने

समाधी पूरी कर के आंखें खोलीं, तो कौम को अपने सामने इस्तिदा देख कर आने का सबब दर्याफ्त किया। कौम ने कहा कि ऐ हमारे रहबर! अरबों ने मुसल्सल चार महीने से किल्ले का मुहासरा कर रखा है और कोई दिन ऐसा नहीं गुज़रता कि हमारे कुछ आदमी न मारे जाते हों हालां कि इन के भी आदमी मारे जाते हैं, लैकिन वह मौत की परवाह नहीं करते और हमारी ब निस्बत वह लड़ाई के ज़ियादह ख्वाहिशमन्द हैं। हम को यह उम्मीद थी कि हिरक्ल बादशाह हमारी कुमुक करने बज़ाते खुद आएगा या किसी लश्कर को भेजेगा, लैकिन यर्मूक की जंग में शिकस्त व रीख्त से दो चार होने के बा'द वह अपने काम का नहीं रहा। आप की ज़ाते गिरामी हमारे लिये सब कुछ है, लिहाज़ा आप इस का मुनासिब हल ढूंढ निकालें और हमें मुसीबत से नजात दिलाएं। आप फिर एक मरतबा इन के सरदार से गुफ्तगू कर के सुलह की कोई सबील पैदा करें। हम चार महीने से किल्ले में महसूर रह कर इत्ना तंग आ गए हैं कि अब हम ने कस्द किया है कि शहर का दरवाज़ा खोल कर हम मैदान में लड़ने निकलें और यक-बारगी अरबों पर हम्ला कर के इन को खत्म कर दें या खुद हलाक हो जाएं। इस सूरत में इस पार या उस पार कुछ भी नतीजा निकल आएगा और हम मुहासरे की कुल्फत से नजात हासिल करेंगे।

कौम की पर सौज़ इल्तिमास पर बतरीक कुमामा फौरन उठ खड़ा हुवा और किल्ले की फसील पर आया। बतरीक कुमामा के मुर्तजिम ने बुलन्द आवाज़ से पुकारा कि ऐ गिरोहे अरब! दीने नस्रानियत का उमदा शख्स और दीने मसीह का सब से बड़ा आलिम व आमिल तुम्हारे सरदार से गुफ्तगू करने आया है, लिहाज़ा अपने सरदार को किल्ले की दीवार के करीब भेजो। मुजाहिदों ने फौरन हज़रत अबू उबैदा को इत्तिला' पहुंचाई, हज़रत अबू उबैदा सहाबए किराम की एक जमाअत को अपने साथ ले कर किल्ले की दीवार के करीब बतरीक कुमामा के सामने ठहरे। बतरीक कुमामा ने कहा कि ऐ गिरोहे अरब के सरदार! हमारा यह शहर अर्दे मुकद्दस है और इस शहर के साथ बुराई का इरादा करने वाले पर अल्लाह का गज़ब नाज़िल होता है और अल्लाह तआला उस को हलाक करता है। तुम इस शहर का मुहासरा तर्क कर के यहां से चले जाओ वर्ना तुम पर अल्लाह का गज़ब और अज़ाब नाज़िल हो सक्ता है। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि हमें मा'लूम है कि यह शहर मुकद्दस और बा बरकत है। इसी शहर से **हमारे नबी हज़रत मुहम्मद** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम मे'राज में आस्मान पर तशरीफ ले गए थे और अपने रब से इतने करीब हुए। यही हमारा किब्लए अव्वल और सालेसा हरम है। इलावा अज़ीं यह शहर मा'दने अम्बिया है और इस शहर में ऊलूल-अज़्म अम्बिया व मुर्सलीन के मज़ारात हैं।

हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रदियल्लाहो तआला अन्हो के मुन्दरजा बाला जवाब को इमामे सैर व तवारीख हज़रत अल्लामा मुहम्मद बिन अम्र वाकदी कुद्दिसा सिर्रहु ने इस तरह नक्ल फरमाया है :

"पस कहा अबू उबैदा बिन अल जर्राह ने मुतर्जिम से कि कह तू उन से कि हम जानते हैं इस अम्र को कि यह शहर बुज़ुर्ग है और इसी शहर से तशरीफ ले गए थे हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैह व आलेहि व सल्लम और नज़्दीक हुए थे अपने परवर्दगार से। पस करीब हुए थे वह ब-कद्र दो गोशा कमान के बल्कि कमतर इस से और यह शहर मा'दने अम्बिया और इन की कब्रें इस में हैं।

(हवाला : फुतूहुश्शाम, अज़ : अल्लामा वाकदी, सफहा : 280)

नाज़िरीने किराम तवज्जोह फरमाएं कि हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह का यह अकीदा था कि **हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम बैतुल मुकद्दस से अपने जिस्मे अक्दस के साथ मे'राज में तशरीफ ले गए और इन को अल्लाह का इत्ना कुर्ब हासिल हुवा था जैसे कि दो कमानों के दरमियान फास्ला होता है या इस से कम। लैकिन दौरे हाज़िर के कुछ मुनाफिकीन **हुज़ूरे अकरम** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की मे'राजे जिस्मानी का इन्कार करते हैं और यह कहते हैं कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को ख्वाब में मे'राज हूई थी और वह अपने जिस्म के साथ मे'राज में नहीं गए थे।

हालां कि **हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की जिस्मानी मे'राज का सुबूत कुरआन शरीफ की सूरए बनी इसराईल की पहली आयत में मौजूद है। बल्कि अपने रब से करीब होने का बयान व सुबूत भी कुरआन शरीफ में है :

ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ☆فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنىٰ ☆ فَأَوْحىٰ إِلىٰ عَبْدِهٖ
مَا أَوْحىٰ ☆ مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰى ☆ أَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلىٰ مَا يَرىٰ

(सूरए नज्म, आयत : 8 ता 12)

तर्जुमा : **"फिर वह जल्वा नज़्दीक हुवा फिर खूब उतर आया, तो उस जल्वे और उस महबूब में दो हाथ का फास्ला रहा बल्कि उस से भी**

मर्दाने अरब ...... हिस्सा दौम

कम। अब वही फरमाई अपने बन्दे को जो वही फरमाई। दिल ने झूट न कहा जो देखा। तो क्या तुम इन से इन के देखे हुए पर झगड़ते हो।"

(कन्ज़ुल ईमान)

मे'राजे जिस्मानी के मौज़ूअ पर तफ्सीली गुफ्तगू यहां मुम्किन नहीं। सूरए नज्म की मुन्दरजा बाला आयात की तफ्सीर का मुतालआ करने से हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की मे'राजे जिस्मानी और अपने रब से करीब होने का सुबूत हासिल होगा। अल-हासिल हुज़ूरे अक्दस को जिस्मानी मे'राज हूई थी :

हुवा न आखिर कि एक बजरा तमव्वुजे बहरे हू में उभरा
दना की गोदी में इन को ले कर फना के लन्गर उठा दिये थे

और

वही है अव्वल, वही है आखिर, वही है बातिन, वही है ज़ाहिर
उसी के जल्वे, उसी से मिलने, उसी से, उस की तरफ गए थे

(अज़ : इमामे इश्को मुहब्बत,हज़रत रज़ा बरैलवी)

अल-किस्सा ! फिर हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि इस शहर के तुम से ज़ियादह हम हक्दार हैं। हम जंग जारी रखेंगे और मुहासरा हरगिज़ न तोड़ेंगे, यहां तक कि अल्लाह तआला हम को इस शहर का मालिक कर दे, जैसा कि उस ने हम को दूसरे शहरों का मालिक कर दिया। बतरीक कुमामा ने कहा कि तुम हम से क्या चाहते हो ? हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि हम तीन बातें चाहते हैं। पहली बात यह कि तुम **"ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"** पढ़ कर इस्लाम कबूल कर लो, ताकि तुम हमारे दिनी भाई बन जाओ और तुम्हारा हमारा हाल यक्सां हो जाए। बतरीक कुमामा ने कहा कि बे:शक **"ला इलाह इल्लल्लाह"** बड़ा कल्मा है और हम इस के काइल हैं, लैकिन तुम्हारे **नबी मुहम्मद** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को हम अल्लाह का रसूल नहीं मानते। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि तू झूठा है क्यूं कि तुम ईसाई लोग अल्लाह की वहदानियत के भी काइल नहीं हो और तुम **हज़रत ईसा** अला नबिय्येना व अलैहिस्सलातो वस्सलाम को अल्लाह का बेटा कहते हो और तुम्हारे इस बातिल अकीदे का **अल्लाह तआला** ने अपने मुकद्दस कलाम

कुरआने मजीद में रद्द फरमाया है । तुम तीन खुदा के काइल हो, लिहाज़ा तुम **"ला इलाह इल्लल्लाह"** के काइल नहीं । इस्लाम ने ही सच्ची तौहीद बताई है लिहाज़ा तुम अल्लाह की वहदानियत और हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की रिसालत का सिद्क दिल से इक्रार कर के इस्लाम में दाखिल हो जाओ । बतरीक कुमामा ने कहा कि **हम हरगिज़ इस्लाम कबूल नहीं करेंगे ।**

हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि अगर तुम को इस्लाम कबूल करने से इन्कार है तो जिज़्या अदा करो । बतरीक कुमामा ने कहा कि यह दूसरी बात तो हमारे लिये पहली बात से भी सख्त है, क्यूं कि जिज़्या दे कर तुम्हारे महकूम और तुम्हारे अमन की पनाह में रहने की ज़िल्लत हमें मन्ज़ूर नहीं । हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि जब तुम को इन दोनों बातों से इन्कार है, तो तीसरी बात यह है कि जंग के लिये आमादा हो जाओ । तल्वार हमारे और तुम्हारे दरमियान फैसला करेगी । बतरीक कुमामा ने कहा कि कसम है हक्के मसीह की ! अगर तुम तीस साल तक भी मुहासरा काइम रखोगे तब भी तुम हमारा किल्ला फतह नहीं कर सकोगे, क्यूं कि हमारा किल्ला मुल्के शाम के तमाम किलओं से मज़बूत और बुलन्द है । हमारे पास अश्या-ए खुर्द व नौश और हथियारों का अज़ीम ज़खीरा मौजूद है । लिहाज़ा हम तुम्हारे मुहासरा से नहीं डरते और न ही तुम से लड़ने से खौफ ज़दा हैं । **हम हर हाल में तुम से लड़ेंगे ।**

अलबत्ता हमारे शहर को सिर्फ एक शख्स ही फतह करेगा और उस के अवसाफ व सिफात हमारी किताबों में लिखे हैं । और उस शख्स की जो ता'रीफ हमारी किताबों में मज़कूर है वह तुम पर सादिक नहीं आती । हज़रत अबू उबैदा ने पूछा कि जो शख्स तुम्हारा शहर फतह करेगा उस की सिफतें क्या हैं ? बतरीक कुमामा ने कहा कि उस की सिफतें हम तुम्हें नहीं बताएंगे, अलबत्ता उसे देख कर फौरन पहचान लेंगे कि यह वही शख्स है । और हां ! अगर तुम उस का नाम जानना चाहते हो तो हम उस का नाम बता सक्ते हैं । हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि ठीक है । **तुम सिर्फ नाम ही बता दो ।**

बतरीक कुमामा ने कहा कि जो शख्स हमारा शहर फतह करेगा वह मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम का सहाबी होगा, उस का नाम उमर बिन खत्ताब होगा । जो फारूक के लकब से मश्हूर होगा और जो निहायत सख्त मर्द होगा । अल्लाह के मुआमले में किसी मलामत गिर की मलामत की परवाह नहीं करेगा । उस शख्स की जो जो सिफतें हमारी किताबों में लिखी हूई हैं वह तुम में नज़र नहीं आतीं । बतरीक कुमामा की बात

सुन कर हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि अगर वह ज़ाते गिरामी तुम्हारे सामने आए, तो क्या इन को देख कर तुम पहचान लोगे ? बतरीक कुमामा ने कहा क्यूं नहीं ? उन की सिफत और उन की निशानियां मुझ को मा'लूम हैं । उन को देखते ही मैं फौरन पहचान सक्ता हूं ।

बतरीक कुमामा का जवाब सुन कर हज़रत अबू उबैदा खुशी से झूम उठे और मुस्कुराते हुए फरमाया فَتَحْنَا الْبَلَدَ وَرَبِّ الْكَعْبَةِ या'नी **कसम है का'बा के रब की ! हम ने शहर फतह कर लिया ।** फिर आप ने बतरीक कुमामा से फरमाया कि तुम जिस ज़ाते गिरामी का ज़िक्र कर रहे हो वही हज़रत उमर बिन खत्ताब, फारूके आ'ज़म हमारे सरदार और खलीफतुल मुस्लिमीन, अमीरुल मोमिनीन और जलीलुल कद्र सहाबीए रसूल हैं । बतरीक कुमामा ने कहा कि अगर वाकई यही बात है तो तुम खूनरैज़ी और कत्ल व किताल से बाज़ रहो और उन्हें यहां बुला लो । **हम उन को देखेंगे और उन की सिफात व निशानियां साबित और वाज़ेह हो जाएंगी, तो हम उन के वास्ते शहर के ही नहीं बल्कि अपने दिल के दरवाज़े भी खोल देंगे,** जिज़्या देना भी कबूल कर लेंगे और बैतुल मुकद्दस तुम्हारे हवाले कर देंगे, लिहाज़ा तुम्हारे सरदार और बादशाह उमर बिन खत्ताब जब तक यहां नहीं आते, उस वक्त तक जंग मौकूफ रखो । हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि मुझे यह बात मन्ज़ूर है और मैं हज़रत उमर बिन खत्ताब को खत भेज कर यहां बुलाता हूं और जब तक वह यहां तशरीफ नहीं लाते, तब तक जंग मौकूफ रखने का अह्द व पैमान करता हूं । हज़रत अबू उबैदा की यह बात सुन कर बतरीक कुमामा बहुत खुश हुवा और वह किल्ले की दीवार से उतर कर अपने कनीसा में चला गया ।

हज़रत उमर बिन खत्ताब की बैतुल मुक़द्दस तशरीफ आवरी

बतरीक कुमामा से गुफ्तगू के बा'द हज़रत अबू उबैदा इस्लामी लश्कर में तशरीफ लाए और तमाम मुजाहिदों को हुक्म दिया कि जंग मौकूफ कर दो। बा'दहु उन्हों ने तमाम सरदारों और रोउसाए मुस्लिमीन को जमा कर के बतरीक कुमामा के साथ हूई गुफ्तगू की तफ्सील सुनाई। तमाम मुजाहिदीन खुशी में फूल गए और नारए तक्बीर व तहलील की फलक शगाफ सदा बुलन्द कर के अपनी खुशी व मसर्रत का इज़्हार किया। यह खुशी इस तौर थी कि **हमारे अमीरुल मो'मिनीन हज़रत उमर फारूके आ'ज़म रदियल्लाहो तआला अन्हो की वह शान है कि इन की सिफात का तज़केरा ईसाइयों की मज़हबी किताबों में मौजूद है।** फिर हज़रत अबू उबैदा ने अमीरुल मो'मिनीन की खिदमत में बैतुल मुक़द्दस के मुहासरे का अहवाल और बतरीक कुमामा की गुफ्तगू का तफ्सीली खत तहरीर किया और इस में गुज़ारिश की कि आप जल्द अज़ जल्द बैतुल मुक़द्दस तशरीफ ले आएं। हज़रत मैसरा बिन मस्रूक अबसी खत ले कर मदीना मुनव्वरा रवाना हुए।

हज़रत उमर फारूक ने हज़रत अबू उबैदा का खत लिया, इसे बोसा दिया फिर पढ़ा। खत का मज़्मून पढ़ने के बा'द आप ने सहाबए किराम की मुक़द्दस जमाअत को भी सुनाया और मश्वरा फरमाया। हज़रत सय्यिदोना अली मुरतज़ा रदियल्लाहो तआला अन्हो ने मश्वरा दिया कि ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मेरी राए है कि आप का जल्द अज़ जल्द तशरीफ ले जाना ही बेहतर है, क्यूं कि रूमियों ने आप को देखने की दरख्वास्त की है और उन की यह दरख्वास्त दर पर्दा उन की ज़िल्लत का ए'तेराफ और इस्लाम की हक्कानियत का इक़्रार है। इलावा अज़ीं लश्कर के मुजाहिदीन अर्सए दराज़ से लड़ाई और सख्त सर्दी की मुशक्कत बरदाश्त कर रहे हैं, आप के जाने से अगर शहर फतह हो जाए तो लश्करे इस्लाम को बड़ी मुशक्कत से नजात मिल जाए और अगर आप तशरीफ न ले गए, तो रूमी मायूस और मुश्तइल हो कर सख्ती से लड़ेंगे और अगर जंग ने तूल पकड़ा तो चूं कि बैतुल मुक़द्दस तमाम ईसाइयों का किब्ला और मुअज़्ज़ज़ व मुक़द्दस शहर है और वह लोग बैतुल मुक़द्दस का हज्ज करते हैं लिहाज़ा मुल्के शाम के तमाम रूमी बैतुल-मक्दिस की इआनत में जमा होंगे और लश्करे

इस्लाम को बहुत ही दुश्वारियों का सामना करना पड़ेगा। और अगर आप के तशरीफ ले जाने से बगैर जंग के शहर फतह हो जाता है तो यह निहायत बेहतर और मुनासिब है।

हज़रत उमर फारूक ने हज़रत अली रदियल्लाहो अन्हुमा का उमदा और नेक मश्वरा देने पर शुक्रिया अदा किया और जज़ाए खैर की दुआ दी और बैतुल मुक़द्दस के सफर की तैयारी शुरू कर दी।

हज़रत उमर फारूक का सफरे बैतुल मुक़द्दस :-

हज़रत उमर फारूके आ'ज़म ने बैतुल मुक़द्दस जाने का फैसला फरमाया है, यह जान कर मदीना मुनव्वरा में खुशी की लहर दौड़ गई। हज़रत उमर फारूक ने सफर का आगाज़ फरमाते हुए सब से पहले मस्जिदे नबवी शरीफ में आ कर चार रक्अत नमाज़ अदा की और फिर **अपने आका व मौला, शहनशाहे कौनेन** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के रौज़ए अक्दस पे हाज़िरी दी। **हज़रत सय्यिदोना मौला अली मुरतज़ा** को अपना नाइब मुकर्रर फरमाया और अपने सुर्ख ऊंट पर सवार हुए। हज़रत उमर फारूके आ'ज़म का सामाने सफर इस तरह था। दो शीशे जिन में से एक में सत्तू और दूसरे में छूहारे,पानी का एक मश्कीज़ा और एक बड़े प्याले में खाना। हज़रत उमर फारूक के साथ चंद सहाबए किराम भी शरीके सफर थे और इन में बा'ज़ वह हज़रात थे जो जंगे यर्मूक के बा'द मदीना मुनव्वरा लौट आए थे। मसलन : हज़रत ज़ुबैर बिन अल-अव्वाम, हज़रत उबादा बिन सामित वगैरा। हज़रत उमर फारूक को मुसल्मानों ने मुसाफहा और सलाम के साथ अलवदा' किया और आप अपने काफले के हमराह मदीने मुनव्वरा से बैतुल मुक़द्दस की जानिब रवाना हुए।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फारूक के सफर की नौइयत यह थी कि आप नमाज़े फज्र के बा'द मसाफत तय फरमाते और ज़ोहर की नमाज़ तक चलते रहते। ज़ोहर की नमाज़ के बा'द आप किसी भी मकाम पर ठहर जाते और वअज़ व नसीहत फरमाते। अपने हमराहियों को खशीयते इलाही, कसरते इबादत, आखेरत की याद, तज़किय-ए नफ्स की तर्गीब देते। जब खाने का वक्त होता तो हज़रत उमर फारूक अपना ज़ादे राह सत्तू और खजूरें निकाल कर बिछा देते और अपने हमसफर साथियों के साथ बैठ कर खाना खाते।

राह में **''ज़ातुल मनार''** नामी मकाम पर थोड़ा वक्त ठहरे। वहां से रवाना हो कर कबीलए बनी मुर्रा के इलाके में पहुंचे। वहां कुछ देर तवक्कुफ फरमा कर आगे बढ़े और

''वादियुल कुरा'' पहुंचे । इन तमाम मकामात में हज़रत उमर फारूक रदियल्लाहो तआला अन्हो के सामने मुख्तलिफ मुकद्दमात और मुआमलात पेश हुए, जिन का आप ने कुरआन व हदीस की रौशनी में फैसला फरमाया और मुकद्दमात से मुतअल्लिक अश्खास को आप ने पाबन्दीए शरीअत की सख्ती से ताकीद फरमाई और शरीअत की खिलाफ वर्ज़ी करने पर सख्त सज़ा की ता'ज़िर सुनाई । आप ने अपना सफर मुसल्सल जारी रखा, यहां तक कि आप बैतुल मुकद्दस की सरहद में दाखिल हुए ।

सरहद में दाखिल होने के बा'द अमीरुल मो'मिनीन ने कुछ अरबों का एक गिरोह देखा । हज़रत ज़ुबैर बिन अल-अवाम को उन की खबर लाने के लिये भेजा । हज़रत ज़ुबैर बिन अल-अवाम उस काफले के करीब गए और दर्याफ्त फरमाया कि तुम कौन हो ? उन्हों ने जवाब दिया कि हम इस्लामी लश्कर के सिपाही हैं, हज़रत अबू उबैदा ने हम को अमीरुल मोमिनीन की खबर मा'लूम करने भेजा है । उन सिपाहियों ने हज़रत ज़ुबैर बिन अल-अवाम को नहीं पहचाना, उन्हों ने पूछा कि ऐ बिरादरे दिनी ! आप कौन हैं ? और कहां से आए हैं ? मैं ज़ुबैर बिन अल-अव्वाम, रसूले मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की फूफी का बेटा हूं और मदीना मुनव्वरा से आ रहा हूं । हज़रत ज़ुबैर का तआरुफ मिलते ही उन्हों ने मर्हबा कहा, खुशी का इज़्हार किया और कहा कि ऐ इब्ने अम्मे रसूल ! जब आप मदीना मुनव्वरा से रवाना हुए तो अमीरुल मोमिनीन को किस हाल में छोड़ा ? क्या वह बैतुल मुकद्दस आने वाले हैं या नहीं ? हज़रत ज़ुबैर बिन अल-अव्वाम ने फरमाया कि बशारत हो तुम को कि अमीरुल मोमिनीन आ पहुंचे हैं और मैं भी इन के हमराह आया हूं । फिर हज़रत ज़ुबैर उन मुजाहिदों को ले कर अमीरुल मो'मिनीन की खिदमत में आए । तमाम मुजाहिदों ने अमीरुल मोमिनीन की खिदमत में हदीय-ए सलाम पेश कर के मुसाफहा व दस्त बोसी का शरफ हासिल किया । हज़रत उमर फारूके आ'ज़म ने इन से फरमाया कि तुम लोग यहां किस लिये आए हो ? मुजाहिदों ने जवाबन अर्ज़ किया कि ऐ अमीरुल मो'मिनीन ! लश्करे इस्लाम अपनी आंखें बिछाए आप की कुदूमे मैमनत का मुन्तज़िर है और गर्दनें लम्बी किये मदीना तय्यबह से आने वाले रास्ते पर नज़रें जमाए हुए है । हर शख्स आप के दीदार के लिये बे चैन व बे-करार है । लिहाज़ा **अमीनुल उम्मत हज़रत अबू उबैदा** ने हम को आप की खबर मा'लूम करने भेजा है । अगर आप इजाज़त मरहमत फरमाएं तो हम जा कर जैशे इस्लाम को आप की आमद का मुज़्दा सुना दें । हज़रत उमर फारूके आ'ज़म ने इन्हें इजाज़त अता फरमाई ।

अमीरुल मो'मिनीन की खबर मा'लूम करने वाला वफद इजाज़त ले कर बड़ी

तैज़ी से बैतुल मुकद्दस की तरफ रवाना हुवा । इस्लामी लश्कर के कैम्प के करीब पहुंचते ही उन्हों ने बुलन्द आवाज़ से पुकारा ऐ गिरोहे मुस्लिमीन ! खुश्खबरी हो कि अमीरुल मोमिनीन आ पहुंचे । इस मुज़्दए जां-फज़ा को सुन कर पूरा इस्लामी लश्कर हर्कत में आ गया, हर शख्स ने चाहा कि घोड़े पर सवार हो कर अमीरुल मो'मिनीन के इस्तिक्बाल के लिये निकल जाए । पस हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया : में तुम सब को कसम दिलाता हूं कि कोई भी शख्स अपनी जगह से न निकले । फिर हज़रत अबू उबैदा अपने हमराह मुहाजिरीन और अन्सार के चंद अश्खास को ले कर हज़रत उमर फारूके आ'ज़म के इस्तिक्बाल के लिये रवाना हुए ।

हज़रत अबू उबैदा ने थोड़ा ही फास्ला तय किया था कि अमीरुल मो'मिनीन हज़रत उमर फारूक का काफला सामने से आता नज़र आया । हज़रत उमर फारूके आ'ज़म पैदल ऊंट की मुहार हाथ में थामे आगे आगे चल रहे हैं और इन का गुलाम ऊंट पर सवार है । हज़रत उमर फारूके आ'ज़म सफर में अपना एक ही ऊंट लाए थे । एक रोज़ हज़रत उमर फारूक सवार होते और इन का गुलाम मुहार पकड़ कर चलता और दूसरे रोज़ हज़रत उमर मुहार ले कर चलते और गुलाम ऊंट पर सवार होता । हज़रत उमर फारूके आ'ज़म अमीरुल मो'मिनीन और खलीफतुल मुस्लिमीन के मन्सबे आ'ला पर फाइज़ हैं और इन की हैसियत मुल्क के बादशाह की है, लैकिन आप ने आका व गुलाम का फर्क मिटा दिया और अमली तौर पर मसावात की ता'लीम दे कर दुनिया को दर्स दिया कि **इस्लाम एक ऐसा दीन है जो दुनिया को अद्ल व इन्साफ और मसावात का पैगाम देता है । जिस के निज़ाम में गुलाम व आका के मा-बैन कोई इम्तियाज़ नहीं ।**

अल-किस्सा ! हज़रत अबू उबैदा का काफला अमीरुल मो'मिनीन के काफले से मिला । हज़रत अबू उबैदा मुसल्लह हो कर ऊंटनी पर सवार आए थे । उन्हों ने अपनी ऊंटनी बिठाई, नीचे उतरे और अमीरुल मो'मिनीन की खिदमत में सलामे नियाज़ पेश किया । फिर तमाम साथियों ने अमीरुल मो'मिनीन से सलाम व मुलाकात की और फिर सब बैतुल मुकद्दस की जानिब रवाना हुए । जब अमीरुल मो'मिनीन को ले कर अमीनुल उम्मत इस्लामी लश्कर के कैम्प में आए तो तमाम मुजाहिदों ने नारए तक्बीर व तहलील से इन का इस्तिक्बाल किया । तमाम मुजाहिदों ने कतार बन्द और बारी बारी आ कर अमीरुल मो'मिनीन की खिदमत में सलाम पैश किया और मुलाकात का शरफ हासिल किया । फिर हज़रत उमर फारूके आ'ज़म ने निहायत ही फसीह व बलीग खुत्बा फरमाया और आप ने तमाम मुजाहिदों को आ'माले सालेहा और तक्वा व परहैज़गारी इख्तियार करने की नसीहत

व तन्बीह फरमाई। खुत्बा से फारिग होने के बा'द आप ने हज़रत अबू उबैदा से मुल्के शाम की लड़ाइयों के तफ्सीली हालात समाअत फरमाए। इन हालात को सुन कर कभी आप रोते, कभी सुकून में आते, और कभी खुश होते। या'नी किसी मुजाहिद की शहादत का हाल सुन कर आप रोने लगते और रूमियों की शिकस्त और इस्लामी लश्कर की फतह की कैफियत मा'लूम होती तो खुश होते। अमीरुल मोमिनीन और अमीनुल उम्मत इसी तरह गुफ्तगू करते रहे। यहां तक कि ज़ोहर की नमाज़ का वक्त हो गया।

हज़रत बिलाल की अज़ान सुन कर लश्करे इस्लाम पर रिक्कत :-

हुज़ूरे अक्दस, जाने आलम व जाने रहमत सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के आशिके सादिक और मुअज़्ज़िन **हज़रत बिलाल बिन हुमामा हब्शी** रदियल्लाहो तआला अन्हो हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की रेहलत के बा'द मदीना तय्यबह से मुल्के शाम चले आए थे और शहर दमिश्क में सुकूनत इख्तियार कर ली थी। हज़रत बिलाल को इस्लामी लश्कर की आमद की इत्तिला' मिली तो वह भी जैशे इस्लाम में शामिल हो गए और राहे खुदा में जेहाद का शौक उमड पड़ा। अमीरुल मो'मिनीन हज़रत उमर फारूके आ'ज़म की बैतुल मुकद्दस में तशरीफ आवरी हूई तब हज़रत बिलाल इस्लामी लश्कर में मौजूद थे। आप भी अमीरुल मो'मिनीन से मिलने आए, सलाम किया और आप की ता'ज़ीम व तक्रीम की।

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के पर्दा फरमाने के बा'द हज़रत बिलाल ने अज़ान कहना तर्क कर दिया था। अपने आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की जुदाई व फुर्कत में वह इतने अन्दोहगीं हो गए थे कि कलेमाते अज़ान अदा करना दुश्वार था और वह अपने महबूब आका सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की मुफारकत में इतने गमनाक हुए कि उन्हों ने अज़ान देनी छोड़ दी।

जब ज़ोहर की नमाज़ का वक्त हुवा तो मुजाहिदों ने अमीरुल मो'मिनीन हज़रत उमर से दरख्वास्त की कि हज़रत बिलाल यहां मौजूद हैं। हम चाहते हैं कि आज इन की ज़बान से अज़ान सुनें और हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के ज़मानए खैरुल करून की याद ताज़ा करें। हज़रत उमर फारूके आ'ज़म ने हज़रत बिलाल से फरमाया कि ऐ बिलाल ! अस्हाबे रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की ख्वाहिश व दरख्वास्त है की आप अज़ान कहो और इन को हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के ज़माना की याद ताज़ा करा दो। हालां कि हज़रत बिलाल ने अज़ान देना बिल्कुल तर्क कर दिया था। कई लोगों ने उस से कब्ल अज़ान कहने की

दरख्वास्त की थी, लैकिन उन्हों ने किसी की दरख्वास्त मन्ज़ूर न की। लैकिन चूं कि हज़रत बिलाल के दिल में हज़रत उमर फारूके आ'ज़म का गायत दर्जा अदब व एहतराम था। आज अमीरुल मो'मिनीन हज़रत उमर फारूके आ'ज़म की फरमाइश है, इन्कार मुम्किन न हुवा और बिलाल अज़ान कहने के लिये रज़ा मन्द हो गए। हज़रत उमर फारूक अमीरुल मो'मिनीन की फरमाइश हज़रत बिलाल के लिये हुक्म का दर्जा रखती थी।

हज़रत बिलाल ने अज़ान शुरू की। बुलन्द आवाज़ से **''अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर''** कहा। इन की दर्द भरी आवाज़ सहाबा के कानों से टकराई और इन पर एक लरज़ह तारी हो गया। आंखें नमनाक हो गईं और वह शिद्दते गम से कांपने लगे। फिर हज़रत बिलाल ने बारे दोम **''अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर''** कहा। अब इन की आवाज़ में दर्द इत्ना ज़ियादह था कि सुनने वालों के लिये बरदाश्त करना दुश्वार था। हज़रत बिलाल अज़ान के कलेमात दुहराते जाते और इन का लह्जा और दर्द अंगेज़ होता जाता। और जब **''अश्हदो अन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाह''** कहा तो लश्करे इस्लाम में कोहराम मच गया। सहाबए किराम रिज़्वानुल्लाहे तआला अलैहिम अज्मईन की नज़रों में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम का मुकद्दस ज़माना फिर गया और हुज़ूरे अक्दस की याद और फिराक के गम में तड़पने लगे, आह व बुका का वह शौर बुलन्द हुवा कि पत्थर दिल भी पिघल जाए। इस्लामी लश्कर का हर मुजाहिद चींख चींख कर रोने लगा। शिद्दते गम से मुजाहिदीन ऐसे बिलकते और तड़पते थे कि लगता था कि इन के दिल फट जाएंगे। बा'ज़ नीम गशी की हालत में ज़मीन पर गिर पड़े, अपने महबूब आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की यादे रफ्ता कुछ यूं ताज़ा हूई कि चारों तरफ गिर्या व ज़ारी का माहौल गर्म हो गया। हज़रत उमर फारूके आ'ज़म भी बे इख्तियार रो रहे हैं। हज़रत बिलाल की हालत भी दिगर गूं है। अज़ान के हर कल्मे पर इन का कलक व इज़्तिराब बढ़ता जाता था। और ऐसा महसूस होता कि वह बेः हौश हो कर गिर जाएंगे और अज़ान पूरी न कर सकेंगे। इस्लामी लश्कर पर गम व इज़्तिराब की वह कैफियत तारी थी कि रोने और चींखने की आवाज़ों के सिवा कुछ सुनाई न देता था और ऐसा लगता था कि हज़ारों की जानें निकल जाएंगी। किसी को भी अपने तन व जां का हौश नहीं था :

याद में जिस की नहीं होशे तनो जां हम को
फिर दिखा दे वो रुख, ऐ महरे फरोज़ां हम को

(अज़ : - इमामे इश्को मुहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

अह्ले सैर व तवारीख बयान करते हैं कि उस दिन अमीरुल मो'मिनीन हज़रत उमर फारूके आ'ज़म और तमाम मुसल्मान इत्ना रोए हैं कि किसी को इत्ना रोता हुवा न तो देखा गया और न ही सुना गया। हर एक की आंख से अश्क का दरिया रवां था। अपने महबूब आका सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की याद व जुदाई के गम में हर एक ने रो रो कर अपनी आंखें लाल कर ली थीं :

आंखें रो रो के सुजाने वाले
जाने वाले नहीं आने वाले
और
देख ओ ज़ख्मे दिल आपे को संभाल
फूट बहते हैं टपक्ने वाले

(अज़ : - इमामे इश्को मुहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

बहर हाल हज़रत बिलाल ने रोते, तड़पते, किसी तरह अज़ान पूरी की। सहाबए किराम के सामने अपने आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम का वह मन्ज़र आ गया, जो कभी वह माथे की आंखों से देखा करते थे। दैर तक लश्करे इस्लाम का हर मुजाहिद ज़ार व कितार रोता रहा। हज़रत उमर फारूके आ'ज़म और हज़रत बिलाल भी मुसल्सल रोते रहे। बिल-आखिर अल्लाह तआला ने इन्हें तस्कीन दी। फिर हज़रत उमर-फारूके आ'ज़म ने तमाम लश्कर को जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ाई।

हज़रत उमर की किल्ले की तरफ रवानगी :-

हज़रत उमर फारूके आ'ज़म अपने ऊंट पर सवार हुए और बैतुल मुकद्दस के किल्ले की तरफ जाने का कस्द फरमाया। आप ने बकरी के बालों का बना हुवा लिबास पहना। आप का जुब्बा शरीफ टुक्ड़े टुक्ड़े जोड़ कर बना हुवा था। इस में चौदह पैवन्द लगे हुए थे और बा'ज़ पैवन्द चमड़े के थे। इस्लामी लश्कर के सरदारों ने अमीरुल मो'मिनीन से दरख्वास्त की कि आप इन कपड़ों को उतार दें और अच्छे कपड़े ज़ैब तन फरमा कर ऊंट के बजाए घोड़े पर सवार हो कर तशरीफ ले जाएं, ताकि दुश्मन पर आप का रोअब पड़े और आप की हैबत तारी हो। हज़रत उमर फारूक ने इन की दरख्वास्त मन्ज़ूर फरमाई। हज़रत अबू उबैदा ने मिस्री आ'ला किस्म के कपड़े का बना हुवा सफेद लिबास और अमामा पैश किया,

मर्दाने अरब ...... हिस्सा दौम

जिस को अमीरुल मो'मिनीन ने ज़ैब तन फरमाया और ऊंट के बजाए घोड़े पर सवार हो कर इस्लामी लश्कर के कैम्प से बैतुल मुकद्दस के किल्ले की जानिब रवाना हुए।

अमीरुल मो'मिनीन हज़रत उमर फारूक चंद ही कदम चले थे कि लोगों ने देखा कि अचानक आप के चेहरे पर घबराहट के आसार नमूदार हुए, गोया आप को कोई सख्त तक्लीफ लाहिक हूई हो। आप लरज़ने लगे, आप के चेहरे का रंग बदल गया। इज़्तिराब के आलम में आप ने फरमाया कि **सवारी रोको, सवारी रोको।** आप के इर्शाद पर हमराही ठहर गए। हज़रत उमर फौरन अपने घोड़े से नीचे उतर गए और फरमाया कि अल्लाह तआला मेरी लग्ज़िश को मुआफ फरमाए, करीब था कि मैं हलाक हो जाता क्यूं कि ऐसे पुर तकल्लुफ लिबास पहनने से मेरे दिल में किब्र (फख्र) दाखिल हो गया और मैं ने अपने आका व मौला, रसूले मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम से सुना है, आप का इर्शाद है :

لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مَنْ كَانَ فِىْ قَلْبِهٖ وَزْنُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِنْ خَرْ دَلٍ مِنْ كِبرٍ
وَّ لَا يَدْخُلُ النَّارَ مَنْ كَانَ فِى قَلْبِهٖ مِثْقَالُ حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ مِنْ إِيْمَانٍ

तर्जुमा : ''जिस के दिल में राई (हर्मल) के दाने बराबर तकब्बुर होगा वह जन्नत में दाखिल न होगा और जिस के दिल में दानेए राई बराबर ईमान होगा वह दोज़ख में दाखिल न होगा।''

फिर हज़रत उमर ने फरमाया कि तुम्हारे उमदा सफेद कपड़े और तुम्हारा खुशनुमा व खुश रफ्तार घोड़ा मुझ को हलाकत में डाल देता। फिर आप ने वह उमदा कपड़े तब्दील फरमाए और बकरी के बालों का चौदह पैवन्द वाला लिबास पहन लिया और अपने ऊंट पर सवार हो कर किल्ले की सम्त रवाना हुए। जब आप किल्ले के सामने पहुंचे और बैतुल मुकद्दस नज़र आया तो आप ने ''**अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर**'' कहा और फिर यह दुआ मांगी :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لَنَا فَتْحًا كَبِيْرًا وَّ اجْعَلْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطَانًا نَصِيْرًا

तर्जुमा : ''ऐ मेरे अल्लाह ! फतह कर तू हमारे लिये बड़ी फतह और दे तू हमें अपनी तरफ से गल्बा और मदद''

बैतुल मुकद्दस का जिन मुजाहिदों ने मुहासरा कर रखा था, उन्हों ने हज़रत उमर फारूके आ'ज़म की सवारी को देखते ही जौशो खरौश से तक्बीर व तहलील के ना'रे बुलन्द

कर दिये। ना'रों की बुलन्द आवाज़ें सुन कर अहले बैतुल मुकद्दस हैरान हुए। क्यूं कि जंग तो कई दिनों से मौकूफ थी, लिहाज़ा वह किल्ले की दीवार पर चढ़े ताकि देखें कि मुसल्मानों ने हम्ला तो नहीं कर दिया। बतरीक कुमामा ने भी ना'रों की आवाज़ें सुनी। लिहाज़ा उस ने भी अपने खादिमों को दौड़ाया कि मा'लूम करें क्या मआमला है ? रूमियों ने किल्ले की दीवार से देखा तो मुजाहिदीन ने किल्ले पर हम्ला नहीं किया था बल्कि वह अमीरुल मो'मिनीन की आमद पर खुशी का इज़्हार और इस्तिक्बाल करने की गरज़ से ना'रे लगा रहे हैं।

हज़्रत उमर फारूके आ'ज़म ने अबू उबैदा से फरमाया कि रूमियों को मेरे आने की इत्तिला' दे दो। चुनान्चे हज़्रत अबू उबैदा किल्ले की दीवार के करीब आए और बुलन्द आवाज़ से फरमाया कि ऐ बैतुल मुकद्दस के बाशिन्दो ! आगाह हो जाओ कि हमारे सरदार, खलीफतुल मुस्लिमीन, अमीरुल मो'मिनीन हज़्रत उमर बिन खत्ताब फारूके आ'ज़म मदीना मुनव्वरा से तशरीफ ले आए हैं।

फतह बैतुल मुकद्दस और हज़्रत उमर का शहर में दुखूल :-

बतरीक कुमामा को हज़्रत उमर फारूके आ'ज़म की तशरीफ आवरी की खबर हूई, तो वह बैतुल मुकद्दस के हाकिम "बातलीक" और शहर के मुअज़्ज़ज़ लोगों को ले कर किल्ले की दीवार पर आया और उस ने पुकार कर कहा कि ऐ गिरोहे अरब ! तुम्हारे बड़े सरदार को हम करीब से देखना चाहते हैं, लिहाज़ा इन को किल्ले की दीवार के करीब भेजो, इन को तन्हा या इन के साथ एक दो आदमी को ही भेजो ताकि हम इन को ब-गौर देख कर शनाख्त कर सकें, अगर हम ने इन को अपनी किताबों में मज़्कूर सिफात के मुताबिक पाया तो कसम है हज़्रत मसीह की ! हम शहर इन के हवाला कर देंगे। हज़्रत उमर फारूक ने तने तन्हा किल्ले की दीवार के करीब जाने का इरादा फरमाया। इस पर सहाबए किराम ने अर्ज़ किया कि ऐ अमीरुल मो'मिनीन ! आप तन्हा इन लोगों की तरफ जा रहे हैं और आप के साथ किसी किस्म का सामाने जंग भी नहीं। कहीं ऐसा न हो कि यह लोग आप के साथ बे-वफाई करें और आप को कोई अज़ियत पहुंचाएं। हज़्रत उमर फारूक ने फरमाया कि मोमिन को अल्लाह के सिवा किसी से भी न डरना चाहिये। जो हमारे मुकद्दर में लिख दिया गया है, वह ज़रूर पैश आएगा। अल्लाह तबारक व तआला का इर्शाद है :

قُلْ لَنْ يُصِيْبَنَا إِلَّا مَا كَتَبَ اللهُ لَنَا هُوَ مَوْلَانَا وَعَلَى اللهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ

(सूरए तौबा, आयत : 51)

मर्दाने अरब ...... हिस्सा दौम

तर्जुमा : "तुम फरमाओ हमें न पहुंचेगा मगर जो अल्लाह ने हमारे लिये लिख दिया। वह हमारा मौला है और मुसल्मानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये" (कन्जुल ईमान)

फिर हज़्रत उमर अपने ऊंट पर सवार हुए। आप के हाथ में दुर्रा था, दूसरा किसी किस्म का कोई हथियार साथ में नहीं था। आप ने हज़्रत अबू उबैदा को अपने हमराह लिया और किल्ले की दीवार के बिल्कुल करीब जा कर ठहरे। हज़्रत अबू उबैदा ने किल्ले की दीवार पर मौजूद लोगों को मुखातब कर के कहा कि ऐ लोगो ! अमीरुल मो'मिनीन हज़्रत उमर फारूक यहां तश्रीफ लाए हैं। हाकिमे शहर बातलीक और बतरीक कुमामा ने हज़्रत उमर फारूके आ'ज़म को घूर घूर कर देखना शुरू किया। थोड़ी दैर ब-नज़्रे गौर देखने के बा'द दफ्अतन बतरीक कुमामा ने बुलन्द आवाज़ से शौर करते हुए अपनी कौम को पुकार कर कहा कि **"कसम खुदा की ! यह वही शख्स हैं जिन की सिफत और ना'त हम अपनी किताबों में पाते हैं और इन के हाथ पर हमारा शहर फतह होगा"**। फिर बतरीक कुमामा ने अपनी कौम को झिड़क्ते और डांटते हुए कहा कि सख्ती हो तुम पर, यह क्या ताखीर है ? जल्दी उतरो और इन के पास जाओ और इन से अमान तलब करो। खुदा की कसम ! **यह मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह के सहाबी हैं।** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम।

जब रूमियों ने बतरीक कुमामा का फरमान सुना तो वह जल्दी जल्दी किल्ले की दीवार से उतरे और शहर पनाह का दरवाज़ा खोल दिया और दौड़ते हुए हज़्रत उमर फारूके आ'ज़म के पास आए और सुलह व अमान की दरख्वास्त और अदाए जिज़्या का इक्रार भी करने लगे। हज़्रत उमर फारूके आ'ज़म ने रूमियों के मुसख्खर और मुतीअ हो कर आने पर और आसानी से बैतुल मुकद्दस का किल्ला फतह होने पर अल्लाह तआला की हम्द और उस का शुक्र अदा किया और ऊंट पर बैठे बैठे ही पालान पर सजदए शुक्र बजा लाए। हज़्रत उमर फारूके आ'ज़म रूमियों के सामने आए और उन से फरमाया कि इस वक्त तुम शहर की तरफ लौट जाओ। तुम्हारे लिये अमन और जिम्मा का अह्द होगा और तुम जिज़्या अदा करने का इक्रार करोगे। हज़्रत उमर फारूके आ'ज़म की ज़बाने हक्क तर्जुमान से यह वा'दा सुन कर रूमी खुशी से मचल उठे। अमीरुल मो'मिनीन का शुक्रिया अदा किया और शहर की तरफ वापस लौटे और अब उन्हों ने किल्ले का दरवाज़ा बन्द नहीं किया बल्कि अमन के वा'दे पर ए'तमाद कर के शहर पनाह के तमाम दरवाज़े खुले छोड़ दिये। फिर हज़्रत उमर फारूके आ'ज़म भी मुजाहिदों के साथ इस्लामी लश्कर के कैम्प में वापस तशरीफ लाए और

इबादत व रियाज़त में शब गुज़ारी। दूसरे दिन ब-रोज़ दो शम्बा बा'द नमाज़े फज्र हज़रत उमर फारूके आ'ज़म लश्करे इस्लाम के साथ किल्ले में दाखिल हुए। आप दोशम्बा से जुम्आ तक बैतुल मुकद्दस में कयाम पज़ीर रहे। आप ने शहर के वस्त में एक निशाने मेहराब बनाया और वहां मस्जिद ता'मीर करने का हुक्म फरमाया। आप ने उस जगह जुम्आ की नमाज़ पढ़ाई और अब उस जगह पर आली शान मस्जिद बनी हूई है।

जुम्आ की नमाज़ में मुतअस्सिब रूमियों का हम्ले का इरादा :-

बैतुल मुकद्दस शहर में कुछ मुतअस्सिब किस्म के रूमी भी थे। बतरीक कुमामा ने शहर हज़रत उमर फारूक के हवाले कर दिया, यह अम्र इन पर शाक गुज़रा था। वह पक्के नस्रानी थे और मुसल्मानों का वुजूद तक इन को गवारा नहीं था। इन्तिकाम और हसद की आग इन के दिलों में शौ'ला ज़न थी, लिहाज़ा उन्हों ने यह प्लान बनाया कि जुम्आ की नमाज़ में जब मुसल्मान सजदा में जाएं, तब इन पर यक-बारगी हम्ला कर के इन को कत्ल कर डालें, क्यूं कि नमाज़ में मुसल्मान हथियारों से मुसल्लह नहीं होते। इन मुफ्सिद रूमियों ने अपनी तज्वीज़ को अमल में लाने से पहले अबूल-जईद से मश्वरा करना मुनासिब समझा, यह वही अबूल-जईद था जिस की बीवी की रूमी लश्कर के सरदारों ने अस्मत दरी की थी और उस के बेटे को कत्ल किया था और अबूल-जईद ने इन्तिकाम लेते हुए हज़ारों रूमी सिपाहियों को याकूसा नदी में गर्काब किया था और फिर वह यर्मूक से भाग कर बैतुल मुकद्दस में पनाह गुज़ीं हो गया था। मुफ्सिद व मुतअस्सिब रूमी अबूल-जईद के पास आए और अपना मन्सूबा बताया और इस मआमला में उस की राए मा'लूम की। अबूल-जईद ने कहा कि ऐसी बे-वकूफी करने से हमारी ज़िल्लत और रुस्वाई होगी और हमारी कौमे रूम पूरी दुनिया में बदनाम हो जाएगी कि सुलह करने के बा'द नमाज़ में मश्गूल मुसल्मानों पर हम्ला किया और यह काम हमारी मग्लूबी का भी बाइस होगा क्यूं कि बे-वफाई करने वाला कभी काम्याब नहीं होता। मुतअस्सिब रूमियों ने अबूल-जईद का मश्वरा सुन कर कहा कि ऐ अबूल-जईद! तुम कोई ऐसी तद्बीर बताओ जिस से हमारा मक्सद भी पूरा हो जाए और हम पर किसी किस्म की मलामत भी आइद न हो।

अबूल-जईद ने कहा कि मुसल्मान खुदा परस्त और इबादत गुज़ार कौम है। इन के साथ गद्र व बेवफाई करने में हरगिज़ कोई भलाई नहीं। अगर यह दुनिया तलब होते तो मैं तुम को यह काम करने का मश्वरा देता। लिहाज़ा तुम इन का इम्तिहान लो और इस का तरीका यह है कि तुम अपनी ज़ीनत की चीज़ें और कीमती माल व अस्बाब से इन्हें ललचाओ। जब

यह लोग नमाज़ के लिये जाएं तो रास्ता के दोनों तरफ सोने चांदी और जवाहिरात के बर्तन और रैश्मी कपड़ों के ढेर लगा दो। अगर इन में का कोई शख्स दुनिया की चीज़ों की जानिब रागिब व मुल्तफित हो कर उसे लेने की कौशिश करे, तो जान लेना कि यह लोग आखेरत के ख्वाहां नहीं बल्कि मताए दुनिया के तलब गार हैं। तब तुम इन पर हम्ला कर देना। इस सूरत में हमारे लिये एक बहाना भी होगा कि हम ने बे-वफाई नहीं की, बल्कि मुसल्मानों ने अह्द शिकनी कर के बे-वफाई की, हमारे माल व मताअ पर निय्यत खराब की, लिहाज़ा हम ने इन के इर्तिकाबे जुर्म की सज़ा दी है। अबूल-जईद का यह मश्वरा सब ने पसन्द किया और इस पर अमल किया।

जब जैशे इस्लाम के मुजाहिद शहर में दाखिल हुए तो इन की हैरत की इन्तिहा न रही क्यूं कि रास्ता के दोनों तरफ कीमती माल व मताअ के अम्बार लगे हुए थे और इन पर कोई निगहबान और मुहाफिज़ न था। मगर इस्लामी लश्कर के किसी मुजाहिद ने इन चीज़ों को हाथ तक न लगा या बल्कि नज़्रे इल्तिफात से देखा तक नहीं और वह अल्लाह तआला की हम्द करते हुए मताए दुनिया से रूगर्दानी कर के चले जाते थे :

सायए दीवारो खाके दर हो या रब और रज़ा
ख्वाहिशे दीहीमे कैसर, शौके तख्ते जम नहीं

(अज़ : - इमामे इश्को मुहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

शे'र के तअल्लुक से हल्ले लुगत :-

(1) दीहीम = ताजे शाही, कलगी, अफ्सर (फीरोज़ुल-लुगात, सफहा : 674)

(2) कैसर = शाह रूम का लकब, सुल्तान, बादशाह (फीरोज़ुल-लुगात, सफहा : 968)

(3) तख्त = बादशाह के बैठने की चौकी, मसनद,गद्दी, सल्तनत (फीरोज़ुल-लुगात, सफहा : 348)

(4) जम = ईरान के एक कदीम बादशाह जम्शेद का मुखफ्फफ (फीरोज़ुल-लुगात, सफहा : 470)

अल–किस्सा ! मुसल्मानों को दुनिया की कीमती मताअ से बे परवाह व बे नियाज़ हो कर गुज़रते देख कर रूमी मुतअज्जिब थे। अबूल–जईद ने कहा कि यह वही कौम है जिस की ता'रीफ अल्लाह तआला ने तौरेत और इन्जील में बयान की है और यह कौम हक्क पर है। जब तक यह कौम हक्क व सदाकत पर काइम रहेगी दुनिया की कोई भी ताकत उन पर गालिब न हो सकेगी। अबूल–जईद की बात सुन कर मुतअस्सिब रूमियों के सर नदामत से झुक गए और उन्हों ने बे–वफाई करने का जो मन्सूबा बनाया था उस पर इज़्हारे अफ्सोस किया और अपना फासिद इरादा तर्क कर दिया।

हज़रत का'ब बिन अह्बार के ईमान लाने का वाकेआ

हज़रत का'ब बिन अह्बार मुल्के शाम के सूबा फलस्तीन के देहात के सरदारों में से थे और अपने इलाके में इन का काफी रोअब व असर था। जब इन को इत्तिला' मिली कि अमीरुल मो'मिनीन हज़रत उमर फारूके आ'ज़म मदीना मुनव्वरा से बैतुल मुकद्दस तशरीफ लाए हैं और कुछ अर्सा कयाम पज़ीर रहने वाले हैं, तो वह बैतुल मुकद्दस आए और अमीरुल मोमिनीन के दस्ते हक्क परस्त पर ईमान लाए। उन्हों ने अपने ईमान लाने का जो सबब बताया,वह इन्हींकी ज़बानी ज़ैल में पैशे खिदमत है।

हज़रत का'ब बिन अह्बार रदियल्लाहो तआला अन्हो ने फरमाया :

"मेरे वालिदे माजिद कुतुब समावी और दीने मूसा अलैहिस्सलातो वस्सलाम के ज़बरदस्त आलिम थे। मेरे वालिद ने कुतुबे साबिका का इत्ना वसीअ मुतालआ किया था कि इस की वजह से वह आइन्दा होने वाले वाकेआत व हादेसात की अच्छी तरह मा'लूमात व वाकफियत रखते थे। मैं इन का इकलोता बेटा था और वह मुझ को बहुत ही चाहते थे। मेरी ता'लीम व तर्बियत का वह बहुत ख्याल रखते थे और इस का एहतिमाम फरमाते थे। इल्म व हिक्मत की बातें और इस के अस्रार व रूमूज़ से मुझ को मुत्तलेअ फरमाते रहते थे और शायद ही उन्हों ने मुझ से कोई बात छुपाई होगी। बल्कि हर मआमला की मुझ को ता'लीम फरमा कर मुझ को आगाह कर दिया था। जब इन के इन्तिकाल का वक्त आया तब उन्हों ने मुझे अपने पास खिल्वत में बुलाया और फरमाया कि ऐ मेरे नूरे नज़र और राहते जिगर ! मैं

ने तुम को सब कुछ ता'लीम कर दिया है और कोई भी चीज़ तुम से पोशीदह नहीं रखी। अब मेरा दुनिया से रुखसत होने का वक्त आ गया है और मुझे खौफ है कि अन्करीब कुछ झूटे लोग तुम को बेहकाने की कोशिश करेंगे, लिहाज़ा मैं तुम को वसीयत करता हूं कि इन झूटे दा'वे करने वालों की हरगिज़ इत्तेबअ व पैरवी मत करना।"

अब मैं तुम को एक राज़ की बात बताता हूं। मैं ने इस मकान के रौशन दान में दो कागज़ लिख कर रख दिये हैं। इन में मैं ने तुम्हारी दुनिया व आखेरत की भलाई व बेहतरी की बातें लिख दी हैं। तुम इन कागज़ को उस वक्त निकालना जब तू यह खबर सुने कि नबी आखिरुज़ ज़मान हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम मब्ऊस हुए हैं। तब इन अवराक को निकाल कर पढ़ना और इन पर अमल करना। अगर अल्लाह तआला ने तुम्हारे हक्क में बेहतरी और नैकी चाही तो तुम इस पर ज़रूर अमल करोगे। फिर चंद दिनों के बा'द मेरे वालिद का इन्तिकाल हो गया। मेरे वालिद की तजहीज़ व तक्फीन के बा'द हर वक्त मुझे इन अवराक का ही ख्याल आने लगा। इन अवराक में क्या लिखा है मा'लूम करने के लिये मैं बे चैन व बेकरार था, लैकिन मेरे वालिद के अय्यामे ता'ज़ियत की वजह से हमारे घर में रिश्ता दारों और मेहमानों का हुजूम रहता था और मुझे रौशन दान के अवराक बर आमद करने का मौका' मयस्सर नहीं होता था। लिहाज़ा मैं अय्यामे ता'ज़ियत के गुज़रने का इन्तिज़ार करने लगा। जब अय्यामे ता'ज़ियत गुज़र गए और हमारे सब मेहमान रुखसत हो गए, तो मैं ने सब से पहले रौशन दान से अपने वालिद के लिखे हुए कागज़ात निकालने का काम किया। मैं ने रौशन दान से कागज़ात निकाल कर पढ़े, तो उस में लिखा हुवा था :

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدُ رَّسُوْلُ اللّٰهِ خَاتَمَ النَّبِيّنَ لَا نَبِىَّ بَعْدَهُ مَوْلُدُهٗ
بِمَكَّةَ وَدَارُ هِجْرَتِهِ طَيبَةُ الطَيَّبَةُ الأمِينةُ ، لَيْسَ بفَظِّ وَّ لَا غَلِيْظِ وَّ
لَا سَخَابِ ، أُمَّتُهُ الْحَامِدُوْنَ وَالَّذِيْنَ يَحْمَدُوْنَ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ حَالِ،
اَلْسِنَتُهُمْ رَطْبَةٌ" بِالتَّكْبِيرِ وَالتَّهْلِيْلِ، وَهُوَ مَنْصُوْرٌ" عَلٰى كُلِّ مَنْ
نَادَاهٗ مِنْ أَعْدَائِهِ اَجْمَعِينَ، يَغْسِلُوْنَ فُرُوْجَهُمْ وَيَسْتَرُوْنَ اَوْسَانَ
لَهُمْ، أَنَاجِيْلُهُمْ فِىْ صُدُورِهِمْ ، وَتَرَاحُمُهُمْ بَيْنَهُمْ تَرَاحُمَ الأنبِيَاءِ
بَيْنَ الأمَمِ ، وَهُمْ أوَّلُ مَنْ يَّدْخُلُ الْجَنَّةَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ بَيْنَ الأمَمِ ،
وَهُمُ السَّابِقُوْنَ الْمُقَرَّبُوْنَ الشَّافِعُونَ الْمُشَفَّعُ لَهُمْ

(हवाला : – फुतूहुश्शाम,अज़ अल्लामा वाकदी,सफहा : 290)

तर्जुमा : ''नहीं है कोई मा'बूद मगर अल्लाह और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं जो नबुव्वत को खत्म फरमाने वाले हैं। इन के बा'द कोई नबी नहीं। इन की विलादत का मकाम मक्का होगा और इन की हिज्रत का मकाम तय्यबह होगा, वह तय्यबह जो अमान वाला है या'नी मदीना मुनव्वरा, वह नबी न तो बद-ख्वाह होंगे, न दुरश्त-खू या'नी झगड़ालू होंगे और न लग्व गो होंगे। इन की उम्मत अल्लाह की हम्द बजा लाने वाली होगी और इन के उम्मती वह लोग होंगे जो हर हाल में अल्लाह की हम्द करें, इन की ज़बानें तक्बीर और तहलील में मुतहर्रिक होंगी, और वह नबी मदद दिये जाएंगे हर उस शख्स पर जो इन से लड़ेगा इन के दुश्मनों में से। इस नबी के उम्मती अपनी शर्म गाहों को धोएंगे और अपने सतरों को छुपाएंगे, इन के सीने हिदायत से लबरेज़ होंगे,इन की आपस में एक दूसरे के साथ मेहरबानी ऐसी होगी जैसी अम्बिया किराम अपनी उम्मतों के साथ मेहरबानी फरमाते हैं, कयामत के दिन इन की उम्मत तमाम उम्मतों से पहले जन्नत में दाखिल होगी, इस नबी के उम्मती ईमान लाने में सब्कत (पहल) करेंगे, वह उम्मती बुज़ुर्गी वाले होंगे, शफाअत करेंगे और इन की शफाअत कबूल की जाएगी।''

अवराक की यह तहरीर पढ़ कर मैं ने कहा कि मेरे वालिद ने मुझ को जो कुछ भी इल्म सिखाया है और जो कुछ भी अस्रार बताए हैं इन सब से यह बेहतर है। मेरे वालिद के इन्तिकाल के कुछ अर्सा बा'द मैं ने सुना कि नबी आखिरुज़ ज़मान सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम मक्का मुअज़्ज़मा में ज़ाहिर हुए हैं। और वह अपने काम को ज़ाहिर फरमाते हैं। मैं ने अपने दिल में कहा कि खुदा की कसम ! बे शक यह वही हैं जिन के मुतअल्लिक मेरे वालिदे मरहूम ने अपनी तहरीर में अर्काम फरमाया है। मैं इन के अहवाले शरीफा से बराबर आगाह होता रहा। यहां तक कि मुझे इत्तिला' मिली कि वह मक्का मुअज़्ज़मा से हिज्रत फरमा कर मदीना मुनव्वरा तशरीफ ले गए हैं। मैं इन के अहवाल से बराबर बा-खबर होता रहता था। जेहाद, ऐ'लाने तौहीद,दुश्मनों पर गल्बा, इन के अस्हाब के अख्लाके हसना वगैरा से मुतवातिर वाकिफीयत हासिल करता रहा। मैं ने एक मरतबा इन की खिदमते अक्दस में हाज़िर होने का कस्द भी किया, लैकिन अपनी मस्रूफियात की

वजह से न जा सका। फिर मुझ को खबर मिली कि उन्हों ने इन्तिकाल फरमाया है। फिर मैं ने सोचा कि यह शायद वही न थे, जिन का में इन्तिज़ार करता था। लैकिन मैं ने एक मरतबा ख्वाब देखा कि आस्मान के दरवाज़े खोल दिये गए हैं और फरिश्ते गिरोह दर गिरोह उतरते हैं और कोई कहने वाला कहता है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने इन्तिकाल फरमाया और अहले ज़मीन से वही मौकूफ और मुन्कतेअ हो गई। बा'दहु मुझे खबर मिली कि इन की उम्मत से एक शख्स खलीफा मुकर्रर हुए हैं और इन का नाम अबू बक्र सिद्दीक है। मैं ने इरादा किया कि इन की खिदमत में हाज़िर हो जाउं, लैकिन मैं ने दैर कर दी और वह भी इस आलम से इन्तिकाल फरमा गए। फिर मैं ने सुना कि अब उमर बिन खत्ताब खलीफा हुए हैं और वह बैतुल मुकद्दस आए हुए हैं, लिहाज़ा मैं ने इरादा किया कि बैतुल मुकद्दस जा कर हज़रत उमर बिन खत्ताब से मुलाकात कर के इन के दीन की हकीकत मा'लूम कर लूं और फिर इन के दीन में दाखिल हो जाउं।

हज़रत का'ब बिन अह्बार मज़कूरा सबब के पैशे नज़र हज़रत उमर फारूके आ'ज़म की खिदमत में बैतुल मुकद्दस हाज़िर हुए। हज़रत का'ब ने अमीरुल मो'मिनीन फारूके आ'ज़म से कुतुबे साबिका में मज़कूर हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के अवसाफ हमीदा के तअल्लुक से कुछ सवालात किये और तसल्ली बख्श जवाबात मिलने पर उन्हों ने कहा :

يـا أَمِيـرَ الْـمُـؤمِـنِيـنَ أنَـا أشْهَدُ أنْ لَّا إلٰهَ إلّا اللّٰهُ وَأشْهَدُ أنّ مُحَمّداً رّسُوْلُ اللهِ

तर्जुमा : ''ऐ अमीरुल मो'मिनीन ! मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं गवाही देता हूं कि बै:शक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं।''

हज़रत का'ब को कब्रे रसूल y की ज़ियारत की दा'वत :-

हज़रत का'ब बिन अह्बार रदियल्लाहो तआला अन्हो मुल्के शाम के बा असर शख्स थे। इन के इस्लाम कबूल करने से हज़रत उमर फारूके आ'ज़म बहुत खुश हुए और आप ने इन को हुज़ूरे अक्दस, जाने आलम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के आस्ताना की हाज़िरी की दा'वत दी। हज़रत उमर फारूक ने जिन अल्फाज़ में दा'वत दी,वह अल्लामा वाकदी कुद्दिसा सिर्रहु की किताब से ज़ैल में पैशे खिदमत हैं :

''पस बहुत खुश हुए हज़रत उमर रदियल्लाहो तआला अन्हो ब-सबब

मुसल्मान होने का'ब के, फिर कहा उन्हों ने का'ब से कि आया हो सक्ता है कि चलो तुम मेरे साथ मदीना तय्यबह को, पस ज़ियारत करो तुम कब्रे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैह व आलेहि व सल्लम की और फाइदा हासिल करो तुम कब्रे शरीफ की ज़ियारत से, पस कहा मैं ने कि हां, या अमीरुल मोमिनीन मैं ऐसा ही करूंगा।''

(हवाला : ''फुतूहुश्शाम'' अज़ अल्लामा वाकदी,सफहा : 292)

कारेईने किराम गौर फरमाएं कि हज़रत उमर फारूके आ'ज़म रदियल्लाहो तआला अन्हो ने **हज़रत का'ब बिन अह्बार को सिर्फ ''कब्रे अन्वर'' की ज़ियारत के लिये मदीना मुनव्वरा आने की दा'वत दी।** जिस का साफ मत्लब यह हुवा कि का'ब बिन अह्बार मुल्के शाम से मदीना मुनव्वरा तक का तवील सफर सिर्फ और सिर्फ हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की मुकद्दस आराम गाह की ज़ियारत के लिये करें। इलावा अज़ीं अमीरुल मो'मिनीन हज़रत उमर फारूके आ'ज़म का यह जुम्ला कि **''और कब्र शरीफ की ज़ियारत से फाइदा हासिल करो''** काबिले गौर है या'नी हज़रत उमर फारूक का अकीदा था कि मेरे मालिक व मुख़्तार आका सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के रौज़-ए अक्दस की ज़ियारत करने से ज़रूर फाइदा हासिल होता है :

मांगेंगे, मांगे जाएंगे, मुंह मांगी पाएंगे
सरकार में न ''ला'' है, न हाजत अगर की है

(अज़ : इमामे इश्को मुहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

लैकिन अफ्सोस ! कि दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन का कहना है कि सिर्फ गुम्बदे खिज़रा की हाज़री के कस्द से मदीना तय्यबह का सफर करना मना' है और वह यह भी कहते हैं मज़ारे अक्दस से ज़ाइर को कुछ भी फाइदा हासिल नहीं होता। अगर सिर्फ कब्र शरीफ की ज़ियारत के लिये मदीना मुनव्वरा का सफर करना मम्नूअ होता, तो हज़रत उमर फारूके आ'ज़म हरगिज़ हज़रत का'ब बिन अह्बार को सिर्फ कब्रे शरीफ की ज़ियारत के लिये मदीना मुनव्वरा का सफर करने का मश्वरा न देते और अगर कब्रे शरीफ की ज़ियारत से फाइदा हासिल नहीं होता, तो हज़रत उमर फारूक हज़रत का'ब से हरगिज़ यह न फरमाते कि **''कब्र शरीफ की ज़ियारत से फाइदा हासिल करो।''** साबित हुवा कि यह दोनों उमूर जाइज़ और मुस्तहसन हैं। इन कामों का नाजाइज़ और हराम होना तो दर किनार अगर इस में ज़र्रा बराबर

भी शरीअत की खिलाफ वर्ज़ी या शरई कबाहत होती, तो हज़रत उमर फारूक हरगिज़ हज़रत का'ब को इन कामों की तर्गीब न देते बल्कि हज़रत का'ब को सख्ती से मना' फरमा देते, क्यूं कि हज़रत फारूके आ'ज़म इमामुल हुदा और हक्क व बातिल में फर्क करने वाले थे। वह किसी की भी रिआयत कर के खिलाफे शरअ काम रवा नहीं रखते थे :

फारिके हक्को बातिल इमामुल हुदा
तैगे मस्लूले शिद्दत पे लाखों सलाम

(अज़ : इमामे इश्को मुहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत का'ब के साथ हज़रत उमर की मुल्के शाम से रवानगी :-

अमीरुल मो'मिनीन हज़रत उमर फारूके आ'ज़म रदियल्लाहो तआला अन्हो ने बैतुल मुकद्दस शहर में पांच दिन और इस्लामी लश्कर के कैम्प में पांच दिन, या'नी कुल दस रोज़ बैतुल मुकद्दस में कयाम फरमाया। बैतुल मुकद्दस के बाशिन्दों को सुलह और अमन का अह्द नामा तहरीर फरमाने के बा'द आप बैतुल मुकद्दस से लश्कर और हज़रत का'ब बिन अह्बार के हमराह रवाना हो कर ''जाबिया'' आए। आप जाबिया में ठहरे और वहां आप ने एक इन्तिज़ामी उमूर का दफ्तर खोला और इस्लामी लश्कर को हस्बे ज़ैल तक्सीम से मुरत्तब फरमाया :

- हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह और हज़रत खालिद बिन वलीद को बीस हज़ार (20,000) का लश्कर दे कर इन को ''खोज़ान'' से ले कर ''हल्ब'' तक का इलाका सुपुर्द किया। अजनादीन का भी कुछ हिस्सा इन्हें दिया।
- हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान को छ हज़ार (6,000)का लश्कर दे कर ''अर्दे फलस्तीन'', अर्ज़ुल किद्स और बैतुल मुकद्दस का साहिली इलाका सुपुर्द किया और इन पर हज़रत अबू उबैदा को हाकिम मुकर्रर फरमाया। और हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान को ''कैसारिया'' पर हम्ला करने का भी मश्वरा दिया।
- हज़रत अम्र बिन अल-आस को दस हज़ार (10,000)का लश्कर दे कर मिस्र रवाना किया।
- हज़रत अम्र बिन सईद अन्सारी को हुमुस के ओहदए कुज़ा पर मुकर्रर फरमाया।

फिर हज़रत उमर फारूके आ'ज़म हज़रत का'ब बिन अह्बार के साथ जाबिया से रवाना हुए और मदीना मुनव्वरा आए। मदीना मुनव्वरा पहुंच कर हज़रत उमर ने सब से पहले

जो काम अन्जाम दिया वह हज़रत का'ब के साथ गुम्बदे खद्रा में हाज़िरी थी। बारगाहे रिसालते मआब सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम और बारगाहे सिद्दीकी रदियल्लाहो तआला अन्हो में सलाम पैश करने के बा'द आप ने मस्जिदे नबवी में चार रक्अत नफ्ल नमाज़ पढीं। अह्ले मदीना को अमीरुल मो'मिनीन की मुल्के शाम से वापसी की इत्तिला' मिली, तो मदीना शहर जुंबिश में आ गया। लोग खुशी और सुरूर से मचल उठे और गिरोह दर गिरोह अमीरुल मोमिनीन की मुलाकात के लिये मस्जिदे नबवी में आने लगे। लोगों ने आप को सलाम पैश किया, मर्हबा कहा और बैतुल मुकद्दस की फतहे मुबीन की मुबारकबाद दी। जब मस्जिदे नबवी लोगों से भर गई, तो हज़रत उमर फारूक ने मज्मा' के सामने हज़रत का'ब बिन अह्बार को खड़ा किया और फरमाया कि मुसल्मानों को अपने ईमान लाने का वाकेआ सुनाओ। चुनान्चे हज़रत का'ब ने अज़ अव्वल ता आखिर तमाम वाकेआ रिक्कत आमेज़ लहजा में बयान किया, जिस को सुन कर लोगों के ईमान कवी और ताज़ा हो गए। तमाम सहाबए किराम अपने आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के इश्के सादिक के जज़्बे से सरशार हो कर झूम उठे और अपने महबूब आका की अज़्मत व मुहब्बत में मचलने लगे :

न दिल बशर ही फिगार है कि मल्क भी इस का शिकार है
यह जहां कि हज़्दा हज़ार है जिसे देखो इस का हज़ार है

(अज़ : इमामे इश्को मुहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

❀ **<u>अब तक इस्लामी लश्कर के हाथों फतह होने वाले मकामात</u> :-**

(1) अरेका (2) सह्ना (3) तदम्मुर (4) हूरान (5) बसरा (6) बैतुल लहिया (7) अजनादीन (8) दमिश्क (9) हिस्न अबील किद्स (10) जोसिया (11) हुमुस (12) शीरज़ (13) रुस्तन (14) हमात (15) कन्सरीन (16) बा'ल्बक (17) यर्मूक (18) बैतुल मुकद्दस

अब हम नाज़ेरीन को एक ऐसी जंग का मन्ज़र दिखाएंगे जो मुल्के शाम की तमाम जंगों में मुमताज़ हैसियत की हामिल है। मुजाहिदीने इस्लाम की दिलैरी और शुजाअत की निराली दास्तान का आंखों देखा हाल अगले सफ्हात में मुलाहिज़ा फरमाएं।

जंगे हल्ब

अमीरुल मोमिनीन सय्यिदोना उमर फारूके आ'ज़म रदियल्लाहो तआला अन्हो ने जैशे इस्लाम को तक्सीम फरमा कर अलग अलग सम्त में कूच करने का जो हुक्म फरमाया था, इस के मुताबिक इस्लामी लश्कर मुतफर्रिक इलाकों की तरफ रवाना होना शुरू हुवा। हज़रत अम्र बिन अल–आस दस हज़ार (10,000) सवारों का लश्कर ले कर मिस्र की जानिब रवाना हुए और हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान छे हज़ार (6,000) का लश्कर ले कर ब–जानिबे कैसारिया रवाना हुए। लैकिन कैसारिया में हिरक्ल बादशाह का बेटा कुस्तुनतीन अस्सी हज़ार (80,000)की फौज जमा कर के मुकाबला के लिये मुस्तइद बैठा था। लिहाज़ा हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान ने हज़रत अबू उबैदा से कुमुक तलब की। चुनान्चे हज़रत अबू उबैदा ने तीन हज़ार (3,000) का लश्कर ज़ैरे सरदारी हज़रत हर्ब बिन अदी ब–जानिबे कैसारिया हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान के लिये कुमुक भेजी।

हज़रत अबू उबैदा मअ हज़रत खालिद बिन वलीद बीस हज़ार (20,000) के लश्कर के साथ ब–जानिबे हल्ब रवाना होने का इरादा रखते थे, इस में से तीन हज़ार का लश्कर कैसारिया भेज दिया। अब इन के साथ सत्तरह हज़ार (17,000) का लश्कर बाकी रहा। जिन में अक्सर अह्ले यमन थे। हज़रत अबू उबैदा सत्तरह हज़ार का लश्कर ले कर किल्ल–ए हल्ब की जानिब रवाना हुए। राह में कन्सरीन शहर वाकेअ था। जब आप कन्सरीन आए तो अह्ले कन्सरीन ने साल गुज़िश्ता की हूई सुलह की अज़ सरे नौ तज्दीद की। पांच हज़ार ऊकिया सोना, पांच हज़ार ऊकिया चांदी, दो हज़ार दीबाज के कपड़े और पांच सौ ऊंट का बोझ ज़ैतून और अंगूर पर सुलह तमाम हूई। हज़रत अबू उबैदा ने अह्ले कन्सरीन को सुलह और अमान की तहरीर मर्कूम फरमा दी। हज़रत अबू उबैदा और हज़रत खालिद बिन वलीद इस्लामी लश्कर के सरदारों के हमराह शहर में दाखिल हुए। शहर में एक मुनासिब जगह पर मस्जिद ता'मीर करने का इरादा किया और जगह मुकर्रर कर के खत्ते मस्जिद खींचा। बा'दहु कन्सरीन से हल्ब की जानिब रवाना हुए।

हल्ब के किल्ले का और इस के हाकिम का मुख्तसर तआरुफ :-

हल्ब किसी ज़माना में बगैर किल्ले का शहर था। एक छोटा सा बराए नाम मा'मूली किल्ले ज़रूर था, लैकिन वह किल्ला शहर से अलग और वीरान था। हल्ब का हाकिम एक जंगजू बतरीक था। उस ने शहर हल्ब और अतराफ व जवानिब की घाटियों और पहाड़ों पर कब्ज़ा कर लिया था और तमाम इलाके का जबरन मालिक बिन गया था। उस ने अज़ सरे नौ शहर पनाह ता'मीर की और अपनी ज़ाती निगरानी में मज़बूत किल्ला ता'मीर किया। हल्ब का किल्ला बहुत ही मज़बूत था। उस की दीवारों की बुलन्दी 42 फुट के करीब थी। इलावा अज़ीं किल्ले की दीवार की चौड़ाई इतनी वसीअ थी कि किल्ले की दीवार पर लश्कर सामाने जंग के साथ चढ़ कर दुश्मन से लड़ सके। किल्ले के दरवाज़े मज़बूत लक्ड़ी के बने थे और उस पर लोहे का गिलाफ चढ़ा था। उस बतरीक ने किल्ले में भारी ता'दाद में सामाने जंग जमा कर रखा था और अपनी ज़ाती फौज का दस्ता काइम कर रखा था। वह बतरीक लड़ाई के फन का मश्शाक और माहिर था। इलावा अज़ीं फन्ने सियासत और मक्र व फरैब में वह अपनी मिसाल आप था। लिहाज़ा हिरक्ल भी उस से ता'रुज़ नहीं करता था, बल्कि उस ने जितना इलाका जबरन कब्ज़ा कर रखा था वह तमाम इलाका हिरक्ल बादशाह ने उस को ब-तौर जागीर लिख दिया था। उस में लोगों को उक्साने और लड़ाई पर उभारने का ऐसा फन्न था कि उस की बात सुन कर लोग अपनी जान कुरबान करने पर राज़ी हो जाते। हिरक्ल बादशाह को खौफ था कि उस बतरीक को अगर खुश नहीं रखूंगा तो वह मेरे खिलाफ अलमे बगावत बुलन्द कर के मेरी सल्तनत का मालिक बन जाएगा, लिहाज़ा वह बतरीक बादशाह हिरक्ल से जो कुछ भी मुतालबा करता, पूरा कर दिया जाता। बल्कि मुल्के शाम के तमाम बादशाह उस के शर से महफूज़ रहने के लिये उस से अच्छे तअल्लुकात बर करार रखने के लिये उस की बहुत ज़ियादह ता'ज़ीम व तक्रीम करते बल्कि उस की खुशामद और चापलूसी करते। अल-मुख्तसर ! पूरे मुल्के शाम पे हल्ब के किल्ले और उस के हाकिम का एक रोअब और दबदबा मुसल्लत था।

हल्ब के मज़कूरा हाकिम बतरीक के मरने के बा'द उस के दो बेटे किल्ले के मालिक हुए थे।

(1) **बड़े बेटे का नाम "युकना" था।** वह अपने वालिद के नक्शे कदम पर चल कर सियासी और जंगी उमूर में बहुत महारत हासिल कर चुका था और उस ने भी पूरे मुल्के शाम में अपनी इन्फिरादी हैसियत बना रखी थी, बल्कि

जंगी मआमलात में वह अपने बाप से भी सब्कत ले गया। अपने बाप के इन्तिकाल के बा'द उस ने लश्कर की ता'दाद में काफी इज़ाफा किया था और वसीअ पैमाने पर किल्ले में सामाने जंग ज़खीरा कर रखा था। शहर के हाकिम का मन्सब भी उस ने अपने इख्तियार में रखा था। लड़ाई के मआमला में वह किसी से डरता नहीं था क्यूं कि वह निहायत दिलैर, शुजाअ और जंगजू शेहसवार था।

(2) **छोटे बेटे का नाम "यूहन्ना" था।** वह निहायत ही नर्म तबीअत का और इबादत गुज़ार शख्स था। उस ने अपनी मर्ज़ी से मुल्की और सियासी उमूर से दस्त बरदारी इख्तियार कर ली थी। दुन्यवी मआमलात में वह मुत्लक दख्ल अन्दाज़ी नहीं करता था, बल्कि कामिल तौर से वह अपने मज़हब की तरफ रागिब हो गया था। वह दीने नस्रानिया का ज़बरदस्त आलिम और राहिब था। यूहन्ना अपना तमाम वक्त कनीसा में मुकीम रह कर तौरेत, इन्जील और दीगर कुतुबे समावी की तिलावत, मुतालआ और इबादत में बसर करता था। इलावा अज़ीं नए नए कनीसे, दैर और सौमआ ता'मीर करना, कसों और राहिबों का खाना, कपड़ा और दीगर ज़रुरियाते ज़िन्दगी फराहम करना और इन की ज़ियादह से ज़ियादह खिदमत अन्जाम देना उस का महबूब मश्गला था।

इस्लामी लश्कर के मुतअल्लिक हाकिम युकना और राहिब यूहन्ना में गुफ्तगू

जब अहले हल्ब को इत्तिला' हूई कि इस्लामी लश्कर कन्सरीन से कूच कर के हल्ब की जानिब आ रहा है, तो पूरे शहर में भगदड़ और हलचल मच गई। राहिब यूहन्ना भी यह खबर सुन कर अपने बड़े भाई हाकिम युकना के पास आया और पूछा कि अरबों के मआमला में तुम क्या इरादा रखते हो। हाकिम युकना ने कहा कि मैं अरबों से बराबर लड़ूंगा। मैं मुल्के शाम के उन बादशाहों की तरह बुज़दिल और ना-मर्द नहीं हूं, जो अरबों के सामने झुक गए, बल्कि मैं इन अरबों को अपने इलाके में पाऊं भी नहीं रखने दूंगा और इन के सामने चल कर दिलैरी से मुकाबला कर के इन को भगा दूंगा। दोनों भाइयों में यह गुफ्तगू रुउसाए शहर की मौजूदगी में हूई। यूहन्ना ने हाकिम युकना से कहा, मैं यह चाहता हूं कि आज की रात हम दोनों

भाई खल्वत में बैठ कर इत्मिनान से इस मआमले पर मश्वरा करें और ठंडे दिमाग से सोच कर इस मआमले का हल तलाश करें। हाकिम युकना ने कहा कि तुम्हारी राए मुनासिब है।

रात के वक्त जब दोनों भाई खल्वत में जमा हुए, तो राहिब यूहन्ना ने अपने बड़े भाई हाकिम युकना से कहा कि मैं तुम्हारा छोटा भाई हूं, इलावा अज़ीं लड़ाई के उमूर में मुझे कुछ भी तजरबा नही, लैकिन इस के बा-वुजूद मैं तुम को ऐसा मश्वरा दूंगा कि अगर तुम ने मेरा मश्वरा कबूल किया तो तेरी इज़्ज़त बर-करार रहेगी। इलावा अज़ीं तेरा माल, तेरी जान और साथ में अह्ले शहर के भी जान व माल सलामत रहेंगे। हाकिम युकना ने कहा कि ऐ भाई ! तुम उमर में मुझ से छोटे ज़रूर हो, लैकिन हमारे दीन की पाबन्दी, मा'लूमात, और खिदमात की वजह से तुम मुझ से मरतबा में बड़े हो। मैं तुम्हारी गायत दर्जा इज़्ज़त करता हूं और तुम को सिर्फ मेरा ही नहीं बल्कि तमाम अह्ले हल्ब का खैर ख्वाह और हमदर्द जानता हूं, लिहाज़ा तुम खुशी से अपना मश्वरा बयान करो।

यूहन्ना ने कहा कि मेरी राए यह है कि तुम इन अरबों के पास एलची भेजो और अगर तुम्हें मन्ज़ूर हो तो मैं इन के पास ब-तौर एलची जाउं। इन से सुलह के मआमले में गुफ्तगू कर के वह जिस कद्र भी माल तलब करें, इन को दिया जाए और इन से सुलह कर ली जाए और जब तक इन का मुल्के शाम पर गल्बा और तसल्लुत रहे,हर साल इसी मिक्दार में जिज़्या अदा कर के सुलह की तज्दीद करते रहें, ताकि बगैर लड़ाई के हम को अमन व अमान हासिल हो जाए। बर-खिलाफ इस के जंग करने में हमारे शहर के बहुत से लोग मारे जाएंगे और हमारा जानी व माली नुक्सान ज़ियादह होगा। क्यूं कि **अरबों पर गल्बा हासिल करना लोहे के चने चबाने से भी ज़ियादह दुश्वार काम है।** हिरक्ल बादशाह के अज़ीम लश्कर को उन्हों ने अजनादीन,यर्मूक वगैरा में शिकस्ते फाश दी है। मुल्के शाम के मज़बूत किल्ले दमिश्क, बसरा, कन्सरीन, बैतुल मुकद्दस, बा'ल्बक वगैरा उन्हों ने आसानी से फतह कर लिये हैं, लिहाज़ा मेरे मश्वरे के मुताबिक हमारी बेहतरी और भलाई इसी में है कि हम इन से जंग न करें और सुलह कर लें।

हाकिम युकना अपने भाई यूहन्ना की बात सुन कर गज़बनाक हो गया, बोला कि तेरा मसीह बुरा करे ! कैसी आजिज़ी और ज़िल्लत भरी राए देता है। तेरी मां ने तुझ को राहिब जना है और राहिब की गिज़ा तेल, सब्ज़ी होती है, वह गोश्त और दीगर ने'मतों को नहीं छूते, लिहाज़ा इन में बुज़दिली ज़ियादह होती है और **मेरी मां ने मुझ को बादशाह जना है। मैं बादशाह का बेटा और बादशाह हूं। लड़ाई का फन मुझे विरासत में मिला है।**

जंग की महारत और दानिश मुझे घुट्टी में पिलाई गई है। तुझ पर सख्ती हो, क्या तू यह चाहता है कि मैं बगैर लड़ाई अपना शहर अरबों को सुपुर्द कर दूं ? अब तो हमारे और अरबों के दरमियान जंग ही फैसला करेगी। जब यूहन्ना ने अपने भाई युकना की यह बात सुनी तो मुतअज्जिब हो कर हंसा और कहा कि **कसम है हक्के मसीह की ! ऐ मेरे भाई ! मैं यह देख रहा हूं कि तेरी मौत करीब है।** क्यूं कि तू सितमगर और बागी है और नाहक्क खूनरैज़ी को पसन्द करता है। तुझ को तेरे लश्कर और सामाने जंग पर फख्र और गुरूर है, लैकिन तेरा यह लश्कर हिरक्ल बादशाह के जमा कर्दा यर्मूक के लश्कर के मुकाबला में कुछ भी नहीं और तू जानता है कि हिरक्ल बादशाह के लश्कर ने यर्मूक में कैसी मुंह की खाई है, लिहाज़ा अल्लाह से डर और तकब्बुर व इनाद तर्क कर, वर्ना अन्करीब तू हलाक हो जाएगा।

हाकिम युकना ने अपने भाई यूहन्ना से कहा अब बस कर और खामौश रेह। **तू ने इन नन्गे भूके अरबों को बहुत अहमियत दे दी है।** मैं उन बादशाहों में से नहीं जो अरबों के सामने घुटने टेक दूं,मुझे पूरा यकीन है कि हज़रत मसीह और सलीब की मदद मुझ को हासिल होगी। मैं इन अरबों को न सिर्फ यहां से भगा कर दम लूंगा बल्कि इन के तआकुब में मुल्के हिजाज़ तक जाउंगा और मुल्के हिजाज़ पर भी कब्ज़ा करूंगा और मुल्के शाम के तमाम बादशाहों को दिखा दूंगा कि मैं ने अरबों को नेस्तो नाबूद कर दिया। फिर पूरे मुल्के शाम में मेरे नाम का डंका बजेगा और **हिरक्ल बादशाह को मा'ज़ूल कर के "कैसरे रूम" के मन्सब पर फाइज़ हो जाऊंगा।** हाकिम युकना की मुतकब्बिराना गुफ्तगू सुन कर इस का छोटा भाई यूहन्ना बहुत नाराज़ हुवा और कहा कि जब तक तू मेरी राए से इत्तिफाक नहीं करेगा, तब तक तुझ से सलाम व कलाम करना मेरे लिये हराम है। फिर वह खश्मनाकी के आलम में वहां से उठ कर अपने सौमआ में चला गया।

दूसरे दिन हाकिम युकना ने शहर के जंगजू अफ्राद और लश्कर को जमा किया और माल व हथियार का खज़ाना खोल दिया। जिस किसी ने जो भी हथियार और माल मांगा उस को फराख दिली से दिया। बा'दहु उस ने हाज़िरीन को मुखातब कर के पुर जौश तक्रीर की और इत्मिनान दिलाया कि **अरबों से मुकाबला करना बहुत आसान है।** क्यूं कि इन का लश्कर मुतफर्रिक हो गया है। कुछ कैसारिया की जानिब गया हुवा है और कुछ दीगर इलाकों की तरफ गया हुवा है। हमारे शहर पर हम्ला करने जो लश्कर आ रहा है उस की ता'दाद बहुत कम है, लिहाज़ा हम उन को तहे तैग कर के खत्म कर देंगे। हाकिम युकना की बात सुन कर लोगों में लड़ाई का जौश पैदा हुवा और इन के हौसले बुलन्द हुए।

हल्ब की जानिब पहला इस्लामी लश्कर :-

हज़रत अबू उबैदा ने कन्सरीन से हज़रत का'ब बिन जुम्रा जुम्री को एक हज़ार का लश्कर ब-तौर तलीआ दे कर फरमाया कि तुम हल्ब की जानिब कूच करो और मैं भी बाकी लश्कर ले कर तुम्हारे पीछे आता हूं। हज़रत अबू उबैदा के हुक्म के मुताबिक हज़रत का'ब बिन जुम्रा एक हज़ार का लश्कर ले कर कन्सरीन से हल्ब की जानिब रवाना हुए। हल्ब से छे (६) मील के फास्ले पर वाकेअ एक नहर के किनारे पहुंच कर पड़ाव किया और हज़रत अबू उबैदा के लश्कर की आमद का इन्तिज़ार करने लगे। हाकिम युकना ने हर तरफ अपने जासूस फैला रखे थे। चंद जासूसों ने आ कर युकना को इत्तिला' दी कि मुसल्मानों का तक़्रीबन एक हज़ार पर मुश्तमिल छोटा लश्कर हल्ब से छे मील के फास्ले पर पड़ाव किये हुए है। यह खबर सुन कर हाकिम युकना के **मुंह में पानी आया।** फौरन उस ने दस हज़ार (10,000) का लश्कर मुरत्तब किया और शहर से रवाना हुवा। हाकिम युकना ने एक मक्र यह किया कि नहर के करीब जहां इस्लामी लश्कर का पड़ाव था, वहां पहुंच कर करीब में वाकेअ एक झाड़ी में पांच हज़ार का लश्कर पोशीदह कर दिया और पांच हज़ार का लश्कर ले कर नहर की तरफ आगे बढ़ा। हज़रत का'ब बिन जुम्रा का लश्कर नहर के किनारे इत्मिनान से पड़ाव किये हुए था। मुजाहिदीन अपने घोड़ों को दाना पानी देने, वुज़ू करने, खाना पकाने और दीगर कामों में मश्गूल थे। हाकिम युकना के लश्कर के हम्ले से बे-खबर थे कि दफ्अतन पांच हज़ार का रूमी लश्कर आ पड़ा।

रूमी लश्कर का हम्ला और सहाबा का या मुहम्मद y पुकारना

हाकिम युकना तेज़ तूफान की तरह अपने लश्कर के साथ आगे बढ़ता हुवा आ रहा था। चंद मुजाहिदों ने दूर से देखा कि सलीबें बुलन्द किये हुए रूमी लश्कर आ रहा है, तो वह सवार हो कर अपने साथियों को चौकन्ना करने दौड़े। हज़रत का'ब बिन जुम्रा ने रूमी लश्कर का अंदाज़ा किया तो तक़्रीबन पांच हज़ार मा'लूम हुवा। हज़रत का'ब बिन जुम्रा ने मुजाहिदों को हम्ले का जवाब देने के लिये तैयार कर दिया और पुकार कर कहा कि ऐ दीन के मददगारो ! हम में से हर एक शख्स को पांच रूमी सिपाही से मुकाबला करना है और अगर अल्लाह ने चाहा तो यह पांच हज़ार का रूमी लश्कर हमारे लिये गनीमत है। मुजाहिदों ने कहा

खुदा की कसम ऐसा ही होगा। हर मुजाहिद अपने साथी को जौश दिला रहा था। मुजाहिदों ने नारए तक्बीर बुलन्द किया और हम्ले के लिये तैयार हो गए। यह सुब्ह का वक्त था। आफ्ताब आस्मान में एक नैज़ा बुलन्द हुवा था। युकना अपने लश्कर के साथ मुसल्मानों पर टूट पड़ा। मुजाहिदों ने बड़ी दिलैरी से मुकाबला किया और हम्ले का जवाब दिया। दोनों लश्कर आपस में गुथ्थम गुथ्था हो गए, शिद्दत से नैज़ा बाज़ी और तैग ज़नी होने लगी। मुसल्मान कलील ता'दाद में होने के बा-वुजूद शुजाअत और साबित कदमी से लड़ते थे और करीब था कि गल्बा पा जाएंगे कि अचानक झाड़ी में पोशीदह रूमी लश्कर ने इस्लामी लश्कर की पुश्त की जानिब से हम्ला कर दिया। आगे पांच हज़ार का रूमी लश्कर और पीछे भी पांच हज़ार का रूमी लश्कर और दरमियान में सिर्फ एक हज़ार का इस्लामी लश्कर पूरी तरह से रूमी लश्कर के घैरे में आ गया था। इस्लामी लश्कर के मुजाहिदीन यके बा'द दीगरे शहीद होने लगे और आन की आन में एक सौ मुजाहिद शहीद हो गए। बाकी नौ सौ मुजाहिद सख्त मुसीबत में गिरफ्तार थे लैकिन बड़ी साबित कदमी से जम कर मुकाबला कर रहे थे।

हाकिम युकना अपने लश्कर को उक्साता और हम्ले की शिद्दत में इज़ाफा करने की तर्गीब देता था। हज़रत का'ब बिन जुम्रा अपने साथियों पर आ पड़ी मुसीबत से सख्त बे चैन व बेकरार थे, लैकिन बड़ी दिलैरी से मुकाबला कर रहे थे। इस्लामी लश्कर की ता'दाद आहिस्ता आहिस्ता कम होती जा रही थी। शहीद होने वालों की ता'दाद अब एक सौ सत्तर (१७०) हो गई थी। हज़रत का'ब बिन जुम्रा भी शदीद ज़ख्मी हो गए थे। अक्सर मुजाहिद ज़ख्मों से चूर थे। तमाम मुजाहिद हज़रत अबू उबैदा के लश्कर की आमद का इन्तिज़ार कर रहे थे, बल्कि शिद्दत से ख्वाहिश कर रहे थे। लड़ते लड़ते कन्सरीन की तरफ से आने वाले रास्ते को देखते थे कि इस्लामी लश्कर का निशान नज़र आए क्यूं कि इन से हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया था कि मैं तुम्हारे पीछे रवाना होता हूं, लैकिन अभी तक इन की आमद न हूई थी बल्कि इन के आने का कोई निशान भी नज़र नहीं आता था।

अब आफ्ताब आस्मान के बीच में आ गया था। दो-पहर का वक्त, शिद्दत की धूप, जंग की आग की गर्मी, मुजाहिदों का कसरत से शहीद होना वगैरा उमूर से यह गुमान हो रहा था कि शाम होने से पहले तमाम मुजाहिद जामे शहादत नौश कर लेंगे। और नागाह इस्लामी लश्कर को एक और अज़ीम सदमा पहुंचा। सहाबीए रसूल और जंग तबूक में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के हमराही **हज़रत सईद बिन मुफ्लज शहीद हो गए।** हज़रत सईद बिन मुफ्लज रदियल्लाहो तआला अन्हो को चालीस ज़ख्म लगे थे और तमाम ज़ख्म सीना की तरफ थे। एक भी ज़ख्म पीठ की जानिब न था। हज़रत सईद बिन

मुफ्लज के शहीद होने से इस्लामी लश्कर के मुजाहिदों का हौसला टूट गया। हज़रत का'ब बिन जुम्रा भी सख्त तश्वीश में थे। हज़रत अबू उबैदा के लश्कर को आने में भी ताखीर हो गई थी। ब-ज़ाहिर बचने की कोई सबील नज़र नहीं आती थी। और मायूसी का बादल छाया हुवा था। तब हज़रत का'ब बिन जुम्रा सहाबीए रसूल ने इस तरह पुकारा :

يَامُحَمَّدُ، يَامُحَمَّدُ، نَصرُ اللّٰهِ اَنزِلْ، يَامَعشَرَ الْمُسلِمِيْنَ
اِثْبِتُوْا لَهُمْ فَإنَّمَا هِىَ سَاعَةٌ وَّ أَنتُمُ الأعْلَوْنَ

तर्जुमा : "या रसूलल्लाह ! या रसूलल्लाह ! मदद करो, ऐ मदद अल्लाह की नाज़िल हो तू। ऐ गिरोहे मुसल्मान ! साबित कदमी करो तुम इन के मुकाबला में इस वास्ते कि नहीं है यह मआमला मगर एक घड़ी का और तुम ही गालिब होगे।"

कारेईने किराम गौर फरमाएं। हज़रत का'ब बिन जुम्रा रदियल्लाहो तआला अन्हो सहाबीए रसूल हैं, सख्त मुसीबत में गिरफ्तार हैं। ब-ज़ाहिर नुस्रत व नजात की कोई सूरत नज़र नहीं आती, **तब अपने आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को "या मुहम्मद या मुहम्मद" कह कर पुकारते हैं।** अगर मदद के लिये हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को पुकारना शिर्क होता, **तो क्या हज़रत का'ब इस तरह पुकारते ?** हरगिज़ नहीं। साबित हुवा कि मुसीबत के वक्त मदद के लिये हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को **"या रसूलल्लाह" कह कर पुकारना सुन्नते सहाबए किराम है।** लैकिन अफ्सोस कि दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन यह कहते हैं कि या रसूलल्लाह कहना शिर्क है। नाज़िरीने किराम फैसला करें कि हम को सहाबए किराम का कौल व फे'ल इख्तियार करना है या दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन का बातिल कौल ?

अल-किस्सा ! हज़रत का'ब बिन जुम्रा के इस तरह पुकारने से मुजाहिदों में एक नया जौश पैदा हुवा। अपनी जान की परवाह किये बगैर दोहरे जौश से लड़ने लगे। और अचानक युकना के लश्कर ने पीठ फैरी और तमाम रूमी हल्ब की जानिब भागे। इन के भागने का सबब क्या था, वह हम बा'द में ज़िक्र करेंगे क्यूं कि भागने का जो सबब था उस के तअल्लुक से ज़रूरी उमूर को मुकद्दम पैशे खिदमत करना ज़रूरी है। ताकि रूमी लश्कर के भागने की वजह अच्छी तरह ज़हन नशीन हो जाए।

अह्ले हल्ब की सुलह की पैश्कश :-

हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत का'ब बिन जुम्रा को रवाना करने के बा'द इस्लामी लश्कर ले कर कन्सरीन से हल्ब की तरफ रवाना हो रहे थे कि इस्लामी लश्कर के कैम्प के करीब तीस (30) अश्खास आए और बुलन्द आवाज़ से **"लफून लफून"** या'नी **"अमान अमान"** पुकारने लगे। मुजाहिदों ने जब यह आवाज़ सुनी तो इन के करीब गए और इन तीस अश्खास को हज़रत अबू उबैदा के खैमे में ले आए। वह तमाम अश्खास हल्ब के रईस और ताजिर थे और हल्ब से कन्सरीन इस्लामी लश्कर के सिपेह सालारे आज़म हज़रत अबू उबैदा से मिलने आए थे। इन के आने की वजह यह हूई कि हाकिम युकना हल्ब से दस हज़ार का लश्कर ले कर हज़रत का'ब बिन जुम्रा के लश्कर पर हम्ला करने निकला, तो उस के रवाना होने के बा'द अह्ले हल्ब और अतराफ के इलाके के ताजिर, रोउसा और ज़ी शऊर लोग जमा हुए और यह मश्वरा किया कि युकना तकब्बुर और गुरूर के नशे में आमादए जंग हो कर खुद भी हलाक होगा और साथ में हम को भी हलाक करेगा। लिहाज़ा मुनासिब यह है कि हम कुछ लोग कन्सरीन जा कर इस्लामी लश्कर के सरदार से अह्ले शहर की जानिब से सुलह कर के अमान हासिल कर लें। दीगर मकामात के ताकतवर शहर के लोगों ने भी अरबों से सुलह की है और सुना है कि अरब अपने कौल के सच्चे व पैमान में पके हैं। सुलह करने के बा'द यह लोग गद्र और बे-वफाई नहीं करते बल्कि अपना वा'दा निभाते हैं। चुनान्चे अह्ले शहर के तीस रईस और ताजिर खुफिया रास्ता इख्तियार कर के हज़रत अबू उबैदा के पास आए। और उन्हों ने सुलह की दरख्वास्त पैश की। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि यह कैसे मुम्किन है ? क्यूं कि तुम्हारा हाकिम युकना तो हम से जंग करने पर बड़े शद्दो मद्द से तुला हुवा है। इन लोगों ने कहा कि ऐ सरदार ! हम अपने हाकिम युकना से खुफिया तौर पर आप से सुलह करने आए हैं क्यूं कि वह तुम्हारे लश्कर (हज़रत का'ब बिन जुम्रा) से लड़ने दस हज़ार का लश्कर ले कर रवाना हुवा है, इस के बा'द शहर के अह्ले राए और अक्लमन्द लोगों ने मश्वरा कर के भलाई का तरीका इख्तियार कर के हम को तुम्हारे पास सुलह करने भेजा है। अगर आप ने हमारी दरख्वास्त मन्ज़ूर कर के सुलह कर ली तो हम आप की मदद करेंगे और हमारे अतराफ के दैहात और शहर भी तुम्हारी सुलह में दाखिल हो कर तुम्हारी मदद करेंगे और अगर आप ने सुलह से इन्कार कर दिया और यह बात मश्हूर हो गई कि इस्लामी लश्कर के सरदार सुलह नहीं करते तो फिर कोई शहर और कस्बा आप से सुलह करने नहीं आएगा।

चुनान्चे हज़रत अबू उबैदा ने अह्ले हल्ब से हस्बे ज़ैल शराइत पर सुलह की :

(1) अह्ले कन्सरीन ने सुलह के लिये जिस कद्र माल दिया है इस का निस्फ तुम अदा करोगे ।

(2) तुम हर साल जिज़्या अदा करोगे ।

(3) जब हमारा लश्कर हल्ब आएगा तो तुम हम से गल्ला और दीगर अश्या खरीद व फरोख्त करोगे ।

(4) लड़ाई में हमारे दुश्मनों की किसी किस्म की मदद नहीं करोगे ।

(5) हमारी किसी किस्म की कोई खबर या इत्तिला' हमारे दुश्मनों तक नहीं पहुंचाओगे ।

(6) हमारे दुश्मनों की खबर और इन की साज़िशों की इत्तिला' हम तक पहुंचाने में ताखीर और खयानत नहीं करोगे ।

अह्ले हल्ब ने तमाम शराइत मन्ज़ूर किये । फिर हज़रत अबू उबैदा ने इन के नाम और पत्ते लिख लिये । फिर इन से पूछा कि तुम्हारा हाकिम युकना हमारे लश्कर पर हम्ला करने हल्ब से कब रवाना हुवा ? उन्हों ने कहा कि आज सुब्ह में, और उस के निकलने के बा'द हम खुफिया रास्ता से आप के पास आने के लिये रवाना हुए । फिर वह वफ्द हल्ब की तरफ चला गया ।

रात का वक्त था । हज़रत अबू उबैदा ने पूरी रात हज़रत का'ब बिन ज़ुम्रा और इन के साथियों की फिक्र में बसर की । क्यूं कि युकना इस वक्त हज़रत का'ब बिन ज़ुम्रा के करीब पहुंच गया होगा और अलस्सुब्ह हम्ला कर देगा और हम को वहां पहुंचने में दैर हो जाएगी । और वाकई ऐसा ही हुवा था कि युकना ने सुब्ह के वक्त हज़रत का'ब बिन ज़ुम्रा के लश्कर पर हम्ला कर दिया था और जिस वक्त युकना ने हम्ला किया था उस वक्त तो हज़रत अबू उबैदा के लश्कर ने कन्सरीन से हल्ब की जानिब कूच का आगाज़ किया था और कन्सरीन से हल्ब की मसाफत एक दिन की है ।

हज़रत का'ब बिन ज़ुम्रा के साथ नुस्रते इलाही और युकना की हज़ीमत

हज़रत सईद बिन मुफ्लज के शहीद होने पर मुजाहिदीन को भारी सदमा पहुंचा । तमाम मुजाहिदीन हज़रत अबू उबैदा के लश्कर का शदीद इन्तिज़ार कर रहे थे, लैकिन हज़रत

अबू उबैदा का लश्कर तो अस्नाए राह था । शाम तक इस लश्कर के आने की तवक्को' न थी और यहां दो-पहर का वक्त था । जंग अपने शबाब पर थी । मुजाहिदीन बड़ी दिलैरी से मुकाबला कर रहे थे और मुजाहिदीन के शहीद होने का सिल्सिला भी जारी था और ऐसा गुमान होता था कि शाम होते होते तमाम मुजाहिद शहीद हो जाएंगे । क्यूं कि अभी तो दो-पहर का वक्त था । तमाम मुजाहिदीन को अपनी शहादत का यकीन हो गया था और वह शौके शहादत में नुस्रते इलाही पर ए'तमाद रखते हुए बड़ी साबित कदमी से मुकाबला कर रहे थे और कन्सरीन से आने वाले रास्ते की तरफ पुर-उम्मीद नज़रों से देखते थे कि शायद हज़रत अबू उबैदा का लश्कर आ जाए, लैकिन लश्कर की आमद के कोई आसार रूनुमा नहीं होते थे कि अचानक हज़रत का'ब बिन ज़ुम्रा ने देखा कि **हाकिम युकना ने पीठ फैरी और बे सब्री और इज़्तिराब के आलम में वह अपने लश्कर को साथ ले कर शहर की तरफ भागा ।** गोया उस ने आस्मान से कोई डरावनी आवाज़ सुन ली थी या फिर जंगे बद्र की तरह आस्मान से फरिश्ते नाज़िल होते देख लिये थे और घबराहट के आलम में भागा था ।

❁ हाकिम युकना के मैदान से भागने का सबब :-

हल्ब के तीस रईस और ताजिर अबू उबैदा से सुलह कर के रात ही में कन्सरीन से रवाना हो कर अलस्सुब्ह हल्ब वापस आ गए । हल्ब आ कर उन्हों ने अह्ले हल्ब को सुलह की कैफियत और शराइत से आगाह किया और अमान हासिल हो जाने की खुश्खबरी सुनाई । युकना हाकिम के जासूसों को जब पता चला कि अह्ले शहर कन्सरीन जा कर इस्लामी लश्कर के सरदार से सुलह कर आए हैं और अन्करीब इस्लामी लश्कर की आमद होने वाली है तो वह जासूस हल्ब से भाग कर उस मकाम पर पहुंचे जहां नहर के करीब हाकिम युकना हज़रत का'ब बिन ज़ुम्रा के लश्कर के साथ मस्रूफे जंग था । जासूसों ने हाकिम युकना को इत्तिला' दी कि तुम यहां मुठ्ठी भर इस्लामी लश्कर से भिड़ने में मुब्तला हो और तुम्हारे पीछे यह हालत है कि तुम्हारा सब कुछ लूट गया । जल्दी हल्ब शहर की तरफ वापस लोटो वर्ना हाथ मलते रह जाओगे । तुम्हारी अदम मौजूदगी में अह्ले शहर ने मुसल्मानों से कन्सरीन जा कर सुलह कर ली है और मुसल्मानों के लश्कर की मदद करने का अह्द व पैमान कर आए हैं और सूरते हाल यह है कि शहर के तमाम दरवाज़े खुले पड़े हैं । मुसल्मानों का लश्कर अन्करीब आ पहुंचने वाला है और आते ही शहर में दाखिल हो कर शहर पर काबिज़ हो जाएगा । लिहाज़ा इन मुठ्ठी भर मुसल्मानों को इन के हाल पर छोड़ दो और शहर की खबर लो, वर्ना **फिर पछताए क्या होगा जब चिड़यां चुग गई खैत जैसा मआमला होगा ।**

जासूसों की दी हूई इत्तिला' सुन कर हाकिम युकना के पाऊं तले ज़मीन सरक गई। उस ने हज़रत का'ब बिन जुम्रा के लश्कर से लड़ना मौकूफ कर के लश्कर को जल्द अज़ जल्द हल्ब पहुंचने का हुक्म दिया। हुक्म पाते ही रूमी लश्कर ने अपनी लीला समेट ली और हल्ब का रुख किया। अचानक रूमी लश्कर को भागता देख कर मुजाहिदीन भी महवे हैरत थे। हज़रत का'ब बिन जुम्रा ने भागते हुए रूमी लश्कर का तआकुब करने का इरादा किया, लैकिन साथियों ने कहा कि ऐ सरदार ! आप ने राहे खुदा में अपनी जान खर्च करने में किसी किस्म की कोताही नहीं की और बहुत ज़ियादह मशक्कत उठाई है, लिहाज़ा अब तवक्कुफ करो और तआकुब में जाने की ज़हमत मत करो, हज़रत का'ब बिन जुम्रा रुक गए।

हज़रत खालिद, हज़रत का'ब की कुमुक के लिये रवाना :-

हज़रत अबू उबैदा ने अलस्सुबह कन्सरीन से हल्ब की जानिब रवानगी के वक्त हज़रत खालिद से फरमाया कि ऐ अबू सुलैमान ! मैं हज़रत का'ब बिन जुम्रा और इन के साथियों के मआमले में बहुत फिक्र मन्द हूं। मुझे अंदेशा है कि हाकिम युकना ने मक्रो फरैब से तमाम को शहीद कर दिया और इसी फिक्र में मुझे पूरी शब नींद नहीं आई। हज़रत खालिद ने कहा कि ऐ सरदार ! मेरा भी यही हाल है। खुदा की कसम ! अपने मुसल्मान भाइयों की फिक्र और रंज ने रात भर मुझे सोने नहीं दिया। ऐ सरदार ! इस मआमला में आप क्या इरादा रखते हैं। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि मैं यह चाहता हूं कि तुम तैज़ रफ्तारी से अपने साथियों को ले कर जल्द अज़ जल्द हज़रत का'ब तक पहुंचो। हुक्म मिलते ही हज़रत खालिद ने लश्करे ज़हफ को साथ लिया और कन्सरीन से इस हाल में रवाना हुए कि सवारों ने अपने घोड़ों की बागें ढीली छोड़ दीं और **घोड़े हवा से बातें करते हुए जा रहे थे।** हज़रत खालिद बहुत ही उज्लत से नहर के किनारे पहुंच गए। वहां पहुंच कर हज़रत खालिद ने देखा कि जंग के बजाए एक सन्नाटा और खामोशी छाई हूई है और पूरा मैदान लाशों से भरा हुवा है। करीब में इस्लामी लश्कर के खैमे नसब दिखाई दिये। वहां जा कर देखा तो तमाम मुजाहिद नीम मुर्दा और खस्ता हालत में पड़े हैं।

किसी में भी हिलने की सकत और ताकत नहीं। अक्सर ज़ख्मी हालत में थे और इन के जिस्म बे हिस और बे जान से मा'लूम हो रहे थे। यह हालत देख कर हज़रत खालिद ने बुलन्द आवाज़ से पुकारा :

اَلنَّفِيْرُ! اَلنَّفِيْرُ! يَا أَنْصَارَ الدِّيْنِ

या'नी "**उठ खड़े हो, चलो, ऐ दीन के मदद गारो**"

हज़रत खालिद की इस सदा पर मुजाहिदों के जिस्म में एक नई जान आ गई और तमाम मुजाहिदीन उठ खड़े हुए। और हज़रत खालिद के गिर्द जमा हो गए, हज़रत का'ब बिन जुम्रा ने जंग की पूरी रूदाद सुनाई। हज़रत खालिद ने मुजाहिदों की खबर गीरी की, ज़ख्मियों के ज़ख्म बांधे और इन को इत्मीनान और तसल्ली दिलाई। कुछ दैर में हज़रत अबू उबैदा भी इस्लामी लश्कर के साथ तशरीफ ले आए और हज़रत का'ब बिन जुम्रा को सलामत देख कर खुदा का शुक्र अदा किया। फिर मैदान की तरफ मुतवज्जेह हुए। मैदान मक्तूलीन और शोहदा की लाशों से भरा हुवा था। इन में अक्सर लाशें रूमियों की थीं। मुसल्मान शोहदा की लाशें अलग छांट कर इन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी गई। हज़रत अबू उबैदा ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और शोहदा को इन के खून आलूद कपड़ों में ही दफ्न किया गया। बा'दहु इस्लामी लश्कर ने हल्ब की तरफ कूच की।

हाकिम युकना का शहरियों पर ज़ुल्मो सितम, अपने भाई यूहन्ना का कत्ल

युकना हाकिम हज़रत का'ब के साथ लड़ाई को दरमियान से छोड़ कर हल्ब आया और अह्ले शहर को जमा कर के कहा कि खराबी हो तुम्हारे लिये कि तुम ने अरबों से सुलह कर ली और इन के मददगार बन गए। इस पर अह्ले शहर ने कहा कि हां ! बेशक हम ने सुलह की है, इस लिये कि वह गल्बा दिये गए हैं। इस पर युकना ने कहा कि तुम से हज़रत मसीह राज़ी न होंगे और कसम है हक्के मसीह की ! जिस ने भी अरबों से सुलह की है, इन सब को मैं मार डालूंगा। अगर तुम अपनी ज़िन्दगी चाहते हो तो अपनी सुलह तोड़ दो और अरबों के मुकाबला में मेरा साथ दो। इस पर अह्ले शहर खामौश रहे और कुछ जवाब न दिया। कौम के सुकूत से युकना को गुस्सा आया और उस ने कहा कि मुझ को फुलां बतरीक के मुतअल्लिक इत्तिला' मिली है कि उसी ने कौम को सुलह करने पर उभारा है, उस बतरीक को पकड़ कर ले आओ। चुनान्चे युकना के गुलाम उस बतरीक को पकड़ लाए। युकना ने उस बतरीक को सरे आम कत्ल कर डाला और उस के साथ तीन सौ आदमियों को भी मार डाला। हाकिम युकना के इस ज़ुल्म से अह्ले हल्ब लरज़ गए। बच्चों और औरतों ने अपने अक्रबा के कत्ल होने पर रोना और शौरो गुल मचाना शुरू किया और शहरे हल्ब में एक कोहराम मच गया।

युकना का भाई यूहन्ना अपने कनीसा में मश्गूले इबादत था। रोने और चीखने की आवाज़ें सुन कर आया और सारा माजरा देख कर अपने भाई युकना से कहा कि लोगों पर

ज़ुल्म न कर। नर्म रविश इख़्तियार कर, वर्ना हज़रत मसीह तुझ पर खशमनाक होंगे। युकना ने कहा कि ऐ भाई ! इन लोगों ने हमारे दुश्मनों की इआनत करने पर सुलह की है, लिहाज़ा मैं इन में से किसी को भी ज़िन्दा नहीं छोड़ूंगा। यूहन्ना ने युकना से कहा कि इस में इन का कोई कुसूर नहीं, क्यूं कि यह लोग जंगजू नहीं बल्कि ताजिर हैं,अपनी बेहतरी और जान की हिफाज़त के लिये उन्हों ने ऐसा किया है। अपने भाई यूहन्ना की बात सुन कर युकना ने कहा कि ऐसा मा'लूम होता है कि तू ने इन लोगों को सुलह की तर्गीब दी है, इसी लिये इन का देफाअ और इन की सिफारिश करता है। लिहाज़ा तू ही सब से बड़ा कुसूर वार है और सब से पहले तू ही सज़ा का मुस्तहिक है। यह कह कर युकना अपने भाई की तरफ मुतवज्जेह हुवा और उस पर काबिज़ हो कर तल्वार निकाल ली। ताकि उस को कत्ल कर दे।

यूहन्ना ने जब देखा कि मेरे भाई ने मेरे कत्ल के इरादा से तल्वार निकाल ली है और मेरा कत्ल यकीनी हो गया, तो उस ने आस्मान की तरफ अपना सर उठाया और ब-आवाज़े बुलन्द कहा :

اللّٰهُمّ اشْهَدْ عَلىٰ أَنِّى مُسْلِمٌ إِلَيكَ مُخَالِفُ الدِّيْنِ هٰؤُلَآءِ
الْقَوْمِ، أشْهَدُ أَنْ لا إِلٰهَ إِلّا اللهُ وَأَشْهَدُ أنّ مُحَمّداً رّسُوْلُ اللهِ
وَأنّ الْمَسِيْحَ نَبِىُ اللهِ

तर्जुमा : ''ऐ मेरे अल्लाह ! गवाह हो तूं इस अम्र पर कि मैं इस्लाम कबूल करने वाला हूं तेरी तरफ और इस कौम के दीन की मुखालेफत करने वाला हूं, मैं गवाही देता हूं कि नहीं है कोई मा'बूद मगर अल्लाह और गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैह व आलेहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं और हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम अल्लाह के नबी हैं।''

(हवाला : ''फुतूहुश्शाम, अज़ : अल्लामा वाकदी, सफहा : 303)

मुन्दरजा बाला ईमानी कलेमात फरमाने के बा'द हज़रत यूहन्ना ने अपने भाई हाकिम युकना से फरमाया कि अब तुझे जो करना है कर गुज़र। अगर तू मुझ को कत्ल भी कर देगा तो मैं जन्नत में जाउंगा क्यूं कि मैं ने दीने हक्क इस्लाम कबूल कर लिया है। मुझे अब अपनी जान की परवाह नहीं :

जाने सफर नसीब को किस ने कहा मज़े से सो
खटका अगर सहर का हो शाम से मौत आए क्यूं

(अज़ : इमामे इश्को मुहब्बत, हज़रत रज़ा बरैलवी)

हाकिम युकना अपने भाई की ज़बानी कबूले इस्लाम का इक़रार सुन कर लाल पीला हो गया। उस ने अपने भाई हज़रत यूहन्ना रहमतुल्लाह अलैह पर तल्वार का वार किया और इन की गर्दन तन से अलग कर के शहीद कर दिया। फिर उस ने अपने गुस्से और तशद्दुद का शिकार अह्ले शहर को बनाया। हाकिम युकना ने अपने सिपाहियों को हुक्म दिया कि अह्ले शहर को किल्ले के बाहर ले जाओ। हाकिम युकना के सिपाही अह्ले शहर को पकड़ पकड़ कर शहर के बाहर वसीअ मैदान में लाते और इन पर तरह तरह का ज़ुल्म व सितम कर के मार डालते। अह्ले शहर रो रो कर फर्याद करते, मगर इन का कोई पुरसाने हाल न होता। चारों तरफ से युकना के सिपाहियों ने इन्हें घैर रखा था और युकना का हुक्म पाते ही इन को तहे तैग कर देते।

हल्ब के किल्ले तक इस्लामी लश्कर की रसाई :-

अह्ले हल्ब कसमपूर्सी के आलम में हाकिम युकना के ज़ुल्म व सितम झील रहे थे कि दफ्अतन इस्लाम का लश्करे जर्रार हल्ब के किल्ले पर आ पहुंचा। इस्लामी लश्कर के निशान दिखाई दिये। हज़रत खालिद बिन वलीद लश्कर के आगे थे और वह सब्कत कर के आन की आन में किल्ले के करीब उस जगह पहुंच गए जहां अह्ले हल्ब पर ज़ुल्म व सितम ढाया जा रहा था। हज़रत खालिद ने हाकिम युकना के गबरों को लल्कारा और इन को तम्बीह की कि हल्ब के बाशिन्दे हमारी सुलह में दाखिल हैं और अहद व पैमान के मुताबिक हम पर इन की हिफाज़त लाज़िम है, लिहाज़ा ज़ुल्म व ज़ियादती से बाज़ रहो। उन्हों ने सुनी अन सुनी कर दी तो हज़रत खालिद ने इस्लामी लश्कर को युकना के गबरों पर हम्ला करने का हुक्म दिया। हुक्म मिलते ही तमाम मुजाहिदीन रूमी सिपाहियों पर बाज़ की तरह टूट पड़े। और सुरअत से शम्शीर ज़नी और नैज़ा बाज़ी कर के गबरों को खाक व खून में मिलाना शुरू कर दिया। मुजाहिदों के इस हम्ले से युकना बौखला गया और अपने सिपाहियों को ले कर किल्ले की तरफ भागा। मुजाहिदों ने इन का तआकुब किया, लैकिन रूमी खौफ की वजह से हिरन की रफ्तार भाग कर किल्ले में दाखिल हो गए और किल्ले का दरवाज़ा बन्द कर लिया। लैकिन युकना के तीन हज़ार सिपाही किल्ले के बाहर रह गए,

जिन को मुजाहिदों ने कत्ल कर दिया। अह्ले हल्ब ने युकना के ज़ुल्म व सितम से नजात दिलाने पर हज़रत अबू उबैदा का शुक्रिया अदा किया। फिर उन्हों ने युकना हाकिम की कहानी हज़रत अबू उबैदा को सुनाई। हज़रत अबू उबैदा ने पूरी कैफियत समाअत करने के बा'द इज़हारे अफ्सोस फरमाया।

अब इस्लामी लश्कर ने किल्ले से थोड़े फास्ला पर अपनी जगह तज्वीज़ की। खैमे वगैरा नसब किये गए और सामाने इस्तिकामत दुरुस्त किया गया। थोड़ी दैर बा'द अह्ले हल्ब चालीस गबरों को कैदी बना कर हज़रत अबू उबैदा के पास लाए और कहा कि यह युकना के साथी हैं। किल्ले का दरवाज़ा बन्द हो जाने के बाइस किल्ले के बाहर रह गए और अतराफ के खेतों और मकानों में छुप गए थे, और चूं कि हम तुम्हारी सुलह में दाखिल हैं और सुलह की शराइत के मुताबिक इन को पनाह देना अह्द शिकनी है, लिहाज़ा हम इन को तुम्हारे पास लाए हैं, इन के साथ मुनासिब मआमला करो। हज़रत अबू उबैदा ने इन चालीस गबरों पर इस्लाम पैश किया, जिन में से सिर्फ सात अश्खास ने इस्लाम कबूल किया बाकी सब ने कबूले इस्लाम से इन्कार किया, लिहाज़ा इन्कार करने वालों की गर्दनें मारी गईं।

हज़रत अबू उबैदा ने अह्ले हल्ब से फरमाया कि तुम ने अपनी सुलह के मआमला में इख्लास का मुज़ाहिरा किया है, लिहाज़ा अन्करीब हम भी तुम्हारे साथ वह मआमला करेंगे कि तुम्हारे दिल खुशी से बाग बाग हो जाएंगे। फिर इन से फरमाया कि तुम्हारा हाकिम अपने लश्कर के हमराह किल्ले में पनाह गुज़ीं हुवा है। क्या तुम में से किसी को किल्ले में दाखिल होने का खुफिया रास्ता मा'लूम है ? अह्ले हल्ब ने कहा कसम खुदा की ! हम पोशीदह राह नहीं जानते। अगर हम को किल्ले में दाखिल होने की पोशीदह राह मा'लूम होती तो हम तुम्हारे साथ गद्र और बे-वफाई कर के हरगिज़ नहीं छुपाते बल्कि ज़रूर निशानदेही करते।

हल्ब के किल्ले का मुहासरा, हाकिम युकना की जानिब से जवाबी कारवाई

जब किल्ले में दाखिल होने के खुफिया रास्ते का सुराग न मिला, तो इस्लामी लश्कर के सरदारों ने ब-इत्तिफाक राए किल्ले का मुहासरा कर के हम्ला करने का फैसला किया। इस्लामी लश्कर किल्ले से करीब हुवा, लैकिन हाकिम युकना ने किल्ले की दीवार पर पत्थर, तीर, कमान और दीगर आलाते हर्ब ज़खीरा कर रखा था। जैसे ही इस्लामी लश्कर शहर पनाह के करीब आया, रूमी लश्कर ने पत्थरों और तीरों की बारिश शुरू कर दी। **हाकिम युकना**

ने इस कसरत से तीर और पत्थर बरसाए कि पूरे मुल्के शाम में किसी भी लड़ाई में इस्लामी लश्कर पर इस कसरत से तीर और पत्थर नहीं बरसाए गए। सैंकड़ों की ता'दाद में मुजाहिदों के सर फूटे, हाथ पाऊं टूटे और कसरत से ज़ख्मी और अपाहिज भी हुए। शाम तक यही हालत रही कि रूमी गालिब रहे और इस्लामी लश्कर को हज़ीमत उठानी पड़ी। गुरूबे आफ्ताब के वक्त इस्लामी लश्कर इस हाल में अपने कैम्प में वापस लौटा कि भारी ता'दाद में मुजाहिदीन ज़ख्मी थे और बहुत से शहीद हुए थे। शहीदों को दफ्न किया गया और ज़ख्मियों का मुआलिजा किया गया। इस्लामी लश्कर को नाकामियों और मुसीबतों का सामना था, रूमी लश्कर का दिल बाढ़ पर था। युकना ने कहा कि आज के बा'द इस्लामी लश्कर किल्ले की दीवार के करीब नहीं आएगा, और मैं इन के साथ एक बड़ा मक्र कर के इन पर बहुत बड़ी आफत ढा दूंगा।

इस्लामी लश्कर ने इस दिन के बा'द किल्ले की दीवार से कुछ फास्ला पर रह कर मुहासरा जारी रखा। मुहासरा का सिल्सिला कईं दिन जारी रहा, लैकिन कोई लड़ाई वुकूअ पज़ीर न हूई।

ꕥ हाकिम युकना का इस्लामी लश्कर पर शब्खूं :-

इस्लामी लश्कर की ता'दाद सत्तरह हज़ार (17,000) थी। सत्तरह हज़ार आदमियों के लिये वसीअ मैदान में खैमे नसब थे और इस्लामी लश्कर का कैम्प तूल व अर्ज़ में बहुत फैला हुवा था। लिहाज़ा हज़रत अबू उबैदा ने चंद अश्खास को शब में कैम्प के इर्द गिर्द गश्त लगा कर चौकीदारी की खिदमत पर मामूर कर रखा था। कईं दिन गुज़र गए, लैकिन कोई ना-ज़ेबा वाकेआ नहीं पैश आया।

एक रात अचानक हाकिम युकना दो हज़ार सिपाहियों को ले कर किल्ले से बाहर आया। वह तमाम पैदल थे और किसी किस्म का शौर व गुल किये बगैर चुपके से मुसल्मानों के करीब पहुंच गए और इस्लामी लश्कर के कैम्प के किनारे जहां कौमे बनी का'ब और कौमे अक के खैमे वाकेअ थे, इन खैमों पर हम्ला कर दिया। इस तरफ के खैमे वालों ने अपने इलाके की मश्अलें और खैमों की कन्दीलें गुल कर दीं थीं और बे परवाह हो कर मह्वे ख्वाब थे। इन के हथियार भी इन के करीब नहीं थे, बल्कि अपने बिस्तर से दूर खैमे के कोने में पड़े हुए थे। आधी शब गुज़र चुकी थी। सिपाही गहरी नींद में बे खबरी में सोए हुए थे कि अचानक दो हज़ार रूमी सिपाहियों ने बनी का'ब और कौमे अक के

खैमों पर धावा बोल दिया। रूमी गबरों ने जाते ही कत्ल व गारतगरी, लूट मार और कैद करना शुरू कर दिया। इस तरह के अचानक हम्ले से इस्लामी लश्कर के किनारे के खैमों में कोहराम मच गया। मुजाहिदीन घबराहट की हालत में बैदार हुए और करीब वाले को बा-खबर करने के लिये **''अन्नफीरो अन्नफीरो''** या'नी **''मदद को पहुंचो, मदद को पहुंचो''** पुकारने लगे। शौर व गुल की आवाज़ बुलन्द हूई। उस इलाका के खैमों में मुकीम मुजाहिदीन उठ खड़े हुए और जो भी हथियार हाथ में आया वह उठा कर मुकाबला करने लगे। लैकिन सब के सब मुजाहिदीन बे तर्तीब और गैर मुसल्लह थे। इन की समझ में नहीं आता था कि क्या मआमला है ? अलबत्ता रूमी सिपाही रूमी ज़बान में ज़ौर ज़ौर से चिल्लाते थे, लिहाज़ा इन को पता चल गया था कि रूमियों ने रात के अंधेरे में छापा मारा है। उस इलाके के खैमों से कुछ अश्खास भाग कर हज़रत अबू उबैदा और हज़रत खालिद के खैमे में पहुंच गए और बुलन्द आवाज़ से पुकार पुकार कर सब को बैदार किया और इस्लामी लश्कर के किनारे वाले खैमों पर रूमी लश्कर के हम्ले की इत्तिला' दी और जल्दी मदद को पहुंचने के लिये आवाज़ें देने लगे।

हज़रत खालिद बिन वलीद अपने साथियों के हमराह मिस्ले हम्ला आवर शैर उन खैमों की तरफ लपके, जहां युकना ने हम्ला किया था। हज़रत खालिद को अपने साथियों के साथ आता देख कर युकना ने अपने सिपाहियों को किल्ले की तरफ भागने का हुक्म दिया, चुनान्चे तमाम रूमी सिपाही खैमों से किल्ले की तरफ भागे। इस दौरान रूमियों ने साठ (60) मुसल्मानों को शहीद कर दिया और बहुत मालो अस्बाब भी लूट लिया था। भागते वक्त अपने साथ पचास (50) मुसल्मानों को भी कैद कर के ले गए। हज़रत खालिद बिन वलीद जब वहां पहुंचे रूमी सिपाही भाग रहे थे लिहाज़ा हज़रत खालिद ने इन का किल्ले की दीवार तक तआकुब किया और भागने में पीछे रह जाने वाले तक़रीबन एक सौ रूमियों को कत्ल किया, लैकिन युकना मअ अपने सिपाहियों के भाग निकलने में काम्याब रहा। किल्ले में दाखिल हो कर दरवाज़ा बन्द कर लिया।

पचास कैदी मुजाहिदों की किल्ले की फसील पर शहादत :-

हस्बे मा'मूल दूसरे दिन सुब्ह इस्लामी लश्कर अपने कैम्प से रवाना हो कर किल्ले का मुहासरा करने आया। इस्लामी लश्कर ने किल्ले का थोड़े फास्ला पर रह कर मुहासरा किया था। फास्ला इत्ना कम था कि फरीकैन एक दूसरे को आसानी से पहचान

सक्ते थे। युकना इन पचास मुजाहिद कैदियों को किल्ले की दीवार पर लाया। इन की मुश्कें बंधी हूई थीं। युकना ने इन पचास मुजाहिदों को किल्ले की दीवार पर इस तरह खड़ा किया कि इस्लामी लश्कर का हर शख्स इन को देखता था और इन की आवाज़ें सुनता था। वह पचासों ब-यक ज़बान बुलन्द आवाज़ से **''ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह'' (सल्लल्लाहो तआला अलैह व आलेहि व सल्लम) पुकारते थे और इसी हालत में इन तमाम की गर्दनें अलग कर दी गई और सब को एक साथ शहीद कर दिया गया।** (रदियल्लाहो तआला अन्हुम)

अपने दिनी भाइयों को अपनी नज़रों के सामने शहीद होता देख कर इस्लामी लश्कर का हर फर्द तड़प उठा। हर एक चश्म नमनाक हो गई, इस ना-काबिले बरदाश्त सानेहा को देख कर मुजाहिदीन कर भी क्या सक्ते थे ? सब मजबूर थे। इन की मदद किसी भी उन्वान मुम्किन न थी। हज़रत अबू उबैदा के लिये यह सदमा ना-काबिले तहम्मुल था। हज़रत खालिद बिन वलीद की आंखें खूंबार थीं। सब ने सब्र किया और शहीद होने वालों के लिये दुआए मग्फेरत की।

इस हादिसे से हज़रत अबू उबैदा बहुत ही रंजीदा खातिर हुए थे। आप ने लश्कर में मुनादी करा दी कि कसम है अल्लाह और रसूल की तरफ से और कसम है सरदार अबू उबैदा की तरफ से कि अब से हर शख्स अपनी निगेहबानी खुद करे और किसी दूसरे के सहारे न रहे, कोई भी दूसरे पर भरोसा कर के गफ्लत न करे। इस मुनादी के बा'द मुजाहिदीन रात के वक्त खूब एहतियात करने लगे और इस्लामी लश्कर के कैम्प की निगेहबानी और चौकीदारी सख्त बना दी गई।

हाकिम युकना का दूसरा फरैब, गल्ला लेने गए हुए मुजाहिदीन की शहादत

युकना अपने ज़अम में मक्र व फरैब की हर चाल में काम्याब हो रहा था। उस ने कुछ नस्रानी अरबों को जासूसी पर मुतअय्यन कर के इस्लामी लश्कर में घुसा दिया था। युकना के जासूस इस्लामी लश्कर के अहम उमूर की खबरें उसे मुतवातिर पहुंचाया करते। एक दिन दो-पहर के वक्त हाकिम युकना अपने बतारेका और अमालका के साथ बैठ कर किसी नई चाल के मुतअल्लिक गुफ्तगू कर रहा था कि उस का एक जासूस खबर लाया कि अरबों ने हल्ब के अतराफ के जंगली इलाकों के लोगों से सुलह कर ली है और लश्कर के

खाने पीने के लिये रसद (अनाज) लेने के लिये एक सौ मुसल्मान सवार अपने साथ ऊंट और खच्चर वगैरा ले कर जंगल की तरफ गए हैं। यह खबर सुन कर युकना खुशी से मचल उठा और उस ने एक चाल तज्वीज़ की। अपने एक मो'तमद बतरीक को एक हज़ार मुन्तखब सरदार सवारों को रात के वक्त उस जासूस के हमराह खुफिया दरवाज़े से जंगल की तरफ रवाना किया। एक हज़ार रूमी सिपाही मुसल्मानों के काफले के तआकुब में रात के अंधेरे में उज्लत से जा रहे थे। राह में एक चरवाहा मिला। रूमी लश्कर के सरदार बतरीक ने उस से पूछा कि क्या तू ने अरबों के किसी काफले को यहां से गुज़रता देखा है? चरवाहे ने कहा कि हां! तुलूअ आफ्ताब के वक्त रूमी लश्कर ने दूर से मुसल्मानों को देखा कि वह अपने साथ जानवरों पर गल्ला लादे हल्ब की तरफ आ रहे हैं।

मुसल्मानों का काफला जंगल के एक दैहात से गल्ला ले कर अलस्सुब्ह रवाना हुवा था। मुसल्मानों के काफले के सरदार हज़रत मनादिश बिन ज़ेहाक ताई थे। हज़रत मनादिश अपने साथियों को जल्दी जल्दी चलने की तर्गीब देते थे, ताकि ज़वाल के वक्त तक इस्लामी लश्कर के कैम्प हल्ब में पहुंच जाएं। थोड़ी मसाफत तय कर के जंगल के इलाका में ही थे कि सामने से रूमियों का एक हज़ार मुसल्लह सवारों का लश्कर नज़र आया। हज़रत मनादिश ने साथियों को जेहाद के फज़ाइल बयान कर के लड़ने की तर्गीब दी। थोड़ी दैर में रूमी लश्कर इन पर आ पड़ा। मुजाहिदों ने बड़ी दिलैरी से मुकाबला किया, लैकिन फौरन ही हज़रत मनादिश बिन ज़ेहाक और इन के हमराह तीस मुजाहिद शहीद हो गए। अपने सरदार और तीस साथियों को शहीद होता देख कर बाकी सत्तर मुजाहिदों ने शिकस्त उठाई और हल्ब की जानिब इस्लामी लश्कर के कैम्प की तरफ भागे।

रूमियों ने गल्ले से लदे हुए जानवरों पर कब्ज़ा कर लिया और करीब में वाकेअ एक पहाड़ी गांव में छुप गए। क्यूं कि उस वक्त सुब्ह का वक्त था लिहाज़ा वह डरे कि इस वक्त हल्ब की तरफ जाना मुनासिब नहीं, क्यूं कि जो सत्तर मुसल्मान भाग कर हल्ब गए हैं वह इस मआमला की खबर इस्लामी लश्कर को ज़रूर देंगे और मुसल्मानों का लश्कर इस तरफ ज़रूर आएगा। हो सक्ता है कि रास्ते में ही इस्लामी लश्कर से आमना सामना हो जाए, हमारे लिये मुनासिब यही है कि दिन के वक्त जंगल के किसी गांव में छुप जाएं और रात के वक्त अंधेरे का फाइदा उठा कर गुज़िश्ता शब की तरह सफर तय कर के खैरियत से हल्ब के किल्ले में दाखिल हो जाएंगे। चुनान्चे एक हज़ार रूमी करीब में वाकेअ एक गांव में चले गए और दिन भर वहां छुप कर रात की तारीकी छाने का इन्तिज़ार करते रहे।

हज़रत खालिद की रूमियों की तलाश में जंगल की तरफ रवानगी :-

इस्लामी काफले के शहीद होने वाले सरदार हज़रत मनादिश बिन ज़ेहाक के भतीजे हज़रत या'कूब बिन सबाह ताई सत्तर आदमियों के साथ भाग कर दो–पहर के वक्त इस्लामी लश्कर के कैम्प में आए और आते ही सरदार अबू उबैदा को पुकारने लगे। हज़रत अबू उबैदा ने इन को ज़ख्मी और खस्ता हाल देखा तो परेशान हो गए और फौरन दौड़ कर करीब आए और पूछा कि तुम्हारे पीछे क्या हाल है? कहा कि ऐ सरदार! कसम खुदा की! हमारे सरदार मनादिश बिन ज़ेहाक ताई और दीगर बहुत लोग शहीद कर दिये गए और हमारे साथ का गल्ला और जानवर भी लूट लिया गया है। हज़रत अबू उबैदा ने कहा कि तुम्हारे साथ किस ने ऐसा सुलूक क्या है? हज़रत या'कूब बिन सबाह ने कहा कि ऐ सरदार! हम नहीं जानते कि वह कौन थे। सिर्फ इत्ना जानते हैं कि एक बतरीक अच्छे सामान और कसीर ता'दाद का लश्कर ले कर अचानक हम पर हम्ला आवर हुवा। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि हल्ब के किल्ले का तो हम ने मुहासरा कर रखा है, लिहाज़ा यहां से युकना या किसी और के जाने का इम्कान नहीं। **हज़रत या'कूब बिन सबाह ने कहा कि ऐ सरदार! वह कहां से आया, कौन था और किधर चला गया? इस की हमें कुछ खबर नहीं।**

हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत खालिद बिन वलीद को सूरते हाल से आगाह कर के फरमाया कि ऐ अबू सुलैमान! जंगल के लोग तो हमारी सुलह में दाखिल होने की वजह से यह हर्कत नहीं कर सक्ते, इलावा अज़ीं हल्ब के किल्ले का हम ने मुहासरा कर रखा है, लिहाज़ा यहां से तो युकना किसी को भेज नहीं सक्ता। समझ में नहीं आता कि क्या मआमला है, लिहाज़ा तुम फौरन जाओ और इन के निशान कदम ढूंढ कर इन पर जा पड़ो और अपने भाइयों का बदला ले कर इन को हलाक कर दो।

हज़रत अबू उबैदा का हुक्म पाते ही हज़रत खालिद बिन वलीद अपने खैमे में गए और मुसल्लह हो कर अपने घोड़े पर सवार हो कर तन्हा जाने का कस्द किया। इन को अकेले जाते हुए देख कर हज़रत अबू उबैदा ने पूछा कि ऐ अबू सुलैमान! कहां जाते हो? हज़रत खालिद ने जवाब दिया कि आप ने जिस काम का हुक्म फरमाया है, इस को जल्दी अन्जाम देने जा रहा हूं। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि अपने साथ किसी को ले लो। हज़रत खालिद ने कहा कि **मैं किसी को भी साथ लेना नहीं चाहता और अकेला ही जाने का इरादा रखता हूं। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि तुम को मा'लूम है कि दुश्मनों की ता'दाद कितनी है? हज़रत खालिद ने कहा कि हां मुझे मा'लूम है। वह एक हज़ार हैं और मैं अकेला**

इन के मुकाबला के लिये काफी हूं। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया तुम ठीक कहते हो। तुम इन एक हज़ार रूमियों के लिये काफी हो और यह काम तुम से हो सक्ता है क्यूं कि ऐसे कामों के करने की तुम में सलाहियत है, लैकिन फिर भी मैं यही चाहता हूं कि तुम तने तन्हा जाने के बजाए अपने साथ कुछ लोगों को ले लो। चुनान्चे हज़रत खालिद अपने साथ हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर, हज़रत रबीआ बिन आमिर और कौमे तय के मुजाहिदों को ले कर रवाना हुए।

हज़रत खालिद बिन वलीद अपने साथियों के हमराह बहुत तेज़ रफ्तारी से जंगल के गांव की तरफ रवाना हुए और जाए वारदात पर पहुंचे। वहां जा कर देखा तो तीस शहीदों की लाशें पड़ी हूई हैं और इन लाशों के इर्द गिर्द जंगल के लोग जमा हैं और रो रहे हैं। इन के रोने की वजह यह थी कि इस इलाके के लोगों को यह अंदेशा था कि इन अरबों के कत्ल का इल्ज़ाम हम पर आइद होगा और इन का इन्तिकाम लेते हुए अरब हम को मार डालेंगे। हज़रत खालिद के आते ही उन्हों ने रो रो कर और कसमें खा खा कर कहा कि हम तुम्हारी सुलह में दाखिल हैं और कत्ल के इर्तिकाब से बरी हैं। खुदा की कसम ! हम ने इन को कत्ल नहीं किया। हज़रत खालिद ने फरमाया कि जब तुम ने कत्ल नहीं किया तो फिर यह काम किस ने किया है ? जंगल के लोगों ने कहा कि हल्ब के हाकिम युकना का एक बतरीक मअ एक हज़ार सवारों के यहां वारिद हुवा था और इसी ने यह काम किया है। हज़रत खालिद ने इन लोगों से पूछा कि वह बतरीक किस तरफ गया है ? इन लोगों ने दूर नज़र आने वाले पहाड़ की जानिब इशारा कर के कहा कि हम ने उस बतरीक को अपने सिपाहियों के साथ पहाड़ की ऊंचाई पर वाकेअ एक गांव की तरफ जाते देखा है। हज़रत खालिद ने फरमाया कि क्या वाकई पहाड़ की बुलन्दी पर कोई गांव है ? उन्हों ने हां कहा। हज़रत खालिद के ज़हन में रूमियों का प्लान समझ में आ गया। आप ने पहाड़ी लोगों में से एक शख्स को रास्ता दिखाने के लिये साथ ले लिया और अपने साथियों से फरमाया कि **पहाड़ की जानिब अपने घोड़ों की बागें ढीली छोड़ दो।**

जब पहाड़ के करीब पहुंचे तो हज़रत खालिद एक मकाम पर रुक गए और राहबर से पूछा कि पहाड़ के गांव से हल्ब की तरफ जाने का और कोई दूसरा रास्ता है ? राहबर ने कहा कि नहीं, बल्कि सिर्फ यही रास्ता है। हज़रत खालिद ने साथियों से फरमाया कि बतरीक पहाड़ के गांव में रात के इन्तिज़ार में दिन काट रहा है। इस ने गुमान किया है कि हम इस का तआकुब करते हुए आएंगे, लिहाज़ा वह पहाड़ के गांव में चला गया है, ताकि दिन वहां गुज़ार

दे और जब रात होगी तब वहां से हल्ब की जानिब रवाना होगा और वह यहीं से गुज़रेगा, हम यहीं आस पास में छुप जाएं। हज़रत खालिद अपने साथियों के हमराह उसी मकाम पर एक कमीनगाह में छुप गए और रात में अपने शिकार बतरीक और उस के लश्कर के निकलने का इन्तिज़ार करने लगे।

जब रात की तारीकी छा गई, तो बतरीक अपने लश्कर के हमराह पहाड़ के गांव से रवाना हुवा। थोड़ी रात गुज़री तो हज़रत खालिद ने घोड़ों की टापों और आदमियों के चलने की आहट मह्सूस की। हज़रत खालिद ने अपने साथियों को रास्ते के दोनों तरफ फैला दिया और सब तलवारें म्यान से निकाल कर हम्ला करने के लिये मुस्तइद हो कर बैठ गए। एक हज़ार रूमी गबर बे खौफ व खतर और गाफिल अपनी काम्याबी की खुशी में इतराते हुए और हंसी मज़ाक की बातें करते हुए चले आ रहे थे। लश्कर के आगे बतरीक मुतकब्बिराना शान व शौकत से चल रहा था। जब रूमी लश्कर करीब आया तो तमाम मुजाहिदीन कमीन गाह से नारए तक्बीर की सदा बुलन्द करते हुए इन पर टूट पड़े। उस बतरीक के मुतअल्लिक हज़रत खालिद ने यह गुमान किया कि शायद यह हाकिम युकना है लिहाज़ा आप मिस्ले शैर उस पर हम्ला आवर हुए और तल्वार की एक शदीद ज़र्ब लगा कर उस को दो टुक्ड़े कर दिया। हज़रत खालिद की मुताबअत में हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर, हज़रत रबीआ बिन आमिर और साथियों ने ऐसा सख्त हम्ला किया कि रूमियों के अवसान खता कर गए। मुजाहिदों ने दिलैरी और कसरत से तल्वार ज़नी कर के सिर्फ एक ही गरदावे में सात सौ रूमियों को ज़मीन पर कुश्ता डाल दिया और बाकी तीन सौ ने हथियार डाल कर हाथ बुलन्द कर के **"लफून लफून"** पुकारा, तो उन को कैद कर लिया।

फिर हज़रत खालिद ने सात सौ मक्तूलीन का माल व अस्बाब, इन के घोड़े और इस्लामी लश्कर से छीना हुवा गल्ला, माल व अस्बाब और जानवरों पर कब्ज़ा कर लिया और तीन सौ कैदियों का अस्बाब भी अपने साथ ले कर इस्लामी लश्कर के कैम्प में वापस आए। हज़रत खालिद की आमद और काम्याबी पर इस्लामी लश्कर में खुशी की लहर दौड़ गई। इस्लामी लश्कर के मुजाहिदों ने हज़रत खालिद और इन के साथियों का तहलील और तक्बीर के ना'रों से शानदार इस्तिक्बाल किया। हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत खालिद और इन के साथियों का शुक्रिया अदा किया और दुआए खैरो आफियत से नवाज़ा। फिर हज़रत खालिद ने हज़रत अबू उबैदा को अज़ अव्वल ता आखिर तमाम रूदाद कह सुनाई, जिस को सुन कर हज़रत अबू उबैदा निहायत मसरूर हुए।

फिर हज़रत खालिद ने तीन सौ रूमी कैदियों को हज़रत अबू उबैदा के सामने पैश किया। हज़रत अबू उबैदा ने इन पर इस्लाम पैश किया। जिस का उन्हों ने इन्कार किया और ज़रे फिद्या ले कर आज़ाद कर देने की दरख्वास्त की, लैकिन हज़रत अबू उबैदा ने इन की दरख्वास्त ना-मन्ज़ूर फरमाई और सब की गर्दनें मारने का हुक्म दिया। हज़रत अबू उबैदा के हुक्म की ता'मील में मुजाहिदों ने तीन सौ रूमियों को कत्ल करने का कस्द किया लैकिन...

हज़रत खालिद ने इन्हें कत्ल करने से बाज़ रखा और फरमाया कि इन को यहां कत्ल नहीं किया जाएगा, बल्कि जिस तरह युकना ने हमारी नज़रों के सामने हमारे पचास (50) मुजाहिदों को शहीद किया है, हम भी युकना को दिखा कर उस के सामने उस के तीन सौ सिपाहियों को कत्ल कर के उस को दिली सदमा पहुंचाएंगे और अपने भाइयों का इन्तिकाम लेंगे। चुनान्चे मुजाहिदीन इन रूमियों को कत्ल करने से बाज़ रहे। जब इस्लामी लश्कर किल्ले का मुहासरा करने दीवारे किल्ला से करीब हुवा, तो इन तीन सौ कैदियों को भी साथ में ले गया। युकना और उस के साथी किल्ले की दीवार से इस्लामी लश्कर का मुहासरा देख रहे थे कि इन की नज़रें रूमी सिपाहियों पर पड़ीं कि तीन सौ के करीब रूमी सिपाही मुश्कें बंधी हूई हालत में इस्लामी लश्कर के आगे खड़े किये गए हैं। किल्ले की दीवार के ऊपर मौजूद लोगों में यह खबर बिजली की तरह फैल गई। लिहाज़ा तमाम लोग गर्दनें उठा उठा कर टुक्टुकी बांधे रूमी कैदियों की जानिब देखने लगे और शौर व गुल मचा कर, सलीब से मदद तलब कर के इन की रिहाई और सलामती की दुआ करने लगे। हाकिम युकना भी उछल कूद करने लगा और चीख चीख कर अपने साथियों की रिहाई का मुतालबा करने लगा। हज़रत खालिद बिन वलीद ने देखा कि किल्ले की दीवार पर मौजूद हर शख्स इन तीन सौ कैदियों के मआमला से वाकिफ और खबर दार हो गया है और सब की तवज्जुहात इन की तरफ मर्कूज़ हैं और इन के लिये मुज़्तरिब और बे-करार हैं। तब हज़रत खालिद ने इस्लामी लश्कर के मुजाहिदों को हुक्म दिया कि इन रूमी कैदियों की गर्दनें मारी जाएं। चुनान्चे हर रूमी कैदी के सामने एक एक मुजाहिद बरहना तल्वार ले कर खड़ा हो गया। यह मन्ज़र देख कर किल्ले की दीवार पर मौजूद रूमियों ने शौरो गुल बुलन्द किया और चिल्लाने लगे, तब हज़रत खालिद ने इशारा फरमाया। हज़रत खालिद का हुक्म मिलते ही मुजाहिदों ने नारए तक्बीर बुलन्द कर के एक साथ उन रूमी कैदियों पर तल्वार की ज़र्बें लगाईं और एक साथ तीन सौ गर्दनें धड़ से जुदा हो कर खाक व खून में तड़पने लगीं और थोड़ी दैर में तड़प कर ठंडी पड़ गईं।

एक साथ तीन सौ रूमी सिपाहियों को अपनी नज़रों के सामने कुश्ता होता देख कर

हाकिम युकना बौखला गया। उस के हौश उड़ गए, रूमियों में कोहराम मच गया और आह व बुका की सदाएं फज़ा में गूंजने लगीं। रूमियों ने जी भर के और दिल खोल कर सीना कूबी और मातम किया। हाकिम युकना को एहसास हो गया कि चंद दिनों पहले पचास मुसल्मानों को इस्लामी लश्कर की नज़रों के सामने शहीद करने का मुसल्मानों ने बहुत भारी इन्तिकाम ले लिया है और **ईंट का जवाब पत्थर से देने के बजाए चट्टान से दिया है।**

किल्ल-ए हल्ब का चार माह तक मुहासरा :-

मज़्कूरा वाकेआ से हाकिम युकना और तमाम रूमी खौफ-ज़दा हो गए थे। तीन सौ रूमी सिपाही नज़रों के सामने मक्तूल हुए, और सात सौ सिपाहियों के हलाक होने की जंगल के इलाके से इत्तिला' मोसूल हूई थी। इस्लामी काफले को लूटने और तबाह करने की गरज़ से हाकिम युकना का भेजा हुवा एक हज़ार शेहसवारों का अहम लश्कर कोड़ियों दाम ज़ाए' हुवा था। हाकिम युकना इत्ना ज़ियादह मरऊब और सरासीमा हो गया था कि किल्ले से बाहर निकल कर हम्ला करना और मक्रो फरैब की चालें चलना तर्क कर दिया और किल्ले के अन्दर महसूर हो कर शहर पनाह की दीवार के ऊपर से लड़ना इख्तियार किया। इस्लाम के लश्कर ने भी किल्ले का मुहासरा सख्त कर दिया, लैकिन कोई खातिर ख्वाह नतीजा बर आमद न हुवा। रोज़ाना इस्लामी लश्कर अपने कैम्प से रवाना हो कर किल्ले की दीवार के करीब आता और मुहासरा करता। रूमी किल्ले की दीवार से देखते रहते और किसी किस्म की कोई हर्कत फरीकैन की जानिब से नहीं होती, यहां तक कि गुरूबे आफ्ताब का वक्त करीब आ जाता और इस्लामी लश्कर अपने कैम्प में वापस लौट जाता। रोज़ाना का यही मा'मूल बन चुका था। इस तरह चार माह का अर्सा गुज़र गया।

अहले हल्ब मुहासरा से अब तंग आ गए थे। इलावा अज़ीं किल्ले में गल्ला और दीगर अश्याए सर्फ की किल्लत मह्सूस की जाने लगी। इसी तरह इस्लामी लश्कर भी बगैर किसी नतीजे के मुहासरा से थक गया। हज़रत अबू उबैदा ने चंद दिनों पहले यह इरादा फरमाया था कि हल्ब का मुहासरा तर्क कर के किसी दूसरे मकाम की जानिब कूच कर जाएं और उन्हों ने अपने इरादे की इत्तिला' अमीरुल मो'मिनीन हज़रत उमर फारूके आ'ज़म की खिदमत में ब-ज़रीए खत लिख भेजी और अमीरुल मो'मिनीन से इस अम्र में इजाज़त तलब की, लैकिन अमीरुल मो'मिनीन ने हज़रत अबू उबैदा को मुहासरा तर्क कर के किसी दूसरे मकाम की तरफ कूच करने की मुमानेअत फरमाई और यह हुक्म मर्कूम फरमाया कि

किल्ल-ए हल्ब का मुहासरा जारी रखो और किल्ला फतह करने की पूरी कोशिश करो। अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फारूके आ'ज़म रदियल्लाहो तआला अन्हो ने इस्लामी लश्कर की कुमुक करने मदीना मुनव्वरा के अतराफ के इलाके (1) हज़्रे मौत (2) यमन (3) रूमान (4) सबा और (5) मारिब से ब-कसदे जेहाद आए हुए तक़्रीबन पांच सौ मुजाहिदों को हल्ब की तरफ रवाना फरमाया।

लिहाज़ा हज़रत अबू उबैदा ने हल्ब के किल्ले का मुहासरा जारी रखा। इसी दौरान मदीना मुनव्वरा से अमीरुल मो'मिनीन का भेजा हुवा पांच सौ अफ्राद पर मुश्तमिल लश्करे हल्ब आ पहुंचा, इन में हज़रत सुराका बिन मिर्दास कुन्दी अपने गुलाम हज़रत दामिस के साथ शामिल थे। हज़रत दामिस की कुन्यत अबूल हुलूल थी और वह अपने नाम और कुन्यत से मश्हूर थे या'नी **"दामिस अबूल हुलूल"** के नाम से मुतआरफ और मश्हूर थे। हज़रत दामिस अरब के गुलाम कबीला **"बनी ज़रीफ"** में से थे। हज़रत दामिस अबूल हुलूल बहुत सियाह रंग और पस्त गर्दन थे और शुजाअत व बहादुरी में अपनी मिसाल आप थे। उन्हों ने कई मा'रकों में तने तन्हा बड़ी बड़ी जमाअतों का मुकाबला किया था और गालिब रहे थे। हज़रत दामिस अबूल हुलूल की शुजाअत व बहादुरी के बहुत वाकेआत लोगों में मश्हूर और मौज़ूए सुखन रहते थे।

हाकिम युकना का रात की तारीकी में इस्लामी लश्कर पर दो-बारा हम्ला

कुछ अर्से तक हाकिम युकना ने किल्ले से निकल कर रात के वक्त हम्ला करना, मक्रो फरैब करना वगैरा बिल्कुल तर्क कर दिया था, लैकिन चार महीना तक मुहासरा के तूल पकड़ने की वजह से तंग आ कर उस ने दो-बारा मक्रो फरैब का आगाज़ किया। युकना दिन के वक्त जंग करने से कतअन बाज़ रहता, लैकिन रात के वक्त किल्ले से निकल कर इस्लामी लश्कर के कैम्प के किनारे पर वाकेअ खैमों में सोए हुए लोगों पर अचानक आ पड़ता और इन को शहीद करता और इन का अस्बाब लूट कर भाग कर किल्ले में चला जाता। आज उस ने इस्लामी लश्कर के किनारए मश्रिक पर हम्ला किया, तो कल मग्रिब या जुनूब के किनारे पर हम्ला कर दिया। इस तरह से वह रोज़ाना अलग अलग अतराफ में हम्ले करता। आज इधर तो कल उधर। रात में हम्ला करना युकना का मा'मूल हो गया था, लिहाज़ा इस्लामी कैम्प के किनारे पर वाकेअ खैमों के लोग शब भर बैदार रह कर निगेहबानी और चौकीदारी करते।

हज़रत दामिस अबूल हुलूल और इन के साथियों को अपने खैमे नसब करने के लिये कैम्प के किनारे पर जगह मिली थी। लिहाज़ा इन को ताकीद की गई, कि तुम लोग नए नए आए हो और कैम्प के किनारे तुम्हारे खैमे हैं और यहां का माहौल यह है कि रात में किसी भी वक्त हल्ब का हाकिम अपने साथियों के हमराह किनारे पर वाकेअ खैमों पर हम्ला कर के ज़रर पहुंचाता है, लिहाज़ा तुम बैदार रहना और बिल्कुल गफ्लत मत बरतना। आज की रात हज़रत दामिस अबूल हुलूल अपने साथियों के साथ अतराफ के खैमों के मुजाहिदों के साथ गुफ्तगू में मस्रूफ हो कर शब बैदारी कर रहे थे कि अचानक करीब में वाकेअ खैमों से शौर व गुल बुलन्द हुवा, मार पीट और लूट मार की आवाज़ें आने लगीं। हुवा यह था कि हाकिम युकना अपने पांच सौ सिपाहियों को ले कर करीब वाले खैमों पर हम्ला आवर हुवा था। हज़रत दामिस अबूल हुलूल अपनी कौमे ज़रीफ के लोगों के साथ हाथ में बरेहना तलवारें ले कर उन खैमों की तरफ दौड़े और जाते ही रूमियों पर मिस्ले शैर टूट पड़े और इस शिद्दत से तल्वार ज़नी की कि चंद लम्हों में दो सौ रूमियों को ज़मीन में मुर्दा डाल दिया। युकना के वहम व गुमान में भी न था कि उस पर ऐसा शदीद जवाबी हम्ला होगा, लिहाज़ा वह लरज़ गया और उस के कदम उखड़ गए और पीठ दिखा कर किल्ले की तरफ भागा। युकना और उस के साथियों को फरार होते देख कर हज़रत दामिस अबूल हुलूल ने अपने साथियों के हमराह उन का तआकुब किया लैकिन ऐन इसी वक्त हज़रत अबू उबैदा हम्ला की खबर सुन कर दौड़ते हुए वहां आ पहुंचे, उस वक्त युकना भाग रहा था और हज़रत दामिस अबूल हुलूल उस का पीछा कर रहे थे। हज़रत अबू उबैदा ने बुलन्द आवाज़ से पुकार कर फरमाया कि अंधेरी रात में कोई भी शख्स भागते हुए रूमियों का तआकुब न करे और अपनी जगह वापस लौट आए। हज़रत दामिस अबूल हुलूल ने हज़रत अबू उबैदा का यह हुक्म सुना लिहाज़ा वह ठहर गए और अपने खैमे में वापस लौट आए।

हज़रत दामिस का हज़रत अबू उबैदा और हज़रत खालिद से तआरुफ :-

रात के हम्ले की और दो सौ रूमी सिपाहियों के कत्ल होने की खबर इस्लामी लश्कर के कैम्प में बिजली की तरह फैल गई। हम्ला करने आने वाले रूमियों के दो सौ आदमियों की हलाकत इस्लामी लश्कर के लिये बाइसे मसर्रत थी। सुब्ह फज्र की नमाज़ के बा'द हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत खालिद से फरमाया कि रात को **"कदम कुन्दा"** के लोगों ने अच्छी दिलैरी और शुजाअत का मुज़ाहिरा कर के रूमियों को भगा दिया है और मुझ को खबर मिली है कि इन में से **दामिस अबूल हुलूल** नाम के शख्स ने बड़ी जवांमर्दी से तल्वार

ज़नी कर के रूमियों के परख्चे उडाए। इस वक्त हज़रत सुराका बिन मिर्दास कुन्दी हज़रत अबू उबैदा के करीब ही मौजूद थे। उन्हों ने अर्ज़ किया कि ऐ सरदार ! दामिस अबूल हुलूल मेरे गुलाम हैं। यह सुन कर हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत खालिद से पूछा कि क्या तुम दामिस अबूल हुलूल को पहचानते हो ? हज़रत खालिद ने जवाब दिया कि इन के मुतअल्लिक मैं ने बहुत कुछ सुना है कि वह बहुत ही दिलैर और शुजाअ शख्स हैं। फिर हज़रत खालिद ने इन का तने तन्हा कौम शुअरा के सत्तर (70) आदमियों से लड़ना और तमाम को हलाक करने का तवील वाकेआ सुनाया। फिर हज़रत खालिद ने फरमाया कि मैं ने इन की बहादुरी के ऐसे कईं वाकेआत सुने हैं, लैकिन अभी तक इन से मुलाकात करने का इत्तिफाक नहीं हुवा है। हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत सुराका बिन मिर्दास कुन्दी से फरमाया कि अपने गुलाम से हमारी मुलाकात कराओ। चुनान्चे हज़रत सुराका अपने खैमे की तरफ गए और हज़रत दामिस अबूल हुलूल को ले कर वापस आए और हज़रत अबू उबैदा और हज़रत खालिद बिन वलीद से इन का तआरुफ कराया। दोनों सरदारों ने इन के काम की ता'रीफ कर के हौसला अफ्ज़ाई फरमाई और हल्ब के हाकिम युकना से चौकन्ना रह कर एहतियात बरतने की नसीहत की।

हज़रत दामिस अबूल हुलूल ने हज़रत अबू उबैदा और हज़रत खालिद का शुक्रिया अदा किया और जंग के तअल्लुक से अपने तजरबात बयान किये। सुन कर दोनों सरदार बहुत खुश हुए और दुआओं से नवाज़ा। फिर हल्ब के किल्ले के मुतअल्लिक राए तलब की, तो हज़रत दामिस अबूल हुलूल ने कहा कि मेरी राए यह है कि पूरे इस्लामी लश्कर को एक साथ हम्ला करना चाहिये और मुहासरे में शिद्दत का मुज़ाहिरा करना चाहिये।

किल्ले का मज़ीद सेंतालीस दिन तक मुहासरा और हम्ला :-

हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत दामिस अबूल हुलूल का मश्वरा कबूल फरमाया कर लश्कर में मुनादी कराई कि तमाम मुजाहिद अपना सामाने जंग दुरुस्त कर लें। आइन्दा कल पूरा लश्कर किल्ले की तरफ कूच करेगा। दूसरे दिन पूरा इस्लामी लश्कर किल्ले की तरफ गया और मुहासरा सख्त कर के हम्ला किया। पूरे इस्लामी लश्कर को एक साथ आया हुवा देख कर रूमी घबराए और हाकिम युकना के पास बराए मश्वरा जमा हुए। बा'ज़ ने किल्ले से निकल कर लड़ने का मश्वरा दिया और बा'ज़ ने सुलह की राए पैश की, लैकिन बिल-आखिर तय पाया कि किल्ले की दीवार से लड़ें, लिहाज़ा रूमी लश्कर किल्ले की दीवार पर चढ़ गया और दीवार के ऊपर से तीर और पत्थर बरसाए जिस का इस्लामी लश्कर की जानिब से बराबर जवाब दिया गया। सुब्ह से शाम तक इसी तरह जंग जारी रही, लैकिन कोई नतीजा

नहीं निकला। गुरूबे आफ्ताब के वक्त इस्लामी लश्कर अपने कैम्प में वापस आ गया।

उस रोज़ जंग होती रही मगर कोई नतीजा नहीं आया। यहां तक कि इस तरह की लड़ाई मज़ीद सेंतालीस दिन तक जारी रही। तब हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत दामिस अबूल हुलूल को अपने खैमे में बुलाया और फरमाया कि इस किल्ले को फतह करने के तअल्लुक से तुम कोई तद्बीर बता सक्ते हो ? हज़रत दामिस अबूल हुलूल ने अर्ज़ किया कि ऐ सरदार ! मैं ने एक तद्बीर सोची है और मुझे उम्मीद है कि अल्लाह तबारक व तआला इस में काम्याबी अता फरमाएगा।

हज़रत दामिस की किल्ले में दाखिल होने की अजीब तर्कीब :-

हज़रत दामिस अबूल हुलूल मुहासरा के अय्याम में हल्ब के किल्ले के इर्द गिर्द घूमा करते थे। उन्हों ने हल्ब के किल्ले की दीवार का करीब से मुआइना किया था और किल्ले के अतराफ के जुग्राफिया से भी अच्छी तरह वाकिफीयत हासिल कर ली थी। इन के ज़हन में एक तर्कीब आई, उन्हों ने हज़रत अबू उबैदा से अर्ज़ किया कि ऐ सरदार ! आप लश्कर को ले कर यहां से कूच कर जाओ और तक्रीबन एक फर्सख या'नी तीन मील के फास्ला पर जा कर पड़ाव डालो और ऐसा ज़ाहिर करो कि हल्ब के किल्ले के मुहासरा से हम तंग आ गए हैं और फतह से मायूस हो कर मुहासरा तर्क कर के किसी दूसरे मकाम की जानिब कूच करते हैं और किस तरफ जाना है, वह अभी तक तय नहीं किया है, लिहाज़ा यहां पड़ाव किया है। इस बहाने लश्कर के लोग कुछ आराम भी कर लें। इलावा अज़ीं तीस आदमी मुझ को दे कर इन पर मुझ को सरदार मुकर्रर फरमा दें। मैं इन तीस आदमियों को ले कर लश्कर के कूच करने से पहले ही करीब वाले पहाड़ के गार में छुप जाउंगा। फिर आप लश्कर ले कर कूच कर जाएं और पड़ाव में मेरे पैगाम के इन्तिज़ार में ठहरे रहें और मेरी तरफ से पैगाम आते ही आप जल्दी से लश्कर के साथ किल्ले पर आ पहुंचें।

मज़्कूरा प्लान के मुताबिक हज़रत अबू उबैदा ने किल्ले का मुहासरा तर्क किया और यहां से कूच करने का हुक्म जारी किया। तमाम मुजाहिदीन किल्ले की दीवार का मुहासरा तर्क कर के इस्लामी लश्कर के कैम्प में आ गए और अपना मालो अस्बाब बांध कर कूच करने की तैयारी में मश्गूल हो गए। खैमे समेटने, मालो अस्बाब बांधने और कूच करने की तैयारी में जानवरों पर सामान लादने वगैरा ज़रूरी उमूर एक साथ अन्जाम देने के बाइस शौर व गुल बुलन्द हुवा। रूमी सिपाहियों ने किल्ले की दीवार से देखा कि मुसल्मानों ने अचानक मुहासरा तर्क कर दिया है और कैम्प का माल व सामान भी समेटा जा रहा है।

शायद मुसल्मान तंग आ कर कूच कर रहे हैं। थोड़ी दैर के बा'द रूमियों को अपना गुमान सहीह मा'लूम हुवा। तहलील व तक्बीर की सदाएं बुलन्द करते हुए इस्लामी लश्कर ने हल्ब से कूच की। इस दौरान भीड़ और इज़्दहाम का फाइदा उठाते हुए हज़रत दामिस अबूल हुलूल अपने साथियों के हमराह चुपके से अलग हो कर करीब में वाकेअ पहाड़ की तरफ रवाना हो गए और इन को जाते हुए किसी ने नहीं देखा। तमाम रूमी इस्लामी लश्कर को कूच करता हुवा देखने में मुन्हमिक थे और किसी का इन की तरफ ख्याल नहीं गया। हज़रत दामिस पहाड़ में वाकेअ एक गार में अपने साथियों के हमराह पनाह गुज़ीं हो गए।

इस्लामी लश्कर के कूच करने की खबर किल्ले में बिजली की तरह फैली। लोग दौड़ते हुए किल्ले की दीवार पर चढ़ गए और इस्लामी लश्कर को कूच करता हुवा देखने लगे। अह्ले हल्ब भी मुहासरा से तंग आ गए थे लिहाज़ा इस्लामी लश्कर को जाता देख कर खुशियां मनाने लगे। आपस में एक दूसरे को खुश्खबरी और मुबारकबादी देते और कहते थे कि किल्ले की फतह से ना उम्मीद और मुहासरा से तंग आ कर अरब कूच कर गए। हल्ब से रवाना हो कर इस्लामी लश्कर तीन मील के फास्ले पर पहुंच कर ठहरा। हज़रत अबू उबैदा ने ए'लान किया कि हम हल्ब से किस तरफ जाएं? अभी तय नहीं है लिहाज़ा यहां पड़ाव करते हैं और कुछ तय होने के बा'द यहां से कूच करेंगे। यह ए'लान इस लिये किया गया था कि अगर लश्कर में युकना का कोई जासूस हो तो वह युकना को यह खबर पहुंचाए कि इस्लामी लश्कर अब हल्ब नहीं आएगा बल्कि किसी और मकाम की तरफ जाएगा। हज़रत अबू उबैदा ने लश्कर को पड़ाव करने का हुक्म दिया और हज़रत दामिस अबूल हुलूल की तरफ से पैगाम आने के इन्तिज़ार में तवक्कुफ किया।

इस्लामी लश्कर के कूच कर जाने से रूमी मुत्मइन हो गए थे, लेकिन हाकिम युकना ने एहतियात के तौर पर किल्ले के दरवाज़े अभी बन्द ही रखे थे। अलबत्ता किल्ले की दीवार पर जो लश्कर था उस को नीचे उतार लिया था और किल्ले की दीवार पर थोड़े थोड़े फास्ला पर बने बुर्जों में चौकीदार बिठा दिये, लैकिन वह चौकीदार थोड़ी रात गुज़रने के बा'द शराब के नशे में धुत हो कर सो जाते। शुरू में एक दो दिन चौकीदार आधी शब तक चौकन्ना थे, लैकिन दो तीन दिन के बा'द वह गैर मोहतात हो गए। हज़रत दामिस अबूल हुलूल दो तीन दिन पहाड़ के गार में पोशीदह रहे। इस्लामी लश्कर की रवानगी को दो तीन दिन गुज़र जाने से अब रूमी बिल्कुल बे खौफ और मुत्मइन हो गए और गफ्लत और बे एहतियाती बरतने लगे थे। निस्फ शब में हज़रत दामिस अबूल हुलूल ने अपने साथियों में से दो अश्खास के ज़रीआ हज़रत अबू उबैदा के पास कहला भेजा कि अलस्सुब्ह पूरे लश्कर को ले कर किल्ले

के दरवाज़े पर आ जाएं। आप को इन्शा अल्लाह तआला दरवाज़ा खुला हुवा मिलेगा। बाकी अठ्ठाईस आदमी अंधेरे में छुपते छुपाते और किसी किस्म का शौरो गुल किये बगैर किल्ले की दीवार के करीब पहुंच गए और हज़रत दामिस अबूल हुलूल ने हस्बे ज़ैल तर्तीब से इन अठ्ठाईस आदमियों को किल्ले की दीवार के करीब दीवार से लग कर खड़े कर दिया :
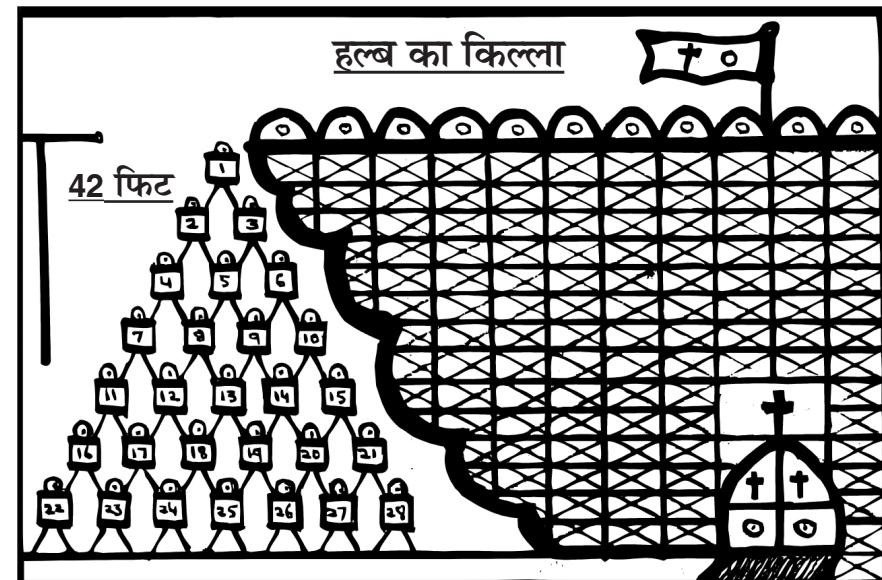
मुन्दरजा बाला नक्शा के मुताबिक पहली सफ में सात, दूसरी में छ, तीसरी में पांच, चोथी में चार, पांचवीं में तीन, छटी में दो और सातवीं में एक आदमी खड़ा हुवा। नतीजतन सातवीं सफ का एक आदमी किल्ले की 42 फुट की ऊंची दीवार के महाज़ी बुलन्द हो गया। सब ने अपने हाथ किल्ले की दीवार से मस कर के सहारा लिया था ताकि तवाज़ुन बर-करार रहे। सब से नीचे वाली सफ में भारी जसामत वाले और मज़बूत अश्खास खड़े किये गए, फिर इस के ऊपर वाली सफ में इन अश्खास से हल्के, फिर इस से हल्के अला हाज़त तर्तीब। सब से ऊपर वाली या'नी सातवीं सफ वाला शख्स किल्ले की दीवार के कंगरों तक पहुंच गया था। उस ने कंगरों को थाम लिया और दीवार पर चढ़ कर फांद गया। फिर उस एक शख्स ने हाथ का सहारा दे कर छटी सफ वाले दोनों शख्सों को यके बा'द दीगरे ऊपर खींच लिया। अब किल्ले की दीवार पर तीन मुजाहिद पहुंच गए थे। करीब में एक बुर्ज था, जिस में एक रूमी सिपाही शराब के नशे में धुत मद होश पड़ा था। तीनों मुजाहिद

बिल्ली की चाल चलते हुए चुपके से उस के पास पहुंच गए और बहुत एहतियात से आहिस्ता आहिस्ता उसे इस तरह उठाया कि उस की नींद न खुल जाए और फिर किल्ले की दीवार से बाहर की जानिब सर के बल उलटा गिरा दिया। वह रूमी सिपाही सर के बल किल्ले की 42 फुट की ऊंचाई से गिरा और उस का सर एक पत्थर से टकरा कर मिस्ले खर्बूज़ा पाश पाश हो गया। फिर वह तीनों मुजाहिद नीचे खड़े अपने 25 साथियों के महाज़ी आए और अपने अमामे खोल कर नीचे लटका कर पांचवें सफ वाले तीन अश्खास को ऊपर खींच लिया। अब किल्ले की दीवार पर छ मुजाहिद पहुंच गए थे। फिर ऊपर वाले छ अश्खास ने अपने अमामों में गिरेह लगा कर चोथी सफ वाले चार को ऊपर खींच लिया। **इस तरह तमाम के तमाम अट्ठाईस कफन बरदोश मुजाहिद किल्ले की दीवार के ऊपर पहुंच गए।** हज़रत दामिस अबूल हुलूल ने अपने साथियों के कान में बात कर के ताकीद की कि बुर्जों की दीवार और किल्ले की दीवार के कंगरों के नीचे चीत लेट कर पड़े रहो और ज़र्रा बराबर भी हर्कत या आवाज़ न हो। अपने साथियों को इस तरह कंगरों के नीचे छुपाने के बा'द हज़रत दामिस सीना के बल लेट कर घसिटते और सरकते हुए थोड़ी दूर तक गए, तो दीवार के नीचे शहर के अन्दरूनी हिस्से की तरफ से कुछ आवाज़ें सुनाई दीं। हज़रत दामिस ने किल्ले की दीवार के कंगरों के शगाफ से झांक कर नीचे देखा तो हाकिम युकना अपने रोउसा और अह्बाब के दस्तरख्वान पर ज़ियाफत उडाने में मशगूल है। पुर-तकल्लुफ खाने और शराब व कबाब की मजलिस सजी हूई है। मुहासरा से नजात पाने और इस्लामी लश्कर के चले जाने की खुशी में रक्सो सुरूद की महफिल सजाई गई थी। महफिल में शरीक सभी कसरत से शराब नौशी कर रहे थे, बल्कि शराब में नहाए हुए पागलों की तरह नाचते कूदते थे और लोगों की भीड़ लगी हूई थी। **रूमी सिपाही भी अपनी जगह की डयूटी छोड़ छोड़ कर वहां आ गए थे, और बे तहाशा शराब पी पी कर झूम रहे थे।**

हज़रत दामिस अबूल हुलूल यह मन्ज़र देख कर अपने साथियों के पास वापस आए और इन को बशारत दी कि थोड़ी दैर बा'द रूमी लश्कर के रोउसा और हाकिम युकना शराब के नशे में चूर हो कर ख्वाबे गफ्लत की आगोश में पहुंच जाएंगे, लिहाज़ा अब इत्मीनान से यहां छुप कर पड़े रहो, यहां तक कि सुब्ह नमूदार हो और उम्मीद है कि हमारे दो साथियों ने हज़रत अबू उबैदा को खबर पहुंचा दी होगी और वह लश्कर ले कर सुब्ह को आ पहुंचेंगे।

इस्लामी लश्कर का किल्ले में दाखिल हो कर हल्ब को फतह करना :-

हज़रत दामिस अबूल हुलूल और इन के साथियों ने किल्ले की दीवार पर रात बसर कर दी और सुब्ह के करीब वह तमाम बुर्जों से नीचे जाने वाले ज़ीनों के पास चुपके से आए। वहां तीन रूमी सिपाही सोए पड़े थे। उन्हों ने इन तीनों के मुंह दबा कर खन्जरों से इन के सर काट कर अलग कर दिये। जब सुब्ह नमूदार हूई तो अट्ठाईस(28) मुजाहिद ज़ीना से उतर कर नीचे आ गए और किल्ले के दरवाज़े की तरफ लपके। कुछ रूमी सिपाही दरवाज़े की निगेहबानी कर रहे थे। उन्हों ने देखा कि शहर के अन्दर अरब आ पहुंचे हैं तो वह घबरा गए कि क्या मआमला है? यह अरब किल्ले के अन्दर कहां से आए? रूमी सिपाहियों ने शौर व गुल बुलन्द किया और मुजाहिदों पर हम्ला कर दिया, लैकिन मुजाहिदों ने मिस्ले शैर हम्ला कर के बहुत से रूमियों को फाड़ कर रख दिया। किल्ले के दरवाज़े पर हंगामा मच गया और इर्द गिर्द बिखरे सारे रूमी सिपाही आ धमके और मुजाहिदों को घेर लिया, लैकिन मुजाहिदों ने जिस शुजाअत और दिलैरी का मुज़ाहिरा कर के मुकाबला किया है, इस की नज़ीर तारीख में नहीं मिलती। आन की आन में हज़ारों रूमी सिपाही किल्ले के दरवाज़े पर आ पहुंचे, लैकिन मुजाहिदों ने डट कर इन का मुकाबला किया और शम्शीर ज़नी के वह जोहर दिखाए कि किसी रूमी सिपाही को करीब आने की हिम्मत नहीं होती थी और **जो भी हिम्मत कर के हम्ला करने की गरज़ से करीब आता, कुश्ता हो कर ज़मीन पर ढैर होता।**

हाकिम युकना को इत्तिला' हूई कि कुछ अरब किल्ले में दाखिल हो गए हैं और किल्ले के दरवाज़े पर घमसान की लड़ाई जारी है, तो वह भी कच्ची नींद उठ कर भागता हुवा किल्ले के दरवाज़े पर आ पहुंचा और अपने सिपाहियों को लड़ने की तर्गीब देने लगा। युकना के आने से रूमी सिपाहियों ने हम्ला सख्त कर दिया और आठ मुजाहिदों को शहीद कर डाला। अब सिर्फ बीस (20) मुजाहिद अपनी जान हथैली पे ले कर लड़ रहे थे। हज़रत दामिस अबूल हुलूल की तल्वार बिजली की तरह चमक रही थी और एक ज़र्ब में दो दो तीन तीन रूमियों का सफाया करती थी, लैकिन हज़रत दामिस को कई शदीद ज़ख्म आए थे। तमाम मुजाहिदों को अपनी शहादत का यकीन हो गया था और तमाम मुजाहिद ना'रए तक्बीर की सदाएं बुलन्द करते हुए लड़ते थे कि अचानक अल्लाहु अक्बर के फलक शगाफ ना'रा की सदा बुलन्द हूई। एक साथ हज़ारों ज़बानों से निकली हूई ना'रए तक्बीर की सदा ने किल्ले की दीवारों को हिला कर रख दिया। रूमी सिपाही शहर की तरफ भागे। वह इस गुमान में थे कि इस्लामी लश्कर किल्ले के अन्दर से ना'रए तक्बीर की सदा बुलन्द कर रहा

है। रूमियों को यह वहम हो गया कि इस्लामी लश्कर को किल्ले के अन्दर दाखिल होने का खुफिया रास्ता मा'लूम हो गया है और खुफिया रास्ता से इस्लामी लश्कर किल्ले में दाखिल हो रहा है, लिहाज़ा तमाम सिपाही उस जगह की तरफ दौड़े, जहां किल्ले में दाखिल होने का खुफिया रास्ता था।

लैकिन हकीकत यह थी कि हज़रत खालिद बिन वलीद इस्लामी लश्कर ले कर किल्ले के दरवाज़े के बाहर खड़े थे और ना'रए तक्बीर बुलन्द कर रहे थे। हज़रत दामिस अबूल हुलूल और इन के साथियों ने जब ना'रए तक्बीर की सदा सुनी तो इन के हौसले बुलन्द हो गए और इन में एक ऐसा जौश पैदा हुवा कि रूमी सिपाहियों को मारते और काटते हुए किल्ले के दरवाज़ा पर काबिज़ हो गए और दरवाज़ा खोल डाला। दरवाज़ा खुलते ही हज़रत खालिद बिन वलीद ने यल्गार कर दी और किल्ले में दाखिल होते ही रूमियों के सरों पर तलवारें पड़नी शुरू हूईं, इस्लामी लश्कर के मुजाहिदों ने नैज़ों से रूमियों के सीने छलनी और तलवारों से रूमियों के सर कलम कर के रख दिये। थोड़ी देर में तो रूमी सिपाहियों की लाशों से ज़मीन भर गई और खून की नदी बेह निकली। रूमी सिपाहियों को यकीन हो गया कि इस्लामी लश्कर से मुकाबला करने की हम में ताकत नहीं, लिहाज़ा उन्हों ने हथियार फैंक कर हाथ ऊपर को उठा दिये और **लफून, लफून** या'नी **"अमान, अमान"** पुकार ना शुरू कर दिया। हज़रत खालिद ने शम्शीर ज़नी मौकूफ फरमा दी। इतने में हज़रत अबू उबैदा भी बाकी लश्कर ले कर तशरीफ ले आए और उन्हों ने भी अमान व पनाह दे दी।

शहर के बाशिन्दे हज़रत अबू उबैदा की खिदमत में हाज़िर हुए। हज़रत अबू उबैदा ने तमाम पर इस्लाम पैश किया। कारेईन को यह जान कर तअज्जुब होगा कि **सब से पहले हाकिमे हल्ब युकना ने इस्लाम कबूल किया** और इन की मुताबअत में हल्ब के सरदारों, रोउसा, और बतारेका ने भी इस्लाम कबूल किया। हज़रत अबू उबैदा ने इन को अपने अह्लो अयाल की तरफ फैर दिया और इन के जराइम मुआफ फरमा दिये। फिर हल्ब के नवाही इलाका के और काश्तकार लोगों पर भी हज़रत अबू उबैदा ने एहसान और करम फरमाते हुए उन को अमन व अमान दिया और उन के जराइम भी मुआफ फरमा दिये और उन को इस अम्र की ताकीद की कि अब कभी भी इस्लामी लश्कर की मुखालिफत में हिस्सा न लें और मुसल्मानों से नैक सुलूक करने का वा'दा लिया। फिर किल्ले से सोना, चांदी और सोने चांदी के बर्तनों और ज़रूफ का अज़ीम ज़खीरा बर आमद किया गया और इस में से बैतुल माल के लिये खुम्स (20%) अलग कर के बाकी माल मुजाहिदों में तक्सीम कर दिया गया।

इस्लामी लश्कर ने हल्ब में इकामत की और इस की अह्म वजह यह थी कि हज़रत दामिस अबूल हुलूल और इन के साथी शदीद ज़ख्मी हो गए थे। हज़रत दामिस अबूल हुलूल को कुल तिहत्तर (73) ज़ख्म आए थे और बा'ज़ ज़ख्म तो सख्त गहरे थे। लिहाज़ा इन तमाम ज़ख्मियों का इलाज करने और इन के सेहत याब होने तक इस्लामी लश्कर ने हल्ब में कयाम किया। हाकिम युकना ने भी इस्लामी लश्कर के साथ हुस्ने सुलूक का मुज़ाहिरा किया और इस्लामी लश्कर की हत्तल इम्कान खिदमात अन्जाम दीं। रोज़ाना हज़रत अबू उबैदा की खिदमत में हाज़िर होते थे और अपनी खिदमात और मुफीद मश्वरे पैश किया करते थे।

हाकिम युकना को ख्वाब में रसूलल्लाह y की ज़ियारत और इस की बरकत

हाकिम युकना हज़रत अब्दुल्लाह जब भी हज़रत अबू उबैदा की खिदमत में हाज़िर होते थे तो फसीह अरबी ज़बान में गुफ्तगू फरमाते थे। हालां कि हाकिम युकना अरबी ज़बान से बिल्कुल ना-वाकिफ थे। जंग के दौरान हज़रत अबू उबैदा के साथ जंग के उमूर के मुतअल्लिक जब भी गुफ्तगू करने की ज़रूरत पैश आई थी, मुतर्जिम के वास्ते से ही गुफ्तगू की थी, लैकिन अचानक इन को फसीह व बलीग अरबी ज़बान में गुफ्तगू करते देख कर हज़रत अबू उबैदा को बहुत तअज्जुब हुवा। हज़रत अबू उबैदा ने हाकिम युकना से फरमाया कि मेरी मा'लूमात के मुताबिक तुम अरबी ज़बान नहीं जानते हो, लैकिन अचानक इस तरह अरबी ज़बान में गुफ्तगू करना कहां से हासिल हुवा ? हाकिम युकना ने जो जवाब दिया उस को हम अल्लामा वाकदी कुद्दिसा सिर्रहु की किताब से नक्ल करते हैं :

"पस कहा युकना ने ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह या'नी तअज्जुब करते हो तुम ऐ सरदार ! इस हाल से। अबू उबैदा बिन अल जर्राह ने कहा हां। युकना ने कहा कि मैं शब गुज़िश्ता को फिक्र और अंदेशा करता था तुम्हारे काम में कि क्यूं कर मदद और गल्बा ले गए तुम लोग हम पर, हालां कि कोई गिरोह तुम से ज़ियादह ज़ईफ हमारे नज़दीक न था। पस जब दिल में डाला मैं ने तुम्हारे मआमला को तो, सो गया मैं। पस देखा मैं ने एक शख्स को रौशन तर चान्द से। पस पूछा मैं ने कैफियत इन की। पस कहा गया मुझ से कि यह मुहम्मद सल्लल्लाहो

तआला अलैह व आलेहि व सल्लम हैं। पस गोया मैं सवाल करता हूं कि अगर यह नबी सादिक हैं, तो दरख्वास्त करें अपने परवर्दगार से कि आगाह और ता'लीम कर देवे मुझ को परवर्दगार साथ ज़बान अरबी के। पस गोया इशारा फरमाते हैं वह मेरी तरफ और दरख्वास्त की अपने परवर्दगार से इस अम्र की। पस बैदार हो गया मैं इस हाल में कि ज़बान अरबी में कलाम करता था।''

(हवाला : ''फुतूहुश्शाम'' अज़ : अल्लामा वाकदी, सफहा : 328)

नाज़िरीने किराम मज़्कूरा इबारत को एक मरतबा नहीं बल्कि कई मरतबा गौर से पढ़ें। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम का तसर्रुफ और इख्तियार कैसा अज़ीम है कि आप ने इशारा फरमाया और हाकिम युकना अरबी ज़बान में माहिर हो गए। हालां कि आम इन्सान हालते बैदारी में भी एक इशारा कर के किसी को आन की आन में किसी ज़बान की महारत वदीअत नहीं कर सकता, लैकिन अल्लाह तबारक व तआला ने अपने महबूबे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को ''मालिके कौनेन'' का मन्सब अता फरमा कर काइनात की तमाम चीजें और तमाम उमूर इन के इख्तियार और तसर्रुफ में अता फरमा दिये थे और वह महबूबे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम जो चाहते थे, हो कर रहता था :

तिन्का भी हमारे तो हिलाए नहीं हिल्ता
तुम चाहो तो हो जाए अभी कोहे मेहन फूल

(अज़ : इमामे इश्को मुहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

एक ज़रूरी अम्र की तरफ भी तवज्जोह दरकार है कि हज़रत अबू उबैदा बिन अल जर्राह रदियल्लाहो तआला अन्हो जैसे जलीलुल कद्र सहाबीए रसूल ने हज़रत युकना हाकिम की ज़बानी हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के तसर्रुफ और इख्तियार की यह बात समाअत फरमाई, लैकिन उन्हों ने हाकिम युकना की बात रद्द नहीं फरमाई बल्कि खुश हुए। अगर हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के तसर्रुफ और इख्तियार का अकीदा रखना शिर्क होता, तो हज़रत अबू उबैदा फौरन हाकिम युकना की बात का रद्द फरमाते कि ऐसा अकीदा रखना शिर्क है। साबित हुवा कि जलीलुल कद्र सहाबीए रसूल हज़रत अबू उबैदा का अकीदा था कि अल्लाह तआला ने अपने महबूबे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को तमाम इख्तियारात और तसर्रुफात से नवाज़ा है।

लैकिन अफ्सोस ! सद अफ्सोस !

दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन यह कहते हैं कि :

- **''और इस बात की बड़ाई इन में कुछ नहीं कि अल्लाह ने इन को आलम में तसर्रुफ करने की कुछ कुदरत दी हो कि जिस को चाहें मार डालें या औलाद दे दें या मुश्किल आसान कर दें या मुरादें पूरी कर दें या फतह व शिकस्त दें या गनी और फकीर कर दें या किसी को बादशाह या अमीर व वज़ीर बना दें या किसी से बादशाहत व अमारत छीन लें या किसी के दिल में ईमान डाल दें या किसी का ईमान छीन लें कि इन बातों में सब बन्दे बड़े और छोटे बराबर हैं आजिज़ और बे इख्तियार हैं।''**

(हवाला : तक्वियतुल ईमान, अज़ : मौलवी इस्माईल देहलवी, नाशिर : सल्फिया, बम्बई, सफहा : 46)

मुन्दरजा बाला इबारत **मौलवी इस्माईल देहलवी** ने अपनी रुसवाए ज़माना किताब **''तक्वियतुल ईमान''** में **''अल फस्लुस सानी''** इश्राक फील इल्म के रद्द में ''नबी सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को इल्मे गैब हासिल नहीं था'' उन्वान के तहत लिखी है। इस इबारत में मौलवी इस्माईल देहलवी का यह कहना है कि तमाम बड़े और छोटे बन्दे या'नी इस में अम्बिया व औलिया भी शामिल हैं, इन को अल्लाह तआला ने किसी किस्म का कोई तसर्रुफ नहीं दिया। इस इबारत में **''मुरादें पूरी करना''** भी लिखा है। जिस का साफ मत्लब यह हुवा कि किसी की मुराद पूरी करना अम्बिया व औलिया के इख्तियारो तसर्रुफ में नहीं। (मआज़ल्लाह)

जब कि हाकिम युकना की अरबी ज़बान सीखने की मुराद हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने हालते बैदारी के बजाए हालत नींद, ख्वाब के आलम में पूरी फरमा दी और हाकिम युकना कि जिन की मादरी ज़बान रूमी थी, इन को आन की आन में अरबी ज़बान की फसाहतो बलागत इनायत फरमा दी। जिस का खुद हाकिम युकना ने तजरबा किया और हज़रत अबू उबैदा और दीगर अजिल्ला सहाबा ने मुशाहिदा किया।

हाकिम युकना ने इन्जील में हुज़ूरे अक्दस के अवसाफ देखे :-

हाकिम युकना ने अपनी गुफ्तगू का सिल्सिला जारी रखते हुए मज़ीद कहा कि यह ख्वाब देखने के बा'द मैं अपने मरहूम भाई यूहन्ना के घर गया और यूहन्ना की किताबों का खज़ाना खोल कर आस्मानी किताबों, सहीफों और मलाहिम को पढ़ा, तो इन में **मैं ने हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के अवसाफे जमीला पाए** और इन के वह हालात मर्कूम पाए जो रूनुमा होने वाले थे। इन में से एक यह है कि इन के ज़ियादह तर दुश्मन यहूदी होंगे। क्या वाकई ऐसा हुवा है? हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि हां! वाकई कौमे यहूद के लोग इन की अदावत में गुलू और इन्तिहा तक पहुंचे थे और इन की जान के दुश्मन बन गए थे, लैकिन अल्लाह तआला ने अपने महबूब सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को अपने दुश्मनों पर फतह व गल्बा अता फरमाया। हाकिम युकना ने मज़ीद कहा कि मैं ने इन की एक सिफत यह भी पाई है कि अल्लाह तआला इन को और इन के उम्मतियों को वसीयत फरमाएगा कि यतीमों और मिस्कीनों की मदद व इआनत करो। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि हां! अल्लाह तआला ने अपने मुकद्दस कलाम मजीद में इस अम्र का हुक्म नाज़िल फरमाया है :

وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ

(सूरतुश शो'रा, आयत : 215)

तर्जुमा : "और अपनी रहमत का बाज़ू बिछाव अपने पैरू मुसल्मानों के लिये।" (कन्ज़ुल ईमान)

हज़रत अबू उबैदा की وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدٰى की ईमान अफरोज़ तफ्सीर

फिर हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में यह भी इर्शाद फरमाया है :

اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْماً فَاٰوٰى٥ وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدٰى٥ وَوَجَدَكَ عَائِلًا فَاَغْنٰى٥ فَاَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ٥ وَاَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ٥

(सूरतुद दुहा, आयत : 6 ता 10)

तर्जुमा : "क्या इस ने तुम्हें यतीम न पाया फिर जगह दी, और तुम्हें अपनी मुहब्बत में खूद-रफ्ता पाया तो अपनी तरफ राह दी, और तुम्हें हाजत मन्द पाया फिर गनी कर दिया, तो यतीम पर दबाव न डालो, और मंगता को न झिड़को।" (कन्ज़ुल ईमान)

कारेईने किराम से इल्तिमास है कि अपनी तमाम तर तवज्जुहात मर्कूज़ कर के ज़रा आगे की सुतूर मुतालआ फरमाएं :

जब हज़रत अबू उबैदा ने कुरआन मजीद की मुन्दरजा बाला आयात तिलावत फरमाईं, तो इन आयात में से एक आयत "وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدٰى" समाअत कर के हाकिम युकना को बहुत तअज्जुब हुवा और उन्हों ने अपनी हैरत का जिन अल्फाज़ में इज़हार किया, वह हज़रत अल्लामा वाकदी की ज़बानी समाअत फरमाएं :

"युकना ने कहा कि अल्लाह तआला ने इन की निस्बत सिफते ज़लालत की क्यूं बयान की है। हालां कि वह अल्लाह के नज़दीक बड़े मरतबा वाले हैं"

(हवाला : फुतूहुश्शाम, अज़ : अल्लामा वाकदी, सफहा : 328)

लुगत में ज़लालत के मा'नी गुमराही के होते हैं। हालां कि लफ्ज़ ज़लालत दीगर बहुत मा'नों में भी मुस्ता'मिल है। लैकिन अक्सर इस का इस्ते'माल गुमराही के मा'नी में होता है। लिहाज़ा हाकिम युकना के ज़हन ने यह बात कबूल न की। पूरी आयत का तर्जुमा फिर एक मरतबा देखें। और लफ्ज़ी तर्जुमा और लफ्ज़ों के ब-ज़ाहिर मा'नी को देखें। आयते करीमा इस तरह है :

"وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدٰى" इस के ज़ाहिरी मा'नी हुए "पाया आप को दाल पस हिदायत दी" लफ्ज़ "दाल" के ज़ाहिरी मा'नी हुए गुमराह, भटका, बे-खबर वगैरा।

(फीरोज़ुल-लुगात, सफहा : 868)

हज़रत हाकिम युकना जैसे नौ मुस्लिम के दिल ने भी यह बात गवारा न की कि नबीए अक्रम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम कभी "दाल" या'नी गुमराह हो सक्ते हैं, लिहाज़ा इन्हों ने हज़रत अबू उबैदा से अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला ने हुज़ूरे अक्दस

सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की तरफ "**दाल" की निस्बत क्यूं की ?** हालां कि हुज़ूरे अक्दस का अल्लाह के नज़दीक बहुत बड़ा मरतबा है। **इस का मत्लब यह हुवा कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम का वह आ'ला मन्सब है कि इन के लिये "दाल" या'नी गुमराह, भटका हुवा की निस्बत नहीं की जा सक्ती।** लैकिन चूं कि कुरआन मजीद की आयत है, लिहाज़ा उन्हों ने इस आयत की सहीह तफ्हीम हासिल करने की गरज़ से हज़रत अबू उबैदा से सवाल किया कि अल्लाह तआला ने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की सिफत में लफ्ज़ "दाल" की निस्बत की है तो इस की क्या तौजीह है ?

हज़रत अबू उबैदा ने हाकिम युकना से इस आयत की तफ्सीर बयान फरमा कर, इस आयत का सहीह मफ्हूम बयान फरमा कर, ईमान अफरोज़ वज़ाहत बयान फरमाई है। इस को इमाम अर्बाबे सेयर व तवारीख इमाम अल्लामा मुहम्मद बिन अम्र अल वाकदी कुद्दिसा सिर्रहु ने अपनी किताब में इस तरह मर्कूम फरमाया है :

"पस कहा अबू उबैदा बिन अल जर्राह ने मआज़ल्लाह यह मा'नी इस के नहीं हैं बल्कि मा'नी यह हैं :

وَوَجَدَكَ ضَالًّا فِى تِيْهِ مُحَبّتِنَا فَهَدَيْنَاكَ اِلىٰ مُشَاهَدَتِنَا وَاَيْضًا
سَهَّلَ لَكَ الْوُصُوْلُ اِلىٰ مَنَازِلِ الْمُكَاشَفَةِ وَ وَقفَكَ لِلْوَقُوْفِ فِىْ مَقَامِ
الْمُشَاهَدَةِ وَاَيْضًا وَوَجَدَكَ ضَالًّا فِىْ بِحَارِ الطَّلَبِ عَلٰى مَرَاكِبِ
الطَّلَبِ فَاٰوَاكَ اِلىٰ سَوَاحِلِ الْحَقِّ وَقَرَّبَكَ اِلىٰ ظِلِّ حَقَائِقِ الصِّدْقِ

(हवाला : फुतूहुश्शाम, अज़ अल्लामा वाकदी, सफहा : 328)

तर्जुमा : "और पाया हम ने तुम को झुकने वाला अपनी मुहब्बत के जंगल में, पस सीधी राह बतला दी हम ने तुम को ब-जानिबे अपने दीदार और हुज़ूरी के, और नीज़ आसान कर दिया हम ने तुम्हारे वास्ते पहुंचने को ब-जानिबे मकामात खुल जाने छुपे हुए भेदों के, और आसान कर दिया हम ने तुम को वास्ते ठहरने हुज़ूरी में, और पाया हम ने तुम को जुस्तजू के दरियाओं में तलाश की कश्तियों पर, पस पनाह दी हम ने तुम को और पहुंचा दिया ब-

जानिबे किनारे हर सज़ावार और राह रास्त के, और नज़दीक कर दिया हम ने तुम को ब-जानिबे साया और पनाह हकीकतो रास्ती के।"

(तर्जुमा माखूज़ अज़ हाशिया, फुतूहुश्शाम, अज़ अल्लामा वाकदी, सफहा : 328)

हज़रत अबू उबैदा बिन अल जर्राह रदियल्लाहो तआला अन्हो की ज़बान से "وَوَجَدَكَ ضَالًّا" की मुन्दरजा बाला तफ्सीर समाअत कर के हाकिम युकना के तमाम शुकूक का इज़ाला हो गया और इन को पूरा इत्मिनान हो गया और इन का दिल खुशी से भर गया और दिल की खुशी के आसार इन के चेहरे पर नमूदार हुए और इन का चेहरा खुशी से चमकने लगा क्यूं कि हज़रत अबू उबैदा ने इस आयत की जो तफ्सीर बयान की इस का मज़्मून तौरेत शरीफ के हाशिया के मज़्मून के ऐन मुताबिक था, जिस को हाकिम युकना ने अपने मरहूम भाई हज़रत यूहन्ना की किताब में पढ़ा था। जिस को इन्हों ने हज़रत अबू उबैदा के सामने इन अल्फाज़ में ए'तेराफ किया।

अल्लामा वाकदी की ज़बानी :

"पस जब सुना युकना ने यह कलाम अबू उबैदा बिन अल जर्राह रदियल्लाहो अन्हो से, चमकने लगा चेहरा इन का खुशी से और कहा कि ऐसा ही पढ़ा था मैं ने शब गुज़िश्ता को अपने भाई यूहन्ना की किताब में, ज़िक्र किया है कि पाया इस ने इस मज़्मून को तौरेत के हाशिया में और अब मज़बूती पकड़ ली तुम्हारे दीन ने मेरे दिल में और जान लिया मैं ने कि यही दीने हक्क है।"

(हवाला : फुतूहुश्शाम, अज़ अल्लामा वाकदी, सफहा : 329)

नाज़िरीने किराम ! सूरए वद्दुहा की आयत "وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدٰى" की जो तफ्सीर हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रदियल्लाहो अन्हो ने बयान फरमाई, इस को फिर एक मरतबा ब-गौर मुलाहिज़ा फरमाएं और इस आयत का इमामे इश्को मुहब्बत, आ'ला हज़रत, इमामे अह्ले-सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत **इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिस बरैलवी** कुद्दिसा सिर्रहु ने जो तर्जुमा फरमाया है, इस तर्जुमा को देखें। तर्जुमा इस तरह है :

"और तुम्हें अपनी मुहब्बत में खुद रफ्ता पाया तो अपनी तरफ राह दी"

(कन्ज़ुल ईमान)

इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिस बरैलवी का तर्जुमा अमीनुल उम्मत, सहाबीए रसूल वाहिदुन मिन अशरए मोबश्शरह, हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रदियल्लाहो तआला अन्हो की बयान फरमूदा तफ्सीर के ऐन मुताबिक है, बल्कि हज़रत मुहद्दिस बरैलवी का तर्जुमा अमीनुल उम्मत हज़रत अबू उबैदा की तफ्सीर की तर्जुमानी कर रहा है और तौरेत शरीफ के हाशिया के मुताबिक है । **यह वह तर्जुमा है कि जिस के हर लफ्ज़ से मुहब्बते रसूल और अज़्मते रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम टपक्ती और अयां होती है ।**

आइये ! इस आयत के तहत दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन के अकाबिर व पैशवाओं के तराजिम देखें :

- दारुलउलूम देवबन्द के सद्रुल मुदर्रिसीन और वहाबी तब्लीगी जमाअत के हकीमुल उम्मत मौलवी अशरफ अली थानवी के उस्ताद, और जिन को उलमाए देवबन्द बड़े फख्र से **''शैखुल हिन्द''** कहते हैं, वह **मौलवी मह्मुदुल हसन देवबन्दी** ने इस आयत का इस तरह तर्जुमा किया है :

''और पाया तुझ को भटकता फिर राह दिखाई''

मौलवी महमूदुलहसन देवबन्दी ने इस तर्जुमा में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के लिये लफ्ज़ **''भटकता''** का इस्ते'माल किया है । लफ्ज़ भटकता के मा'नी हम लुगत से देखें :

भटकता = गुमराह होना, आवारा फिरना (हवाला :- जामेउल लुगात)

भटकता = गुमराह होना, राह भूलना, आवारा फिरना

(हवाला : फीरोज़ुल-लुगात, सफहा : 232)

लुगत के ए'तबार से भटकता के मा'नी गुमराह और आवारा के हुए और इन अल्फाज़ का हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के लिये इस्ते'माल करना सख्त बे अदबी, गुस्ताखी और तौहीन है बल्कि कुरआन के खिलाफ है :

مَاضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى

(सूरए नज्म, आयत : 2)

तर्जुमा : ''तुम्हारे साहिब न बहके, न बे राह चले ।'' (कन्ज़ुल ईमान)

तफ्सीर :

(1) **साहिबुकुम से मुराद सैयदे आलम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम हैं । मा'नी यह हैं कि हुज़ूरे अन्वर ने कभी तरीक हक्क व हिदायत से उदूल न किया । हमेंशा अपने रब की तौहीद व इबादत में रहे । आप के दामन अस्मत पर कभी किसी अम्र मकरूह की गर्द न आई ।**

(2) **और बे राह न चलने से मुराद है कि हुज़ूर हमेंशा रुश्द व हिदायत की आ'ला मन्ज़िल पर मुतमक्किन रहे और ए'तेकादे फासिद का शाइबा कभी आप के हाशिया-ए बिसात तक न पहुंच सका ।**

(हवाला : तफ्सीर खज़ाइनुल इरफान, सफहा : 946)

कुरआन मजीद का साफ इर्शाद है कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम **''मा दल्ला''** या'नी **''कभी नहीं भटके''**, लेकिन दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन कहते हैं **''दल्ला''** या'नी **''भटके हैं''** । अगर मआज़ल्लाह हुज़ूरे अक्दस जाने ईमान सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के लिये यह गुमान किया जाए कि वह ''भटके'' थे । और फिर अल्लाह ने इन को ''राह दिखाई'' तो फिर सूरए नज्म की आयते करीमा ''مَاضَلَّ صَاحِبُكُمْ'' या'नी हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो अलैह व सल्लम कभी नहीं भटके के क्या मा'नी होंगे ?

मुनाफिकीने ज़माना और इन के मुत्तबेईन को وَوَجَدَكَ ضَالًّا में ऐसा लुत्फ आता है कि इस आयत से गलत इस्तिदलाल और उलटा मफ्हूम अखज़ कर के **हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो अलैह व सल्लम की शान में गुमराह, बे-खबर, भटकता वगैरा बे अदबी के अल्फाज़ बोलते हैं और तन्कीसे शाने रिसालत करते हैं** । हम ने खुद अपने कानों तब्लीगी जमाअत के जाहिल बल्कि अज्हल मुबल्लिगीन की ज़बानी ऐसे ना-ज़ैबा अल्फाज़ सुने हैं । जब इन से मुअद्दबाना गुज़ारिश की जाती है कि जनाब ! इस किस्म के अल्फाज़ खिलाफे शाने रिसालत हैं । तो अपने आप को अल्लामए-दहर समझ कर सूरतुद दुहा की आयत पेश करते हैं और कहते हैं कि इस में दाल का लफ्ज़ वारिद है और सूरए फातेहा की आखरी आयत '' غَيرِالمَغضُوبِ عَلَيهِمْ وَلَا الضالين '' में भी ''दाल'' का लफ्ज़ वारिद है । क्यूं कि ''दालीन'' जमा है लफ्ज़ ''दाल'' की और सूरए फातेहा की आखरी आयत का तर्जुमा है **''न उन का रास्ता जिन पर गज़ब हुवा और न उन का जो गुमराह हैं''** । तो सूरए फातेहा में लफ्ज़ **''दाल''** के मा'नी **''गुमराह''** हैं, वही मा'नी हम ने यहां लिये हैं, क्यूं कि यहां भी लफ्ज़ **''दाल''** वारिद है ।

वाह साहिब वाह ! क्या बुकराती और मन्तिक छांटी है । इन कौर मग्ज़ और सियाह बातिन को कौन समझाए कि कुरआन मजीद में एक लफ्ज़ हर जगह एक ही मा'नी में मुस्ता'मल नहीं, बल्कि महल व मौका' के ए'तबार से मुतफर्रिक मा'नी व मत्लब में इस्ते'माल होता है । लफ्ज़ ''दाल'' सूरए फातेहा में बे: शक गुमराह के मा'नी में मुस्ता'मल है, लैकिन सूरतुद दुहा में हरगिज़ गुमराह के मा'नी में इस्ते'माल नहीं हुवा है, बल्कि मुहब्बत में खुद रफ्ता और वारफ्ता के मा'नी में इस्ते'माल हुवा है । जैसा कि :

- **सूरए यूसुफ में भी लफ्ज़ ''दाल'' का इस्ते'माल हुवा है । लैकिन सूरए यूसुफ में लफ्ज़ ''दाल'' किस मा'नी में इस्ते'माल हुवा है इसे ब-आसानी समझने के लिये महल व मौका' और सूरते हाल से आगाह होना अशद ज़रूरी है ।**

''**हज़रत या'कूब** अला नबिय्येना व अलैहिस्सलातो वस्सलाम के बारह बेटे थे । इन बारह बेटों में से आप **हज़रत यूसुफ** अलैहिस्सलातो वस्सलाम और **हज़रत बिन्यामीन** को ज़ियादह चाहते थे । जब या'कूब अलैहिस्सलाम के दीगर साहिबज़ादे आपस में जमा हो कर गुफ्तगू करते, तो हमेंशा यही तज़किरा करते कि हमारे वालिदे माजिद हज़रत या'कूब अलैहिस्सलाम हमारे मुकाबला में हज़रत यूसुफ और बिन्यामीन को ज़ियादह अहमियत देते, ज़ियादह चाहते और ज़ियादह मुहब्बत करते हैं । कुरआन शरीफ में हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलातो वस्सलाम के भाइयों की मज़कूरा गुफ्तगू के बा'द इन का मकौला इस तरह बयान किया गया है :

اِنَّ اَبَانَا لَفِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ (सूरए यूसुफ, आयत : 8)

तर्जुमा : ''बे शक हमारे बाप सराहतन इन की मुहब्बत में डूबे हुए हैं'' ।

(कन्ज़ुल ईमान)

सूरए यूसुफ में लफ्ज़ ''**दलाल**'' गुमराही के मा'नी में नहीं बल्कि मुहब्बत में खुद रफ्ता होने के मा'नी में वारिद हुवा । अगर सूरए यूसुफ में वारिद लफ्ज़ ''**दलाल**'' का गुमराहियत का मा'नी अखज़ किया जाएगा तो वाकेआ की सहीह तफ्हीम ही मफ्कूद हो जाएगी क्यूं कि यूसुफ अलैहिस्सलाम के भाई अपने वालिद के ए'तेकाद व ईमान के तअल्लुक से या अपने वालिद की इबादत, अस्मत, रुश्दो हिदायत वगैरा के मुतअल्लिक गुफ्तगू नहीं करते थे और न ही उन्हों ने अपने वालिदे माजिद में कोई ए'तेकादे फासिद

या अम्रे कबीह देखा था, कि जिस की वजह से यह कह रहे थे कि हमारे वालिद गुमराह हो गए हैं, **बल्कि इन की गुफ्तगू हज़रत यूसुफ और हज़रत बन्यामीन से ज़ियादह मुहब्बत करने के सिल्सिला में हो रही थी और इसी के ज़िम्न में उन्हों ने अपने वालिद को ''दाल'' कहा था** और उन्हों ने अपने वालिद को जिस बिना पर ''**दाल**'' कहा था इस के मा'नी सिर्फ और सिर्फ ''**मुहब्बत में डूबना**'' ही है । तो जिस तरह सूरए यूसुफ में ''दाल'' के मा'नी गुमराही करना गलत है **इसी तरह सूरतुद दुहा में भी ''दाल'' के मा'नी ''गुमराह,भटकना, बे-खबर, आवारा'' वगैरा करना भी सरासर गलत है । और जिस तरह सूरए यूसुफ में ''दाल'' के मा'नी मुहब्बत में डूबना है इसी तरह सूरतुद दुहा में भी ''दाल'' के मा'नी मुहब्बत में डूबना है ।** और यह हकीकत भी है । क्यूं कि हुज़ूरे अक्दस जाने ईमान सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम अल्लाह तबारक व तआला की मुहब्बत में डूब कर ''**फना फील्लाह**'' की आ'ला मन्ज़िल पर मुतमक्किन थे और आप को अल्लाह तआला ने अपनी मुहब्बत में ''**दाल**'' या'नी ''**खुद रफ्ता**'' पाया तो ''**फ-हदा**'' या'नी ''**अपनी तरफ राह दी**'' या'नी मे'राज में बुला कर अपने दीदार, कुर्ब और हुज़ूरी से बहरा मन्द फरमाया । और **हज़रत अबू उबैदा बिन अल जर्राह** रदियल्लाहो तआला अन्हो ने भी यही मा'नी बयान फरमाए और हज़रत अबू उबैदा के नक्शे कदम पर चल कर और इन के फैज़ से मुस्तफीज़ हो कर **इमाम अहमद रज़ा** ने भी यही तर्जुमा किया और रास्त व दुरुस्त तर्जुमा किया और खता व गलती से महफूज़ रह कर राहे खुदा और राहे नजात पाई :

तेरे गुलामों का नक्शे कदम है राहे खुदा
वो क्या बहक सके जो ये सुराग ले के चले

(अज़ : इमामे इश्को मुहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

- वहाबी तब्लीगी जमाअत के हकीमुल उम्मत **मौलवी अशरफ अली थानवी** ने सूरतुद दुहा की आयत का तर्जुमा किया है कि :

''और अल्लाह तआला ने आप को (शरीअत से) बे-खबर पाया सौ आप को शरीअत का रस्ता बतला दिया''

(तर्जुमा माखूज़ अज़ कुरआन हकीम, मुतर्जिम मौलवी अशरफ अली थानवी
नाशिर : ताज कम्पनी लिमीटेड, लाहोर व करांची, पाकिस्तान)

मौलवी अशरफ अली थानवी ने भी ''**दाल**'' का तर्जुमा ''**बे-खबर**'' किया है ।

- अब हम कारेईने किराम की खिदमत में आयत शरीफ ''وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدٰى'' का तर्जुमा देवबन्दी मक्तबए फिक्र के नामवर मुसन्निफ, और जिन को वहाबी देवबन्दी जमाअत बकीयुतुस सल्फ, हुज्ज तुल खल्फ, हुज्जतुल इस्लाम और इमाम अह्ले सुन्नत के लकब से मुलक्कब करने में फख्र मह्सूस करते हैं वह **मौलवी अब्दुश्शकूर काकोरवी** एडीटर रिसाला ''अन-नज्म'' लख्नऊ ने अपनी किताब में इस तरह किया है :

''और पाया इस परवर्दगार ने आप को राह से बे-खबर पस हिदायत की इस ने (आप को)।''

हवाला : मुख्तसर सीरते नब्विया, मुसन्निफ **:** मौलवी अब्दुश्शकूर काकोरवी,

नाशिर : उमदतुल मताबेअ, लख्नऊ, रबीउल अव्वल 1351 सन हिजरी , सफ्हा **:** 22

इस आयत की तफ्सीर करते हुए मौलवी अब्दुश्शकूर काकोरवी ने यहां तक लिखा है कि

- **''महासिने शरइया की अस्ले उसूल या'नी ईमान बिल्लाह की हकीकत भी आप न जानते थे''**
- **''अख्लाकी महासिन के तीन जुज़ हैं । तहज़ीबे अख्लाक, तद्बीरे मन्ज़िल, सियासते मुदन । इन तीनों से आप कतअन व असलन बे-खबर थे । जब आप यह भी न जानते थे कि किताबे इलाही क्या चीज़ है और ईमान क्या चीज़ है, तो और महासिन से आप को क्यूं कर आगाही हो सक्ती है''**
- **''कभी कुछ ऐसे कल्मात आप की ज़बान से सादिर नहीं हुए जिस से यह मा'लूम होता कि आप अपने लिये उस मर्तबए उज़्मा की उम्मीद रखते हैं, जो चालीस बरस के बा'द आप को इनायत हुवा''**

(हवाला **:** मुख्तसर सीरत नब्विया, अज़ **:** अब्दुश्शकूर काकोरवी, सफ्हा **:** 22)

नाज़िरीने किराम उलमाए देवबन्द के नज़रियात मुलाहिज़ा फरमाएं । ''وَوَجَدَكَ ضَالًّا'' के तर्जुमा की आड़ में बारगाहे रिसालत में कैसी सख्त गुस्ताखियां लिखी हैं । उलमाए देवबन्द के मुन्दरजा बाला नज़रियात के मुताबिक मआज़ल्लाह हुज़ूरे अक्दस

सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम चालीस साल की उमर शरीफ होने तक या'नी ज़ाहिरी नबुव्वत से सरफराज़ होने तक शरीअत से और राहे रास्त से बे-खबर, व नीज़ ईमान बिल्लाह की हकीकत भी नहीं जानते थे । इलावा अज़ीं आप किताबे इलाही और अख्लाकी महासिन से भी बे-खबर थे । आप को नबुव्वत मिलने की भी उम्मीद न थी । नाज़िरीने किराम इन्साफ फरमाएं । उलमाए देवबन्द के मज़्कूरा नज़रियात बारगाहे रिसालत में सरीह गुस्ताखी और अहादीस के साफ इर्शाद के खिलाफ हैं । मश्हूर व मा'रूफ हदीस है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम इर्शाद फरमाते हैं '' كُنْتُ نَبِيًّا وَّ اٰدَمُ بَيْنَ الْمَاءِ وَالطِّيْنِ '' या'नी **''जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पानी और मट्टी के दरमियान थे, मैं उस वक्त नबी था ।''** मज़ीद बरां जब हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की विलादते बा-सआदत हूई तो दुनिया में तश्रीफ लाते ही आप ने सजदा किया और अपनी उम्मत के लिये अपने रब से अर्ज़ की कि **''रब्बे हब्ली उम्मती''** या'नी **''ऐ रब मुझे मेरी उम्मत हिबा फरमा दे''** । तो जो ज़ाते गिरामी पैदाइशे हज़रत आदम के वक्त नबी हो, अपनी पैदाइश के वक्त अपने रब को सजदा करे, अपनी उम्मत की बख्शिश तलब फरमाए, वह ज़ाते गिरामी यकीनन अपनी नबुव्वत और अपने रब की वहदानियत से वाकिफ है ।

सूरए वद्दुहा की आयत शरीफ ''وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدٰى'' में लफ्ज़ **''दाल''** का तर्जुमा भटकता, राह से बे-खबर और शरीअत से बे-खबर वही करेगा, जो बारगाहे रिसालत सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम का गुस्ताख और बे अदब होगा । बारगाहे रिसालत के गुस्ताख इस आयत के भेद, मफ्हूम और सिर से या तो बिल्कुल अन्जान हैं या फिर इनादन व बुग्ज़न तौहीने रिसालत की गर्ज़ से कस्दन और अमदन ऐसा तर्जुमा करते हैं । एक मोमिने सादिक कभी भी इस बात को गवारा नहीं करेगा कि मआज़ल्लाह हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को भटकता या'नी गुमराह, आवारा और शरीअत से बे-खबर या राह भूलने वाला लिखे । हाकिमे हल्ब हज़रत अब्दुल्लाह युकना रदियल्लाहो तआला अन्हो के दिल में ईमान की रौशनी थी, लिहाज़ा इन के दिल ने भी हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की निस्बत ''दाल'' या'नी गुमराह का लफ्ज़ गवारा न किया और हुज़ूरे अक्दस के लिये लफ्ज़ ''दाल'' का इस्ते'माल उन को खटका, लैकिन लफ्ज़ **''दाल''** कुरआन मजीद की आयत में वारिद हुवा है, लिहाज़ा लफ्ज़ **''दाल''** की तफ्हीमे सहीह हासिल करने की गरज़ से हज़रत अबू उबैदा से सवाल किया कि **अल्लाह तआला ने अपने महबूबे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की तरफ लफ्ज़ ''दाल'' की क्यूं निस्बत की है ?**

हज़रत अबू उबैदा हज़रत युकना के दिल की बात फौरन समझ गए कि हज़रत युकना लफ्ज़ **''दाल''** की वजह से उलझन में पड़ गए हैं लिहाज़ा उन्हों ने फरमाया कि :

''मआज़ल्लाह यह मा'नी इस के नहीं हैं बल्कि मा'नी यह हैं''

(फुतूहुश्शाम, सफहा : 328)

या'नी ऐ युकना ! इस आयत में लफ्ज़ ''दाल'' के मा'नी गुमराह के नहीं हैं। बल्कि अल्लाह तआला अपने महबूब से फरमाता है कि ऐ हबीब ! हम ने आप को अपनी मुहब्बत के समन्दर में गर्क पाया तो तुम को अपने दीदार और अपने दरबार की हुज़ूरी से मुशर्रफ फरमाया और तमाम अस्रार और भेदों से बा-खबर कर के अपनी तरफ की राह तुम्हारे लिये खोल दी।

तारीख के अवराक शाहिद आदिल हैं कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम अपनी विलादत शरीफ से ज़ाहिरी नबुव्वत मिलने तक या'नी चालीस साल की उमर शरीफ तक मक्का मुअज़्ज़मा में ही तशरीफ फरमा रहे। तब मुआशरे में कुफ्र, शिर्क, चोरी, ज़िना, शराब नौशी, सूद खौरी, डकैती, कत्ल व गारत गिरी, झूट व किज़्ब गोई, दगा, मक्रो फरैब, धोका बाज़ी, बद-दयानती वगैरा जैसे अफआले कबीहा व रज़ीला आम थे। लैकिन हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम इन तमाम बुराईयों से पाक व मुनज़्ज़ह रहे। इन में की एक बुराई का कोई भी फे'ल कभी भी आप से सादिर नहीं हुवा बल्कि आप ने बेअसत से पहले भी इन अफआले कबीहा से तन्फ्फुर का इज़्हार फरमाया था और अपने हल्का के लोगों को इन बुरे कामों से बाज़ रहने की ता'लीम व तल्कीन फरमाई थी। यहां तक कि अगर आप के सामने कोई शख्स **''लात और उज़्ज़ा''** नाम के बूतों की कसम खा कर गुफ्तगू करता, तो आप उस की बात का जवाब नहीं देते थे, बल्कि उस शख्स को बुत की कसम खाने से मना' फरमाते और अल्लाह वह्दहु ला शरीक की कसम खाने का हुक्म फरमाते। साबित हुवा कि आप पैदाइशी हिदायत याफ्ता और राहे रास्त पर गामज़न थे। आप न गुमराह थे, न राह और शरीअत से बे-खबर थे और न ही भटके हुए थे, लैकिन जिन के दिलों में बुग्ज़े नबी और अदावते रसूल भरी हूई है वह मआज़ल्लाह हुज़ूरे अक्दस को भटकता, राह और शरीअत से बे-खबर कहते और लिखते हैं।

अल-किस्सा ! हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह से सूरतुद दुहा की तफ्सीर और सहीह तफ्हीम समाअत करने के बा'द **हाकिम युकना कि जिन का नाम हज़रत अबू उबैदा ने ''अब्दुल्लाह'' रखा था,** उन्हों ने दीने इस्लाम की सदाकत और हक्कानियत पर ऐसा रासिख

व कामिल ए'तमाद कर लिया कि उन्हों ने हज़रत अबू उबैदा से अर्ज़ किया कि ऐ सरदार ! मैं ने इस्लामी लश्कर को जो तकालीफ पहुंचाई हैं इस की तलाफी और तदारुक में मैं ने यह तय किया है कि अब मैं इस्लामी लश्कर में शामिल हो कर इस्लाम के दुश्मनों से लडूंगा।

हज़रत अल्लामा वाकदी कुद्दिसा सिर्रहु ने हज़रत आमिर बिन औस से बयान किया है कि मैं ने हज़रत अबू उबैदा के लश्कर में शामिल हो कर मुल्के शाम की अक्सर जंगों में शिर्कत की है और जो रूमी इस्लाम कबूल करते थे, इन से मैं दोस्ताना तअल्लुक रखता था लैकिन मैं ने हाकिम युकना हज़रत अब्दुल्लाह से बढ़ कर खालिस निय्यत वाला, रग्बत से जेहाद करने वाला और लड़ाई के मैदान में पूरी कौशिश करने वाला किसी को नहीं पाया। इलावा अज़ीं हज़रत युकना अब्दुल्लाह लड़ाई के फन के माहिर थे और उन्हों ने अपनी महारत का सहीह इस्ते'माल कर के इस्लामी लश्कर की खैर ख्वाही कर के मुश्रिकों के कदम उखाड़ने में नुमाया किरदार अदा किया और उन्हों ने इस्लाम की जो खिदमात अन्जाम दी हैं, ऐसी खिदमात किसी भी रूमी शख्स ने अन्जाम नहीं दीं।

अगले सफ्हात में हज़रत अब्दुल्लाह युकना की दिलैरी और शुजाअत के वाकेआत पढ़ कर यही कहना पड़ेगा कि उन्हों ने कबूले इस्लाम से पहले इस्लामी लश्कर को जो नुक्सान पहुंचाया था, इस से कईं दर्जा ज़ियादह इस्लाम को फाइदा पहुंचा कर अपनी माज़ी की खताओं का कफ्फारा अदा कर दिया और इन की कुरबानियां इस बात की शाहिद आदिल हैं कि इन्हों ने अल्लाह और अल्लाह के रसूल की रज़ा मन्दी और खुशनूदी हासिल कर ली थी।

❀ अब तक इस्लामी लश्कर के हाथों फतह होने वाले मकामात

(1) इरका (2) सह्ना (3) तदम्मुर (4) हूरान (5) बसरा (6) बैतुल लहिया (7) अजनादीन (8) दमिश्क (9) हिस्न अबील किद्स (10) जोसिया (11) हुमुस (12) शीरज़ (13) रुस्तन (14) हमात (15) कन्सरीन (16) बा'ल्बक (17) यर्मूक (18) बैतुल मुकद्दस (19) हल्ब

फत्हे किल्ल-ए ए'ज़ाज़

जैसा कि पिछले सफ्हात में मज़्कूर हुवा कि जंगे हल्ब में हज़रत दामिस अबूल हुलूल को 73 ज़ख़्म आए थे और किल्ले का दरवाज़ा खोलने के लिये इन के साथ गए हुए इन के साथी भी शदीद ज़ख़्मी हुए थे, लिहाज़ा उन के इलाज के लिये इस्लामी लश्कर हल्ब में ठहरा हुवा था। जब वह तमाम सेहत याब हो गए तब हज़रत अबू उबैदा ने इस्लामी लश्कर के सरदारों को जमा कर के मश्वरा किया कि अब हम को किस तरफ कूच करना चाहिये। इस मीटिंग में हज़रत अब्दुल्लाह युकना भी मौजूद थे। हज़रत अब्दुल्लाह युकना ने मजलिस में मौजूद हज़रात के मश्वरे और राए से यह अंदाज़ा कर लिया कि शायद हज़रत अबू उबैदा ''इन्ताकिया'' की तरफ कूच करने का हुक्म फरमाएंगे, लिहाज़ा उन्हों ने अपनी राए का इज़्हार करते हुए अर्ज़ किया कि ऐ सरदार ! करीब में **''ए'ज़ाज़''** का किल्ला है। ए'ज़ाज़ का किल्ला सामाने जंग, सिपाहियों और दीगर अस्बाब के ए'तबार से बहुत मज़बूत है। वहां का हाकिम मेरे चचा का लड़का **''दादरीस''** है। वह लड़ाई का माहिर, सख़्त जंगजू और मुतअस्सिब नस्रानी है। अगर आप इन्ताकिया की तरफ कूच करेंगे तो यहां से इन्ताकिया की मसाफत तवील है। यहां का इलाका इस्लामी लश्कर से खाली पा कर हाकिमे ए'ज़ाज़ हल्ब, कन्सरीन और अर्दे अवाम पर हम्ला कर के काबिज़ हो जाएगा और वहां के बाशिन्दों को तकालीफे शदीद पहुंचाएगा और हमारे मफ्तूह इलाकों को ताख़्त व ताराज करेगा। लिहाज़ा मुनासिब यह है कि पहले हाकिमे ए'ज़ाज़ से निपट लेना चाहिये और बा'द में किसी दीगर मकाम की तरफ कूच करने का कस्द करना चाहिये, ताकि हम हाकिमे ए'ज़ाज़ के शहर से अपने मफ्तूह इलाके हल्ब वगैरा के मुतअल्लिक मुत्मइन व बे खौफ रहें।

हज़रत अब्दुल्लाह युकना ने मज़ीद कहा कि किल्ल-ए ए'ज़ाज़ को आसानी से फतह करने की मैं ने मक्रो फरैब पर मुश्तमिल एक तद्बीर सोची है, अगर अल्लाह तआला ने चाहा तो वह तद्बीर काम्याब रहेगी। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि आप ने क्या तद्बीर सोची है ? हज़रत युकना ने अर्ज़ किया कि इस्लामी लश्कर से एक सौ (100) मुजाहिदों को रूमियों का लिबास पहना कर मैं किल्ल-ए ए'ज़ाज़ की तरफ जाउं। मेरे रवाना होने के कुछ

मर्दाने अरब ...... हिस्सा दौम

अर्सा बा'द आप एक हज़ार मुजाहिदों का लश्कर मेरे पीछे रवाना करें। मेरे और मेरे पीछे आने वाले लश्कर के दरमियान एक फर्सख (तीन मील) का फास्ला हो। और ज़ाहिर इस तरह करना है कि मैं अपने एक सौ (100) रूमी साथियों के हमराह तुम से भाग रहा हूं और तुम्हारा एक हज़ार सवारों का लश्कर मेरा तआकुब कर रहा है।

मैं किल्ल-ए ए'ज़ाज़ पहुंच कर शौर व गुल मचाउंगा और हाकिम दादरीस से कहूंगा कि मैं ने अपनी जान बचाने के लिये इस्लाम कबूल करने का ढोंग रचा था और अब मौका' मिलते ही भागा हूं और तुम्हारी पनाह लेने आया हूं, क्यूं कि मुसल्मानों का लश्कर मेरे तआकुब में पीछे आ रहा है। हाकिम दादरीस मेरी बात का ए'तबार कर के मुझे पनाह देते हुए किल्ले में दाखिल कर लेगा। मैं किल्ले में दाखिल हो कर रात ठहरूंगा। मेरे पीछे आने वाला एक हज़ार का इस्लामी लश्कर किल्ल-ए ए'ज़ाज़ के करीब वाकेअ ''तीरह'' नाम के गांव में शब भर ठहरे और अलस्सुब्ह किल्ल-ए ए'ज़ाज़ पर आ जाए और दरवाज़े के करीब ठहरे। अलस्सुब्ह में किल्ले के अन्दर लड़ाई शुरू कर दूंगा और मौका' पा कर किल्ले का दरवाज़ा खोल दूंगा और दरवाज़ा खुलते ही इस्लामी लश्कर किल्ले में दाखिल हो कर काबिज़ हो जाए।

हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत खालिद बिन वलीद और हज़रत मआज़ बिन जबल से पूछा कि हाकिम युकना की मुजव्विज़ा तद्बीर के मुतअल्लिक तुम्हारी क्या राए है ? दोनों ने जवाब देते हुए कहा कि बहुत ही उमदा तद्बीर है, ब-शर्ते कि हाकिम युकना हम से कोई गद्र और बे-वफाई कर के अपने साबिक मज़हब की तरफ फिर न जाए। हज़रत उबैदा ने फरमाया कि

اِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ (सूरतुल फज्र, आयत : 14)

तर्जुमा : ''बे शक तुम्हारे रब की नज़र से कुछ गाइब नहीं।'' (कन्ज़ुल ईमान)

हज़रत युकना ने कहा कि कसम खुदा की ! मैं ने दीने इस्लाम इस लिये इख़्तियार किया है कि **मेरे दिल से बूतों, तस्वीरों और सलीबों की मुहब्बत व ता'ज़ीम ज़ाइल हो गई है और मेरे दिल में अल्लाह तआला की मुहब्बत है और उन की मुहब्बत है जिन को मैं ने ख्वाब में देखा है। रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के मो'जिज़ात का मैं ने ज़ाती मुशाहिदा किया है।** लिहाज़ा अगर आप को मुझ पर कामिल भरोसा और यकीन हो तो ही मुझ को इस काम पर भेजो। मैं इन्शा अल्लाह अपनी ज़िम्मेदारी कामिल तौर पर

निभाउंगा। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि ऐ अब्दुल्लाह ! हम को तुम पर पूरा भरोसा है और उम्मीद है कि अल्लाह तआला तुम्हारी ज़रूर मदद फरमाएगा। फिर हज़रत अबू उबैदा ने एक सौ(100) मुजाहिदों को हज़रत अब्दुल्लाह युकना के मा-तहत कर दिया। इन सौ मुजाहिदों में दस मुतफर्रिक कबाइल के लोग थे। और हर कबीला के दस दस आदमी थे और हर दस आदमी में से एक को नकीब मुकर्रर किया था। इन दस नकीबों में हज़रत जज़्इल बिन आसिम को कौमे बनी तय का, हज़रत मुर्राह बिन मराहिम को कौमे नहद का, हज़रत सालिम बिन अदी को कौमे खुज़ाआ का, हज़रत मस्रूक बिन नहान को कौमे बन्स का, हज़रत जुल-केलाअ हुमैरी को कौमे नमीर का, हज़रत सैफ बिन रेफाअ को कौमे बाहेला का, हज़रत सईद बिन जुबैर को कौमे तमीम का और हज़रत मालिक बिन कनास को कौमे मुराद का नकीब होना अल्लामा वाकदी ने अपनी किताब में ज़िक्र फरमाया है। इन एक सौ मुजाहिदों को हज़रत अबू उबैदा ने हुक्म दिया कि तुम को उस शख्स की इताअत करना है जिस ने अपनी जान को अल्लाह और रसूल के लिये हिबा किया है। तमाम मुजाहिदों ने ब-यक ज़बान कहा कि ऐ सरदार हम हज़रत युकना की इताअत में किसी किस्म की कोताही नहीं करेंगे।

किल्ल-ए ए'ज़ाज़ का हाकिम हज़रत युकना के मक्र से आगाह

दूसरे दिन अलस्सुब्ह मुतअय्यिना तज्वीज़ के मुताबिक हज़रत युकना एक सौ (100) मुजाहिदों को रूमियों का लिबास पहना कर हल्ब से किल्ल-ए ए'ज़ाज़ की तरफ रवाना हुए। इन के रवाना होने के बा'द हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत मालिक बिन हर्स उश्तर नखई की सरदारी में एक हज़ार सवारों का लश्कर रवाना किया। हज़रत युकना ने अगले रोज़ हज़रत अबू उबैदा और इस्लामी लश्कर के सरदारों के साथ मीटिंग कर के किल्ल-ए ए'ज़ाज़ को मक्रो फरैब से फतह करने की जो तज्वीज़ तय की थी, इस की पूरी तफ्सील हाकिम ए'ज़ाज़ को रात ही में मिल गई थी। इस की वजह यह हूई थी कि इस्लामी लश्कर में अस्मह बिन अर्कता तमीमी नाम का एक नस्रानी जासूस मौजूद था। उस ने तमाम कैफियत एक कागज़ में लिख कर उस कागज़ को एक पालतू कबूतर की दूम में बांध कर कबूतर को हाकिमे ए'ज़ाज़ की तरफ छौड़ दिया। वह कबूतर अस्मह बिन अर्कता का रुक्आ ले कर हाकिमे ए'ज़ाज़ दादरीस के पास पहुंच गया। लिहाज़ा हाकिमे दादरीस चौकन्ना हो गया था। और उस ने भी हाकिम युकना के साथ मक्रो फरैब का प्लान बना लिया था। इलावा अज़ीं हाकिम दादरीस ने करीब में वाकेअ **"रावन्दान"** नाम की रियासत के हाकिम **"लुका बिन शामिस"** के पास तारिक बिन सनान नाम के नस्रानी

अरब को ब-तौर कासिद भेज कर सूरते हाल से आगाह कर के लश्कर की कुमुक तलब की थी। लिहाज़ा हाकिम लुका ने पांच सौ (500) जंगजू और दिलैर सवारों का लश्कर किल्ल-ए ए'ज़ाज़ की कुमुक करने भेज दिया। जो शाम के पहले किल्ल-ए ए'ज़ाज़ में पहुंच गया था। किल्ल-ए ए'ज़ाज़ में सब मिला कर तक्रीबन पांच हज़ार का लश्कर जमा था। और ए'ज़ाज़ का हाकिम अपने लश्कर को साज़ो सामान से मुसल्लह कर के हज़रत युकना का इन्तिज़ार कर रहा था।

हज़रत युकना हल्ब से रवाना हो कर शाम के वक्त किल्ल-ए ए'ज़ाज़ के करीब पहुंचे। जब किल्ला थोड़े फास्ला पर था तो आप ने अपने साथियों से फरमाया कि चूं कि तुम ने रूमियों का लिबास पहन रखा है लिहाज़ा वज़ाअ-कतअ से तो तुम को कोई पहचान नहीं सकेगा, लैकिन किल्ल-ए ए'ज़ाज़ पर पहुंचने के बा'द तुम लोग अपनी ज़बान से एक लफ्ज़ भी मत निकालना, हत्ता कि आपस में भी मुत्लक गुफ्तगू मत करना, वर्ना अरबी ज़बान बोलने की वजह से तुम्हारी सहीह पहचान दुश्मनों को हासिल हो जाएगी। और हम मुसीबत में गिरफ्तार हो जाएंगे। अपने साथियों को एहतियात की ताकीद व तन्बीह करने के बा'द हज़रत युकना किल्ल-ए ए'ज़ाज़ से करीब से करीब तर होते जा रहे थे, लैकिन तक्दीर में जो मआमला होना लिखा था उस से बे-खबर थे।

हज़रत युकना और इन के साथियों की गिरफ्तारी :-

हज़रत युकना जब ए'ज़ाज़ के किल्ले पर पहुंचे तो क्या देखते हैं कि हाकिम दादरीस किल्ले के बाहर तीन हज़ार रूमी सवार और एक हज़ार अरब मुतनस्सिरा के लश्कर के साथ मौजूद था। हज़रत युकना को करीब आते देख कर हाकिम दादरीस ने खुशी का इज़्हार किया और इन का इस्तिक्बाल और ता'ज़ीम करने की गरज़ से अपने घोड़े से उतर कर पैदल हो गया और हज़रत युकना के करीब आ कर इन के घोड़े की रिकाब को बोसा दिया। हज़रत युकना दादरीस के मक्रो फरैब से बे-खबर थे। वह इस गुमान में थे कि दादरीस को कुछ मा'लूम नहीं है और वह बे खबरी के आलम में चचा ज़ाद भाई होने के नाते मेरी ता'ज़ीम व तक्रीम कर रहा है, लैकिन दादरीस ने घोड़े की रिकाब को बोसा देने के बा'द कमर से खन्जर निकाल कर घोड़े के ज़ीन को काट डाला और हज़रत युकना को ज़ीन समेत घोड़े से खींच कर ज़मीन पर गिरा दिया और इन पर काबिज़ हो कर कैद कर लिया। ऐसा ही मआमला हज़रत युकना के साथियों के साथ दादरीस के सिपाहियों ने ब-यक वक्त कर के इन सब को भी गिरफ्तार कर लिया। हज़रत युकना को कैद करने के बा'द हाकिम दादरीस ने इन के मुंह

पर थूका और यह कहा कि जिस वक्त तू ने अपने आबाई दीन को तर्क कर के अरबों का दीन इख्तियार किया है, उस वक्त से सलीब तुझ पर गज़बनाक और खशमनाक है। कसम है हक्के मसीह की ! मैं तुझ को हिरक्ल बादशाह के पास इन्ताकिया भेजूंगा और कैसरे रूम हिरक्ल तुझ जैसे बागी को दारुस्सल्तनत इन्ताकिया के दरवाज़ा पर अवामुन्नास के सामने सूली पर लटकाएगा, ताकि लोगों को इब्रत हासिल हो। फिर हाकिम दादरीस हज़रत युकना और इन के साथियों को ले कर किल्ले में आया और इन तमाम को अपने बेटे "**लावन**" के महल में बन्द कर दिया और लावन को कैदियों की निगेहबानी की ज़िम्मेदारी सौंप कर अपने महल में चला गया। अपने महल में आने के बा'द उस ने बे तहाशा शराब पी और नशे में धुत हो कर बैहोशी के आलम में गफ्लत की नींद सो गया।

ए'ज़ाज़ के हाकिम दादरीस के दो बेटे थे। बड़े बेटे का नाम **लुका** था। और छोटे बेटे का नाम **लावन** था। हज़रत युकना को दादरीस ने अपने छोटे बेटे लावन के महल में कैद किया था। लावन हज़रत युकना को अच्छी तरह जानता था। क्यूं कि वह अपने बाप के साथ हल्ब जाता था, तब हज़रत युकना के महल में मेहमान की हैसियत से ठहरते थे। इलावा अज़ीं हज़रत युकना से खान्दानी रिश्तेदारी भी थी। लावन हज़रत युकना की ज़हानत, मज़हबी मा'लूमात, दीने ईस्वी की हमदर्दी, जंगी महारत, सियासी उमूर में मतानत, दुन्यवी मआमलात की सन्जीदगी वगैरा महासिन और खूबियों से अच्छी तरह वाकिफ था और हज़रत युकना को अह्ले राए और ज़ी शऊर शख्स की हैसियत से मानता था और इन की इल्मी सलाहियतों का मो'तरिफ होने की वजह से इन की बहुत ही ता'ज़ीम व तकरीम करता था। रात के वक्त उस ने सोचा कि हाकिम युकना दीन और दुनिया के इल्म और तजर्बे में मेरे बाप से बहुत ज़ियादह मा'लूमात रखता है, इलावा अज़ीं दीने नस्रानी की हिमायत में इस ने मुद्दते तवील तक अरबों से जंग की है और हर तरह की कुरबानी और खिदमत बजा लाई है। जब इस जैसे दीने नस्रानी के हामी और खैर ख्वाह ने अपना आबाई दीन छोड़ कर इस्लाम को अपनाया है तो ज़रूर उस ने इस्लाम की हक्कानियत और सदाकत मा'लूम की होगी। लिहाज़ा यह सच्चे हैं और मेरा बाप झूठा है। मैं इन को रिहा कर दूं और अपने बाप को कत्ल कर दूं।

लावन अक्सर अपने बाप के साथ जब हल्ब जा कर हज़रत युकना के यहां ठहरता था, तो हज़रत युकना के खान्दान के तमाम अफ्राद से वह बे तकल्लुफ मिलता था। हज़रत युकना की एक हसीन व जमील लड़की थी। जिस पर लावन फरेफ्ता हो गया था और उस ने यह तय किया था कि अगर शादी करूंगा तो इस लड़की से ही करूंगा, वर्ना उम्र भर कंवारा

रहूंगा। लावन ने अपनी दिली ख्वाहिश का अपनी मां के सामने इज़हार भी किया था और उस की मां ने उस को इत्मीनान दिलाया था कि तेरी शादी हाकिम युकना की लड़की के साथ ही होगी। हाकिम युकना की लड़की के साथ लावन की शादी का पैगाम भेजने के लिये उस की मां ने इरादा भी किया था, लैकिन उन दिनों इस्लामी लश्कर ने हल्ब के किल्ले का मुहासरा कर लिया और लड़ाई ने तूल पकड़ा और नौबत हज़रत युकना के कैद होने तक पहुंची।

हज़रत युकना और साथियों की कैद से रिहाई :-

निस्फ शब के वक्त लावन हज़रत युकना के पास आया और कहा कि ऐ चचा ! मैं ने आप को और आप के साथियों को कैद से आज़ाद कर देने का इरादा किया है और मैं ने आप को अपने बाप और कैसरे रूम हिरक्ल बादशाह से बुज़ुर्ग और अफ्ज़ल जाना है और कुफ्र के मुकाबला में ईमान ज़ियादह तौफीक और नफा' देने वाला है। और मैं ने यकीन से जाना है कि दीने इस्लाम ही हक्क है और दीने इस्लाम इख्तियार करने में ही दुनिया और आखेरत की भलाई है। अगर मैं आप तमाम को रिहा कर दूं तो क्या आप अपनी दुख्तरे नैक अख्तर को मेरी ज़ौजियत में इनायत फरमाएंगे ? हज़रत युकना ने फरमाया कि अगर तेरा हम को रिहा करना और इस्लाम कबूल करना किसी दुन्यवी गरज़ के बजाए सिर्फ अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की रज़ा मन्दी और खुशनूदी हासिल करने की निय्यत से है, तो मैं इन्शा अल्लाह तेरी मुराद पूरी करूंगा और तुझ को दुनिया और आखेरत की इज़्ज़त और भलाई हासिल होगी। लावन ने बुलन्द आवाज़ से اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ وَاَشْهَدُاَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ पढ़ा और इस्लाम में दाखिल हो गया। फिर उस ने हज़रत युकना और इन के साथियों को रिहा कर दिया और इन के हथियार दे दिये और कहा कि अब आप किल्ला फतह करने के मआमला में ताखीर न करें और मैं अपने बाप के महल की तरफ जाता हूं क्यूं कि मेरा बाप शराब के नशे में धुत बे-हौश पड़ा हुवा है और मैं यह चाहता हूं कि उस को सोया हुवा ही कत्ल कर के अल्लाह तबारक व तआला की रज़ा मन्दी हासिल करूं।

फिर लावन अपने महल से निकल कर ब-उज्लत अपने बाप हाकिम दादरीस के महल में गया और अपने बाप के कमरा में गया तो क्या देखता है कि उस का बाप मक्तूल पड़ा है। और इस की मां और बहनें उस की लाश के इर्द गिर्द जमा हैं। खुद्दाम और गुलाम भी महवे हैरत और खौफ-ज़दा हैं। लावन अपने बाप को मक्तूल देख कर तअज्जुब में था और सोच रहा था कि यह नैक काम करने में मुझ से कौन सब्कत ले गया ? फिर वह जल्दी

से अपने महल की तरफ लौटा और हज़रत युकना को अपने बाप के हलाक होने की इत्तिला' दी और कहा कि अब आप यहां से निकल कर किल्ले के दरवाज़ा पर हम्ला कर दें।

इस्लामी लश्कर की किल्ल-ए ए'ज़ाज़ पर आमद और किल्ले में दुखूल

हाकिम दादरीस के मरने की खबर किल्ले में बिजली की तरह फैल गई थी और लोग गिरोह दर गिरोह उस के महल के पास जमा होने लगे। हज़रत युकना और इन के साथी लावन के महल से निकल कर तक्बीर और तहलील की सदाएं बुलन्द करते हुए किल्ले के दरवाज़ा के मुहाफिज़ों पर टूट पड़े। किल्ले के दरवाज़ा की निगरानी की खिदमत पर मुतअय्यन रूमी सिपाही हम्ले से गाफिल थे। अचानक हम्ला होने से वह बौखला गए और घबराहट के आलम में अपने हथियार संभाल कर मुकाबिल हुए, लैकिन इन को अपने हथियार इस्ते'माल करने का मौका' ही मुयस्सर न हुवा। मुजाहिदों ने जाते ही इन के सरों पर तलवारें रख दीं। ऐन उस वक्त हज़रत मालिक बिन हर्स उश्तर नखई इस्लामी लश्कर ले कर किल्ले के दरवाज़ा पर आ पहुंचे और अपने आने की इत्तिला' नारए तक्बीर की सदा बुलन्द कर के किल्ले के अन्दर पहुंचाई। लावन भी हज़रत युकना के हमराह किल्ले के दरवाज़ा पर मौजूद था। हज़रत युकना ने लावन को किल्ले का दरवाज़ा खोल देने का हुक्म फरमाया। लावन ने किल्ले का दरवाज़ा खोल दिया और इस्लामी लश्कर किल्ले में दाखिल हो गया।

इस्लामी लश्कर ने किल्ले के दरवाज़ा पर आते ही नारए तक्बीर की जो सदा बुलन्द की वह पूरे शहर में सुनाई दी, लिहाज़ा तमाम रूमी सिपाही दौड़ कर किल्ले के दरवाज़ा की तरफ भागे, लैकिन इन के दरवाज़े पर वारिद होने से कब्ल इस्लामी लश्कर किल्ले में दाखिल हो चुका था। इस्लामी लश्कर और रूमी सिपाहियों का आमना सामना हो गया और मुजाहिदों ने नैज़ा ज़नी और शम्शीर ज़नी के कर्तब दिखा कर भारी ता'दाद में रूमी सिपाहियों को ज़मीन पर कुश्ता डाल दिया। रूमी सिपाहियों के कदम उखड़ गए और इन को यकीन हो गया कि इस्लामी लश्कर के मुजाहिदों का मुकाबला करने की हम में ताब नहीं, लिहाज़ा उन्हों ने हथियार डाल दिये और खाली हाथ ऊपर की जानिब उठा कर **''लफून, लफून''** या'नी **''अमान, अमान''** पुकारने लगे। हज़रत मालिक उश्तर ने अमान देते हुए जंग मौकूफ करने का हुक्म दिया।

हज़रत मालिक उश्तर ने हज़रत युकना से मुलाकात की और इन का शुक्रिया अदा किया। हज़रत युकना ने फरमाया कि शुक्रिया और मुबारक बादी का हक्कदार यह नौ-जवान

मर्द मोमिन है। फिर आप ने हाकिम दादरीस के छोटे बेटे लावन का हज़रत मालिक से तआरुफ कराया और इस के कबूले इस्लाम और इन की कैद से रहा करने की पूरी तफ्सील बयान की। फिर हज़रत मालिक ने किल्ले पर कब्ज़ा किया और कसीर मिक्दार में माले गनीमत जमा किया। हज़रत मालिक उश्तर को हाकिम दादरीस के कत्ल होने की इत्तिला' भी मिल चुकी थी। हज़रत मालिक ने हज़रत युकना और लावन से पूछा कि दादरीस को किस ने कत्ल किया ? तब लावन ने कुछ यूं राज़ फाश किया।

हाकिम दादरीस का पुर-अस्रार कत्ल :-

हाकिम दादरीस का बड़ा बेटा लुका इबादत गुज़ार शख्स था। उस को ब-मुकाबिल दुन्यवी मआमलात के मज़हबी उमूर की तरफ ज़ियादह रग्बत थी। शहर ए'ज़ाज़ में एक बड़ा कनीसा था। लुका अपना ज़ियादह तर वक्त इसी कनीसा में बसर करता था। इस कनीसा में एक बुढ्ढा कस (पादरी) रहता था। लुका उस कस से इन्जील की ता'लीम हासिल करता था और हलाल व हराम के मसाइल सीखता था। जब इस्लामी लश्कर ने मुल्के शाम में बड़े बड़े लश्करों को शिकस्त दे कर मुल्के शाम के मज़बूत किल्लों और शहरों को फतह कर लिया और इस्लामी लश्कर की अज़ीम फुतूहात की खबरें लुका ने समाअत कीं तो एक दिन इस ने अपने उस्ताद से तन्हाई में पूछा कि ऐ हमारे मुअज़्ज़ज़ बाप ! क्या वजह है कि मुल्के हिजाज़ के ज़ईफ और बे सरो सामान अरब हिरक्ल बादशाह के अज़ीम लश्कर पर गालिब आ गए हैं और मुल्के शाम के अह्म मकामात पर काबिज़ हो गए हैं। इन को हर महाज़ पर अल्लाह की तरफ से मदद और गल्बा हासिल होता है। क्या आप ने आस्मानी किताबों और मलाहिम में इस अम्र के मुतअल्लिक कभी पढ़ा है ? बुढ्ढे कस ने कहा कि ऐ मेरे बेटे ! मैं ने पुरानी किताबों में पढ़ा है कि अरब मुल्के शाम पर काबिज़ हो जाएंगे, यहां तक कि हिरक्ल बादशाह के तख्त के भी मालिक हो जाएंगे। और मैं ने सुना है कि इन के नबी सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने फरमाया है

زُوِيَتْ لِي الْاَرْضُ فَرَاَيْتُ مَشَارِقَهَا وَمَغَارِبَهَا
وَسَيَبْلُغُ مُلْكُ اُمَّتِيْ مَا زُوِيَ لِيْ مِنْهَا

या'नी : ''लपेटी गई मेरे वास्ते ज़मीन। पस देखा मैं ने पूरब और पच्छम इस का और अन्करीब पहुंचेगा मुल्क मेरी उम्मत का वहां तक कि लपेटी गई मेरे वास्ते वह ज़मीन।''

(हवाला : फुतूहुश्शाम, अज़ : अल्लामा वाकदी, सफहा : 336)

फिर लुका ने पूछा कि ऐ मेरे बाप ! मुसल्मानों के नबी (सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम) के मुतअल्लिक आप क्या जानते हैं ? बुढ्ढे कस ने कहा कि ऐ मेरे बेटे ! हमारी मज़्हबी किताबों में लिखा है कि अल्लाह तआला मुल्के हिजाज़ में एक नबी मब्ऊस फरमाएगा और इन की आमद की बशारत हज़रत मसीह ने भी दी है। लुका ने अपने उस्ताद की ज़बानी यह हकीकत सुनी तो इस का दिल यह कहने लगा कि मेरा उस्ताज़ ज़ाहिर में तो ईसाई है, लेकिन बातिन से मुसल्मान है, लेकिन उस ने लोगों के खौफ से अपना मुसल्मान होना पोशीदह रखा है। लुका फिर अपने महल में चला गया लैकिन इस के ज़हन में एक ही बात घूमती थी कि मेरा उस्ताद भी इस्लाम की हक्कानियत का मो'तरिफ और काइल है। वह कई दिन तक इसी ख्याल में गर्क रहा और बिल–आखिर इस के दिल में भी इस्लाम की हक्कानियत रासिख हो गई लैकिन इस ने भी अपना हाल किसी पर ज़ाहिर नहीं किया।

जब इस के बाप ने हज़रत युकना को कैद किया तब इस ने सोचा कि दीने नस्रानी की हिमायत में जिस शख्स ने अपने हकीकी भाई यूहन्ना को कत्ल कर दिया और मुद्दते तवील तक अपनी जान की बाज़ी लगा कर अरबों से मस्रूफे जंग रहा। वह हाकिम युकना जब अपने आबाई दीन से मुन्हरिफ हो कर इस्लाम में दाखिल हो गया है और इस्लाम की खातिर अपनी जान हथैली में ले कर अपनी खिदमात पैश कर रहा है तो ज़रूर इस ने इस्लाम की हक्कानियत मा'लूम कर ली है। हाकिम युकना मुल्के शाम के दाना और अक्लमन्द लोगों में शुमार होता है। इस ने जब इस्लाम इख्तियार करने का फैसला किया है, तो ज़रूर इस फैसले में वह हक्क पर है और मेरा बाप झूठा है लिहाज़ा मैं ने कस्द किया कि पहले अपने बाप को कत्ल कर दूं और फिर हाकिम युकना को कैद से रिहा करूं। लिहाज़ा पहले मैं अपने बाप के महल में गया तो मेरा बाप शराब के नशे में बे–हौश पड़ा था। मैं ने तल्वार का एक वार किया और उस की गर्दन तन से अलग कर दी, फिर मैं हाकिम युकना को कैद से छुड़ाने अपने छोटे भाई के महल पर गया तो मैं ने देखा कि हाकिम युकना को आज़ाद करने की सआदत हासिल करने में मेरा छोटा भाई लावन मुझ पर सब्कत ले गया है।"

हज़रत मालिक उश्तर नखई ने हाकिम ए'ज़ाज़ दादरीस के बड़े बेटे या'नी लुका से मुलाकात की और उस को मुबारकबाद दी और एक सवाल पूछा कि हम ने सुना है कि कौम रूम से किसी भी शख्स ने अपने बाप को कत्ल नहीं किया, लैकिन शायद तुम पहले शख्स हो जिस ने अपने हकीकी बाप को कत्ल किया है, तुम ने ऐसा क्यूं किया है ? लुका ने जवाब में कहा कि **तुम्हारे दीने इस्लाम और तुम्हारे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैह व**

सल्लम की मुहब्बत की वजह से मैं ने यह काम अन्जाम दिया है और मैं गवाही देता हूं कि "لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ وَحْـدَهٗ لاشَـرِيْكَ لَـهٗ وَاَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُـهٗ" हज़रत मालिक उश्तर ने लुका से फरमाया कि अल्लाह तआला ने तुझे कबूल फरमाया और तुझ को भलाई की तौफीक दी और दुनिया व आखेरत की इज़्ज़त व बेहतरी अता फरमाई।

एक बुढ्ढे पादरी का कबूले इस्लाम :-

हज़रत मालिक उश्तर और हाकिम ए'ज़ाज़ के बेटे हज़रत लुका जहां खड़े हो कर गुफ्तगू कर रहे थे, वहां काफी लोग जमा हो गए थे। अचानक लोगों की भीड़ के दरमियान हज़रत मालिक ने एक बुढ्ढे कस को देखा जिस ने खुशनुमा लिबास ज़ैब तन कर रखा था और साहिबे वकार मा'लूम होता था। हज़रत मालिक उश्तर ने फरमाया कि अगर मेरा गुमान सच्चा है तो यह राहिब वही है जिस का हाल लुका ने बयान किया है। लिहाज़ा हज़रत मालिक ने हज़रत लुका से पूछा कि क्या यह वही राहिब है जिस का हाल तुम ने मुझ से बयान किया है ? हज़रत लुका ने कहा कि ऐ सरदार ! यह वही मेरे उस्ताद मोहतरम और हादी हैं। हज़रत मालिक उश्तर ने उस बुढ्ढे राहिब से मुलाकात की और फरमाया कि आप अपने दीन के उलमा में से हैं। फिर आप ने हक्क बात क्यूं छुपा रखी है ? बुढ्ढे राहिब ने कहा कि मैं डरता था कि अगर मैं ने हक्क बात ज़ाहिर कर दी, तो रूमी मुझ को मार डालेंगे। लैकिन इस के बा–वुजूद जो शख्स मेरा मो'तकिद और मो'तमद होता, उस को मैं मुस्तहिके नसीहत समझ कर हक्क बात से ज़रूर आगाह और आश्ना कर देता था। हज़रत मालिक ने फरमाया कि अब तो तुम को कोई खौफ नहीं है। अब अपना इस्लाम ज़ाहिर करने में क्यूं ताम्मुल व ताखीर करते हो ? बुढ्ढे राहिब ने कहा कि मैं ज़रूर इस्लाम कबूल करूंगा, लैकिन मैं ने मुकद्दस इन्जील में कुछ मसाइल पाए हैं। इन मसाइल के तअल्लुक से तुम से कुछ सवालात करना चाहता हूं। अगर मुझ को तसल्ली बख्श जवाब हासिल हो गए, तो मैं अलल ए'लान इस्लाम कबूल करूंगा। हज़रत मालिक ने फरमाया कि आप ब–खूशी इन मसाइल के मुतअल्लिक दर्याफ्त करो, मैं इन्शा अल्लाह आप को इत्मीनान बख्श जवाब दूंगा। बुढ्ढे राहिब ने कहा........

अचानक लोगों ने भागना शुरू किया। हम्ला आया है, जल्दी करो ! हथियार संभालो ! मुकाबले के लिये निकलो ! का शौरो गुल बुलन्द हुवा। लोगों में इन्तिशार फैला। मुजाहिदों ने म्यान से तलवारें निकाल लीं और मुकाबला करने के लिये किल्ले के दरवाज़ा की तरफ लपके। मुजाहिदों ने और अह्ले शहर ने गुमान किया कि किल्ल–ए ए'ज़ाज़

लश्करे इस्लाम ने फतह कर लिया है, लिहाज़ा अतराफ में पोशीदह कोई रूमी लश्कर हम्ला आवर हुवा है। मुजाहिदों ने किल्ले के दरवाज़ा के बाहर निकल कर देखा तो इन की हैरत की इन्तिहा न थी, क्यूं कि हु**ज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के चचा ज़ाद भाई हज़रत फज़्ल बिन अब्बास** रदियल्लाहो तआला अन्हुमा एक हज़ार सवारों का लश्कर ले कर आ पहुंचे थे। हज़रत अबू उबैदा ने इन को हज़रत युकना और हज़रत मालिक उश्तर की कुमुक करने एहतियातन भैज दिया था। और वह अपने साथ जो एक हज़ार सवार लाए थे इन में से दो सौ (२००) शहर हल्ब के रोउसा और हज़रत युकना के रिश्तेदार थे। जिन्हों ने हज़रत युकना की मुताबेअत करते हुए दीने नस्रानी तर्क कर के दीने इस्लाम कबूल किया था और कबूले इस्लाम के बा'द अपने अह्लो अयाल को हल्ब में छोड़ कर ए'लाए कलिमतुल हक्क की खिदमत अन्जाम देने लश्करे इस्लाम में शामिल हो कर हज़रत फज़्ल बिन अब्बास के साथ आए थे। मुजाहिदों ने देखा कि हज़रत फज़्ल बिन अब्बास तशरीफ लाए हैं, तो उन्हों ने नारए तक्बीर से इन का खैर मकदम किया और किल्ले में लाए। हज़रत मालिक उश्तर ने हज़रत फज़्ल बिन अब्बास को मर्हबा कहा और फिर किल्ल-ए हल्ब में जो वारदात पैश आई उस की अज़ अव्वल ता आखिर तफ्सील बयान की और इस बुड्ढे राहिब का भी तआरुफ कराया। फिर हज़रत मालिक उश्तर ने इस बुड्ढे राहिब से फरमाया कि अब जो कुछ भी सवाल करना है वह हमारे नबी अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के चचा के साहिबज़ादे हज़रत फज़्ल बिन अब्बास से करो। बुड्ढे राहिब ने तख्लीके काइनात वगैरा के तअल्लुक से चंद सवालात पूछे, जिन का हज़रत फज़्ल बिन अब्बास ने ऐसा तसल्ली बख्श और मुदल्लल जवाब दिया कि सुन कर बुड्ढे राहिब ने कहा :

اَشْهَدُ اَنَّ هٰذا الْعِلْمَ الَّذِیْ اسْتَاثُوابِهِ الانْبِیَاءُ وَاَنَا اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ
اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ وَاَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

तर्जुमा : "मैं गवाही देता हूं इस अम्र की कि यह वह इल्म है जिस की अम्बिया किराम ने खबर दी है और मैं गवाही देता हूं कि नहीं है कोई मा'बूद मगर अल्लाह, वह एक है और इस का कोई शरीक नहीं और गवाही देता हूं कि बैशक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम इस के बन्दे और रसूल हैं।"

(हवाला : फुतूहुश्शाम, अज़ : अल्लामा वाकदी, सफहा : 338)

बुड्ढे राहिब ने अलल ऐ'लान कल्मा शहादत पढ़ा, इस का अह्ल ए'ज़ाज़ पर बहुत असर हुवा और चंद मुतअस्सिब रूमियों को छोड़ कर अक्सर लोगों ने इस्लाम कबूल किया। फिर हज़रत मालिक उश्तर नखई और हज़रत फज़्ल बिन अब्बास रदियल्लाहो तआला अन्हुम अपने लश्कर के हमराह हल्ब की तरफ रवाना हुए, लैकिन हज़रत युकना ने हज़रत फज़्ल बिन अब्बास के लश्कर में आए हुए दो सौ (200) रोउसा हल्ब को अपने साथ रोक लिया और हज़रत फज़्ल बिन अब्बास से कहा कि मैं अब हल्ब वापस नहीं आऊंगा। क्यूं कि मैं इस वक्त तक मुसल्मान भाइयों को मुंह नहीं दिखाउंगा जब तक मैं कोई अज़ीम कारनामा अन्जाम न दूं। मैं ने अब इन्ताकिया का इरादा किया है।

❁ अब तक इस्लामी लश्कर के हाथों फतह होने वाले मकामात

(1) अरेका (2) सह्ना (3) तदम्मुर (4) हूरान (5) बसरा (6) बैतुल लहिया (7) अजनादीन (8) दमिश्क (9) हिस्न अबील किद्स (10) जोसिया (11) हुमुस (12) शीरज़ (13) रुस्तन (14) हमात (15) कन्सरीन (16) बा'ल्बक (17) यर्मूक (18) बैतुल मुकद्दस (19) हल्ब (20) ए'ज़ाज़

फतहे इन्ताकिया

हज़रत युकना अब्दुल्लाह किल्ल–ए ए'ज़ाज़ से अपने साथ हल्ब के दो सौ (200) नौ मुस्लिम रोउसा मुजाहिदों को ले कर **इन्ताकिया** की तरफ रवाना हुए। थोड़ा फास्ला तय करने के बा'द उन्हों ने अपने साथ सिर्फ चार आदमियों को लिया और **''हारिम''** के रास्ता पर इन्ताकिया की तरफ आगे बढ़े और अपने साथियों से फरमाया कि तुम **''अम्म''** और **''अर्ताह''** के रास्ते से आगे बढ़ो और अब हम सब इन्ताकिया में जमा होंगे। अगर राह में तुम को हिरक्ल बादशाह का लश्कर मिले या राह में मुतअय्यन मुहाफिज़ मिलें और तुम से पूछें कि तुम कौन हो ? तो जवाब में यह कहना कि हम हल्ब के बाशिन्दे हैं और अरबों से जान बचा कर भागे हैं और इन्ताकिया में पनाह गुज़ीं होने जा रहे हैं। फिर हज़रत युकना अपने साथियों को सफर के तअल्लुक से ज़रूरी हिदायत और तम्बीह कर के एहतियात बरतने की ताकीद कर के जुदा हुए और **''दैरे सम्आन''** नामी मकाम पर पहुंचे। वहां से बढ़ कर **''बहरे अस्वद''** के करीब पहुंचे, तो वहां हिरक्ल बादशाह के लश्कर के लोग जो राहों की हिफाज़त पर मामूर थे वह मिले। इन मुहाफिज़ों ने हज़रत युकना को रोका, कहां से आए हो ? कहां जा रहे हो ? और क्यूं जा रहे हो ? वगैरा सवालात पूछे। हज़रत युकना ने फरमाया कि मैं हल्ब का साबिक हाकिम युकना हूं। अरबों ने हल्ब के किल्ले पर कब्ज़ा कर लिया है और मैं अपनी जान बचा कर भागा हूं और हिरक्ल बादशाह के पास इन्ताकिया जा रहा हूं। इन मुहाफिज़ों के गिरोह का सरदार **''बतरीस''** नाम का गबर था। वह युकना के नाम और शोहरत से वाकिफ था, लिहाज़ा वह हज़रत युकना के साथ बहुत ही मुहब्बत से पैश आया और अपने चंद मुहाफिज़ों को हज़रत युकना के हमराह भेजा, ताकि वह हज़रत युकना को सलामती से रास्ता तय करा दें।

हज़रत युकना की इन्ताकिया में हिरक्ल बादशाह से मुलाकात :–

हज़रत युकना मुहाफिज़ों की निगरानी में खैर व आफियत से इन्ताकिया पहुंचे और हिरक्ल बादशाह के पास गए। जब हिरक्ल बादशाह को पता चला कि युकना आए हुए हैं, तो वह गुस्से में लाल हो गया। हज़रत युकना को अपने पास बुलाया और सख्त नाराज़गी

का इज़्हार किया और सरज़निश करते हुए कहा कि **तुम वही युकना हाकिमे हल्ब हो जो अपने दीन से मुन्हरिफ हो कर अरबों के दीन में दाखिल हुवा है ?** हज़रत युकना ने जवाब दिया कि आप ने ठीक सुना है, लैकिन यह सब मैं ने खुद को और अपने अह्लो अयाल को बचाने के लिये अरबों से मक्रो फरैब किया था। अरबों ने हम पर जो मज़ालिम ढाए थे, वह ना–काबिले बरदाश्त थे। लिहाज़ा मजबूर हो कर अपनी जान बचाने के लिये मुसल्मान होने का मक्रो फरैब किया था, लैकिन इन्तिकाम की आग तो मेरे दिल में हस्बे साबिक शौ'ला ज़न थी, बल्कि मज़ीद बढ़ गई थी। हल्ब के मज़ालिम का बदला लेने के लिये मैं अरबों को धोका दे कर किल्ल–ए ए'ज़ाज़ फतह करने की लालच दे कर इन के एक हज़ार सवारों को ए'ज़ाज़ ले गया था, ताकि मक्रो फरैब से इन के सिपाहियों को मार डालूं और शेहसवारों को कैद कर के आप की खिदमत में इन्ताकिया भेज दूं और आप इन को फांसी दे कर इब्रतनाक सज़ा की मिसाल काइम करें, लैकिन अफ्सोस कि ए'ज़ाज़ के हाकिम दादरीस ने अपने जासूसों की झूटी इत्तेलअ पर मुझ को कैद कर लिया। मैं ने उस को समझाने की बहुत कौशिश की, लैकिन उस ने मेरी एक न सुनी और अरबों से हल्ब के मज़ालिम का बदला लेने की मेरी हसरत दिल ही दिल में दब कर रह गई।

हाकिम दादरीस के इन्तिज़ामी उमूर के खोखला पन का इस से बड़ा सुबूत क्या हो सक्ता है कि मुझ जैसे मुख्लिस शख्स को शक व शुब्हा की बिना पर कैद में डाला और अपने घर के भेदी से बे–खबर और गाफिल रहा। **उस का बेटा लुका अरबों से मिल गया था।** इस अम्र से वह अन्जान रहा और नतीजा यह हुवा कि **उस के बेटे लुका ने ही उसे कत्ल कर डाला** और किल्ले का दरवाज़ा खोल कर अरबों को शहर में दाखिल कर लिया। शहर में दाखिल होते ही अरबों ने शम्शीर ज़नी और नैज़ा बाज़ी का बाज़ार गर्म कर के हंगामा बर्पा कर दिया। इस हंगामा का फाइदा उठा कर मैं अपने चार साथियों के हमराह वहां से फरार हो गया। और आप के पास आया हूं। अगर मेरे मन में मैल होता और मैं मुर्तकिबे जुर्म होता तो आप के पास क्यूं आता ? क्या ऐसा संगीन जुर्म करने के बा'द आप के पास, सामने से चल कर आने की कोई हिम्मत कर सकता है ? क्या कोई मुजरिम अपनी गर्दन कटाने बज़ाते खुद आएगा ? अगर मुझ को अपने दीन से मुहब्बत न होती तो क्या मैं हकीकी भाई को अपने हाथ से कत्ल करता ? क्या एक साल की तवील मुद्दत तक अरबों के मुहासरा के सामने टक्कर लेता ?

हज़रत युकना ने अपनी गुफ्तगू का सिल्सिला जारी रखते हुए कहा कि ऐ बादशाह ! लोगों ने मेरे खिलाफ आप के कान भरे हैं, लैकिन आप ने हाकिम ए'ज़ाज़ दादरीस

का तरीका नहीं अपनाया, बल्कि खुलूस दिल से अपने गुस्सा का इज़्हार फरमाया और मुझे सफाई का मौका' दिया और गलत फहमी का इज़ाला करने की राह हमवार की। यह आप का खुलूस है कि आप ने दिल में ज़हर नहीं रखा और मेरे मुतअल्लिक जो सुना था वह इर्शाद फरमा दिया। हज़रत युकना की इस गुफ्तगू ने हिरक्ल बादशाह पर बहुत अच्छा असर डाला, इलावा अज़ीं बादशाह के पास मौजूद बतारेका और मुलूके शाम ने हज़रत युकना की ताईद और सफाई पैश करते हुए कहा कि युकना अपने कौल व फै'ल में सच्चे हैं और हमारे दीन के साथ इख्लास व रास्ती और जज़्बए ईसार व कुरबानी में इन का मसल दूसरा शख्स पूरे मुल्के शाम में ढूंढे न मिलेगा। अब हज़रत युकना का हौसला बढ़ा और हिरक्ल बादशाह को मज़ीद मुसख्खर करने की गरज़ से कहा कि ऐ बादशाह! अन्करीब आप देखेंगे कि मैं अपना काम और कौशिश ज़ाहिर कर के मुसल्मानों के साथ क्या करता हूं। मैं वह काम अन्जाम दूंगा कि आप तअज्जुब करेंगे। यह जुम्ले हज़रत युकना ने ज़ू मा'नी कहे थे। हज़रत युकना की बात सुन कर हिरक्ल बादशाह खुश हो गया और उस ने हज़रत युकना को शाही लिबास और ताज पहना कर खिल्अत दी और बे हद ता'ज़ीम व तक्रीम की और अपने करीब बिठाया। हिरक्ल ने हज़रत युकना को खुश करने की गरज़ से कहा कि अगर अरबों ने तुम से हल्ब छीन लिया है तो क्या हुवा ? हल्ब का अफ्सोस कर के अपना दिल छोटा मत करो। मैं तुम को इन्ताकिया के मुज़ाफात का इलाका, सिकन्दर और दस्तक का वाली और हाकिम बना कर हल्ब का नेअमल-बदल दूंगा। हज़रत युकना ने हिरक्ल बादशाह का शुक्रिया अदा किया।

हज़रत युकना के दो सौ (२००) साथी की इन्ताकिया आमद :-

फिर हिरक्ल बादशाह हज़रत युकना से मसरूफे गुफ्तगू हुवा और इस्लामी लश्कर से नबर्द आज़मा होने और मुल्के शाम के तहफ्फुज़ के सिल्सिले में राए ज़नी करता रहा। यह दोनों मसरूफे कलाम थे कि इन्ताकिया शहर की सर हद पर वाकेअ लोहे के पुल का मुहाफिज़ हिरक्ल बादशाह के पास आया और इत्तिला' दी कि अरबों से भाग कर हल्ब शहर के तक्रीबन दो सौ (200) आदमी पनाह गुज़ीं होने के कस्द से आए हुए हैं। हम ने इन को लोहे के पुल पर रोक रखा है और आप को इत्तिला' देने आया हूं, लिहाज़ा इन के मुतअल्लिक क्या हुक्मे शाही है ? हिरक्ल बादशाह ने हज़रत युकना से कहा कि आप शाही दरबार से चंद मुसाहिब को अपने हमराह ले कर लोहे के पुल पर जाओ और तह्कीक करो कि मआमला क्या है ? और वह लोग हल्ब के बाशिन्दे होंगे तो आप इन को ज़रूर पहचानते होंगे। अगर वह आने वाले मज़्लूम और मुसीबतज़दा मा'लूम हों, तो उन को शहर में ले आओ और अगर मआमला बर-अक्स है तो मुझे इत्तिला' करो, फिर मैं जो मुनासिब होगा वह हुक्म दूंगा।

हज़रत युकना ने हिरक्ल के दरबार से चंद मुसाहिब अपने साथ लिये और लोहे के पुल पर आए, जहां पुल के मुहाफिज़ों ने दो सौ (200) आदमियों को शहर में दाखिल होने से रोक रखा था। दर अस्ल वह तमाम हज़रत युकना के साथी थे जो हज़रत फज़्ल बिन अब्बास के लश्कर के साथ हल्ब से ए'ज़ाज़ आए थे और ए'ज़ाज़ से इन को साथ ले कर हज़रत युकना ब-जानिबे इन्ताकिया रवाना हुए थे और अस्नाए राह इन से अलग हो कर दूसरे रास्ते से इन्ताकिया आए थे। हज़रत युकना ने अन्जान बन कर इन के अहवाल पूछे, सब के नाम, पता और दीगर शनाख्त पूछी और यहां आने का सबब दर्याफ्त किया। उन्हों ने अपने नाम पत्ते बताए और हल्ब पर अरबों ने कब्ज़ा कर लिया है और हमारा सब कुछ लूट लिया। हम बे घर व बे सामान हो गए हैं और हम वहां से जान बचा कर भागे हैं और यहां पनाह व आसरा ढूंढने की गरज़ से आए हैं। थोड़ी दैर तक हज़रत युकना ने इन से मुतफर्रिक मआमलात के मुतअल्लिक पूछ गछ की और फिर अपने साथ आए हुए मुसाहिबों से कहा कि यह लोग वाकई हल्ब के बाशिन्दे हैं और मुसीबत ज़दा हैं। फिर इन दो सौ (200) आदमियों को ले कर हज़रत युकना हिरक्ल बादशाह के पास आए और सूरते हाल से आगाह किया। हिरक्ल बहुत खुश हुवा और उस ने हमदर्दी का इज़्हार करते हुए अपने महल के सामने एक वसीअ हवेली में इन को हज़रत युकना के साथ ठहराया। **इस तरह हज़रत युकना अपने साथियों के साथ इस्लाम के दुश्मने आ'ज़म के महल के सामने ही कयाम पज़ीर हो गए और अपने साथियों से मश्वरा करते थे कि इन्ताकिया को फतह करने का आसान तरीका क्या तज्वीज़ करना चाहिये।**

हिरक्ल की बेटी ज़ैतून की हज़रत युकना के साथ मरईश से वापसी :-

हिरक्ल बादशाह की सब से छोटी बेटी का नाम "ज़ैतून" था। हिरक्ल ने ज़ैतून की शादी "**मरईश**" के हाकिम "**नस्तूरस**" के साथ की थी। नस्तूरस लड़ाई के फन का माहिर और दिलैर जंगजू था। उस की शुजाअत की वजह से लोग उस को "**सैफुस सराबा**" कहते थे। नस्तूरस यर्मूक की लड़ाई में हिरक्ल बादशाह के लश्कर में मौजूद था और जंगे यर्मूक के बारहवें दिन वह हज़रत खालिद बिन वलीद के हाथों कत्ल हुवा था। नस्तूरस की मौत के बा'द इस की बीवी ज़ैतून ने अपने बाप हिरक्ल को खबर भेजी कि मुझ को "मरईश" में अरबों का बहुत खौफ मह्सूस होता है, लिहाज़ा एक लश्कर भेज कर मुझ को अपने पास इन्ताकिया बुला लो।

जब हिरक्ल के पास इस की बेटी का पैगाम पहुंचा तो हिरक्ल ने हज़रत युकना को

बुलाया और सूरते हाल से आगाह करते हुए कहा कि मेरी निगाह में तुम से बढ़ कर भरोसा मन्द दूसरा कोई शख्स नहीं। अपनी लख्ते जिगर को मरईश से खैरो आफियत के साथ यहां ले आने की ज़िम्मेदारी तुम्हारे सिवा किसी को नहीं सौंप सक्ता और मुझ को तुम पर ए'तमादे कामिल है कि मेरा काम तुम ब-खूबी अन्जाम दोगे। हज़रत युकना ने फरमाया कि आप ने मुझ को इस काबिल समझा यह मेरी खुश किस्मती है। मैं आप का यह हुक्म ज़रूर बजा लाउंगा। हिरक्ल ने हज़रत युकना को दो हज़ार का लश्कर दिया और अपनी बेटी ज़ैतून को लेने "मरईश" नामी मकाम पर भेजा। हज़रत युकना दो हज़ार का रूमी लश्कर ले कर मरईश गए और ज़ैतून को साथ ले कर इन्ताकिया की तरफ रवाना हुए, लैकिन वापसी में उन्हों ने जाने वाले रास्ता के बजाए बड़ी शाहराह इख्तियार की और उस रास्ते से आने का इन का यह मक्सद था कि अस्नाए राह इस्लामी लश्कर का कोई जासूस या कोई मुआहदी मिल जाए, तो हज़रत अबू उबैदा को इत्तिला' कर दूं कि मैं इन्ताकिया पहुंच गया हूं। नीज़ मैं ने हिरक्ल बादशाह का ए'तमाद हासिल कर लिया है और आप इन्ताकिया की तरफ कूच करने का कस्द करें। इन्शा अल्लाह इन्ताकिया अन्करीब फतह हो जाएगा।

हज़रत युकना मरईश से वापस इन्ताकिया आते हुए जब "मुर्जुद दीबाज" नामी मकाम पर पहुंचे तो लश्कर के आगे चलने वाला गिरोह (तलीआ) बिजली की सुरअत से वापस आया और हज़रत युकना को इत्तिला' दी कि करीब में अरबों का एक छोटा लश्कर पड़ाव डाले हुए है। यह खबर सुन कर हज़रत युकना की खुशी की इन्तिहा न रही, लैकिन उन्हों ने अपनी खुशी के आसार चेहरे पर नमूदार नहीं होने दिये, बल्कि अपने साथ के रूमी लश्कर को होशियार रहने और एहतियात बरतने की ताकीद की और यह तम्बीह फरमाई कि अगर दुश्मन से मुकाबला हो तो यह कौशिश करना कि इन को ज़िन्दा कैद कर लो, ताकि इन कैदियों को हिरक्ल बादशाह की खिदमत में पैश कर के बादशाह की खुशनूदी हासिल कर लें, इलावा अज़ीं हिरक्ल बादशाह अन्करीब अरबों से जंग करने का इरादा रखता है। इस जंग में अगर हमारा कोई कैदी अरबों के हाथों से छुड़ाना होगा, तो यह अरब कैदी के इवज़ में हम अपने कैदी को छुड़ा सकेंगे। यह हुक्म नाफिज़ कर के हज़रत युकना ने इस्लामी लश्कर के मुजाहिदों को शहीद होने से बचाने की तर्कीब तज्वीज़ की थी। फिर हज़रत युकना रूमी लश्कर को ले कर उस मकाम की तरफ आगे बढ़े जहां अरबों का लश्कर मुकीम था। हज़रत युकना का लश्कर करीब आते ही वह लश्करे अरब चौकन्ना और होशियार हो गया और मुकाबला के लिये उठ खड़ा हुवा और लश्कर के सिपाहियों ने सलीबें बुलन्द कीं। सलीबें देख कर हज़रत युकना समझ गए कि यह लश्कर अरबों का ज़रूर है लैकिन मुसल्मान अरबों

का नहीं बल्कि नस्रानी अरबों का है। इन नस्रानी अरबों ने देखा कि करीब आने वाले लश्कर में भी सलीबें बुलन्द हैं, तो वह भी मुत्मइन हो गए कि यह लश्कर हमारे किसी दुश्मन का नहीं बल्कि रूमी लश्कर है। दोनों लश्कर करीब हुए और एक दूसरे से मिले। अरबों के लश्कर के सरदार ने पुकार कर कहा कि हम सलीब के परस्तार और ताबे' हैं, तुम कौन हो ?

हज़रत युकना ने जवाब दिया कि हम हिरक्ल बादशाह के लश्करी हैं। लिहाज़ा दोनों लश्करों ने एक दूसरे को सलाम किया और गर्म जौशी से मुलाकात की और एक दूसरे की निहायत ता'ज़ीम करते हुए मर्हबा और खुश आमदीद कहा और खैरियत पूछी। हज़रत युकना ने फरमाया कि मैं हिरक्ल बादशाह की दुख्तर ज़ैतून को मरईश लेने गया था और अब इन्ताकिया वापस जा रहा हूं। अरब मुतनस्सिरा के लश्कर का सरदार जबला बिन ऐहम गस्सानी का बेटा "**अब्हम बिन जबला**" था। अब्हम बिन जबला ने कहा कि मैं "**अद्रगमा**" नामी मकाम से गल्ला ले कर हिरक्ल बादशाह के पास इन्ताकिया जा रहा हूं। राह में "**मुर्ज वाबिक**" नामी मकाम पर हम को मुसल्मानों का एक छोटा गिरोह मिल गया और उस से हमारी मुडभैड़ हो गई। उस छोटे गिरोह के साथ हमारी लड़ाई का यह आलम था कि हम इन का एक आदमी मार डालते, तो जवाब में वह हमारे लश्कर के तीन चार आदमियों को कत्ल कर डालते। लैकिन इन की ता'दाद हमारे मुकाबला में बहुत कम थी, लिहाज़ा हम गालिब आए। इन के कुछ आदमियों को हम ने मार डाला, कुछ को कैद कर लिया है और कुछ भाग गए। फिर उस ने हज़रत युकना को मुसल्मान कैदियों को दिखाया। हज़रत युकना ने देखा कि इस्लामी लश्कर के दो सौ मुजाहिद मुश्कें बंधी हूई हालत में कैद हैं और इन कैदियों में **हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर सहाबीए रसूल** भी हैं। हज़रत युकना को बहुत ही रंज और सदमा हुवा, लैकिन उन्हों ने कड़वा घूंट पीते हुए अपने रंज को ज़ाहिर नहीं होने दिया। और मुसल्मान कैदियों की जान बख्शी की तर्कीब सोचने लगे। ब-ज़ाहिर उन्हों ने अब्हम बिन जबला के काम की ता'रीफ की और दो सौ मुसल्मानों को कैद करने की मुबारकबादी दी। फिर दोनों लश्कर साथ में इन्ताकिया की जानिब रवाना हुए। दोनों लश्कर के सिपाहियों के कदम इन्ताकिया की तरफ आगे बढ़ रहे थे, **लैकिन हज़रत युकना का दिमाग इस्लामी लश्कर के मुजाहिदों की रिहाई की सबील निकालने में मश्गूल था।**

हज़रत ज़िरार की गिरफ्तारी :-

किल्ल-ए ए'ज़ाज़ की फतह के बा'द हज़रत अबू उबैदा बिन अल जर्राह ने हज़रत ज़िरार बिन अल-अज़्वर को तक़्रीबन तीन सौ सवारों पर सरदार मुकर्रर कर के मुर्ज वाबिक

के इलाके की तरफ भेजा था और इन को हुक्म दिया था कि वहां के इलाके को ताख्त व ताराज करें। हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर के साथियों में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के गुलाम हज़रत सफीना रदियल्लाहो तआला अन्हो भी शामिल थे। हज़रत ज़िरार के गिरोह के साथ एक रूमी मुआहदी रास्ता बताने के लिये गया हुवा था। हज़रत ज़िरार के गिरोह ने "**मुर्ज वाबिक**" पहुंच कर तवक्कुफ किया और रात वहां बसर कर के दूसरे दिन सुब्ह रवाना होने का फैसला किया। लिहाज़ा रात के वक्त तमाम मुजाहिदीन सफर की कुल्फत दूर करने की गरज़ से इस्तिराहत कर रहे थे कि अचानक अब्हम बिन जबला गस्सानी सोए हुए मुजाहिदों पर आ पड़ा। अब्हम बिन जबला के सिपाहियों ने कईं मुजाहिदों को नींद की हालत में घोड़े की टापों से रौंद डाला और कई मुजाहिदों पर तलवारों की शदीद ज़र्बें लगाईं। एक अजीब शौर व गुल बुलन्द हुवा। जिस को सुन कर हज़रत ज़िरार बैदार हो गए, जसत लगा कर अपने घोड़े पर सवार हुए और इन के साथ एक सौ मुजाहिद भी मुसल्लह हो कर सवार हो गए और अब्हम बिन जबला गस्सानी के हम्ला का देफाअ शुरू किया। हज़रत ज़िरार ने अपने साथियों को पुकार कर कहा कि ऐ मर्दाने अरब ! हमारे दुश्मन मुतनस्सिरा अरब हैं और नागाह हम पर आ पड़े हैं। तुम इन का मुकाबला करने में बुज़दिली मत करो क्यूं कि हमारे आका व मौला सल्लल्लाहो अलैह व सल्लम ने फरमाया है कि "اَلْجَنَّةُ تَحْتَ ظِلَالِ السُّيُوْفِ" या'नी "**जन्नत तलवारों के साया के नीचे है।**" हज़रत ज़िरार के कलाम ने मुजाहिदों में एक जौश पैदा कर दिया और मुजाहिदों ने दिलैरी से नस्रानियों का मुकाबला किया। हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर शैर की तरह गरजते थे और दुश्मनों को अपनी तल्वार से खाक व खून में मिलाते। किसी को भी इन के करीब जाने की हिम्मत नहीं होती। हज़रत ज़िरार पूरे जौशो खरौश से मुकाबला कर रहे थे कि अचानक हज़रत ज़िरार के घोड़े ने ठोकर खाई और घोड़ा हज़रत ज़िरार को ले कर मुंह के बल गिरा। हज़रत ज़िरार ने उठ खड़े होने की कौशिश की मगर रिकाब में पाऊं उलझ गया और घोड़े के जिस्म के नीचे दब गया। हज़रत ज़िरार अपना पाऊं निकालने के लिये ताकत आज़्मा रहे थे कि आठ दस नस्रानी अरब इन पर टूट पड़े और इन को दबोच लिया और कैद कर लिया। हज़रत ज़िरार के गिरफ्तार होते ही मुजाहिदों के हौसले पस्त हो गए और नौबत यह हूई कि दो सौ मुजाहिद गिरफ्तार हुए और कुछ मुजाहिद ज़िन्दा बच कर भाग निकले।

हज़रत सफीना को शैर की मदद :-

हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर और इन के साथ दो सौ मुजाहिदों को कैद होता देख कर **हज़रत सफीना** (हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के गुलाम)

दुश्मनों की नज़रों से बच कर भागे। इन को भागते हुए किसी ने भी नहीं देखा, लिहाज़ा वह दुश्मन के तआकुब से मामून हो कर बे तहाशा भाग रहे थे ताकि जल्द अज़ जल्द वह हल्ब पहुंच जाएं और मुजाहिदों की गिरफ्तारी के हादसे की खबर पहुंचा दें। जल्दी हल्ब पहुंचने के इरादा से उन्हों ने शाहराह छोड़ कर जंगल से गुज़रने वाला दरम्यानी रास्ता इख्तियार किया। हज़रत सफीना जंगल में रास्ता भूल गए, लैकिन फिर भी बगैर तवक्कुफ मुसल्सल भाग रहे थे कि अचानक इन के सामने एक बड़ा शैर आ कर खड़ा हो गया। शैर को देखते ही हज़रत सफीना रुक गए। बयाबान जंगल, न कोई साथी न कोई राही, न कोई मूनिस, न कोई मददगार। अकेली जान, तने तन्हा, जंग की मशक्कत बरदाश्त करने के बा'द मुसल्सल राह तय करने की वजह से जिस्म थक कर चूर, सामने मौत अपना जबड़ा फाड़ कर खड़ी, घड़ी दो घड़ी में लुक्मए अजल बन जाने का अंदेशा है। **अब क्या होगा और क्या करूं ?** इस कश्मकश में हज़रत सफीना ने शैर की जानिब देखा, तो शैर इन पर निगाहें जमा कर घूर घूर कर देख रहा है और ऐसा लग रहा था कि एक ही जसत में वह उन पर आ पड़ेगा और इन्हें फाड़ कर रख देगा। ऐसे मायूसी और ना-उम्मीदी के आलम में **हज़रत सफीना को एक ही सहारा नज़र आया।** कौनेन के मालिक व मुख्तार, मुसीबत ज़दों की **मुसीबत दूर फरमाने वाले प्यारे आका व मौला** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की ज़ाते गिरामी की तरफ रुजूअ किया और शैर को अपने आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की दुहाई दी। फिर क्या हुवा ?

इमामे अर्बाबो सेयर व तवारीख अल्लामा मुहम्मद बिन अम्र वाकदी फरमाते हैं **:**

> **"सफीना गुलामे रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व आलेहि व सल्लम कि ज़िरार बिन अल-अज़्वर के साथ मौजूद थे, जिस वक्त वह कैद किये गए थे। पस जब रात हूई चले और भागे सफीना ब-उम्मीद पहुंचने के पास अबू उबैदा बिन अल जर्राह रदियल्लाहो तआला अन्हो के। पस सामने आया इन के एक बड़ा शैर अस्नाए राह में, पस कहा उन्हों ने "يا اَبَا الْحَارِثْ! اَنَا مولی رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلّٰی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهِ وَسَلَّمَ" "ऐ अबूल हारिस ! (या'नी ऐ शैर) में रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम का गुलाम हूं" और यह मेरा हाल है। पस मुतवज्जेह हुवा शैर दर-आं हालांकि हिलाता था वह अपनी दुम को यहां तक कि खड़ा हुवा सफीना के पहलू में और डकारा उस ने। सफीना ने बयान किया है कि चला मैं और शैर मेरे पहलू में था। ता**

आंकि आया मैं अपनी सुलह की जगह में फिर छोड़ा उस ने मुझ को और चला गया ।" (हवाला : फुतूहुश्शाम, अज़् अल्लामा वाकदी, सफहा : 344)

नाज़ेरीन गौर फरमाएं ! हज़रत सफीना रदियल्लाहो तआला अन्हो सहाबीए रसूल हैं । हुज़ूरे अक्दस के सोहबत याफ्ता हैं । अर्सए दराज़ तक खिदमते अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम में रात दिन हाज़िर रहने का शरफ हासिल किया है । हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की ज़बाने फैज़ तर्जुमान से लाखों अहादीस व मसाइल समाअत किये हैं । शिर्क, कुफ्र, हलाल, हराम, जाइज़, नाजाइज़, और दीगर अहकाम की ता'लीम बारगाहे रिसालत मआब से हासिल की है । वह हज़रत सफीना ने मुसीबत के वक्त अपने आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की दुहाई दी और वह भी किसी इन्सान को नहीं बल्कि इन्सान को फाड़ खाने वाले शैर बबर को दी । हज़रत सफीना का ए'तकाद कितना पुख्ता था ? कैसा यकीने कामिल था ? जंगल के शैर जो इन्सान की बोली न जाने, न समझे, लैकिन इस के बा-वुजूद हज़रत सफीना शैर को मुखातब कर के कहते हैं कि ऐ शैर ! मैं हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम का गुलाम हूं। हज़रत सफीना का ए'तकाद था कि यह शैर अगर चे इन्सानों की लुगत नहीं जानता, लैकिन तमाम काइनात के आका मौला सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को ज़रूर जानता है, सिर्फ जानता ही नहीं बल्कि मानता भी है । अगर उस को मैं हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की दुहाई दूंगा, तो यकीनन वह मुझ को ज़रर नहीं पहुंचाएगा । और हुवा भी ऐसा ही । **हज़रत सफीना की ज़बान से हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की दुहाई सुन कर खूंखार शैर बकरी बन गया और अपनी दुम हिलाने लगा ।** गोया वह ज़बाने हाल से कह रहा है कि ऐ सफीना ! जिस बारगाहे रिसालत मआब के तुम गुलाम हो, उसी ज़ाते वाला सिफात के वुजूद के सदके मेरा वुजूद है । मेरी क्या मजाल कि इस बारगाह के गुलाम को तक्लीफ पहुंचाउं बल्कि तुम्हारी खिदमत अन्जाम देना मेरी सआदत है । चलो मैं तुम्हारा राहबर और निगेहबान बन कर साथ चलता हूं और तुम को जहां जाना है वहां तक पहुंचा देता हूं। चुनान्चे वह शैर हज़रत सफीना के साथ ब-हैसियते राहबर हल्ब तक गया :

अपने मौला की है बस शान अज़ीम जानवर भी करें जिन की ता'ज़ीम

संग करते हैं अदब से तस्लीम पैड़ सजदे में गिरा करते हैं

(अज़ : - इमामे इश्को मुहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

लैकिन,अफ्सोस !

दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन का अकीदा यह है :

- इमामुल मुनाफिकीन **मौलवी इस्माईल देहलवी** ने लिखा है कि :

"शिर्क की मुख्तलिफ शक्लें :

"अक्सर लौग पीरों को और पैगम्बरों, इमामों और शहीदों को और फरिश्तों और परियों को मुश्किल के वक्त पुकारते हैं और इन से मुरादें मांगते हैं और इन की मन्नतें मानते हैं और हाजत बरआवरी के लिये इन की नज़्र व नियाज़ करते हैं और बला के टलने के लिये अपने बेटों की इन की तरफ निस्बत करते हैं, कोई अपने बेटे का नाम अब्दुन्नबी रखता है, कोई अली बख्श, कोई नबी बख्श, कोई पीर बख्श, कोई मदारबख्श, कोई सालार बख्श, कोई गुलाम मुहियुद्दीन और इन के जीने के लिये कोई किसी के नाम की चोटी रखता है, कोई किसी के नाम की बधी पहनाता है, कोई किसी के नाम के कपड़े पहनाता है, कोई किसी के नाम की बेड़ी डालता है, कोई किसी के नाम का जानवर करता है, कोई मुश्किल के वक्त दुहाई देता है, कोई अपनी बातों में किसी के नाम की कसम खाता है ।"

हवाला : तक्वियतुल ईमान, मुसन्निफ : मौलवी इस्माईल देह्लवी

नाशिर : दारुस सल्फिया, बम्बई, सफहा : 16

तक्वियतुल ईमान की मुन्दरजा बाला इबारत शिर्क के फत्वे का एटम बोम्ब ही है कि कलम के एक झटके से मिल्लते इस्लामिया के लाखों नहीं बल्कि करोडों मुसल्मानों को मुश्रिक कह दिया । इस एक इबारत की तर्दीद में मुदल्लल दलाइल पर मुश्तमिल एक ज़खीम किताब मुरत्तब हो सक्ती है, लैकिन यहां हम इस इबारत से सर्फ नज़र करते हुए इस इबारत के जुम्ले "**कोई मुश्किल के वक्त दुहाई देता है**" की तरफ तवज्जोह करने की कारेईने किराम से इल्तिमास करते हैं कि इमामुल मुनाफिकीन ने तक्वियतुल ईमान में मुश्किल के वक्त किसी की दुहाई देने को शिर्क लिखा है, लैकिन सहाबीए रसूल हज़रत सफीना ने शैर के हम्ले से महफूज़ रहने के लिये हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की दुहाई दी । **अगर हुज़ूरे अक्दस की दुहाई देना शिर्क होता, तो क्या हज़रत सफीना दुहाई देते ?**

अगर ब–कौल मौलवी इस्माईल देहलवी दुहाई देना शिर्क है, तो हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की दुहाई देने वाले सहाबीए रसूल हज़रत सफीना पर क्या हुक्म नाफिज़ होगा ? नाज़ेरीन फैसला करें ।

अल–किस्सा ! हज़रत सफीना शैर के हमराह मसाफत तय कर के जब हल्ब के करीब महफूज़ मकाम पर पहुंच गए, तो वह शैर वापस लौट गया । फिर हज़रत सफीना इस्लामी लश्कर में आए और हज़रत अबू उबैदा को हज़रत ज़िरार बिन अज़वर और दो सौ मुजाहिदों की गिरफ्तारी की खबर दी और अब्हम बिन जबला गस्सानी के ना–गहानी हम्ले की तफ्सील सुनाई । इस सानेहा की खबर इस्लामी लश्कर में फैली तो तमाम मुजाहिदीन मग्मूम हो गए । हज़रत अबू उबैदा और हज़रत खालिद बिन वलीद बहुत रोए । हज़रत ज़िरार की बहन हज़रत खौला बिन्ते अज़वर और हज़रत साबिर बिन औस की वालेदा हज़रत मज़रूआ बिन्ते अमलूक हुमैरिया भी बहुत रोईं, लैकिन किसी ने भी सब्र का दामन हाथ से न छोड़ा ।

हज़रत ज़िरार और इन के साथियों की हिरक्ल के सामने पैशी :–

हज़रत युकना "मुर्जे वाबिक" से अब्हम बिन जबला गस्सानी के लश्कर के हमराह हज़रत ज़िरार बिन अज़वर और दो सौ मुजाहिद कैदियों को ले कर इन्ताकिया की जानिब रवाना हुए । हज़रत युकना रास्ते भर मुजाहिदों की जान बचाने की फिक्र करते रहे और इस की तर्कीब सोचते रहे । जब इन का लश्कर इन्ताकिया से थोड़े फास्ले पर था, तो हज़रत युकना ने एक शख्स को हिरक्ल बादशाह के पास पैशगी भेज दिया और हिरक्ल की बेटी जैतून की आमद और साथ में इस्लामी लश्कर के दो सौ मुजाहिदों को कैद कर लाने की इत्तिला' भेज दी । हज़रत युकना की भैजी हूई खबर सुन कर हिरक्ल बादशाह खुशी में झूम उठा और उस ने शहर के तमाम कनीसा को उमदा फर्श और रौशनी से आरास्ता करने का हुक्म दिया । गुरबा व मसाकीन को दिल खोल कर खैरात तक्सीम की और अर्बाबे सल्तनत को खिल्अतें दीं और लश्कर को हुक्म दिया कि जैतून और युकना का शानदार इस्तिक्बाल किया जाए । हिरक्ल ने अपने भतीजे **"फौरीन"** को भी लश्कर के साथ इस्तक्बालिया रस्म की अदायगी के लिये भैजा । पूरे इन्ताकिया में हिरक्ल की बेटी की आमद की खबर फैल चुकी थी और अहले इन्ताकिया उमदा और फाखिरा लिबास से मुज़य्यन हो कर इस्तिक्बाल के लिये खड़े थे और एक जश्न का माहौल इन्ताकिया शहर में काइम हो गया था । जब हज़रत युकना का लश्कर इन्ताकिया शहर में दाखिल हुवा, तो हिरक्ल के लश्कर ने बादशाह की दुख्तर के एहतेराम में सवारी से उतर कर पा–प्यादा हो कर उस की ता'ज़ीम की और खैर मकदम

किया । इन्ताकिया के बाशिन्दों ने नाकूस बजा कर, सलीबें बुलन्द कर के और कल्मए कुफ्र बुलन्द कर के इस्तिक्बाल किया और जुलूस की शक्ल में जैतून को हिरक्ल के महल की तरफ ले कर चले । इस्लामी लश्कर के दो सौ मुजाहिद भी ब–हालते कैद मुश्कें बंधे हुए साथ में थे । अहले शहर इन मुजाहिदों को गालियां देते और इन की तहकीर व तज्लील करते । बिल–आखिर यह जुलूस हिरक्ल बादशाह के महल तक पहुंचा । जैतून अपने बाप से गर्मजोशी से मिली । फिर हिरक्ल ने हज़रत युकना और अब्हम बिन जबला गस्सानी और रोउसाए शहर को अपने दरबार में बुलाया और तमाम कैफियत पूछी । हज़रत युकना ने तमाम तफ्सील कह सुनाई । फिर हिरक्ल बादशाह ने इस्लाम के लश्कर के मुजाहिद कैदियों को देखने की ख्वाहिश ज़ाहिर की । चुनान्चे हज़रत ज़िरार और इन के साथियों को हिरक्ल बादशाह के सामने लाया गया ।

जब हज़रत ज़िरार और इन के साथियों को हिरक्ल बादशाह के सामने लाया गया, तो बादशाह के मुसाहिबों ने पुकार कर मुजाहिदों से कहा कि बादशाह की ता'ज़ीम बजा लाओ और इस के सामने सजदा करो । लैकिन किसी भी मुजाहिद ने इस की बात की तरफ इल्तिफात नहीं किया, गोया उन्हों ने कुछ सुना ही नहीं,और इसी तरह खड़े रहे । तब मुसाहिबों के सरदार ने कहा कि हम तुम को बुलन्द आवाज़ से पुकार कर कहते हैं कि बादशाह को ता'ज़ीम का सजदा करो, लैकिन तुम हमारे कहने पर कान नहीं धरते ? हज़रत ज़िरार ने फरमाया कि हम खुदा के सिवा किसी भी मख्लूक को सजदा नहीं करते । क्यूं कि हमारे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने गैरे खुदा को सजदा करने से मना' फरमाया है । फिर हिरक्ल ने तमाम मुजाहिदों से मुखातब हो कर कहा कि मैं तुम से तुम्हारे दीन के मुतअल्लिक कुछ सवाल पूछना चाहता हूं लिहाज़ा तुम में से कौन शख्स मेरे सवालों के जवाब देगा ? तमाम मुजाहिदों ने **सहाबीए रसूल हज़रत कैस बिन आमिर अन्सारी** की जानिब इशारा करते हुए कहा कि हज़रत कैस बिन आमिर तमाम हालात व वाकेआत व मो'जिज़ाते रसूले मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम से वाकिफीयत रखते हैं, लिहाज़ा वह जवाब देंगे ।

फिर हिरक्ल बादशाह ने वही, बेअसत, नमाज़, रोज़ा, ज़कात, एक नैकी के इवज़ दस नैकी का सवाब, मो'जिज़ात, मरातिबे उम्मत, बशारते हज़रत ईसा मुतअल्लिक नबीए आखिरुज़ ज़मान, दुरूद शरीफ और मे'राज के मुतअल्लिक सवालात किये । हज़रत कैस बिन आमिर ने हिरक्ल के हर सवाल का कुरआन की आयत की दलील पैश कर के जवाब दिया । हज़रत कैस बिन आमिर ने ऐसे तसल्ली बख्श जवाब मरहमत फरमाए कि जिन

को सुन कर हिरक्ल बादशाह मुत्मइन हो गया। और उस के चेहरे से इत्मिनान व तसल्ली के आसार नमूदार होने लगे। गोया हिरक्ल को जिस जवाब की तलब व ख्वाहिश थी, वह उसे हासिल हो गया। हिरक्ल बादशाह को मुत्मइन होता देख कर एक मुतअस्सिब रूमी ने बादशाह का ज़हन मुन्तशिर और परागन्दा करने की फासिद निय्यत से कतेअ कलाम करते हुए दरमियान में बोला कि ऐ बादशाह ! इस अरब ने जिस नबी का ज़िक्र किया है वह तो अभी तक मब्ऊस ही नहीं हुए, बल्कि अब होंगे। उस बतरीक की बात सुन कर **हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर आग बगोला हो गए** और इन के चेहरे का रंग सुर्ख हो गया। आप कैद की हालत में थे, लैकिन बतरीक रूमी की किज़्ब बयानी आप से बरदाश्त न हूई, कैदियों के ज़ुमरे में होते हुए चिल्ला कर जो जुम्ले इर्शाद फरमाए, वह इमाम अर्बाबे सेयर व तवारीख हज़रत अल्लामा मुहम्मद बिन अम्र वाकदी कुद्दिसा सिर्रहु ने अपनी किताब में इस तरह नक्ल फरमाए हैं :

"पस कहा उस बतरीक ने कि ऐ बादशाह जिस नबी का तू ने ज़िक्र किया है वह बा'द अज़ीं मब्ऊस होंगे। ज़िरार बिन अल-अज़्वर ने कहा कि झूटी है यह डाढ़ी नापाक तेरी, ऐ कुत्ते रूम के, और वही नबीए अरबी मब्ऊस व मश्हूर तौरात व इन्जील और ज़बूर और फुरकान में हैं, और वह हमारे नबी हैं, मगर पर्दए कुफ्र ने बाज़ रखा है तुम को इन के पहचानने से"

(हवाला : फुतूहुश्शाम, अज़ : अल्लामा वाकदी, सफहा : 348)

हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर ने शैर की तरह गरजते हुए अपने आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की अज़्मते शान बयान फरमाई और बारगाहे रिसालत में गुस्ताखी करने वाले रूमी बतरीक की तज़्लील करते हुए दन्दान शिकन जवाब दे कर उस को मब्हूत व खामौश कर दिया :

खाक हो जाएं अदू जल कर मगर हम तो रज़ा
दम में जब तक दम है ज़िक्र उन का सुनाते जाएंगे

(अज़ : इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत ज़िरार ने शाही दरबार में भरी महफिल में जिस रूमी बतरीक की सरज़निश की थी वह शाही दरबार का हाशिया नशीं और बहुत ही बा असर शख्स था। तमाम बतारेका

उस को अपना मख्दूम व मत्बूअ मानते थे, लिहाज़ा उस रूमी बतरीक ने इस मआमले को अपना ज़ाती मआमला बना लिया और तमाम बतारेका को उक्साया, तमाम बतारेका मुश्तइल हो कर उठ खड़े हुए और हिरक्ल बादशाह के सामने आ कर कहा कि इस अरब ने हमारे मज़हबी पेश्वा की शान में बे अदबी की है और आप के सामने भरी महफिल में बर-सरे आम दीने मसीह के रहबर की तौहीन व तज़्लील कर के दर हकीकत दीने मसीह की तौहीन की है और **यह हर्कत ना-काबिले बरदाश्त है।** हिरक्ल बादशाह ने तमाम बतारेका को मुश्तइल और खशमनाक देखा, तो वह घबराया कि अगर इन को मुत्मइन न किया गया तो खौफ है कि यह तमाम मिल कर मेरे खिलाफ अलमे बगावत बुलन्द कर देंगे। लिहाज़ा हिरक्ल ने हज़रत कैस बिन आमिर से पूछा कि दरमियान में बोलने वाला यह शख्स कौन है ? हज़रत कैस बिन आमिर ने जवाब देते हुए फरमाया कि यह इस्लामी लश्कर के मश्हूर शेहसवार और सहाबीए रसूल हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर हैं। हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर का नाम सुनते ही हिरक्ल बादशाह चौंक पड़ा। बैतुल लहिया के मकाम में आप ने रूमी सरदार वर्दान के बेटे हुमरान को जब मार डाला था, तो आप की शुजाअत व दिलैरी की दास्तान हिरक्ल के कानों तक पहुंची थी। लिहाज़ा हिरक्ल ने पूछा कि क्या यह वही हैं जिन के मुतअल्लिक मैं ने सुना है कि वह कभी सवार हो कर तो कभी पैदल और कभी ज़िरह पहन कर तो कभी नन्गे बदन लड़ता है ? हज़रत कैस बिन आमिर ने फरमाया कि हां ! यह वह ही हैं। हिरक्ल ने बतारेका की दिलजूई करने के लिये हुक्म दिया कि इस को सज़ा देने का तमाम इख्तियार मैं तुम को देता हूं। इस शख्स ने हमारे मुअज़्ज़ज़ बतरीक की बे अदबी करने का जो संगीन जुर्म किया है इस जुर्म की सज़ा तुम ही तज्वीज़ करो और अपने हाथों से ही सज़ा दो। तुम जो भी सज़ा तज्वीज़ करोगे, मैं इस से मुत्तफिक हूं।

तमाम बतारेका ने यह तय किया कि इस शख्स को तल्वार के एक वार में खत्म न करें बल्कि इस को तड़पा तड़पा कर कई दिनों में मारें। और ऐसी इब्रतनाक सज़ा दें कि किसी को भी हमारे मज़हबी पेश्वा की शान में गुस्ताखी करने की जुर्अत न हो। लिहाज़ा उन्हों ने हज़रत ज़िरार को कैदियों के ज़ुमरे से अलग कर के बीच दरबार में खड़ा किया और इन को शदीद जिस्मानी तकालीफ पहुंचाने की गरज़ से इन के जिस्म के मुख्तलिफ आ'ज़ा में तलवारों की नोकें चुभा चुभा कर जिस्म को ईज़ा रसानी का तख्तए मश्क बनाया। कुछ ज़ालिमों ने अपनी बर्छियां शाना और कलाई के गोश्त में पैवस्त कर के बर्छियों की नोकें हड्डियों से टकराईं। घूंसे और लातें मार कर और सर व डाढ़ी के बाल नौच कर सख्त ज़रर रसानी की। मज़ीद बरां फहश कलामी और गालियों की बौछार कर के अपनी सकावते कल्बी का

मुज़ाहिरा किया। अपने आप को मुहज़्ज़ब कहलाने वालों ने बद-तहज़ीबी की हदें उबूर कर दीं। हज़रत ज़िरार के जिस्म में इन ज़ालिमों ने चौदह तो शदीद ज़ख्म कर दिये थे, लैकिन हज़रत ज़िरार ने उफ तक नहीं किया। अपने आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की शान में गुस्ताखी करने वाले की तज़लील करने के सिले में पहुंचाई जाने वाली तक्लीफ भी इन को मर्गूब व प्यारी थी :

अर्'हो फिदाका फज़िद हर्का यक शौ'ला दिगर बरज़न इश्का

मौरा तन मन धन सब फूंक दिया यह जान भी प्यारे जला जाना

(अज़ : इमामे इश्को मुहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

ज़ालिम रूमियों ने हज़रत ज़िरार को इत्ना ज़द व कोब किया कि बैः हौश हो गए। जब हज़रत ज़िरार बैः हौश हो गए, तो ज़लील होने वाले बतरीक सरदार ने बतारेका से कहा कि इस की ज़बान काट डालो। यह सुन कर हज़रत युकना बे चैन व बे करार हो गए और हिरक्ल बादशाह के सामने आए और कहा कि एक अरब सिपाही को इतनी अहमियत देनी क्या मा'नी रखता है ? मेरी राए यह है कि अगर लोगों के दिलों पर इब्रत और हैबत का सिक्का बिठाना है तो इस शख्स को इन्ताकिया शहर के वस्त में मज्म-ए कसीर जमा कर के बर-सरे आम सूली देनी चाहिये और मैं चाहता हूं कि यह खिदमत मैं अन्जाम दूं। और यह काम कल सुब्ह तक के लिये मुअख्खर कर दिया जाए और मुजरिम को मेरे हवाले कर दिया जाए। हिरक्ल बादशाह हज़रत युकना की ज़हानत और दूर अन्देशी से बे हद मुतअस्सिर था, लिहाज़ा उस ने हज़रत युकना की दरख्वास्त मन्ज़ूर कर ली। हज़रत युकना का मक्सद यह था कि इस वक्त मआमला गर्मा गर्मी का है, कल सुब्ह तक ठंडा हो जाएगा, तब दूसरी कोई तर्कीब इख्तियार करूंगा, लैकिन इस वक्त तो हज़रत ज़िरार की जान बचा लूं।

हज़रत युकना के लड़के भी हल्ब के दो सौ नौ मुस्लिम रूमियों के साथ आए हुए थे। हज़रत युकना ने हज़रत ज़िरार को अपने कब्ज़े में ले लिया और हज़रत युकना और इन के साहिबज़ादे अपने साथियों के हमराह हज़रत ज़िरार को बैः हौशी की हालत में अपनी हवेली में ले आए। हज़रत ज़िरार गशी के आलम में थे, हज़रत युकना और इन के शहज़ादे ने हज़रत ज़िरार के ज़ख्म साफ किये, दवा लगाई और मर्हम पट्टी की। इन को हौश में लाने के लिये चेहरे पर पानी का छिड़काव जारी रखा। हलक में पानी, दूध और दवा वगैरा थोड़े थोड़े वक्फा से डालते रहे। बिल-आखिर हज़रत ज़िरार को हौश आया। हज़रत युकना को अपने करीब देख कर इन की आंखों से शौ'ले बरसने लगे। हज़रत ज़िरार ने सख्त गुस्सा और नाराज़गी का

इज़हार करते हुए फरमाया कि ऐ युकना ! अफ्सोस है तुम पर कि तुम इस्लाम कबूल करने के बा'द दुनिया की जाह व हश्मत की लालच में आ कर मुर्तद हो गए हो। तब हज़रत युकना ने इन को पूरी कैफियत समझाई और हिरक्ल के साथ मक्रो फरैब का प्लान सुनाया। जिसे सुन कर हज़रत ज़िरार बहुत खुश हुए। फिर हज़रत युकना ने हज़रत अबू उबैदा की खिदमत में खत लिखा और पूरी सूरते हाल से आगाह किया और जल्द अज़ जल्द इस्लामी लश्कर को ले कर इन्ताकिया आ पहुंचने की गुज़ारिश की, रात में ही वह खत एक मुआहदी के साथ हज़रत अबू उबैदा की खिदमत में भेज दिया। हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत युकना का खत मिलते ही इस्लामी लश्कर को इन्ताकिया की तरफ कूच करने का हुक्म दिया।

इस्लामी लश्कर की इन्ताकिया आमद :-

दूसरे दिन हिरक्ल बादशाह ने हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर के साथ दो सौ मुजाहिदों को भी शहीद कर देने का इरादा किया और उस ने कनीस-ए शहर में बतारेका और राहिबों को जमा किया और अपने इरादा से मुत्तलेअ किया। हज़रत युकना ने खड़े हो कर हिरक्ल से कहा कि मुझे मेरे मुखबिरों ने खबर दी है कि मुसल्मानों का लश्कर हल्ब से कूच कर के इन्ताकिया पर हम्ला करने आ रहा है और अन्करीब वह यहां पहुंचने वाला है लिहाज़ा हम इस का भरपूर मुकाबला करेंगे। जंग में किस को गल्बा हासिल होगा यह अम्र तो मशीयते खुदावन्दी पर मौकूफ है, लैकिन जंग के दौरान हमारे कुछ लोग इन की कैद में जाएंगे। अगर आज हम ने इन दो सौ मुसल्मान कैदियों को मार डाला और इस अम्र की इन को इत्तिला' हो गई, तो हमारा आदमी कैद होते ही वह इन्तिकाम के जज़्बे में उस को हलाक कर देंगे, लिहाज़ा मुनासिब यह है कि हम इन दो सौ मुसल्मानों को अपनी हिरासत में रहने दें। और अगर दौराने जंग हमारे किसी आदमी को मुसल्मानों ने कैद कर लिया तो हम इन कैदियों से तबादला कर के अपने आदमी को छूड़ा सकेंगे। और अगर हम को जंग में फतह हासिल हूई और हमारा कोई आदमी मुसल्मानों की कैद में नहीं होगा और हम को तबादला की ज़रूरत न होगी, तो इन सब को हम कत्ल कर देंगे। लिहाज़ा उज्लत कर के इन को आज कत्ल करने से बेहतर यह है कि हम इन को अपनी कैद में रखें। इस में हमारा कोई नुक्सान नहीं। कैद में होने की वजह से वह हमारे कब्ज़ा व इख्तियार में होंगे, हम जब चाहेंगे इन्हें कत्ल कर सकेंगे।

हज़रत युकना ने मज़ीद फरमाया कि मैं ने अपनी राए पैश की है। इस वक्त यहां पर अर्बाबे सल्तनत और बतारेका की एक बड़ी जमाअत मौजूद है, आप इन से भी मश्वरा कर लें और फिर जो भी मुनासिब मा'लूम हो हुक्म सादिर फरमाएं। हज़रत युकना की बात सुन

कर कनीसा में मौजूद तमाम लोगों ने हज़रत युकना की राए की ताईद की और एक तज्वीज़ पैश की कि इस वक्त हम जिस कनीसा में जमा हुए हैं, वह शहर के तमाम कनीसों से उमदा है और शहर की हसीन व जमील ख्वातीन और लड़कियां जमा हैं। इलावा अर्ज़ी हर किस्म की ज़ीनत का सामान और दीबाज के कपड़े वगैरा भी है। हम इन अरबों को यह चीजें दिखा कर दीन से मुन्हरिफ कर देंगे। मुल्के हिजाज़ के भूके और गरीब इन चीज़ों को देख कर इस की तमाअ में हमारे दीन की तरफ रागिब हो जाएंगे और इन का इस तरह रागिब होना इन की पूरी कौम के लिये बाइसे नन्ग व आर होगा। बतारेका के इस मश्वरा को कबूल करते हुए हिरक्ल ने मुजाहिद कैदियों को कनीसा में लाने का हुक्म दिया। तमाम कैदी मुजाहिदों को कनीसा में लाया गया, लैकिन उन्हों ने दुनिया की ज़ीनत व मताअ की तरफ मुत्लक इल्तिफात न किया और उस से बे नियाज़ हो कर अपनी नज़रें नीची कर लीं :

तआलल्लाह इस्तग्ना तेरे दर के गदाओं का
कि इन को आर फिर्रो शौकते साहिबे कुरआनी है

(अज़ : इमामे इश्को मोहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

जैशे इस्लाम के मुजाहिदों की यह शाने इस्तग्ना देख कर बतरीक ने कहा कि ऐ गिरोहे अरब ! किस चीज़ ने तुम्हें बाज़ रखा है कि तुम हमारे दीन की तरफ पलटो और हिरक्ल बादशाह को खुश कर के उस से दुनिया की ने'मतें और खिल्अतें हासिल करो। **हज़रत रिफाआ बिन ज़हीर** ने जवाब में फरमाया कि हम उन में नहीं, जो ईमान को कुफ्र से बदल दें। अगर चे हम को तल्वार से काट कर टुक्ड़े टुक्ड़े कर दोगे, तब भी हम अल्लाह और रसूल से मुन्हरिफ नहीं होने वाले। हिरक्ल बादशाह को खुश कर के अल्लाह व रसूल को हम नाराज़ करना नहीं चाहते। तुम हिरक्ल की खुशी चाहते हो और हम अल्लाह और रसूल की रज़ा मन्दी चाहते हैं :

देव तुझ से खुश है फिर हम क्या करें
हम से राज़ी है खुदा फिर तुझ को क्या ?

(अज़ : इमामे इश्को मुहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

अल-किस्सा ! मुजाहिद कैदियों को इस्लाम से मुन्हरिफ करने की कौशिश में नाकाम हो कर हिरक्ल ने इन को कैद खाना में वापस भेज देने का हुक्म दिया और हज़रत युकना की कौशिश से मुजाहिद कैदियों की जानें बच गईं। फिर हिरक्ल कनीसा से अपने महल

वापस आया और रूमी लश्कर के सरदारों को हुक्म दिया कि अरबों का लश्कर अन्करीब इन्ताकिया आ रहा है, लिहाज़ा अपनी अपनी फौज के दस्तों को मुरत्तब व मुस्तअद करो और जंग की तैयारी में लग जाओ। फिर हिरक्ल ने अह्ले शहर को दिल खोल कर हथियार तक्सीम किया और कहा कि शहरे इन्ताकिया मुल्के शाम का दारुस-सल्तनत है। हम इस पर अरबों को किसी भी हाल में काबिज़ नहीं होने देंगे। लश्कर और रिआया दोनों मिल कर अरबों का मुकाबला करेंगे, सलीब की मदद से हम को ज़रूर गल्बा हासिल होगा और हम अरबों को भगा देने में काम्याब होंगे। इस्लामी लश्कर इन्ताकिया शहर पर हम्ला करने आ रहा है, यह खबर शहर में आम हो गई थी, लिहाज़ा इन्ताकिया का हर शहरी और फौजी देफाई अक्दाम और मुकाबलए जंग के लिये ज़ेहनी तौर से आमादा हो चुका था। हिरक्ल बादशाह की हौसला अफ्ज़ाई ने इन में लड़ने का जौश व जज़्बा पैदा कर दिया था। पूरे इन्ताकिया शहर और कुर्बो जवार में जंग का माहौल काइम हो गया था। और वह दिन भी आ पहुंचा, जब हिरक्ल अपने मुसाहिबों के हमराह रूमी लश्कर का मुआइना करने की गरज़ से लश्कर के मुख्तलिफ शो'बों में गश्त कर रहा था कि लोहे के पुल से चंद सवार भाग कर हिरक्ल के पास आए और इत्तिला' दी कि अरबों का लश्कर लोहे के पुल तक आ गया है, बल्कि पुल पर भी कब्ज़ा कर लिया है और पुल उबूर कर के किल्ले की तरफ आ रहा है। इस्लामी लश्कर ने लोहे के पुल पर कब्ज़ा जमा लिया है, यह सुन कर हिरक्ल को बहुत तअज्जुब हुवा। लिहाज़ा उस ने खबर देने वालों से दर्याफ्त किया कि पुल की निगरानी के लिये पुल के दो बुर्जों में तअय्युनात तीन सौ मुहाफिज़ों ने मुकाबला नहीं किया ? उन्हों ने कहा कि मुकाबला करना तो दर किनार, बुर्जों के मुहाफिज़ों ने ही आगे बढ़ कर मुसल्मानों को पुल सौंप दिया और मुसल्मानों का लश्कर बगैर किसी मुज़ाहमत के पुल पार कर रहा है।

मुहाफिज़ों का अज़ खुद इस्लामी लश्कर को पुल सौंपना :-

हिरक्ल बादशाह ने लोहे के पुल से मुलहिक दो बुर्ज बनाए थे और उस में तीन सौ मुसल्लह मुहाफिज़ को मुतअय्यन कर रखा था ताकि वह हर वक्त वहां मौजूद रह कर लोहे के पुल की निगेहबानी करते रहें, क्यूं कि इन्ताकिया के किल्ले तक पहुंचने के लिये लोहे वाला पुल पार करना लाज़िमी था। लिहाज़ा हिरक्ल बादशाह ने लोहे के पुल पर मुहाफिज़ मुतअय्यन कर दिया था, ताकि वह इस्लामी लश्कर को पुल पार करने में मुज़ाहिम हों और इस्लामी लश्कर के आने की खबर भी किल्ले में पहुंचा दें। इन तीन सौ (300) मुहाफिज़ों पर हिरक्ल बादशाह का एक दरबान निगरानी करता था। एक दिन वह दरबान चंद सिपाहियों को ले कर

मुहाफिज़ों की जांच पड़ताल के लिये हस्बे मा'मूल गया तो क्या देखा कि तमाम मुहाफिज़ शराब के नशे में लड़खड़ा रहे हैं और पुल की निगेहबानी में बे एहतियाती और गफ्लत बर्ती जा रही है, लिहाज़ा हिरक्ल के दरबान ने अपने साथ आए सिपाहियों को हुक्म दिया कि हर एक को पचास पचास कोड़े मारो। लिहाज़ा सिपाहियों ने तमाम मुहाफिज़ों को पचास पचास कोड़े मार कर इन की पीठ की चमड़ी उधेड़ डाली थीं। और इन को धमकी दी थी कि आज तो सिर्फ इतनी सज़ा दे कर छोड़ दिया है। आइन्दा अगर ऐसी गलती की तो तुम को मार डालूंगा, लिहाज़ा वह तमाम मुहाफिज़ जले भुने और इन्तिकाम की आग दिल में जलाए, गुस्से में भरे हुए थे। और कीना से सीने लबरेज़ किये हुए थे। जब हज़रत अबू उबैदा इस्लामी लश्कर ले कर लोहे के पुल पर आए, तो इन मुहाफिज़ों ने अपने लिये अमान हासिल कर के पुल के दरवाज़े खोल दिये। पुल के दरवाज़े खुलते ही इस्लामी लश्कर ने पुल पर कब्ज़ा कर लिया और पुल उबूर कर के करीब ही एक जगह पर अपना कैम्प काइम कर दिया।

❀ हिरक्ल ने रूमी लश्कर को किल्ले से बाहर निकाला :-

जब हिरक्ल बादशाह ने इस्लामी लश्कर के आने और लोहे का पुल उबूर करने की खबर सुनी, तो बड़े कनीसा में तमाम मुलूक और बतारेका को जमा किया और तक्रीर करते हुए कहा कि मैं हमेंशा तुम को अरबों के तसल्लुत और गल्बे के मुतअल्लिक आगाह करता रहा, लैकिन अब वह वक्त आया है कि अरबों का लश्कर मुल्के शाम के दारुस-सल्तनत और बुज़ुर्गी के ताज के घर तक आ गया। लिहाज़ा अगर तुम ने लड़ने में सुस्ती और बुज़दिली की, तो मुझे खौफ है कि वह हमारे शहर पर भी काबिज़ हो जाएंगे। हमारे मालो अस्बाब छीन लेंगे, हमारी औरतों को लोंडी और हमारे बच्चों को गुलाम बनाएंगे और हमारे आबा व अज्दाद ने बड़ी अकीदत से जिन कनीसों को ता'मीर किया है, इन को मस्जिद बनाएंगे। हमारे दैरों और सूमुओं को खौद कर वीराना बनाएंगे। तुम्हारे किल्लों और शहरों के मालिक बन जाएंगे, लिहाज़ा तुम अपने दीन, अपने शहर, अपने अह्लो अयाल, अपने मालो अस्बाब और अपनी इज़्ज़त के तहफ्फुज़ के लिये जान की बाज़ी लगा कर लड़ो, ताकि हमारे बाप दादा के नाम को बट्टा न लगे। वर्ना दुनिया वाले यही कहेंगे कि इन के बाप दादाओं ने कनीसे बना कर इन को दिये और यह इन कनीसों की हिफाज़त न कर सके और इन कनीसों को मसाजिद बनाने के लिये अरबों को सौंप दिया। लिहाज़ा आर और नदामत से बचने के लिये दिलैरी और जवांमर्दी से लड़ो, सलीबे आ'ज़म की मदद तुम्हारे साथ है और तुम को गल्बा और फतह हासिल होगी।

हिरक्ल की तक्रीर सुन कर सब ने ब-यक ज़बान कहा कि कसम है हक्के मसीह की ! हम शिकस्त उठाने के मुकाबले में मर जाना ज़ियादह मुनासिब जानते हैं। आज तक जो हुवा सौ हुवा, लैकिन अब हम ऐसी दिलैरी का मुज़ाहिरा करेंगे कि अरबों के लिये राहे फरार इख्तियार करने के इलावा कोई चारा न होगा। फिर हिरक्ल ने रूमी लश्कर को किल्ले के बाहर निकल कर मैदान में पड़ाव करने का हुक्म दिया। हुक्म मिलते ही रूमी लश्कर किल्ले के बाहर आया और लोहे के पुल के उस तरफ पड़ाव किया। लोहे के पुल के उस तरफ इस्लामी लश्कर ने पड़ाव किया था। दोनों लश्कर आमने सामने पड़ाव किये हुए थे। और दोनों लश्कर के दरमियान में वाकेअ वसीअ मैदान को जंग के लिये खाली छोड़ दिया गया था। ज़ैल में दर्ज नक्शे के मुआइना से इस्लामी लश्कर हल्ब के रास्ता से आ कर लोहे के पुल के मुहाफिज़ों के बुर्ज पर और पुल पर काबिज़ हो कर पुल उबूर कर के किस जगह पर कैम्प काइम किया और रूमी लश्कर ने किल्ले से निकल कर कहां पड़ाव किया और बीच में लड़ाई के लिये मैदान खाली छोड़ा इन तमाम का अंदाज़ा नज़रे वाहिद से हो जाएगा।
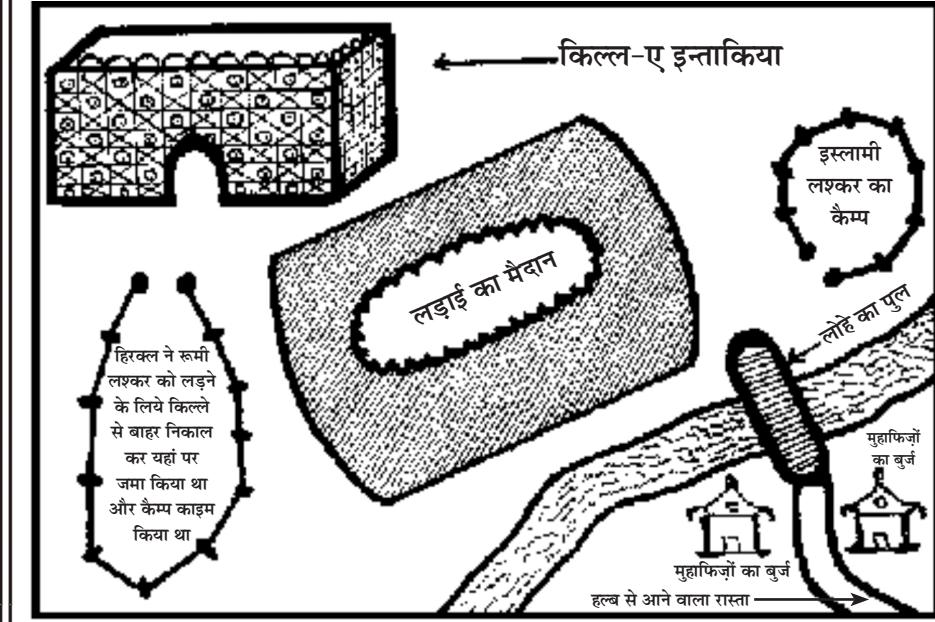
इस्लामी लश्कर की जंग में पहल :-

जब रूमी लश्कर किल्ले से निकल कर मैदान में आया, तो हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत खालिद बिन वलीद से फरमाया कि ऐ अबू सुलैमान ! सगे रूमी ने अपने लश्कर को लड़ने के लिये मैदान में भेजा है । अब तुम क्या मश्वरा देते हो ? हज़रत खालिद ने जवाब दिया कि ऐ सरदार ! रूमी लश्कर पर अपना रोअब और दबदबा काइम करने की गरज़ से हम भी इस्लामी लश्कर की ज़ीनत ज़ाहिर कर के इस्लाम की कुव्वत और शान व शौकत दिखाएं, क्यूं कि अल्लाह तबारक व तआला ने कुरआन मजीद में इर्शाद फरमाया है :

وَاَعِدُّوا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ وَّ مِنْ
رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ

(सूरतुल अन्फाल, आयत : 60)

तर्जुमा : **और इन के लिये तैयार रखो जो कुव्वत तुम्हें बन पड़े और जितने घोड़े बांध सको कि इन से उन के दिलों में धाक बिठाव जो अल्लाह के दुश्मन और तुम्हारे दुश्मन हैं ।''** (कन्ज़ुल ईमान)

हज़रत खालिद बिन वलीद का मश्वरा कबूल करते हुए हज़रत अबू उबैदा ने इस्लामी लश्कर को शान व शौकत का मुज़ाहिरा करते हुए मैदान में उतारने का फैसला किया । आप ने तमाम मुजाहिदों को मैदान में जाने का हुक्म दिया और हस्बे ज़ैल तर्तीब से किस्त वार इस्लामी लश्कर को मैदान में भेजा ।

(1) हज़रत सईद बिन ज़ैद बिन अम्र बिन नुफैल अदवी को निशान दे कर तीन हज़ार सवारों के साथ रवाना किया ।

(2) फिर हज़रत राफेअ बिन हुमैरा ताई को निशान (अलम) दिया और इन के साथ दो हज़ार सवारों को मैदान में भेजा ।

(3) फिर हज़रत मैसरा बिन मस्रूक को निशान (अलम) दिया और तीन हज़ार सवार इन के हमराह भेजे ।

(4) फिर हज़रत मालिक बिन हर्स उश्तर नखई को निशान दे कर इन के साथ तीन हज़ार सवार मैदान में उतारे ।

(5) फिर हज़रत खालिद बिन वलीद को हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहो

मर्दाने अरब ...... हिस्सा दौम

तआला अन्हो का बनाया हुवा ''**निशाने एकाब**'' अता फरमाया और इन के साथ ''**लश्करे ज़हफ**'' के दो हज़ार सवार रवाना फरमाए ।

(6) फिर बाकी लश्कर को ले कर हज़रत अबू उबैदा बज़ाते खुद मैदान में तशरीफ लाए ।

मैदान में आने के बा'द इस्लामी लश्कर की सफ बन्दी की गई और इस्लामी लश्कर की तर्तीब दी गई । इस्लामी लश्कर के मैदान में आते ही हिरक्ल ने अपना लश्कर तर्तीब दिया ।

हज़रत दामिस अबूल हुलूल का बतरीक बस्तूरस से मुकाबला :-

हिरक्ल ने रूमी लश्कर से लड़ने के लिये सब से पहले बतरीक ''बस्तूरस बिन रमन्द'' को मैदान में भेजा । बस्तूरस लड़ाई के फन का माहिर और कुहना मश्क शुजाअ था । उस की बहादुरी और दिलैरी का चर्चा रूमियों के घर घर में होता था । हिरक्ल के लश्कर में शामिल हो कर वह अमालका, फारस और तुर्क के लश्करों से लड़ा था । और बहुत ही नुमाया कारनामा अन्जाम दिया था । बतरीक बस्तूरस ने लोहे की ज़िरह, खौद वगैरा इत्ना सामाने जंग पहना था कि दूर से वह लोहे का इन्सान नज़र आता था । दोनों आंख की पुतलियों के सिवा उस के जिस्म का कोई उज़्व नज़र नहीं आता था । मैदान में आते ही उस ने ललकार कर मुकाबिल तलब किया । इस्लामी लश्कर की जानिब से **कबीला बनी ज़र्फ के गुलाम हज़रत दामिस अबूल हुलूल** सवार हो कर मैदान में आए । दोनों ने एक दूसरे पर हम्ला कर दिया और शम्शीर ज़नी शुरू हूई, लैकिन थोड़ी ही दैर में हज़रत दामिस अबूल हुलूल के घोड़े ने ठोकर खाई और ज़मीन पर गिरा । इस मौके का फाइदा उठा कर बस्तूरस हज़रत दामिस पर काबिज़ हो गया और उन को कैद कर के रूमी लश्कर में भाग गया और अपने खैमे में जा कर हज़रत दामिस को अपने गुलामों को सौंप दिया और इन पर निगरानी करने का हुक्म दे कर वापस मैदान में लड़ने आया । अब उस का हौसला बुलन्द हो गया था । रूमी लश्कर के सिपाही उस की काम्याबी पर उसे मुबारकबादी दे कर उस की हौसला अफ्ज़ाई कर के उसे उभारते और उक्साते थे । बतरीक बस्तूरस फूला न समाता था और घमंड और गुरूर के नशे में चीख चीख कर लड़ने वाला तलब करता था ।

हज़रत ज़ेहाक बिन हस्सान की मैदान में आमद :-

बतरीक बस्तूरस के पुकारने पर हज़रत ज़ेहाक बिन हस्सान मा'रक-ए मैदान में आए । हज़रत ज़ेहाक बिन हस्सान शक्ल व सूरत में हज़रत खालिद बिन वलीद से इतनी

ज़ियादह मुशाबहत रखते थे कि अगर इन को हज़रत खालिद बिन वलीद के करीब में खड़ा कर दिया जाए तो इम्तियाज़ करना मुश्किल हो जाए कि कौन हज़रत खालिद हैं और कौन हज़रत ज़ेहाक हैं ? इलावा अज़ीं हज़रत ज़ेहाक बिन हस्सान भी हज़रत खालिद के ढंग और तरीके से लड़ते थे । इन को लड़ता हुवा दैख कर हर शख्स यही गुमान करता कि हज़रत खालिद बिन वलीद लड़ रहे हैं । हज़रत ज़ेहाक बिन हस्सान और बस्तूरस में जंग शुरू हूई । दोनों ने तल्वार ज़नी के कर्तब दिखाए । एक दूसरे पर जिस सुरअत और शिद्दत से वार करते थे और हर एक वार को खाली फैरने के लिये जिस तरीके से वार को सिपर (ढाल) पर लेता था इस को देख कर दोनों लश्कर के लोग दंग रह गए । तलवारों से आग की चिंगारियां उठती थीं । हज़रत ज़ेहाक बिन हस्सान के लड़ने का ढंग दैख कर रूमी लश्कर के सिपाहियों ने यह समझा कि हज़रत खालिद बिन वलीद हैं । हज़रत खालिद बिन वलीद का नाम पूरे मुल्के शाम में इत्ना मश्हूर था कि बच्चा बच्चा आप के नाम से वाकिफ था और आप की शुजाअत व दिलैरी की वह हैबत और दबदबा था कि रूमी लश्कर का हर सिपाही आप का नाम सुन कर थर थर कांपता था । जब रूमी लश्कर में यह बात फैली कि बतरीक के सामने लड़ने वाले हज़रत खालिद बिन वलीद हैं, तो हज़रत खालिद को देखने के लिये रूमियों में धक्का धक्की और रेला पीली शुरू हो गई । हर शख्स आगे बढ़ कर हज़रत खालिद बिन वलीद को करीब से लड़ता हुवा देखने का ख्वाहिशमन्द था । पस एक हुजूम और इन्तिशार बर्पा हो गया । लोग एक दूसरे को धक्के देने लगे और धक्का लगने वाले गिरने लगे और गिरने वाले अपना तवाज़ुन बर-करार रखने के लिये खैमे की रस्सियां थामने लगे । नतीजतन खैमे मुन्हदिम होने लगे । बतरीक बस्तूरस की तरफ के तमाम खैमे गिर गए और बस्तूरस का खैमा भी मुन्हदिम हो गया । बस्तूरस का खैमा ज़ीनत और आसाइश के अस्बाब से आरास्ता था । पुर-तकल्लुफ सामान से खैमा सजा हुवा था । बस्तूरस की नशिस्त गाह बादशाह के तख्त के मानिन्द बनाई गई थी । खैमा मुन्हदिम होते ही उस का तख्त व दीगर अश्या दिर्हम बरहम हो गईं । खैमा की वज़नी चौबें, रस्सियां और कड़े वगैरा तमाम अश्या उलट पलट हो गईं । हज़रत दामिस अबूल हुलूल इसी खैमा में ब-हालते कैद थे । बस्तूरस के खैमा की निगरानी और इन्तिज़ाम के लिये तीन अश्खास मुतअय्यन थे । खैमा के मुन्हदिम होने पर वह तीनों खैमा फराश घबराए कि अगर बस्तूरस मा'रक-ए जंग से वापस आया और अपना खैमा इस हाल में पाया तो हमारी खैर नहीं । अगर इस को गुस्सा आ गया तो हमारी गर्दनें उड़ा देगा । लिहाज़ा उन्हों ने खैमा खड़ा करना शुरू किया, लैकिन खैमा की वज़न दार चौबें इन से उठती नहीं थीं, लिहाज़ा

उन्हों ने हज़रत दामिस अबूल हुलूल से हाथ बटाने की दरख्वास्त की । हज़रत दामिस ने कहा कि मैं तुम्हारी मदद किस तरह कर सकता हूं ? मेरे तो हाथ बंधे हुए हैं । मेरे हाथ खोल दो तो मैं मदद कर सकता हूं । खैमा फराशों ने हज़रत दामिस की वज़अ-कतअ देख कर यह गुमान किया कि यह कोई अरब सरदार नहीं या इस्लामी लश्कर का शेहसवार भी मा'लूम नहीं होता । कोई मा'मूली गुलाम लगता है लिहाज़ा इस से मज़दूरी का काम करा लें और काम पूरा हो जाने के बा'द फिर इस को बांध देंगे, लिहाज़ा उन्हों ने हज़रत दामिस की मुश्कें खोल दीं । लैकिन इन खैमा फरोशों को मा'लूम नहीं था कि गुलाम नज़र आने वाला यह मर्दे मुजाहिद इस्लामी लश्कर का शैरे बबर है ।

हज़रत दामिस खैमे की चौबें दुरुस्त करने में खैमा फराशों की मदद करने लगे । खैमे में बस्तूरस के हथियार काफी ता'दाद में पड़े थे । एक से बढ़ कर एक उमदा और पानी दार तलवारें पड़ी हूई थीं । खैमा फराश की मदद करते हुए अचानक हज़रत दामिस ने एक तल्वार उठा ली और अपने करीब वाले खैमा फराश की गर्दन उड़ा दी । यह देख कर बाकी दोनों खैमा फराशों ने हज़रत दामिस पर हम्ला किया, लैकिन हज़रत दामिस ने बिजली की सुरअत से दोनों की गर्दनें मार दीं । फिर हज़रत दामिस ने खैमे में पड़ी एक बड़ी सन्दूक को खोला तो वह सन्दूक बतरीक के उमदा लिबासों से भरा हुवा था । हज़रत दामिस ने उमदा लिबास पहन लिया और खैमे में पड़े हुए सामाने जंग से ज़िरह, खौद, वगैरा पहन लिये और फिर एक तल्वार ले कर बतरीक बस्तूरस के बंधे हुए घोड़ों में से एक घोड़े पर सवार हो कर रूमी लश्कर में उस जगह आ कर ठहरे, जहां नस्रानी अरबों का लश्कर खड़ा था । हज़रत दामिस ने बतरीक के खैमे में पड़े सामाने जंग से इत्ना सामान पहन लिया था कि इन की दोनों आंखों के सिवा जिस्म का कोई हिस्सा नज़र नहीं आता था । लिहाज़ा किसी को इन पर शक नहीं हुवा । फिर हज़रत दामिस आहिस्ता आहिस्ता **अरब मुतनस्सिरा के लश्कर के सरदार और जबला बिन ऐहम गस्सानी के भतीजे हाज़िम बिन अब्द यगूस के करीब आ कर खड़े हो गए** और लोगों के साथ हज़रत ज़ेहाक बिन हस्सान और बतरीक बस्तूरस की लड़ाई देखने लगे ।

हज़रत ज़ेहाक और बस्तूरस बराबर लड़ते रहे, यहां तक कि दोनों थक कर निढाल हो गए और अलग हो गए । बस्तूरस रूमी लश्कर में वापस लौट गया और हज़रत ज़ेहाक इस्लामी लश्कर में वापस तशरीफ ले आए । जब बस्तूरस अपने खैमे पर आया तो क्या देखा कि उस का खैमा मुन्हदिम पड़ा हुवा है और उस के तीनों खादिम मक्तूल पड़े हुए हैं और

हज़रत दामिस अबूल हुलूल भी गाइब हैं। वह समझ गया कि यह काम हज़रत दामिस ने ही किया है, उस ने शौर व गुल मचा दिया और फौरन हिरक्ल बादशाह को इत्तिला' दी। हिरक्ल ने हुक्म दिया कि उस को ढूंढ निकालो और फौरन खत्म कर दो। वह शख्स हमारे लश्कर में ही कहीं छुपा हुवा होगा क्यूं कि हमारे लश्कर से भाग कर कोई भी शख्स सामने की तरफ नहीं गया। हिरक्ल का हुक्म मिलते ही रूमी लश्कर में भगदड़ मच गई और हज़रत दामिस की तलाश शुरू हूई। एक हंगामा मच गया और शौर व गुल बुलन्द हुवा। हज़रत दामिस समझ गए कि यह सब मेरी जुस्तजू व तलाश में हो रहा है। वह होशियार और चौकन्ना हो गए और अपनी तल्वार निकाल कर करीब में खड़े जबला बिन ऐहम गस्सानी के भतीजे और नस्रानी अरबों के लश्कर के सरदार हाज़िम बिन अब्देयगूस पर तल्वार की ज़र्ब मारी और इस की गर्दन उड़ा दी और तैज़ी से घोड़ा दौड़ाते हुए इस्लामी लश्कर की तरफ भागे। रूमियों ने इन का तआकुब किया, लैकिन उन्हों ने अपने घोड़े की बाग ढीली छोड़ दी और घोड़ा हवा से बातें करता हुवा बर्क रफ्तारी से इस्लामी लश्कर में पहुंच गया। हज़रत दामिस को सहीह व सालिम वापस आता देख कर मुजाहिदों ने तहलील व तक्बीर की फलक शगाफ सदाएं बुलन्द कर के इन का खैर मकदम किया। हज़रत दामिस हज़रत अबू उबैदा की खिदमत में आए और पूरी तफ्सील बयान की। सुन कर हज़रत अबू उबैदा बहुत ही खुश हुए और दुआ दी कि तुम्हारे हाथ कभी न थकें।

❀ रूमतुल कुबरा के हाकिम की तीस हज़ार के लश्कर के साथ हिरक्ल की मदद के लिये आमद :-

जब जबला बिन ऐहम गस्सानी को अपने भतीजे हाज़िम बिन अब्द यगूस के कत्ल होने की खबर मिली, तो वह मिस्ले शौ'ल-ए आग भड़क उठा और खशमनाक हो कर हिरक्ल बादशाह के पास आया और कहा कि ऐ बादशाह! मुसल्मानों की जुर्अतें बहुत बढ़ गईं हैं। आप हम को हुक्म दें कि हम पूरा लश्कर ले कर अरबों पर टूट पडें और इन का सफाया कर दें। मेरे भतीजे की मौत का सदमा मेरे लिये ना-काबिले बरदाश्त है। मेरे सीने में इन्तिकाम की आग शौ'ला ज़न है। इस को में अरबों का खून पानी की तरह बहा कर ठंडा करना चाहता हूं। हिरक्ल जबला को यल्गार का हुक्म देने वाला ही था कि एक बतरीक दौड़ता हुवा आया और हिरक्ल को इत्तिला' दी कि **रूमतुल कुबरा का हाकिम फलीतानूस** तीस हज़ार का लश्कर ले कर हमारी कुमुक करने आया है। यह खबर सुन कर हिरक्ल ने जबला से कहा कि देखो! सलीब हम पर मेहरबान हो गई है और हमारी कुमुक के लिये रूमतुल

कुबरा का हाकिम आ पहुंचा है। लिहाज़ा हमें यल्गार करने में जल्द बाज़ी नहीं करनी चाहिये बल्कि अब रूमतुल कुबरा के हाकिम के लश्कर को साथ ले कर हम आइन्दा कल इस्लामी लश्कर पर युरिश करेंगे, ताकि ज़ियादह ताकत से हम हम्ला आवर हो सकें। फिर हिरक्ल रूमतुल कुबरा के हाकिम का इस्तिक्बाल करने गया।

हिरक्ल ने रूमतुल कुबरा के हाकिम का शानदार इस्तिक्बाल किया और ऐन लड़ाई के वक्त उस के आने को नैक शगून जाना और फतह व गल्बा की उम्मीद बांधी और इस की खुशी में घन्टे बजाए गए और नाकूस फूंके गए। सलीबें बुलन्द की गईं और कल्मए कुफ्र के ना'रे लगाए गए। हर तरफ एक अजीब शौर व गुल हुवा। शहर इन्ताकिया और रूमी लश्कर में भी यह खबर फैली कि रूमतुल कुबरा का हाकिम फलीतानूस अपने लश्कर के साथ हिरक्ल बादशाह की कुमुक करने आ पहुंचा है। जासूसों ने हज़रत अबू उबैदा को इस अम्र की इत्तिला' दी, इस्लामी लश्कर में तश्वीश और इज़्तिराब फैला कि अब साहिली इलाका के हुक्काम इन्ताकिया आ कर हिरक्ल की मदद करने जमा हो रहे हैं। हज़रत अबू उबैदा ने बारगाहे खुदावन्दी में खुशूअ और खुजूअ के साथ दुआ की :

"ऐ मेरे अल्लाह! परागन्दा कर दे इन की जम्ईयत को और मुतफर्रिक कर दे इन के कलमे को और हलाक कर दे इन के लश्करों को, और उखेड़ दे इन के कदमों को और हमारे कल्मे को बुलन्द फरमा और हमारी मदद फरमा, जैसी कि तू ने जंगे अहज़ाब के दिन अपने हबीब सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की मदद फरमाई थी।"

❀ हज़रत मआज़ बिन जबल का साहिली इलाकों पर हम्ला :-

हज़रत अबू उबैदा ने सोचा कि रूमतुल कुबरा के हाकिम का अपने लश्कर के साथ हिरक्ल की कुमुक करने आने का मत्लब यह है कि मुल्के शाम की तमाम रियासतें हिरक्ल बादशाह की कुमुक के लिये अपना लश्कर इन्ताकिया रवाना करेंगी और वह तमाम मुत्तहिद हो कर हम से लड़ेंगे, लिहाज़ा अब कोई रूमी हाकिम अपना लश्कर इन्ताकिया न भेजे बल्कि अपने ही इलाके में महदूद व मुकैयद रहे, इस के लिये लाज़िमी है कि इन के इलाकों में दहशत फैलाई जाए, ताकि वह अपने इलाका की हिफाज़त करने के लिये अपने अपने इलाके में रुके रहें। लिहाज़ा हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत मआज़ बिन जबल को तीन हज़ार सवारों का लश्कर दे कर साहिली इलाकों की तरफ रवाना किया और इन को हुक्म दिया कि साहिली इलाकों में वाकेअ शहरों को ताख्त व ताराज करना शुरू करो ताकि इन इलाकों के हाकिम

अपने शहरों की हिफाज़त के लिये फिक्र मन्द हों और हिरक्ल की कुमुक करने इन्ताकिया आने का कस्द न करें। लिहाज़ा हज़रत मआज़ बिन जबल तीन हज़ार सवारों को ले कर रवाना हुए। और साहिली इलाकों के शहरों को ताख्त व ताराज करना शुरू किया। हज़रत मआज़ बिन जबल किसी भी शहर में पड़ाव नहीं करते थे। बल्कि आंधी, तूफान की तरह किसी शहर पर आ पड़ते और फिर वहां से रवाना हो जाते और फिर किसी दूसरे शहर पर धावा बोल देते, लिहाज़ा साहिली इलाके के शहरों में दहशत फैल गई कि इस्लामी लश्कर हमारे इलाके में घूम रहा है और न जाने कब हम पर आ पड़े, तमाम शहरों के हाकिम अपने अपने शहर की हिफाज़त के सिल्सिले में फिक्र मन्द हुए और जिन शहरों के हाकिम अपना लश्कर भेज कर हिरक्ल की कुमुक करने का इरादा रखते थे, उन्हों ने अपना लश्कर इन्ताकिया भेजने का इरादा तर्क कर दिया और अपने शहर की हिफाज़त करने में उलझ गए।

हज़रत मआज़ बिन जबल साहिली इलाकों के शहरों को ताख्त व ताराज करते हुए मुल्के शाम के नस्रानी अरबों के शहर **''बाबे जबला''** तक पहुंचे। वहां का हाकिम जबला बिन ऐहम गस्सानी का चचाज़ाद भाई **अनान बिन जर्हम गस्सानी** था। वह हिरक्ल बादशाह के बेटे कुस्तुनतीन का एक नम्बर का चमचा था। हिरक्ल के बेटे ने तराबुलुस, एक्का, सूर और कैसारिया नामी मकामात से रसद और गल्ला जमा कर के हिरक्ल के लश्कर के लिये इन्ताकिया रवाना किया था और गल्ला का अज़ीम ज़खीरा इस ने अनान बिन जर्हम गस्सानी हाकिम जबला की निगरानी में शहर कैसारिया से रवाना किया था। अनान बिन जर्हम गल्ला ले कर अपने काफले के साथ **''कैसारिया''** से रवाना हो कर **''जबला''** और **''लाज़िकिया''** नामी शहरों के दरमियान बर सरे राह था कि हज़रत मआज़ बिन जबल के लश्कर से उस की भैंट हो गई। हज़रत मआज़ बिन जबल के लश्कर ने उस पर हम्ला कर दिया और एक ही गरदावे में उस काफले का सफाया कर दिया और तमाम गल्ले पर कब्ज़ा कर लिया और फिर इस्लामी लश्कर के कैम्प इन्ताकिया वापस आ गए। हज़रत मआज़ बिन जबल को कसीर मिक्दार में गल्ला ब-तौर माले गनीमत, साथ ले कर लौटने पर इस्लामी लश्कर में खुशी की लहर दौड़ गई और मुजाहिदों ने तहलील व तक्बीर के ना'रे बुलन्द कर के इन का शानदार इस्तिक्बाल किया। इस्लामी लश्कर के कैम्प में शौर व गुल बुलन्द होता सुन कर हिरक्ल ने अपने जासूसों को इत्तिला' लेने भेजा। इन जासूसों ने इत्तलाई दी कि कुस्तुनतीन ने कैसारिया से रूमी लश्कर के लिये जो रसद भेजा था, इस को मुसल्मानों ने छीन लिया है और अपने कैम्प में पहुंचा दिया है। और रसद आने की खुशी में ना'रों की सदाएं बुलन्द हो रही हैं। हिरक्ल पर यह मआमला बहुत शाक और दुश्वार गुज़रा क्यूं कि लश्कर के

लिये रसद की सख्त ज़रूरत थी और जिस रसद के आने का वह इन्तिज़ार कर रहा था और जिस रसद पर इसे ए'तमाद था वह लूट चुका।

रूमतुल कुबरा के हाकिम फलीतानूस और हिरक्ल बादशाह में इख्तिलाफ :-

रूमतुल कुबरा के हाकिम फलीतानूस का शानदार इस्तिक्बाल कर के उसे हिरक्ल के लश्कर में लाया गया और खैमा नसब कर के ठहराया गया। हिरक्ल का इरादा यह था कि रूमतुल कुबरा के हाकिम के आने के दूसरे ही दिन इस्लामी लश्कर पर यल्गार की जाएगी, जैसा कि उस ने जबला बिन ऐहम से कहा था, लैकिन रूमतुल कुबरा के हाकिम ने हिरक्ल को इत्तिला' दी कि साहिली इलाकों के बड़े शहरों के लश्कर भी कुमुक करने अन्करीब आ रहे हैं, लिहाज़ा हिरक्ल ने इन के पहुंचने तक हम्ला मौकूफ कर दिया। लैकिन हज़रत मआज़ बिन जबल की कयादत में इस्लामी लश्कर के दौरा करने से इन इलाकों के लश्कर इन्ताकिया आने से रुक गए। अलबत्ता कुर्बो जवार के छोटे छोटे कस्बात व दिहात स्कबाबर्स, तर्सूस, मसीसा, दरास, माहिया, अक्सर, फागना और मारेहा वगैरा के हाकिम और सरदार अपने साथ छोटे छोटे काफले ले कर आ पहुंचे, लैकिन किसी बड़े शहर का कोई लश्कर अभी तक नहीं आया। हिरक्ल इसी इन्तिज़ार में था कि इस को इत्तिला' मिली की इस्लामी लश्कर ने हमारी रसद व गल्ला छीन लिया है, लिहाज़ा उस ने मज़ीद तवक्कुफ करना ना-मुनासिब जाना और रूमी लश्कर को कैम्प से निकल कर मारक-ए मैदान में जाने का हुक्म दिया। रूमी लश्कर को तर्तीब देने की ज़िम्मेदारी हिरक्ल ने हज़रत युकना को सुपुर्द की। लिहाज़ा हज़रत युकना ने रूमी लश्कर की सफ बन्दी और तर्तीब शुरू की, लैकिन इस में किसी किस्म की उमदगी न थी। बे सलीका और घटिया किस्म की सफ बन्दी और तर्तीब की थी। हिरक्ल बादशाह अपने मुसाहिबों, बतारेका, मुलूक और सरदारों के हमराह लश्कर के साथ मैदान में आया था। इस्लामी लश्कर भी अपने कैम्प से निकल कर मैदान में आ गया था। **दोनों लश्कर आमने सामने आ गए।**

हिरक्ल बादशाह को खुश करने की गरज़ से रूमतुल कुबरा का हाकिम फलीतानूस हिरक्ल के सामने आया। झुक कर उस की ता'ज़ीम बजा लाते हुए कहा कि ऐ बादशाह ! मैं दो सौ फर्सख (छ सौ मील)से सिर्फ आप की ता'ज़ीम और हज़रत मसीह की रज़ा जूई की गरज़ से आया हूं। मुल्के शाम के अक्सर बतारेका इन अरबों से लड़ चुके हैं और सब को आप ने आज़मा लिया है, लैकिन आज मैं सब से पहले लड़ने के लिये निकलने का

इरादा रखता हूं, ताकि मैं अरबों से लड़ कर अपने दिल को तस्कीन दूं। लिहाज़ा आप मुझे मैदाने जंग में जाने की इजाज़त मरहमत फरमाएं। हिरक्ल ने कहा कि ऐ मेरे खैर अंदेश और हमदर्द ! मैं तुम्हारी मुहब्बत और जज़्बए ईसार का तहे दिल से शुक्र गुज़ार हूं, लैकिन तुम्हारा सब से पहले मैदान में जाना मुनासिब नहीं, क्यूं कि तुम एक अज़ीम और कदीम रियासत के बादशाह हो, और तुम्हारा इब्तिदा ही में मैदान में जाना अरबों को अहमियत देने का बाइस होगा, पहले हमारे लश्कर के आम लोग और आम सिपाही जाएं, बा'द में हम सरदार और बादशाह लोग मैदान में जाएंगे, ताकि हमारा रोअब और दबदबा बर-करार रहे। हिरक्ल को जवाब देते हुए फलीतानूस ने कहा कि ऐ बादशाह ! अब रोअब व दबदबा की बात मत करो, हमारा रोअब और दबदबा माज़ी की बात हो गई है, अब हमारा दबदबा कहां है ? अरबों ने हमारे कामों को मोहमल और बेकार कर दिया है, हमारे दीन के पेश्वाओं और बुज़ुर्गों को ज़लील व ख्वार कर दिया है, हमारे माय-ए नाज़ शहरों को और किलओं को फतह कर के इन पर काबिज़ हो गए हैं। हमारे लाखों की ता'दाद पर मुशतमिल मुसल्लह लश्करों को इन के मुठ्ठी भर बे साज़ व सामान गिरोह ने शिकस्त दे दी है। यह सब हमारी बुज़दिली, तकल्लुफात, तसन्नोअ और हमारी दीन की बे कद्री और इस से इन्हराफ का नतीजा है। जब कि यह अरब सख्ती से अपने दीन की और शरीअत की पाबन्दी करते हैं और इस का सिला इन को यह मिला है कि हमारा रोअब व दबदबा ज़ाइल हो कर इन का रोअब व दबदबा काइम हो गया है। बल्कि हमारे मुल्क पर कब्ज़ा और तसल्लुत काइम हो गया है। लिहाज़ा अब अपने रोअब व दबदबे की गलत फहमी में मत रहो। हमारा रोअब और दबदबा एक ज़माना में था। लैकिन अब वह नाबूद हो गया है। और मेरी एक बात यह भी सुन लो कि...

हाकिम फलीतानूस मज़ीद कुछ कहना चाहता था लैकिन हिरक्ल के बड़े मुसाहिब ने चिल्ला कर और डांटते हुए फलीतानूस से कहा कि **बस करो। बहुत कुछ कह लिया।** अब ज़ियादह बक बक कर के बादशाह के दिल को मज़ीद परेशान मत करो। तुम से पहले कई लोगों ने बादशाह को इस किस्म की नसीहत कर के अपनी ज़हानत के आ'ला मैआर के इज़्हार की बहुत कोशिशें की हैं। बादशाह हम सब से ज़ियादह इन बातों से वाकिफ है, लिहाज़ा बादशाह को नसीहत करने की कोई ज़रूरत नहीं। इस वक्त हम मैदाने जंग में हैं। किसी वअज़ व नसीहत की मजलिस में नहीं।

हिरक्ल के बड़े मुसाहिब ने बर सरे आम हाकिम फलीतानूस का मुंह तोड़ जवाब दिया और उस के मन्सब का बिल्कुल लिहाज़ न करते हुए उस की तज़लील की और उस के

मुंह पर ठीकरी रख दी, लैकिन हिरक्ल ने अपने मुसाहिब को इस तरह की गुफ्तगू करने से बाज़ न रखा और न ही हाकिम फलीतानूस की तज़लील करने पर किसी किस्म की सरज़निश की। लिहाज़ा हाकिम फलीतानूस सहम गया और मुंह पसार कर रह गया। और मुंह फुला कर अपनी जगह जा कर ठहर गया और मैदान में जाने का इरादा तर्क कर दिया। हाकिम फलीतानूस को मुसाहिब की बात से ज़ियादह बुरा हिरक्ल का खामौश रहना लगा। उसे गुस्सा तो बहुत आया, लैकिन गुस्सा पी कर रह गया। तहम्मुल से काम लेते हुए गुस्से और कदूरत को दिल में छुपा लिया, लैकिन हिरक्ल की जानिब से उस के दिल में सख्त नफरत पैदा हो गई।

फिर हिरक्ल दिन भर आम सिपाहियों को मैदान में उतारता रहा। रूमी सिपाही मैदान में जाता, लैकिन इस्लामी लश्कर का मुजाहिद एक ही गरदावे में उसे खाक व खून में मिला देता। यह सिल्सिला सुब्ह ता शाम जारी रहा। हिरक्ल ने अपने लश्कर से किसी भी ज़ी वकार सरदार या अहमियत वाले बतरीक को लड़ने के लिये नहीं भेजा बल्कि मा'मूली किस्म के सिपाहियों को मैदान में भेजा। उस के रवय्या से ऐसा महसूस होता था कि उस को जंग से रग्बत व दिलचस्पी नहीं, बल्कि वह रसमन जंग कर रहा है। गुरूबे आफ्ताब से बहुत पहले ही उस ने अपने लश्कर को कैम्प में वापस जाने का हुक्म दे दिया और आफ्ताब गुरूब होने का इन्तिज़ार भी नहीं किया। गुरूबे आफ्ताब से पहले ही दोनों लश्कर जंग मौकूफ कर के अपने कैम्प में वापस आ गए।

❀ हाकिम फलीतानूस का मअ अपने रुफ्का कबूले इस्लाम :-

जब रात हूई तो फलीतानूस ने अपने मख्सूस साथियों को अपने खैमे में जमा किया। वह साथी उस के ऐसे वफादार थे कि उस के कहने पर अपनी जान भी निकाल कर रख दें। फलीतानूस ने उन से कहा कि हिरक्ल के मुसाहिब ने हज़ारों लोगों के सामने जिस तरह झिड़क और डांट कर मुझे रुस्वा किया है। यह बात तुम पसन्द करते हो ? उस के साथियों ने कहा ऐ सरदार ! जब यह मआमला हुवा तभी हम से बिल्कुल बरदाश्त नहीं हो रहा था और हम उसी वक्त हिरक्ल के मुसाहिबों को कत्ल कर देना चाहते थे, लैकिन आप ने सब्र कर के किसी किस्म की खफगी का इज़्हार नहीं किया, लिहाज़ा हम भी चुप हो कर बैठ गए, लैकिन उस वक्त से अब तक हम बर-अंगेख्ता हैं, मगर मजबूर हैं कि आप के हुक्म और इजाज़त के बगैर कोई कदम नहीं उठा सक्ते, पस खामौश हैं। फलीतानूस ने अपने साथियों से पूछा कि **अब मैं जो करने वाला हूं क्या तुम इस में मेरा साथ दोगे ?** तमाम ने ब-यक ज़बान कहा कि ऐ सरदार ! यह कोई पूछने की बात नहीं। **कसम है हक्के मसीह की ! तुम्हारे**

अदना इशारे पर हम अपनी जानें निसार कर देंगे । फलीतानूस ने कहा कि मैं अब ज़ुल्मत से नूर की तरफ, तारीकी से रौशनी की तरफ, जहल से अक्ल की तरफ, ज़िल्लत से इज़्ज़त की तरफ, और अज़ाब से नजात की तरफ जाने का इरादा रखता हूं या'नी **दीने बर-हक्क इस्लाम कबूल कर के दीने इस्लाम की खिदमत अन्जाम दे कर बहिश्त का हक्कदार बन जाउं** और मैं चाहता हूं कि इस्लाम में दाखिल होने से जो इज़्ज़त और बुज़ुर्गी मुझे हासिल हो, मेरे साथ तुम को भी हासिल हो और अगर तुम ने इस्लाम कबूल करने में मेरी मुताबअत व मुवाफिकत न की, तो मैं तन्हा दीने इस्लाम इख्तियार कर लूंगा क्यूं कि इसी में दुनिया और आखेरत की सलामती और बेहतरी है । फलीतानूस के साथियों ने जवाब दिया कि हम ने अपने शहर से छ सौ मील की मुसाफत हिरक्ल बादशाह के लिये तय नहीं की बल्कि तुम्हारी मुहब्बत में हम यहां आए हैं, हम तुम्हारे ताबे' फरमान हैं । जहां तुम होगे हम भी वहीं होंगे । इस मआमला में तो क्या बल्कि किसी भी मआमला में हम तुम्हारी मुखालिफत नहीं करेंगे । **तुम्हारी मुखालिफत करने से मर जाना हमारे लिये लाख दर्जा बेहतर है ।**

अपने जां निसार साथियों का जज़्बए इश्को मुहब्बत देख कर फलीतानूस बहुत खुश हुवा और अपने साथियों को हुक्म दिया कि अपना साज़ व सामान समेट कर, घोड़ों पर लाद कर तैयार रखो । आधी शब गुज़र जाने के बा'द हम अपने जुम्ला सामान व हथियार ले कर इस्लामी लश्कर के कैम्प में चले जाएंगे । चुनान्चे फलीतानूस के साथी सामान बांधने में मस्रूफ हो गए और रवाना होने की तैयारी में लग गए । आधी शब के वक्त उन्हों ने अपने सामान और हथियार घोड़ों पर लादे और रवाना होने ही वाले थे कि ऐन उसी वक्त हज़रत युकना लश्कर की निगरानी के कस्द से गश्त करते हुए वहां आ पहुंचे । सिवाए पहरेदारों के उस वक्त लश्कर का हर सिपाही गहरी नींद में सोया हुवा होता है । बर-खिलाफ इस के फलीतानूस को मअ लश्कर हालते बैदारी, और जंगी लिबास पहने हुए, हथियारों से मुसल्लह देख कर हज़रत युकना घबराए कि कहीं यह लोग रात के सन्नाटे में इस्लामी लश्कर को गाफिल समझ कर हम्ला करने तो नहीं जा रहे हैं ? जैसा कि एक ज़माना में हल्ब की लड़ाई में मैं ने रात के वक्त सोए हुए इस्लामी लश्कर पर हम्ले किये थे, लिहाज़ा हकीकत हाल से वाकिफ होने और इन की इस हैअत का सुराग लगाने की गरज़ से हज़रत युकना हाकिम फलीतानूस के पास आए और पूछा कि किसी चीज़ की ज़रूरत तो नहीं ? हाकिम फलीतानूस ने पूछा कि तुम कौन हो ? हज़रत युकना ने अपना तआरुफ कराया । इस पर हाकिम फलीतानूस ने कहा कि मैं ने सुना है कि तुम ने तो अरबों का दीन इख्तियार किया ? क्या यह दुरुस्त है ? तुम ने ऐसा क्या देखा था कि अरबों का दीन इख्तियार किया ?

जवाब में हज़रत युकना ने फरमाया कि मैं ने अरबों में चंद खूबियां देखी थीं हमेंशा सच्चाई और हक्क पर काइम रहते हैं, झूट और बातिल की तरफदारी हरगिज़ नहीं करते, रात को सोने के बजाए अपने परवर्दगार की इबादत करते हैं, हर वक्त अपने परवर्दगार को याद करते हैं, अद्ल व इन्साफ इन का शैवा है । ज़ालिम को ज़ुल्म से बाज़ रखना और मज़्लूम की इआनत करना इन की खस्लत है, पाबन्दी से नमाज़ पढ़ना इन की आदत है, दिन को रोज़ा रखना, अपने मोहताज भाइयों की खबरगीरी करना, सदाकत, मुवद्दत, उखुवत, बड़ों की इज़्ज़त, छोटों पर शफ्कत और हमा वक्त मस्रूफ रियाज़त रहेना इन का तरीका है, लिहाज़ा मैं ने इन को हक्क पर जान कर इन के दीन की तरफ सब्कत किया ।

हज़रत युकना का जवाब सुन कर हाकिम फलीतानूस ने कहा कि जब तुम इन के अख्लाके हसना और इन की हक्कानियत से वाकिफ हो चुके थे तो फिर मुर्तद हो कर दीने सलीब की तरफ क्यूं रुजू' किया ? हज़रत युकना ने जवाब में कहा कि अपने दीन की मुहब्बत, अपनी कौम की सुहबत और रिश्तेदारों की उल्फत की वजह से इन की जुदाई गवारा न की । हाकिम फलीतानूस ने कहा कि अफ्सोस है तुम पर कि अम्रे हक्क देख कर दुनिया और अहले दुनिया की मुहब्बत को तर्जीह और अहमियत दे कर तुम ने नजाते उखरवी को तर्क कर दिया । ज़ुल्मत से निकल कर रौशनी में आ कर फिर दो-बारा अंधेरे और तारीकी की तरफ वापस पलट गए । हक्क इख्तियार करने के बा'द फिर बातिल की तरफ लौटे । हाकिम फलीतानूस की गुफ्तगू सुन कर हज़रत युकना मह्वे हैरत थे और गुमान किया कि शायद इन को भी दौलत ईमान नसीब होने वाली है, लैकिन हज़रत युकना ने एहतियात बरत्ते हुए अपना हाल ज़ाहिर करने की जल्द बाज़ी न की और मज़ीद तह्कीक करने की गरज़ से पूछा कि तुम्हारी बातों से तो ऐसा मह्सूस होता है कि मेरा इस्लाम के लश्कर से निकल कर वापस रूमियों के लश्कर में आना तुम्हें अच्छा नहीं लगा । जवाब में फलीतानूस ने कहा कि हां ! बे शक मुझ पर यह अम्र शाक गुज़रा है कि तुम ने राहे हिदायत व नजात छोड़ कर गुमराहियत व अज़ाब की राह अपनाई है । और यह भी सुन लो कि मैं अपने चार हज़ार (4000) साथियों के साथ इस्लामी लश्कर की तरफ इस कस्द से जा रहा हूं कि दीने इस्लाम कबूल कर लूं, और इस्लाम की खिदमत करने की गरज़ से इस्लामी लश्कर की इआनत करूं, इन को तक्वियत दूं ।

हज़रत युकना ने देखा कि रूमतुल कुब्रा के हाकिम फलीतानूस ने अपना राज़ फाश कर दिया है और कोई बात पोशीदह नहीं रखी, लिहाज़ा अब मैं भी अपनी हकीकत न छुपाउं,

लिहाज़ा उन्हों ने भी अपनी हकीकत ज़ाहिर कर दी, जिस को सुन कर हाकिम फलीतानूस का चेहरा खुशी से चमक उठा और उन्हों ने हज़रत युकना को मुबारकबाद देते हुए कहा कि अब दैर किस बात की ? इसी वक्त चले चलते हैं और तुम भी हमारे साथ चलो । हज़रत युकना ने फरमाया कि जल्द बाज़ी से काम मत लो । जौश के साथ हौश भी शामिल रखो । इस वक्त न मेरा जाना मुनासिब, और न ही तुम्हारा जाना मुनासिब है क्यूं कि अगर हम इस वक्त इस्लामी लश्कर में चले गए तो हिरक्ल को ज़रूर पता चल जाएगा और वह दिन में अपने लश्कर को मैदान में उतारते वक्त एहतियात करते हुए नई चाल चलेगा, लिहाज़ा हम उस को चौकन्ना न होने दें, बल्कि उस को गाफिल रखें । इलावा अज़ीं हल्ब से आए हुए मेरे दो सौ साथी भी अपना इस्लाम पोशीदह रख कर मेरे साथ शहर में ठहरे हुए हैं । इन को भी साथ ले चलना है और इस वक्त इन का शहर से निकल्ना मुम्किन नहीं । एक ज़रूरी बात भी गौशे गुज़ार कर दूं कि अस्हाबे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम से दो सौ मुबारक हज़रात हिरक्ल की कैद में हैं और हिरक्ल ने इन कैदियों को मेरी निगरानी में दिया है । इस वक्त वह तमाम कैद खाना में हैं । लिहाज़ा आज की रात तवक्कुफ करो ताकि कल दिन को में अस्हाबे रसूल को कैद से निकाल कर इन को रूमी लिबास पहना कर अपने हल्ब के साथियों के साथ रूमी लश्कर में मुन्तशिर कर दूं और तुम भी मक्रो फरैब करते हुए कल दिन में अपने साथियों के साथ रूमी लश्कर में शमूलियत इख्तियार कर के मैदान में निकलो और ऐसा दिखावा करो कि हिरक्ल के साथ तुम अरबों से मुकाबला करने आए हो ।

हज़रत युकना ने हाकिम फलीतानूस को ताकीद करते हुए कहा कि तुम हिरक्ल बादशाह के करीब ठहरना और मैं भी तुम्हारे इर्द गिर्द ही ठहरूंगा । जब जंग शुरू होगी तब हम मौका' पा कर हिरक्ल और रूमी लश्कर के अह्म सरदारों को कत्ल कर के अपने साथियों समेत एक साथ रूमी लश्कर तर्क कर के इस्लामी लश्कर में शामिल हो जाएंगे । और इन को अचानक झटका दे कर जंग का तख्ता पलट देंगे । हज़रत युकना ने हाकिम फलीतानूस को मश्वरा देते हुए फरमाया कि मेरी राए यह है कि हिरक्ल बादशाह को तुम अपने किसी आदमी से कत्ल कराओ और हिरक्ल के कातिल की हैसियत से तुम अलल ए'लान ज़ाहिर न हो जाओ क्यूं कि तुम जब रूमतुल कुबरा वापस जाओगे, तो वहां के रूमी तुम से मुज़ाहिम होंगे कि यह हमारे बादशाह कैसरे रूम का कातिल है । तब तुम अपने देफ़ाअ में कुछ नहीं कर सकोगे और अगर तुम ने अपने किसी आदमी से हिरक्ल को कत्ल कराया, तो इस सूरत में तुम यह उज़्र पैश कर सकोगे कि हिरक्ल को मैं ने कत्ल नहीं किया । मेरे

किसी आदमी ने कत्ल किया है और मैं इस से बरियुज़्ज़िमा हूं । हाकिम फलीतानूस ने जवाब दिया कि ऐ दिनी बिरादर ! मैं हिरक्ल का कत्ल दुनिया की सल्तनत के हुसूल के लिये नहीं बल्कि अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की खुशनूदी हासिल करने के लिये करना चाहता हूं । बल्कि अब मेरे दिल में दुनिया की सल्तनत की कोई रग्बत व वक्अत नहीं । बस सिर्फ यही एक तमन्ना है कि हिरक्ल जैसे सगे रूमी को कत्ल कर के इस्लाम की अज़ीम खिदमत अन्जाम दूं और फिर यहां से बैतुल मुकद्दस चला जाउं और बाकी ज़िन्दगी अल्लाह तआला की इबादत और शरीअते मुहम्मदी की इताअत में बसर करूं और अपनी दुन्यवी ज़िन्दगी को संवार कर आखेरत की भलाई हासिल करूं ।

हाकिम फलीतानूस ने हज़रत युकना से कहा कि बेहतर है कि आइन्दा कल हम जो कारनामा अन्जाम देने वाले हैं इस की इत्तिला' इस्लामी लश्कर के सरदार को किसी मो'तमद आदमी के ज़रीआ भेज दें । हज़रत युकना ने जवाब दिया कि हल्ब के कुछ रूमी मुआहिद मेरे जासूस हैं । इन में से किसी को भेज कर इस्लामी लश्कर के सरदार हज़रत अबू उबैदा को खबर करता हूं ।

हज़रत अबू उबैदा को ख्वाब में फतहे इन्ताकिया की बशारत :-

हज़रत युकना और हाकिम फलीतानूस मुन्दरजा बाला गुफ्तगू करने के बा'द आइन्दा कल के लिये मन्सूबा बन्दी में मस्रूफ हो गए और हज़रत युकना हाकिम फलीतानूस के खैमे में ठहर गए, ताकि पास शुदा तज्वीज़ को अमली जामा पहना ने के लिये अह्म उमूर में मश्वरा कर सकें । हज़रत युकना और हाकिम फलीतानूस के दरमियान जब हिरक्ल को कत्ल करने और हाकिम फलीतानूस ने इस्लाम कबूल करने का अपना इरादा ज़ाहिर किया था, तो हज़रत अबू उबैदा अपने खैमे में सोए हुए थे और उन्हों ने ख्वाब देखा । इस ख्वाब को इमामे अजल, अल्लामा मुहम्मद बिन अम्र वाकदी कुद्दिसा सिर्रहु की ज़बानी समाअत फरमाएं :

"अबू उबैदा बिन अल जर्राह ने ख्वाब देखा था शबे फतहे इन्ताकिया में कि गोया रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व आलेहि व सल्लम सलाम करते हैं इन पर और इर्शाद फरमाते हैं ।

يَا اَبَا عُبَيْدَةَ اَبْشِرْ رِضْوَانَ اللّٰهِ وَ رَحْمَتَهُ غَدًا تُفْتَحُ الْمَدِيْنَةُ صُلْحاً
عَلٰى يَدِكَ وَاَنَّ صَاحِبَ رُوْمَةَ الْكُبْرٰى قَدْ جَرٰى مِنْ اَمْرِهِ مَعْ يُوْقَنَا
كَذَا وَكَذَا وَهُمْ بِالْقُرْبِ مِنْ جَيْشِكَ فَتَنْفَذُ اِلَيْهِمْ بِاَنْجَارِ الْاَمْرِ

तर्जुमा : ऐ अबू उबैदा ! खुश हो तुम साथ अल्लाह की खुशनूदी और उस की रहमत के साथ, के कल फतह हो जाएगा शहर अज़ रूए सुलह के तुम्हारे हाथों पर और हाकिम रूमतुल कुबरा का मआमला युकना के साथ ऐसा और ऐसा कुछ हुवा है और वह लोग नज़दीक हैं तुम्हारे लश्कर से पस हुक्म भेजो तुम इन की तरफ रवाना होने काम के''

(हवाला : फुतूहुश्शाम, अज़ : अल्लामा वाकदी, सफहा : 370)

अल-गरज़ हुज़ूरे अक्दस आलिमे मा कान व मा यकून सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने हज़रत युकना और हाकिम फलीतानूस के दरमियान जो कुछ भी गुफ्तगू हूई थी उस को अज़ अव्वल ता आखिर लफ्ज़ ब-लफ्ज़ हज़रत अबू उबैदा से बयान फरमा दी और साथ में आइन्दा कल इन्ताकिया शहर फतह होने की बशारत दी और हज़रत अबू उबैदा को हुक्म फरमाया कि वह हज़रत युकना और हाकिम फलीतानूस के पास किसी आदमी को भेज कर इन को वह काम करने का हुक्म भेजें। ख्वाब देखने के बा'द हज़रत अबू उबैदा बैदार हुए, तो आधी रात का वक्त था। हज़रत अबू उबैदा थोड़ी दैर तक इस ख्वाब के मुतअल्लिक सोचते रहे। फिर उन्हों ने आदमी भेज कर हज़रत खालिद को बुलाया। जब हज़रत खालिद बिन वलीद हज़रत अबू उबैदा की खिदमत में आए तो उन्हों ने हज़रत खालिद से अपना ख्वाब बयान किया। सुन कर हज़रत खालिद का चेहरा खुशी से चमक उठा।

हज़रत अबू उबैदा और हज़रत खालिद बिन वलीद रदियल्लाहो तआला अन्हुमा को इस सच्चे ख्वाब और अपने आका व मौला हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के तसर्रुफ व इख्तियार और इत्तिला' अल्ल गैब पर इत्ना कामिल यकीन और पुख्ता ए'तमाद था कि उन्हों ने हज़रत अम्र बिन उमय्या ज़ुम्री को बुलाया और इन को ख्वाब की तफ्सील बताने के बा'द इन को उसी वक्त रूमी लश्कर की जानिब यह कह कर रवाना किया कि तुम बे झिझक और बे खौफ हाकिम फलीतानूस के खैमे में चले जाना। हज़रत युकना भी तुम को वहीं मिलेंगे। चुनान्चे **हज़रत अम्र बिन उमय्या ज़ुम्री** उसी वक्त इस्लामी लश्कर के कैम्प से रवाना हो कर रूमी लश्कर के कैम्प में हाकिम फलीतानूस के खैमे पर किसी किस्म की रुकावट के बगैर आ पहुंचे। उस वक्त हज़रत युकना और हाकिम फलीतानूस गुफ्तगू में मश्गूल थे कि खादिम ने आ कर इत्तिला' दी कि हज़रत युकना से मिलने कोई शख्स आया है। हज़रत युकना खैमे से बाहर आए और वह तअज्जुब करते थे कि **मैं यहां हूं इस की**

खबर इस आने वाले को किस ने दी होगी ? बाहर आ कर देखा तो सहाबीए रसूल हज़रत अम्र बिन उमय्या ज़ुम्री हैं। हज़रत युकना इन को पहचान गए और खैमे के अन्दर ले आए और हाकिम फलीतानूस से तआरुफ कराया और फिर पूछा आधी शब के वक्त यहां तशरीफ लाने की ज़हमत गवारा फरमाने का सबब क्या है ? और आप को किस ने मेरा पता बताया कि मैं यहां हूं ? **हज़रत अम्र बिन उमय्या ज़ुम्री ने फरमाया कि हज़रत अबू उबैदा और हज़रत खालिद बिन वलीद ने मुझ से फरमाया कि आप हाकिम फलीतानूस के खैमे में ही मिलेंगे और इन को हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने ख्वाब में यह इत्तिला' दी और मज़ीद बरां आप दोनों के दरमियान आइन्दा कल के मआमला में जो गुफ्तगू हूई है, इस की अव्वल ता आखिर लफ्ज़ ब-लफ्ज़ तफ्सील बता दी है।** फिर हज़रत अम्र बिन उमय्या ने ख्वाब की तफ्सील बताई और फतहे इन्ताकिया की खबर भी सुनाई और यह भी कहा कि आप दोनों हज़रत अबू उबैदा को आइन्दा कल की तज्वीज़ की इत्तिला' भेजने का इरादा करते थे, लिहाज़ा हज़रत अबू उबैदा ने आप को हुक्म दिया है कि आप ने जो तज्वीज़ तय की है, इस पर अमल करना। इन्शा अल्लाह तआला तुम्हारी कौशिश काम्याब होगी।

हज़रत अम्र बिन उमय्या ज़ुम्री रदियल्लाहो तआला अन्हो की ज़बान से यह सारी तफ्सील सुन कर हाकिम फलीतानूस के दिल पर रिक्कत तारी हूई और बदन थर थर कांपने लगा और उन्हों ने कहा कि मैं गवाही देता हूं कि दीने इस्लाम ही पाएदार और रास्त है और नबी मुर्सल रहमते आलम और रसूले बर-हक्क हैं। (सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम)

नाज़िरीने किराम गौर फरमाएं ! हज़रत युकना और हाकिम फलीतानूस मुल्के शाम के इन्ताकिया शहर में रूमी लश्कर के कैम्प के एक खैमे में बैठ कर जो गुफ्तगू कर रहे थे, **इस गुफ्तगू को हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम मदीना तय्यबह में गुम्बदे खद्रा में आराम फरमाते हुए समाअत फरमा रहे हैं और इस की इत्तिला' लफ्ज़ ब-लफ्ज़ ख्वाब में हज़रत अबू उबैदा को दे दी। यही तो इल्मे गैब और तसर्रुफ है।** बे**:** शक अल्लाह तबारक व तआला ने अपने हबीबे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को मा कान व मा यकून या'नी जो कुछ भी हो चुका है और जो कुछ भी होने वाला है इस का इल्म अता फरमाया है और आलम में तसर्रुफ करने का इख्तियार अता फरमाया है। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम का इल्मे गैब और तसर्रुफ सिर्फ आप की ज़ाहिरी हयात तक ही महदूद व मुन्हसिर न था, बल्कि आप के पर्दा फरमाने के बा'द

आज भी आप का इल्मे गैब और तसर्रुफ मिस्ले आप की ज़ाहिरी हयात अपनी आब व ताब और आन व शान के साथ अयां व दरख्शां है। यही अकीदा सहाबए किराम का था। जभी तो हज़रत अबू उबैदा और हज़रत खालिद बिन वलीद ने हज़रत अम्र बिन उमय्या ज़ुम्री को रूमी लश्कर के कैम्प की जानिब रवाना करते वक्त फरमाया था कि हज़रत युकना तुम को हाकिम फलीतानूस के खैमे में मिलेंगें। हज़रत अबू उबैदा और हज़रत खालिद का यह अकीदा था कि अल्लाह तआला ने अपने हबीबे अकरम सल्लल्लाहो अलैह व सल्लम को मुगीबात पर मुत्तलेअ फरमाया है और अल्लाह के हबीब सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम आज भी इल्मे गैब पर मुत्तलेअ हैं और आप ने हज़रत युकना के मुतअल्लिक ख्वाब में इत्तिला' फरमाई है कि वह हाकिम फलीतानूस के साथ इस तरह की गुफ्तगू कर रहे हैं, लिहाज़ा हज़रत युकना सौ फीसदी और यकीनन व कतअन हाकिम फलीतानूस के खैमे में ज़रूर बिज़्ज़रूर मौजूद होंगे। इसी लिये उन्हों ने हज़रत अम्र बिन उमय्या ज़ुम्री से फरमाया था कि हज़रत युकना तुम को हाकिम फलीतानूस के खैमे में मिलेंगें।

लैकिन अफ्सोस ! सद अफ्सोस !

दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन हुज़ूरे अक्दस आलिमे मा कान व मा यकून सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के इल्मे गैब का साफ इन्कार करते हैं और हुज़ूरे अक्दस के लिये इल्मे गैब का अकीदा रखना शिर्क कहते हैं।

- इमामुल मुनाफिकीन, **मौलवी इस्माईल देहलवी** ने लिखा है :

"किसी नबी, वली को, जिन व फरिश्ते को, पीर व शहीद को, इमाम व इमाम ज़ादा को, भूत व परी को अल्लाह तआला ने यह ताकत नहीं बख्शी है कि जब वह चाहें गैब की बात मा'लूम कर लें"

(हवाला : तक्वियतुल ईमान, नाशिर : दारुस सल्फिया, बम्बई, सफहा : 40)

- एक दूसरा इक्तिबास पैशे खिदमत है :

"किसी नबी, वली, या इमाम व शहीद की जनाब में हरगिज़ यह अकीदा न रखे कि वह गैब की बात जानते हैं बल्कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैह व सल्लम के बारे में भी यह अकीदा न रखे और न इन की ता'रीफ में ऐसी बात कहे।"

(हवाला : तक्वियतुल ईमान, नाशिर : दारुस सल्फिया, बम्बई, सफहा : 47)

- वहाबी तब्लीगी जमाअत के इमाम व पैशवा **मौलवी रशीद अहमद गंगोही** ने लिखा है :

"हज़रत सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को इल्मे गैब न था। न कभी इस का दा'वा किया और कलामुल्लाह शरीफ और बहुत सी अहादीस में मौजूद है कि आप आलिमुल गैब न थे और यह अकीदा रखना कि आप को इल्मे गैब था, सरीह शिर्क है।"

(हवाला : फतावा रशीदिया (कामिल) नाशिर : मक्तबा थानवी, देवबन्द, सफहा : 103)

नाज़िरीने किराम इन्साफ फरमाएं। हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह और हज़रत खालिद बिन वलीद रदियल्लाहो तआला अन्हुमा जैसे जलीलुल कद्र सहाबीए रसूल तो यह अकीदा रखें कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को इल्मे गैब हासिल है और सहाबी के इस अकीदा पर आज का मुनाफिक वहाबी यह फत्वा लगाए कि ऐसा अकीदा रखना शिर्क है। हम पर लाज़िम है कि हम सहाबए किराम का ही नक्शे कदम इख्तियार करें।

अल-किस्सा ! हज़रत अम्र बिन उमय्या ज़ुम्री हज़रत युकना को हज़रत अबू उबैदा का पैगाम पहुंचाने के बा'द इस्लामी लश्कर के कैम्प में वापस लौट गए। फिर हज़रत युकना भी हाकिम फलीतानूस के खैमे से रवाना हो कर रूमी लश्कर में गश्त करते हुए अपने खैमे में आए और आइन्दा कल के मन्सूबे को ब-खूबी और काम्याबी से अन्जाम देने के मुतअल्लिक सोचने लगे। हालां कि हज़रत युकना आइन्दा कल के मआमले के मुतअल्लिक बहुत ज़ियादह फिक्र मन्द थे, लैकिन फिर भी वह अपने आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की इआनत व दस्तगीरी पर ए'तमाद रखते हुए मुत्मइन थे :

अपने दिल का है इन्हीं से आराम, सौंपे हैं अपने इन्हीं को सब काम

लौ लगी है कि अब इस दर के गुलाम, चारए दर्दे 'रज़ा' करते हैं

(अज़ : इमामे इश्को मुहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

हिरक्ल बादशाह मअ अहलो अयाल रात की तारीकी में फरार :-

आज मैदान में हिरक्ल बादशाह मौजूद ज़रूर था, लैकिन लड़ाई में उस को ज़ियादह दिलचस्पी न थी। हिरक्ल को बहुत पहले ही से अपनी सल्तनत के ज़वाल का यकीन हो गया था। इस्लामी लश्कर ने मुल्के शाम के बड़े बड़े लश्करों को शिकस्त दे कर इस के अहम

शहरों और किलओं को फतह कर लिया था, तभी से उस को अपने तख्त के उलटने का एहसास हो गया था। इस्लामी लश्कर कूच कर के इन्ताकिया आया तो वह सहम गया था और उस को अपनी सल्तनत के ज़वाल का वक्त करीब नज़र आने लगा था, लैकिन अपनी कौम का हौसला बर-करार रखने के लिये दिलैरी से लड़ने की तर्गीब देता था, लैकिन वह हिम्मत हार चुका था। जी से निढाल हो कर सिर्फ दिखावा करता था और शुजाअत और जवांमर्दी की बातें करता था। उस को हर आन यह फिक्र दामन गीर थी कि अब मेरा क्या होगा ? लश्करे इस्लाम अब उस के दारुस्सल्तनत तक आ पहुंचा है। इस लिये वह लड़ाई के उमूर में सुस्ती बरत कर लड़ाई को तूल देता था, ताकि अपने लिये कोई सबील ढूंढ निकाले।

उसी शब हिरक्ल ने ख्वाब देखा कि एक शख्स आस्मान से उतरा, और उस ने हिरक्ल के तख्त को उलट दिया और उस का ताज भी उस के सर से उड़ गया, और कोई पुकार ने वाला पुकारता है कि तेरी सल्तनत के ज़वाल का वक्त आ गया और ब-तह्कीक सख्ती और बद-बख्ती दूर हूई और अल्लाह तआला मज़्हब अह्ले हक्क को लाया। यह ख्वाब देख कर हिरक्ल चौंक कर बैदार हो गया और ख्वाब की ता'बीर सोचता रहा। बड़ी दैर तक सोचने के बा'द उस ने यह ता'बीर निकाली कि मेरी हुकूमत का ज़वाल यकीनी है, लिहाज़ा उस ने अपना खज़ाना और कीमती हीरे, जवाहिरात वगैरा निकाल कर अपनी बेटी ज़ैतून और खान्दान के लोगों के साथ खुफिया रास्ता से महल से समन्दर के किनारे मुन्तकिल कर दिया। फिर उस ने अपने गुलाम और खादिमे खास **''बालीस बिन रीबूस''** को बुलाया। हिरक्ल का गुलाम बालीस हिरक्ल से शक्ल व सूरत में बहुत मुशाबा था। हिरक्ल ने उस को अपना लिबास, ताज और पटका पहना दिया और उस से कहा कि मैं अरबों से एक फरैब करना चाहता हूं। आज रात ही मैं अरबों के कैम्प के पीछे एक कमीन गाह में छुप जाऊंगा और तुम सुब्ह मैदाने जंग में मेरी जगह ठहरना और किसी को पता न चलने देना कि मैं लश्कर में मौजूद नहीं और मेरी जगह तुम ठहरे हो। ऐन लड़ाई के वक्त कमीन गाह से मैं ऐसा मक्र करूंगा कि अरबों को हज़ीमत होगी। यह राज़ तेरे और मेरे दरमियान रहे। मुझे तुझ पर पूरा भरोसा है क्यूं कि तू मेरा पुराना और वफादार खादिम है। फिर हिरक्ल ने अपने गुलाम बालीस को जंग के तअल्लुक से कुछ हिदायत और नसीहत की और बा'दहु महल के खुफिया रास्ता से निकल कर वह भी साहिल पर पहुंच गया और अपना खज़ाना, माल व अस्बाब और अह्लो अयाल के हमराह कश्ती में सवार हो कर रात में इन्ताकिया से अपने आबाई शहर **''कस्तुनतुनिया''** भाग गया। अल-गरज़ ! हिरक्ल ने अपने खादिमे खास को भी अपने फरार होने से आगाह नहीं किया और उस को भी गाफिल रखा।

इन्ताकिया पर लश्करे इस्लाम की फतहे मुबीन :-

दूसरे दिन बा'द नमाज़े फज्र हज़रत अबू उबैदा ने पूरे जैशे इस्लाम को कैम्प से निकाला और मारक-ए जंग में लाए। हज़रत अबू उबैदा और हज़रत खालिद गुज़िश्ता शब के ख्वाब की बशारत की वजह से यकीने कामिल के साथ मैदान में आए थे कि इन्शा अल्लाह आज इन्ताकिया फतह हो जाएगा। उधर से रूमी लश्कर भी अपने कैम्प से निकल कर मैदान में आया। दोनों लश्कर आमने सामने ठहरे। हिरक्ल बादशाह की जगह उस का गुलाम **''बालीस''** शाही लिबास और शाही ताज पहन कर खड़ा था। हिरक्ल के फरार होने और मैदान में उस की अदम मौजूदगी की किसी को इत्तिला' न थी। गुलाम बालीस को देख कर सब यह समझते थे कि हिरक्ल बादशाह बज़ाते खुद मौजूद है। रूमतुल कुबरा के हाकिम फलीतानूस ने अपने साथियों के हमराह हिरक्ल के करीब अपनी जगह इख्तियार की थी। हज़रत युकना भी शहर से दो सौ सहाबए किराम को कैद खाने से निकाल कर इन को रूमी लिबास पहना कर अपने हल्ब के साथियों के साथ रूमी लश्कर में आ पहुंचे थे। और इन तमाम को हिरक्ल बादशाह के इर्द गिर्द मुन्तशिर कर दिया था। रूमी लश्कर की सफ बन्दी की गई, लैकिन कोई सिपाही लड़ने के लिये मैदान में न निकला। हज़रत अबू उबैदा ने थोड़ी दैर तक इन्तिज़ार किया, मगर जब रूमी लश्कर से कोई हर्कत न हूई तो हज़रत अबू उबैदा ने यह तय फरमाया कि पूरे इस्लामी लश्कर से यक बारगी रूमियों पर यल्गार कर दी जाए, लिहाज़ा सब से पहले हज़रत खालिद बिन वलीद लश्करे ज़हफ के मुजाहिदों के साथ रूमी लश्कर पर टूट पड़े। इन के बा'द (1) हज़रत सईद बिन ज़ैद (2) हज़रत रबीआ बिन कैस (3) हज़रत मैसरा बिन मस्रूक (4) हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र सिद्दीक (5) हज़रत जुल-केलाअ हुमैरी (6) हज़रत फज़्ल बिन अब्बास (7) मालिक उश्तर नखई (8) हज़रत अम्र बिन मा'दी कर्ब ज़ुबैदी और (9) हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह ने अला हाज़त तर्तीब अपने अपने लश्करों के साथ मुख्तलिफ सम्तों से रूमी लश्कर पर यल्गार की। तमाम मुजाहिदों ने पूरी ताकत और जौश के साथ शदीद हम्ला किया। रूमी लश्कर इस तरह के यक-बारगी हम्ला से लड़खड़ा गया। रूमियों ने भी दिलैरी से मुकाबला किया और जान पर खेल कर लड़े। लैकिन रूमी लश्कर कुछ संभले और कदम जमाए इस से पहले अचानक रूमी लश्कर में आपस में तलवारें चलने लगीं। रूमतुल कुबरा के हाकिम हज़रत फलीतानूस और इन के जां निसार साथियों ने रूमी सिपाहियों को तलवारें मारनी शुरू कीं। हज़रत युकना और इन के साथ दो सौ सहाबीए रसूल और दो सौ हल्ब के नौ मुस्लिम मुजाहिदों ने भी रूमी सिपाहियों को नैज़ों

और तलवारों की नौक पर लेना शुरू किया। रूमी लश्कर में इन्तिशार और बद नज़्मी फैल गई। एक तो हर सम्त से इस्लामी लश्कर ने शदीद हम्ला कर के रूमी लश्कर की सफें उलट कर रख दीं, तो दूसरी तरफ से रूमी लश्कर के अन्दर ही खाना जंगी रूनुमा हूई। लिहाज़ा रूमी सिपाही बद-हवास हो कर अंधा धुन्द और बे तर्तीब लड़ने लगे और इस्लामी लश्कर के मुजाहिदों की तलवारों से गाजर मूली की तरह कटने लगे।

रूमी लश्कर में फैली हूई बदमज़्गी का फाइदा उठाते हुए मौका' पा कर हाकिम फलीतानूस ने हिरक्ल की जगह ठहरे हुए उस के गुलाम **"बालीस"** को हिरक्ल समझ कर उस पर हम्ला किया। और इन के साथियों ने हिरक्ल की हिफाज़त पर मुतअय्यन मुहाफिज़ों के गिरोह पर हम्ला किया। और बालीस पर कब्ज़ा कर के कैद कर लिया। यह मन्ज़र देख कर रूमी सिपाही भड़क गए। उन्हों ने यह समझा कि हिरक्ल बादशाह मारा गया, लिहाज़ा रूमी लश्कर में शौर उठा कि हिरक्ल बादशाह मारा गया या कैद हो गया। हिरक्ल के मक्तूल या मुकैयद होने की खबर आने वाहिद में बिजली की तरह रूमी लश्कर में फैली, जिसे सुन कर रूमी लश्कर के सिपाहियों के हौसले टूट गए और उन्हों ने पीठ दिखा कर राहे फरार इख्तियार की। इस्लाम के जांबाज़ मुजाहिदों ने भागते हुए रूमी सिपाहियों का हर सम्त में तआकुब किया और इन पर तलवारें रखीं। उस दिन रूमी लश्कर के सत्तर हज़ार (70,000) सिपाही मक्तूल हुए। इन मक्तूलीन में बारह हज़ार (12,000) तो मुतनस्सिरा अरब थे। रूमी लश्कर से बीस हज़ार सिपाही कैद हुए थे। मुजाहिदों ने नस्रानी अरबों के लश्कर के सरदार **जबला बिन ऐहम गस्सानी** और उस के बेटे **अब्हम बिन जबला** को बहुत तलाश किया, ताकि इन दोनों को वासिले जहन्नम कर दें, लेकिन यह दोनों बाप बेटा कौम बनो गस्सान के पांच सौ सवारों के हमराह बहुत पहले ही नौ दो ग्यारह हो गए थे। लिहाज़ा वह तमाम बच निकले।

हाकिम फलीतानूस ने बालीस बिन रीबूस को हिरक्ल समझ कर ही गिरफ्तार किया था लिहाज़ा उन्हों ने बालीस की मुश्कें बांधी और उस पर कड़ी निगरानी रखी और रूमी सिपाही के कत्ल का हंगामा सर्द हुवा, तो उस को इस्लामी लश्कर के कैम्प में हज़रत अबू उबैदा के पास लाए और कहा कि ऐ सरदार ! सगे रूम को कैद कर के खिदमत में हाज़िर लाया हूं। तब बालीस बोला कि मैं कैसरे रूम हिरक्ल नहीं बल्कि उस का गुलाम हूं और हिरक्ल का हमशक्ल होने की वजह से हिरक्ल ने मक्रो फरैब कर के उस की जगह मुझे खड़ा कर दिया और मुझ को बली का बकरा बना दिया है। हज़रत अबू उबैदा ने बालीस पर इस्लाम पैश किया मगर उस ने दीने नस्रानी से इन्हराफ कर के दीने इस्लाम कबूल करने का साफ इन्कार किया, **लिहाज़ा इस की गर्दन मारी गई।**

हज़रत अबू उबैदा की खिदमत में हिरक्ल के गुलाम बालीस को ब-हालते कैद ले कर हाकिम रूमतुल कुबरा हज़रत फलीतानूस जब आ रहे थे, तब इन के इस्तिक्बाल और इन की ता'ज़ीम के लिये हज़रत अबू उबैदा और तमाम मुसल्मान खड़े हो गए और मरहबा, अह्लव व सह्लन कह कर इन का खैर मकदम किया और मुहब्बत के पुर-जौश लह्जे में सलाम पैश कर के गर्मजोशी से मुलाकात की, और तवाज़ोअ व हुस्ने अख्लाक का मुज़ाहिरा किया। और इन की इज़्ज़त व तक्रीम करते हुए इस्लाम कबूल करने की मुबारकबाद दी और इस्लाम की अज़ीम व नुमाया खिदमत अन्जाम देने का तहे दिल से शुक्रिया अदा किया। मुजाहिदों के इस वालेहाना सुलूक से हज़रत फलीतानूस बहुत मुतअस्सिर हुए और अपने तअस्सुरात का इज़्हार करते हुए कहा कि **खुदा की कसम ! यह वही मुकद्दस कौम है जिस की बशारत हज़रत ईसा मसीह अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने दी थी।**

कारेईने किराम की खिदमत में एक ज़रूरी वज़ाहत पैश है कि फतहे इन्ताकिया के जैल में जो नक्शा दर्ज है। इस को फिर एक मरतबा ब-गौर मुलाहिज़ा फरमाएंगे तो मा'लूम होगा कि जंग इन्ताकिया शहर से बाहर मैदान में हूई थी। रूमी लश्कर का कैम्प भी किल्ले के बाहर बनाया गया था। हिरक्ल ने **सल्ब बिन कित्स** नाम के बतरीक को इन्ताकिया का हाकिम मुकर्रर कर के शहर की हिफाज़त पर उसे मुकर्रर किया था। बतरीक सल्ब मुतअस्सिब नस्रानी था। इलावा अज़ीं एक नम्बर का ज़िद्दी और जाहिल था। वह अपने साथ रूमी सिपाहियों की एक जमाअत ले कर किल्ले की दीवार से मैदान में होने वाली जंग का मुआइना कर रहा था। जब रूमी लश्कर ने हज़ीमत उठाई और रूमी सिपाहियों ने भागना शुरू किया, तो उस ने किल्ले का दरवाज़ा बन्द कर दिया और किल्ले की दीवार से इस्लामी लश्कर से लड़ने का कस्द किया, लेकिन शहर के रईसों और ज़ी शऊर लोगों ने उस को डांटा और कहा कि क्या तेरी अक्ल का चिराग गुल हो गया है ? जब हिरक्ल का इत्ना बड़ा लश्कर अरबों के सामने ठहर नहीं सका, तो मुठ्ठी भर सिपाहियों को ले कर तू कितनी दैर लड़ सकेगा ? नतीजा यह होगा कि तू हलाक होगा और साथ में हम को भी हलाक करेगा। लिहाज़ा लड़ने की बै-वकूफी मत कर, दिमाग से काम ले और अरबों से सुलह कर ले। अह्ले शहर के रोउसा, बतारेका और अवामुन्नास के दबाव में आ कर सलीब बिन कित्स ने लड़ने का इरादा तर्क कर दिया और हज़रत अबू उबैदा की खिदमत में हाज़िर हो कर तीन लाख दीनार ज़रे फिद्या पर सुलह की और शहर के दरवाज़े खोल दिये। चुनान्चे हज़रत अबू उबैदा को हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने ख्वाब में अज़ रूए सुलह इन्ताकिया फतह होने की जो बशारत दी थी इस के मुताबिक इन्ताकिया का किल्ले ब-ज़रीए सुलह फतह हुवा।

हज़रत अबू उबैदा ने सुलह के शराइत तय करने के बा'द हाकिमे इन्ताकिया सल्ब बिन कित्स से गद्र और बे वफ़ाई न करने का वा'दा लिया और हज़रत युकना ने कसमें खिला कर उस से हलफ लिया। फिर हज़रत अबू उबैदा इस्लामी लश्कर के साथ इन्ताकिया शहर में दाखिल हुए। जब इस्लामी लश्कर किल्ले में दाखिल हो रहा था, तो कारी-ए कुरआन सूरह फतह की तिलावत कर रहा था। इस्लामी लश्कर किल्ले में दाखिल हो कर बाबुल नहान पर ठहरा और वहां एक जगह पर खत खींच कर मस्जिद का नक्शा खींचा। फिर वहां एक मस्जिद ता'मीर की गई जो अब भी मौजूद है। इन्ताकिया की फतह माह ज़ीकादा 18 सन हिजरी में हूई। इस्लामी लश्कर इन्ताकिया में तीन दिन ठहरा। तीन दिन के बा'द हज़रत अबू उबैदा ने इस्लामी लश्कर को कूच का हुक्म दिया और वहां से **"दहाज़िम"** नामी मकाम पर आए और दहाज़िम में इस्लामी लश्कर का कैम्प काइम किया। फिर हज़रत अबू उबैदा ने फतहे इन्ताकिया की तफ्सील लिख कर अमीरुल मोमिनीन सय्यिदोना उमर फारूके आ'ज़म की खिदमत में भेजी और हज़रत ज़ैद बिन वहब को खत दे कर तेज़ रफ्तार ऊंटनी पर मदीना मुनव्वरा रवाना किया।

❀ इस्लामी लश्कर के हाथों फतह होने वाले मकामात

(1) इरका (2) सह्ना (3) तदम्मुर (4) हूरान (5) बसरा (6) बैतुल लहिया (7) अजनादीन (8) दमिश्क (9) हिस्न अबील किद्स (10) जोसिया (11) हुमुस (12) शीरज़ (13) रुस्तन (14) हमात (15) कन्सरीन (16) बा'ल्बक (17) यर्मूक (18) बैतुल मुकद्दस (19) हल्ब (20) ए'ज़ाज़ (21) इन्ताकिया

अमीनुल उम्मत हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत ज़ैद बिन वहब के हाथों अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फारूके आ'ज़म रदियल्लाहो तआला अन्हो की खिदमत में जो खत भेजा था, उस में यह भी लिखा था कि मुल्के शाम के जितने भी बड़े शहर हैं, वह करीब करीब फतह हो गए, लिहाज़ा अब मेरा इरादा यह है कि पहाड़ी इलाकों में जो शहर वाकेअ हैं, इन को फतह कर लूं, इस अम्र में आप अपना हुक्म और मश्वरा तहरीर फरमाएं कि इन शहरों पर यल्गार करूं या नहीं ? हज़रत ज़ैद बिन वहब हज़रत अबू उबैदा का खत ले कर 25 ज़ीकादा 18 सन हिज्री को मदीना मुनव्वरा पहुंचे। हज़रत ज़ैद बिन वहब जब मदीना मुनव्वरा आए, तो क्या देखते हैं कि मदीना तय्यबह के बाहर लोगों का हुजूम लगा हुवा है। तफ्तीश करने पर मा'लूम हुवा कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फारूक रदियल्लाहो

तआला अन्हो ब-इरादए हज्ज मक्का मुअज़्ज़मा तशरीफ ले जा रहे हैं। और अह्ले मदीना अमीरुल मोमिनीन को रुखसत करने शहर के बाहर तक आए हुए हैं हज़रत ज़ैद बिन वहब ने शहर के बाहर ही अमीरुल मोमिनीन से मुलाकात की और हज़रत अबू उबैदा का खत दिया। अमीरुल मोमिनीन ने अस्नाए राह खत का जवाब इर्काम फरमाया और हज़रत अबू उबैदा को लिखा कि पहाड़ी इलाकों के मुतअल्लिक मुझ से ज़ियादह तुम को वाकिफीयत है, क्यूं कि तुम उस इलाका में हो और मैं दूर हूं। लिहाज़ा तुम को जो मुनासिब मा'लूम हो वैसा करने का इख्तियार है, मेरी तरफ से इजाज़त है।

फुतूहाते इलाकए साहिल

हज़रत अबू उबैदा ने "दहाज़िम" में इस्लामी लश्कर का कैम्प काइम कर के वहीं पड़ाव किया और अमीरुल मोमिनीन के जवाब का इन्तिज़ार कर रहे थे। हज़रत अबू उबैदा ने यह तय फरमाया कि मदीना मुनव्वरा से अमीरुल मोमिनीन का हुक्म आने के बा'द किस जानिब कूच करना है वह तय करेंगे, लिहाज़ा जब तक हज़रत ज़ैद बिन वहब मदीना मुनव्वरा से वापस नहीं आते तब तक दहाज़िम में ही मुकीम रहें। और दहाज़िम के कयाम के दौरान मुल्के शाम के साहिली इलाकों को फतह कर लेना चाहिये। चुनान्चे हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत खालिद बिन वलीद को कुर्बो जवार के साहिली शहरों और किलओं को फतह करने भेज दिया। हज़रत खालिद बिन वलीद ने (1) बन्ज (2) बराआ (3) ताब्लीस और (4) किल्ल-ए नज्म को ब-आसानी फतह कर लिया। इन फुतूहात का बहुत ही मुख्तसर अहवाल ज़ैल में दर्ज है।

(1) **बन्ज :** जब हज़रत खालिद बिन वलीद बन्ज के किल्ले पर लश्कर ले कर पहुंचे, तो वहां का हाकिम **जर्फास** आमादए जंग हुवा, लैकिन अह्ले शहर ने हाकिम जर्फास के इस इरादा की सख्त मुखालिफत की और कहा कि हम इस्लामी लश्कर से जंग मौल ले कर हलाक होना नहीं चाहते, लैकिन हाकिम जर्फास माना नहीं और जंग पर मुसिर रहा, लिहाज़ा अह्ले शहर किल्ले का दरवाज़ा खोल कर हज़रत खालिद के पास आए और सूरते हाल से आगाह कर के डेढ़ लाख दीनार ज़्रे फिद्या अदा कर के सुलह की। हज़रत खालिद ने हाकिम जर्फास को मअ अह्लो अयाल वहां से भगा दिया और हज़रत उबादा बिन राफेअ को वहां का हाकिम मुकर्रर किया।

(2) **किल्ल-ए नज्म :** बन्ज से मुलहिक ही लोहे के पुल पर एक किल्ले में रूमियों की बस्ती आबाद थी। यह किल्ला भी ब-ज़्रीए सुलह फतह हुवा और हज़रत खालिद ने वहां के हाकिम की हैसियत से हज़रत नज्म बिन मुफ्रेह फहरी का तकर्रुर किया और वहां से रवाना हो गए।

(3) **बराआ :** हज़रत खालिद अपना लश्कर ले कर बराआ पहुंचे तो अह्ले बराआ ने किल्ले के दरवाज़े बन्द कर दिये और किल्ले में महसूर हो कर बैठ गए, लैकिन किसी किस्म का कोई हम्ला या मुकाबला नहीं किया। फिर अह्ले बराआ ने जमा हो कर मश्वरा किया कि अरबों से सुलह कर के अमान हासिल करने में हमारी बेहतरी और भलाई है। लिहाज़ा शहर के मुअज़्ज़ज़ लोग हज़रत खालिद के पास आए और सुलह की। हज़रत खालिद ने हज़रत औस बिन खालिद रबई को वहां का हाकिम मुकर्रर किया और फिर वहां से रवाना हो गए।

(4) **ताब्लीस :** हज़रत खालिद बिन वलीद अपने लश्करे ज़हफ के साथ ताब्लीस पहुंचे, तो अह्ले ताब्लीस बहुत घबराए और किल्ले के दरवाज़े बन्द कर के किल्ले की दीवार पर चढ़ गए। अह्ले ताब्लीस ने इस्लामी लश्कर से लड़ने का कस्द किया, लैकिन इन को इत्तिला' मिल चुकी थी कि बन्ज, नज्म और बराआ के लोगों ने ज़्रे फिद्या अदा कर के सुलह कर ली है लिहाज़ा उन्हों ने किल्ले की दीवार से **"लफ़ून लफ़ून"** या'नी **"अमान अमान"** पुकारना शुरू किया और फिर किल्ले से बाहर आ कर सुलह की। हज़रत खालिद ने हज़रत बादर बिन औन हुमैरी को वहां का हाकिम मुकर्रर किया और फिर वहां से इस्लामी लश्कर के कैम्प "दहाज़िम" की तरफ वापस लौटे।

हज़रत खालिद बिन वलीद बहुत सारे गनाइम और नक्द दराहिम ले कर दहाज़िम लौटे थे। और इन के इस तरह फतह व ज़फर हासिल करने पर इस्लामी लश्कर में खुशी की लहर दौड़ गई और इस्लामी लश्कर ने तहलील व तक्बीर की सदाएं बुलन्द कर के इन का शानदार इस्तिक्बाल किया। फिर हज़रत खालिद इस्लामी लश्कर के सिपाह सालार हज़रत अबू उबैदा के खैमे में आए और तमाम माले गनीमत इन की खिदमत में पैश किया और तमाम मकाम की फुतूहात की तफ्सील कह सुनाई। हज़रत अबू उबैदा बहुत खुश हुए और दुआओं से नवाज़ा। हज़रत अबू उबैदा और हज़रत खालिद बिन वलीद साहिली इलाकों की फुतूहात के मुतअल्लिक गुफ्तगू कर रहे थे कि हज़रत ज़ैद बिन वहब मदीना मुनव्वरा से अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फारूक रदियल्लाहो तआला अन्हो का खत ले कर आए।

पहाड़ी इलाकों की फुतूहात

हज़रत अबू उबैदा ने अमीरुल मोमिनीन का खत खोल कर आहिस्ता पढ़ा, फिर आप ने मुजाहिदों को जमा कर के वह खत ब-आवाज़े बुलन्द पढ़ कर सुनाया और फरमाया कि पहाड़ी इलाकों की तरफ कूच करने के मआमला में अमीरुल मोमिनीन ने मुझ को इख्तियार दिया है और मैं तुम लोगों से मश्वरा किये बगैर कोई फैसला नहीं करता। लिहाज़ा मैं हाज़िरीन से इल्तिमास करता हूं कि इस अम्र में अपने मुफीद मश्वरे ज़ाहिर करें कि हम पहाड़ी इलाकों का कस्द करें या नहीं ? हज़रत मैसरा बिन मस्रूक ने कहा कि ऐ सरदार ! हम आप के ज़ेरे दस्त हैं। हम पर लाज़िम है कि हम अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की और फिर आप की इताअत करें, आप जो भी फैसला करेंगे वह हमें कबूल व मन्ज़ूर है। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया कि यह आप लोगों की मुहब्बत और हुस्ने ज़न्न है। लैकिन मैं जानना चाहता हूं कि पहाड़ी इलाकों की तरफ जाना नफा' बख्श और फाइदा मन्द है या नहीं ? तब हज़रत खालिद बिन वलीद ने अपना मश्वरा ज़ाहिर करते हुए फरमाया कि ऐ सरदार ! पहाड़ी इलाकों की तरफ जाना यकीनन मुनासिब और मौज़ूअ है। पहाड़ी इलाकों में हमारा जाना दुश्मनों पर रोअब और दबदबा तारी करने के मुतरादिफ है। इन इलाकों के रूमियों पर यह असर काइम होगा कि इस्लामी लश्कर के गल्बे और तसल्लुत का यह आलम है कि अब पहाड़ी इलाकों तक इस की रसाई हो गई है और यह अम्र रूमियों के लिये बाइसे ज़ो'फ और खौफ है। हज़रत अबू उबैदा ने फरमाया ऐ अबू सुलैमान ! अल्लाह तआला आप को जज़ाए खैर दे, आप ने निहायत मुफीद मश्वरा पेश किया है। तमाम हाज़िरीन ने भी हज़रत खालिद के मश्वरे की ताईद व तौसीक की।

इस्लामी लश्कर की पहाड़ी इलाकों की तरफ रवानगी :-

हज़रत अबू उबैदा ने एक लम्बे नैज़े पर **हुज़ूरे अक्दस** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के बड़े अलम **''रायत''** की मानिन्द एक अलम (निशान) बनाया। जो सियाह कपड़े का था। सियाह रंग के कपड़े में सफेद रंग से जली हुरूफ में "لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ" लिखा हुवा था। हज़रत अबू उबैदा ने उस निशान (अलम) को जुंबिश दी और फिर वह

निशान हज़रत मैसरा बिन मस्रूक को अता फरमाया और इन को चार हज़ार (4000) सवारों पर सरदार मुकर्रर कर के पहाड़ी इलाकों की तरफ रवाना फरमाया। हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत मैसरा बिन मस्रूक के साथ जिन चार हज़ार सवारों को मुतअय्यन फरमाया, इन में एक हज़ार सवार गुलाम थे। इन एक हज़ार गुलामों पर हज़रत दामिस अबूल हुलूल को सरदार मुकर्रर फरमाया और हज़रत दामिस से फरमाया कि तुम हज़रत मैसरा बिन मस्रूक की सरदारी के मा-तहत रहोगे। तुम पर लाज़िम है कि हर मआमला में इन से मश्वरा करो और इन के हुक्म की इताअत करो। फिर हज़रत अबू उबैदा ने चार रूमी मुआहिदीन को राहबर की हैसियत से हज़रत मैसरा बिन मस्रूक के साथ किया, ताकि वह लश्कर को राह बताने की खिदमत अन्जाम दें। फिर हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत मैसरा बिन मस्रूक के लश्कर को दुआए खैर व आफियत से नवाज़ कर रुखसत फरमाया। तहलील व तक्बीर कहता हुवा चार हज़ार का इस्लामी लश्कर दहाज़िम से पहाड़ी इलाका के शहर **''कूरस''** की तरफ रवाना हुवा। कूरस शहर अन्जान राहों को पार कर के आता था। वह शहर पहाड़ की ऊंचाई पर वाकेअ था और मज़बूत पत्थर की बड़ी बड़ी चट्टानों से ता'मीर किया हुवा शहर था। कूरस शहर पहाड़ की बुलन्दी पर वाकेअ होने की वजह से **वहां बला की सर्दी पड़ती थी और वह इलाका बर्फ की चादरों से ढका रहता था।**

दहाज़िम से रवाना हो कर इस्लामी लश्कर **''बुकअए जुन्द-दरास''** नामी मकाम पर पहुंचा। वहां से आगे बढ़ कर **''नहरे साहूर''** पर आया और नहरे साहूर उबूर कर के कूरस के रास्ते पर एक मकाम पर रात बसर करने के लिये कयाम किया। सुब्ह को लश्कर रवाना हुवा। अब पहाड़ की ऊंचाई शुरू हूई। खतरनाक घाटियां, तंग रास्ते और नौक दार पत्थरों वाली राहें पहाड़ की ऊंचाई की तरफ जाती थीं। रास्ता इत्ना तंग था कि एक साथ दो सवार नहीं चल सक्ते थे। लिहाज़ा इस्लामी लश्कर ने कतार बांध कर पहाड़ की बुलन्दी उबूर करना शुरू किया। तंग रास्ते के दोनों तरफ नुकीले दरख्त थे, जिन की शाखें रास्ते की तरफ झुकी और लटकी हूई थीं। और गुज़रने वाले सवार को इस के कांटे चुभते थे। यहां तक कि इन के कपड़े तार तार हो जाते। पथरीली राह के नौक दार पत्थर घोड़ों के खुरों में लगते और इन के पाऊं ज़ख्मी हो जाते। इसी तरह तीन दिन की दुश्वार गुज़ार राह की मसाफत तय कर के इस्लामी लश्कर एक कुशादह मकाम पर पहुंचा। मगर वहां कड़ाके की सर्दी पड़ती थी। चारों सम्त बर्फ की सफेद चादरें बिछी हूई नज़र आती थीं। इस्लामी लश्कर का हर मुजाहिद सर्दी की शिद्दत

से ठिठुर गया था। इतनी सख्त सर्दी इन के लिये ना–काबिले बरदाश्त थी। कुव्वते तहम्मुल जवाब दे चुकी मगर फिर भी हिम्मत कर के आगे बढ़ते रहे। इस तरह सख्त तक्लीफ और मशक्कत बरदाश्त करते करते पहाड़ की चोटी पर एक वसीअ मैदान में पहुंचे। तमाम मुजाहिद पांच दिन तक मुसल्सल ऐसी दुश्वार मसाफत तय करते करते थक चुके थे। घोड़ों के पाऊं बोझल हो चुके थे, लिहाज़ा हज़रत मैसरा बिन मस्रूक ने उस वसीअ मैदान में तवक्कुफ करने का हुक्म दिया, ताकि मुजाहिदीन कुछ आराम हासिल कर लें। लश्कर उस मैदान में कुछ अर्सा ठहरा फिर कूच कर गया।

इस्लामी लश्कर ने अभी कुछ ही फास्ला तय किया था कि पहाड़ की जड़ में बड़ा शगाफ नज़र आया, लिहाज़ा लश्कर इस शगाफ में दाखिल हो कर थोड़ा आगे बढ़ा तो एक गांव नज़र आया। मुजाहिदों ने गांव में दाखिल हो कर देखा तो उस में एक भी आदमी नज़र नहीं आता था। तमाम मकानात खाली पड़े हुए हैं। किसी इन्सान का नाम व निशान नहीं था, अलबत्ता मकानों में जानवर बंधे पड़े थे। मुर्गियां और बतख अज़ानें दे दे कर शौर व गुल मचा रहे थे। मकानों में भारी बोझ वाला सामान मिस्ले पलंग, अलमारियां वगैरा पड़ी हूई थीं, लैकिन आदमियों से पूरा गांव खाली था। क्यूं कि उन्हों ने इस्लामी लश्कर को पहाड़ पर चढ़ कर गांव की तरफ आता हुवा दूर से देख लिया था, लिहाज़ा वह अपने अह्लो अयाल और कीमती अश्या वगैरा ले कर भाग गए और अपने मकानों और जानवरों को वैसे ही ला–वारिस छोड़ दिया। मुजाहिदों ने उस गांव से काफी मिक्दार में गनीमत पाया। हज़रत मैसरा बिन मस्रूक ने मुजाहिदों को तम्बीह की कि हो सक्ता है कि गांव वालों ने फरैब कर के कोई चाल चली हो और इर्द गिर्द पोशीदह रह कर हम पर नज़र रखते हों और मौका' पा कर हम्ला कर दें।

इस्लामी लश्कर थोड़ा अर्सा उस गांव में ठहरा, फिर गनीमत ले कर कूच कर गया और वहां से चल कर एक वसीअ चरागाह में पहुंचा। उस चरागाह का नाम **"मुर्जुल कबाइल"** था। इस्लामी लश्कर ने उस वसीअ चरागाह में कैम्प काइम किया। इस्लामी लश्कर के चंद मुजाहिद अतराफ के इलाके का मुआइना करने थोड़ी दूर तक चहल कदमी करते गए और जब वापस आए तो इन के साथ एक रूमी गबर था जिस को वह कैद कर के लाए थे। उस को कैद करने की वजह यह हूई कि जब चंद मुजाहिद चहल कदमी करते हुए कुछ फास्ला तय कर के मुर्जुल कबाइल के मैदान के किनारे तक गए तो उन्हों ने देखा कि पत्थर की एक चट्टान की आड़ में छुप कर एक शख्स इन को देख रहा है। वह शख्स कभी ज़ाहिर होता और कभी छुप जाता। ऐसा महसूस हुवा कि वह जासूसी कर रहा है। लिहाज़ा

मुजाहिदों के गिरोह से तीन चार मुजाहिद सरक कर अलग हो गए और लम्बा चक्कर काट कर जहां वह रूमी गबर छुप कर जासूसी कर रहा था उस के पीछे पहुंच गए। वह रूमी गबर आगे की जानिब देख रहा था और उस के पीठ के पीछे क्या हो रहा है इस से गाफिल था कि अचानक मुजाहिद उस पर जा पड़े और उसे दबोच लिया और घसीटते हुए कैदी बना कर इस्लामी लश्कर के कैम्प में ले आए। वह गबर रूमी ज़बान के इलावा और कोई ज़बान नहीं जानता था लिहाज़ा हज़रत मैसरा बिन मस्रूक ने राहबर मुआहदी में से एक रूमी को बुला कर उस रूमी गबर से हाल पूछा तो उस ने बताया कि इन्ताकिया की फतह के बा'द हिरक्ल बादशाह अपने आबाई वतन कस्तुनतुनिया चला गया है और उस का बेटा कुस्तुनतीन भी कैसारिया से वहां पहुंच गया है। हिरक्ल को मुल्के शाम के पहाड़ी इलाकों के शहरों की फिक्र लाहिक हूई, लिहाज़ा उस ने तीस हज़ार (30,000) का एक लश्कर इस इलाका में भेजा है, ताकि वह लश्कर पहाड़ी इलाकों में गश्त करे और वहां के शहरों की हिफाज़त और निगेहबानी करे। हिरक्ल का भेजा हुवा मज़्कूरा लश्कर तुम से सिर्फ छ मील की दूरी पर पड़ाव किये हुए है।

जंगे मुर्जुल कबाइल

हज़रत मैसरा रूमी गबर की ज़बान से तीस हज़ार के रूमी लश्कर की खबर सुन कर मुतफक्किर हुए और थोड़ी दैर के लिये सर झुका कर गहरी सोच में डूब गए। हज़रत मैसरा बिन मस्रूक को इस तरह मुतफक्किर देख कर हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा ने कहा कि ऐ सरदार ! क्या बात है कि मैं आप को मलूल और फिक्र मन्द देख रहा हूं ? हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा को जवाब देते हुए हज़रत मैसरा बिन मस्रूक ने फरमाया कि रूमी लश्कर तीस हज़ार (30,000) का है और हम सिर्फ चार हज़ार हैं और पहाड़ी इलाके में पहली मरतबा पर्चम ले कर हम आए हैं। अगर खुदा न ख्वास्ता हम को हज़ीमत उठानी पड़ी, तो **अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन खत्ताब** रदियल्लाहो तआला अन्हो हम को सरज़निश करेंगे और इस्लामी लश्कर के किसी मुजाहिद को मुसीबत और तक्लीफ पहुंची तो मुझ से ही पूछताछ होगी। हज़रत मैसरा बिन मस्रूक की बात सुन कर तमाम मुजाहिदों ने कहा कि ऐ सरदार ! कसम है खुदा की ! हम मौत की मुत्लक परवाह नहीं करते क्यूं कि हम ने अपनी जानें अल्लाह को बेच दी हैं और इस के इवज़ जन्नत खरीद ली है। और जो शख्स इस अम्र को जानता है वह काफिरों की जानिब से पहुंचाई जाने वाली तक्लीफ की परवाह नहीं करता। मुजाहिदों को बुलन्द हौसला देख कर हज़रत मैसरा बिन मस्रूक बहुत खुश हुए और दुआए खैर व बरकत दी। ऐन उसी वक्त रूमी लश्कर के निशान और सलीबें नज़र आईं। रूमी लश्कर फैली हूई टिड्डियों की तरह आ रहा था।

अल-किस्सा ! रूमी लश्कर भी मुर्जुल कबाइल के वसीअ मैदान में आ पहुंचा और इस्लामी लश्कर के सामने वाले किनारे पर पड़ाव डाला। रूमी सिपाही अपने कयाम के लिये खैमे नसब करने में मस्रूफ हुए। आफ्ताब गुरूब हुवा। दोनों लश्करों ने अपने अपने कैम्प में आराम से शब बसर की और कोई नाखूश गवार वाकेआ रूनुमा नहीं हुवा।

दूसरे दिन हज़रत मैसरा बिन मस्रूक ने मुजाहिदों को नमाज़े फज्र पढ़ाई और नमाज़ से फारिग हो कर खुत्बा देने खड़े हुए और जेहाद की फज़ीलत बयान कर के मुजाहिदों को जेहाद की तर्गीब देते हुए फरमाया :

وَقَالَ نَبِيُّنَا صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ الْجَنَّةُ تَحْتَ ظِلَالِ السُّيُوْفِ فَلَا تَنْظُرُوْا اِلٰى قِلَّتِكُمْ وَكَثْرَةِ اَعْدَائِكُمْ فَقَالَ عَزَّوَجَلَّ كَمْ مِنْ فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةًۢ بِاِذْنِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ مَعَ الصَّابِرِيْنَ

तर्जुमा : **"और फरमाया हमारे नबी अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने कि जन्नत तलवारों के सायों तले है। पस मत देखो अपनी किल्लत को और अपने दुश्मनों की कसरत को। अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने फरमाया है कि बारहा कम जमाअत गालिब आती है ज़ियादह गिरोह पर अल्लाह के हुक्म से और अल्लाह साबिरों के साथ है।"**

फिर हज़रत मैसरा बिन मस्रूक इस्लामी लश्कर को कैम्प से निकाल कर मैदान में लाए और लश्कर की सफ बन्दी की। मैमना पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा सहमी को और मैसरा पर हज़रत स'अद बिन सईद हनफी को सरदार मुकर्रर फरमाया और हज़रत दामिस अबूल हुलूल को एक हज़ार गुलामों के साथ लश्कर के आगे ठहराया। उधर रूमी लश्कर भी कैम्प से निकल कर मैदान में आया और दुश्मन के मुकाबला में सफ आरा हुवा। रूमी लश्कर का हर सिपाही उमदा लिबास पहने हुए था और हर एक के पास पूरे हथियार थे। लश्कर में जगह जगह निशान और सलीबें बुलन्द की हूई थीं। और तमाम रूमी सिपाही इस्लामी लश्कर की कलील ता'दाद देख कर गल्बा और फतह हासिल होने के गुरूर में अकड़ कर उछल कूद कर रहे थे और जल्द अज़ जल्द हम्ला आवर होने का कस्द कर रहे थे।

सब से पहले रूमी लश्कर से कौमे गस्सान का एक नस्रानी अरब मैदान में आया और तकब्बुर के नशे में चूर अरबी ज़बान में गुफ्तगू करते हुए बकवास करने लगा कि **मुल्के शाम के पहाड़ी इलाके में तुम को तुम्हारी मौतें लाई हैं।** इस वक्त जो तीस हज़ार का रूमी लश्कर यहां मौजूद है इस लश्कर के हर सिपाही ने सलीब की कसम खाई है कि वह तुम्हारे खून से अपनी तल्वार की प्यास बुझाएगा। अगर तुम को अपनी ज़िन्दगी प्यारी है तो अपने आप को हमारे हवाले कर दो, ताकि हम तुम सब को कैद कर के हिरक्ल बादशाह के पास भेज दें और वह तुम पर रहम कर के तुम को ब-हैसियते गुलाम ज़िन्दा रखेगा और तुम हिरक्ल बादशाह के रहम व करम के सबब ज़िन्दा रहोगे और ता-ज़ीस्त इस की गुलामी करोगे।

उस नस्रानी अरब की बकवास सुन कर हज़रत दामिस अबूल हुलूल तैश में आ गए और अपनी जगह से आगे बढ़ कर उस नस्रानी सग के करीब गए और फरमाया कि रोउसाए अरब को हिरक्ल का गुलाम बनाने के **ख्वाब देखने वाले सगे रूमी ! मुझ को देख ! मैं इन मुकद्दस सहाबए किराम का अदना गुलाम हूं। तू पहले मुझ से तो निपट ले,** फिर बा'द में हमारे मुअज़्ज़ आकाओं के मुतअल्लिक बात कर। और हां ! तू ने यह भी कहा है कि तुम्हारे लश्कर के हर सिपाही की तल्वार हमारे खून की प्यासी है। देख मेरा यह नैज़ा तेरे नापाक खून का प्यासा है, यह कह कर हज़रत दामिस अबूल हुलूल ने अपना नैज़ा उस के सीना में घुसेड़ दिया और एक ही वार में उस को ज़मीन पर मुर्दा डाल दिया। फौरन रूमी लश्कर से एक गबर खशमनाक हालत में मैदान में उतरा और तैज़ रफ्तारी से घोड़ा दौड़ाता हुवा नैज़ा रास्त कर के हज़रत दामिस की तरफ आया, ताकि नैज़े की नौक हज़रत दामिस के जिस्म में पैवस्त कर दे, मगर हज़रत दामिस ने बिजली की सुरअत से अपने घोड़े को गरदावा दे कर घोड़े की पीठ पर झुक गए और हाथ में नैज़ा मज़बूत थाम कर उस गबर की सम्त दराज़ कर दिया। जैसे ही वह गबर करीब आया उस का वार खाली फिरा और हज़रत दामिस का नैज़ा उस के सीने की तरफ से उस के जिस्म में दाखिल हो कर उस के दिल को चीरता हुवा पुश्त से बाहर निकल गया और वह गबर घोड़े की ज़ीन से उछल कर ज़मीन पर कुश्ता गिरा।

अब हज़रत दामिस ने मैदान में चक्कर लगा कर ज़ौर से पुकारना शुरू किया कि ऐ रूमियो ! मैं एक गुलाम हूं कौमे अरब का। अपने दिलैरों को मुकाबला करने भेजो ताकि उसे पता चले कि कौमे अरब के गुलाम से मुकाबला करना कितना मुश्किल है। हज़रत दामिस अबूल हुलूल मुसल्सल लल्कारते रहे, लैकिन रूमी लश्कर से किसी को हिम्मत न हूई कि वह मुकाबला करने मैदान में आए। रूमियों पर इस्लामी लश्कर की हैबत छा गई थी। रूमी सिपाही सोचने लगे कि जब कौम अरब के गुलाम की शुजाअत का यह आलम है तो इन के रोउसा की दिलैरी कैसी होगी ? जब रूमी लश्कर से मुकाबला करने कोई भी न निकला तो हज़रत दामिस ने रूमी लश्कर की सफ अव्वल पर हम्ला कर दिया और इन की इत्तिबा' में पूरे इस्लामी लश्कर ने यल्गार कर दी। दोनों लश्कर आपस में गुथ गए और जंग के शौ'ले बुलन्द हुए। शिद्दत से नैज़ा ज़नी और शम्शीर ज़नी का बाज़ार गर्म हुवा। रूमी लश्कर के सिपाही बौखला गए, लैकिन थोड़ी दैर बा'द संभल गए और बराबर मुकाबला करने लगे। जब आफ्ताब बुलन्द हो कर गर्म हुवा तब रूमियों ने हम्ले में शिद्दत की और चार हज़ार मुजाहिदों को अपने घैरे में ले लिया।

इस्लामी मुजाहिदों की ज़बान पर सदाए या मुहम्मद या मुहम्मद y :-

इस्लामी लश्कर के मुजाहिदीन तीस हज़ार रूमी सिपाहियों के नर्गे में आ चुके थे, लैकिन अल्लाह की मदद पर यकीने कामिल रखते हुए साबित कदमी और जवांमर्दी से लड़ते रहे। बा'ज़ जगह तो यह हालत थी कि एक मुजाहिद पर एक सौ रूमी सिपाही टूट पड़े थे, लैकिन जैशे इस्लाम का कफन बरदोश मुजाहिद मिस्ले डकारने वाले शैर के रूमियों से नबर्द आज़मा था। रूमी लश्कर के हम्ले की शिद्दत बढ़ती जाती थी और मुजाहिद सख्त मुसीबत में मुब्तला थे। ब-ज़ाहिर तो ऐसा लगता था कि इस्लामी लश्कर के मुजाहिद रूमियों के सामने ज़ियादह दैर ठहर न सकेंगे। मुजाहिदों को भी अपनी शहादत का यकीन हो गया था, लिहाज़ा वह अपनी जान हथैली पर रख कर मौत की लड़ाई लड़ते थे। रूमियों को यह उम्मीद बंधी थी कि हम अन्करीब गालिब आ जाएंगे, लैकिन मुजाहिदों ने इन की उम्मीदों पर पानी फैर दिया। हज़रत मैसरा बिन मस्रूक मुजाहिदों को मुसल्सल जेहाद की तर्गीब दे कर जौश पैदा करते थे। अब मुजाहिद बुरी तरह थक चुके थे। और सख्त मुसीबत में मुब्तला थे कि उन्हों ने अपने आका व मौला, दाफेउल बला वल वबा, मुअय्यन व नासिर, प्यारे रसूले मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को पुकारा। उस वक्त की सूरते हाल का ज़िक्र इमामे अर्बाबो सेयर व तवारीख हज़रत अल्लामा मुहम्मद बिन अम्र वाकदी कुद्दिसा सिर्रहु ने अपनी किताब में यूं किया है :

> **''लड़े मुसल्मान तलवारों से, यहां तक कि जाना उन्हों ने कि वह न लोटेंगे और मुसल्मान भरोसा रखते थे अल्लाह गालिब और बुज़ुर्ग पर, और रूमी चिल्लाते थे अपने कल्मए कुफ्र से और ब-ई-हमा वह कहते थे कि गालिब हूई सलीब और मुसल्मान तलब करते थे कुशूद कार को इन पर, और गुलाम लोग मौत की लड़ाई लड़ते थे और मुसल्मान का शेआर उस दिन ''अन्नस्रो अन्नस्रो'' और गुलाम का शेआर ''या मुहम्मदो'' सल्लल्लाहो तआला अलैह व आलेहि व सल्लम ''या मुहम्मदो'' सल्लल्लाहो तआला अलैह व आलेहि व सल्लम था।''**

(हवाला : फुतूहुश्शाम, अज़ अल्लामा वाकदी, सफहा : 385)

नाज़िरीने किराम गौर फरमाएं ! मुसीबत में फंसे हुए इस्लामी लश्कर के मुजाहिदों ने ''या मुहम्मद'' (या रसूलल्लाह) सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम पुकारा। इस लश्कर

में सहाबए किराम भी मौजूद थे। इन का यह अकीदा था कि मुसीबत के वक्त नजात हासिल करने के लिये बारगाहे रिसालते मआब सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम से इस्तिगासा करना यकीनन जाइज़ है। **अगर या रसूलल्लाह कहना शिर्क होता तो सहाबए किराम रिज़्वानुल्लाहे तआला अलैहिम अज्मईन इस तरह निदा करना हरगिज़ रवा न रखते बल्कि सख्ती से मना' फरमा देते**। और यह हकीकत है कि अल्लाह तबारक व तआला ने अपने महबूबे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को वह इख्तियार और तसर्रुफ अता फरमाया है कि वह अपने नाम लेवा की मुसीबत के वक्त ज़रूर मदद फरमाते हैं :

जालों पे जाल पड़ गए लिल्लाह वक्त है
मुश्किल कुशाई आप के नाखुन अगर करें

◇◇

बिगड़ा जाता है खैल मेरा
आका आका संवार आका

(अज़ : इमामे इश्को मुहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

लैकिन अफ्सोस ! दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन मुसीबत के वक्त हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को मदद के लिये पुकारने को शिर्क कहते हैं।

■ इमामुल मुनाफिकीन **मौलवी इस्माईल देहलवी** ने लिखा है :

"हाजतें बर लाना, बलाएं टालना, मुसीबत में दस्तगीरी करना, बुरे वक्त में पहुंचना, यह सब अल्लाह ही की शान है। और किसी नबी और वली, पीर व शहीद, भूत व परी की यह शान नहीं। जो शख्स किसी का कोई ऐसा तसर्रुफ साबित करे और उस से मुराद मांगे और इसी तवक्को' पर उस की नज़्र व नियाज़ करे और उस की मन्नतें माने और उस को मुसीबत के वक्त पुकारे, वह मुश्रिक हो जाता है।"

(हवाला : तक्वियतुल ईमान, नाशिर : दारुस-सल्फिया, बम्बई, सफहा : 23)

वहाबी व तब्लीगी जमाअत के हकीमुल उम्मत **मौलवी अशरफ अली थानवी** ने अपनी किताब "बहिश्ती ज़ैवर" में "शिर्क और कुफ्र की बातों का बयान" उन्वान के तहत लिखा है :

"किसी को दूर से पुकारना और यह अकीदा रखना कि उस को खबर हो गई (शिर्क है)।"

(हवाला : बहिश्ती ज़ैवर, नाशिर : रब्बानी बुक डिपो, देह्ली, हिस्सा : 1, सफहा : 34)

"तक्वियतुल ईमान" और **"बहिश्ती ज़ैवर"** की मुन्दरजा बाला इबारात का मा हस्ल यह है कि मुसीबत के वक्त हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को पुकारने वाला मुश्रिक है (मआज़ल्लाह)। लैकिन सहाबए किराम और ताबेईन किराम ने मुसीबत के कई मौकों पर मदद के लिये हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो अलैह व सल्लम को पुकारा है। नाज़ेरीन इन्साफ फरमाएं कि तक्वियतुल ईमान और बहिश्ती ज़ैवर का फत्वा किन मुकद्दस हज़रात पे चस्पां हो रहा है।

अल-किस्सा ! मुजाहिदीने इस्लाम **"या मुहम्मद" (या रसूलल्लाह)** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम का ना'रा बुलन्द करते हुए शाम तक रूमियों से टक्कर लेते रहे। जब आफ्ताब गुरूब हुवा तो जंग मौकूफ हूई और दोनों लश्कर अपने कैम्प में वापस आए। उस दिन की जंग का नतीजा यह था।

☪ इस्लामी लश्कर से **शहीद होने वाले** : 50 (पचास)
कैद होने वाले : 11 (ग्यारह) मुजाहिद

☪ रूमी लश्कर से **मक्तूल होने वाले** : 1100 ग्यारह सौ
कैद होने वाले : 900 नौ सौ सिपाही

इस्लामी लश्कर से शहीद होने वालों में :

(1) हज़रत हर्स बिन यर्बूअ (2) हज़रत सहम बिन जाबिर

(3) हज़रत अब्दुल्लाह बिन साइद (4) हज़रत जरीर बिन सालेह

(5) हज़रत ईद बिन बाहिर (6) हज़रत नो'मान बिन बुहैर

(7) हज़रत ज़ैद बिन अर्कम (8) हज़रत ज़िरादा बिन हातिम

(9) हज़रत रवाहा बिन सुहैल वगैरा रोउसाए लश्करे इस्लाम काबिल ज़िक्र हैं।

इस्लामी लश्कर से कैद होने वालों में :

(1) हज़रत दामिस अबूल हुलूल (2) हज़रत आमिर बिन तुफैल

(3) हज़रत राशिद बिन ज़ुबैर (4) हज़रत सालिम बिन मुफ़्रेह

(5) हज़रत मालिक बिन हातिम (6) हज़रत दारिम बिन साबिर

(7) हज़रत औन बिन कारिब (8) हज़रत मश्अर बिन हस्सान

(9) हज़रत मुफ़्रेह बिन आसिम (10) हज़रत निब्हा बिन मुर्रा और

(11) हज़रत अदी बिन शेहाब थे।

जब इस्लामी लश्कर अपने कैम्प में आया, तो हज़रत दामिस अबूल हुलूल वापस नहीं आए। मुजाहिदों ने इन के मुतअल्लिक एक दूसरे से पूछा, किसी ने इन को इस्लामी कैम्प में वापस आते नहीं देखा था, लिहाज़ा कैम्प में इन को तलाश किया गया, लैकिन वह मफ्कूद थे। तो अंदेशा हुवा कि शायद वह शहीद हो गए, चंद मुजाहिद मैदाने कारज़ार में गए और मक्तूलीन की लाशें टटोल टटोल कर इन्हें ढूंढा, लैकिन वहां भी इन का पता न चला। फिर यह गुमान हुवा कि वह गिरफ्तार हो गए। हज़रत दामिस अबूल हुलूल की गुमशुद्गी की वजह से इस्लामी लश्कर में रंज और तश्वीश की लहर दौड़ गई। तमाम मुजाहिदीन हज़रत दामिस के लिये फिक्र मन्द थे और बारगाहे खुदावन्दी में इन की सलामती और रिहाई की रो रो कर दुआ करते थे।

हुज़ूरे अक्दस y ने मुसल्मान कैदियों को रिहाई अता फरमाई

दूसरे दिन नमाज़े फज्र के बा'द इस्लामी लश्कर तैयार हो कर मैदान में आया, तो रूमी लश्कर पहले मैदान पहुंच कर इस्लामी लश्कर का मुन्तज़िर था। जैसे ही इस्लामी लश्कर मैदान में आया, रूमी लश्कर ने हम्ला कर दिया और घमसान की जंग शुरू हो गई। हज़रत दामिस के ला-पता होने की वजह से तमाम मुजाहिदीन मलूल थे, लैकिन सब्र व इस्तिकलाल के साथ साबित कदम थे और रूमी हम्ले का मुंह तोड़ जवाब देते हुए लड़ रहे थे। अचानक रूमी लश्कर में भगदड़ मच गई और रूमी सिपाही इधर उधर हट कर मुन्तशिर होने लगे। वजह यह हूई थी कि हज़रत दामिस और इन के साथी कैद से निकल कर रूमी लश्कर के पीछे से आ कर तक्बीर व तहलील की सदाएं बुलन्द करते हुए हम्ला आवर हो गए और रूमी सिपाहियों के सर कलम करते हुए इस्लामी

लश्कर की तरफ बढ़ रहे थे। रूमी सिपाही अपनी जान बचाने के लिये इधर उधर भाग रहे थे। हालां कि हज़रत दामिस और इन के साथी कुल मिला कर सिर्फ ग्यारह आदमी थे, लैकिन अल्लाह की कुदरत से इन की ता'दाद रूमियों को बहुत ज़ियादह नज़र आती थी। **ग्यारह नहीं गोया ग्यारह हज़ार तलवारें चलती हों इस तरह रूमी सिपाही मक्तूल और ज़ख्मी हो रहे थे।**

हज़रत अतिय्या बिन साबित बयान करते हैं कि मैं ने इस्लामी लश्कर से देखा कि एक गिरोह रूमी लश्कर के पीछे से आगे बढ़ रहा है और रूमी सिपाहियों को मारता, काटता हुवा आगे बढ़ कर हमारी तरफ आ रहा है। मैं ने गुमान किया कि शायद हमारी मदद के लिये इस्लामी लश्कर की कुमुक आ गई है या फिर जंगे ओहद और जंगे बद्र की तरह आस्मान से फरिश्ते नाज़िल हुए हैं। लिहाज़ा मैं ने अपना घोड़ा उस तरफ मोड़ा और करीब गया तो क्या देखता हूं कि हज़रत दामिस और इन के साथी रूमी भैड़ों पर मिस्ले शैर हम्ला आवर हैं और रूमियों की सफें उलट पलट कर रहे हैं। हज़रत अतिय्या बिन साबित ने मज़ीद बयान किया कि मैं ने हज़रत दामिस अबूल हुलूल को सहीह व सालिम देखा, तो मेरी खुशी की इन्तिहा न रही। मैं इन के करीब गया और पुकार कर कहा कि ऐ दामिस ! तुम कहां थे ? सरदार मैसरा बिन मस्रूक और तमाम मुसल्मान तुम्हारे फिराक में सख्त गमगीन हैं। हज़रत दामिस अबूल हुलूल ने इन को जवाब देते हुए जो कहा, वह इमामे अर्बाबो सेयर हज़रत अल्लामा मुहम्मद बिन अम्र वाकदी कुद्दिसा सिर्रहु से समाअत फरमाएं :

> **"पस कहा उन्हों ने कि ऐ भाई नहीं था मैं मगर सख्त लड़ाई में और गिरफ्तार हो गया और ना-उम्मीद हो गया था मैं अपनी जान से, यहां तक कि छुड़ाया मुझ को मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने और यह वक्त पूछने का नहीं है।"**

(हवाला : - फुतूहुश्शाम, अज़ : अल्लामा वाकदी, सफ़्हा : 386)

नाज़िरीने किराम ! हज़रत दामिस अबूल हुलूल के जुम्ले **"यहां तक कि छुड़ाया मुझ को रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने"** पर तवज्जोह फरमाएं। इन का सिर्फ अकीदा ही नहीं बल्कि ऐन मुशाहिदा और तजरबा था कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने इन को कैद से छुड़ाया है। हज़रत दामिस को हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने किस तरह कैद से निकाला इस की तफ्सील चंद सुतूर के बा'द मुलाहिज़ा फरमाएं।

हज़रत अतिय्या बिन साबित ने फौरन अपने घोड़े की बाग फैरी और हज़रत मैसरा बिन मस्रूक की जानिब दौड़े और इन के करीब जा कर पुकार कर कहा कि ऐ सरदार ! रहमत करे तुम पर अल्लाह ! आई है हमारे लिये मदद अल्लाह की जानिब से ! खुश्खबरी हो तुम को कि हमारे साथियों की कुमुक आ पहुंची है । हज़रत मैसरा बिन मस्रूक ने फरमाया क्या खुश्खबरी है ? जल्दी बताओ ! हज़रत अतिय्या बिन साबित ने कहा कि हमारे आका व मौला, रसूले मक्बूल, नबीए रहमत सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की तरफ से मदद और हिमायत आई है और हज़रत दामिस अबूल हुलूल और इन के साथी कैद से रिहाई पा कर मैदान में आ पहुंचे हैं और रूमी सिपाहियों को वासिले जहन्नम कर रहे हैं । हज़रत दामिस अबूल हुलूल और इन के साथियों की रिहाई की खबर सुन कर हज़रत मैसरा बिन मस्रूक का दिल बाग बाग हो गया, चेहरा खुशी से चमक उठा और पूरे इस्लामी लश्कर में खुशी की लहर दौड़ गई । मुजाहिदों में एक नया जोश पैदा हो गया । मुजाहिदों ने रूमियों से ऐसा सख्त किताल किया कि रूमियों को दिन में तारे नज़र आने लगे । हज़रत मैसरा बिन मस्रूक ने ऐसी सख्त शम्शीर ज़नी की कि इन के हाथ में जो निशान (अलम) था, वह खून के छींटों से सुर्ख हो गया, हज़रत दामिस अबूल हुलूल और इन के साथियों का हाल यह था कि रूमियों की गर्दनें कटने से खून के फव्वारे उडते, उस खून ने इन के बदन को लाल कर दिया था,गोया वह खून के तालाब में गोता लगा कर बाहर निकले हैं । अल-मुख्तसर ! इस्लामी लश्कर के मुजाहिदों ने रूमियों के छक्के छुड़ा दिये और उस दिन रूमी लश्कर के तीन हज़ार सिपाही कत्ल हुए । गुरूबे आफ्ताब के वक्त जंग मौकूफ हूई और दोनों लश्कर अपने अपने कैम्प में वापस लौटे । हज़रत दामिस अबूल हुलूल अपने साथियों के हमराह जब इस्लामी लश्कर के कैम्प में वापस आ रहे थे, तो इन को आता देख कर सरदार मैसरा बिन मस्रूक इन का इस्तिक्बाल करने आगे बढ़े और जब इन के करीब पहुंचे तो हज़रत मैसरा बिन मस्रूक ने घोड़े से उतर कर पा-प्यादा होने का कस्द किया, ताकि हज़रत अबूल हुलूल दामिस की ता'ज़ीम करें, लैकिन हज़रत दामिस ने इन को कसम दे कर ऐसा करने से बाज़ रखा । फिर हज़रत मैसरा बिन मस्रूक ने हज़रत दामिस अबूल हुलूल को सलाम कर के मुसाफहा किया और इन की रिहाई की कैफियत पूछी । हज़रत दामिस अबूल हुलूल ने कैद से रिहाई हासिल करने की जो कैफियत बयान की इस को हम इमाम अजल अल्लामा वाकदी कुद्दिसा सिर्रहु की किताब से नक्ल करते हैं :

"दामिस ने कहा कि ऐ सरदार ! जानो तुम इस अम्र को कि रूमियों ने मुझ को गिरफ्तार किया था और दर लाए थे हम को बेड़ियों में, और ऐसा ही किया था उन्हों ने मेरे हमराहियों के साथ, और ना उम्मीद हो गए थे हम अपनी जानों से । पस छुपाया जब रात ने सौ गया मैं । पस देखा मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को और गोया आप यह इर्शाद फरमाते हैं "لَا بَاسَ عَلَيْكَ دَامِسُ وَاعْلَمْ اَنَّ مَنْزِلَتِى عِنْدَ اللهِ عَظِيْماً" **(नहीं सख्ती है तुझ पर ऐ दामिस ! और जान लो कि मेरा मरतबा अल्लाह के नज़दीक बड़ा है) फिर खींचा आप ने अपने बुज़ुर्ग हाथ से बेड़ियों को । पस खुल गईं वह और तोकों को पस दूर हो गए वह और ऐसा ही किया आप ने मेरे हमराहियों के साथ, और फरमाया** "اَبْشِرُوْا بِنَصْرِ اللهِ فَاَنَا مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللهِ" **(खुश हो तुम साथ मदद दही अल्लाह के, पस मैं मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह हूं सल्लल्लाहो तआला अलैह व आलेहि व सल्लम) । फिर पोशीदह हो गए आप हम से । पस लिया हम ने अपनी तल्वार को, और खींच लिया हम ने इन को कौम के बीच से, और हम्ला किया हम ने कौम पर । पस मदद दी हम को अल्लाह ने इन पर, और रसूलल्लाह ने, और यह हाल और बयान हमारा है । पस शौर किया मुसल्मानों ने साथ तहलील और तक्बीर के और दुरूद भेजा बशीर और नज़ीर पर ।"**(सल्लल्लाहो तआला अलैह व आलेहि व अस्हाबेहि व सल्लम)

(हवाला : फुतूहुश्शाम, अज़ : अल्लामा वाकदी,सफहा : 386)

नाज़िरीने किराम ! फुतूहुश्शाम की मुन्दरजा बाला इबारत का ब-गौर मुतालआ फरमाएंगे, तो हस्बे ज़ैल उमूर साबित होंगे :

(1) हज़रत दामिस अबूल हुलूल ने फरमाया कि मुझ को हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने कैद से रिहाई अता फरमाई और इन का यह जुम्ला हज़रत मैसरा बिन मस्रूक और दीगर जलीलुल कद्र सहाबए किराम ने सुना और इस पर खुशी का इज़्हार करते हुए तहलील व तक्बीर की सदा बुलन्द की ।

(2) हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने हज़रत दामिस से फरमाया कि अल्लाह के नज़दीक मेरा मरतबा बड़ा है ।

(3) हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने हज़रत दामिस और इन के साथियों की बेड़ियों और तोकों को खौल दिया और इन को कैद से रिहा फरमा दिया।

(4) हज़रत दामिस ने हज़रत मैसरा बिन मस्रूक और सहाबए किराम के सामने अपनी रिहाई की दास्तान सुनाने के बा'द यह जुम्ला कहा कि ''मदद दी हम को अल्लाह ने इन पर और रसूलल्लाह ने''

लिहाज़ा साबित हुवा कि सहाबए किराम रिज़्वानुल्लाहे तआला अलैहिम अज्मईन का यह अकीदा, मुशाहिदा और ज़ाती तजरबा था कि **अल्लाह तआला ने अपने महबूबे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को वह तसर्रुफ और इख्तियार अता फरमाया है कि आप जिस की भी, जहां कहीं भी, जिस हाल में भी और जैसी भी मदद फरमाना चाहें, फरमा सक्ते हैं बल्कि मदद फरमाई है।** जब कोई मोमिन हर तरफ से बलाओं में फंस जाता है और उस के लिये नजात की कोई सबील नहीं होती, और उस का कोई हम दम व यावर नहीं होता, ऐसे आलम में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ज़रूर उस की मदद फरमाते हैं :

टूट पड़ती हैं बुलाएं जिन पर, जिन को मिलता नहीं कोई यावर
हर तरफ से वो पुर अरमां फिर कर, इन के दामन में छुपा करते हैं

(अज़ : इमामे इश्को मुहब्बत, हज़रत रज़ा बरैलवी)

और बे: शक हुज़ूरे अक्दस अपने नाम लेवाओं की मदद फरमाने ज़रूर तशरीफ ले जाते हैं। हज़रत दामिस अबूल हुलूल और इन के साथियों को जब रूमियों ने कैद कर लिया था तब ब-कौल हज़रत दामिस ''**और ना उम्मीद हो गए थे हम अपनी जानों से**'' या'नी हज़रत दामिस अबूल हुलूल और इन के साथी अपनी ज़िन्दगी से ना-उम्मीद हो गए थे। लैकिन ऐसे ना-उम्मीदी के आलम में :

लो वो आया मेरा हामी, मेरा गम ख्वारे उमम
आ गई जां तने बे जां में, ये आना क्या है

(अज़ : इमामे इश्को मुहब्बत, हज़रत रज़ा बरैलवी)

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने हज़रत दामिस अबूल हुलूल और

इन के साथियों की बेड़ियां खोल दीं और इन को कैद व बन्द से नजात अता फरमाई और इन की बेड़ियां खोलते वक्त यह इर्शाद फरमाया कि ''اِعْلَمْ اَنَّ مَنْزِلَتِی عِنْدَ اللهِ عَظِیْماً'' या'नी ''**जान ले कि बे शक अल्लाह के नज़दीक मेरा बड़ा मरतबा है**''। और फिर अपना तआरुफ फरमाते हुए इर्शाद फरमाया कि ''فَاَنا مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللهِ'' या'नी ''**मैं मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह हूं**'' (सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम) या'नी हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम मुजाहिदों को बावर करा रहे हैं कि मैं वह महबूबे रब्बुल आलमीन हूं, जिस का मरतबा अल्लाह के नज़दीक बहुत बड़ा है और अल्लाह तआला ने मुझ को वह तसर्रुफ और इख्तियार अता फरमाया है कि मुसीबत के वक्त तुम्हारी दस्तगीरी और मुश्किल कुशाई कर के तुम को कैद से रिहाई अता फरमा सक्ता हूं :

गमज़दों को ''रज़ा'' मुज़्दा दिजे कि है
बै कसों का सहारा हमारा नबी

(अज़ : इमामे इश्को मुहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

लैकिन अफ्सोस ! सद अफ्सोस !

कि दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन यह अकीदा राइज करने की सई नाकाम करते हैं कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो अलैह व सल्लम को अल्लाह ने कोई तसर्रुफ और इख्तियार नहीं दिया, वह अल्लाह की शान के आगे ज़र्रा नाचीज़ से भी कमतर हैं, इन का मरतबा बड़े भाई जैसा है, वगैरा वगैरा।

इमामुल मुनाफिकीन **मौलवी इस्माईल देह्लवी** की रुसवाए ज़माना किताब ''**तक्वियतुल ईमान**'' से कुछ इक्तिबासात :

- <u>सफ्हा नम्बर 92 पर लिखा है कि</u> :

''अल्लाह की शान बहुत बड़ी है, सब अम्बिया और औलिया इस के सामने एक ज़र्रा नाचीज़ से भी कम तर हैं।''

- <u>सफ्हा नम्बर 70 पर लिखा है कि</u> :

''और जिस का नाम मुहम्मद या अली है वह किसी चीज़ का मुख्तार नहीं।''

- <u>सफ्हा नम्बर 30 पर लिखा है कि</u> :

''और ब यकीन जान लेना चाहिये कि हर मख्लूक बड़ी हो या छोटी, वह अल्लाह की शान के आगे चमार से भी ज़ियादह ज़लील है।''

● सफहा नम्बर 99 पर लिखा है कि :

"औलिया व अम्बिया व इमाम ज़ादा, पीर व शहीद या'नी जितने अल्लाह के मुकर्रब बन्दे हैं, वह सब इन्सान ही हैं और आजिज़ बन्दे हैं और हमारे भाई हैं मगर अल्लाह ने इन को बड़ाई दी वह बड़े भाई हुए ।"

नाज़ेरीने किराम "तक्वियतुल ईमान" किताब के मुन्दरजा बाला इक्तिबासात देखें और इन का तकाबुल सहाबए किराम के कौल व फे'ल से करें, तो पता चलेगा कि तक्वियतुल ईमान के ए'तेकाद और सहाबए किराम के ए'तेकाद में बो'दल शर्कैन जितना तज़ाद है । सहाबए किराम ने मुहब्बते रसूल और अज़्मते रसूल के तहत जिन अफ्आल व अक्वाल को रवा रखा, जिस पर मुदावमत की और अपने मुत्तबेईन व मुतअल्लिकीन को जिस की ता'लीम व तल्कीन की, वह तमाम अफ्आल को इमामुल मुनाफिकीन मौलवी इस्माईल देह्लवी ने शिर्क में शुमार कर दिया और इन अफ्आल के मुर्तकिब को मुश्रिक करार दिया ।

तक्वियतुल ईमान के मुन्दरजा बाला इक्तिबासात का अगर तन्कीदी जाइज़ा लिया जाए, तो इस के रद्द में बहुत कुछ लिखा जा सक्ता है । लैकिन इस वक्त हम मुल्के शाम के सफर पर हैं और यह सफर जल्दी पूरा करना है, क्यूं कि मुल्के शाम के बा'द "मिस्र" का सफर शुरू होने वाला है, लिहाज़ा नाज़िरीने किराम की अदालत में इस्तिगासा है कि मीज़ाने अद्ल के एक पल्ले में फुतूहुश्शाम की इबारत रखें और दूसरे पल्ले में मौलवी इस्माईल देह्लवी की तक्वियतुल ईमान की इबारतें रखें और ब-नज़्रे इन्साफ मुवाज़ना करें, तो यह नतीजा और फैसला ही अख्ज़ होगा कि मुसन्निफे तक्वियतुल ईमान, इमामुल मुनाफिकीन मोल्वी इस्माईल देह्लवी और इन के मुत्तबेईन दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन फिर्क-ए वहाबिया, नज्दिया, देवबन्दिया और तब्लीगिया के मुतअल्लिक सिर्फ यही कहा जाएगा :

(1) **ज़िक्र रोके, फज़्ल काटे, नुक्स का जोयां रहे**
फिर कहे मर्दक कि हूं उम्मत रसूलल्लाह की

(2) **उफ रे मुन्किर यह बढ़ा जौशे तअस्सुब आखिर**
भीड़ में हाथ से कमबख्त के ईमान गया

(अज़ : इमामे इश्को मुहब्बत, हज़रत रज़ा बरैलवी)

अतराफ के दैहातियों से रूमी लश्कर के लिये आम लोगों की कुमुक :-

रूमी लश्कर के सरदार का नाम बतरीक **"जारिस"** था । हज़रत दामिस अबूल हुलूल और इन के साथियों का कैद से भाग जाना, इलावा अज़ीं दूसरे दिन की लड़ाई में तीन हज़ार रूमी सिपाहियों का कत्ल होना, उस पर शाक गुज़रा । रात के वक्त उस ने अपने लश्कर को खूब डांट डपट की और सरज़निश करते हुए धमकी दी कि आइन्दा कल जिस ने आज की तरह बुज़दिली, सुस्ती और बे एहतियाती की, तो मैं उस शख्स को मार डालूंगा । फिर रात के वक्त बतरीक "जारिस" ने अतराफ के दैहातों से लोगों को मदद के लिये बुलाया । चुनान्चे लड़ाई के तीसरे दिन सुब्ह के वक्त अतराफ के दैहातियों से मुतअस्सिब रूमी लोग मिस्ले टिड्डी दिल के उमड पड़े और गिरोह दर गिरोह आ कर रूमी लश्कर में शामिल होने लगे । रूमी लश्कर ने मज़ीद दैहात के लोगों की आमद के इन्तेज़ार में लड़ने से तवक्कुफ किया, ताकि कसीर ता'दाद में मज्मा' होने के बा'द जंग छेड़ी जाए । दो तीन दिन इस तरह गुज़रे और इतने में तो रूमी लश्कर की ता'दाद में काफी इज़ाफा हो गया । इस्लामी लश्कर में अतराफ के लोगों की रूमी लश्कर में शमूलियत की इत्तिला' आई, तो हज़रत मैसरा बिन मस्रूक ने मुजाहिदों से मुखातब हो कर फरमाया कि ऐ कुरआन के उठाने वालो ! सब्र और इस्तिकलाल से काम ले कर जेहाद करने में अल्लाह की मदद ज़रूर नाज़िल होती है, लिहाज़ा अल्लाह की नुस्रत और मदद पर ए'तमाद कर के जेहाद में साबित कदम रहना । तमाम मुजाहिदों की जानिब से जवाब देते हुए हज़रत सईद बिन ज़ैद बिन अम्र बिन नुफैल अदवी ने कहा कि ऐ सरदार ! हम सब हौज़े कौसर का पानी पीने के मुश्ताक हैं और **हौज़े कौसर के पानी की तलब में अपना खून राहे खुदा में पानी की तरह बहा देंगे** और शहादत का जाम पी कर अल्लाह की रज़ामन्दी हासिल करेंगे । मुजाहिदों के जज़्बए ईसार व कुरबानी को देख कर हज़रत मैसरा बहुत खुश हुए । फिर हज़रत मैसरा बिन मस्रूक ने इस्लामी लश्कर के अहम अराकीन से मश्वरा किया और एक रूमी मुआहदी को रात के वक्त खुफिया तौर पर अमीनुल उम्मत हज़रत अबू उबैदा की खिदमत में रवाना किया ताकि इन को सूरते हाल से आगाह कर के लश्कर की कुमुक ले आए ।

वह रूमी मुआहदी रात दिन मुसल्सल तैज़ रफ्तार घोड़े से मसाफत तय करता हुवा हल्ब पहुंचा । हज़रत अबू उबैदा इस्लामी लश्कर को "दहाज़िम" से हल्ब ले आए थे और हल्ब में पड़ाव किया था । वह मुआहदी इस्लामी लश्कर के कैम्प में पहुंच कर सीधा हज़रत अबू उबैदा के खैमे में गया । जब वह मुआहदी खैमे में दाखिल हुवा, तो वह मुसल्सल सफर

करने की वजह से निढाल और शिकस्ता हाल था। उस में गुफ्तगू करने की भी सकत न थी चुनान्चे हज़रत अबू उबैदा ने उस को खाना खिलाया और थोड़ी देर आराम कराया। जब उस मुआहदी को कुछ राहत हासिल हूई, तब हज़रत अबू उबैदा ने उस से फरमाया कि तुम्हारी खस्ता हालात और उतरा हुवा चेहरा देख कर मुझे अंदेशा होता है कि शायद इस्लामी लश्कर के मुतअल्लिक तुम बुरी खबर लाए हो। मुआहदी ने कहा कि खुदा की कसम इस्लामी लश्कर हलाक नहीं हुवा, लैकिन सख्त आफत और मुसीबत में मुब्तला है। फिर उस ने हज़रत अबू उबैदा को तमाम कैफियत कह सुनाई। सुन कर हज़रत अबू उबैदा बे चैन हो गए, घबराहट के आलम में उठ खड़े हुए और बज़ाते खुद हज़रत खालिद बिन वलीद के खैमे में गए। उस वक्त हज़रत खालिद बिन वलीद अपनी ज़िरह और सामाने जंग दुरुस्त कर रहे थे। अचानक हज़रत अबू उबैदा को अपने खैमे में देख कर वह चौंक पड़े और फौरन इन की ता'ज़ीम के लिये खड़े हो गए और सलाम पैश कर के मर्हबा कहा। **हज़रत खालिद ने पूछा कि ऐ सरदार ! खैरियत तो है ?** हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत खालिद का हाथ थामा और अपने खैमे में ले आए और उस मुआहदी से फरमाया कि हज़रत खालिद को तमाम कैफियत कह सुना, चुनान्चे उस मुआहदी ने तमाम रूदाद बयान की। हज़रत खालिद ने फरमाया ऐ सरदार ! मैं ने अपनी जान को राहे खुदा में वक्फ कर दिया है। **अल्लाह और अल्लाह के रसूल के नाम पर अपनी जान कुरबान करने में बुख्ल और कोताही नहीं करूंगा।** मैं इसी वक्त रवाना होता हूं। चुनान्चे हज़रत खालिद अपने खैमे में आए और मुसल्लह हुए और **हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के मुकद्दस गेसूओं वाली मुबारक टोपी अपने सर पर रखी** और सवार हो कर हज़रत अबू उबैदा की खिदमत में आए। इस दौरान हज़रत अबू उबैदा ने इस्लामी लश्कर में मुनादी करा के तीन हज़ार सवारों को हज़रत खालिद बिन वलीद के साथ जाने के लिये तैयार होने का हुक्म दे दिया था। लिहाज़ा तीन हज़ार मुजाहिदीन हज़रत खालिद के साथ जाने के लिये तैयार खड़े थे।

हज़रत खालिद बिन वलीद तीन हज़ार का लश्कर ले कर रवाना हुए और इन के रवाना होने के बा'द हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत अयाज़ बिन गानिम को एक हज़ार सवारों के साथ हज़रत खालिद के पीछे रवाना फरमाया। हल्ब से रवाना होते वक्त हज़रत खालिद ने अपने साथियों को हुक्म फरमाया कि हर शख्स अपने घोड़े की बाग ढीली छोड़ दे और तैज़ रफ्तारी से चले। हज़रत खालिद "मुर्जुल कबाइल" में हज़रत मैसरा बिन मस्रूक के लश्कर के लिये बे हद फिक्र मन्द थे और यह चाहते थे कि मुर्जुल कबाइल तक की मुसाफत जल्द अज़ जल्द तय कर के वहां पहुंच जाएं। हज़रत खालिद की ज़बान पर मुन्दरजा ज़ैल दुआ मुसल्सल जारी थी :

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ لَنَا اِلَيْهِمْ سَبِيْلًا وَّ اطْوِلَنَا الْبَعِيْدَ وَلَا تُسَلِّطْ
عَلَيْنَا مَنْ لَّا يَرْحَمُنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ

तर्जुमा : **"ऐ अल्लाह हमारे लिये इन की तरफ राह कर दे, और लपेट दे हमारे वास्ते दूरी को, और न मुसल्लत कर हम पर इस को जो हम पर रहम न करे, और मत डाल हम पर वह बोझ जिस की हम में ताकत नहीं।"**

(हवाला : फुतूहुश्शाम, अज़ : अल्लामा वाकदी, सफ्हा : 388)

मुर्जुल कबाइल में इस्लामी लश्कर की सबात कदमी :-

अतराफ के दिहात से रूमी लश्कर में शमूलियत करने वालों की आमद के तीन चार दिन गुज़रने के बा'द बतरीक जारिस ने रूमी लश्कर को मैदान में उतारना शुरू किया। इधर से इस्लामी लश्कर भी अपने कैम्प से निकल कर मैदान में आता। रोज़ाना सुब्ह से शाम तक जंग होती और गुरूबे आफ्ताब के वक्त मौकूफ होने पर दोनों लश्कर अपने अपने कैम्प में वापस चले जाते। इस्लामी लश्कर के मुजाहिदों ने अपनी तलवारों के म्यान तोड़ डाले थे और आखरी सांस तक लड़ने का अज़्मे मुसम्मम किया था। मुजाहिदों की उलूल अज़्मी और आली हिम्मती काबिले सद तहसीन थी लैकिन सूरते हाल यह थी कि इस्लामी लश्कर से रोज़ाना चंद मुजाहिद शहीद होने की वजह से नाचार इस्लामी लश्कर की ता'दाद दिन ब दिन कम होती जाती थी। हालां कि रूमी लश्कर से भी रोज़ाना भारी ता'दाद में सिपाही कत्ल होते थे, मगर अतराफ के दैहात से रूमियों की आमद का सिल्सिला जारी था। लिहाज़ा रूमी लश्कर की ता'दाद में रोज़ाना इज़ाफा होता रहता था। ताहम जैशे इस्लाम के मुजाहिद रूमियों की कसरत को खातिर में नहीं लाते थे।

हज़रत खालिद सैफुल्लाह की आमद :-

आज भी हस्बे मा'मूल रूमी और इस्लामी लश्कर अलस्सुब्ह अपने अपने कैम्प से निकल कर मैदान में आए। रूमी लश्कर से हिरक्ल बादशाह का मुसाहिब बतरीक तमाम हथियारों से सज धज कर लड़ने निकला और मैदान में आ कर अपने घोड़े को मैदान में घूमाने लगा और रूमी ज़बान में तोतला कर अपनी बड़ाई बयान कर के मुकाबिल तलब करने लगा। हज़रत मैसरा बिन मस्रूक ने मुआहदी से पूछा कि यह गबर क्या बकवास करता है ? मुआहदी

ने कहा कि वह अपनी बहादुरी और शुजाअत पर फख्र करता है और लड़ने के लिये मुकाबिल तलब करता है। हज़रत मैसरा बिन मस्रूक ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा को मैदान में मुकाबला करने भेजा। हज़रत अब्दुल्लाह के आते ही बतरीक ने इन पर वार किया, लैकिन हज़रत अब्दुल्लाह ने इसे सिपर पर लिया। फिर दोनों में शम्शीर ज़नी शुरू हूई। वह बतरीक लड़ाई के फन का कुहना मश्क और माहिर जंगजू था। लैकिन हज़रत अब्दुल्लाह ने तल्वार ज़नी के कर्तब दिखा कर उस से बराबर की टक्कर ली। दोनों एक दूसरे पर शिद्दत से वार करते रहे और तलवारें इतनी ज़ौर से टकराती थीं कि आग की चिंगारियां उड़ती थीं। रूमी बतरीक ने अपना पूरा जिस्म लोहे की ज़िरह और लोहे के मल्बूसात से मस्तूर कर रखा था। हज़रत अब्दुल्लाह को कई मौकेअ मिले कि आप ने रूमी बतरीक के जिस्म पर तल्वार की ज़र्बें लगाई थीं, लैकिन तल्वार कारगर नहीं होती थी। दोनों की लड़ाई ने तूल पकड़ा और दोनों तरफ लश्करी टुक्टुकी बांध कर हैरत से दोनों की लड़ाई देख रहे थे। कि हज़रत अब्दुल्लाह ने मौका' पा कर बतरीक की गर्दन पर तल्वार का ऐसा वार किया कि उस की गर्दन अलग हो कर गिरी और बगैर सर का जिस्म घोड़े की पुश्त पर लड़खड़ा कर एक जानिब लुढ़क पड़ा। नतीजतन घोड़े ने अपना तवाज़ुन खो दिया और ठोकर खा कर गिरा, लैकिन घोड़ा चौंक कर फौरन खड़ा हुवा और रूमी लश्कर की तरफ मुंह फैर कर भागने लगा, हज़रत अब्दुल्लाह ने जसत लगा कर उस की रिकाब पकड़ ली और काबू में ले लिया। फिर हज़रत अब्दुल्लाह ने मक्तूल रूमी बतरीक का सामाने जंग ले लिया और उस के घोड़े की रिकाब थाम कर अपने साथ इस्लामी लश्कर का रुख किया।

रूमी बतरीक के मक्तूल होने पर उस का कराबती रूमी गबर खशमनाक हो कर मैदान में आया और मक्तूल बतरीक की लाश के पास आ कर ठहरा और रोया। फिर उस ने गरजती हूई आवाज़ में लल्कारते हुए कहा कि हिरक्ल बादशाह के मुकर्रब को कत्ल करने वाले को में ज़रूर कत्ल कर के या गिरफ्तार कर के रहूंगा, लिहाज़ा मेरा मुकाबला करने वही शख्स आएगा, जिस ने हमारे मुअज़्ज़ज़ और बादशाह के मुकर्रब को कत्ल किया है। कसम है हक्के मसीह की और कसम है सलीबे आ'ज़म की ! मैं अपने साथी का इन्तेकाम ले कर ही रहूंगा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा ने उस गबर की मुबारज़त सुनी तो मैदान की तरफ निकलने का कस्द किया, लैकिन हज़रत मैसरा बिन मस्रूक ने इन को जाने से रोका। क्यूं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा मक्तूल बतरीक से काफी दैर तक लड़ने की वजह से थक गए थे, लिहाज़ा हज़रत मैसरा बिन मस्रूक ने खुद मुकाबले के लिये निकलने का कस्द किया, लैकिन हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा ने हज़रत मैसरा से कहा कि...

''ऐ सरदार ! हर गाह बुलाता है मुझ को मेरा नाम ले कर और बिछड़ जाउं मैं निकलने से, तो मैं होंगा इस हाल में नातवां ना मज़बूती करने वाला। मैसरा बिन मस्रूक ने कहा कि मैं मेहरबानी करता हूं तुम पर ब-सबब तुम्हारी मशक्कत उठाने के। अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा ने कहा कि आया मेहरबानी करते हो तुम मुझ पर मशक्कत उठाने से दुनिया में और नहीं मेहरबानी करते हो मुझ पर आग से आलमे आखेरत में और जलती हूई आगे दोज़ख से। कसम है ऐशे रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की कि न लड़ने निक्लेगा इस की तरफ कोई शख्स वास्ते मेरे।''

(हवाला : फुतूहुश्शाम, अज़ : अल्लामा वाकदी, सफहा : 390)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा रदियल्लाहो तआला अन्हो जलीलुल कद्र सहाबीए रसूल हैं। उन्हों ने जलीलुल कद्र सहाबीए रसूल हज़रत मैसरा बिन मस्रूक रदियल्लाहो तआला अन्हो के सामने कसम खाई कि **''कसम है ऐशे रसूलल्लाह की''** और उस वक्त वहां मौजूद अजिल्ल-ए सहाबए किराम की जमाअत ने सुना, लैकिन किसी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा से यह न कहा कि ऐ अब्दुल्लाह ! **आप कैसी कसम खा रहे हैं ? ऐसी कसम खाना तो शिर्क है। तुम मुश्रिक हो गए, तौबा करो, अज़ सरे नौ कल्मा पढ़ो,** बल्कि तमाम सहाबए किराम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा की कसम का लिहाज़ फरमाया क्यूं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा ने यह फरमाया था कि ''कसम है ऐशे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैह व आलेहि व सल्लम की न लड़ने को निक्लेगा इस की तरफ कोई शख्स वास्ते मेरे'' या'नी मेरे बदले में (वास्ते) कोई शख्स लड़ने न निकले। हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा की इस कसम को सहाबए किराम ने बुज़ुर्ग जाना और इस कसम का लिहाज़ करते हुए कोई भी लड़ने न निकला। साबित हुवा कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की कसम खाना हरगिज़ शिर्क नहीं। क्यूं कि एक सहाबीए रसूल ने एक सहाबीए रसूल से गुफ्तगू करते हुए जलीलुल कद्र सहाबा-ए किराम की मौजूदगी में कसम खाई और किसी ने इस कसम पर कोई ए'तेराज़ न किया, बल्कि इस का लिहाज़ करते हुए इसे रवा रखा।

लैकिन अफ्सोस ! सद अफ्सोस !

कि दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन जिस फे'ल को सहाबए किराम ने किया, सुना, रवा रखा और इस का लिहाज़ फरमाया इस पर भी शिर्क का फत्वा देते हैं।

- दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन फिर्क–ए वहाबिया नज्दिया तब्लीगिया के इमाम और पेश्वा **मौलवी इस्माईल देहलवी** ने अपनी रुसवाए ज़माना किताब में लिखा है :

"या जब कसम खाने की ज़रूरत पड़े तो पैगम्बर की या अली की या इमाम की या पीर की या इन की कब्रों की कसम खाए। इन सब बातों से शिर्क साबित होता है।"

(हवाला : तक्वियतुल ईमान, नाशिर : दारुस सल्फिया, बम्बई, सफहा : 26)

नाज़िरीने किराम ! गौर और इन्साफ फरमाएं कि मौलवी इस्माईल देहलवी का मुन्दरजा बाला फत्वा किन पर चस्पां हो रहा है। फत्वा की गोला बारी किन तक पहुंचती है। अवराके साबिका में कई मकाम पर जलीलुल कद्र सहाबए किराम का हुज़ूरे अक्दस की कसम खाने का तज़्किरा है। नाज़िरीने किराम की याद दहानी के लिये ज़ैल में चंद वाकेआत का इख्तिसार के साथ इआदा किया जाता है।

- फतह दमिश्क के बा'द हाकिमे दमिश्क तुमा के काफिला के तआकुब में हज़्रत खालिद बिन वलीद यूनुस (नजीब) नाम के राहबर की राहबरी में "मुर्जुद दीबाज" तक गए थे। अस्नाए राह में हज़्रत खालिद बिन वलीद ने राहबर यूनुस से यूं फरमाया था कि...

" चल तू हमारे साथ ऐ यूनुस। भरोसा करता हूं मैं अल्लाह गालिब और बुज़ुर्ग पर। पस कसम है हक्के रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम आराम से सोने वाले यस्रब की और हक्के बैअते अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहो तआला अन्हो की कि नहीं कमी की मैं ने इन की तलब और तलाश में।"

(हवाला : – फुतूहुश्शाम, अज़ : अल्लामा वाकदी, सफहा : 118)

हज़्रत खालिद बिन वलीद ने हक्के रसूलल्लाह और हक्के बैअते अबू बक्र सिद्दीक की कसम खाई।

- जब हज़्रत खालिद बिन वलीद ने कन्सरीन के हाकिम को कन्सरीन के किल्ले के बाहर अपने कब्ज़ा में ले लिया, तो रूमियों के दस हज़ार के लश्कर के सामने सिर्फ बारह मुजाहिद थे। जबला बिन ऐहम ने हज़्रत खालिद से कहा कि हाकिम कन्सरीन लुका को छोड़ दो। तो हज़्रत खालिद ने फरमाया कि तुम दस हज़ार हो और हम सिर्फ बारह अश्खास हैं। एक के मुकाबला में एक लड़ने निकलो और हम को पहले मार डालो फिर बा'द में हाकिम लुका को छुड़ा लेना। जबला ने हज़्रत खालिद की तज्वीज़ हाकिमे उमूरिया को बताई और वह रज़ा मन्द हो गया और एक के मुकाबले में एक की लड़ाई तय हुई। रूमियों की जानिब से एक शेहसवार शुजाअ गबर लड़ने के लिये मैदान में आया। मुजाहिदों की तरफ से मुकाबला करने के लिये हज़्रत खालिद बिन वलीद ने निकलने का कस्द फरमाया, लैकिन हज़्रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र सिद्दीक ने इन को जाने से रोका... **"और कहा ऐ अबा सुलैमान ! कसम है हक्के रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की कि न निकले इन के मुकाबले को कोई शख्स सिवाए मेरे।"**

(हवाला : फुतूहुश्शाम, अज़ : अल्लामा वाकदी, सफहा : 163)

हज़्रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहो तआला अन्हो ने हक्के रसूलल्लाह की कसम खाई।

- मज़्कूरा तज्वीज़ के मुताबिक हज़्रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र सिद्दीक लड़ते हुए जबला की तल्वार से ज़ख्मी हुए तो इन के ज़ख्मी होने पर हज़्रत खालिद बिन वलीद ने इन से फरमाया कि...

"ऐ बेटे सिद्दीक के मैं जानता हूं कि जबला ने तुम को रंज आगीं किया है साथ ज़र्ब तल्वार के और कसम है तुम्हारे बाप और इन के सिद्क की कि हर आईना मुसीबत और दर्द में डालूंगा मैं इस को इवज़ में इस के जैसा कि दर्द मन्द किया है इस ने हम को ब-सबब तुम्हारे रंज पहुंचाने के।"

(हवाला : फुतूहुश्शाम, अज़ : अल्लामा वाकदी, सफहा : 165)

हज़्रत खालिद बिन वलीद ने हज़्रत अबू बक्र सिद्दीक की कसम खाई।

❁ जंगे कन्सरीन में हज़रत खालिद बिन वलीद अपनी टोपी कि जिस में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के मूए मुबारक थे, वह टोपी ब-मुकाम शीरज़ के इस्लामी कैम्प में अपने खैमे में भूल आए थे। हज़रत खालिद की ज़ौजा मोहतरमा हज़रत उम्मे तमीम ने हज़रत खालिद को कन्सरीन जा कर वह टोपी पहुंचाई और हज़रत खालिद ने वह मुबारक टोपी अपने सर पर रखी। इस वाकेआ का बयान करते हुए हज़रत मुस्अब बिन महारिब फरमाते हैं कि :

"पस कसम है ऐशे रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की कि नहीं रखा था खालिद बिन वलीद ने कुलाह को अपने सर पर और हम्ला किया था कौम पर, मगर यह कि फैरा और मिला दिया इन के आगे वालों को पीछे वालों में।"

(हवाला : फुतूहुश्शाम, अज़ : अल्लामा वाकदी, सफहा : 167)

सहाबीए रसूल हज़रत मुस्अब बिन महारिब यश्करी ने ऐश रसूलल्लाह की कसम खाई।

❁ जब इस्लामी लश्कर बा'ल्बक के किल्ले की तरफ जा रहा था, तो हाकिम बा'ल्बक हरबीस साठ हज़ार का लश्कर ले कर किल्ले से निकला और अस्नाए राह मुकाबिल हुवा। लैकिन फौरन शिकस्त उठा कर शहर की तरफ भागा। इस वाकेआ की मन्ज़र कशी करते हुए हज़रत आमिर बिन रबीआ फरमाते हैं कि...

"कसम है ऐशे रसूले मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की कि न था हमारे और उन के बीच में मगर एक गरदावा यहां तक कि पीठ फैरी उन्हों ने ब-तलबे शहर के।"

(हवाला : फुतूहुश्शाम, अज़ : अल्लामा वाकदी, सफहा : 169)

जलीलुलकद्र सहाबीए रसूल हज़रत आमिर बिन रबीआ ने ऐशे रसूलल्लाह की कसम खाई।

❁ जंग बा'ल्बक के चौथे दिन बाबे वस्ता पर हज़रत अबू उबैदा के लश्कर पर रूमियों ने शदीद हम्ला किया था और हज़रत अबू उबैदा का लश्कर सख्त मुसीबत में था। हज़रत ज़िरार बिन अज़्वर और हज़रत सईद बिन ज़ैद अपने अपने लश्कर के साथ किल्ल-ए बा'ल्बक के दीगर दरवाज़ों पर थे। हज़रत ज़िरार और हज़रत सईद को हज़रत अबू उबैदा पर नाज़िल मुसीबत की इत्तिला' दे कर इन को मदद के लिये बुलाने के लिये हज़रत अबू उबैदा के साथी हज़रत सुहैल बिन सबाह करीब में वाकेअ एक टीले पर चढ़ गए और दरख्त की लक्ड़ियां और शाखें जला कर धूवां बुलन्द किया था और धूवां देख कर हज़रत ज़िरार और हज़रत सईद कुमुक करने आ पहुंचे थे। जंग खत्म होने के बा'द हज़रत अबू उबैदा ने धूवां बुलन्द करने वाला शख्स कौन था ? यह जानने के लिये मुजाहिदों को पुकार कर फरमाया :

"और इसी ज़िक्र में पुकारा अबू उबैदा बिन अल जर्राह ने लश्कर में कि ऐ गिरोह मुसल्मानों के ! जिस शख्स ने तुम में से रौशन किया था आग को, पस आवे वह सरदार के पास। सहल बिन सबाह ने बयान किया है कि जब सुना मैं ने आवाज़ को और वह कसम देते थे हम को अल्लाह गालिब और बुज़ुर्ग और हक्के रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व आलेहि व सल्लम की।"

(हवाला : फुतूहुश्शाम,अज़ : - अल्लामा वाकदी, सफहा : 177)

जलीलुलकद्र सहाबीए रसूल, हज़रत अबू उबैदा ने मुजाहिदों को रसूलल्लाह की कसम दी।

❁ जंगे यर्मूक का आगाज़ होने से पहले जबला बिन ऐहम ने अस्हाबे रसूल हज़रत उबादा बिन सामित वगैरा से जो बात चीत की थी इस की तफ्सील हज़रत कैस बिन सईद ने हज़रत अबू उबैदा और हज़रत खालिद बिन वलीद को बताई, तो हज़रत खालिद बिन वलीद ने फरमाया कि...

"छोड़ दो इस को पस कसम है ऐशे रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की, हर आइना देखेगा जबला हम में से ऐसे लोगों को कि न इरादा करेंगे वह इस की लड़ाई में सिवाए रज़ा मन्दी परवर्दगारे आलम की।" (हवाला : फुतूहुश्शाम, अज़ : अल्लामा वाकदी, सफहा : 209)

हज़रत खालिद बिन वलीद ने ऐशे रसूलल्लाह की कसम हज़रत अबू उबैदा के सामने खाई।

जंगे हल्ब के मौके पर इस्लामी लश्कर ने हल्ब के किल्ले का मुहासरा किया था और मुहासरे ने तूल पकड़ा था। एक रात में हाकिम हल्ब युकना ने सोए हुए इस्लामी लश्कर के कैम्प पर छापा मारा और पचास मुजाहिदों को कैद कर के ले गया और दूसरे दिन किल्ले की दीवार पर चढ़ा कर इस्लामी लश्कर को दिखा कर इन को शहीद कर दिया। इस हादसे से हज़रत अबू उबैदा बहुत रंजीदा हुए और मुजाहिदों को रात के वक्त एहतियात करने और अपनी निगेहबानी बज़ाते खुद करने की ताकीद की.

''पस जब देखा अबू उबैदा बिन अल जर्राह ने यह हाल मुनादी कराई अपने लश्कर में कि कसम है अल्लाह और रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम और सरदार अबू उबैदा की तरफ से हर मर्द पर कि न हवाला करे अपनी निगेहबानी को दूसरे पर।''

(हवाला : फुतूहुश्शाम, अज़ : अल्लामा वाकदी, सफहा : 307)

हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह ने जैशे इस्लाम के मुजाहिदों को रसूलल्लाह की कसम दी।

कुतुबे सेयर व तवारिख में ऐसे वाकेआत कसीर ता'दाद में मर्कूम हैं कि अजिल्ल-ए सहाबए किराम और ताबेईने इज़ाम ने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की कसम खाई है। यहां हम ने इख्तिसारन चंद वाकेआत की तरफ इशारा किया है और यह साबित किया है कि :

अजिल्ल-ए सहाबए किराम मसलन (1) हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह (2) हज़रत खालिद बिन वलीद (3) हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र सिद्दीक (4) हज़रत मुस्अब बिन महारिब यश्करी (5) हज़रत आमिर बिन रबीआ (6) हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा (7) हज़रत मैसरा बिन मस्रूक वगैरा ने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की कसम खाई, इन के सामने कसम खाई गई, उन्हों ने इस कसम को अहमियत दी, इस का लिहाज़ किया और इसे रवा रखा।

मिल्लते इस्लामिया के लिये सहाबए किराम के अक्वाल व अफ्आल काबिले ए'तमाद व सनद हैं। नाज़िरीने किराम इन्साफ फरमाएं कि अजिल्ल-ए सहाबए किराम ने हुज़ूरे अक्दस की कसम खाई और इसे रवा रखा, लेकिन दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन सहाबए

किराम के इस फे'ल को भी शिर्क का फत्वा दे रहें। जब सहाबए किराम रिज़्वानुल्लाहे तआला अलैहिम की मुकद्दस जमाअत पर शिर्क का फत्वा आइद किया जा रहा है तो फिर मा व शुमा की क्या बिसात ? तक्वियतुल ईमान के ज़ालिम और बैबाक मुसन्निफ ने करोडों कल्मा गो पर शिर्क के फतवों की गोला बारी कर के इन को खारिज अज़् इस्लाम कह कर इस्लाम के वसीअ दाइरे को तंग बनाने की सईए बैजा की है।

इस बहस को मज़ीद तूल न देते हुए हम अपने मुअज़्ज़ज़ कारेईने किराम को वापस मुल्के शाम के पहाड़ी इलाके ''मुर्जुल कबाइल'' ले चलते हैं, जहां इस्लामी लश्कर के कफन बरदौश मुजाहिदीन रूमी लश्कर के सामने मौत की लड़ाई लड़ रहे हैं।

अल-किस्सा ! हिरक्ल बादशाह के मुकर्रब बतरीक को कत्ल कर के हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा इस्लामी लश्कर के कैम्प में वापस आए ही थे कि रूमी गबर ने इन को मैदान से लल्कारा। हज़रत मैसरा बिन मस्रूक ने हज़रत अब्दुल्लाह को जाने से रोका, लेकिन हज़रत अब्दुल्लाह ने कहा कि ऐ सरदार ! वह गबर मेरा नाम ले कर मुझे बुलाए और मैं लड़ने न निकलूं तो कल कयामत के दिन मुझे आग की मशक्कत उठानी पड़ेगी। लिहाज़ा हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा फिर एक मरतबा मैदान में आए। इन को देख कर रूमी गबर पहचान गया कि यही हमारे मुअज़्ज़ज़ बतरीक के कातिल हैं, क्यूं कि हज़रत अब्दुल्लाह उस मक्तूल बतरीक के घोड़े पर सवार हो कर लड़ने आए थे। उस मक्तूल बतरीक का नाम **फलीस बिन जरीह** था।

हज़रत अब्दुल्लाह मैदान में आए और उस रूमी गबर से करीब हुए, लैकिन आप को लड़ने का मौका' ही मयस्सर न हुवा, क्यूं कि आप के जाते ही गबर ने आप पर जसत की और घोड़े को गरदावा देने का भी मौका' न दिया और चुंगल मार कर आप को घोड़े की ज़ीन से खींच लिया और आप पर काबिज़ हो कर गिरफ्तार कर के रूमी लश्कर में ले भागा। हज़रत अब्दुल्लाह को कैद कर के रूमी लश्कर में ला कर गबर ने सिपाहियों के सुपुर्द कर के हुक्म दिया के इस शख्स को लोहे की ज़न्जीरों में मज़बूत जकड़ कर इसी वक्त हिरक्ल बादशाह के पास **कस्तुनतुनिया** भेज दो और बादशाह को इत्तिला' करो कि तुम्हारे मुकर्रब बतरीक फलीस बिन जरीह को इस शख्स ने कत्ल किया है। लिहाज़ा हिरक्ल बादशाह इसे इब्रतनाक सज़ा दे। चुनान्चे हज़रत अब्दुल्लाह को उसी वक्त चंद रूमी सिपाहियों की निगरानी में कस्तुनतुनिया भेज दिया गया। फिर वह गबर मैदान में आया और अपनी काम्याबी पर नाज़ व गुरूर करने लगा और चिल्ला चिल्ला कर मुकाबिल तलब करने लगा।

हज़रत मैसरा बिन मस्रूक ने हज़रत सईद बिन ज़ैद बिन उमर बिन नुफैल अदवी को निशान (अलम) दिया और मैदान में आए। हज़रत मैसरा बिन मस्रूक शैर बबर की मानिन्द रज्ज़ के अश्आर पढ़ते हुए रूमी गबर से करीब हुए। दोनों ने एक दूसरे पर जसत लगाई और तलवारें बजने लगीं। दोनों ने लड़ाई के फन का मुज़ाहिरा किया और तल्वार ज़नी के कर्तब दिखाए। हज़रत मैसरा और रूमी गबर अपने अपने घोड़े को गरदावे दे कर मुकाबिल पर सुरअत और शिद्दत से वार करते और बाज़गश्त वार को सिपर पर ले कर खाली फैरते। इस तरह लड़ने से इत्ना गुबार बुलन्द हुवा कि दोनों गुबार में पोशीदह हो जाते फिर अचानक नज़र आते। दोनों की लड़ाई ने काफी तूल पकड़ा। यहां तक कि आफ्ताब वस्ते आस्मान में आ गया। दोनों लश्कर के लोग टुक्टुकी बांध कर दोनों के फन्ने जंग के जौहर देख रहे थे और अपने साथी की सलामती और काम्याबी की दुआ करते थे। लड़ते लड़ते दफ्अतन रूमी गबर ने देखा कि करीब में इस्लामी लश्कर का निशान नज़र आ रहा है। हज़रत खालिद बिन वलीद अपने तीन हज़ार लश्करी के साथ तूफान की तरह बढ़ते हुए आ रहे थे। रूमी गबर यह दैख कर घबराया और उस ने यह इरादा किया कि हज़रत मैसरा पर तल्वार का वार कर के भाग जाउं, लिहाज़ा उस ने तमाम कुव्वत जमा कर के हज़रत मैसरा पर तल्वार का वार किया, लैकिन उस का वार हज़रत मैसरा तक पहुंचे इस के पहले हज़रत मैसरा ने बिजली की सुरअत से तल्वार की ऐसी ज़र्ब लगाई कि उस का हाथ मअ तल्वार के शाना से जुदा हो गया। गबर का हाथ कट कर ज़मीन पर गिरा, वह चीखता हुवा रूमी लश्कर की तरफ भागा। रूमी लश्कर में पहुंच कर वह ज़ौर ज़ौर से नाला करता था। हाथ कटने का ज़ख़्म उस के लिये ना-काबिले बरदाश्त था, वह दर्द की वजह से उछलता था। रूमी सिपाहियों ने उस के कटे हुए हाथ की जगह दाग दिया और मर्हम पट्टी की। थोड़ी दैर में हज़रत खालिद बिन वलीद का लश्कर तहलील व तक्बीर की सदाएं बुलन्द करता हुवा मुर्जुल कबाइल के मैदान में आ पहुंचा। हज़रत खालिद ने हज़रत मैसरा बिन मस्रूक से मुलाकात की और जंग की कैफियत दर्याफ्त फरमाई। हज़रत मैसरा ने अज़ अव्वल ता आखिर तमाम कैफियत कह सुनाई और हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा की गिरफ्तारी की भी इत्तिला' दी। हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा के कैद होने की खबर सुन कर हज़रत खालिद बिन वलीद बहुत मलूल हुए और कहा कि अगर अल्लाह ने चाहा तो हम इन को ज़रूर छुड़ा लेंगे। हज़रत खालिद की आमद की खबर सुन कर रूमी लश्कर का हर फर्द कांप उठा, लिहाज़ा उस दिन दो-पहर के बा'द रूमी लश्कर से कोई भी लड़ने न निकला और दो-पहर के बा'द जंग मौकूफ रही। आफ्ताब गुरूब होने के वक्त दोनों लश्कर अपने अपने कैम्प में वापस लौटे और शब आराम व इस्तिराहत में बसर की।

रूमी लश्कर सामाने जंग छोड़ कर रात में फरार :-

सुब्ह नमाज़े फज्र के बा'द हज़रत खालिद बिन वलीद इस्लामी लश्कर को कैम्प से मैदान की तरफ ले जाने का कस्द कर ही रहे थे कि चंद मुजाहिदों ने आ कर इत्तिला' दी कि रूमी लश्कर से एक एलची हज़रत खालिद से गुफ्तगू करने आया है। अगर आप इजाज़त मरहमत फरमाएं तो हम उस को खिदमत में हाज़िर करें। हज़रत खालिद ने इजाज़त दी, मुजाहिदीन एक बुढ्ढे राहिब को हज़रत खालिद के सामने लाए। बुढ्ढे राहिब ने आते ही हज़रत खालिद को सजदा करने का कस्द किया, लैकिन हज़रत खालिद ने उसे सख्ती से मना' किया और फरमाया कि अल्लाह के सिवा किसी को सजदा करना रवा नहीं। फिर हज़रत खालिद ने बुढ्ढे राहिब से पूछा कि तुम किस मत्लब से आए हो ? राहिब ने कहा कि रूमी लश्कर के सरदार बतरीक जारिस ने मुझे आप के पास सुलह की गुफ्तगू करने भेजा है। हम अब लड़ने की ताकत नहीं रखते और हम सुलह करना चाहते हैं। अगर तुम सुलह करना मन्ज़ूर करो तो हम तुम्हारे कैदियों को रिहा कर देंगे और जितना माल कहोगे, हम देंगे। हज़रत खालिद ने फरमाया कि हमारे कैदी को अज़ रूए इताअत और फरमां बरदारी रिहा करने के इलावा हमारी तीन शर्तों में से एक को कबूल करना होगा। (1) कबूले इस्लाम (2) अदाए जिज़्या (3) जंग। राहिब ने कहा कि मैं लश्कर में जा कर सरदार और बतारेका से मश्वरा करता हूं और कल सुबह हमारा वफ्द तुम्हारे पास सुलह करने आएगा और तुम्हारी जो भी शर्तें होंगी, उस की मुवाफिक्त कर के सुलह करेगा। लिहाज़ा आज के दिन जंग मौकूफ रखो। जब हम कल सुब्ह सुलह के अहद व पैमान करने वाले हैं तो फिर आज जंग कर के इन्सानों का खून नाहक्क बहाना मुनासिब नहीं। हज़रत खालिद ने बुढ्ढे राहिब की दरख्वास्त मन्ज़ूर फरमाई और उस दिन जंग मौकूफ रखी। पूरा दिन बगैर किसी जंग के आराम से गुज़रा।

जब रात हूई तो दोनों लश्करों में मश्अलें रौशन हूईं। इस्लामी लश्कर के मुजाहिदीन ने आराम, इबादत, रियाज़त और तिलावते कुरआन वगैरा मुख्तलिफ शग्ल में रात बसर की। निगेहबान अपनी खिदमत अन्जाम देते हुए कैम्प के इर्दगिर्द गश्त करते रहे। हज़रत खालिद बिन वलीद शब भर मस्रूफे इबादत रह कर सुब्ह का इन्तिज़ार कर रहे थे। लैकिन रात के वक्त रूमी लश्कर में भेदी और खुफिया हर्कत हो रही थी। रूमियों ने दिखावे के लिये बहुत सारी मश्अलें रौशन की थीं, लैकिन भारी बोझ वाला सामान और खैमों को छोड़ कर हल्का और कीमती सामान और हथियार ले कर रूमी फौजी कैम्प की पिछाड़ी से सवार हो कर फरार हो गए। रूमियों ने फरार होते वक्त बहुत एहतियात बर्ती कि किसी किस्म का शौर व गुल

न हुवा। इस अम्र का बहुत इल्तिज़ाम रखा कि किसी को मा'लूम न हो। लिहाज़ा इस्लामी लश्कर के मुजाहिदों को रूमियों के रात में फरार होने की भनक तक न लगी और इस्लामी लश्कर से आंखें चुरा कर रूमी लश्कर रात की तारीकी में भाग निकला।

सुब्ह में हज़रत खालिद बिन वलीद रूमी लश्कर के वफ्द की आमद का इन्तिज़ार कर रहे हैं, लैकिन कोई रहे तो आए? यहां तक कि आफ्ताब तुलूअ हो कर आस्मान में बुलन्द हो गया। दूर से रूमी लश्कर के कैम्प पर नज़रें जमाईं तो रूमी लश्कर के कैम्प में किसी किस्म की चहल पहल महसूस न हूई। ऐसा महसूस होता था कि तमाम लश्कर अभी तक खैमों में सोया पड़ा है, हज़रत खालिद अपने साथ चंद मुसल्लह सवारों को ले कर एहतियात के साथ रूमी लश्कर के कैम्प की तरफ गए। करीब जा कर देखा तो कैम्प में तमाम खैमे ब-दस्तूर नसब हैं, लैकिन फौजियों से खाली हैं और खैमों में सन्नाटा छाया हुवा है। हज़रत खालिद ने अपने साथियों को तलवारें म्यान से निकाल कर और नैज़े रास्त कर के बहुत ही मोहतात और चौकन्ना हो कर रूमी लश्कर के कैम्प में दाखिल होने का इरादा किया, देखते क्या हैं कि तमाम खैमे खाली पड़े हुए हैं। एक भी आदमी नज़र नहीं आता। खैमों में सिर्फ भारी बोझ का सामान पड़ा हुवा है। हज़रत खालिद समझ गए कि रूमी हम को चक्मा दे कर फरार हो गए। रूमियों के इस मक्रो फरैब से खशमनाक हो कर हज़रत खालिद ने अपनी उंगलियों को काटा और इस्तिर्जा' पढ़ा क्यूं कि इन को हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा की बहुत फिक्र लाहिक थी और रात भर वह हज़रत अब्दुल्लाह की रिहाई के मुतअल्लिक मुतफक्किर थे, लैकिन रूमियों ने धोका दिया और रातों रात भाग निकले। लिहाज़ा हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा की सलामती और रिहाई का मआमला पैचीदा हो गया और हज़रत खालिद बिन वलीद हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा के लिये बहुत ज़ियादह फिक्र मन्द हो गए।

हज़रत मैसरा बिन मस्रूक भी हज़रत खालिद के हमराह थे। हज़रत खालिद ने हज़रत मैसरा बिन मस्रूक से रूमियों का तआकुब करने के मुतअल्लिक मश्वरा किया, तो हज़रत मैसरा और मुआहदी राहबरों ने कहा कि पहाड़ी इलाका से मुख्तलिफ रास्ते अलग अलग मकाम की तरफ जाते हैं। इलावा अज़ीं पूरा इलाका सख्त पथरीली ज़मीन का होने की वजह से निशान कदम से भी इन की जाए फरार का सुराग मिलना मुश्किल है। फिर तमाम ने ब-इत्तिफाके राए इस्लामी लश्कर के कैम्प हल्ब वापस लौटने का इरादा किया। हज़रत खालिद ने रूमी लश्कर के तमाम खैमों और खैमों में पड़ा हुवा सामान जमा करने का हुक्म दिया। मुजाहिदों ने रूमी लश्कर का तमाम सामान जमा कर के साथ ले लिया

और खालिद बिन वलीद इस्लामी लश्कर को ले कर मुर्जुल कबाइल से हल्ब रवाना हुए। हज़रत खालिद बिन वलीद इस्लामी लश्कर को ले कर हल्ब पहुंचे और हज़रत अबू उबैदा को तमाम कैफियत सुनाई और हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा के गिरफ्तार होने का हाल सुनाया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा की गिरफ्तारी की खबर सुन कर इस्लामी लश्कर में गम व अलम का समां बंध गया।

हज़रत उमर फारूक का रसूलल्लाह y की कसम खाना

हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह ने फौरन अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फारूके आ'ज़म की खिदमत में मदीना मुनव्वरा, पहाड़ी इलाका में इस्लामी लश्कर की फतह और रूमी लश्कर का हज़ीमत उठा कर मफरूर होने की कैफियत और हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा के कैद होने का तफ्सीली हाल लिख भेजा। जब हज़रत अबू उबैदा का खत अमीरुल मो'मिनीन हज़रत उमर फारूके आ'ज़म की खिदमत में पहुंचा तो...

"खुश हुए वह ब-सबब सलामती हाल मुसल्मानों और इन के गालिब होने के इन के दुश्मनों पर, मगर अन्दोह नाक हुए वह ब-सबब गिरफ्तार होने अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा के। पस कहा उन्हों ने कि कसम है ऐशे रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैह व सल्लम की और आप की बैअत की, लिखूंगा में खत हिरक्ल को ता आंकि रवाना करे मेरे पास अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा को और भेजूंगा मैं उस की तरफ लश्करों और फौजों को। फिर लिखा हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने ब-नाम हिरक्ल के।"

(हवाला : फुतूहुश्शाम, अज़ : अल्लामा वाकदी, सफहा : 392)

नाज़िरीने किराम गौर फरमाएं कि खलीफए दौम, अमीरुल मो'मिनीन सय्यिदोना हज़रत उमर फारूके आ'ज़म रदियल्लाहो तआला अन्हो " ऐशे रसूलल्लाह" और **"बैअते रसूलल्लाह"** की कसम खा रहे हैं। अगर इस तरह कसम खाना शिर्क होता, तो क्या हज़रत उमर फारूके आ'ज़म इस तरह कसम खाते? हरगिज़ नहीं। हज़रत उमर फारूके आ'ज़म से शिर्क के काम का इर्तिकाब होने का तसव्वुर भी नहीं किया जा सक्ता। लैकिन दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन का यह कहना है कि रसूलल्लाह की कसम खाना शिर्क है या'नी रसूलल्लाह की कसम खाने वाला मुश्रिक है।

● वहाबी तब्लीगी जमाअत के इमाम व पैशवा **मौलवी इस्माईल देह्लवी** की इबारत का फिर एक मरतबा एआदा :

''या जब कसम खाने की ज़रूरत पड़े तो पैगम्बर की या अली की या इमाम की या पीर की या इन की कब्रों की कसम खाए, इन सब बातों से शिर्क साबित होता है। और इस को ''इश्राक फील आदात'' कहते हैं।''

(हवाला : तक्वियतुल ईमान, नाशिर : दारुस सल्फिया, बम्बई, सफ्हा : 26)

तक्वियतुल ईमान की मुन्दरजा बाला इबारत में मौलवी इस्माईल ने बे लगाम घोड़े की तरह अपना कलम चलाते हुए साफ लिख दिया है कि रसूलल्लाह की कसम खाने वाला मुश्रिक है। नाज़िरीने किराम इन्साफ फरमाएं कि मौलवी इस्माईल देह्लवी रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की कसम खाने को शिर्क कह रहा है और हज़रत उमर फारूके आ'ज़म रदियल्लाहो तआला अन्हो रसूलल्लाह की कसम खा रहे हैं। लिहाज़ा मौलवी इस्माईल देह्लवी का फत्वा कहां चस्पां हो रहा है ?

रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की और आप की कब्र की कसम खाने को शिर्क कहने वाले शायद कुरआन मजीद की सूरतुल बलद की इब्तिदाई आयात से बे-खबर हैं या फिर कसदन अन्जान बनते हैं।

❁ कुरआन शरीफ में है :

لَا اُقۡسِمُ بِهٰذَا الۡبَلَدِo وَاَنۡتَ حِلٌّ بِهٰذَا الۡبَلَدِo وَ وَالِدٍ وَّ مَا وَلَدَ

(सूरतुल बलद, आयत : 1 ता 3)

तर्जुमा : **''मुझे इस शहर की कसम कि ऐ महबूब तुम इस शहर में तश्रीफ फरमा हो और तुम्हारे बाप इब्राहीम की कसम और उस की औलाद कि तुम हो।''** (कन्ज़ुल ईमान)

तफ्सीर : **''इस आयत से मा'लूम हुवा कि यह अज़्मत मक्का मुकर्रमा को सैयदे आलम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की रौनक अफरोज़ी की ब-दौलत हासिल हूई। एक कौल यह भी है कि वालिद से सैयदे आलम और औलाद से आप की उम्मत मुराद है।''** (तफ्सीर खज़ाइनुल इरफान, सफ्हा : 1071)

कुरआन मजीद की मुन्दरजा बाला आयत का ब-गौर मुतालआ फरमाएं। अल्लाह तआला उस शहर की कसम याद फरमाता है। जिस शहर में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो अलैह व सल्लम रौनक अफ्रोज़ हैं। इस आयत की तफ्सीर में शैखे मुहक्किक **शाह अब्दुलहक्क मुहद्दिस देह्लवी** अपनी किताब मुस्तताब **''मदारिजुन नबुव्वत''** में फरमाते हैं कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम जब तक मक्का मुअज़्ज़मा में रौनक अफ्रोज़ थे, तब तक शहर की कसम की अज़्मत मक्का मुअज़्ज़मा को हासिल थी और जब आप ने मक्का मुअज़्ज़मा से हिज्रत फरमा कर मदीना मुनव्वरा में सुकूनत इख़्तियार फरमाई, तो शहर की कसम की अज़्मत भी मक्का मुअज़्ज़मा से मदीना मुनव्वरा मुन्तकिल हो गई। इलावा अज़ीं मुन्दरजा बाला आयत में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलातो वस्सलाम और हज़रत इब्राहीम की औलाद में से होने की वजह से हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की कसम का ज़िक्र है। अल-हासिल ! अल्लाह तबारक व तआला ने कुरआन मजीद में हुज़ूरे अक्दस के शहर, हुज़ूरे अक्दस के वालिद ब-ए'तबारे नसब हज़रत इब्राहीम और खुद हुज़ूरे अक्दस की कसम याद फरमाई है।

एक ज़रूरी अम्र की तरफ कारेईने किराम की तवज्जोह दरकार है कि इल्मुल अकाइद में यह मुसल्लम अम्र है कि जो काम शिर्क है, उस काम को अम्बिया किराम की अज़्मत के इज़्हार के लिये कुरआन मजीद में हरगिज़ बयान नहीं किया गया। **अगर हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की कसम खाना शिर्क होता,** तो अल्लाह तबारक व तआला कुरआन मजीद में अपने महबूब की या महबूब के शहर की हरगिज़ कसम याद नहीं फरमाता। अगर हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की कसम खाना शिर्क होता तो कुरआन मजीद की आयत का मत्लब मआज़ल्लाह यह होगा कि ऐ मेरे बन्दो ! जो काम तुम्हारे लिये शिर्क है वह काम या'नी अपने महबूब की कसम याद फरमाना मैं करता हूं। और इस को अपने मुकद्दस कलाम में बयान भी फरमाता हूं। ताकि कयामत तक वह नमाज़ में पढ़ा जाए।

आलिमुल गैब वश्शहादा, अलीम व खबीर, **रब तबारक व तआला** के इल्म में यह बात थी कि एक वक्त वह आएगा कि मेरे महबूबे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की अज़्मत के मुन्किर और मेरे महबूब की बारगाह के गुस्ताख और ब-ज़ाहिर कल्मा गो, लैकिन दर हकीकत मुनाफिक पैदा होंगे, जो मेरे महबूबे अकरम सल्लल्लाहो अलैह व सल्लम की कसम खाने को शिर्क का फत्वा देंगे। लिहाज़ा उन ज़बान दराज़ी करने वालों को मब्हूत और साकित करने के लिये अल्लाह तबारक व तआला ने कुरआन मजीद में अपने महबूब की कसम याद फरमाई है।

एक सादा लौह शख्स को भी मा'लूम है कि शिर्क के मा'नी अल्लाह तबारक व तआला का कोई शरीक ठहराना। फिर चाहे उस की ज़ात में शरीक ठहराया जाए या उस की सिफात अज़ली व कदीम में शरीक ठहराया जाए या उस की इबादत में किसी को शरीक ठहराया जाए। और जो काम शिर्क है, उस काम से अल्लाह तआला ने अपने बन्दों को सख्ती से रोका है और उस काम को अपने से मन्सूब भी नहीं किया। अगर हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की कसम याद फरमाना शिर्क होता, तो अल्लाह तबारक व तआला उस को हरगिज़ अपने से मन्सूब नहीं फरमाता।

मौलवी इस्माईल देहलवी ने अपनी रुसवाए ज़माना किताब **"तक्वियतुल ईमान"** में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की कसम खाने पर शिर्क का जो फत्वा दिया है, इस के सुबूत में कुरआन मजीद की कोई आयत या हदीस शरीफ की कोई इबारत ब-तौर दलील पैश नहीं की, बल्कि जो भी जी में आया वह लिख दिया। अज़्मते मुस्तफा व मुहब्बते मुजतबा सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के तहत किये जाने वाले जाइज़ और मुस्तहसन कामों के जवाज़ के सुबूत में दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन सहाबए किराम के कौल व फे'ल का सुबूत तलब करते हैं। जलीलुल कद्र सहाबा किराम ने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की कसम खाई है, लेकिन इस के बा-वुजूद भी दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की कसम खाने को शिर्क का फत्वा दे कर **"जो न भाए आप को, वह बड़ी बहू के बाप को"** वाली मसल पर अमल कर रहे हैं।

कुरआन मजीद में अल्लाह तबारक व तआला ने चान्द की, सूरज की, रात की, दिन वगैरा की कसम याद फरमाई है। इन कसमों के मुतअल्लिक मुफस्सिरीने किराम ने लिखा है कि चान्द व सूरज की कसम से मुराद हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम का चेहरए अन्वर है और रात से मुराद हुज़ूरे अक्दस की ज़ुल्फे मुअम्बर हैं:

है कलाम इलाही में शम्सो दुहा तेरे चेहरए नूर फेज़ा की कसम
कसमे शबे तार में राज़ यह था कि हबीब की ज़ुल्फे दोता की कसम
और
वह खुदा ने है मरतबा तुझ को दिया, न किसी को मिल, न किसी को मिला
कि कलामे मजीद ने खाई शहा, तेरे शहरो कलामो बका की कसम

(अज़: इमामे इश्को मुहब्बत, हज़रत रज़ा बरैलवी)

कारेईने किराम की मज़ीद मा'लूमात के लिये अर्ज़ है कि अल्लाह तबारक व तआला ने कुरआन मजीद में अपने महबूबे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के कलाम (बात) की और जान की कसम भी याद फरमाई है। मुन्दरजा ज़ैल आयात मुलाहिज़ा फरमाएं:

(1) وَقِيْلِهٖ يٰرَبِّ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ لَّا يُؤْمِنُوْنَ (सूरतुल ज़ुख्रुफ, आयत: 88)

तर्जुमा: "मुझे रसूल के इस कहने की कसम कि ऐ मेरे रब यह लोग ईमान नहीं लाते।" (कन्ज़ुल ईमान)

(2) لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ لَفِىْ سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ (सूरतुल हजर, आयत: 73)

तर्जुमा: "ऐ महबूब! तुम्हारी जान की कसम! बे शक वह अपने नशे में भटक रहे हैं।" (कन्ज़ुल ईमान)

मुन्दरजा बाला दोनों आयात में अल्लाह तबारक व तआला ने अलत तर्तीब अपने महबूबे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के कौल और तने अक्दस की कसम याद फरमाई है। (ذَالِكَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلٰى حَبِيْبِهٖ)

हज़रत उमर फारूक ने हिरक्ल को खत में क्या लिखा?

हज़रत उमर फारूके आ'ज़म ने हिरक्ल को हस्बे ज़ैल इबारत लिखी:

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ الَّذِىْ لَمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَداً
وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى نَبِيِّهٖ وَرَسُوْلِهٖ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِ السَّلَامُ،
هَذَا الْكِتَابُ مِنْ عُمَرَبْنِ الْخَطَّابِ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ اَمَّا بَعْدُ
فَاِذَا وَصَلَ اِلَيْكَ كِتَابِىْ هَذَا فَابْعَثْ اِلَىَّ بِالْاَسِيْرِ الَّذِىْ فِىْ
اَسْرِكَ وَهُوَ عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ حُذَافَهْ فَاِنْ فَعَلْتَ ذَالِكَ رَجُوْتُ لَكَ
الْهِدَايَةَ وَانْ اَبَيْتَ بَعَثْتُ اِلَيْكَ رِجَالًا لَا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ
عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَالسَّلَامُ عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى

तर्जुमा : "शुरू करता हूं मैं अल्लाह के नाम से जो मेहरबान निहायत रहम वाला। और सब ता'रीफ अल्लाह के वास्ते है जो ऐसा अल्लाह कि नहीं इख्तियार किया उस ने ज़न हमनशीं और न बेटे को, और रहमत भेजी है अल्लाह ने अपने नबी और रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम पर, यह खत है उमर बिन अल-खत्ताब अमीरुल मोमिनीन की तरफ से, पस जब पहुंचे तुझ को यह खत मेरा, पस भेज दे तू मेरे पास उस कैदी को जो तेरी कैद में है और वह अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा हैं। पस अगर करेगा तो इस काम को, तो उम्मीद रखता हूं मैं तेरे वास्ते राहे रास्त पर होने की, और अगर इन्कार करेगा तो भेज दूंगा तेरी तरफ ऐसे लोगों को कि नहीं बाज़ रखती है इन को कोई सौदागरी, न कोई खरीदारी अल्लाह के ज़िक्र से और सलाम हो उस पर जो करे पैरवी हिदायत की।"

(हवाला फुतूहुश्शाम, अज़ : अल्लामा वाकदी, सफहा : 392)

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फारूके आ'ज़म ने यह खत हज़रत अबू उबैदा को भेजा और इन को हुक्म लिखा कि मेरा यह खत हिरक्ल बादशाह की तरफ फौरन रवाना करो, चुनान्चे हज़रत अबू उबैदा ने एक रूमी मुआहदी को यह खत दे कर हिरक्ल बादशाह के पास कस्तुनतुनिया रवाना फरमाया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा का सब्रो इस्तिक्लाल :-

कैसरे रूम हिरक्ल बादशाह इन्ताकिया की लड़ाई के मौके पर रात ही में अपने अहलो अयाल के साथ भाग कर कस्तुनतुनिया चला गया था और चंद दिनों के बा'द उस का इन्तिकाल हो गया। हिरक्ल के इन्तिकाल के बा'द उस का बेटा कुस्तुनतीन तख्त नशीन हुवा और उस का लकब भी हिरक्ल मुकर्रर हुवा। लिहाज़ा अब जहां भी हिरक्ल का ज़िक्र आएगा उस से मुराद हिरक्ल का बेटा कुस्तुनतीन या'नी हिरक्ले सगीर लिया जाएगा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा को मुर्ज़ुल कबाइल से कैद कर के हिरक्ल के पास भेजा गया और हज़रत अब्दुल्लाह को ब-हैसियते कैदी हिरक्ल के सामने पैश किया गया, तो हिरक्ल ने हज़रत अब्दुल्लाह से पूछा कि क्या तुम अपने नबी के घराने से हो ? हज़रत अब्दुल्लाह ने फरमाया कि नहीं बल्कि इन के चचा के खान्दान से हूं। हिरक्ल ने हज़रत अब्दुल्लाह को दीने

इस्लाम से मुन्हरिफ करने की गरज़ से कहा कि तुम हमारे दीन में दाखिल हो जाओ, में अपने एक मुकर्रब बतरीक की हसीन व जमील लड़की से तुम्हारी शादी कर दूं और तुम को अपने मुसाहिबों में दाखिल कर के आ'ला उहदा इनायत करूं। हज़रत अब्दुल्लाह ने फरमाया कि यह ना-मुम्किन है क्यूं कि मैं अपने नबी अकरम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के लाए हुए दीन हक़ इस्लाम को नहीं छोड़ सक्ता। हज़रत अब्दुल्लाह का जवाब सुन कर हिरक्ल ने एक बड़े थाल में कीमती जवाहिरात मंगवाए और कीमती जवाहिरात से लबरेज़ उस थाल को हज़रत अब्दुल्लाह के सामने रख कर कहा अगर तुम हमारा दीन इख्तियार करो तो खुबसूरत लड़की से शादी करा देने के साथ साथ यह जवाहिरात भी तुम को तोह्फा दूंगा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा ने फरमाया कि **जवाहिरात से भरा हुवा यह थाल क्या हैसियत रखता है ? अगर तू मुझ को अपनी सल्तनत का मालिक कर दे, फिर भी मैं दीने इस्लाम से मुन्हरिफ नहीं होने वाला।** हज़रत अब्दुल्लाह की दीने इस्लाम पर साबित कदमी और इस्तिकलाल देख कर हिरक्ल खशमनाक हुवा और तुन्द लह्जा में कहा कि अगर तुम ने हमारा दीन इख्तियार करने से इन्कार किया तो मैं तुम्हारी गर्दन उड़ा दूंगा। हिरक्ल की यह धमकी सुन कर हज़रत अब्दुल्लाह मुस्कुराए और फरमाया कि **क्या तू मौत की धमकी दे कर मुझे डराने की कौशिश करता है ?** शायद तुझे मा'लूम नहीं कि मौत तो मेरी ख्वाहिश है। अल्लाह और अल्लाह के रसूल की राह में मौत आए, यह तो मेरी दिली तमन्ना है। मौत से मैं मुत्लक घबराता नहीं बल्कि मौत को तो मैं महबूब जानता हूं। लिहाज़ा तू धमकी मत दे और **तुझे जो कुछ भी करना है वह कर गुज़र।**

हज़रत अब्दुल्लाह का अज़्मे मोहकम और यकीने कामिल देख कर हिरक्ल ने हज़रत अब्दुल्लाह की आज़माइश करने की गरज़ से कहा कि अच्छा ठीक है। अगर तुम को हमारा दीन इख्तियार करना मन्ज़ूर नहीं, तो मत इख्तियार करो, लेकिन तीन कामों में से कोई भी एक काम करो, ताकि मैं तुम को बगैर किसी सज़ा के कैद से रहा कर दूं और वह तीन काम यह हैं (1) सलीब को सजदा करो या (2) खिन्ज़ीर (सुव्वर) का गोश्त खाओ या (3) एक प्याला भर कर शराब पियो। हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा रदियल्लाहो तआला अन्हो ने फरमाया कि **खुदा की कसम ! इन तीनों कामों में से एक काम भी मैं नहीं करूंगा।** तब हिरक्ल ने गुस्सा हो कर कहा कि कसम है सलीब की ! **तुम ज़रूर खिन्ज़ीर का गोश्त भी खाओगे और शराब भी नौश करोगे।** फिर उस ने अपने आदमियों को हुक्म दिया कि इस कैदी को एक कमरे में बन्द करो और कमरे में खिन्ज़ीर का पकाया हुवा

गोश्त और शराब के इलावा खाने पीने की कोई भी चीज़ मत रखो। फिर मैं देखता हूं कि यह कितने दिन तक भूका प्यासा रहता है। जब भूक और प्यास की शिद्दत बरदाश्त न होगी, तो खिन्ज़ीर का गोश्त भी खाएगा और शराब भी पियेगा।

हिरक्ल के गुलामों ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा को एक कमरे में बन्द कर दिया और कमरे में खिन्ज़ीर का गोश्त और शराब की सुराही रख दी और पीने के लिये पानी का एक कतरा भी कमरा में नहीं रखा। हज़रत अब्दुल्लाह कमरे में बन्द होते ही मश्गूले इबादत हो गए। हिरक्ल के गुलाम थोड़े थोड़े अर्से के बा'द खिड़की से झांक कर देखा करते थे कि हज़रत अब्दुल्लाह क्या करते हैं, लैकिन जब भी वह झांक कर देखते तो हज़रत अब्दुल्लाह इबादत में मश्गूल होते, यहां तक कि एक दिन गुज़र गया। तब हिरक्ल ने हज़रत अब्दुल्लाह की निगरानी करने पर मुतअय्यन किये गए सिपाहियों के सरबराहे आ'ला को बुला कर पूछा कि कैदी का क्या हाल है? निगरां ने कहा कि ऐ बादशाह! वह कैदी हर वक्त नमाज़ और इबादत में ही मस्रूफ रहता है और **अन्दर रखे हुए गोश्त और शराब की तरफ नज़र उठा कर देखता तक नहीं।** हिरक्ल ने कहा अभी एक दिन ही हुवा है। भूक और प्यास बरदाश्त करने की कुव्वत बहुत जल्द जवाब दे चुकेगी। फिर वह मजबूर हो कर ज़रूर खाएगा और पियेगा। लैकिन हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा के मा'मूल में ज़र्रा बराबर फर्क नहीं आया। हमा वक्त वह इबादत में मश्गूल रहते। यहां तक कि तीन दिन बसर हो गए। जब चौथा दिन हुवा तो हिरक्ल ने निगरां को बुला कर कैफियत पूछी तो हस्बे साबिक ही इत्तिला' मिली, उस को सख्त तअज्जुब हुवा और हज़रत अब्दुल्लाह को अपने दरबार में पैश करने का हुक्म दिया।

जब हज़रत अब्दुल्लाह को चार दिन तक कमरा में भूका और प्यासा रखने के बा'द हिरक्ल के सामने लाया गया तो हिरक्ल ने देखा कि इन के सब्रो इस्तिक्लाल में किसी किस्म की कमी नहीं आई। चेहरे पर पज़्मुर्दगी के आसार कतअन नुमाया नहीं बल्कि चेहरा पहले से ज़ियादह निखरा और चमक रहा है। भूक और प्यास से निढाल होने के बजाए तवाना और तरोताज़ा नज़र आ रहे हैं। हिरक्ल ने मह्वे हैरत हो कर हज़रत अब्दुल्लाह से पूछा कि ऐ अरबी नौ-जवान! तुझ को किस चीज़ ने चार दिन तक इन चीज़ों को खाने पीने से बाज़ रखा है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा ने फरमाया कि अल्लाह और अल्लाह के रसूले मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के खौफ ने मुझे इन चीज़ों से बाज़ रखा है। क्यूं कि यह चीज़ें हम पर अल्लाह और रसूल ने हराम फरमाई हैं। हालां कि तीन दिन गुज़रने के बा'द

ब-कद्रे जान बचाने के खाना पीना मेरे लिये जाइज़ था, लैकिन मैं ने सिर्फ इस लिये इन चीज़ों को छुवा तक नहीं कि मेरे एक फे'ल से तमाम मुसल्मान मुरिदे ता'न बनते और दुनिया यह कहती कि मुसल्मान का सब्रो इस्तिक्लाल पुख्ता नहीं। लिहाज़ा तमाम मुसल्मानों को मुरिदे ता'न बनाने से बेहतर यह है कि मैं भूका और प्यासा ही मर जाउं। अभी सिर्फ चार दिन ही हुए हैं। अगर तू मज़ीद आज़्माइश करना चाहता है तो आज़्मा कर देख ले। मैं अपने आका व मौला, रसूले मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम का कल्मा पढ़ने वालों को मुरिदे ता'न और रुस्वा नहीं करूंगा। फिर चाहे मेरी जान चली जाए। बल्कि अगर मेरी मौत वाकेअ होगी, तो मैं अपने आप को खुश किस्मत समझूंगा। कि यह जान व दिल अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की मुहब्बत और इन की शरीअत के अहकाम की पासदारी में काम आई। मेरा है भी क्या? जो भी है सब इन्हीं का है:

यूं तो सब इन्हीं का है, पर दिल की अगर पूछो
यह टूटे हुए दिल ही खास इन की कमाई है

(अज़: इमामे इश्को मुहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा का यह जवाब सुन कर हिरक्ल बादशाह कुछ कहना चाहता था कि ऐन उसी वक्त हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह का भेजा हुवा रूमी मुआहदी अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फारूक रदियल्लाहो तआला अन्हो का खत ले कर हिरक्ल के दरबार में आया और हिरक्ल को खत दिया। अमीरुल मोमिनीन का खत पढ़ते वक्त हिरक्ल के हाथ कांपने लगे, पूरे बदन पर लरज़ह तारी हो गया और चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं। अमीरुल मोमिनीन का खत पढ़ते ही हिरक्ल का रवय्या बदल गया। गुफ्तगू का लह्जा निहायत नर्म इख्तियार करते हुए उस ने हज़रत अब्दुल्लाह को कैद से रिहा कर दिया। और कीमती माल उमदा कपड़े ब-तौर तोहफा खिदमत में पैश किये और तक्लीफ पहुंचाने की मा'ज़रत चाही और आप की निहायत ता'ज़ीम व तक्रीम की:

नकीरैन करते हैं ता'ज़ीम मेरी
फिदा हो के तुझ पे ये इज़्ज़त मिली है

(अज़: इमामे इश्को मुहब्बत हज़रत रज़ा बरैलवी)

फिर हिरक्ल ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा रदियल्लाहो तआला अन्हो को एक

बड़ा कीमती मोती दिया और कहा कि मेरी तरफ से अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फारूक को यह तोहफा पहुंचा दें। बा'दहु हिरक्ल ने अपने खास सिपाहियों के गिरोह की निगरानी में हज़रत अब्दुल्लाह को इस्लामी लश्कर के कैम्प हल्ब तक पहुंचा दिया।

हिरक्ल का तोह्फा मुसल्मानों के बैतुल माल में :-

हिरक्ल के सिपाहियों की निगरानी में हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा सहीह व सलामत हल्ब आए और हज़रत अबू उबैदा की खिदमत में हाज़िर हुए। हज़रत अब्दुल्लाह को सलामत वापस आता देख कर जैशे इस्लाम का हर मुजाहिद खुशी में मचल गया और तहलील व तक्बीर के फलक शगाफ ना'रे बुलन्द कर के अपनी खुशी का इज़्हार किया। खुसूसन हज़रत अबू उबैदा और हज़रत खालिद बिन वलीद निहायत मस्रूर हुए। हज़रत अब्दुल्लाह ने अपने कैद होने से ले कर रिहा हो कर हल्ब तक आने की तमाम तफ्सील बयान फरमाई। सब ने इन को मुबारकबाद दी और इस्तिकामत फीद्दीन के जज़्ब-ए सादिक की ता'रीफ व तेहसीन करते हुए दुआए खैर व आफियत दी। फिर हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत अब्दुल्लाह से फरमाया कि तुम्हारे मआमला में अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फारूक बहुत ही फिक्र मन्द और मलूल हैं, लिहाज़ा तुम फौरन इन की खिदमत में हाज़िरी के लिये मदीना मुनव्वरा रवाना हो जाओ। हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा हल्ब से रवाना हो कर मदीना मुनव्वरा आए। इन को सलामत और ब-खैर व आफियत देख कर अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फारूक बहुत खुश हुए और अल्लाह तआला का सजद-ए शुक्र बजा लाए। हज़रत अब्दुल्लाह ने अमीरुल मोमिनीन को तमाम कैफियत कह सुनाई और हिरक्ल ने जो मोती तोहफा में भेजा था वह खिदमत में पैश किया। अमीरुल मोमिनीन ने वह मोती मदीना मुनव्वरा के तमाम जोहरियों के पास भेजा, ताकि वह इस की कीमत का अंदाज़ा लगाएं। तमाम जोहरियों ने यही जवाब दिया कि ऐसा कीमती मोती हम ने कभी नहीं देखा। इस की कीमत का सहीह अंदाज़ा नहीं लगाया जा सक्ता, बल्कि मदीना तय्यबह के तमाम जोहरी मिल कर भी इस की कीमत नहीं अदा कर सक्ते। फिर हज़रत उमर फारूक ने तमाम सहाबए किराम और अह्ले मदीना को जमा किया और इन को मुत्तलेअ फरमाया कि सगे रूमी ने मेरे लिये यह कीमती मोती का तोहफा भेजा है। इस मआमला में तुम्हारी क्या राए है ? सब ने यही कहा कि हिरक्ल ने यह तोहफा मख्सूस आप के लिये भेजा है, लिहाज़ा यह मोती आप अपने सर्फ में लाएं। हज़रत उमर फारूक ने फरमाया कि यह मोती में रख लूं जब कि मुजाहिदीन और मुहाजिरीन व अन्सार के अह्लो अयाल भूके हैं ? अगर कल कयामत के दिन उमर से

इस का मुतालबा किया गया, तो इस का जवाब देने की उमर में ताकत नहीं। चुनान्चे आप ने वह मोती बैतुल माल में जमा करा दिया :

उमर वह उमर जिस की उम्रे गिरामी
हूई सर्फ अर्ज़ाए खल्लाके वाहिब

(अज़ : इमामे इश्को मुहब्बत, हज़रत रज़ा बरैलवी)

इस्लामी लश्कर ने पहाड़ी इलाके की फुतूहात हासिल कर के चंद दिनों के लिये हल्ब में पड़ाव किया। क्यूं कि हज़रत अबू उबैदा ने अम्र बिन अल-आस को कैसारिया के इलाके में भेजा था और वहां इन का क्या मआमला होता है, इस के इन्तिज़ार में हज़रत अबू उबैदा ने हल्ब में तवक्कुफ किया

इस्लामी लश्कर के हाथों फतह होने वाले मकामात

(1) इरका (2) सह्ना (3) तदम्मुर (4) हूरान(5) बसरा (6) बैतुल लहिया (7) अजनादीन (8) दमिश्क (9) हिस्न अबील किद्स (10) जोसिया (11) हुमुस (12) शीरज़ (13) रुस्तन (14) हमात (15)कन्सरीन (16) बा'ल्बक (17) यर्मूक (18) बैतुल मुकद्दस (19) हल्ब (20) ए'ज़ाज़ (21) इन्ताकिया (22) बन्ज (23) बराआ (24) ताब्लीस (25) किल्ले नज्म (26) कूरस (27) मुर्जुल कबाइल

जंगे नख्ल

हज़रत अम्र बिन अल-आस पांच हज़ार का लश्कर ले कर कैसारिया की तरफ रवाना हुए। हल्ब से ब-जानिबे कैसारिया जाते हुए राह में मुअर्रात, कफरतात, कामिया, जबले अबी कुबैस और इन के अतराफ के किलओं को ब-ज़रीए सुलह फतह कर लिये और फिर वहां से कूच करते हुए "नख्ल" नाम के एक गांव में पड़ाव किया। यह गांव कैसारिया से बहुत ही करीब था। वहां का हाकिम हिरक्ल बादशाह का लड़का कुस्तुनतीन था। हिरक्ल बादशाह के लश्कर ने जब इन्ताकिया में हज़ीमत उठाई थी, तो उस के सिपाही इन्ताकिया से भाग कर कैसारिया आए थे। कैसारिया में कुस्तुनतीन ने अस्सी हज़ार का लश्कर जमा कर रखा था। फिर वह अपने बाप के पास चला गया और अपने बाप के पास कस्तुनतुनिया में चंद दिन ठहरा। इसी दौरान हिरक्ल बादशाह का इन्तिकाल हो गया और उस की जगह कुस्तुनतीन तख्त नशीन हुवा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा का मआमला इस के सामने ही पैश हुवा था। अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फारूक रदियल्लाहो तआला अन्हो का खत आने पर उस ने हज़रत अब्दुल्लाह को कैद से रिहा कर दिया और हज़रत अब्दुल्लाह को कस्तुनतुनिया से हल्ब रवाना करने के बा'द फिर वह भी कस्तुनतुनिया से कैसारिया आ गया था। क्यूं कि उस को अंदेशा था कि इस्लामी लश्कर कैसारिया की तरफ कूच करने वाला है।

कुस्तुनतीन हिरक्ले सगीर को नख्ल गांव में इस्लामी लश्कर के पड़ाव की इत्तिला' मिली, तो उस ने अपने एक मो'तमद जासूस को इस्लामी लश्कर की ता'दाद मा'लूम करने नख्ल भेजा। वह जासूस नस्रानी अरब और कौमे बनी गस्सान से था और अरबी उस की मादरी ज़बान थी। उस ने इस्लामी लिबास पहना और इस्लामी लश्कर के कैम्प में दाखिल हो गया। वह नस्रानी अरब जासूस इस्लामी लश्कर के कैम्प में घूमता रहा और इस्लामी लश्कर की छोटी से छोटी बात भी नोट करता रहा। वह जासूस फसीह व बलीग ज़बान में गुफ्तगू करता था, लिहाज़ा किसी को भी उस पर शक व शुब्हा नहीं हुवा। वह जासूस इस्लामी कैम्प में गश्त करता हुवा उस जगह आया जहां यमनी मुजाहिदीन के खैमे थे। वह जासूस यमन के मुजाहिदों के पास आया और सलाम कर के बैठा और इन की खैर व आफियत पूछ कर

इधर उधर की बातें करने लगा। दौराने गुफ्तगू वह किसी काम से उठा कि इत्तिफाकन इस का लम्बा कुर्ता (जुब्बा) इस के पाऊं में उलझ जाने की वजह से ठोकर खा कर गिरा। गिरते वक्त इस की ज़बान से बे-साख्ता सलीब के नाम से कल्म-ए कुफ्र निकल गया। लिहाज़ा यमन के मुजाहिदों ने लपक कर उस को पकड़ लिया और किसी किस्म की पूछ गछ और तफ्तीश किये बगैर मार मार कर हलाक कर दिया। इस मआमला की वजह से मार पीट का शौर बुलन्द हुवा और हज़रत अम्र बिन अल-आस को खबर पहुंची। लिहाज़ा हज़रत अम्र बिन अल-आस ने नस्रानी अरब जासूस को मार डालने वाले यमनी मुजाहिदों को बुलाया और हाल पूछा तो इन्हों ने तमाम कैफियत बयान की। इस पर हज़रत अम्र बिन अल-आस बहुत नाराज़ हुए और फरमाया कि तुम को इस जासूस को मार डालने की उज्लत करने की क्या ज़रूरत थी ? तुम पर लाज़िम था कि तुम उसे पकड़ कर मेरे पास ले आते तो मैं उस से तमाम बातें उगलवा लेता और इस के इलावा दीगर कितने जासूस हमारे कैम्प में घुस आए हैं, वह तमाम हकीकत मा'लूम कर लेता। लेकिन तुम लोगों ने होश के बजाए जौश से काम लेते हुए उसे मार डालने में जल्दी की और जो भेद हम को मा'लूम हो सक्ते थे, वह उस के मर जाने से पोशीदह रह गए। फिर हज़रत अम्र बिन अल-आस ने लश्कर में मुनादी करा दी कि अगर कोई रूमी जासूस पकड़ा जाए, तो उस को मार डालने के बजाए कैद कर के सरदार अम्र बिन अल-आस के पास ले जाए।

कुस्तुनतीन अपने जासूस के लौटने का शिद्दत से मुन्तज़िर था, लैकिन उस का भेजा हुवा जासूस वापस न लौटा, तो उस ने यकीन कर लिया कि मेरा जासूस मारा गया, लिहाज़ा उस ने दूसरा जासूस रवाना किया। दूसरा जासूस इस्लामी लश्कर के कैम्प में ब-वजह खौफ न आया बल्कि नख्ल गांव में गया। गांव में रह कर दूर से ताक झांक कर के अंदाज़ा कर लिया और कुस्तुनतीन को इत्तिला' दी कि इस्लामी लश्कर की ता'दाद सिर्फ पांच हज़ार है। कैसारिया में कुस्तुनतीन का लश्कर अस्सी हज़ार की ता'दाद में था। लिहाज़ा इस्लामी लश्कर की पांच हज़ार की खबर पा कर कुस्तुनतीन का हौसला बढ़ा और उस ने कैसारिया के तमाम रुउसाए बतारेका और जंगजूओं को जमा कर के कहा कि सिर्फ पांच हज़ार की ता'दाद का इस्लामी लश्कर करीब के गांव नख्ल में पड़ाव किये हुए है। वह लश्कर हमारे शहर पर हम्ला करने आए, इस से कब्ल हम ही जा कर उस पर हम्ला कर के उस का सफाया कर दें। सब ने इस की ताईद की, लिहाज़ा कुस्तुनतीन ने अपने लश्कर को हस्बे ज़ैल तर्तीब से मुन्कसिम किया और इस्लामी लश्कर पर युरिश करने का मुसम्मम कस्द किया।

- मस्कान नाम के बतरीक को दस हज़ार का लश्कर दे कर पहले रवाना किया और उस को तलीअए जैश की हैसियत से नख्ल गांव की तरफ जाने का हुक्म दिया।
- उस के पीछे हिर्सा नामी बतरीक को दस हज़ार का लश्कर दे कर रवाना किया।
- चालीस हज़ार का लश्कर ले कर खुद कुस्तुनतीन आखिर में रवाना हुवा।
- बीस हज़ार का लश्कर कैसारिया शहर की हिफाज़त के लिये शहर में ही रहने दिया और इस बीस हज़ार के लश्कर पर अपने चचा के बेटे ''नस्तावल'' को सरदार मुकर्रर किया।

रूमी लश्कर की नख्ल में आमद :-

इस्लामी लश्कर ब-मुकाम नख्ल अपने कैम्प में था कि दफअतन दस हज़ार का रूमी लश्कर नमूदार हुवा। रूमी लश्कर की पहली किस्त के सरदार बतरीक मस्कान ने इस्लामी लश्कर के कैम्प से कुछ फास्ले पर पड़ाव किया। हज़रत अम्र बिन अल-आस ने रूमी लश्कर की ता'दाद मा'लूम करने के लिये मुखबिरों को काम पर लगा दिया। थोड़ी ही देर में मुखबिरों ने आ कर खबर दी कि रूमी लश्कर की ता'दाद दस हज़ार है। हज़रत अम्र बिन अल-आस बहुत खुश हुए और फरमाया कि यह बहुत आसान मरहला है। **क्यूं कि इस्लामी लश्कर के एक मुजाहिद को रूमी लश्कर के दो सिपाहियों से मुकाबला करना पड़ेगा। और यह कोई मुश्किल काम नहीं।** हज़रत अम्र बिन अल-आस दस हज़ार के रूमी लश्कर से मुकाबला की तज्वीज़ सोच रहे थे कि रूमी लश्कर के दस हज़ार सवारों की दूसरी किस्त ले कर बतरीक ''हिर्सा'' भी आ पहुंचा। हज़रत अम्र बिन अल-आस कुछ फिक्र मन्द हुए और अब बीस हज़ार के रूमी लश्कर से मुकाबला करने की तद्बीर सोचने लगे कि रूमी लश्कर की तीसरी किस्त चालीस हज़ार सिपाहियों का लश्करे जर्रार ले कर हाकिम कुस्तुनतीन भी नख्ल आ धमका। **अब सूरते हाल यह थी कि पांच हज़ार के इस्लामी लश्कर के सामने साठ हज़ार (60,000) का रूमी लश्कर मुकाबला करने खड़ा था।** हज़रत अम्र बिन अल-आस को अब फिक्र लाहिक हूई और आप ने लश्कर के अहम अराकीन को जमा कर के कहा कि मेरी राए यह है कि हम यहां से किसी शख्स को फौरन हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह के पास भेज कर कुमुक तलब कर लें। लैकिन हज़रत रबीआ

बिन आमिर ने कहा कि ऐ सरदार ! आप फिक्र मन्द न हों। **इन साठ हज़ार रूमियों के लिये हम पांच हज़ार काफी हैं।** अल्लाह तबारक व तआला ने बहुत से मकाम में हमारी कलील जमाअत को रूमियों की जमाअते कसीरा पर गल्बा और फतह अता फरमा कर हमारी मदद की है। लिहाज़ा न तो हम को कुमुक मंगाने की ज़रूरत है और न ही हम को घबराने की ज़रूरत है :

हैं रज़ा यूं न बिल्क, तू नहीं जय्यद तो न हो
सय्यदे जय्यदे हर दहर है मौला तेरा

(अज़ : इमामे इश्को मुहब्बत, हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत रबीआ बिन आमिर की जोशीली गुफ्तगू सुन कर सब ने इन की ताईद की और कहा कि हम को कुमुक मंगाने की ज़रूरत नहीं। लिहाज़ा हज़रत अम्र बिन अल-आस इस्लामी लश्कर को कैम्प से मैदान में लाए। इस्लामी लश्कर ने मैदान में आते ही तहलील व तक्बीर की सदाएं बुलन्द कीं और बुलन्द आवाज़ से अपने आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की बारगाह में नज़्रानए दुरूद शरीफ भेजा। मुजाहिदों की आवाज़ें करीब में वाकेअ पहाड़ों से टकराईं और सदाए बाज़गश्त ऐसी गूंजी कि जिस को सुन कर रूमियों के दिल दहल गए और इन पर एक अन्जान खौफ व रोअब तारी हो गया। कुस्तुनतीन अजीब कश्मकश में मुब्तला था। क्यूं कि उस के जासूसों ने इसे इत्तिला' दी थी कि इस्लामी लश्कर की ता'दाद सिर्फ पांच हज़ार है, लैकिन जब उस ने इस्लामी लश्कर की तरफ निगाह उठा कर देखा, तो उस को इस्लामी लश्कर की ता'दाद बहुत ज़ियादह महसूस हूई।

इमामे अर्बाबे सेयर व तारीख, इमामे अजल, अल्लामा मुहम्मद बिन अम्र अल वाकदी ने कुस्तुनतीन की कैफियते शशो पंज का इन अल्फाज़ में ज़िक्र फरमाया है :

''और देखा कुस्तुनतीन ने मुसल्मानों के लश्कर को, पस ज़ियादह मा'लूम हुवा उस की आंख में और कहा उस ने कि कसम है अपने दीन की जब आया और बुलन्द हुवा था मैं इस लश्कर पर, तो नहीं थे वह ज़ियादह पांच हज़ार से, और अब बढ़ गई है ता'दाद इन की, और ज़ियादह हूई मदद इन की, और नहीं शक है कि अल्लाह तआला ने मदद इन को दी है साथ फरिश्तों के और बाप मेरा दाना और बीना था इन अरब के हाल का, और नहीं है मेरा लश्कर इन अरमनी के लश्कर से ज़ियादह, जब

कि मुलाकी हुवा था वह इन से यर्मूक में दस लाख से, और ब-तह्कीक नदामत हासिल की मैं ने अपने निकलने पर इन के मुकाबले को, और मैं करीब तर फिक्र करूंगा किसी मक्र व फरैब का इन अरबों पर ।''

(हवाला : फुतूहुश्शाम, अज़ : अल्लामा वाकदी, सफहा : 397)

कुस्तुनतीन की सुलह की पैशकश, हज़रत बिलाल नुमाइन्दे :-

कुस्तुनतीन ने कैसारिया शहर के सब से बड़े कस (पादरी) को अपने पास बुलाया । वह कस दीने नस्रानिया का ज़बरदस्त आलिम और फसीहुल लिसान खतीब था । उस से कुस्तुनतीन ने कहा आप ब-तौरे एलची जाओ और मुसल्मानों के लश्कर से किसी दाना शख्स को सुलह की गुफ्तगू करने के लिये ले आओ । चुनान्चे वह कस उमदा लिबास ज़ैब तन कर के और हाथ में सलीब बुलन्द कर के इस्लामी लश्कर में सवार हो कर आया और कहा कि मैं हिरक्ल बादशाह के शहज़ादे रहम दिल बादशाह कुस्तुनतीन की तरफ से ब-तौरे नुमाइन्दा आया हूं । बादशाह कुस्तुनतीन तुम से सुलह की ख्वाहिश रखता है । क्यूं कि वह हमारे दीन का बड़ा आलिम और दाना शख्स है । वह खूनरैज़ी और इन्सानों के कत्ल को पसन्द नहीं करता है । लिहाज़ा तुम अपने लश्कर से किसी फसीह ज़बान और अक्लमन्द शख्स को बादशाह के पास सुलह के अम्र में गुफ्तगू करने भेजो ।

हुज़ूरे अक्दस जाने आलम व रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के मुअज़्ज़िन और आशिके सादिक हज़रत बिलाल रदियल्लाहो तआला अन्हो हज़रत अम्र बिन आस के सामने आए और कहा कि मैं रूमियों के बादशाह से गुफ्तगू करने जाता हूं । हज़रत अम्र बिन अल-आस ने कहा कि ऐ बिलाल ! हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की जुदाई के गम में तुम शिकस्ता हाल हो । इलावा अज़ीं तुम अह्ले हब्शा से हो और अह्ले अरब की तरह फसीह व बलीग गुफ्तगू नहीं कर सकोगे । हज़रत अम्र बिन अल-आस ने हज़रत बिलाल से यह बात इस लिये कही थी कि इन को कुस्तुनतीन के पास गुफ्तगू करने के लिये जाने से रोकें और इन के बजाए किसी और को भेजें । हज़रत बिलाल रदियल्लाहो तआला अन्हो हज़रत अम्र बिन अल-आस का मक्सद समझ गए । लिहाज़ा इन्हों ने हज़रत अम्र बिन अल-आस से जो कहा वह इमामे अर्बाबे सेयर व तवारीख हज़रत अल्लामा मुहम्मद बिन अम्र वाकदी की ज़बानी समाअत फरमाएं :

''पस कहा बिलाल रदियल्लाहो अन्हो ने कि कसम है तुम को हक्के रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व आलेहि व सल्लम की, इस

अम्र पर कि छोड़ दो तुम मुझ को कि जाउं मैं उस की तरफ को । पस कहा अम्र बिन अल-आस ने कि तुम ने बड़ी और बुज़ुर्ग कसम मुझ को दिलाई । जाओ तुम और इआनत तलब करो तुम अल्लाह तआला से और न डरो तुम इस से कलाम करने में और फसाहत बयानी करो तुम जवाब में ।''

(हवाला : फुतूहुश्शाम, अज़ : अल्लामा वाकदी, सफहा : 398)

हज़रत बिलाल के इस जवाब पर तफ्सीली गुफ्तगू न करते हुए सिर्फ इत्ना अर्ज़ करना है कि हज़रत बिलाल ने हज़रत अम्र बिन अल-आस को हक्के रसूलल्लाह की कसम दी । और हज़रत अम्र बिन अल-आस ने हक्के रसूलल्लाह की कसम को बड़ी और बुज़ुर्ग कसम कहा और हक्के रसूलल्लाह की कसम का लिहाज़ करते हुए इन्हों ने हज़रत बिलाल को कुस्तुनतीन से गुफ्तगू करने जाने की इजाज़त मरहमत फरमा दी । अगर रसूलल्लाह की कसम खाना शिर्क होता, तो हज़रत अम्र बिन अल-आस हज़रत बिलाल को ऐसी कसम खाने से मना' करते । हज़रत अम्र बिन अल-आस ने हज़रत बिलाल को हक्के रसूलल्लाह की कसम खाने से मना' करने के बजाए इस कसम को बुज़ुर्ग और ज़ी वकार कहा और इस कसम का लिहाज़ फरमाया । लैकिन दौरे-हाज़िर के मुनाफिकीन रसूलल्लाह की कसम खाने पर शिर्क का फत्वा दे कर जलीलुल कद्र सहाबए किराम के मुकद्दस और पाक दामनों पर भी शिर्क के फत्वे का कीचड़ उडाते हैं ।

अल-किस्सा ! हज़रत बिलाल रदियल्लाहो तआला अन्हो उस कस के सामने आए । रूमी कस ने हज़रत बिलाल को घूर घूर कर देखा । हज़रत बिलाल के सियाह रंग का जिस्म, दराज़ कद और खून की तरह सुर्ख आंखें देख कर हैबत ज़दा हो गया । हज़रत बिलाल ने बोसीदा कमीस पहनी थी और सर पर सूफ (बोरिया) का अमामा बांधा था । अपने तोशा दान और तल्वार को गले में लटकाए और हाथ में असा (छड़ी) लिये हुए थे । रूमी कस ने यह गुमान किया कि इस्लामी लश्कर के सरदार ने हम को ज़ईफ और हकीर जान कर, हमारी तज़लील करने के लिये कसदन किसी अरबियुन नस्ल फसीह शख्स के बजाए हब्शी गुलाम को बादशाह से गुफ्तगू करने भेजा है । लिहाज़ा रूमी कस ने कहा कि ऐ गुलाम ! तुम वापस चले जाओ क्यूं कि हमारे बादशाह ने तुम्हारे लश्कर के सरदारों में से किसी को गुफ्तगू करने तलब किया है । हज़रत बिलाल ने फरमाया कि मैं बिलाल मुअज़्ज़िने रसूले मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम हूं । मैं तुम्हारे बादशाह से गुफ्तगू करने

में आजिज़ हो कर पीछे नहीं हटूंगा। रूमी कस ने कहा कि तुम अपनी जगह पर ही ठहरो, मैं बादशाह को तुम्हारे मुतअल्लिक इत्तिला' करता हूं और अगर इजाज़त दी तो तुम को साथ ले चलूंगा। रूमी कस फौरन कुस्तुनतीन के पास गया और उसे सूरते हाल से वाकिफ किया। कुस्तुनतीन ने कहा कि मैं मुसल्मानों के सरदार के इलावा किसी और से गुफ्तगू नहीं करूंगा। रूमी कस वापस आया और कहा कि बादशाह सिर्फ तुम्हारे सरदार से ही बात चीत करना चाहता है। लिहाज़ा हज़रत बिलाल रदियल्लाहो अन्हो वापस लौट गए और हज़रत अम्र बिन अल–आस को इस अम्र की इत्तिला' दी। हज़रत अम्र बिन अल–आस ने हज़रत शुर्हबील बिन हसना कातिबे रसूल को लश्कर का निशान सुपुर्द किया और फरमाया कि अगर रूमी मेरे साथ गद्र और बे वफाई करें, तो मेरी जगह तुम संभालना। फिर हज़रत अम्र बिन अल–आस रूमी कस के हमराह कुस्तुनतीन के खैमे में गए।

हज़रत अम्र बिन अल–आस और कुस्तुनतीन में गुफ्तगू :–

जब हज़रत अम्र बिन अल–आस कुस्तुनतीन के खैमे में गए तो उस के मुसाहिब और बतारेका उस के इर्द गिर्द जमा थे। खैमे में आ'ला किस्म के तख्त बिछाए गए थे और तकल्लुफात का काफी सामान खैमे में रखा हुवा था। कुस्तुनतीन ने हज़रत अम्र बिन अल–आस को मर्हबा कहा और एक तख्त पर बैठने की दरख्वास्त की, लेकिन हज़रत अम्र बिन अल–आस ने तख्त पर बैठने से इन्कार किया और फरमाया कि तेरे फर्श से अल्लाह का फर्श पाक और उमदा है। फिर आप ज़मीन पर चार ज़ानू इस तरह बैठे कि अपने नैज़े को आगे रखा और तल्वार को रान पर रखा और फरमाया कि ऐ रूम के बादशाह ! कहो ! क्या कहना है ? कुस्तुनतीन ने कहा कि ऐ अरबी जवान ! तुम अरब से हो और हम रूम से हैं। कौमे अरब और कौमे रूम ब–ए'तबारे नसब भाई भाई हैं। लिहाज़ा इस निस्बते कराबत और यगान्गत का लिहाज़ करना और खूनरैज़ी से बाज़ रहना तुम और हम दोनों पर लाज़िम है। हज़रत अम्र बिन अल–आस ने फरमाया कि तमाम रिश्तों से ईमान का रिश्ता मुकद्दम है। अगर हकीकी बाप या भाई भी अल्लाह और रसूल का दुश्मन है, तो उस से हम लड़ते हैं। यहां तक कि उस को कत्ल करते हुए भी झिझकते नहीं, लेकिन अगर कोई अन्जान शख्स ईमान कबूल करता है, तो हम उस से भाई चारा और हमदर्दी करते हैं। लिहाज़ा अगर तुम को हमारा भाई बनना है, तो इस्लाम में दाखिल हो जाओ। ताकि तुम्हारा और हमारा मआमला यक्सां हो जाए।

कुस्तुनतीन ने कहा कि ऐ अरबी बिरादर ! तुम्हारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम हज़रत इस्माईल बिन इब्राहीम अलैहुमास्सलातो वस्सलाम की औलाद से हैं और हम अह्ले रूम ऐज़ बिन इस्हाक बिन इब्राहीम की औलाद से हैं। हमारा नसब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम में आ कर मिलता है। हज़रत अम्र बिन अल–आस ने फरमाया कि तुम्हारे बाप ऐज़ बिन इस्हाक ने अपनी वालेदा की ना–फरमानी की और नतीजा यह हुवा कि वह अपने भाई या'कूब बिन इस्हाक की कराबत से निकल गए। इसी तरह तुम ने अल्लाह और रसूल की ना–फरमानी कर के अपने को हमारी कराबत से खारिज कर दिया है। हम से कराबत और यगान्गत का रिश्ता काइम करने के लिये सिर्फ एक ही राह है और यह है कि तू ''لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ'' पढ़ कर इस्लाम या'नी अपने बाप दादा के दीन में दाखिल हो जा। कुस्तुनतीन ने कहा कि हम अपने बाप दादा के दीन से मुन्हरिफ नहीं होंगे। हज़रत अम्र बिन अल–आस ने कहा कि अगर दीने इस्लाम इख्तियार करना तुम्हें मन्ज़ूर नहीं तो जिज़्या अदा करो और हमारी तलवारों से महफूज़ हो जाओ। कुस्तुनतीन ने कहा तुम को जिज़्या अदा कर के ज़िल्लत और रुस्वाई इख्तियार करना भी हमें मन्ज़ूर नहीं। हज़रत अम्र बिन अल–आस ने फरमाया **तो फिर तुम्हारे और हमारे दरमियान तल्वार फैसला करने वाली है।** यह फरमा कर हज़रत अम्र बिन अल–आस खड़े हो गए और आइन्दा कल जंग का मुआहदा कर के वापस लौटे।

आगाज़े जंग ब-मुकाम नख्ल

हज़रत अम्र बिन अल-आस कुस्तुनतीन के खैमे से निकल कर इस्लामी लश्कर में वापस आए। इन की सलामत वापसी पर मुजाहिदों ने अल्लाह का शुक्र अदा किया और तहलीलो तक्बीर के ना'रे बुलन्द किये। फिर हज़रत अम्र बिन अल-आस ने इस्लामी लश्कर को लड़ाई के मैदान से कैम्प में वापस जाने का हुक्म दिया। इस्लामी लश्कर ने कैम्प में रात बसर की और दूसरे दिन अलस्सुबह हज़रत अम्र बिन अल-आस इस्लामी लश्कर को ले कर मैदान में आए और लश्कर की सफ बन्दी कर के मैमना और मैसरा वगैरा की तर्तीब दी। रूमी लश्कर भी अपने कैम्प से निकल कर मैदान में आया। कुस्तुनतीन ने अपने लश्कर की सफ बन्दी और तर्तीब की और लश्कर के आगे तीर अन्दाज़ों को खड़ा कर दिया। इन तीर अन्दाज़ों में से एक तीर अन्दाज़ ने इस्लामी लश्कर के मैमना पर तीर चलाया और एक मुजाहिद को सख्त ज़ख्मी कर दिया। फिर उस रूमी ने इस्लामी लश्कर के मैसरा पर तीर चलाया और एक मुजाहिद को शहीद कर दिया। उस की यह जुर्अत देख कर इस्लामी लश्कर से कौमे सकफ का एक मुजाहिद अपने हाथ में अरबी कमान और तीर ले कर मैदान में आया और उस रूमी के सामने खड़ा हो गया। उस सकफी मुजाहिद ने ज़िरह या खौद कुछ भी नहीं पहना था। पुराने और फटे कपड़ों में मल्बूस उस मुजाहिद ने अपने सर पर एक पुराना अमामा बांधा था। रूमी गबर ने देखा कि इस जवान के बदन पर लोहे की कोई चीज़ नहीं है तो उस ने सकफी मुजाहिद को हकीर जाना और एक तीर छोड़ा। तीर सकफी मुजाहिद के सीना के बजाए पोस्तीन में लग कर उलझ गया और कारगर न हुवा। उस रूमी गबर को अपनी तीर अन्दाज़ी के फन पर बहुत नाज़ व गुरुर था। उस ने देखा कि मेरे तीर ने खता खाई है तो वह खशमनाक हुवा और फौरन तर्कश से एक दूसरा तीर निकाल कर कमान पर चढ़ाया और सकफी मुजाहिद पर निशाना बांधा, लेकिन उस के तीर चलाने से पहले सकफी मुजाहिद की अरबी कमान से तीर चल चुका था और गच करता हुवा उस के हलक में पैवस्त हो कर पीछे की तरफ निकला और एक ही तीर में वह रूमी गबर मुर्दा हो कर ज़मीन पर गिरा। सकफी मुजाहिद ने उस गबर का जंगी साज़ो सामान ले लिया और फिर इस्लामी लश्कर में वापस चला आया।

हिरक्ल बादशाह जब ज़िन्दा था, तो उस ने अपने बेटे कुस्तुनतीन की निगरानी के लिये मुहाफिज़े खास की हैसियत से बतरीक "**कैदमून**" को कैसारिया भेजा था। कैदमून बतरीक हिरक्ल बादशाह का मामूं और खासुल खास शेहसवार था। मुल्के शाम में एक दिलैर जंगजू की हैसियत से उस का नाम था। वह फन्ने जंग का कोहना मश्क तजरबा कार था। कुस्तुनतीन ने इस्लामी लश्कर के मुजाहिदों पर रोअब डालने की गरज़ से बतरीक कैदमून को मैदान में भेजा। मैदान में आते ही कैदमून ने अपने घोड़े को गरदावे दिये और अपनी शुजाअत और बहादुरी के फख्रिया अश्आर ललकारने लगा। एक यमन का बाशिन्दा, नौ-जवान मुजाहिद अपनी वालेदा और बहन के हमराह इस्लामी लश्कर में शामिल था। वह यमनी मुजाहिद मैदान में आया और आते ही बतरीक कैदमून पर नैज़ा का वार किया। लेकिन कैदमून ने लोहे की ज़िरह पहन रखी थी, लिहाज़ा नैज़ा कारगर साबित न हुवा और नैज़ा बतरीक कैदमून की लोहे की ज़िरह में फंस गया। यमनी मुजाहिद ने नैज़ा वापस खींचने की कौशिश की, लेकिन कैदमून ने तल्वार का वार कर के नैज़ा की लक्ड़ी काट डाली। अब यमनी मुजाहिद के हाथ में सिर्फ नैज़ा की लक्ड़ी थी, जिस को यमनी मुजाहिद ने लाठी की तरह घूमाना शुरू किया, लैकिन बतरीक कैदमून ने मौका' पा कर यमनी मुजाहिद पर तल्वार का वार कर के इन के दो टुक्ड़े कर के शहीद कर दिया।

एक ना-तजर्रबा कार और निहत्ते मुजाहिद को शहीद कर के अपनी काम्याबी पर बतरीक कैदमून घमंड और गुरूर के नशे में झूमने लगा और अपने घोड़े को तैज़ रफ्तारी से मैदान में गरदावे देने लगा और पुकार पुकार कर मुकाबिल तलब करने लगा।

हज़रत शुर्हबील बिन हसना और बतरीक कैदमून के दरमियान जंग :-

बतरीक कैदमून की मुबारज़त पर इस्लामी लश्कर से "इब्ने कस्म" नाम के एक मुजाहिद मैदान में आए, लेकिन इन को तल्वार ज़नी करने का मौका' ही मयस्सर न हुवा। क्यूं कि इन के मैदान में आते ही कैदमून ने तल्वार का वार कर के इन को शहीद कर दिया। कैदमून की इस दूसरी काम्याबी पर रूमी लश्कर ने कुफ्र के ना'रे बुलन्द कर के कैदमून की हौसला अफ्ज़ाई की। कैदमून अज़ राहे तकब्बुर अपनी काम्याबी पर फूला न समाता था। वह मैदान में गरदावे देता था और मुकाबिल तलब करता था। हज़रत शुर्हबील बिन हसना ने जब देखा कि मल्ऊन बतरीक ने दो नौ-जवान मुजाहिदों को शहीद कर दिया, तो अपने से फरमाया कि ऐ नफ्स ! अफ्सोस है तुझ पर कि नौ-जवान मुजाहिद तो जामे शहादत से सैराब होते हैं और तू सलामत और ज़िन्दा बैठा है ? यह ख्याल आते ही हज़रत शुर्हबील बिन हसना

ने हज़रत अम्र बिन अल–आस से इजाज़त ली और मैदान में कूद पड़े। हज़रत शुर्हबील बिन हसना हमेंशा दिन को रोज़ा रखते और रात भर इबादत कर के शब बैदारी करते, लिहाज़ा वह बहुत लागर, नहीफ और दुबले पुतले थे। बतरीक कैदमून हज़रत शुर्हबील के नातवां और ज़ईफ जिस्म को देख कर हिकारत से हंसा। बतरीक कैदमून तवील जिस्म और भारी डील डोल वाला शख्स था। उसे अपने मोटे और तरोताज़ा बदन का बहुत गुरूर था।

हज़रत शुर्हबील के मैदान में आते हैं बतरीक कैदमून ने जसत लगा कर तल्वार का वार किया, लैकिन हज़रत शुर्हबील ने उस के वार को खाली फैरा और बाज़गश्त वार किया, जिस को कैदमून ने ढाल पर ले कर बचाया। दोनों में शिद्दत से तल्वार ज़नी होने लगी। तलवारों के टकराने की चका चाक और आग के शरारे बुलन्द होने लगे। दोनों ने तल्वार ज़नी के कर्तब दिखा कर देखने वालों को मुतअज्जिब कर दिया। दोनों की लड़ाई ने तूल पकड़ा और दोनों लश्कर के लोग इन दोनों पर नज़्रें जमा कर दोनों की तल्वार ज़नी के फन की दाद दे रहे थे। उस दिन सुब्ह से ही आस्मान में घने बादल छाए हुए थे। जब दोनों की लड़ाई का आगाज़ हुवा, तो हल्की बून्दा बून्दी हो रही थी, लैकिन जब दोनों की लड़ाई शबाब पर थी तो दफ्अतन मूसला धार बारिश शुरू हो गई। पानी की कसरत के बाइस दोनों के घोड़ों की पीठ से ज़ीन फिसलने लगी और घोड़े की पुस्त पर सवार हो कर तवाज़ुन बर–करार रखना और लड़ना मुश्किल हो गया। लिहाज़ा दोनों पा–प्यादा हो कर लड़ने लगे, लैकिन अब तलवारें भी हाथ से फिसलने लगीं। लिहाज़ा दोनों ने तलवारें फैंक दीं और कुश्ती लड़ने लगे। दौराने कुश्ती बतरीक कैदमून ने हज़रत शुर्हबील के शिकम में घूंसा मारा और ऐसा शिद्दत से घूंसा मारा कि हज़रत शुर्हबील चीत गिर पड़े। कैदमून छलांग लगा कर इन के सीना पर सवार हो गया और दोनों हाथों से हज़रत शुर्हबील का गला घोंटने लगा। बतरीक कैदमून का इरादा हज़रत शुर्हबील को गला घूंट कर हलाक कर देने का था। हज़रत शुर्हबील के ज़ईफ और लागर जिस्म पर बतरीक कैदमून के भैंसे जैसा वज़नी जिस्म भारी बोझ की शक्ल में वारिद था और मज़ीद बरां इस के हाथ के मज़बूत पन्जों की आहनी उंग्लियां हज़रत शुर्हबील की गर्दन के इर्द गिर्द लिपट गईं थीं। हज़रत शुर्हबील बिन हसना को अपनी शहादत का यकीन हो गया था। ब–ज़ाहिर बचने की कोई उम्मीद नहीं थी। ऐसे आलम में हज़रत शुर्हबील बिन हसना रदियल्लाहो तआला अन्हो ने ब–आवाज़े बुलन्द **"या गयासल मुस्तगीसीन"** पुकारा।

अचानक उसी वक्त रूमी लश्कर से एक शख्स निकला और बर्क रफ्तारी से घोड़ा दौड़ाता हुवा मैदान की तरफ आने लगा। उस सवार को अपनी तरफ आता देख कर हज़रत

शुर्हबील ने यह गुमान किया कि रूमी लश्कर का कोई काफिर सिपाही बतरीक कैदमून को घोड़ा पहुंचाने और उस की मदद करने आ रहा है। वह सवार आने वाहिद में वहां आ पहुंचा और घोड़े की पुश्त से जसत मार कर पा–प्यादा हो गया और बतरीक कैदमून पर तल्वार का वार कर के उस की गर्दन उड़ा दी और हज़रत शुर्हबील से कहा कि ऐ बन्दए खुदा ! उठ खड़ा हो। बे शक तेरे पास परवर्दगार फर्यादरस की मदद आ पहुंची है। हज़रत शुर्हबील बिन हसना फौरन उठ खड़े हुए और उस शख्स से फरमाया कि खुदा की कसम ! तेरे इस काम से ज़ियादह हैरत अंगेज़ काम मैं ने नहीं देखा क्यूं कि तू रूमी लश्कर से आया है और बजाए अपने बतरीक की इआनत करने उस को हलाक कर दिया। तू कौन है ? उस शख्स ने अपने चेहरा पर ढाटा बांधा था।

हज़रत शुर्हबील बिन हसना को उस शख्स ने अपना तआरुफ कराते हुए जो जवाब दिया, इस को अल्लामा वाकदी कुद्दिसा सिर्रहु की ज़बानी समाअत फरमाएं :

> **"उस ने कहा मैं वह बदबख्त रान्दा गया तलीहा बिन खोवैलिद अल–असदी हूं कि दा'वा किया था मैं ने नबुव्वत का बा'द रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के और झूट बांधा था मैं ने अल्लाह तआला पर और गुमान किया था मैं ने इस बात का कि मेरे ऊपर आस्मान से वही उतरती है।"**

(हवाला : फुतूहुश्शाम, अज़ : अल्लामा वाकदी, सफ्हा : 405)

झूटे मुद्दई-ए नबुव्वत

तलीहा का वाकेआ

तलीहा बिन खोवैलिद असदी के इलावा भी कई लोगों ने नबुव्वत का दा'वा किया था। जिन में (1) **मुसैलमा बिन समामा कज़्ज़ाब** (2) **मुसैलमतुल कज़्ज़ाब की बीवी सुजाह बिन्ते हारिस** और (3) **अस्वद उन्सी मन्सूब अनस बिन कदहज** को बहुत शोहरत हासिल हूई थी। इन सब को हज़रत खालिद बिन वलीद ने लश्कर कुशी कर के खत्म कर दिया था। तलीहा बिन खोवैलिद असदी ने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की रेहलत के बा'द नबुव्वत का दा'वा कर के खुरूज किया था और उरूज पाया था। उस का दा'वा यह था कि **हज़रत जिब्राईल** अलैहिस्सलातो वस्सलाम मेरे पास अल्लाह की तरफ से वही ले कर आते हैं। तलीहा बिन खोवैलिद ब-ज़रीए इस्तिदराज मख्फी बातें ज़ाहिर कर के लोगों को गुमराह किया करता था। मसलन सफर में पानी कहां मिलेगा वगैरा। अमीरुल मो'मिनीन हज़रत सय्यिदोना सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो ने हज़रत खालिद बिन वलीद को लश्कर का सरदार मुकर्रर फरमा कर तलीहा से जंग करने रवाना फरमाया। हज़रत खालिद बिन वलीद लश्कर ले कर **कबीलए तय** पहुंचे और **कोहे सलमा** व **कोहे अजाह** नाम की दो पहाड़ियों के दरमियान लश्कर का पड़ाव किया। गिर्द व नवाह में जो कबाइल इस्लाम पर काइम थे, वह भी इस्लामी लश्कर में आ मिले और सब ने मिल कर तलीहा के लश्कर से जंग की और तलीहा के लश्कर को शिकस्ते फाश हूई। तलीहा अपने मुईने खास ऐनिया बिन हसीन के हमराह अपनी बीवी को ले कर मुल्के शाम की तरफ भाग गया। हज़रत खालिद बिन वलीद से वह ऐसा डर गया था कि मुल्के हिजाज़ की सरहदें उबूर कर के मुल्के शाम में ही सुकूनत इख्तियार कर ली और कौमे कल्ब के एक गांव में अपनी अह्लिया के साथ रहने लगा। फिर उस को तौबा की तौफीक हूई और इस ने अमीरुल मो'मिनीन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक की खिदमत में हाज़िर हो कर तौबा करने का इरादा किया, लैकिन उस पर हज़रत खालिद बिन वलीद का ऐसा खौफ तारी हो गया था कि वह अमीरुल मोमिनीन हज़रत सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो की खिदमत में मदीना मुनव्वरा आने से भी डरता था। उस को यह खौफ लाहिक हो गया था कि अमीरुल मो'मिनीन की खिदमत में जाते वक्त भी अगर हज़रत खालिद बिन

वलीद ने मुझे रास्ते में कहीं भी देख लिया, तो देखते ही कत्ल कर डालेंगे। लिहाज़ा उस ने मदीना मुनव्वरा आने की हिम्मत नहीं की और मुल्के शाम में छुपा रहा और मुनासिब मौके का इन्तिज़ार करने लगा। हज़रत सिद्दीके अक्बर रदियल्लाहो तआला अन्हो के विसाल के बा'द तलीहा बिन खोवैलिद ने सुना कि अब हज़रत उमर फारूके आ'ज़म खलीफतुल मुस्लिमीन के मन्सब पर फाइज़ हुए हैं, तो उस का हौसला पस्त हो गया और मदीना मुनव्वरा जा कर तौबा करने का इरादा तर्क कर दिया।

जब हज़रत खालिद बिन वलीद इस्लामी लश्कर के साथ मुल्के शाम आए तो तलीहा बहुत घबराया। उस को यह अंदेशा था कि अगर हज़रत खालिद बिन वलीद को सिर्फ इत्ना ही पता चल गया कि मैं मुल्के शाम में पनाह गुज़ीं हूं, तो वह मुल्के शाम का चप्पा चप्पा छान मारेंगे और किसी न किसी तरह मुझे ढूंढ कर कत्ल कर डालेंगे। लिहाज़ा वह एक मकाम पर रहने के बजाए खाना बदोशों की तरह इस शहर से उस शहर मारा मारा फिरने लगा। उस ने अपना नाम और हुलिया भी बदल दिया था, ताकि उसे कोई पहचान न सके। तलीहा इस्लामी लश्कर की तमाम सर गुज़िश्त और सरगर्मी की मुकम्मल वाकिफीयत रखने लगा कि आज इस्लामी लश्कर ने फुलां किल्ला फतह कर लिया, आज फुलां शहर पर कब्ज़ा कर लिया, आज फुलां मकाम से फुलां मकाम की तरफ कूच की वगैरा वगैरा। जब तलीहा को पता चला कि इस्लामी लश्कर कैसारिया की तरफ गया हुवा है, तो वह कैसारिया जा कर कुस्तुनतीन के लश्कर में ब-हैसियते सिपाही शामिल हो गया और यह इरादा किया कि अगर मौका' मिल गया तो रूमी लश्कर के साथ मक्रो फरैब कर के इस्लामी लश्कर की कोई ऐसी खिदमत अन्जाम दे दूं कि मेरे माज़ी के गुनाहों का कफ्फारा हो जाए और इसी नज़रिये के तहत उस ने कातिबे रसूल हज़रत शुर्हबील बिन हसना की जान बचाई और कुस्तुनतीन के दाएं हाथ की हैसियत रखने वाले बतरीक कैदमून को कत्ल कर दिया था।

बतरीक कैदमून को कत्ल कर के तलीहा ने किसी अन्जान मकाम की तरफ भाग जाने का कस्द किया। हज़रत शुर्हबील बिन हसना ने फरमाया कि ऐ तलीहा कहां जाता है ? इस्लामी लश्कर की तरफ पलट। तलीहा ने कहा कि खुदा की कसम ! मैं वह मुजरिम हूं कि मुसल्मानों को मुंह दिखाने के काबिल नहीं। हज़रत शुर्हबील ने उस को फरार होने से रोका और फरमाया कि अल्लाह तआला तौबा कबूल फरमाने वाला है। अल्लाह की रहमत से ना-उम्मीद नहीं होना चाहिये। अल्लाह तआला ने इर्शाद फरमाया है कि **''व रह्मती वसिअत कुल्ला शयइन''** या'नी **''मेरी रहमत शामिल है हर चीज़ को''**। ऐ तलीहा हमारे आका व मौला, रसूले मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम का यह इर्शाद गिरामी

है कि **"अत्तौबतो तम्हो मा कब्लहा"** या'नी **"तौबा मिटा देती है उस चीज़ को जो इस के पहले हूई है।"** फिर हज़रत शुर्हबील बिन हसना ने तलीहा का बाज़ू थामा और फरमाया कि ऐ तलीहा ! मैं तुझ को जाने नहीं दूंगा। बल्कि इस्लामी लश्कर की तरफ ले जाऊंगा। तलीहा ने कहा कि मैं इस्लामी लश्कर की तरफ तो हरगिज़ नहीं आऊंगा क्यूं कि **खालिद बिन वलीद मुझ को देखते ही कत्ल कर डालेंगे।** हज़रत शुर्हबील ने फरमाया कि इस लश्कर के सरदार हज़रत अम्र बिन अल-आस हैं और हज़रत खालिद बिन वलीद इस लश्कर में शामिल नहीं। वह इस वक्त हज़रत अबू उबैदा के लश्कर के साथ ब-मुकाम हल्ब हैं। जब तलीहा को हज़रत खालिद बिन वलीद की अदम मौजूदगी की हकीकत मा'लूम हूई, तो उस को ढारस बंधी और वह हज़रत शुर्हबील बिन हसना के साथ इस्लामी लश्कर में आया। जब तलीहा हज़रत शुर्हबील बिन हसना के साथ इस्लामी लश्कर में आया तो किसी ने भी उस को नहीं पहचाना क्यूं कि उस ने अपने बड़े अमामा से ढाटा बांध कर अपना चेहरा छुपा रखा था। हालां कि सब ने उस को देखा था कि इसी शख्स ने हज़रत शुर्हबील की जान बचाई है और बतरीक कैदमून को कत्ल किया है। लिहाज़ा मुजाहिदों ने हज़रत शुर्हबील से पूछा कि हम पर एहसान करने वाला यह शख्स कौन है ? हज़रत शुर्हबील ने फरमाया कि यह तलीहा बिन खोवैलिद असदी मुद्दईए नबुव्वत है। मुजाहिदों ने कहा कि बड़ी खुशी की बात है कि इस को तौबा और रुजूअ की तौफीक हासिल हूई है।

हज़रत शुर्हबील बिन हसना ने मुजाहिदों से तलीहा बिन खोवैलिद का तआरुफ और मुलाकात कराने के बा'द उस को हज़रत अम्र बिन अल-आस के पास लाए। हज़रत अम्र बिन अल-आस ने तलीहा को तौबा और रुजूअ करने पर मुबारकबाद दी और मर्हबा कहा। और तलीहा ने जो काम अन्जाम दिया था, इस का शुक्रिया अदा किया। तलीहा ने हज़रत अम्र बिन अल-आस से कहा कि ऐ सरदार ! लैकिन हज़रत खालिद बिन वलीद मेरे इस काम से भी खुश न होंगे बल्कि अगर अब भी वह मुझे देखेंगे तो फौरन कत्ल कर देंगे। मुझे इन से बहुत डर लगता है। हज़रत अम्र बिन अल-आस ने तलीहा बिन खोवैलिद से फरमाया कि मैं तुम को एक तद्बीर बताना हूं कि इस तद्बीर से तुम हज़रत खालिद बिन वलीद की तल्वार की ज़र्ब से अमान हासिल करोगे। मेरा मश्वरा है कि आज तुम ने इस्लामी लश्कर की अज़ीम खिदमत अन्जाम देते हुए कातिबे रसूल हज़रत शुर्हबील की जान बचा कर बतरीक कैदमून को कत्ल किया है, इस काम की में तुम्हें सनद लिख दूं और इस सनद पर यहां मौजूद इस्लामी लश्कर के मुअज़्ज़ज़ सहाबए किराम के दस्तखत ब-तौर गवाही करवा देता हूं और तुम यह सनद ले कर अमीरुल मो'मिनीन हज़रत उमर फारूके आ'ज़म के पास चले

जाओ। अगर वह तुम्हारी तौबा पर ए'तमाद कर के तुम्हारी जान बख्श दें और अमान दे दें तो फिर खालिद बिन वलीद भी तुम से मुज़ाहिम न होंगे।

तलीहा बिन खोवैलिद ने हज़रत अम्र बिन अल-आस की तज्वीज़ को पसन्द किया। चुनान्चे हज़रत अम्र बिन अल-आस ने उस को एक सनद लिख दी और उस सनद पर अजिल्ल-ए सहाबए किराम के दस्तखत ब-तौर गवाही सब्त कराए और उस सनद को तलीहा बिन खोवैलिद को दे कर अमीरुल मो'मिनीन हज़रत उमर फारूके आ'ज़म की खिदमत में रवाना किया। तलीहा बिन खोवैलिद नख्ल से मदीना मुनव्वरा आया, तो पता चला कि अमीरुल मोमिनीन तो मक्क-ए मुअज़्ज़मा हज्ज का फरीज़ा अदा करने के बा'द रुके हुए हैं, लिहाज़ा तलीहा मदीना मुनव्वरा से मक्का मुअज़्ज़मा आया और अमीरुल मो'मिनीन हज़रत उमर फारूके आ'ज़म को खानए का'बा में इस हाल में पाया कि आप खान-ए का'बा का गिलाफ पकड़ कर गिर्या व ज़ारी कर रहे हैं और बारगाहे खुदावन्दी में तौबा व इस्तिग्फार करते हुए ज़ार व कतार रो रहे हैं। तलीहा भी आप के करीब जा कर खड़ा हो गया और ज़ार व कतार रोने लगा और खान-ए का'बा का गिलाफ थाम कर बुलन्द आवाज़ से पुकारा कि ऐ अमीरुल मोमिनीन मैं अपने साबिका गुनाहों से रब का'बा की जानिब सिद्क दिल से तौबा करता हूं और मुआफी चाहता हूं। अमीरुल मोमिनीन ने तलीहा की तरफ इल्तिफात करते हुए दर्याफ्त फरमाया कि तू कौन है ? तलीहा ने जवाब देते हुए अर्ज़ किया कि मैं रान्दए दरगाह और बदबख्त तलीहा बिन खोवैलिद अल-असदी हूं। हज़रत उमर फारूक इस का जवाब सुन कर मुस्कुराए और फरमाया कि ऐ तलीहा ! सख्ती हो तुझ पर, अगर मैं ने तुझ को मुआफ भी कर दिया तो कल कयामत के दिन अल्लाह तबारक व तआला को हज़रत **अक्काशा मुहसिन अल-असदी** को शहीद करने के मआमला में तू क्या जवाब देगा ? तलीहा ने अर्ज़ किया कि अक्काशा जैसे नैक बख्त शख्स को शहीद कर के मैं बदबख्त और बड़ा मुजरिम बना हूं और मैं उम्मीद रखता हूं कि फील्हाल मैं ने जो काम किया है, इस के सबब से अल्लाह तआला मेरी इस खता को बख्श दे। फिर तलीहा ने हज़रत अम्र बिन अल-आस का सिफारशी खत और हज़रत शुर्हबील बिन हसना की जान बचा कर बतरीक कैदमून को कत्ल करने की अज़ीम खिदमत की सनद अमीरुल मो'मिनीन की खिदमत में पैश की। हज़रत उमर फारूके आ'ज़म तमाम कैफियत मा'लूम कर के बहुत ही खुश हुए और फरमाया कि ऐ तलीहा ! बशारत हो कि अल्लाह तआला बड़ा बख्शने वाला और मेहरबानी करने वाला है।

फिर हज़रत उमर फारूके आ'ज़म ने उस को अज़ सरे नौ कल्मा पढ़ाया और तौबा व इस्तिग्फार कराने के बा'द उसे अपनी कयामगाह पर लाए और अपने साथ

ठहराया। अमीरुल मो'मिनीन हज़रत उमर फारूक जितने दिन मक्का मुअज़्ज़मा में कयाम पज़ीर रहे, इतने दिन तलीहा को अपने साथ ही ठहराया और जब आप मक्का मुअज़्ज़मा से मदीना तय्यबह वापस तशरीफ लाए, तो तलीहा को भी अपने साथ ले आए। तलीहा मदीना मुनव्वरा में हज़रत उमर फारूक के साथ चंद रोज़ ठहरा फिर हज़रत उमर ने तलीहा को इस्लामी लश्कर के साथ मुल्के फारस जेहाद के लिये भेज दिया।

तलीहा बिन खोवैलिद अल-असदी सिद्क दिल से अपनी तौबा पर काइम रहे और इस्लाम की अज़ीम और बे लौस खिदमात अन्जाम दीं। शैखे मुहक्किक, शाह **अब्दुलहक्क मुहद्दिस** देहलवी कुद्दिसा सिर्रहु फरमाते हैं कि **तलीहा बिन खोवैलिद ने अपनी बाकी ज़िन्दगी इस्लामी लश्कर के साथ दुश्मनाने इस्लाम के सामने जेहाद करने में बसर की और जेहाद करते हुए ''नहाविन्द'' की जंग में शहीद हुए।**

(हवाला : मदारिजुन नबुव्वत, जिल्द : 2, सफहा : 691)

कुस्तुनतीन जंग से फरार :-

जब बतरीक कैदमून और हज़रत शुर्हबील बिन हसना के दरमियान जंग हो रही थी, तब ही मूसलाधार बारिश शुरू हो गई थी और लम्हा ब लम्हा बारिश तैज़ और हवा के झोंकों में इज़ाफा होता गया। धूवां धार बारिश और तैज़ आंधी में खुले मैदान में ठहरना ना-मुम्किन था। रूमी लश्कर अपने कैम्प में जा कर खैमों में पनाह गुज़ीं हो गया, लैकिन इस्लामी लश्कर में सिर्फ चंद ही खैमे थे लिहाज़ा इस्लामी लश्कर ने करीब में वाकेअ **जाबिया** शहर में पनाह ली। जाबिया शहर पहले ही से सुलह में दाखिल था, लिहाज़ा इस्लामी लश्कर ने वहां जाना पसन्द किया। तीन शबाना रोज़ इसी तरह मुसल्सल शिद्दत से पानी बरसा और सारा शहर जल थल हो गया। चौथे दिन बारिश रुकी और आफ्ताब भी निकला। पस हज़रत अम्र बिन अल-आस ने इस्लामी लश्कर को ब-मुकाम नख्ल मैदाने जंग में जाने का हुक्म दिया। जब इस्लामी लश्कर नख्ल के मा'रकए जंग में आया, तो रूमी लश्कर का नाम व निशान न था। तमाम खैमे और जंग का साज़ो सामान ले कर **रूमी लश्कर नौ दो ग्यारह हो गया था।** रूमी लश्कर के फरार की वजह यह हूई थी कि बतरीक कैदमून के मारे जाने से कुस्तुनतीन का हौसला टूट गया था। उस को ऐसा महसूस हुवा कि गोया उस का दायां बाज़ू कट गया। क्यूं कि बतरीक कैदमून की शुजाअत और जंगी महारत पर उसे बहुत ए'तमाद व भरोसा था। कुस्तुनतीन ने ऐवाने लश्कर को बराए मश्वरा जमा करते हुए कहा हमारे लाखों के अज़ीम लश्कर ने यर्मूक की लड़ाई में मुंह की खाते हुए हज़ीमत उठाई है और मेरे वालिद हिरक्ल भी इन्ताकिया की लड़ाई दरमियान से छोड़ कर रात में कस्तुनतुनिया फरार हो

गए। इलावा अज़ीं मुझे इत्तिला' मिली है कि इस्लामी लश्कर दो तीन हिस्सों में मुन्कसिम हो कर मुतफर्रिक मकामात में गश्त कर रहा है। इन के दो बड़े सरदार अबू उबैदा और खालिद बिन वलीद अपने साथ बड़ा लश्कर ले कर हल्ब से कूच कर के कैसारिया की तरफ आ रहे हैं। अगर हम यहां नख्ल में मुसल्मानों के छोटे लश्कर से उलझने में मस्रूफ रहे और हमारी अदम मौजूदगी में इस्लामी लश्कर कैसारिया पर युरिश कर देगा, तो शहर पर कब्ज़ा कर लेना इन के लिये बहुत आसान है। नतीजा यह होगा कि कैसारिया पर मुसल्मान काबिज़ हो जाएंगे और कैसारिया हमारे हाथों से इस तरह निकल जाएगा कि हम शहर के बाहर ही रह जाएंगे और हमारा किल्ले में दाखिल होना भी गैर मुम्किन हो जाएगा। लिहाज़ा मुनासिब यह है कि हम जल्द अज़ जल्द कैसारिया पहुंच जाएं और शहर की हिफाज़त का इन्तिज़ाम करें। सब ने कुस्तुनतीन की राए से इत्तिफाक किया और बारिश रुकने की शब में ही **रूमी लश्कर मैदाने जंग से कैसारिया फरार हो गया।**

हज़रत अम्र बिन अल-आस ब-मुकाम नख्ल ठहरे और सूरते हाल से आगाह करते हुए हज़रत अबू उबैदा आमिर बिन जर्राह की खिदमत में खत इर्साल किया। हज़रत अबू उबैदा ने जवाब लिखा और हज़रत अम्र बिन अल-आस को हुक्म दिया कि मेरा खत मिलते ही कैसारिया पर कूच ले जाओ और मैं ''सूर, एक्का और तराबुलुस'' की जानिब रवाना होता हूं। हज़रत अम्र बिन अल-आस ने अपने लश्कर को कैसारिया की जानिब कूच करने का हुक्म दिया। इधर हज़रत अम्र बिन अल-आस नख्ल से कैसारिया की जानिब रवाना हुए और उधर हज़रत अबू उबैदा ने मुल्के शाम के साहिली इलाकों के शहर किल्ल-ए सूर, किल्ल-ए एक्का और किल्ल-ए तराबुलुस की जानिब रवाना होने का कस्द फरमाया।

अब तक फतह होने वाले मकामात

(1) अरेका (2) सह्ना (3) तदम्मुर (4) हूरान (5) बसरा (6) बैतुल लहिया (7) अजनादीन (8) दमिश्क (9) हिस्न अबील किद्स (10) जोसिया (11) हुमुस (12) शीरज़ (13) रुस्तन (14) हमात (15) कन्सरीन (16) बा'ल्बक (17) यर्मूक (18) बैतुल मुकद्दस (19) हल्ब (20) ए'ज़ाज़ (21) इन्ताकिया (22) बन्ज (23) बराआ (24) ताब्लीस (25) किल्ल-ए नज्म (26) कूरस (27) मुर्जुल कबाइल (28) नख्ल

फतहे किल्ला-ए तराबलुस

हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह सूर, एक्का और तराबुलुस की जानिब रवाना होने का कस्द फरमा रहे थे कि हज़रत युकना अब्दुल्लाह ने इन से अर्ज़ किया कि ऐ सरदार ! आप मुझ को इजाज़त मरहमत फरमाएं ताकि मैं आप से पहले लश्कर के तलीआ की हैसियत से साहिली इलाकों की जानिब जाउं और वहां के शहरों के रूमियों से मक्रो फरैब कर के इन पर गल्बा हासिल कर के इस्लाम की हत्तल इम्कान खिदमत अन्जाम दूं। हज़रत अबू उबैदा ने खुश हो कर हज़रत युकना की दरख्वास्त मन्ज़ूर फरमाली और दुआए फतह व नुस्रत देते हुए तलीआ की हैसियत से पहले रवाना होने की इजाज़त दे दी। हज़रत युकना जब हल्ब के हाकिम थे, तब इन के जो साथी और मुआविन थे, वह हज़रत युकना के साथ इस्लाम में दाखिल हो चुके थे, इन की ता'दाद चार हज़ार थी। इलावा अज़ीं हज़रत युकना ने रूमतुल कुबरा के हाकिम फलीतानूस और इन के तीन हज़ार साथियों को भी अपने साथ लिया। कुल सात हज़ार नौ मुस्लिम रूमी मुजाहिदों का लश्कर ले कर हज़रत युकना अब्दुल्लाह और हाकिम फलीतानूस हल्ब से साहिली इलाकों की तरफ हज़रत अबू उबैदा से पहले रवाना हुए।

❀ कैसारिया के लश्कर से हज़रत युकना की मुलाकात :-

हज़रत युकना अब्दुल्लाह और हज़रत हाकिम फलीतानूस के साथ जो सात हज़ार का इस्लामी लश्कर था इस के तमाम मुजाहिद नौ मुस्लिम रूमी थे और इन सब ने रूमियों का लिबास पहना था ताकि किसी को शक व शुब्हा न हो कि यह इस्लामी लश्कर है।

जब कुस्तुनतीन नख्ल का मैदाने जंग छोड़ कर कैसारिया वापस आया तो अह्ले तराबुलुस ने उस के पास अपना एलची भेजा और कहलाया कि इस्लामी लश्कर हमारे अतराफ में आ पहुंचा है और हम को अंदेशा है कि तराबुलुस पर हम्ला करेगा लिहाज़ा तराबुलुस शहर की हिफाज़त करने लश्कर की कुमुक फौरन रवाना करो। कुस्तुनतीन ने तीन हज़ार का लश्कर कैसारिया से तराबुलुस रवाना करने का हुक्म दिया और तराबुलुस से आए हुए नुमाइन्दा के साथ अह्ले तराबुलुस को खत भेजा कि तीन हज़ार बहादुर और शुजाअ

सवारों का लश्कर तराबुलुस की हिफाज़त के लिये रवाना कर रहा हूं। फिर उस नुमाइन्दा से कहा कि तुम इसी वक्त तराबुलुस जा कर वहां के बाशिन्दों को तीन हज़ार का लश्कर आने की खबर पहुंचा दो और मैं तुम्हारे पीछे लश्कर रवाना करता हूं। चुनान्चे वह नुमाइन्दा बर्क रफ्तार घोड़े पर सवार हो कर तराबुलुस पहुंचा और वहां पहुंच कर इत्तिला' दी कि तीन हज़ार का लश्कर हमारी कुमुक करने अन्करीब आ पहुंचेगा। यह खबर सुन कर अह्ले तराबुलुस मुत्मइन हो गए और कैसारिया से आने वाले तीन हज़ार सवारों के लश्कर का इन्तिज़ार करने लगे। तराबुलुस के नुमाइन्दा के रवाना होने के बा'द कुस्तुनतीन ने तीन हज़ार का लश्कर ब-जानिबे तराबुलुस रवाना किया और इस लश्कर पर बतरीक "जर्फास" को सरदार मुकर्रर किया। बतरीक "जर्फास" तीन हज़ार का लश्कर ले कर जब तराबुलुस शहर के करीब पहुंचा तो एक चरागाह में पड़ाव किया ताकि सफर की थकन दूर कर के थोड़ा आराम कर लें और जानवरों को चारा और पानी दे दें और यहां से तमाम सिपाहियों को कैसारिया के लश्कर का मख्सूस लिबास पहना कर और हथियारों से मुसल्लह और आरास्ता कर के तराबुलुस जाएं ताकि अह्ले तराबुलुस पर अपनी आराइश के ज़रीए रोअब और दबदबा डालें। बतरीक जर्फास का लश्कर अभी आ कर ठहरा ही था और जानवरों को चारा पानी भी न दिया था कि दफ्अतन हज़रत युकना अपने सात हज़ार साथियों के साथ उस चरागाह (मर्ज) में पहुंचे। बतरीक जर्फास अपने चंद सिपाहियों को साथ ले कर हज़रत युकना के लश्कर के पास आया ताकि इस लश्कर के मुतअल्लिक जांच पड़ताल करे।

बतरीक जर्फास ने करीब आ कर देखा कि तमाम मुजाहिदों ने रूमी लिबास पहना है तो उस को ढारस बंधी कि यह भी हमारे हम मज़हब रूमियों का लश्कर मा'लूम होता है। जर्फास ने हज़रत युकना से पूछा कि आप लोग कौन हैं ? और कहां जा रहे हैं ? हज़रत युकना ने जवाब दिया कि हम सब हल्ब, कन्सरीन, इन्ताकिया, ए'ज़ाज़, हमात, रुस्तन वगैरा मुतफर्रिक मकाम के लोग हैं। हम लोग अरबों से अपनी जान बचा कर भागे हैं और कैसारिया कुस्तुनतीन बादशाह के लश्कर में शामिल होने जा रहे हैं ताकि रूमी लश्कर की मदद करें और अरबों से इन्तिकाम लें। हज़रत युकना की बात सुन कर बतरीक सरदार जर्फास बहुत खुश और मानूस हुवा और अपनी हमदर्दी का इज़्हार करते हुए कहा कि मैं तुम पर किये गए ज़ुल्म व सितम के लिये रंजीदा हूं और बराबर का शरीके गम हूं। अरबों से भाग कर भी तुम बादशाह कुस्तुनतीन की कुमुक का जज़्बा और हौसला रखते हो और तुम्हारा यह

जज़्बा काबिले तहसीन है। तुम रात भर सफर की मसाफत तय कर के थक गए होगे, लिहाज़ा कुछ आराम करो और हमारी दा'वत कबूल कर के हमारे साथ खाना खाओ और फिर कल कैसारिया की जानिब रवाना हो जाना। हज़रत युकना ने उस का शुक्रिया अदा किया और उस की दा'वते तआम व इस्तिराहत को मन्जूर करते हुए बतरीक जर्फास के लश्कर के साथ ही पड़ाव किया।

बतरीक जर्फास हज़रत युकना अब्दुल्लाह और हाकिम फलीतानूस को अपने खैमे में लाया और एक दूसरे की खैरियत और अहवाल के गुफ्त व शनीद में मशगूल हुए। दौरान गुफ्तगू हज़रत युकना ने बतरीक जर्फास से कहा कि मैं आप से यह पूछना ही भूल गया कि आप कहां से आ रहे हैं और कहां तशरीफ ले जा रहे हैं। बतरीक जर्फास ने कहा कि हम तीन हज़ार सवारों को कुस्तुनतीन बादशाह ने कैसारिया से तराबुलुस की हिफाज़त के मुहिम पर भेजा है। हज़रत युकना ने खुशी का इज़्हार करते हुए कहा कि इस इलाके में अरबों की मुख्तलिफ फौजें गश्त कर रही हैं, लिहाज़ा तुम बहुत ही होशियार और चौकन्ना रहना और किसी किस्म की गफ्लत और बे एहतियाती मत करना। बतरीक जर्फास ने हज़रत युकना का मश्वरा देने पर शुक्रिया अदा किया। रात के वक्त जर्फास ने हज़रत युकना के लश्कर को अपने लश्कर के साथ खाना खिलाया और ज़ादे राह वगैरा से तोशा दान भी भर दिया। बतरीक जर्फास ने हज़रत युकना और हाकिम फलीतानूस को अपने खैमे में रात ठहरने को कहा और इन के सोने के लिये उमदा बिस्तर वगैरा लगवाए। जब थोड़ी रात गुज़री तो हज़रत युकना ने बतरीक जर्फास से कहा कि इस तरह गफ्लत बरतना और खैमे में आराम करना मुनासिब नहीं। हमारे लिये लाज़िम है कि रात में हम अतराफ के इलाके का गश्त करें और दुश्मन के हम्ले से अपने लश्कर की निगेहबानी करें। मेरा इरादा यह है कि तुम्हारे लश्कर के कुछ सिपाहियों को साथ ले कर थोड़े फास्ले तक गश्त कर आऊं। जर्फास ने हज़रत युकना की तज्वीज़ को बहुत पसन्द किया और पांच सौ सिपाहियों के साथ हज़रत युकना उस चरागाह से **"वादी बिन अहमर"** की तरफ रवाना हुए।

वादी बिन अहमर की तरफ जाने का हज़रत युकना का मक्सद यह था कि आज दिन के वक्त हज़रत युकना वादी बिन अहमर से जब गुज़रे थे तो इन्हों ने हज़रत हारिस बिन सलीम को दो सौ मुजाहिदों के साथ वहां देखा था कि वह अपने ऊंटों को चराते थे। हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह ने हज़रत हारिस बिन सलीम को साहिली इलाका की मुखबिरी के काम पर मुतअय्यन किया था। लिहाज़ा हज़रत युकना ने रात के वक्त जर्फास के सिपाहियों को ले

कर हज़रत हारिस बिन सलीम के गिरोह पर धावा बोल दिया और तमाम को गिरफ्तार कर के सब की सख्त मुश्कें बांध दीं। इन का सब सामान लूट लिया और ऊंट व दीगर जानवर भी अपने कब्ज़े में ले लिये फिर तमाम को ले कर हज़रत युकना बतरीक जर्फास के कैम्प में आए। हज़रत हारिस बिन सलीम को कैद कर के बतरीक जर्फास के कैम्प तक लाते वक्त अस्नाए राह मौका' पा कर हज़रत युकना ने हज़रत हारिस बिन सलीम से कहा कि तुम यह गुमान मत करना कि मैं दीने हक्क इस्लाम से मुन्हरिफ हो कर फिर नस्रानी मज़्हब इख्तियार कर के मुर्तद हो गया हूं, बल्कि तुम को कैद कर के रूमियों के साथ एक चाल चली है। लिहाज़ा तुम किसी किस्म की फिक्र मत करना और थोड़े अर्से तक कैद व बन्द की तक्लीफ बरदाश्त करना और आप को जो ज़हमत गवारा करनी पड़ी है इस की मा'ज़िरत चाहता हूं। हज़रत हारिस बिन सलीम हज़रत युकना की बात सुन कर बहुत खुश हुए और इन का शुक्रिया अदा किया और इस मिशन में काम्याब होने की दुआ दी।

वादी बिन अहमर का फास्ला जर्फास के लश्कर के कैम्प वाली चरागाह से बहुत कम था, लिहाज़ा आधी रात के वक्त ही हज़रत युकना दो सौ मुजाहिद कैदियों को ले कर बतरीक जर्फास के पास आए और कहा कि मैं ने तुम को जो राए दी थी वह कितनी फाइदा मन्द साबित हूई है। अरबों के लश्कर के दो सौ आदमी को कैद करने में हम को काम्याबी हासिल हूई है। हज़रत युकना का यह कारनामा देख कर बतरीक जर्फास बहुत खुश और मुतअस्सिर हुवा। कैदियों को कैद खाना वाले खैमा में भेज कर हज़रत युकना और बतरीक जर्फास जंग के तअल्लुक से गुफ्तगू करने बैठे। हज़रत युकना जब वादी बिन अहमर की तरफ रवाना हुए थे तो इन के जाने के बा'द बतरीक जर्फास ने खूब शराब पी थी और इस का नशा अभी तक उस पर गालिब था। उस की इस हालत का भर पूर फाइदा उठाते हुए हज़रत युकना ने बतरीक जर्फास से बहुत सारी खुफिया और राज़ की बातें मा'लूम कर लीं। इन बातों में से एक बात यह भी थी कि कुस्तुनतीन बादशाह ने अह्ले तराबुलुस को खत लिख कर हमारी आमद की इत्तिला' कर दी है और कल सुब्ह अह्ले तराबुलुस हमारा शानदार इस्तिक्बाल कर के हम को किल्ले में ले जाएंगे। बतरीक जर्फास की यह बात सुन कर हज़रत युकना का दिमाग मुतहर्रिक हुवा और इन्हों ने तराबुलुस का किल्ले आसानी से फतह करने की स्कीम बना ली।

अलस्सुब्ह बतरीक जर्फास तराबुलुस की तरफ और हज़रत युकना कैसारिया की जानिब रवाना हुए। दोनों लश्करों ने अपनी अपनी राह ली। थोड़ा फास्ला तय करने के बा'द

हज़रत युकना ने अपने साथियों को हुक्म दिया कि अपने घोड़े की बाग फेरो और बतरीक जर्फास के लश्कर पर हम्ला कर के घैर लो । बतरीक जर्फास के तीन हज़ार सिपाहियों को हज़रत युकना के लश्कर के सात हज़ार सिपाहियों ने चारों सम्त से घैर लिया । हज़रत युकना ने बतरीक जर्फास से फरमाया कि अगर अपनी और अपने साथियों की सलामती चाहते हो तो हथियार डाल दो और अपने आप को हमारे हवाले कर दो । बतरीक इस अचानक हम्ले से बौखला गया और उस का बदन लरज़ने लगा । थोड़ी दैर सोचने के बा'द जर्फास ने अपने लश्कर को हथियार डाल देने का हुक्म दिया । चुनान्चे हज़रत युकना ने इन सब को कैद कर लिया और कैद होने वाले जर्फास के सिपाहियों का लिबास उतरवा कर अपने तीन हज़ार साथियों को वह लिबास पहना दिया । और बाकी चार हज़ार साथियों को जर्फास के लश्कर के तीन हज़ार कैदी सुपुर्द कर के इन को एक घनी झाड़ी में छुपा दिया । फिर हज़रत युकना अपने तीन हज़ार साथियों को ले कर तराबुलुस के किल्ले की तरफ गए ।

हज़रत युकना के तीन हज़ार साथी कैसारिया के लश्कर के मख्सूस लिबास में आरास्ता थे और आप सुब्ह के वक्त ही तराबुलुस के किल्ले पर पहुंच गए । अह्ले तराबुलुस ने किल्ले की दीवार से देखा कि तीन हज़ार सिपाही कैसारिया के लश्कर का मख्सूस लिबास पहने हुए आ रहे हैं, तो वह खुशियां मनाने लगे और मर्हबा और खुश आमदीद की सदाएं बुलन्द करते हुए किल्ले का दरवाज़ा खोल कर इस्तिक्बाल के लिये किल्ले से बाहर आए और हज़रत युकना के लश्कर को इज़्ज़तो इकराम के साथ किल्ले में दाखिल किया और ब-शक्ल जुलूस शहर में गश्त करा कर शहर के बड़े कनीसा में ले आए । जहां शहर के तमाम बतारेका, रोउसा और अह्ल सर्वत इस्तिक्बाल करने के लिये जमा थे । अह्ले शहर ने हज़रत युकना का शानदार इस्तिक्बाल किया और मुलाकात की । तब हज़रत युकना ने अपने साथियों को हुक्म दिया और हज़रत युकना ने तमाम लोगों पर कब्ज़ा कर लिया ।

फिर हज़रत युकना मज्मा' के दरमियान खड़े हुए और अपना तआरुफ कराने के बा'द तक्रीर करते हुए फरमाया कि ऐ अह्ले तराबुलुस ! हम लोग अपने ही हाथों से बनाई सलीबों और तस्वीरों को सजदा करते थे और उस की ता'ज़ीम करते थे । इस पर ही बस नहीं बल्कि हम अल्लाह के लिये ज़ौजा और औलाद का भी फासिद अकीदा रखते थे । लैकिन अल्लाह तआला ने हमारे मुल्क की तरफ एक मुकद्दस कौम को भेजा और इस कौम के तवस्सुत से अल्लाह ने हम को हिदायत दी और हम को इस मुकद्दस नबीए अक्रम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम से मिला दिया । जिन का ज़िक्र इन्जील में है और जिन

की तशरीफ आवरी की हज़रत ईसा मसीह बिन मर्यम अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने बशारत दी । बे शक इस्लाम ही दीने हक्क है । इस्लाम का इत्तिबा' करने वाले नमाज़, रोज़ा, ज़कात और दीगर आ'माल सालेहा से मुत्तसिफ हो जाते हैं और हर बुराई और गुनाह से इज्तिनाब करते हैं । अपना माल और अपनी जान अल्लाह की राह में खर्च करते हैं । जब में दीने इस्लाम के इन महासिन से बे-खबर और गाफिल था और गुमराही के अंधेरे में भटकता था तब मैं ने इस्लामी लश्कर से तवील अर्सा तक जंग की थी, लैकिन जब मुझ पर हक्क वाज़ेह हुवा तो मैं ने अपना आबाई दीन तर्क कर दिया और इस्लाम कबूल कर के गुमराहियत से हिदायत और ज़ुल्मत से रौशनी की तरफ आया हूं । खुदा की कसम ! दीने इस्लाम वह सच्चा और रास्त दीन है कि जिस की हक्कानियत और सदाकत की गवाही तमाम अम्बिया व मुर्सलीन ने दी है । लिहाज़ा ऐ लोगों ! मैं दिल की गहराई और हमदर्दी के तकाज़ा से तुम को नैक मश्वरा देता हूं कि कुफ्र और शिर्क की बदी से बाज़ आ कर तौहीद और रिसालत की रास्ती अपना कर दुनिया और आखेरत की बेहतरी और भलाई इख्तियार करने के लिये दीने इस्लाम इख्तियार कर लो ।

हज़रत युकना अब्दुल्लाह की यह तक्रीर ऐसी मुअस्सिर साबित हूई कि अक्सर लोगों ने इस्लाम कबूल कर लिया और बकिया लोगों ने अदाए जिज़्या पर अमान हासिल की । फिर हज़रत युकना ने झाड़ी में पोशीदह अपने चार हज़ार साथियों को इत्तिला' भैजी कि वह सब के सब मअ जर्फास और उस के साथियों को ले कर तराबुलुस शहर में आ जाओ । जब वह आए तो हज़रत युकना ने इन पर इस्लाम पैश किया, लैकिन बतरीक जर्फास और उस के सिपाहियों ने इस्लाम कबूल करने से साफ इन्कार किया, लिहाज़ा इन तमाम की गर्दनें मारी गईं । तराबुलुस का किल्ला हज़रत युकना की तद्बीर से आसानी से मुसल्मानों के कब्ज़े में आ गया । हज़रत युकना ने हज़रत हारिस बिन सालिम का शुक्रिया अदा किया और इन के दो सौ साथियों से कैद में रहने की ज़हमत गवारा करने की मा'ज़रत चाही और इन को वादी बिन अहमर की तरफ रवाना किया और हज़रत हारिस बिन सलीम को हज़रत अबू उबैदा के नाम खत दिया और उस खत में किल्ल-ए तराबलुस की फतह की तमाम तफ्सील मर्कूम की ।

किल्ल-ए सूर पर यूरिश

तराबुलुस का किल्ले फतह करने के बा'द हज़रत युकना ने अपने साथियों को हुक्म दिया कि एक शख्स को भी किल्ले के बाहर न जाने दो और किल्ले के दरवाज़े पर कड़ी निगरानी रखो। चुनान्चे हज़रत युकना के साथियों ने किल्ले के दरवाज़े पर सख्त पहरा बिठा दिया और किसी शख्स को भी किल्ले के बाहर जाने की सख्त मुमानेअत कर दी। इस मुमानेअत की वजह यह थी कि हज़रत युकना किल्ल-ए सूर पर भी कब्ज़ा करना चाहते थे और इस के लिये तराबुलुस के समन्दर के घाट का फाइदा उठाना चाहते थे। तराबुलुस का किल्ला लबे साहिल वाकेअ था और तराबुलुस के घाट पर कश्तियों की ब-कस्रत आमद व रफ्त थी। तराबुलुस के घाट को बन्दरगाह की हैसियत हासिल थी। तराबुलुस का घाट हर कश्ती के लिये वुकूफ गाह और जाए इस्तिराहत था। लिहाज़ा जज़ीरए कैरस, जज़ीरए अफ्रीतश से ले कर कैसारिया, कस्तुनतुनिया वगैरा के मा-बैन आमद व रफ्त करने वाली हर कश्ती तराबुलुस के घाट पर ज़रूर ठहरती थी। हज़रत युकना ने तराबुलुस के घाट पर भी कब्ज़ा कर लिया और घाट पर सख्त निगरानी कर दी। चंद दिनों बा'द जज़ीरए कैरस और जज़ीरए अफ्रीतश से रवाना हो कर कैसारिया जाने वाली तक्रीबन पचास कश्तियों का काफला तराबुलुस के घाट पर आ कर ठहरा। इन तमाम कश्तियों में कुस्तुनतीन बादशाह का हथियार, गल्ला और दीगर सामान था, जो कैसारिया जा रहा था। घाट की निगरानी पर मामूर मुहाफिज़ों ने हज़रत युकना को इन पचास कश्तियों के हाल से आगाह किया। हज़रत युकना किल्ले से घाट पर आए। इन कश्ती वालों से मुलाकात की और खुश आमदीद कहा। और कैफियत मा'लूम की। कश्ती वालों ने हज़रत युकना को तमाम कैफियत बता दी कि बादशाह कुस्तुनतीन ने अरबों से जंग करने के लिये हथियार, गल्ला, और दीगर सामान कैसारिया मंगाया है और हम यह तमाम सामान ले कर कैसारिया जा रहे हैं। हज़रत युकना ने ब-ज़ाहिर खुशी का इज़्हार किया और कश्ती वालों को खिल्अत दी और किल्ले में ला कर उमदा खाने की ज़ियाफत की और अपने यहां मेहमान बना कर ठहराया। कश्तियों पर निगेहबानी

करने वाले चंद अश्खास ही थे। बाकी सब हज़रत युकना के यहां दा'वत खाने गए हुए थे। हज़रत युकना ने अपने साथियों को घाट पर भेज कर कश्ती के निगेहबानों को कैद कर लिया और तमाम कश्तियों पर कब्ज़ा कर लिया। कश्ती के निगेहबानों को कैद कर के किल्ले में लाए। इलावा अज़ीं दा'वत खाने आए हुए कश्ती बानों को भी पकड़ कर उन को कैद खाना में डाल दिया। फिर हज़रत युकना ने कश्तियों से गल्ला और दीगर सामान उतारा और किल्ले में रखवा दिया। सिर्फ हथियारों को कश्तियों में रहने दिया। और दूसरे ज़रूरी हथियार और ज़रूरी सामाने जंग कश्तियों में लादे और कश्तियों में मअ अपने साथियों के रवाना हो रहे थे कि उसी वक्त एक लश्कर को तेज़ रफ्तारी से घाट की तरफ आता देखा। थोड़ी दैर में वह लश्कर करीब आया। हज़रत खालिद बिन वलीद एक हज़ार सवारों के साथ तशरीफ ले आए थे। हज़रत युकना हज़रत खालिद के आने से बहुत खुश हुए। हज़रत खालिद को किल्ल-ए तराबलुस की फतह की तफ्सील सुनाई और अब किल्ल-ए सूर की तरफ कूच कर के फतह करने की तज्वीज़ बताई। हज़रत खालिद ने फरमाया कि अल्लाह तआला ज़रूर तुम्हारी ताईद और मदद फरमाएगा। फिर हज़रत युकना ने तराबुलुस शहर हज़रत खालिद को सुपुर्द किया और रात ही में अपने नौ सौ साथियों को पचास कश्तियों में सवार कर के किल्ल-ए सूर की जानिब रवाना हुए।

हज़रत युकना की किल्ल-ए सूर में आमद :-

तराबुलुस से कैसारिया जाते हुए दरमियान में किल्ल-ए सूर आता है। सूर का किल्ला इस तरह लबे साहिल वाकेअ था कि किल्ले की दीवार से कश्तियां साफ नज़र आती थीं और कश्ती वाला अगर ज़ौर से पुकारे तो उस की आवाज़ किल्ले के अन्दर पहुंचती थी। सूर का किल्ला निहायत मज़बूत और बुलन्द था और शहर भी हर किस्म की आराइश से आरास्ता था। वहां का हाकिम **"अरमुवील बिन किस्त"** नाम का बतरीक था, जो बादशाह कुस्तुनतीन का खास आदमी और लश्कर का पैश रौ था। हाकिम अरमुवील ने किल्ल-ए सूर में चार हज़ार जंगजू और दिलैर सिपाहियों की फौज जमा कर रखी थी। हज़रत युकना ने किल्ले के सामने लबे साहिल तमाम कश्तियां ठहराईं और नाकूस बजा कर शौर बुलन्द किया। वहां का दस्तूर था कि अगर कश्ती वाले को कोई ज़रूरत पैश आती या कोई कश्ती वाला किसी मुसीबत में मुब्तला होता, तो वह नाकूस बजा कर मदद तलब करता था। एक साथ पचास कश्तियों से नाकूस बजने से काफी शौर बुलन्द हुवा और किल्ले के हर मकान

में आवाज़ सुनाई दी। हाकिम अरमुवील ने फौरन अपने आदमियों को कश्तियों की कैफियत मा'लूम करने घाट की तरफ दौड़ाया। हाकिम अरमुवील के आदमी आए और कैफियत पूछी तो हज़रत युकना ने फरमाया कि हम सब जज़ीरए कैरस और जज़ीरए अफरीतश से हथियार और ज़रूरी सामाने जंग ले कर कुस्तुनतीन बादशाह को पहुंचाने कैसारिया जा रहे हैं, लैकिन तमाम कश्तियों में खाने पीने का सामान खत्म हो गया है और हम को ज़ादे राह और तौशा की ज़रूरत है। जब हाकिम अरमुवील को यह खबर मिली कि कश्ती वाले बादशाह को हथियार पहुंचाने की अह्म खिदमत अन्जाम देने जा रहे हैं, तो उस ने हुक्म दिया कि कश्ती के तमाम आदमियों को इज़्ज़त व एहतराम के साथ किल्ले में ले आओ, ताकि उमदा और लज़ीज़ खानों से इन की ज़ियाफत करें।

हाकिम अरमुवील के आदमी वापस हज़रत युकना के पास आए और हाकिम अरमुवील की जानिब से खाने की दा'वत पैश करते हुए कहा कि हाकिम अरमुवील आप की मुलाकात के मुश्ताक हैं, ताकि आप लोग जिस अह्म मुहिम पर जा रहे हो, इस का शुक्रिया अदा करे और तुम सब को खिल्अत दे। हज़रत युकना अपने साथियों को ले कर किल्ले में आए और कश्तियों पर चंद आदमियों को निगहेबानी करने के लिये छोड़ा और इन को ताकीद की कि अगर तुम्हें किल्ले के अन्दर से लड़ाई का शौर व गुल सुनाई दे तो तुम फौरन कश्तियां ले कर वापस तराबुलुस चले जाना और वहां जा कर हज़रत खालिद बिन वलीद को मुत्तलेअ कर देना और इन को अपने लश्कर के साथ किल्ल-ए सूर की तरफ रवाना कर देना।

हाकिम अरमुवील ने हज़रत युकना का इस्तिक्बाल किया और उमदा किस्म के खाने पैश कर के इन की ज़ियाफत की। खाने से फारिग होने के बा'द हाकिम अरमुवील ने हज़रत युकना से कहा कि एक रात यहां कयाम कर के आराम करें और मुझ को मेहमान नवाज़ी और खिदमत का मौका' दें। हज़रत युकना ने फरमाया कि तवील समुन्दरी मसाफत तय करने की वजह हम भी यह चाहते हैं कि एक रात आराम कर लें, लैकिन हमारे साथ कुस्तुनतीन बादशाह का ज़रूरी सामाने जंग और हथियार है। और हम ने सुना है कि कैसारिया की तरफ अरबों का लश्कर गया हुवा है। और बादशाह को न जाने कब हथियारों और सामाने जंग की ज़रूरत पैश आ जाए। अगर हम यहां ठहर गए और ज़रूरत के वक्त हम ने सामान नहीं पहुंचाया, तो बादशाह खफा होगा और हमारी सरज़निश करेगा। हाकिम अरमुवील ने कहा कि बादशाह कुस्तुनतीन के साथ मेरे गहरे मरासिम और दैरीना तअल्लुकात हैं और रोज़ाना उन की तरफ से मुझे पैगाम आता रहता है। फील्हाल सूरते हाल ऐसी नहीं कि एक रात ठहरने से जंगी मआमले

का कोई बड़ा नुक्सान हो। लिहाज़ा आप एक रात ब-हैसियते मेहमान ठहर जाओ और अगर तुम्हारी ताखीर की वजह बादशाह दर्याफ्त करे तो कह देना कि हाकिमे सूर अरमुवील ने एक रात इस्रार कर के रोक लिया था। मेरा नाम सुन कर बादशाह तुम्हें कुछ भी नहीं कहेगा बल्कि खुश होगा। हज़रत युकना रात ठहरने का ही इरादा रखते थे। हाकिम अरमुवील के इस्रार पर रात में ठहरना मन्ज़ूर कर लिया। हाकिम अरमुवील ने हज़रत युकना और इन के साथियों को अपने महल से थोड़े फास्ला पर वाकेअ एक बड़ी हवेली में ठहराया।

<u>हज़रत युकना की गिरफ्तारी</u> :-

हज़रत युकना हाकिम अरमुवील के मेहमान बन कर अपने साथियों के साथ हवेली में ठहरे और किल्ल-ए सूर को फतह करने की तद्बीर सोचने लगे। लैकिन तक्दीर में कुछ और ही लिखा हुवा था। हाकिम युकना के साथियों में हाकिम युकना का चचा का लड़का भी शामिल था, लैकिन इस्लाम में दाखिल होने के बा'द वापस गुमराहियत के अंधेरे की तरफ पलट गया था। रात में छुप कर हवेली से निकला और हाकिम अरमुवील के पास आया। हाकिम अरमुवील को आगाह करते हुए उस ने कहा कि ऐ सरदार ! तुम बहुत ही अंधेरे में हो। तुम ने जिस शख्स को दीने नस्रानिया का हामी और कुस्तुनतीन बादशाह का खैर ख्वाह समझ कर अपना मेहमान बनाया है, वह दीने मसीह का सब से बड़ा दुश्मन और अरबों के लश्कर का अह्म रुक्न किल्ल-ए हल्ब का माज़ी हाकिम युकना है। जो अपने साथियों के हमराह अपने आबाई दीन से मुन्हरिफ हो कर मुसल्मान हो गया है। फिर उस शख्स ने किल्ल-ए ए'ज़ाज़, इन्ताकिया, और किल्ल-ए तराबुलुस में हज़रत युकना ने रूमियों के खिलाफ जो किरदार अदा किया था, इस की तफ्सील सुनाई और हाकिमे सूर अरमुवील को मुतनब्बेह किया कि युकना तुम्हारे साथ भी मक्रो फरैब करने वाले हैं, लैकिन क्या मक्रो फरैब करने वाले हैं, वह मुझे नहीं मा'लूम। अलबत्ता वह ज़रूर कुछ न कुछ फरैब कर के तुम्हारे शहर पर काबिज़ हो जाएंगे। इलावा अज़ीं उस के नौ सौ साथी भी दीने नस्रानी से मुन्हरिफ हो कर मुसल्मान हो गए हैं और युकना के हर मक्रो फरैब में शरीक रहते हैं।

हाकिम अरमुवील उस शख्स की बात सुन कर और हज़रत युकना की हकीकत मा'लूम होने पर चौंक उठा और उसी वक्त लश्कर ले कर उस हवेली पर पहुंचा जहां हज़रत युकना अपने साथियों के साथ ठहरे हुए थे। रात का दो तिहाई हिस्सा गुज़र चुका था। हज़रत युकना और इन के साथी गहरी नींद में ख्वाबीदा थे, कि हाकिम अरमुवील के सिपाहियों ने

तमाम मुजाहिदों को दबोच कर गिरफ्तार कर लिया और मज़्बूत रस्सियों और ज़न्जीरों में जकड़ कर कैद खाना में डाल दिया। हज़रत युकना और इन के साथियों को कैद खाना में डालने के बा'द हाकिम अरमुवील ने एक हज़ार सिपाहियों को इन पर निगरानी के लिये मुतअय्यन कर दिया और आइन्दा कल दो-पहर के वक्त इन तमाम को एक हज़ार सिपाहियों की निगरानी में कुस्तुनतीन बादशाह के पास भेज देने का मन्सूबा बनाया, ताकि बादशाह इन को मुनासिब और इब्रतनाक सज़ा दे। फिर हाकिम अरमुवील कैद खाने पर आया और हज़रत युकना से कहा कि तुम ने बहुत खैल खैले मगर मेरे साथ तुम्हारे मक्रो फरैब का खैल तुम्हारा आखरी खैल है, बल्कि आज की शब भी तुम्हारी ज़िन्दगी की आखरी शब है। आइन्दा कल तुम्हारा नाम व निशान भी नहीं होगा। तुम अब किसी को ढूंढे भी नहीं मिलोगे। उस की यह धमकी सुन कर हज़रत युकना मुस्कुराए और उस की धमकी को कतअन खातिर में नहीं लाए। अल्लाह और अल्लाह के रसूल की ज़ात से इन को वालेहाना इश्को मुहब्बत थी और इन को यकीने कामिल था कि मेरा बाल भी बेका न होगा :

इस निशानी के जो सग हैं नहीं मारे जाते
हश्र तक मेरे गले में रहे पट्टा तेरा

(अज़ : इमामे इश्को मुहब्बत, हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत युकना पर मेरी धमकी का कुछ असर नहीं हुवा। वह घबराने के बजाए मुस्कुरा रहे हैं, यह देख कर हाकिम अरमुवील तिल्मिला उठा और खशमनाक लहजे में कहा कि अपनी अक्ल और ज़हानत पर गुरूर करते हुए शायद तुम मुस्कुरा रहे हो और यह गुमान करते हो कि किसी तद्बीर से तुम कैद से निकल जाओगे, लैकिन अब तुम्हारी सब राहें बन्द हो गईं हैं। इस्लामी लश्कर आ कर तुम को छूड़ा जाएगा, इस गलत फहमी में मत रहना। इस्लामी लश्कर को तुम्हारी मौत की खबर तक न होगी। हज़रत युकना ने हाकिम अरमुवील की बात पर कान तक नहीं धरा और उस की धमकी से बे नियाज़ व बे परवा हो कर अपने महबूब आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की मुहब्बत में शरशार हो कर ज़बाने हाल से गोया यह कह रहे थे कि :

ऐसा गुमा दे इन की विला में खुदा हमें
ढूंढा करें पर अपनी खबर को खबर न हो

(अज़ : इमामे इश्को मुहब्बत, हज़रत रज़ा बरैलवी)

हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान की लश्कर के साथ किल्ल-ए सूर आमद

दूसरे दिन एक अजीब मआमला पैश आया। हज़रत अम्र बिन अल-आस ने फतहे नख्ल की इत्तिला' का खत अमीनुल उम्मत हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह की खिदमत में भेजा था। इस के जवाब में हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत अम्र बिन अल-आस को हुक्म लिखा था कि मेरा यह खत मिलते ही फौरन कैसारिया की तरफ कूच करो, चुनान्चे हज़रत अम्र बिन अल-आस नख्ल से कैसारिया रवाना हुए थे, अस्नाए राह इन को इत्तिला' मिली कि करीब में किल्ल-ए सूर वाकेअ है और इस इलाके में किल्ल-ए सूर की बहुत अहमियत है। अगर किल्ल-ए सूर को फतह कर लिया जाए, तो यह अम्र रूमियों के लिये बाइसे खौफ होगा। लिहाज़ा हज़रत अम्र बिन अल-आस ने हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान की सरदारी में दो हज़ार सवार को किल्ल-ए सूर की तरफ भेजा और हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान से फरमाया कि तुम किल्ल-ए सूर को फतह कर के जल्द अज़ जल्द कैसारिया आ जाओ। इस दौरान में कैसारिया जा कर कैसारिया का मुहासरा करता हूं और तुम्हारा इन्तिज़ार करता हूं। चुनान्चे हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान दो हज़ार का लश्कर ले कर किल्ल-ए सूर की तरफ और बाकी मुजाहिदों को ले कर हज़रत अम्र बिन अल-आस कैसारिया की तरफ रवाना हुए।

हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान किल्ल-ए सूर आए और किल्ले के सामने ही पड़ाव किया। हाकिम अरमुवील बिन किस्त को इत्तिला' दी गई कि किल्ले के बाहर इस्लामी लश्कर ने पड़ाव किया है, लिहाज़ा वह किल्ले की दीवार पर चढ़ा और ब-गौर इस्लामी लश्कर का मुआइना किया, तो मा'लूम हुवा कि दो हज़ार का लश्कर है। हाकिम अरमुवील के पास किल्ल-ए सूर में कुल चार हज़ार का लश्कर था। जिस में से एक हज़ार को हज़रत युकना और इन के साथियों पर निगरानी करने कैद खाना पर मुतअय्यन किया था और आज दो-पहर के बा'द इन एक हज़ार सिपाहियों की निगरानी में हज़रत युकना और इन के साथी को बादशाह के पास भेजने का प्रोग्राम था, लैकिन आज सुब्ह ही किल्ले के बाहर इस्लामी लश्कर आ पहुंचा था, लिहाज़ा उस ने प्रोग्राम बदल दिया और बादशाह के पास कैदियों को भेजने का अमल मुअख्खर कर दिया और कैदियों की निगरानी पर मुतअय्यन एक हज़ार सिपाहियों को कैद खाना से बुला लिया और अपना चार हज़ार का लश्कर मुकम्मल कर लिया। हज़रत युकना और इन के साथियों को बड़े बड़े कमरों में बन्द कर के मुकफ्फल

कर दिया और अपने चचा ज़ाद भाई बासील बिन मिन्जाईल को निगरानी पर मुकर्रर कर के तमाम कुन्जियां इन के सुपुर्द कर दीं। हाकिम अरमुवील ने यह गुमान किया कि दो हज़ार के इस्लामी लश्कर से मुकाबला करने के लिये मेरा चार हज़ार का लश्कर काफी है। अरमुवील ने इस्लामी लश्कर की ता'दाद की किल्लत को देख कर इस्लामी लश्कर को हकीर जाना और उस का हौसला बढ़ा बल्कि किल्ले से बाहर निकल कर मुकाबला कर के इस्लामी लश्कर पर गल्बा पा लेने के ख्वाब देखने लगा और अपने खयाली ख्वाब को अमल में लाने के लिये वाकई उस ने किल्ले के बाहर निकल कर लड़ने की बे-वकूफी की।

हाकिम अरमुवील अपने चार हज़ार सवारों को हर तरह के सामाने जंग से आरास्ता कर के किल्ले के बाहर निकला और शहर की निगरानी और इन्तिज़ामी उमूर की तमाम जिम्मेदारी भी अपने चचा ज़ाद भाई बासील बिन मिन्जाईल के सुपुर्द कर के तमाम कुन्जियां इन के हवाले कर दीं। हाकिम अरमुवील अपना लश्कर ले कर जब किल्ले के बाहर आया तब दो हिस्सा दिन ढल चुका था और उस दिन जंग का इम्कान नहीं था, लिहाज़ा शाम तक वह अपने कैम्प के खैमे नसब करने में और कैम्प के लिये ज़रूरी उमूर की तैयारी में मशगूल रहा। यहां तक कि आफ्ताब गुरूब हुवा और आइन्दा कल अलस्सुब्ह जंग का आगाज़ करने का फैसला किया। हाकिम अरमुवील रात के वक्त किल्ले के बाहर ठहराए गए रूमी लश्कर में ही ठहरा और कैम्प में बहुत सी मश्अलें रौशन कर के अपनी शान व शौकत का इज़्हार किया। इलावा अज़ीं उस ने किल्ले के मुहाफिज़ों को कहला भेजा कि किल्ले की दीवार पर और दीवार के बाहर नीचे की तरफ भी ज़ियादह से ज़ियादह मश्अलें रौशन कर के हमारे शहर की शान व शौकत ज़ाहिर करो।

बासील बिन मिन्जाईल का खुफिया कबूले इस्लाम :-

बासील बिन मिन्जाईल कुतुबे साबिका और खुसूसन इन्जील के ज़बरदस्त आलिम थे। इन्हों ने **हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को **बुहैरा** नाम के राहिब के सौमआ में देखा था। जब हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की उम्र शरीफ सिर्फ बारह साल की थी, तब आप सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम अपने चचा **अबू तालिब** के साथ मुल्के शाम के सफर पर गए थे। मुल्के शाम के मशहूर शहर बसरा के करीब एक गांव में ईसाइयों का एक सौमआ (गिर्जा) था। इस सौमआ में **बुहैरा** नाम का एक राहिब रहता था। जो तौरेत, इन्जील और दीगर आस्मानी किताबों और मलाहिम का ज़बरदस्त आलिम था। उस का शुमार यहूद व नसारा के अहबार में होता था।

बुहैरा राहिब बड़ा ही ज़ाहिद और आबिद शख्स था और हर वक्त वह इबादत व रियाज़त में मश्गूल रहता था। अपने सौमआ से बहुत कम बाहर निकलता था, अलबत्ता मुल्के हिजाज़ से आने वाला कौमे अरब का कोई काफला उस के सौमआ के करीब ठहरता था, तो बुहैरा राहिब अपने सौमआ से बाहर निकल कर उस काफले के पास आता और काफिला के हर शख्स को ब-नज़्रे गाइर देखता। गोया उसे किसी की तलाश थी और वह किसी को खोज रहा था, लैकिन हर मरतबा वह मायूस और नाकाम हो कर अपने सौमआ में वापस लौटता। लैकिन 582 सन ईस्वी में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम कुरैश के काफला के साथ उस सौमआ के करीब आ कर ठहरे, तो सौमआ से निकल कर बुहैरा राहिब काफले के करीब आया और हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को देखा कि बादल ने आप पर साया किया है और जिस दरख्त से टेक लगा कर आप बैठे हैं, वह दरख्त सर सब्ज़ व शादाब हो गया है और हर हजर व शजर आप को सलाम कर रहा है। बुहैरा राहिब यह देख कर खुशी में झूम उठा और उस को यकीन हो गया कि अर्सए दराज़ से जिस की मुझ को तलाश थी और जो ज़ाते गिरामी मेरी ज़िन्दगी का मक्सद थी, वह मक्सद आज पूरा हो रहा है :

वो जो न थे तो कुछ न था, वो जो न हों तो कुछ न हो
जान हैं वो जहान की, जान है तो जहान है

(अज़ : - इमामे इश्को मुहब्बत, हज़रत रज़ा बरैलवी)

बुहैरा राहिब ने पूरे काफले कि दा'वत की, काफले के तमाम लोग बुहैरा राहिब के सौमआ में गए, लैकिन हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम तशरीफ नहीं ले गए। बुहैरा ने काफले वालों से पूछा कि सब काफले वाले आ गए या कोई शख्स बाकी भी है ? अह्ले काफला ने कहा कि एक नौ-जवान नहीं आया। वह कयाम गाह पर सामान और जानवरों की निगहेबानी फरमाते हैं। लिहाज़ा बुहैरा कयाम गाह की तरफ आया और फिर यही देखा कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम पर बादल ने साया किया है और जिस दरख्त से आप टेक लगा कर जल्वा फरमा थे, वह दरख्त हरा भरा हो गया है। उस दरख्त के मुतअल्लिक बुहैरा राहिब ने कुतुबे साबिका में पढ़ा था कि इस दरख्त के नीचे नबी आखिरुज़् ज़मान सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम तशरीफ फरमा होंगे, तब यह खुश्क और बे-बर्ग व बार दरख्त शादाब और फल दार हो जाएगा। चुनान्चे ऐसा ही हुवा था। फिर बुहैरा राहिब हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को अपने सौमआ

में लाया। बुहैरा राहिब ने अह्ले काफला से पूछा कि इस ज़ाते गिरामी का नाम क्या है ? बताया कि **मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह** (सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम व रदियल्लाहो तआला अन्हो) फिर बुहैरा ने पूछा कि किया इन के वालेदैन ने इन्तिकाल फरमाया है और इन के दादा और चचा ने इन की किफालत की है ? काफले वालों ने कहा कि हां ! ऐसा ही हुवा है। फिर बुहैरा राहिब ने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम से चंद अहम सवालात किये, जिन का आप ने तसल्ली बख्श जवाबात अता फरमाए। फिर बुहैरा राहिब ने शान–ए अक्दस पर उस **मुहरे नबुव्वत** को भी देखा, जिस का ज़िक्र उस ने आस्मानी किताबों में पढ़ा था। बुहैरा राहिब ने मुहरे नबुव्वत को बोसा दिया और आप पर ईमान लाया। फिर बुहैरा ने काफले वालों से कहा कि ऐ अह्ले कुरैश ! **यह वही नबी आखिरुज़ ज़मान हैं, जिन की बशारत हज़रत मसीह अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने दी है।** खुश नसीब है वह शख्स जो इन पर ईमान लाएगा और इन की इत्तिबा' करेगा।

(1) **मदारिजुन नबुव्वत**, ऊर्दू तर्जुमा, अज़ : शैखे मुहक्किक शाह अब्दुलहक्क मुहद्दिस देहलवी, कुद्दिसा सिर्रहु, जिल्द : 2, सफहा : 41

(2) **फुतूहुश्शाम**, अज़ : अल्लामा वाकदी, सफहा : 415

फिर बुहैरा राहिब ने हज़रत अबू तालिब से कहा कि यहूद व नसारा इन के जानी दुश्मन होंगे, लिहाज़ा आप इन की खूब हिफाज़त फरमाएं। यह वाकेआ बहुत तवील है। हम ने इख्तिसारन इस वाकेआ का मा–हसल बयान कर दिया है।

मज़कूरा वाकेआ जब बुहैरा राहिब के सौमआ में पैश आया था, तब बासील बिन मिन्जाईल भी वहां मौजूद थे, क्यूं कि वह बुहैरा राहिब के इल्म के मो'तरिफ और उस की बुज़ुर्गी के मो'तकिद थे। लिहाज़ा वह अक्सर व बैशतर बुहैरा राहिब के सौमआ में आया करते थे और बुहैरा राहिब से उलूम व इरफान की बातें सुना करते थे। जब हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम कुरैश के काफले में **हज़रत अबू तालिब** के साथ बुहैरा राहिब के सौमआ में आए थे, तब इत्तिफाक से बासील बिन मिन्जाईल भी वहां मौजूद थे और इन को भी हुज़ूरे अक्दस, जाने आलम व जाने ईमान सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की ज़ियारत का शरफ हासिल हुवा था। बुहैरा राहिब ने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के साथ जिस अकीदत व मुहब्बत का सुलूक किया था और हुज़ूरे अक्दस के लिये जो कहा था, वह बासील बिन मिन्जाईल ने अपनी आंखों से देखा था और अपने कानों से सुना था। और बासील बिन मिन्जाईल का पुख्ता ए'तमाद था कि बुहैरा राहिब हक्क बात के सिवा कुछ नहीं कहता है। लिहाज़ा वह भी उसी वक्त से हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो तआला

अलैह व सल्लम के गरवीदा हो गए थे और आप की अज़्मत व नबुव्वत और रिसालत के काइल हो गए थे, लैकिन इन्हों ने अपना मआमला पोशीदह रखा था। और अपने दिल का हाल किसी पर भी ज़ाहिर नहीं किया था।

हज़रत युकना की कैद से आज़ादी :-

जब हज़रत युकना और इन के साथियों को हाकिमे सूर अरमुवील बिन किस्त ने कैद कर लिया और फिर कैदियों का एहाता बासील बिन मिन्जाईल के सुपुर्द कर के चार हज़ार का लश्कर ले कर हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान के लश्कर से लड़ने किल्ले के बाहर चला गया, तब बासील बिन मिन्जाईल ने अपने दिल में कहा कि कसम है खुदा की ! दीने इस्लाम ही वह सच्चा दीन है, जिस की सदाकत व हक्कानियत की गवाही और बशारत **हज़रत ईसा मसीह** अला नबिय्येना अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने दी है। लिहाज़ा अगर में इस दीन हक्क के मुजाहिदों को कैद से रिहा कर दूं, तो अल्लाह तबारक व तआला मेरी बख्शिश और मग्फिरत फरमा देगा। लिहाज़ा हज़रत बासील हज़रत युकना और इन के साथियों को कैद से रहा कर देने के इरादे से रात के वक्त इन के पास आए। और हज़रत युकना के ईमान और इस्तिकामत अलद्दीन का इम्तिहान लेने की गरज़ से कहा कि ऐ बुज़ुर्ग बतरीक ! तुम दीने नस्रानिया के सफे अव्वल के हामी और मददगार थे। दीने मसीह की खातिर तवील अर्सा तक इन अरबों से ब–मुकाम हल्ब जंग भी की और पानी की तरह अपना माल खर्च किया। फिर अचानक तुम को क्या हो गया कि अपने बाप दादा के दीन को तर्क कर के तुम ने अरबों का दीन इख्तियार कर लिया। हालां कि मुल्के शाम के रूमी अवाम और रूमी सलातीन तुम को अपनी कुव्वत और पुश्त पनाह गरदानते थे और अब मआमला यह हो गया है कि रूमी अवाम व सलातीन तुम को दीने नस्रानिया का एक नम्बर का दुश्मन और अरबों के लश्कर का मुआविन समझते हैं।

हज़रत युकना ने जवाब देते हुए फरमाया कि ऐ बासील ! जिस तरह तुम पर अम्र हक्क ज़ाहिर हुवा है, इसी तरह मुझ पर भी अम्र हक्क ज़ाहिर हुवा और मैं ने अम्रे हक्क को इख्तियार कर के दीने इस्लाम कबूल कर लिया और अब यही आरज़ू है कि मरते दम तक दीने इस्लाम की खिदमत करूं और अपने आका व मौला, रसूले मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की मुहब्बत में अपनी जान कुरबान करूं और कब्र में चैन की नींद सौ जाउं :

खाक हो कर इश्क में आराम से सोना मिला
जान की अक्सीर है उल्फत रसूलल्लाह की

(अज़ : इमामे इश्को मुहब्बत, हज़रत रज़ा बरैलवी)

बासील बिन मिन्जाईल ने हज़रत युकना से दर्याफ्त किया कि तुम ने अभी जो कहा कि "**जिस तरह तुम पर अम्र हक़ ज़ाहिर हुवा, इसी तरह मुझ पर भी अम्र हक़ ज़ाहिर हुवा ।**" तुम्हारे इस कौल से क्या मुराद है ? हज़रत युकना मुस्कुराए और इन्हों ने जो जवाब दिया वह अल्लामा वाकदी की ज़बानी समाअत फरमाएं :

> **"पस कहा युकना ने कि ऐ बासील ज़ाहिर हूई मेरे वास्ते अम्र हक़ से वह चीज़ जो ज़ाहिर हूई तुम को । पस पहचाना तुम ने इस को और पुकार कर कहता था मुझ से गैब का पुकारने वाला कि ब-तह्कीक अल्लाह तआला ने हिदायत की है बासील को ब-जानिबे दीने इस्लाम के और सब ता'रीफ साबित है वास्ते उस अल्लाह के जिस ने हिदायत की तुम को और हम को और छुड़ाया उस ने हम को रास्ते हलाकी से और किया उस ने हम को अपने दीन के लोगों से और आसान किया उस ने हमारी रिहाई को तुम्हारे हाथों पर ।"**

(हवाला : फुतूहुश्शाम, अज़ : अल्लामा वाकदी, सफहा : 415)

अल-हासिल ! हज़रत युकना ने बासील बिन मिन्जाईल का पौशीदह हाल ज़ाहिर कर दिया कि तुम दीने इस्लाम में दाखिल हो चुके हो और इस वक्त तुम हम को कैद से रिहा करने के नैक इरादे से आए हो ।

हज़रत युकना की यह बात सुन कर बासील बिन मिन्जाईल का यकीन व अकीदा मज़ीद पुख्ता हो गया और इन्हों ने फरमाया कि **गफ्लत का पर्दा तो मेरे दिल से उसी वक्त चाक हो गया था, जब मैं ने अशरफुल मख्लूकात व सय्यदुल मौजूदात सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम का दीदार बुहैरा राहिब के सौमआ में किया था ।** इन के अज़ीम मो'जिज़ात देख कर मैं बहुत मुतअज्जिब हुवा था । जब बुहैरा राहिब की ज़बानी मैं ने यह सुना कि खुदा की कसम ! यह वही नबी आखिरुज़ ज़मान सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम हैं, जिन की बशारत हज़रत मसीह अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने दी है और जो इन की तस्दीक कर के, इन पर ईमान लाएगा और इन का इत्तिबा' करेगा, उस के लिये नजात है, तो मैं ने उसी वक्त इन की तस्दीक की थी और इन पर ईमान लाया था । लेकिन मुझे एक बात का बहुत अफ्सोस है कि इन की खिदमत में फिर हाज़िर न हो सका । इस की वजह यह हूई कि बुहैरा राहिब के यहां से मैं कस्तुनतुनिया चला गया । वहां कुछ अर्सा ठहरा, फिर वहां से कैसारिया गया और कैसारिया में सुकूनत इख्तियार की । जब में कैसारिया में सुकूनत पज़ीर था, तब मैं ने सुना कि मुल्के हिजाज़ में नबी आखिरुज़ ज़मान **हज़रत मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुलमुत्तलिब** (सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम व अला आबाइहि व उम्महातेहि

व अज़्वाजेहि व आलेहि व अस्हाबेहि अज्मईन) ज़ाहिर हुए हैं और इन्हों ने तौहीद का पर्चम बुलन्द फरमा कर दुनिया को दीने इस्लाम की दा'वत दी है, लेकिन इन की कौम ने इन को सताया है और वह मक्का मुअज़्ज़मा से हिज्रत कर के मदीना मुनव्वरा आ गए हैं । मैं बराबर इन के हाल और अख्बार पूछता रहा और वह अल्लाह तआला की मदद से गालिब होते रहे, यहां तक कि अल्लाह तआला ने इन को अपने पास बुला लिया । फिर मुतवल्ली और खलीफा हुए **हज़रत अबू बक्र सिद्दीक** (रदियल्लाहो तआला अन्हो) और इन्हों ने थोड़े अर्से में ही अपने लश्कर को मुल्के शाम रवाना फरमाया । फिर वह भी इन्तिकाल फरमा गए । इन के बा'द **हज़रत उमर बिन खत्ताब** (रदियल्लाहो तआला अन्हो) मुतवल्ली और खलीफा हुए और इन्हों ने मुल्के शाम के बहुत से शहरों को फतह किया । फिर जब वह बैतुल मुक़द्दस आए, तो मैं उम्मीद करता था कि शायद वह साहिली इलाकों की तरफ तशरीफ ले आएंगे, लेकिन वह बैतुल मुक़द्दस से ही वापस चले गए । और इत्तिफाक से तुम यहां आ गए ।

हज़रत युकना ने बासील बिन मिन्जाईल से पूछा कि अब तुम क्या इरादा रखते हो । बासील ने कहा कि मैं जिस नबी का कल्मा पढ़ता हूं और जिन की अज़्मत व मुहब्बत अपने दिल में मौज-ज़न पाता हूं, इन की बारगाहे आली में हाज़िर हो कर इन की खिदमत करने की सआदत से महरूम रहा हूं, लिहाज़ा अब कम अज़ कम नबी आखिरुज़ ज़मां रसूले मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के दीने पाक की खिदमत करने के लिये अपनी जान खतरे में डाल कर मर मिटने का जो मुजाहिदीन जज़्बा रखते हैं, इन की खिदमत और इआदत तो ज़रूर कर सकता हूं और यह खिदमत अन्जाम देते हुए मुझे मर मिटना भी पड़े, तो यह मेरी सआदत होगी :

लब पे किस मुंह से गम उल्फत लाएं,
क्या बला दिल है अलम जिस का सुनाएं

हम तो उन के कफे पा पर मिट जाएं,
इन के दर पर जो मिटा करते हैं

(अज़ : इमामे इश्को मोहब्बत, हज़रत रज़ा बरैलवी)

फिर बासील बिन मिन्जाईल ने कहा कि अब मैं अपने ईमान को अलल ऐ'लान ज़ाहिर कर के अपने बाप दादा के बातिल दीन की खुल्लम खुला मुखालिफत कर के दीन हक़ की ऐ'लानिया मदद करना चाहता हूं । यह कह कर इन्हों ने हज़रत युकना और इन के साथियों को रिहा कर दिया ।

फतहे किल्ल-ए सूर

हज़रत बासील बिन मिन्जाईल ने हज़रत युकना और इन के साथियों को रिहा करने के बा'द इन को हथियारों के खज़ाने पर ले आए और तमाम को हथियारों से मुसल्लह कर दिया। फिर हज़रत बासील ने हज़रत युकना को मुत्तलेअ किया कि किल्ले के बाहर दो हज़ार का इस्लामी लश्कर आया हुवा है। हाकिम अरमुवील अपने चार हज़ार सिपाहियों और शहर के तमाम मर्दों को ले कर किल्ले के बाहर मुकाबला करने गया हुवा है। इस वक्त शहर में बुढ्ढे, बचे और औरतों के सिवा कोई मर्द नहीं। शहर के तमाम मुह्कमात और शहर पनाह के दरवाज़ों की कुन्जियां मेरे पास हैं, लिहाज़ा अलस्सुब्ह तुम हम्ला कर के शहर का कब्ज़ा कर लो।

सुब्ह होते ही हज़रत युकना अपने नौ सौ मुजाहिदों के साथ तहलील व तक्बीर की सदा बुलन्द करते हुए किल्ले की दीवार पर चढ़ गए और किल्ले की निगरानी पर मुकर्रर चंद रूमी सिपाहियों को मार गिराया और किल्ले की दीवार से फलक शगाफ नारए तक्बीर बुलन्द किया। नारए तक्बीर की सदा बुलन्द करते हुए मुजाहिदों को हाकिम अरमुवील ने किल्ले की दीवार पर देखा तो समझ गया कि हज़रत युकना और इन के साथी कैद खाना से रिहा हो गए हैं और शहर पर कब्ज़ा कर लिया है। लिहाज़ा उस का हौसला टूट गया और उस के पाऊं तले ज़मीन सरक गई। थोड़ी दैर बा'द हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान के लश्कर ने हाकिम अरमुवील के लश्कर पर यल्गार कर दी और बड़ी दिलैरी से शम्शीर ज़नी की। रूमी सिपाही हज़ीमत उठा कर किल्ले की दीवार की तरफ पीछे हटने लगे। हज़रत युकना और इन के साथी किल्ले का दरवाज़ा खोल कर मैदान में आ गए और किल्ले की दीवार की सम्त हटने वाले रूमी सिपाहियों को तलवारों की नौक पर लेना शुरू किया। रूमी लश्कर बुरी तरह से फंस गया। आगे से हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान के लश्कर का शदीद हम्ला और पीछे से हज़रत युकना की फौज की शदीद ज़र्बें, रूमी लश्कर बीच में फंसा था। थोड़ी ही दैर में रूमी लश्कर में खौफ और इन्तिशार फैल गया और रूमी लश्कर के सिपाहियों के कदम उखड़ गए। पीठ दिखा कर राहे फरार इख्तियार की, लैकिन भाग कर कहां जाएं ? सामने की तरफ

हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान का लश्कर रास्ता रोक कर खड़ा था और किल्ले के दरवाज़ा पर हज़रत युकना की फौज मौजूद थी। लिहाज़ा दाएं बाएं जहां भी मौका' मिला भागना शुरू किया। मुजाहिदों ने मफरूर रूमियों का तआकुब किया और जिस को पाया तहे तैग किया। रूमी लश्कर का एक भी सिपाही ज़िन्दा न बचा।

इस्लामी लश्कर के मुजाहिदों ने रूमी लश्कर के कैम्प पर कब्ज़ा कर लिया, तमाम खैमों और इन में जो मालो अस्बाब था, सब गनीमत में ले लिया। फिर इस्लामी लश्कर शान व शौकत से शहर में दाखिल हुवा अह्ले शहर ने **''लफ़ून लफ़ून''** पुकार कर अमान तलब की, लिहाज़ा हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ्यान ने अह्ले शहर को अमान दी और तमाम अह्ले शहर को जमा कर के इन पर इस्लाम पैश किया। अह्ले शहर की अक्सरियत ने इस्लाम कबूल किया और कुछ लोगों ने अपने आबाई दीन पर रहना पसन्द किया, लैकिन जिज़्या अदा करना मन्ज़ूर किया, लिहाज़ा इन को अदाए जिज़्या की शर्त पर सुलह व अमान में दाखिल किया गया। इस तरह मुल्के शाम का एक अहम किल्ला फतह हो कर मुसल्मानों के ज़ेरे नगीं आया और किल्ल-ए सूर पर इस्लाम का पर्चम लहराने लगा।

फतहे कैसारिया

पिसरे हिरक्ल कुस्तुनतीन को किल्ल-ए सूर मुसल्मानों के कब्ज़े में आने की खबर मिली, तो उसे अपनी हलाकत का यकीन हो गया। उस को यकीन के दर्जा में मा'लूम हो गया कि इश्के रसूल से सरशार कौमे मुस्लिम का मुकाबला करना गैर मुम्किन है। लिहाज़ा उस ने अपने बाप के नक्शे कदम पर चलते हुए राहे फरार इख्तियार करना मुनासिब जाना। किल्ले के सद्र दरवाज़ा पर हज़रत अम्र बिन अल-आस के लश्कर का पड़ाव था। लिहाज़ा समन्दर की तरफ से फरार होना मुनासिब समझा। अपने चंद मो'तमद आदमियों को खुफिया रास्ते से समन्दर के घाट पर भेज कर चंद कश्तियां तैयार रखवाईं। फिर अपना खज़ाना, नक्द, सोना, जवाहिरात और जितना भी कीमती सामान था, वह तमाम बड़े बड़े सन्दूकों में भरा और अपने अह्लो अयाल को ले कर खुफिया रास्ते से निकल कर समन्दर के घाट पर आया और कश्तियों में सवार हो कर रात ही में अपने आबाई शहर कस्तुनतुनिया भाग गया।

कुस्तुनतीन के फरार होने की खबर न अह्ले शहर को हूई, और न ही इस्लामी लश्कर को, सुब्ह अह्ले शहर को मा'लूम हुवा कि बादशाह कुस्तुनतीन बुज़दिलों की तरह भाग गया, तो अह्ले शहर ने जमा हो कर मश्वरा किया कि मुनासिब यही है कि शहर के चंद मुअज़्ज़ज़ लोग इस्लामी लश्कर के पास जा कर सुलह कर के शहर के लिये अमान हासिल कर आएं। चुनान्चे चंद लोगों का एक वफ्द किल्ले के दरवाज़ा से बाहर निकला। हज़रत अम्र बिन अल-आस के लश्कर का कैम्प किल्ले के दरवाज़ा के बिल्कुल सामने ही था। जब किल्ले का दरवाज़ा खुलने का शौर हुवा तो हज़रत अम्र बिन अल-आस ने यह गुमान किया कि शायद रूमी लश्कर किल्ले से निकल कर लड़ने आ रहा है, लिहाज़ा इन्हों ने मुजाहिदों को हथियार संभालने का हुक्म दिया। लेकिन थोड़ी दैर के बा'द तमाम मुजाहिद के हैरत की इन्तिहा न रही। किल्ले से लश्कर के बजाए रोउसाए शहर का वफ्द बर आमद हुवा। अह्ले कैसारिया का वफ्द हज़रत अम्र बिन अल-आस के पास आया और सुलह की दरख्वास्त की। हज़रत अम्र बिन अल-आस ने इन की दरख्वास्त मन्ज़ूर फरमाई और दो लाख दिर्हम और तमाम वह चीज़ें जो कुस्तुनतीन अपने साथ नहीं ले जा सका, मसलन कपड़े, बर्तन, जानवर, हथियार,

मालो अस्बाब वगैरा इस्लामी लश्कर को सुपुर्द करने की शर्त पर सुलह कर ली और अदाए जिज़्या की शर्त पर इन को अमान दी गई। हज़रत अम्र बिन अल-आस ने अह्ले कैसारिया को सुलह व अमान की दस्तावेज़ लिख दी और साले आइन्दा से हर बालिग मर्द पर चार दीनार का जिज़्या मुकर्रर किया। फिर इस्लामी लश्कर किल्ल-ए कैसारिया में दाखिल हुवा और इस तरह कैसारिया ब-ज़रीए सुलह फतह हुवा।

कैसारिया फतह होने की खबर सुन कर अतराफ के शहर व दैहात रमला, रनिया, एक्का, याफा, अस्कलान, गज़्ज़ा, ताब्लीस, लिब्रिया, बैरुत, जबला और लाज़िकिया के लोग हज़रत अम्र बिन अल-आस के पास आए और अदाए जिज़्या की शर्त पर सुलह की और तमाम शहर फतह हुए। हज़रत अम्र बिन अल-आस ने हज़रत बासील बिन औन बिन मुसल्लमा को एक सौ सहाबए किराम के साथ किल्ल-ए सूर भेजा और इन को किल्ल-ए सूर का हाकिम मुकर्रर किया।

कैसारिया की फतह ब-रोज़ बुध, वस्त अश्रए माह रजब 19 सन हिजरी में हूई थी और इस तरह अल्लाह तबारक व तआला ने अपने महबूबे अकरम, रसूले मक्बूल सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की बरकत से मुसल्मानों को पूरे मुल्के शाम का मालिक बना दिया।

अमीरुल मो'मिनीन, फारूके आ'ज़म, हज़रत सय्यिदोना उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहो तआला अन्हो की खिलाफत के इब्तिदाई छे (६) साल में ही पूरा मुल्के शाम फतह हो गया। मुल्के शाम फतह होने के बा'द मिस्र पर भी इस्लाम का पर्चम लहराया और फिर इस्लाम का नूरे हिदायत पूरी दुनिया में फैला।

इस्लाम फैलाने के लिये सहाबए किराम, ताबेईन इज़ाम और तबए ताबेईन ने जो मेहनत व मुशक्कत की है और अपने सर धड़ की बाज़ी लगा कर मा'रके सर किये और हर किस्म की कुरबानियां पैश की हैं। यह मिल्लते इस्लामिया पर अज़ीम एहसानात हैं। जिस से मिल्लते इस्लामीया का हर फर्द ता कयामत इन का मरहूने मिन्नत रहेगा।